सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

५१

(१ सितम्बर से १५ नवम्बर १९३२)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

भूमिका

इस खण्डमे १ सितम्बर से १५ नवम्बर, १९३२ तककी सामग्री दी गई है। गांधीजी के नेतृत्वमे चलनेवाला भारतका राष्ट्रीय आन्दोलन सदासे तत्त्वत आत्मशुद्धिका आन्दोलन रहा था, किन्तु इस अवधिमे ब्रिटिश सरकारके दलित वर्गोके लिए पृथक् निर्वाचक-मण्डलके गठनके निर्णयके विरुद्ध गाधीजी ने जो अनिश्चित कालका उपवास आरम्भ किया उसके फलस्वरूप आन्दोलनका वह रूप और भी निखर उठा। "दलितो के हितमे सत्याग्रह-यज्ञमे [यह] अन्तिम आहुति" देनेमे उनका "उद्देश्य हिन्दुओकी अन्त-रात्माको सही धार्मिक आचरण करनेको प्रेरित करना" था (पृष्ठ ६६)। उपवासका बडा त्वरित प्रभाव हुआ, गाधीजी का उद्देश्य सफल रहा। इस समस्याके प्रति देशमे अभूतपूर्व जागृति आई। इसका परिणाम प्रसिद्ध पूना समझौते या यरवडा समझौतेके रूपमे प्रकट हुआ। समझौतेके अनुसार हिन्दू नेता और दलित वर्गोके प्रतिनिधि इस बातपर सहमत हो गये कि हरिजनोको सुविधा देनेके लिए सविधानमे विशेष व्यवस्था की जाये। परिणाम लिखित समझौतेतक ही सीमित नही रहा। २५ सितम्बरसे ३० सितम्बर तक बम्बईमे कई सार्वजनिक सभाएँ हुईं। इनमे हिन्दू नेताओने हरिजनो को पूर्ण राजनीतिक तथा सामाजिक समानता दिलाने और उनके कष्टो और कठि-नाइयोको दूर करनेके लिए प्राणपणसे प्रयत्न करनेका सकल्प लिया।

उपवासका तात्कालिक उद्देश्य ब्रिटिश सरकारके निर्णयको बदलवाना था और कई लोगोने इसे एक प्रकारका बल-प्रयोग बताकर इसकी आलोचना भी की। किन्तु गाधीजी के लिए यह "ईश्वरके नामपर, उसीके कामसे और . . . उसीके आदेशपर किया" गया एक नितान्त आध्यात्मिक कृत्य था (पृष्ठ ६५)। उनकी दृष्टिमे इसका राजनीतिक पक्ष गौण महत्वका था। उन्होने ब्रिटिश सरकारके निर्णयका विरोध इसलिए किया कि उनकी रायमे उस निर्णयके कारण, अस्पृश्यता-निवारणके लिए हिन्दू सुधारक जो "अद्भुत कार्य कर रहे" थे, "वह सब धूलमे मिल" जाता (पृष्ठ ३४)। उनका दृढ विश्वास था कि दलित वर्गोको हिन्दू समाजसे अलग कर देनेसे उनके सच्चे हितोकी रक्षा नही हो सकती। इसके अतिरिक्त वे इस चीजको असम्भव भी मानते थे, क्योकि "वे एक ही अविभाज्य परिवारके अग है। . . हिन्दू धर्ममे कोई ऐसा सूक्ष्म तत्त्व है, कोई ऐसी परिभाषातीत चीज है जो उनके न चाहनेपर भी उन्हे इससे जोडकर रखे हुए है" (पृष्ठ ६७)। उपवासके पहले दिन पत्र-प्रति-निधियोंको मुलाकात देते हुए उन्होने कहा "मै जिस चीजके लिए जी रहा हूँ, और जिसके लिए मरनेमे भी मुझे खुशी होगी, वह अस्पृश्यताको जड़-मूलसे खत्म करना है" (पृष्ठ १२६)। इस उपवासका "उद्देश्य अदृश्य और अज्ञात रूपसे उन करोडों लोगोको प्रभावित और आन्दोलित करना" था "जिनके साथ" वे अपना एक "अटूट

नाता" मानते थे (पृष्ठ ४०७)। उपवास गाधीजी के प्रति लोगोके "निद्रालस प्रेमके लिए चाबुककी तरह था" (पृष्ठ २६९) और उन असख्य भारतीयो और विदेशियोके विरुद्ध था "जो यह मानते थे" कि गाधीजी "एक न्यायसगत उद्देश्यको लेकर" चल रहे थे (पृष्ठ ६६)। उन्होने स्पष्ट कहा "यदि आम हिन्दुओका मन अब भी अस्पृश्यताको समूल नष्ट कर देनेको तैयार न हो तो उसे मुझको तो तनिक भी हिचकिचाहटके बिना बलिदान कर देना चाहिए" (पृष्ठ ६६)। सरोजिनी नायडूको एक पत्रमे उन्होने लिखा "अस्पृश्योके लिए अपने प्राणोकी बलि चढा देनेका मेरा विचार कोई नया नही है। . . वर्षों तक अन्दरसे वैसा आदेश नही मिला था। लेकिन मन्त्रिपरिषद्का निर्णय खतरेका भयकर बिगुल साबित हुआ, जिसने मुझे गहरी निद्रासे जगाकर सूचित किया — यही वह समय है।" गाधीजी ने उस अवसरको सहज ही अगीकार कर लिया।

अपने आसन्न उपवासके विषयमे सोचकर गाधीजी आनन्दविभोर हो उठते थे। उनकी दृष्टिमें वह "एक सौभाग्य भी" था और "कर्त्तव्य भी" (पृष्ठ ५९)। उसे वे "दलितोके हितमे सत्याग्रह-यज्ञमे अन्तिम आहुति देनेका ईश्वर-प्रदत्त अवसर" मानते थे (पृष्ठ ५८)। उनके लिए वह "अहिंसाकी एक अभिव्यक्ति, उसपर लगाई जानेवाली अन्तिम मुहर" था (पृष्ठ ६८)। उपवासकी अन्तिम परिणतिको स्वीकार करनेको, मृत्युका वरण करनेको भी वे सहर्ष प्रस्तुत थे। उन्हीके शब्दोमें, "मुझे ऐसा करना पडे तो इसमे परम शान्ति ही है" (पृष्ठ ५४)। उन्होने बा से कहा, "करोडोमे किसी-किसीको ही माँगी हुई मौत मिलती है" (पृष्ठ ५४)। खुशालचन्द गाधीको लिखे एक हृदयस्पर्शी पत्रमे उन्होने उनसे निवेदन किया कि आप "यह जानकर खुश हो कि आपको ऐसा छोटा भाई मिला जिसे ईश्वरने ऐसा यज्ञ पूरा करनेकी शक्ति दी" (पृष्ठ ९६)। इस प्रकार अपने प्रिय कार्यके लिए अपने प्राणोकी आहुति देनेकी सम्भावनापर विचार करके वे आनन्दविह्वल हो रहे थे। किन्तु साथ ही एक सच्चे विनयी व्यक्तिकी तरह वे यह भी स्वीकार करते थे कि हो सकता है, वे अपने मन्तव्य और शक्तिके विषयमे किसी भ्रममे ही पडे हुए हो। उन्होने नारणदास गाधीको लिखा "अगर इसमें मुझसे भूल हुई होगी तो अनशन मिथ्या-भिमान माना जायेगा और वह आसुरी तप होगा" (पृष्ठ ५५)। उपवास आरम्भ करनेके पूर्व समाचार-पत्रोमें प्रकाशनार्थ सरकारको भेजे एक वक्तव्यमे उन्होने कहा कि अगर मेरी श्रद्धा मात्र भ्रम है तो "मुझे शान्तिपूर्वक अपना प्रायश्चित्त पूरा करने दिया जाये। इससे हिन्दू धर्म एक जड प्राणीके भारसे मुक्त हो जायेगा" (पृष्ठ ६७)। इसी प्रकार उन्होने मीराबहनको लिखा, "तुम भी मेरी तरह हर्ष मनाओ कि मुझे ऐसा अवसर प्राप्त हुआ दीखता है।" "दीखता है" शब्दोको प्रयोग करनेका कारण समझाते हुए उन्होने कहा, "अभी मेरी श्रद्धाकी परीक्षा होनी है। जीवन-मरणके मामलेमे कोई अपनी शक्तिकी बात करनेका साहस नही कर सकता" (पृष्ठ ५९)। इस सम्बन्धमे उनका पुलक और विनयका मिश्रित मनोभाव रामेश्वरदास पोद्दारको लिखे पत्रकी इन पक्तियोमें और अधिक स्पष्टतासे प्रतिविम्बित हुआ है. "अनशन मेरा नहिं रामका है, चिन्ता मुझे नहिं उसको है। यदि निष्फल हुआ तो निन्दा

उसकी होगी, मेरी नहिं, सफल हुआ तो उसे स्तुति नहिं चाहिये। इसलिये मैं भीखारी उसके द्वार पडा रहता ले लुगा" (पृष्ठ १०४)।

गांधीजी के इस बलिदानका स्वजनोपर क्या प्रभाव पडेगा, इस ओरसे भी वे बेखबर नही थे। उन्होंने मीराबहनको एक पत्रमे बताया · "अपने सकल्पका समाचार देते हुए जब मैंने वह पहला पत्र लिखा तो मुझे तुम्हारा और बा का खयाल आया था" (पृष्ठ १०८)। लेकिन उन्होने यह सोचकर अपना जी कडा कर लिया कि "अस्पृश्यताके पापको धोनेके लिए कितनी भी भयकर यातना सही जाये, वह ज्यादा नही कही जा सकती" (पृष्ठ १०८)। गोपाल कृष्ण देवधरको लिखे एक पत्रमे उन्होने यह प्रश्न उठाया, "अस्पृश्योके प्रति अपने व्यवहारके लिए क्या हमे ईश्वरकी ओरसे भयकरसे-भयकर सजा नही मिलनी चाहिए" (पृष्ठ ११९)? जिसने जन्म "स्पृश्य" के रूपमे लिया किन्तु स्वेच्छासे "अस्पृश्य" बन गया, ऐसे हिन्दूकी हैसियतसे प्रायश्चित्त करना वे अपना कर्त्तव्य मानते थे (पृष्ठ ११९)। उन्होने देवधरको लिखा, "यह अद्‌भुत परीक्षा है। पर मैं इसी सबके लायक हूँ, क्योकि मेरा मन हिन्दूका ही मन है" (पृष्ठ ११९)। अपनी मानवोचित सवेदनाओके कारण उन्हे इस बातकी बडी चिन्ता थी कि अपने इस सर्वोच्च बलिदानके लिए उन्हे रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्रीनिवास शास्त्री-जैसे मित्रोकी सहमति प्राप्त हो। जिस दिन उपवास आरम्भ होनेवाला था उस दिन प्रात काल ही अपने प्रथम पत्रमे उन्होने रवीन्द्रनाथ ठाकुरको लिखा . "दोपहर को मुझे अग्निद्वारमे प्रवेश करना है। इस प्रयासको यदि आप अपना आशीर्वाद दे सकते हो तो मुझे वह चाहिए। . . यदि मुझे अपनी भूलका पता चल जाये तो मै इतना अभिमानी नही हूँ कि उसे खुलेआम स्वीकार न कर सकूं . . ." (पृष्ठ १०६)। और श्रीनिवास शास्त्रीको उन्होने लिखा · "मेरा यह कदम शायद आपको कहावतके उस अन्तिम तिनकेकी तरह असह्य लगा होगा। फिर भी आपकी ताड़नाकी मुझे जरूरत है . . .। . . इस सकटमे भी, जो हो सकता है आखिरी हो, आप मुझसे झगडना बन्द न कीजिए। मुझे अपने अभिशाप या आशीर्वाद भेजिए" (पृष्ठ १०७)। दोनो मित्रोने, जो दीर्घ कालतक गाधीजी के असहयोग-दर्शनके प्रबल आलोचक रहे थे, उन्हे पत्र लिखकर उनका हार्दिक समर्थन और प्रशस्ति की। रवीन्द्रनाथ ठाकुरने लिखा "हमारे दु खी हृदय आपकी महान् तपस्याको श्रद्धा और प्रेमसे निहारते रहेंगे" (पा० टि० २, पृष्ठ ११७)। श्रीनिवास शास्त्रीने उनकी उत्कृष्ट ढगसे की गई उत्कृष्ट सेवाकी प्रशंसा करते हुए लिखा "परिणाम आपको सही ठहराता है और निर्विवाद रूपसे सर्वोच्च अस्पृश्य . . . सिद्ध करता है" (पा० टि० २, पृष्ठ १४६)।

इन दोनोकी प्रतिक्रिया सामान्यत. उपवासके सम्बन्धमे पूरे देशकी प्रतिक्रियाको प्रतिबिम्बित करती थी। इस विषयमे भारत-भरमे भावनाका जैसा प्रदर्शन हुआ वह गाधीजी की दृष्टिमे "आधुनिक युगका एक आश्चर्य" था (पृष्ठ १४६)। यह उनके लिए भी और "अन्धविश्वास और अज्ञानमे डूबे हिन्दू धर्मके लिए" भी "नये जन्मकी पीडा थी" (पृष्ठ १६९)। सदियो पुराने विश्वास और प्रथाका आधार एक ही

आघातमें धूल-धूसरित हो गया प्रतीत हो रहा था। आध्यात्मिक दृष्टिसे भी यह कदाचित् गांधीजी के जीवनका सबसे सुखद अनुभव था। यह उपवास प्रेमी द्वारा "अपने प्रियतमको गलत रास्तेपर जानेसे रोकनेके लिए" किये गये उपवासकी तरह "व्यथित हृदयकी ईश्वरतक पहुँचनेवाली पुकार" थी (पृष्ठ २९९)। उन्होने स्वयं यह स्वीकार किया कि "प्रार्थनाका इस तरह तुरन्त उत्तर मिलनेका अनुभव मुझे पहले कभी नही हुआ था।" इसका कारण उनकी समझसे यह था कि उन दिनो वे ईश्वरकी "उपस्थितिकी सुखद धूपका सेवन कर" रहे थे (पृष्ठ २८३)। उन्होने होरेस अलेक्जैंडरको बताया, "उस उपवासमें ईश्वर मेरे जितना निकट रहा उतना पहले कभी नही रहा था" (पृष्ठ १९९)। ऐसी आनन्दानुभूति उन्हे उपवासके दिनोके शारीरिक और मानसिक कष्टोके बावजूद हो रही थी। उन्होने स्वय स्वीकार किया· "इस तरहकी पावन वेदनामें एक गहरे अगोचर आनन्दका अनुभव होता है" (पृष्ठ १६८)।

किन्तु गाधीजी से यह समझनेमें भूल नही हुई कि एक प्रतिष्ठित सामाजिक बुराईके विरुद्ध लोगोमे जो क्षोभ और जागरूकता आई थी उसका मतलब यह नही था कि अस्पृश्यता तुरन्त मिट जायेगी। उन्होने ब्रिटेनवालो को बताया "जो समझौता हुआ है वह मेरे लिए शुद्धिके कार्यका . आरम्भ-मात्र है। जबतक अस्पृश्यताका नामोनिशान मिट नही जाता, तबतक आत्माकी इस वेदनाका अन्त नही होगा। . . . हिन्दू धर्मको इस असह्य कलंकसे मुक्त करनेके लिए जितने भी उपवास आवश्यक होगे, करूँगा" (पृष्ठ १२०)। उन्होने हरिजनोको भी भरोसा दिलाते हुए कहा कि यद्यपि ब्रिटिश सरकारने समझौतेके केवल उसी हिस्सेको स्वीकार किया है जिसका सम्बन्ध ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलके साम्प्रदायिक निर्णयसे है, किन्तु खुद मैं "पूरे समझौतेसे बँधा हुआ हूँ और इसकी समुचित पूर्तिके लिए वे मेरे प्राण बन्धक समझे" (पृष्ठ १५५)। सयोगसे इस उपवासकी समाप्तिके तुरन्त बाद ही उन्हे दूसरा उपवास आरम्भ करनेका सकल्प लेकर हरिजनोद्धारके कार्यसे अपनी प्रतिबद्धताका परिचय देनेका सुअवसर भी मिल गया। प्रसग यह था कि के० केलप्पनने, जो दक्षिण भारतमें इस काममें उनके विश्वस्त सहयोगी रह चुके थे, प्रसिद्ध गुरुवायूर मन्दिरके द्वार हरिजनोके लिए खुलवानेके निमित्त गाधीजी के साथ ही उपवास आरम्भ किया था। सत्याग्रहकी दृष्टिसे गाधीजी को उनके इस आचरणमे नैतिक दोष दिखाई दिया। इसलिए उन्होने केलप्पनको उपवास तोड़कर मन्दिरके अधिकारियोको तीन महीनेका समय देनेकी सलाह देते हुए लिखा: "ईश्वर सहायक रहा तो मै इस भारमें हाथ बँटाऊँगा" (पृष्ठ १७४)।

किन्तु इस उपवासके साथ गांधीजी ने जिस सुधारका सूत्रपात किया था उसको अन्तिम परिणतितक पहुँचानेके उनके सकल्पकी गम्भीरताको शायद सरकार नही समझ पाई। उपवासके दौरान उसने उन्हे इस कार्यके सम्बन्धमें पत्र-व्यवहार करने और लोगोसे मिलने-जुलनेकी विशेष सुविधा दे रखी थी, जिसे अब उसने बन्द कर दिया। इससे गाधीजी बडे परेशान हुए। जेल-अधीक्षकके नाम एक पत्रमे उन्होने लिखा: "मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मै इस चीजके लिए कतई तैयार नही

था। . . . इस तरह बहुत ही आकस्मिक और कठोर ढगसे मुझे यह याद दिलाया गया है कि मै केवल एक कैदी हूँ। . मैंने यह आशा की थी कि कमसे-कम पूर्ण स्वस्थ होनेतक मुझे सभी तरहके अनावश्यक स्नायविक आघातोसे बचाया जायेगा" (पृष्ठ १६३)। सरकार इस सम्बन्धमे अपनी स्थिति स्पष्ट करेगी, इस बातकी प्रतीक्षा करते हुए वे तीन हफ्तेतक चुप बैठे रहे। अन्तमे उन्होने एक पत्र लिखकर सरकारको स्पष्ट बता दिया कि अगर उन्हे हरिजन कार्य चलानेकी सुविधा नही दी जाती तो वे फिर उपवास करेगे। उन्होने जेलोके महानिरीक्षकको लिखा "जिस कार्यके लिए उपवास रखा गया और स्थगित किया गया, उसे यदि मै बिना किसी पाबन्दी और अडचनके न कर सकूँ, तो जीनेमे मेरी कोई रुचि नही हो सकती" (पृष्ठ ३०७)। उन्होने फिर अपना सकल्प स्पष्ट करते हुए कहा "यह नही हो सकता कि मै जीवित रहूँ और अस्पृश्यता-निवारणके लिए काम न करूँ" (पृष्ठ ३४०)। उत्तरमे सरकारने उदारतापूर्वक यह स्वीकार करते हुए कि गाधीजी के अस्पृश्यता-निवारण-सम्बन्धी कार्यक्रमका "महत्त्व उसने पहले पूरी तरह नही समझा था . ऐसे मामलोके सम्बन्धमे, जो केवल अस्पृश्यता-निवारणतक ही सीमित हो, लोगोसे मिलने और पत्र-व्यवहार करने" पर लगे सारे प्रतिबन्ध हटा लिये (पृष्ठ ३५६)।

इस तरह गाधीजी को जो स्वतन्त्रता और सुविधा प्राप्त हुई उसका उपयोग उन्होने पत्र-व्यवहार और समाचार-पत्रोमे प्रकाशित वक्तव्योके द्वारा अस्पृश्यता-विरोधी लोकमत तैयार करनेमे किया। इस विषयपर अपने पहले ही वक्तव्यमे उन्होने "हिन्दू धर्म" की पुनर्व्याख्या करके इस प्रथाके धार्मिक आधारपर प्रहार किया। जहाँ कट्टर-पथी हिन्दू अस्पृश्यताको हिन्दू धर्मका अभिन्न अग मानते थे और फलत गाधीजी को ऐसा व्यक्ति समझते थे जिसने "अपने धर्मका त्याग कर दिया है" और जिसने "अस्पृश्यता-विरोधी और इसी तरहकी अन्य धारणाएँ ईसाई धर्म और इस्लामसे ली है", वहाँ स्वय गाधीजी ने यह दावा किया कि मै सच्चा सनातनी हूँ। उनका कहना था कि सनातन धर्म "वेदो और उनके बादके धर्म-ग्रन्थोंपर आधारित है", लेकिन "वेद ईश्वर और हिन्दू धर्मकी तरह ही अव्याख्येय हैं।" हिन्दू धर्म एक सतत विकासशील धर्म है, जिसकी "मूल निधियोमे" प्रत्येक पीढीके "ऋषियोने अपने ज्ञानके अनुसार वृद्धि की" है। "फिर एक महान् मनीषी हुआ, जिसने 'गीता' रची। उसने हिन्दू-जगत्को हिन्दू धर्मका ऐसा सार-सकलन दिया, जिसमे गहरा दर्शन भरा है, पर जो फिर भी सीधे-सादे जिज्ञासुओकी समझमे आसानीसे आ जाता है।" उन्होने स्पष्ट शब्दोमे घोषणा की कि "जो-कुछ भी उसके मुख्य विषयके विरुद्ध है, उसे मै हिन्दू धर्मके विरुद्ध समझकर अस्वीकार कर देता हूँ।" जहाँतक दूसरे धर्मोंसे प्रभावित होनेके आरोपका सम्बन्ध था, गाधीजी ने निर्भीकताके साथ कहा कि मैने अन्य धर्मोके ग्रन्थोका जो अध्ययन किया है उससे "मेरा दृष्टिकोण और इसलिए मेरा हिन्दू धर्म भी उदार हो गया है।" उन्होने आगे कहा "अपने-आपको हिन्दू कहनेमे मुझे गर्वका अनुभव इसलिए होता है कि यह शब्द मुझे इतना व्यापक लगता है कि यह न केवल पृथ्वीके चारो कोनोके पैगम्बरोकी शिक्षाओके प्रति सहिष्णु है, बल्कि उन्हे आत्मसात्

भी करता है।" वे "'गीता' के इसी सन्देशको अपने जीवनमें उतारकर . लाखो-करोडो लोगोके पास" गये। और उन्हे पूरा विश्वास था कि "उन्होने मेरी बात मेरी राजनीतिक बुद्धिमत्ता या वक्तृत्व-कलाके कारण नही, बल्कि इसलिए सुनी है कि उन्होने मुझे सहज ही अपना और अपने धर्मका आदमी मान लिया है।" इसलिए उनकी यह मान्यता भी निरन्तर दृढतर होती गई कि "सनातन धर्मसे अपनेको सम्बद्ध माननेका मेरा दावा गलत नही है और यदि ईश्वरकी इच्छा हुई तो वह मुझे इस दावेपर अपनी मृत्युकी मुहर लगानेका अवसर देगा" (पृष्ठ ३६४-६५)।

अस्पृश्यतापर किये गये प्रहारोके परिणामस्वरूप स्वभावत जाति-प्रथामें सुधारका प्रश्न उठ खडा हुआ। गाधीजी ने इन दोनो प्रश्नोको एक-दूसरेसे अलग रखनेकी साव-धानी बरती, ताकि वे अस्पृश्यता-निवारणपर अपनी शक्ति और अपना ध्यान केन्द्रित रख सके। उन्होने कहा, जाति-प्रथा तो एक सामाजिक बुराई है, लेकिन अस्पृश्यता "आत्माका हनन करनेवाला पाप है" (पृष्ठ २३५)। इसलिए उन्होने इस बातको बार-बार स्पष्ट किया कि "रोटी-बेटी-व्यवहार" और "अन्तर्जातीय विवाह" अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनके अग नही है, यद्यपि जिनमे हरिजन भी शामिल हो, ऐसे अन्त-र्जातीय भोजोका वे स्वागत करते थे (पृष्ठ २४६)। जाति और वर्णका भेद स्पष्ट करते हुए उन्होने कहा कि वर्णका मतलब धधा-विशेषके अतिरिक्त और कुछ नही है तथा "अन्तर्जातीय भोज और अन्तर्जातीय विवाह" पर लगे प्रतिबन्धोसे इसका कोई सम्बन्ध नही है (पृष्ठ ३६३)। उन्होने यह स्वीकार किया कि इस प्रकारका वर्णधर्म आज समाप्त हो चुका है और एक ही वर्ण बच रहा है—शूद्र वर्ण (पृष्ठ ३७०,४११)।

इस तनाव-भरी अवधिमे लिखे गये पत्रोसे इस बातकी अन्तरग झलक मिलती है कि गाधीजी को स्वयकी कितनी ठीक पहचान थी और उनसे पत्राचारका सम्बन्ध रखनेवाले लोग भी, जिनकी सख्या निरन्तर बढ रही थी, उन्हे ठीकसे समझे, इसकी उन्हे कितनी चिन्ता थी। उन्हे खास फिक्र आश्रमवासियोकी थी। उपवास आरम्भ करनेके दो दिन पूर्व उन्होने लिखा "वहाँसे प्राण-रस खीचकर अपनेमें भर रहा हूँ और अपने प्राण-रससे वहाँ आश्रमका अभिसिचन कर रहा हूँ" (पृष्ठ ८९)। उन्होने स्वीकार किया कि "यदि मेरे हृदयकी गहराईमे कही द्वेष अथवा रोष हुआ . . तो उसे [उपवासको] आसुरी तप ही माना जायेगा और तब तो वह दुनियाके लिए भार-रूप ही होगा" (पृष्ठ ९०)। इस अवधिके अनेक पत्रोमे हमें इस बातपर विशेष आग्रह देखनेको मिलता है कि दूसरोके दोष निकालनेकी अपेक्षा अपने दोष निकालनेमें, क्रोधका उत्तर धैर्यसे देनेमे और बुराईके बदले भलाई करनेमे मानवका श्रेय निहित है। एक समाज-सुधारकको उन्होने "जमोरिनके प्रति . अनुदार" न होनेकी सलाह देते हुए लिखा, "हमे अपने-आपको उनकी स्थितिमे रखकर परि-स्थितिको उनके दृष्टिकोणसे भी देखना चाहिए" (पृष्ठ ३५७)। समस्त सृष्टिसे अपनेको एकाकार माननेकी धार्मिक वृत्ति और "जीव-मात्रकी नि स्वार्थ सेवा" (पृष्ठ ३९२) करनेकी प्रवृत्तिके कारण गाधीजी कभी भी राजनीतिको धर्मसे अलग

नही मान पाये। एक ईसाई मित्रको उन्होने लिखा · "सच्चा धर्म तो वही है जो जीवनकी हर प्रवृत्तिमे समाया हुआ हो। और जो प्रवृत्ति धर्मकी बलि चढाये बिना न चलाई जा सकती हो, वह अनैतिक प्रवृत्ति है और उससे हर हालतमे दूर ही रहना चाहिए। राजनीति ऐसी प्रवृत्ति नही है, इतना ही नही, बल्कि वह तो हमारे नागरिक जीवनका अभिन्न अग है" (पृष्ठ २५५-५६)। साम्प्रदायिक कट्टरता और "मेरा ईश्वर, तेरा ईश्वर"-जैसी सकुचित बाते करनेकी प्रवृत्तिपर प्रहार करते हुए उन्होने कहा कि "जो विनयी है और जिनका हृदय शुद्ध है, उनके लिए तो वह लाखो-करोडो मार्गोसे प्राप्य है" और "बुद्धिमानो और मूर्खो, धर्मात्माओ और पापियोका एक ही ईश्वर है" (पृष्ठ २३, ३७०)। सम्प्रदायवादकी ही तरह गुह्य विद्याओका भी विरोध करते हुए उन्होने कहा "जीवनकी पुस्तक साधारणसे-साधारण बुद्धिवालोके लिए भी खुली हुई है और ऐसा ही होना भी चाहिए। ईश्वरीय योजनामे गुह्य कुछ भी नही है। . . सत्यमे कुछ भी गोपनीय नही है और सत्य ही ईश्वर है" (पृष्ठ ३३४)।

मीराबहनको पेड-पौधे और पशु-पक्षी भी अपने मित्र-जैसे लगते थे। उनकी इस दृष्टिका अनुमोदन करते हुए उन्होने लिखा "निजी मित्र और सम्बन्धी अजनबी लोगो, पशु-पक्षियो और पेडोसे अधिक मित्र नही होते" (पृष्ठ ५९-६०)। प्रेमाबहन कटकको लिखे एक पत्रमे वे अपनी "बिल्ली बहन"से अपने पुनर्मिलन और उससे प्राप्त होनेवाले आनन्दका उल्लेख करना नही भूले (पृष्ठ ३०२)। प्रेमाबहनके ही नाम एक अन्य पत्रमे उन्होने लिखा "फूलोके पौधोके साथ मेरी तरफसे बात करना . .। उनसे कहना कि अपने-जैसा सौन्दर्य, अपनी-जैसी सुगन्ध, अपनी जैसी एकनिष्ठता . . . अपनी-जैसी समता और सरलता प्रदान करो . " (पृष्ठ ३३६-३७)।

एक पत्रमे उन्होने 'गीता'के प्रति अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए लिखा कि 'गीता' की "सबसे बडी टीका" यही है कि जीवनके लिए उपयोगी उसके प्रत्येक श्लोक को आचरणमे उतारा जाये, और उनकी दृष्टिमे उस पवित्र ग्रन्थका "मध्य बिन्दु अनासक्ति ही" थी (पृष्ठ ३४३)। उन्होने अनासक्तिको सहज ही कैसे सिद्ध किया, इसका रहस्य रामदास गाधीको बताते हुए लिखा "मेरा सब काम स्वाभाविक होनेसे, यानी सत्यकी साधनामे स्फुरित होनेके कारण, बहुत आसान हो गया है। जगत्-भरकी सेवा करनेकी भावना उदित हो जानेपर अनासक्ति सहज ही आ जाती है" (पृष्ठ ३९४)। ऐसी अनासक्तिका एक अच्छा उदाहरण शरीरके प्रति व्यक्त किये गये उनके दृष्टिकोणके रूपमे सामने आता है। उन्होने एन्ड्रयूजको भरोसा दिलाते हुए लिखा "मेरी इच्छा इस गर्दभ बन्धु (शरीर)को मार डालनेकी नही है। यह ईश्वरके हाथोमे सुरक्षित है" (पृष्ठ ३६६)। एक मित्रके रुग्ण पुत्रको ठीक ढगसे श्वास-क्रिया करने, ठीक आहार लेने और ताजी हवाका सेवन करने तथा ईश्वर मे श्रद्धा रखनेकी सलाह देते हुए उन्होने समझाया " तुझे अपने शरीरको अपना नही मानना चाहिए। वह ईश्वरका है। पर ईश्वरने तुझे वह कुछ समयके लिए दिया है, ताकि तू उसे स्वच्छ और स्वस्थ रखे और उसकी सेवाके काममे लाये। इसलिए

तू उसका थातीदार है, स्वामी नही" (पृष्ठ ३७०)। उन्होंने एस्थर मेननको लिखा. "जिस तरह सैनिक अपने शस्त्रोको साफ और सुव्यवस्थित रखता है, उसी तरह हमें भी अपने शस्त्रो (ईश्वरके दिये हुए शरीरो)को साफ और पूरी तरह सुव्यवस्थित रखना चाहिए" (पृष्ठ ४२२)।

आश्रमकी समस्याके सम्बन्धमे लिखे उनके पत्रोसे ज्ञात होता है कि वे उसे "सब धर्मोके प्रति समभाव" रखनेवाली सस्थाके रूपमे देखना चाहते थे और उनकी राय थी कि आश्रमवासी प्रार्थना-भूमि-रूपी उस मन्दिरमे प्रार्थना करे "जिसकी दीवारे दिशाएँ है, जिसकी छत आकाश है और जिसमे मूर्त्ति निराकार भगवान्‌की है" (पृष्ठ २२४)। किन्तु उनकी दृष्टिमे सामूहिक प्रार्थना उतनी महत्त्वपूर्ण नही थी जितनी वैयक्तिक प्रार्थना, जो सामूहिक प्रार्थनाका आधार है, क्योकि "जो-कुछ अनुभव एकान्तमे बैठकर . . होता है, वह समूहमे होना अशक्य नही तो कठिन तो है ही" (पृष्ठ ३२१)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित सस्थाओ, व्यक्तियो, पुस्तकोके प्रकाशको तथा पत्र-पत्रिकाओके आभारी है

सस्थाएँ सावरमती आश्रम सरक्षक तथा स्मारक न्यास और सग्रहालय (सावरमती-आश्रम प्रिजर्वेशन ऐंड मेमोरियल ट्रस्ट ऐंड सग्रहालय), नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रथालय, अहमदाबाद, गाधी स्मारक निधि व संग्रहालय और नेहरू स्मारक सग्रहालय व पुस्तकालय, नई दिल्ली, विश्वभारती स्मारक सग्रहालय व पुस्तकालय, शान्तिनिकेतन, राष्ट्रीय ग्रथालय, कलकत्ता, भारत कलाभवन, वाराणसी; भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली, स्वार्थमोर कॉलेज, फिलाडेल्फिया, वुडब्रुक कॉलेज, बर्मिघम और मैसूर सरकार।

व्यक्ति श्री ए० एच० वेस्ट, श्रीमती एडिथ एलविन, कु० एफ० मेरी वार; श्री कनुभाई मगरूवाला, अकोला, श्री क० मा० मुशी, बम्बई, श्रीमती गगाबहन वैद्य, वोचासण, श्री घ० दा० बिडला, कलकत्ता, श्री चन्द्रकान्त एफ० शाह, नई दिल्ली, श्रीमती चम्पाबहन मेहता, बम्बई, श्री जयरामदास दौलतराम, नई दिल्ली; श्रीमती जेसी हॉयलैंड, श्रीमती तहमीना खभाता, बम्बई, श्री द० बा० कालेलकर, नई दिल्ली, श्री धीरूभाई झवेरी, बम्बई, श्री नारणदास गाधी, राजकोट, श्रीमती निर्मलाबहन सराफ, बम्बई, श्री परशुराम मेहरोत्रा, दिल्ली, श्री प्रभुदास गाधी, अलमोडा, श्रीमती प्रेमलीला ठाकरसी, पूना, कु० प्रेमाबहन कटक, सासवड, श्री बनारसी लाल बजाज, वाराणसी, श्री भाऊ पानसे, वर्धा, श्री मगनभाई देसाई, अहमदाबाद, श्रीमती मनुबहन मशरूवाला, अकोला, श्रीमती मीराबहन, गाडेन, आस्ट्रिया, श्री रमणीकलाल मोदी, अहमदावाद, श्री रवीन्द्र आर० पटेल, अहमदाबाद, श्रीमती राधा बहन चौधरी, नई दिल्ली, श्री रामनारायण एन० पाठक, भावनगर, श्रीमती लक्ष्मी बहन ना० खरे, अहमदाबाद, श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई, श्रीमती वनमाला एम० देसाई, नई दिल्ली, श्रीमती वसुमती पण्डित, सूरत, श्री वालजी गो० देसाई, पूना, श्रीमती शशिलेखा मेहता, अहमदाबाद, श्रीमती शान्तादेवी, कलकत्ता, श्रीमती शान्ताबहन पटेल, अहमदाबाद, श्री शान्तिकुमार मोरारजी, बम्बई, श्रीमती शारदा बहन जी० चोखावाला, अहमदाबाद, श्री श्री० दा० सातवलेकर, पार्डी और श्री हरिइच्छा पी० कामदार, बडौदा।

पत्र-पत्रिकाएँ 'अमृतबाजार पत्रिका', 'एडवास', 'टाइम्स ऑफ इडिया', 'बॉम्बे क्रॉनिकल', 'विश्वभारती न्यूज', 'हिन्दू'।

पुस्तके 'एपिक फास्ट', 'ट्राइवल वर्ल्ड ऑफ वेरियर एलविन एन ऑटो-वायोग्राफी', 'पाँचवे पुत्रको वापूके आशीर्वाद', 'वापुना पत्रो-४ मणिवहेन पटेलने', 'वापुना पत्रो-६ ग० स्व० गगावहेनने', 'वापुना पत्रो-९ नारणदास गाधीने', 'वापुनी प्रसादी', 'महात्मा लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गाधी', भाग-२, 'महादेवभाईनी डायरी', भाग १-२, 'माई डियर चाइल्ड' और 'लेटर्स ऑफ द राइट ऑनरेवल वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री'।

अनुसन्धान व सन्दर्भ-सम्बन्धी सुविधाओके लिए अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी पुस्तकालय, इडियन कौसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स पुस्तकालय, सूचना और प्रसारण मन्त्रालयका अनुसन्धान और सन्दर्भ विभाग (रिसर्च ऐड रिफरेस डिवीजन), भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नेहरू स्मारक सग्रहालय और पुस्तकालय एव श्री प्यारेलाल नैयर, नई दिल्ली, म्युनिसिपल सग्रहालय, इलाहाबाद, इडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लन्दन हमारे धन्यवादके पात्र है। प्रलेखोकी फोटो-नकल तैयार करनेमे मदद देनेके लिए हम सूचना और प्रसारण मन्त्रालयके फोटो-विभाग, नई दिल्लीके भी आभारी है।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमें गाधीजी के स्वाक्षरोमें मिली है उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरो द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जोकी स्पष्ट भूलोको सुधारकर दिया गया है।

अग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करनेमें अनुवादको मूलके समीप रखनेका पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनानेका भी पूरा ध्यान रखा गया है। छापेकी स्पष्ट भूले सुधारनेके बाद अनुवाद किया गया है और मूलमें प्रयुक्त शब्दोके सक्षिप्त रूप यथासम्भव पूरे करके दिये गये है। नामोको सामान्य उच्चारणके अनुसार ही लिखनेकी नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोके उच्चारणमे सशय था उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गाधीजी ने अपने गुजराती लेखोमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोमे दी गई सामग्री सम्पादकीय है। गाधीजी ने किसी लेख, भाषण, आदिका जो अश मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोडकर गहरी स्याहीमे छापा गया है, लेकिन यदि कोई ऐसा अश उन्होने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोडकर साधारण टाइपमे छापा गया है। भाषणकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गाधीजी के कहे हुए नही है, बिना हाशिया छोडे गहरी स्याहीमे छापे गये है। भाषणो और भेटकी रिपोर्टोके उन अशोमें, जो गाधीजी के नही है, कही-कही कुछ परिवर्तन किया गया है और कही-कही कुछ छोड भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि जहाँ उपलब्ध है वहाँ दाये कोनेमे ऊपर दे दी गई है। परन्तु जहाँ वह उपलब्ध नही है वहाँ उसकी पूर्ति अनुमानसे चौकोर कोष्ठकोमे की गई है, और आवश्यक होनेपर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमे केवल मास या वर्षका उल्लेख है उन्हे आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमे रखा गया है। शीर्षकके अन्तमे साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गाधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ आधारपर उसका अनुमान किया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नही हुआ वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये है।

साधन-सूत्रोमे 'एस० एन०' सकेत साबरमती सग्रहालय, अहमदाबादमे उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' गाधी स्मारक निधि और सग्रहालय, नई दिल्लीमे उपलब्ध कागज-पत्रोका, 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गाधी वाड्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाधी) द्वारा सगृहीत पत्रोका, 'एस० जी०' सेवाग्राममे सुरक्षित सामग्रीका और 'एम० एम० यू०' मोबाइल माइक्रोफिल्म यूनिटका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देनेके लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट भी दिये गये है। अन्तमे साधन-सूत्रोकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई है।

विषय-सूची

१. पत्र : आश्रमके बालकों-बालिकाओंको

यरवडा मन्दिर[1]
१ सितम्बर, १९३२

बालको और बालिकाओ,

नई मन्त्रीका सुन्दर अक्षरोमे लिखा पत्र मिला। नये पदाधिकारी अपने-अपने कर्त्तव्यका ठीक पालन करेगे, ऐसी आशा करता हूँ। इस तरह् अपने सिर जिम्मे-दारियाँ लेते-लेते [और उनका पालन करते-करते] तुम लोग खूब आगे बढोगे। ऐसे मण्डल तभी चल सकते है जब सभी एक-दूसरेके प्रति उदारतापूर्ण बरताव करे। और इतना करना सीख जाओ तो बडे-बडे मण्डलोको चलानेकी शक्ति तुममे सहज ही आ जायेगी। हर हफ्ते अपने कामका हिसाब मुझे भेजते रहना। कभी कोई झगडा हो तो उसके सम्बन्धमे भी लिखना। झगड़ा हो ही नही, यह तो सबसे अच्छी बात है, लेकिन हो तो मुझसे छिपानेसे कोई फायदा नही होनेवाला है। मुझे उसकी जानकारी होगी तो हो सकता है, मै तुम लोगोका मार्ग-दर्शन कर सकूं; और झगडा होनेपर तुम लोगोको मुझे उसकी सूचना देनी पडेगी, यही खयाल शायद तुम्हें उससे बचा भी ले।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

२. पत्र : पुरातन बुचको

१ सितम्बर, १९३२

चि० पुरातन,

तुम्हे सवाल पूछनेसे रोकनेका तो मेरा इरादा था ही नही। मनमे खूब सोच-विचारकर किसी निष्कर्षपर पहुँचनेके बाद उसपर मेरा मतामत जाननेके लिए तुम्हारा मुझसे पूछना योग्य ही माना जायेगा। कहा जा सकता है कि मेरे जीवनमे बुद्धिका योग बहुत कम रहा है। मै अपनेको मन्दबुद्धि मानता हूँ। श्रद्धावान्को बुद्धिका योग भगवान् करा देता है[2], यह बात मेरे सम्बन्धमे तो अक्षरश सत्य सिद्ध हुई है। मुझमें गुरुजनो और ज्ञानियोके प्रति हमेशा सम्मान और श्रद्धाका भाव

१. यरवडा सेंट्रल जेल, जहाँ गांधीजी ४ जनवरी, १९३२ से ८ मई, १९३३ तक बन्दी रहे। आगेके शीर्षकोंमें इस स्थानका नाम नहीं दिया गया है।

२. अनुमानतः गीता-४, ३९।

रहा है। और मेरी सबसे अधिक श्रद्धा सत्यके प्रति रही है, इसीलिए मेरा मार्ग हमेशा कठिन होते हुए भी मुझे सरल ही लगा है।

तुम्हारा स्वास्थ्य सुधरता जा रहा है, यह शुभ समाचार है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१६८) से।

३. पत्र : केशव गांधीको[1]

१ सितम्बर, १९३२

चि० केशू,

अक्षर मेहनतसे सुधरते है। सच्चा मित्र परमेश्वर ही है। पेट भरकर कभी खाना ही नही चाहिए। जीव ही आत्मा है। अभी तो 'गीताजी'को गुजरातीमे ही पढो, उसीको समझो। जरूरत होनेपर किसीसे पूछो भी। पूनियोको [छोरपर] नुकीला मत बनाओ। घटे-भरमे अच्छी पूनियाँ कितनी तैयार की जा सकती है, यह तो अब्बासभाईसे पूछो। स्मरण-शक्ति अभ्यास करते-करते बढती है।

मनमे जो भी आये, सो सब तुम मुझे लिख सकते हो।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२८०) से।

४. पत्र : गुलाबको

१ सितम्बर, १९३२

चि० गुलाब,

तेरे दो पत्र मिले। कातनेकी गति कम ही है, मगर कितनी है? अक्षर सुधारना। कृष्णने कौन-सी भूल की, यह बता, तभी तो मै जवाब दे सकूंगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७२३) से।

१. मगनलाल गांधीके पुत्र ।

५. पत्र : मोहन न० परीखको

१ सितम्बर, १९३२

चि० मोहन,[1]

अक्षर ठीक न बनें तो बोलकर दूसरेसे पत्र लिखवानेमे कोई हर्ज नही है। लेकिन इसका मतलब यह नही कि सुन्दर अक्षर लिखना सीखनेमे आलस्य करे। तू तो इतना बड़ा हो गया है कि तुझे अब सुन्दर अक्षर लिखना आना ही चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१८२) से।

६. पत्र : नर्मदाबहन राणाको

१ सितम्बर, १९३२

चि० नर्मदा,

तेरा पत्र मिला। इस बार अक्षर ठीक है। इसी तरह मेहनत करते-करते अच्छे होते जायेंगे। तू लिखती है कि बहुत सीख गई हूँ। यह ठीक नही है। सीखना तो अभी बहुत बाकी है। अभी तो तेरी गुजराती ही बहुत कच्ची है। संस्कृत सीखनी है। ओटना, ठीक पीजना, बुनना, सीना, कशीदा करना, बहुत बारीक कातना, यह सब तो बाकी ही है।

गणित सीखना, बीमारकी सार-सँभाल करना सीखना चाहिए। धीरे-धीरे सभी हो जायेगा।

बोलना कम, सोचना ज्यादा। अपनी पोशाकके बारेमे तेरी बात मै समझ गया। लेकिन अभी तो उसके सम्बन्धमे कुछ कहनेको मेरे पास है नही।

तू खूब अच्छी बने, यही चाहता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २७६२) से, सौजन्य · रामनारायण एन० पाठक

१. नरहरि द्वारकादास परीखके पुत्र।

७. पत्र : पद्माको

१ सितम्बर, १९३२

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला। उसमें तूने ठीक जानकारी दी है। तू फल खाती है, यह अच्छा ही है। शरीर थक जाये तो कातना बन्द रखनेमे कोई हर्ज नही है। दाहिने हाथसे तार निकाले और पैरसे चरखा चलाये तो थकावट महसूस नही होनी चाहिए। मै ऐसा ही करता हूँ। लेकिन इतनी मेहनतसे भी थकावट हो तो वैसा ही करना। कशीदेका काम या सिलाई हो सके तो वह करना। रुईकी पूनियाँ न मिले तो ऊन कातना। शीलाको ठीकसे सिखाना। अभी अक्षर लिखनेका अभ्यास करानेकी जरूरत नही है, बातचीतमे ही बहुत-कुछ सिखाया जा सकता है। गणित सिखाया जा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१३७) से। सी० डब्ल्यू० ३४८९ से भी, सौजन्य : प्रभुदास गांधी

८. पत्र : शारदा चि० शाहको

१ सितम्बर, १९३२

चि० शारदा,

मेरा विश्वास है कि तू मन्त्रि-पदको अवश्य सुशोभित करेगी। सामर्थ्यसे अधिक परिश्रम मत करना। और जो-कुछ हो उससे तनिक भी घबराना नही। चिन्ता तो बिलकुल मत करना। तकलीपर इतनी अधिक बार तार क्यो टूटता है? हम जो काम करते है उसमें भाग्य और मेहनत दोनोका हिस्सा होता है। मेहनतपर हमारा अधिकार है इसलिए पूरी तरह मेहनत करके उसका परिणाम भाग्यपर छोड दें। 'गीता' यही सिखाती है।

बापू

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९९१७)से, सौजन्य : शारदाबहन गो० चोखावाला

९. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

१ सितम्बर, १९३२

चि० गंगाबहन,

कमाटीपुराका घर खाली पडा है और वहाँसे सामान चोरी गया, इसे अपनी [निष्ठाकी] परीक्षा मानना। "भला हुआ छूटा जजाल, सहज मिलेगे श्री गोपाल"[1] का जाप करना।

१६वे अध्यायके बारेमे मुझे काकाने[2] भी लिखा था। फिलहाल तो इसके लिए मेरे पास समय नही है। रामीबहनसे[3] मुझे लिखनेको कहना।

आशा है, अब तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो गया होगा। फिर हकीमजी[4] तो तुम्हारे पास ही है, अतः अब तुम्हे और क्या चाहिए? हकीमजी से मेरा यथायोग्य कहना।

क्या नाथकी[5] खुजली ठीक हो गई?

मुझे नियमित रूपसे लिखती रहना।

लक्ष्मी[6] जेराजाणी मुझे चतुर और चुस्त लडकी जान पडी।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-६ : गं० स्व० गंगाबहेनने, पृ० ६५। सी० डब्ल्यू० ८७९४ से भी; सौजन्य · गगाबहन वैद्य

१. यह पक्ति नरसिह मेहतापर लिखी गई प्रेमानन्दकी कवितासे है। मूल इस प्रकार है: "भलुं थयु भागी जजाल सहजे मलशे श्री गोपाल।" बादमें २-११-१९४० के हरिजन बन्धुमें गाधीजी ने स्वीकार किया कि उन्होंने ('सुखे भजशु' के स्थानपर 'सहजे मलशे' का) अशुद्ध प्रयोग किया था।

२. द० बा० कालेलकर।

३. गंगाबहन वैद्यकी बहन।

४. गगाबहनको यूनानी चिकित्सा-पद्धति सिखानेवाले।

५. केदारनाथ कुलकर्णी, किशोरलाल मशरूवालाके गुरु।

६. निष्ठावान खादी-कार्यकर्त्ता विट्ठलदास जेराजाणीकी भतीजी, जिनका विवाह बादमें गंगाबहनके पौत्र पुरुषोत्तम डी० सरैया से हो गया था।

१०. एक पत्र[1]

१ सितम्बर, १९३२

दिलीपसे मैंने आपका नाम माँगा था। हालाँकि हम कभी मिले हो, ऐसा मुझे याद नही है, फिर भी यह लिखनेकी हिम्मत कर रहा हूँ। बच्चोकी शिक्षाके बारेमे मेरे मनमे हमेशा यह विचार रहा है कि उन्हे शुरूसे वर्णमाला सिखाकर हम उनकी बुद्धिको अवरुद्ध कर देते है और उनके अक्षर बिगाड़ देते है। मेरी राय है कि बच्चो को वर्णमालाका ज्ञान करानेसे पहले जबानी बहुत-सा सामान्य ज्ञान दे देना चाहिए। अपने शहर या गाँवके इतिहास-भूगोलसे लेकर प्रान्तका, देशका और ससारका थोडा ज्ञान, सृष्टि-सौन्दर्यका, आकाशका, पेड-पत्तोका, जबानी हिसाबका, भूमितिका, साहित्यका यानी शुद्ध उच्चारण, व्याकरण, काव्य और श्लोको आदिका ज्ञान करा देना चाहिए। इनमे से किसीके लिए भी पहले लिखना-पढ़ना सिखानेकी बिलकुल जरूरत नही है। बच्चा लिखना सीखे, इससे पहले उसे पढना सिखाना चाहिए। लिखना आखिरमें सिखाया जाये। वर्णमाला लिखनेसे पहले उसे चित्र बनाना सिखाना चाहिए। सीधी लकीर, आडी लकीर, त्रिकोण वगैरह अच्छी तरह बनाने लगे, उसके बाद अक्षरोके भी चित्र ही बनाये। इस ढगसे काम लिया जाये तो बच्चोको कष्ट न होगा और बहुत-कुछ ज्ञान जबानी ही प्राप्त कर लेनेके बाद जब वे अक्षर बनायेंगे तो वे मोतीके दाने-जैसे होंगे। 'दासबोध'[2] मे अक्षरोपर एक प्रकरण है, जो पढने और विचार करने लायक है। दिलीपके अक्षर देखकर यह लिखनेकी इच्छा हुई। इसमे जितना आपको लेने लायक लगे, उतना लेकर बाकीको भूल जाये। मेरे बहुत खराब अक्षर मेरी रायका समर्थन करते है। मेरे अक्षर गलत शिक्षाका परिणाम है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग – १, पृ० ३९०-१

१. यह पत्र मथुरादास त्रिकमजीके पुत्र दिलीप के निजी शिक्षकको लिखा गया था। किन्तु साधन-सूत्रसे उनके नामका पता नहीं चलता।

२. समर्थ गुरु रामदास-कृत।

११. पत्र : विमलकिशोर मेहरोत्राको

१ सितम्बर, १९३२

चि० विमलकिशोर[1],

सब 'गीता' पढ़ते है क्योकि 'गीता' हमारी माता है और जब कुछ प्रश्न उठता है तो उसे पूछते हैं।

बापू

सी० डब्ल्यू० ४९८३ से; सौजन्य: परशुराम मेहरोत्रा। जी० एन० ७५०६ से भी

१२. पत्र : रामचन्द्र ना० खरेको

२ सितम्बर, १९३२

चि० रामचन्द्र,[2]

तेरा पत्र मिला। हीराकी कहानी अच्छी बन पडी है। कह सकते है कि तूने उसे ठीक लिखा है। किताबमे से देखकर लिखी है न? हीराकी ही तरह बहादुर और वफादार बनना। तू शालासे क्यो निकल गया, यह तूने नही लिखा, लेकिन मेरे पास तेरे खिलाफ तीन जगहोसे शिकायते आई है। तुझमे दोष है, यह तो मै जानता ही हूँ। लेकिन, मै समझता था कि अब वे कम हुए होगे और तू सुधरनेका प्रयत्न कर रहा होगा। बाहरसे तो तू सुधरा जान पडता है। तेरे अक्षर अच्छे हैं, और तू ठीक लिखना भी जानता है। लेकिन हृदय भी उतना ही अच्छा होना चाहिए, शुद्ध होना चाहिए। जोड़-तोड़ नही करनी चाहिए, झूठ नही बोलना चाहिए। असन्तोषके जो-जो कारण हो, मुझे बता। पण्डितजी की आज्ञानुसार तो तुझे चलना ही चाहिए। लगता है, तूने अपनी प्रतिज्ञाका पालन नही किया है। दिल खोलकर मुझे सब-कुछ साफ-साफ लिखना।

भगवान् तुझे अच्छा बनाये।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २९७) से; सौजन्य: लक्ष्मीबहन ना० खरे

१. परशुराम मेहरोत्राके पुत्र।

२. नारायण मोरेश्वर खरेके पुत्र।

१३. पत्र : योगा बी० खरेको

२ सितम्बर, १९३२

चि० योगा,[1]

इसे तू पढ़ या समझ न सके तो पण्डितजी से पढवा लेना। तुझे जैसा अच्छा अभी लगता है, वैसा ही सदा लगता रहे और तेरा स्वास्थ्य जैसा अच्छा आज है, वैसा ही रहे और और भी सुधरे। जिसमे सीखनेकी इच्छा है, उसके लिए आश्रममे सीखने लायक बहुत है। वह सब तू धीरे-धीरे सीख लेना। मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३११) से; सौजन्य : लक्ष्मीबहन ना० खरे

१४. एक पत्र

२ सितम्बर, १९३२

यह विश्वास रख कि चाहे जैसा राक्षसी वृत्तिका आदमी हमला करे, तो भी उसका मुकाबला करनेकी ताकत ईश्वर तुझे अवश्य देगा। जरा भी डरना नही चाहिए। ऐसी नौबत आ जाये तो जितना जोर हो सब लगा देना चाहिए। इसका नाम हिंसा नही है। चूहा बिल्लीकी हिंसा कर ही नही सकता, मगर चूहा ठान ले तो बिल्ली उसे जीते-जी नही खा सकती। इस तरह बिल्लीके मुँहसे निकल जानेवाला चूहा बिल्लीकी हिंसा नही करता। क्या यह बात समझमे आती है? यह याद रखना चाहिए कि व्यभिचारी पुरुष हमेशा कायर होता है। वह पवित्र स्त्रीका तेज सह नही सकता। उसके गरजनेसे वह काँपने लगता है।

[गुजरातीमे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग – १, पृ० ३९१-२

१. नारायण मोरेश्वर खरेकी भतीजी।

१५. एक पत्र

२ सितम्बर, १९३२

अपने प्रियजनोपर हमे ऐसा प्रेम नही रखना चाहिए कि हमे उनके हर शब्दसे उनके नाराज होनेकी ही गन्ध आये। हममे इतना आत्मविश्वास होना चाहिए कि प्रियजन हमसे नाराज ही नही होगे। यदि ऐसा नही होगा, तो हम प्रियजनोके साथ अन्याय करने लगेगे।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग – १, पृ० ३९२

१६. पत्र : हीरालाल शर्माको

२ सितम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

तुम्हारा पत्र मिला। पश्चिममें प्राकृतिक चिकित्साकी सस्थाओके विषयमे तुमने जो सुना या पढा है, वह तो दूरके ढोल सुहावनेवाली बात है। एक ऐसी सस्थाके विषयमे, जिसका अत्यधिक विज्ञापन किया गया था, जब एक मित्रने पूछ-ताछ की तो ज्ञात हुआ कि उस स्थानके लोग भी उसके सम्बन्धमे कुछ नही जानते। इसका अर्थ यह नही कि उनमे कुछ है ही नही। मेरा तात्पर्य इतना ही है कि यह समूचा विज्ञान अभी अपनी शैशवावस्थामे है, और इन सस्थाओने चिकित्साकी सबके लिए कोई एक समान विधि नही अपनाई है। वे जो-कुछ भी है, अपने सस्थापकोके मौलिक अनुसधानोके ही फल है। हम भारतीयोको तो अपनी परिस्थितियोके अनुसार ही अपना अनुसधान स्वय करना होगा। उनसे हमे जो-कुछ मिल सकता है, वह उनके प्रकाशित साहित्यसे हम आसानीसे पा सकते हैं।

जहाँतक खुद तुम्हारे स्वास्थ्यका सम्बन्ध है, तुम्हारे पत्रसे तो यही लगता है कि वह बहुत अच्छा नही है। रूढिवादी चिकित्सकोका अनुकरण करनेसे तुम्हारा काम नही चलेगा। तुम तो एक पथ-प्रदर्शक हो, अतएव तुम्हे ऐसा काम करके दिखाना है जो कठिनसे-कठिन कसौटीपर भी खरा उतरे।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने पश्चिम जानेका विचार छोड दिया है। अपने शरीर को ही बनाओ। ऐसा करनेसे तुम बहुत-से आविष्कार स्वय कर लोगे। हो सकता

है कि तुम्हारी प्रगति धीमी हो, परन्तु यदि मूलाधार ठोस है तो वह जितनी भी होगी, सुनिश्चित होगी। . .

तुम्हारा शुभचिन्तक,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष: १९३२-४८, पृ० १२-३

१७. पत्र : डॉ० सुरेशचन्द्र बनर्जीको

३ सितम्बर, १९३२

प्रिय सुरेश,

तुम्हारा दूसरा पत्र पाकर बडी प्रसन्नता हुई। ईश्वर करे, तुम्हारी आशा पूरी हो। तुम्हारा असाधारण प्रयत्न निश्चय ही सफलताके योग्य है। अपनी प्रगति समय-समयपर सूचित करते रहना। मालवीयजी तुम्हे देखने और आशीर्वाद देने गये, यह उनके अनुरूप ही था।[1]

तुम्हे या तुम्हारी सहायता करनेवाले डॉक्टरोको क्या तुम्हारी बीमारीके कारण का पता लगा है? तुम तो हर तरहसे बिलकुल स्वस्थ दीखते थे, फिर एक खतरनाक रोगके कीटाणुओके शिकार कैसे हो गये? या कि यह मानूं कि चिकित्साविज्ञान अब भी इतना अपूर्ण है कि हम देहधारी जिन बहुत सारे रोगोके शिकार होते हैं, उनके कारणोका निश्चित रूपसे पता लगानेमे वह अक्षम है?

हम सबकी ओरसे स्नेह।

बापू

[अंग्रेजीसे]
एडवांस, १३-९-१९३२

१. सुरेशचन्द्र बनर्जी कलकत्तामें क्षय रोगका इलाज करा रहे थे।

१८. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

३ सितम्बर, १९३२

पण्डितजी,

मन्दिरके विषयमे तुमने ठीक लिखा। अब भी तुम्हारे मनमें कुछ हो, तो लिखना। इस सम्बन्धमे मेरी ही बात चले, ऐसा मेरा आग्रह नही है। इस विषयमे मेरे विचार निश्चित हो चुके है। अपने विषयमे मैंने कहा है कि मै मूर्तिपूजक भी हूँ और मूर्तिभंजक भी। शरीरधारीकी कल्पनाका ईश्वर मूर्तिमन्त ही होता है, भले ही वह मूर्ति उसकी कल्पनामे ही रहे, लेकिन वह होती तो है। इस अर्थमे मै मूर्तिपूजक हूँ। लेकिन, किसी भी रूप या आकृतिकी परमेश्वरकी तरह पूजा करनेपर मेरा मन कभी राजी नही हुआ। वहाँ तो मेरे मनमें 'नेति, नेति' का ही स्वर उच्चरित होता है। इसीलिए मैंने अपनेको मूर्तिभजक [भी] माना है। इस तरह विचार करते हुए मेरे मनमे हमेशा यही खयाल रहा है कि हमे आश्रममे मन्दिर नही बनाना चाहिए। इसीलिए, प्रार्थनाके लिए भी हमने मकान नही बनवाया। हम आकाशकी छत और दिशाओकी दीवार बनाकर उसीमे बैठते है। यदि हमे सभी धर्मोके प्रति समभाव रखना हो तो हमारी स्थिति यही होनी चाहिए। आजकल वेदादिका थोड़ा-बहुत परिचय पानेकी कोशिश कर रहा हूँ। उनमे भी ऐसा ही देखता हूँ। उनमे कही भी मूर्तिपूजाके लिए स्थान नही देखता। फिर भी, हिन्दू धर्ममे मूर्तिपूजाका स्थान है। इसलिए हमे उसका विरोध नही करना चाहिए। लेकिन मूर्तिकी पूजा आवश्यक नही है। यह तो व्यक्तिकी इच्छापर निर्भर है। इसलिए मुझे लगता है कि हम एक सस्थाके रूपमे बिना मन्दिरके ही रहे तो अच्छा। जिसे मैंने समाधि माना है, वह यदि मन्दिर हो तो भी उसे सार्वजनिक सस्था न बनाया जाये। इस जमीनका मालिक इसे गिरा कर इसकी ईंटे ले जाना चाहता था। मैंने उसका पैसा भरकर उस स्थानको बचा लिया। लेकिन उसे मन्दिर बनानेकी मेरी इच्छा नही है। जिन लोगोको इस प्रश्नकी समझ है उनके साथ बातचीत करके तुम्हे मुझे पुन. कुछ लिखना हो तो लिखना। कोई संकोच न करना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २३३) से; सौजन्य : लक्ष्मीबहन ना० खरे

१९. पत्र : परशुराम मेहरोत्राको

३ सितम्बर, १९३२

चि० परसराम,

तुम्हारा पत्र और प्रश्न मिले। तुम ही मुझे छोड दो, यह तो सम्भव है— वैसे, चाहता तो यही हूँ कि ऐसा न हो—लेकिन मै तो तुम्हे कभी छोडनेवाला नही हूँ, क्योकि मुझे तो तुमसे बहुत सारी सेवाएँ लेनी है। मेरा एक नुस्खा है, उसे कभी भूलना मत. जब भी अपने साथीके प्रति मनमे रोष अथवा कुभाव उत्पन्न हो, या ऐसा लगे कि उसने अन्याय किया है तो तुरन्त अपने भीतर गहरे उतरकर मनमे विचार करना चाहिए और कहना चाहिए 'मै इसी लायक हूँ। इसमें साथीका कोई दोष नही, मेरा ही दोष है। जाने-अनजाने मैंने ही उसे इसका कारण दिया होगा, तभी वह मेरे प्रति ऐसा रोष करता है या कुभाव दिखाता है।' जब मनको ऐसा निश्चय हो जाये और वह शान्त हो जाये तब तुरन्त साथीके पास पहुँचना चाहिए और उससे पूछना चाहिए कि उसने तुममे कौन-सा दोष देखा है। और वह जो दोष बताये उसे अपने भीतर ढूंढकर दूर करनेका प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा करनेसे हमेशा शान्ति रहेगी और ससारके प्रति उदार भाव पैदा होगा तथा फिर किसीकी कोई बात हमे बुरी नही लगेगी।

अगर मालिशसे दर्द सचमुच कम हुआ हो तो यह अच्छा ही है। इस विषयमे अपनेको कभी धोखा मत देना। शल्य-क्रिया करानी ही पड़े तो उससे डरना नही।

वह नाव डूब गई, उसमे दैवयोग तो था ही, लेकिन उससे हमारे लोगोकी भीरुता भी प्रकट होती है। यह इस बातका भी प्रमाण है कि हममें मृत्युका कितना अधिक भय है। यदि लोग यह समझ लेते कि यह साँप सबको तो काट नही सकता, तो कोई भी एक आदमी उसे उठाकर नदीमे फेक सकता था अथवा मारना चाहता तो मार सकता था। लेकिन जहाँ किसीको किसीकी पडी ही न हो और सभी भयभीत हो वहाँ तो यही नतीजा निकलेगा। इससे हमे तो यही सार निकालना है कि हमे अपने मनमे किसी तरहका भय नही रखना चाहिए और ऐसे कठिन प्रसग आनेपर यही प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर हमे सुबुद्धि दे।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५०७) से। सी० डब्ल्यू० ४९८४ से भी, सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा

२०. पत्र : विद्या आर० पटेलको

३ सितम्बर, १९३२

चि० विद्या,

तेरा पत्र मिला। अपनी लिखावटमें खूब सुधार कर। प्रेमाबहनसे पूछ कि यह कैसे हो सकता है। बिस्तरपर जाते ही तुरन्त नींद न आये तो आँखें बन्द करके रामनाम रटना चाहिए। बस, नींद आ ही जायेगी।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९४३२) से, सौजन्य रवीन्द्र आर० पटेल

२१. पत्र : सुलोचनाको

३ सितम्बर, १९३२

चि० सुलोचना,

तेरे अक्षर ठीक हैं। लेकिन अब भी बहुत अधिक सुधारकी गुंजाइश है।
कातनेकी गति क्या है?
गुलाब तुझे क्यों मारती है?
सब-कुछ ठीक-ठीक सीखना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७३८) से।

२२. पत्र : काशी नागरी प्रचारिणी सभाके मन्त्रीको[1]

३ सितम्बर, १९३२

प्रधान मत्रीजी,

आपका खत मुझे मिला है। यद्यपि आचार्य श्री महावीरप्रसादजी से मेरा सीधा परिचय नहिं तदपि उनकी भाषा-सेवासे मै अपरिचित नहिं हु। उनके ७० वर्ष प्रवेश-के अवसरपर उनका सम्मान हिंदी प्रेमीयो द्वारा होना सर्वथा उचित समझता हु।

आपका,
मोहनदास गांधी

श्री प्रधान मत्रीजी
नागरी प्रचारिणी सभा
बनारस सिटी

सी० डब्ल्यू० ९६६३ से। सौजन्य . भारत कला-भवन

२३. पत्र : नारणदास गांधीको

३/४ सितम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मगलवारको मिला। नियमानुसार कानाके[2] बारेमें अलगसे भेजा पत्र भी मिला। रामदासको जब और जो खबर देना जरूरी लगता है, देता रहता हूँ। आज पोस्टकार्ड आनेकी आशा थी, लेकिन आया नही। कुरैशीके[3] ऑपरेशनका तार मुझे प्यार अलीने[4] भेजा था। उसका पत्र भी आ गया है। चम्पाको[5] कार्ड लिखा था, वह मिल गया होगा। जो नई लडकियाँ आती है, उनके लिए यथासम्भव शिक्षाकी व्यवस्था करना। मुझे ऐसा लगता रहता है कि इस तरहके कार्योके बारेमे सोचकर उनकी योजना बनानेके लिए तुम्हे कुछ ज्यादा अवकाश मिलना ही चाहिए।

१. इस पत्रका ब्लाक महावीरप्रसाद द्विवेदीके सत्तरवें जन्म-दिवसपर भेंट किये गये द्विवेदी अभि-नन्दन ग्रंथमें प्रकाशित हुआ था।
२. रामदास गांधीके पुत्र।
३. गुलाम रसूल कुरैशी।
४. बम्बईके एक व्यापारी।
५. डॉ० प्राणजीवन मेहताके लड़के रतिलाल मेहताकी पत्नी।

लीलाधरके[1] लिए बहुत किया है। वह अपना स्थान या स्वार्थ भी न समझे तो हम कर भी क्या सकते थे? तुम्हे जो उचित लगे वही करना। इन्दु[2] माँ-बापके प्रेमका बहुत भूखा है। उसके हृदयको समझनेकी कोशिश करना। कुसुमको[3] लिखा पत्र पढ़ना। वह समझदारीसे उपचार करेगी तो सब-कुछ ठीक हो जायेगा। लेकिन, यदि वह केवल तुम्हे प्रसन्न करने-भरको ही विश्राम लेगी और उतना ही उपचार करेगी तो या तो शरीर खो देगी या फिर अपग होकर बादमे रोती रहेगी। इस बारके साप्ताहिक लेखमे नारायण अप्पाके किस्सेके बारेमे लिखनेवाला हूँ। इसमे कुछ नये-से लगनेवाले विचार आयेगे। उन्हे तुम खुद भी समझना और फिर लड़कियोको भी समझाना।

बुधवारसे मैने दूध शुरू किया है। इसका मुख्य कारण तो यह है कि मै देखना चाहता हूँ कि दूध लेनेपर भी बाजरा मेरी कोष्ठबद्धता दूर करनेमे सहायक रहता है या नही। आज शनिवार 'है। आजतक तो कोई बुरा असर नही हुआ है और अन्यथा मेरी तबीयत अच्छी ही चल रही है। बाजरा और केला अभी प्रतिकूल तो साबित नही हुए है।

परशुराम तो, जैसा तुम कहते हो, वैसा ही है। वह बहुत अव्यवस्थित होनेके बावजूद मुझे सेवाके उपयुक्त आदमी लगता है। उसका हेतु अच्छा होता है। अकसर खूब मेहनत करनेकी शक्तिका परिचय देता है।

शकरभाईका हाथ अब तो बिलकुल ठीक हो जाना चाहिए। वह अस्थि-चिकित्सक गाँवका सीखा हुआ है या उसने विलायती पद्धतिकी शिक्षा ली है?

विनोबाकी योजना बहुत अच्छी है। यदि योग्य लोग हो तो बहुत काम हो सकता है। छक्कडदास और केशूकी[4] पूनियाँ आज ही मिली। अब पतलेसे-पतला तकुआ चाहिए। तभी यहाँका प्रयोग पूर्ण रूपसे सम्पन्न किया जा सकता है। पुस्तके भी मिली है। मैने जो पुस्तके मँगवाई थी, उनमे से कितनी भेजी गई है, यह तो शायद देखकर ही लिखूँगा।

काकाके दूध-घीका जो पैसा हमे मिलता है, वह मिलना चाहिए, क्योकि उन्हे बेलगाँवमे ये चीजे सरकारकी ओरसे मिलती थी। वे उन्हे पूरा दूध न दे पाते हो तो हमे तो देना ही है। लेकिन 'छाछमे माखन जाये और नार फूहड कहलाये'[5], यह तो हमे नही होने देना है। जरूरी लगे तो सुपरिंटेंडेंटसे मिलकर बात कर लेना।

१. आश्रमके पास स्थित वाडज नामक स्थानके एक दुकानदार; १९३१ में जब उनकी पत्नी रुग्ण थीं, तो नारणदास उन्हें और उनके परिवारको आश्रममें ले आये थे।

२. इन्दु पारेख, आश्रम-शालाका एक छात्र।

३. आश्रम-शालाकी छात्रा, व्रजलाल गांधीकी पुत्री।

४. मगनलाल गांधीके पुत्र।

५. गुजरातीकी एक कहावतका यहाँ केवल शाब्दिक अनुवाद दिया गया है।

मगनभाईको[1] लिखे पत्रमें प्रवचनोके[2] [सकलनके] लिए नाम तो सुझाया है। लेकिन, ज्यादा विचार करनेपर मुझे यह लगता है कि अभी उन्हे छपवानेकी उतावली न करे तो हर्ज नही। उन्हे मैंने बहुत जल्दीमे लिखा है; तुम सब उन्हे शुद्ध करके पढ सकते हो, और अगर कोई बात समझमे न आये तो उसमें भी मै बहुत चिन्ताकी बात नही मानता। कही-कही वाक्य अस्पष्ट रह गये हो तो भी कोई हर्ज नही। लिखकर फिर पढ ही जाऊँ, ऐसा नही हो पाता, इसलिए उनके प्रकाशनसे पहले प्रकाशनकी दृष्टिसे उन्हे पढ़ जानेका लोभ मेरे मनमें है। इसलिए मै यह कहना चाहता हूँ कि अब भी अगर इस दिशामें कोई खर्च न किया हो तो छपाई मुलतवी रखो। लेकिन, अगर तुमको, मगनभाई को, पण्डितजी को और छगनलालको — यदि वह वहाँ हो तो — उसके अर्थके बारेमे कही कोई उलझन न हो और जहाँ भाषा अस्पष्ट हो वहाँ उसे स्पष्ट करना सम्भव हुआ हो तो खुशीसे छापो। तुमने 'मगल-प्रभात', भाग २, यह नाम सुझाया है। लेकिन मुझे यह ठीक नही लगा। कारण, इस बारके लेख कुछ अलग दृष्टिसे लिखे गये है, मतलब यह कि मेरी दृष्टिमें मुख्यत आश्रमवासी ही रहे हैं। इसलिए मैंने 'आश्रमवासी प्रत्ये'[3], यह नाम सुझाया है, ताकि उसकी मर्यादा समझी जा सके और जो अपनेको आश्रमवासी-जैसा ही माने, वे समझें कि ये उनको ध्यानमे रखकर लिखे गये है। लेकिन मेरा ऐसा कोई आग्रह नही है कि यही नाम रखा जाये। यदि तुम सबको कोई दूसरा नाम ठीक लगे तो वही रखना।

मजुलाके[4] धर्मसंकटके बारेमें सोचना। कॉडलिवर ऑयलसे वह चगी हो सकती हो तो उसे कॉडलिवर ऑयल देना ही कदाचित् धर्म हो। मजुला स्वतन्त्र रूपसे स्वय विचार कर सकती हो, ऐसा तो नही ही है। शायद वह काशी[5] पर भरोसा रखती हो। उस दशामें वह उसीकी इच्छाके अनुसार बरते, यह ठीक होगा। अगर[6] काशीका यह आग्रह हो कि यह न दिया जाये तो नही देना चाहिए। लेकिन, अगर मजुला

१. मगनभाई देसाई।

२. आश्रमवासियोंके लिए विशेष अभिरुचिके विषयोंपर लिखे गये; इन्हें गांधीजी ने २९ फरवरी, १९३२ से ११ सितम्बर, १९३२ तक नारणदास गाधीके पत्रोंके साथ भेजा था। ये लेखन-तिथिके अन्तर्गत खण्ड ४९, पृ० १६१ से शुरू होते हैं।

३. पहले तो ये प्रवचन इसी नामसे छपे, लेकिन बादमें पुस्तकका नाम बदलकर आश्रम जीवन कर दिया गया।

४. व्रजलाल गाधीकी पुत्री।

५. व्रजलाल गाधीकी विधवा।

६. साधन-सूत्रमें इससे आगे जो-कुछ लिखा मिलता है, वह इस पत्रका अंश नहीं जान पडता। विषय-वस्तुको देखनेसे लगता है कि इस पत्रके दो पृष्ठ गलतीसे उस पत्रके दो पृष्ठोंके साथ मिल गये जो [७]/११ सितम्बर, १९३२ को लिखा गया था; देखिए पृ० ४९ की पाद-टिप्पणी २।

इस पत्रका आगेका अश नारणदास गाधीको लिखे उस पत्रसे लिया गया है जो बापुना पत्रो-९: श्री नारणदास गांधीने, भाग-१, नामक पुस्तकमें गलतीसे ४ जुलाई १९३२ की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत छपा है। "संकटमें बहनें क्या करें", ४-९-१९३२, शीर्षक लेखके उल्लेखसे इस बातकी पुष्टि होती है।

बच्ची होते हुए भी थोड़ा-बहुत समझकर लेनेका आग्रह करे तो उसके आग्रहका भी खयाल करना मै योग्य मानता हूँ। अब जो करना उचित लगे, करना।

आश्रमका इतिहास लिखते हुए मनमे एक विचार आया है। मुझे धुंधला-सा स्मरण है कि इस विषयमें पहले भी मै तुम्हे लिख चुका हूँ। मुझे नही मालूम कि आश्रमकी स्थापनाके दिनसे आजतक जो लोग थोड़े-बहुत समयके लिए आश्रममे रहनेके लिए आये, उनके नामोकी सूची हमारे पास है या नही। यदि नही हो तो उन्हे याद करके लिखा जा सकता है। उनकी पजिका बना लेनी चाहिए और उसमे उनके सम्पूर्ण नाम, वे जहाँके रहनेवाले थे उन स्थानोके नाम, उम्र, पुराना धन्धा, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति आदि तथ्य होने चाहिए। आश्रममे विशेष क्या सीखा, आश्रम क्यो छोड़ा, अभी कहाँ है, यह सब भी दर्ज होना चाहिए। आगे जो नये लोग आयें उनके नाम इस बहीमे दर्ज किये जाते रहें, जिससे एक ही बहीसे इस तरहकी जानकारी मिल सके। अभी तो यह सब जाननेमे मेरा हेतु इतना ही है कि आश्रममें कितने लोग आये, और कितने किस तरहसे तैयार हुए और वे किस तरहके कार्योंमे लग गये है, यह सब मालूम कर सकूँ। यदि आजतक हमारे पास ऐसी कोई सूची न रही हो तो जैसे-जैसे देर होगी, यह काम ज्यादा मुश्किल होता जायेगा।

तुमने सैंडलके तलेके लिए दूसरी बार जो चमड़ा भेजा था, वह भी खुट गया है। यह चमडा इतना ज्यादा कच्चा होता है कि यहाँ उसका बहुत कम उपयोग होनेपर भी मुश्किलसे महीना-भर ही चल पाता है। कजूसी बरतते हुए मैंने तलेकी मरम्मतके लिए चमडेके छोटे-छोटे टुकडे भी भेजे है। लेकिन हमे तो तलेके लिए मरे ढोरका जो चमड़ा मिल सकता है, उसीसे निर्वाह करना है। इसलिए, एक-दो टुकडे फिर भेज दो।

४ [सितम्बर], १९३२[1]

हेमप्रभादेवी[2] मुझे नियमपूर्वक पत्र लिखनेवाली बहन थी। इन दिनो उनका पत्र नही आता। हाँ, बीचमें एक पोस्टकार्ड जरूर आया था। तुम्हारे पास उनके पत्र आते है क्या? आते हो तो उनके स्वास्थ्यका समाचार लिखना। उन्हे भी एक पोस्टकार्ड या पत्र लिख भेजना और कहना कि मैंने उनका पत्र न आनेकी शिकायत की है। उनके पत्र मुझे नियमपूर्वक मिलने चाहिए। यदि वे नियमपूर्वक लिखती रही हो और उन पत्रोकी तारीखे भी लिख रखी हो तो मुझे भेजे। सम्भव है कि वे लिखती रही हो। कई बार पत्र भटक भी जाते है। यहाँ तो गड़बड़ होना सम्भव नही है, लेकिन यह हो सकता है कि पत्र यहाँतक पहुँचे ही न हो।

१. साधन-सूत्रमें "४-७-१९३२" दिया गया है।

२. सतीशचन्द्र दासगुप्तकी पत्नी।

रजिस्ट्रीसे भेजी अनन्तपुरकी रिपोर्टकी[1] पहुँचकी रसीद तुमने भेज दी होगी। साथमे देवदासका भेजा फोटो भेज रहा हूँ। बा को भी दिखाना।

बापू

[पुनश्च :]

इतना लिखनेके बाद तुरन्त बहनोके विषयमें लेख लिखने बैठ गया। अभी पूरा किया है। मुझे लगता है कि यह बहुत महत्त्वका है। लेकिन शायद समझमे न आये। यदि तुम इसे पूरा समझ न पाओ तो नये लोगोको मत पढवाओ। मुझे फिर लिखो। अगर इसका सत्य तुम्हारी समझमे आ जाये और तुम उस तमाचेमें अहिंसा देख सको तो इसे [उनके सामने] मजेसे पढ जाओ, और जो शकाएँ उठे उनका समाधान करते जाओ। मेरी सलाह तो यही है। तुम पढकर समझ जाओ तो फिर पण्डितजी तथा अन्य वरिष्ठ लोगोको पढनेको दो। प्रेमा भी पढे और अगर ये सब इसको समझ जायें तो सबको, और चूँकि यह मुख्यत बहनोके लिए है, इसलिए उन्हे पढनेको दो। इसके छपवानेकी तो कोई बात ही नही है। उससे अनर्थ होते देर नही लगेगी। जिनको अहिंसाका सस्कार है, वे तो समझेंगे ही, कमसे-कम अनर्थ तो नही ही करेगे। ऐसे लेख मेरे जेलसे निकलनेके बाद ही प्रकाशित किये जा सकते है। अभी तो तुम सब समझ लो तो यही काफी है। यदि मेरी कल्पना और मेरा अनुभव सही है तो कहूँगा कि इसमे प्रस्तुत किये गये विचारोपर जब अमल किया जायेगा तो अधिकाश लोगोको उनमे निहित सत्य निश्चय ही प्रकट होगा।

बापू

[पुनश्च :]

कुल ४८ पत्र है, ३९ धागेसे एक साथ नत्थी किये हुए है, और ८ अलग-अलग है तथा एक फोटो भी है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) और बापुना पत्रो–९ : श्री नारणदास गांधीने, भाग-१, पृ० ४६३-७ से।

१. देखिए खण्ड ४९, पृष्ठ ४०३।

२४. संकटमें बहनें क्या करें ?

[१४ सितम्बर, १९३२][1]

अहिंसापर विचार करते समय [एक प्रश्न यह उठाया जाता है कि] यदि किसी बहनपर कोई राक्षसी वृत्तिका पुरुष हमला करने आये और उस समय यदि वहाँ कोई पुरुष हो तो क्या उसे शस्त्रबलसे उस बहनके शीलकी रक्षा नही करनी चाहिए? क्या बहनोको स्वय शस्त्र चलानेकी शिक्षा लेकर अपनी रक्षा करना नही सीखना चाहिए? इस सम्बन्धमे मैं अपनी राय दे चुका हूँ। शस्त्रबलका प्रयोग करना निश्चय ही हिंसा-दोष माना जायेगा। किन्तु इसका ऐसा अर्थ मैंने कभी किसीको नही करने दिया कि पास खड़े हुए पुरुष या स्त्रीको उस बहनकी रक्षा नही करनी चाहिए और उसके शील-भगको सहन कर लेना चाहिए। इसके विपरीत मैंने तो यह कहा है कि जो पुरुष इस प्रकार शील-भंग होने देगा, वह कायर माना जायेगा। वह हिंसामे भागीदार होगा क्योकि कायरतामे ही हिंसा छिपी हुई है। मेरा यह दृढ विश्वास है कि कायरकी हिंसाकी अपेक्षा वीरकी हिंसा बहुत कम दोषपूर्ण है। किसी वीर पुरुष या स्त्रीको अहिंसाका पाठ पढाया जा सकता है किन्तु किसी कायरको यह पाठ पढाना लगभग असम्भव जान पडता है। उन सब बातोको दुहरानेके लिए मैंने यह लेख आरम्भ नही किया है। ये सब बाते तो मेरे बहुत-से लेखोमे जगह-जगह मिल जायेगी।

एक बात जो मैंने शायद कही नही लिखी, उसे जरूर यहाँ लिखना चाहता हूँ। आश्रमकी बहनोको जबिया आदिके दाव-पेच सीखनेसे मैंने रोका है। जो बहन अपने शीलकी रक्षाके लिए जबिया या 'गोठी' पर निर्भर रहती है, वह किसी दिन धोखा खाती है। यदि जबिया या 'गोठी' को कोई छीन ले तो वह बलहीन हो जायेगी और इस प्रकार उसके राक्षसके चगुलमे फँसनेकी सम्भावना बनी रहती है। यह प्रसग . . .[2] सीता है। सीताके पास कोई शस्त्र नही था। किन्तु उनके पास आत्मिक बल था। अत: मलिन स्पर्श करनेके पहले रावणके लिए उनकी सम्मति लेना आवश्यक था। बहनोमे ऐसा ही आत्मविश्वास होना चाहिए और इसी कारण हमने विशेष रूपसे बहनोके लिए द्रौपदीकी प्रार्थना आरम्भ की है। किन्तु यह तो आदर्शकी बात हुई। जिस बहनके पास राक्षस आ खडा हुआ है, वह उस समय क्या करे? यदि उसमे सचमुच वीरता होगी और करुणा भी होगी तो वह उससे डरनेके बजाय अपनी तेजोमय करुणाके द्वारा ही उसे पिघला देगी। किन्तु मान लिया जाये कि उस बहनमे ऐसी भावना उत्पन्न नही हुई तो उसमे क्रोधकी भावना तो होगी

१. **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-१, पृ० ३९४-५।
२. यहाँ कुछ शब्द अस्पष्ट होनेके कारण पढ़े नही जा सके।

ही। इस क्रोधसे प्रेरित होकर वह उस राक्षसको तमाचा मारेगी और ऐसी चीख-पुकार मचायेगी कि वह वहाँसे भाग जायेगा। या फिर वह वही उसके पैर पड़ेगा। कहनेका तात्पर्य यह कि वहन अपने शारीरिक वलका पूरी तरह प्रयोग करेगी। तो क्या यह हिंसा नही हुई? यदि ऐसा ही है तो फिर हथियार क्यो न रखा जाये? मेरा अभिप्राय यह है कि हथियार रखने और उन्हे चलाना सीखनेमे तो हिंसा है किन्तु उपर्युक्त परिस्थितिमे तमाचा मारने, नोचने-खसोटने आदिमे हिंसा नही है। यदि चूहे द्वारा बिल्लीको काटनेमे हिंसा होती हो तभी उक्त स्थितिमे पड़ी हुई स्त्रीका वैसा व्यवहार भी हिंसा माना जायेगा। तमाचा मारनेवाली वहन अपने तमाचेपर विश्वास नही करती बल्कि उसका विश्वास अपने प्रभुपर है। अलवत्ता, उसके मनमें करुणा उत्पन्न नही हुई है। क्रोध करना तो सभीको आता है। उक्त वहन क्रोधके द्वारा अपना विरोध प्रकट करती है। व्यभिचारी पुरुष जव किसी वहनके पास जाता है तो वह यह मान लेता है कि उक्त वहनको वह वशमें कर लेगा अर्थात् आखिरकार वह भी कामातुर हो उठेगी। वह वहन यह कैसे बताये कि यह असम्भव है? या तो अपनी शान्त किन्तु प्रचण्ड करुणासे अथवा अपने कोलाहल और छटपटाहटसे! तमाचा आदि मारना तो वैसा ही है जैसे बिल्लीके सामने चूहेकी छटपटाहट। उस वहनके तमाचेसे व्यभिचारी व्यक्तिको किसी प्रकारकी शारीरिक चोट तो नही लगती। यदि हम जरा गहराईमे उतरे तो यह वात स्पष्ट हो जायेगी। यहाँ मै राक्षसी वल-वाली स्त्रियोकी वात नही कह रहा हूँ। ऐसी स्त्री तो अपने राक्षसी बलके घमण्डमे भूली होगी और यदि उसकी अपेक्षा ज्यादा बलवान व्यक्ति आ पहुँचे तो शायद वह आत्मसमर्पण कर देगी। यहाँ मेरी नजरके सामने आश्रमकी वहनो-जैसी शारीरिक वलसे रहित किन्तु आत्मवलमे विश्वास करनेवाली वहनें या वालाएँ है। उनका तमाचा हिंसाकी निशानी नही वल्कि उनके विरोधकी पुकार है। उनकी यह पुकार उस व्यभिचारीको दीन वना देगी, क्योकि गुनाह कायर होता है। वह व्यभिचारी व्यक्ति यह जानता है कि वह गुनाह कर रहा था। मेरे इस सुझावके पीछे यह विश्वास है कि वह वहन मृत्युपर्यन्त उस पुरुषको कदापि आत्मसमर्पण नही करेगी। उसका यह क्रोध, उसकी यह जागृति, स्वय उसके लिए और उसी प्रकार उस व्यक्ति के लिए, उसके इस निश्चयकी सूचक है कि वह मरनेके लिए तैयार है। क्योकि मै जो कल्पना करता हूँ, वैसा न होकर ऐसा भी हो सकता है कि वह राक्षस उस वहनके क्रोधके कारण दीन वननेके वजाय उसे चोट पहुँचाये और उसे पछाड़नेका निश्चय करे। उस समय यदि वह वहन दव जाये, यदि उसे भगवान् याद न आये, यदि वह अपना आत्मविश्वास खो वैठी हो तव तो वह काँप रही होगी और उसे मरनेकी वात नही सूझेगी। और यदि मरनेकी बात सूझेगी भी तो मरना नही आयेगा। भयभीत और . [1] आत्मविश्वास सर्वथा मन्द हो जाता है। और उसका उत्साह . . . [2] मेरा यह सुझाव वहनोको चेतावनी-भर है। सम्भवत. आजकल उनकी स्थिति ऐसी हो कि वे सोचे 'मुझमे ईश्वरके प्रति इतना विश्वास नही है कि मै

१ व २. साधन-सूत्रमें स्पष्ट न होने कारण पढा नही जा सका।

अपनी पवित्रताके बलपर ही राक्षसको भगा सकूँ। बापूने कहा है कि हथियारका इस्तेमाल नही करना चाहिए क्योकि वह तो हिंसा है। तब तो हाथ भी नही चला सकती, अरे राम, अब मै क्या करूँ? हाय, मै तो मरी।' इस तरहका विचार मेरे लिए असह्य है। ऐसी सीख मैंने किसी भी बहन या भाईको नही दी। मेरी सीखका हेतु किसीको दुर्बल बनाना कदापि नही है। यदि कोई दुर्बल बनता है तो यह बननेवालेकी गलतफहमी है। किन्तु जहाँ मुझे ऐसी गलतफहमीके बारेमे पता चले वहाँ मुझे उसे रोकना चाहिए। इसलिए मैंने अपने विचारको उपर्युक्त सुझाव देकर पूरा किया है। बहने अबला है, इस बातको वे बिलकुल भूल जाये। जिनमे मौतको गले लगानेकी इच्छा और साहस है, उन्हे कदापि निर्बल नही माना जा सकता। जोखिम आत्माको नही, शरीरको है। जो आत्मा शरीरके साथ अपने सम्बन्धको क्षीण बना चुकी है, जो शरीरको तृणवत् बना चुकी है, उसे ससार-भरके राक्षस मिलकर भी सता नही सकते, हरा नही सकते। इस पाठको हर समझदार बालक और बाला सीख ले। यह सीख देनेके लिए ही उपर्युक्त सुझावका उद्भव हुआ है। 'हाय! मै क्या करूँ', इसके बजाय यह कहना चाहिए· 'मै अपना शरीर और अपने प्राण दे दूँगी किन्तु कायर नही बनूँगी।' उसका तमाचा मारना और नोचना-खसोटना इसी बातका सूचक है। यह अपने-आपमे अहिंसक कार्य है। उसमे शारीरिक क्षति पहुँचाने की शक्ति नही है। अत वह हिंसा नही है बल्कि उसमे राक्षसी मनको हिला देने और तमाचा मारनेवालेको सजग कर देनेकी शक्ति है इसलिए यह अहिंसा ही है।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

२५. पत्र : सेठ गोविन्ददासको

३/४ सितम्बर, १९३२

भाई गोविन्ददास,

मुझे तुम्हारा पत्र और अपनी पैतृक सम्पत्तिका त्याग करते हुए तुमने जो दस्तावेज[1] लिखा है, वह दस्तावेज मिल गया। वे आज ही मेरे हाथ आये है, क्योकि इस बीच वे एक सरकारी दफ्तरसे दूसरे सरकारी दफ्तरमे घूमते रहे। पत्रोसे यह जानकारी मिली है कि मैंने इसके पहले जो पत्र लिखे है, वे तुम्हे बराबर मिलते रहे है।

सम्पत्तिके त्यागके विषयमे तुम्हारा पत्र बहुत मर्मस्पर्शी है, तुम्हारे पिताजी का भी वैसा ही है। उन्होने जो किया उससे भिन्न वे कुछ कर भी नही सकते थे। आसक्तिका त्याग आसान चीज नही है। इस युगके नवयुवकोमे त्यागकी जो भावना प्रकट हुई है, उसकी अपेक्षा हम बूढे लोगोसे नही कर सकते। इसमे तो मुझे कोई

१. सेठ गोविन्ददासने अपनी सम्पत्तिके दानकी घोषणा की थी।

सन्देह है ही नही कि तुम्हारे इस सम्पूर्ण त्यागसे तुम्हारा कल्याण ही होगा। १९२१ की उस घटनाको मै भूल गया था किन्तु अब वह मुझे याद आ रही है। मुझे निश्चय है कि तुम दोनोका प्रेम-सम्बन्ध अब और गहरा हो जायेगा। बहुत सम्भव है कि तुम्हारे पिता अब किसी-न-किसी प्रकारका त्याग करेगे। उनके प्रति तुम पहले जैसा ही भक्तिभाव रखते हो, यह बहुत अच्छी बात है। इस मामलेमे क्या तुम्हे बीदणीदेवीका[1] समर्थन प्राप्त था? क्या वे शिक्षित है? आशा है कि उनका स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधर जायेगा। मै कामना करता हूँ कि तुम्हारा हृदय अधिकाधिक पवित्र होता रहे। सरदार और महादेव भी तुम्हे धन्यवाद देते है। सम्पत्तिके त्यागके विषय मे तुम्हारे इस पत्रका समाचार मैने पढा था किन्तु यहाँसे उसके बारेमे कुछ लिखना मुझे उचित नही मालूम हुआ। लेकिन चूँकि अब तुम्हारा पत्र मुझतक आने दिया गया है इसलिए मै तुम्हे लिख सका हूँ। अलबत्ता, मेरी सलाह है कि तुम इसे समाचार-पत्रोमे मत भेजना।

तुम्हारा,
मोहनदास

[पुनश्च]

इसे लिखनेके बाद मुझे अपने पोस्टकार्डकी पहुँच भी मिल गई है। आशा है बीदणीदेवीका स्वास्थ्य सुधर रहा है।[2]

[अग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०/९

२६. पत्र : सत्यवती चिदम्बरको

४ सितम्बर, १९३२

प्रिय बहन,

आपका पत्र मिला। आप ऐसा क्यो सोचती है कि सत्य तो केवल ईसा मसीह मे आपकी तरह विश्वास करनेमें ही निहित है? फिर, आप यह क्यो मानती है कि सनातनी हिन्दू 'गिरि-प्रवचन' के उपदेशोका पालन नही कर सकता? क्या आपको भरोसा है कि आप सनातनी हिन्दुओको अच्छी तरह जानती-समझती है? और फिर क्या आपको निश्चय है कि आप ईसा और उनकी शिक्षाको ठीक-ठीक समझ गई है? आपके उत्साहकी तो मै सराहना करता हूँ, लेकिन आपकी समझके लिए आपको दाद नही दे सकता। गत पैंतालीस वर्षोसे मै प्रार्थना और मनन करता आ रहा हूँ,

१. सेठ गोविन्ददासकी पत्नी।
२. यह अंश ४ सितम्बरको लिखा गया था।

लेकिन इतनेपर भी न केवल मेरे मनको वैसा कोई आश्वासन प्राप्त नही हो सका है जैसा आश्वासन प्राप्त करनेका श्रेय आप अपनेको देती है, बल्कि उलटे मुझमे इतनी विनय आ गई है जितनी पहले कभी नही थी। अपनी प्रार्थनाका मुझे यही स्पष्ट और दृढ़ उत्तर मिला है कि ईश्वर किसी तिजोरीमे बन्द नही है, कि तुम उसमे किये किसी छोटे छेदके जरिये ही उसतक पहुँच सकते हो। इसके विपरीत, जो विनयी है और जिनका हृदय शुद्ध है, उनके लिए तो वह लाखो-करोडो मार्गोसे प्राप्य है। इसलिए मै तो आपसे यही कह सकता हूँ कि आप उस शिखरसे नीचे उतरिए जहाँ आपने अपने अलावा और किसीके लिए स्थान ही नही छोडा है।

आपके लिए प्रार्थना करते हुए सस्नेह,

आपका,
मो० क० गां०

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-१, पृ० ३९५-६

२७. पत्र : गुलाबको

४ सितम्बर, १९३२

चि० गुलाब,

मुझे विस्तारसे पत्र लिखा, इससे खुशी हुई। तबीयत अच्छी हो गई, यह ठीक हुआ।

मीराबहनसे जितनी बार मिल सको, मिलना और उसकी तबीयतका हाल लिखना। वह तो मुझे लिखती ही रहती है।

भाई तिलकम् वहाँ नही रहता, यह मुझे तुमसे ही मालूम हुआ। आज उसे लिख रहा हूँ और पूछ रहा हूँ। मुझे तो वह बहुत भला युवक लगा है।

इन्दिराके कितने महीने हो गये? नरगिसबहन, जमनाबहन वगैरहसे मिलना होता है क्या?

मुझे लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५०४८) से; सौजन्य : धीरूभाई झवेरी

२८. पत्र : तिलकम्को

४ सितम्बर, १९३२

प्रिय तिलक,

वाह, यह भी खूब रही! मैं तो जानता ही नही था कि तुमने मणिभवन छोड़ दिया है। अब तुम कहाँ रह रहे हो और क्या कर रहे हो? अपनी गतिविधियोका पूरा विवरण भेजना। आशा है, अब तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। क्या मेरा पिछला पत्र मिल गया था?

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५५३) से।

२९. पत्र : छगनलाल जोशीको

४ सितम्बर, १९३२

चि० छगनलाल (जोशी),

इस सप्ताहकी डाकमें तुम्हारा पत्र नही था। ऐसा शायद ही कभी होता है, जब तुम्हारा पत्र नही आता। इसलिए जब नही आता तो बात अखरती है। नारणदासने अपने पत्रमे लिखा था कि तुम धीरूको[1] लेने गये थे। धीरूका हालचाल लिखना।

जब तुम यहाँ [यरवडा कैम्प जेलमें] थे तो मैंने तुम्हे 'फ्लॉवर्स ऑफ सेंट फ्रान्सिस' नामक पुस्तक भेजी थी। क्या उक्त पुस्तक तुम्हारे या अन्य किसीके साथ चली गई है? मोहनलाल[2] लिखते है कि उनके पास जो संग्रह है उसमें यह पुस्तक नही मिली। और मुझे भी वह वापस नही मिली; देखना। इस पुस्तकका विशेष महत्त्व तो इसलिए है कि यूरोपसे एक बहनने उसपर अपनी शुभकामनाएँ लिखकर विशेष रूपसे भेजी है और उसमे बीच-बीचमें निशान भी लगे हुए हैं। यदि याद न आये तो कोई बात नही।

यदि नानाभाईसे[3] मिले हो तो उनकी तबीयतके बारेमें लिखना। आशा है, तुम अपने स्वास्थ्यको ठीक बनाये हुए होगे। सामान्यतः वसुमती मुझे पत्र लिखे बिना

१. छगनलाल जोशीके पुत्र।

२. मोहनलाल एम० भट्ट, नवजीवन प्रेसके भूतपूर्व मैनेजर, जो इन दिनों यरवडा कैम्प जेलमें थे।

३. नानाभाई भट्ट।

नही रहती; किन्तु इस बार यद्यपि उसके [जेलसे] छूटनेके बाद मैंने उसे लिखनेको लिखा था, फिर भी उसका कोई पत्र नही है। यो तो बहुत-सी बहनोने नही लिखा। किन्तु इसमे उतनी विचित्रता नही जान पड़ती, क्योकि वे नियमपूर्वक लिखनेवाली नही थीं। वसुमतीके बारेमे पता लगाना, और अन्य बहनोंको भी चेताना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५०७)से।

३०. पत्र: मणिलाल रे० झवेरीको

४ सितम्बर, १९३२

चि० मणिलाल,[1]

तुम्हारा पत्र मिला। खीमचन्दके खिलाफ कही बातोका मेरे पास तो ढेर-सा लग गया है। और अब उसका तार आया है कि छगनलालके[2] चार पत्रोके मसविदे खुद उसीके बनाये हुए है। अब उसके पत्रकी राह देख रहा हूँ। ऐसा लगता है कि रगून उसे छोड़ देना पड़ा है। मगनलालको[3] तुमने जो सलाह दी है, वह सही है। हमे आशा करनी चाहिए कि ये दोनों भाई कुटुम्बमे मेल-जोल पैदा करेंगे और डॉक्टरका नाम निष्कलक रखेंगे।

तुम्हे जो भी मालूम हो या सूझे, मुझे तो सूचित करते ही रहो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५०४४) से; सौजन्य: धीरूभाई झवेरी

३१. एक पत्र

४ सितम्बर, १९३२

मैं तुम्हारी तरह हारकर नही बैठता, बल्कि कठोरतम हृदयको भी ईश्वर-कृपासे पिघलानेकी आशा रखता हूँ और इसलिए प्रयत्नशील रहता हूँ।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-१, पृ० ३९६

१. रेवाशकर झवेरीके पुत्र।
२. डॉ० प्राणजीवन मेहताके ज्येष्ठ पुत्र।
३. डॉ० प्राणजीवन मेहताके कनिष्ठ पुत्र।

३२. पत्र : अमतुस्सलामको

४ सितम्बर, १९३२

बेटी अमतुस्सलाम,

बहुत अच्छे हरफोंमें गलतियाँ दुरुस्त की हैं। ऐसे ही हमेशा किया करो। सुवाद कहां, सीन कहां, हे कहां, है कहां — इसका कायदा अगर जानती है तो मुझे बता दो। जब तुम्हारे मेरे पाससे अंग्रेजी खत चाहिये, मुझे लिखो और मैं खुशीसे अंग्रेजीमें लिखूंगा। तुम्हारे वास्ते में शान्ति और सेहत चाहता हूं। डा० शर्माने मेरा खत अखबारोंमें छपवाया वह अच्छा नहीं हुआ। मैं उनको लिखूंगा। उस खत[को] पढ़ना।

बापूकी दुआएँ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० २५६) से।

३३. चर्चा : महादेव देसाईके साथ[1]

४ सितम्बर, १९३२

तो फिर तुमने मेरे लेखका[2] तात्पर्य नहीं समझा। मैंने तो यह बताया है कि तमाचा सचेत करता है, निर्भय बनाता है और सबसे बड़ी बात तो यह कि वह मरनेकी शक्ति देता है। जालिम आदमीकी नजरमें यह व्यर्थका विरोध है और वह इसके लिए तैयार ही नहीं होता। अतः उसके भाग जानेकी सम्भावना रहती है। किन्तु इसे मैं गौण बात समझता हूँ। उस स्त्रीमें जो जोश आ जाता है, वह उसे अपने-आपको मृत्युको भेंट देनेकी शक्ति देनेके लिए पर्याप्त है। वह जालिम आदमी उससे लड़े, इसके पहले ही उक्त स्त्री कब-की मृत्युकी शरणमें पहुँच चुकी होती है। क्योंकि वह तो मृतप्राय होकर ही जूझती है, वह प्रहार करनेका खयाल नहीं करती। उसे तो केवल [रामनामकी] रट लगानी है। सभी परिस्थितियोंके लिए मैं यह उपाय सुझाता हूँ तथा यह उन बहनोंके लिए है जो पवित्र हैं और अहिंसाके द्वारा ही अपनी रक्षा करना चाहती हैं। आपबीतीके आधारपर मैंने यह लेख लिखा है। मैं जब उस सलाखको[3] पकड़े ही रहा तब मैंने मन-ही-मन मरनेकी तैयारी कर ली थी। मारनेवालेको मैं चोट नहीं पहुँचा सकता था। किन्तु यदि मेरा हाथ वहाँसे छूट गया होता तो मैं यह जानते हुए भी कि यह व्यर्थ है, अपने हाथ-पाँव तो

१. मौनवार होनेके कारण गांधीजी ने लिखित रूपमें अपने विचार व्यक्त किये थे।

२. देखिए "संकटमें बहनें क्या करें", ४-९-१९३२।

३. पारडीकोपमें जब गांधीजीपर हमला किया गया; देखिए खण्ड ३९, पृ० ९१-२।

चलाता ही रहता, शायद तमाचा मारता या शायद दाँतोसे काटता, किन्तु मरते दम तक जूझता रहता। इस प्रकार जूझते रहनेपर भी उसमे हिंसा न होती, क्योकि मैं उसे चोट पहुँचानेमे असमर्थ था और चोट पहुँचानेका मेरा इरादा भी नही था। मेरा उद्देश्य तो केवल मर जाने और यदि उसकी गहराईमे उतरे तो इस अपमान-जनक परिस्थितिसे मरकर भी मुक्त हो जानेका था। अहिंसाकी यही परीक्षा है, उसका उद्देश्य दु ख देना नही होता और न उसका परिणाम ही दु ख होता है।

म० दे० : यह मैं समझता हूँ, किन्तु पवित्रतम स्त्री भी एक तमाचेसे जालिम आदमीको बसमें नहीं कर सकती और यदि कई लोग हों तो वह लाचार हो जाती है।

गाधीजी न सिर्फ मैं इसे सर्वथा असम्भव मानता हूँ, बल्कि 'मेडिकल ज्युरि-स्प्रूडेस' (चिकित्सीय विधिशास्त्र) भी इसे असम्भव मानता है। जबतक स्त्री 'रिलैक्स' न करे (शिथिल न हो) तबतक कामी पुरुष अपनी इच्छा पूरी नही कर सकता। जो स्त्री मृत्युकी शरणमे नही जाना चाहती वह, अनिच्छापूर्वक ही क्यो न हो, शिथिल पड़ जाती है, प्रतिरोध करना छोड देती है और कामीके चगुलमे फँस जाती है। जिसमे जानपर खेल जानेकी भावना आ गई है, वह या तो बन्धनोको तोड देती है या फिर स्वय टूट जाती है। इतनी शक्ति प्राणि-मात्रमे है। सच बात तो यह है कि जीनेका लोभ इतना ज्यादा होता है कि मनुष्य मरनेतक सघर्ष ही नही करता। यदि कोई स्त्री इतना सघर्ष करे तो एक मनुष्यसे जूझते हुए वह टुकड़े-टुकड़े हो जायेगी और लड़ते हुए अपनी हड्डियाँ-पसलियाँ तोड लेगी।

म० दे० : किन्तु ऐसे आत्मबलवाली स्त्रीको तमाचा मारनेका सुझाव देनेकी आवश्यकता नहीं है। उसे तो कोई-न-कोई उपाय सूझ ही जायेगा।

गाधीजी : यह सब तो मैं मौन भग करनेके बाद ही समझा सकता हूँ।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-१, पृ० ३९४-५

३४. पत्र : पद्मजा नायडूको

५ सितम्बर, १९३२

वुद्धकी जिस भव्य कथाका तुमने उल्लेख किया है, उससे मुझे बहुत-सी पवित्र बाते स्मरण हो आई है। हाँ, मैं बहुत सारे सपने देखता हूँ। और ऐसा नही है कि वे सारे सपने हवाई किले ही हो। ऐसा होता तो स्त्री-पुरुष, बालक-बालिका सभी तरहके और सभी स्थितियोके लोगोसे मुझे जो इतना प्रेम मिलता है, उसके बोझसे मैं दब न जाता।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६

३५. पत्र : नानालाल के० जसानीको

५ सितम्बर, १९३२

भाई नानालाल,

तुम्हारे पत्रकी वाट जोह रहा था। मिलनेसे शान्ति मिल गई है। मयाशंकर[1] को मैंने पत्र तो लिखा है। उसे मिल गया होगा। चम्पाको तो रोक रहा हूँ। मंजुलाको[2] भी रोका था। मगनलाल भी यही चाहेगा। मुझे तो वह बहुत सयानी लडकी लगती है।

पन्ना बेच देनेमें कोई विघ्न पड रहा है क्या? या किसीके द्वारा अड़चन डाले जानेके कारण नही बेचा जा सका?

डॉक्टर तुम्हारे लिए जो रकम लिख गये है, उसे तुम लेना नही चाहते, यह तुम्हारे लिए सर्वथा शोभनीय ही है। लडकियोके लिए जमा की गई रकम तो उन्हे मिलनी ही चाहिए, मगर फिलहाल उसमें से कुछ भी पैसा निकाला जा सकता हो, ऐसा मुझे दिखाई नही देता। इसलिए तुम्हारे हिस्सेकी बात करनेका भी समय अभी नही आया है। अगर गाडी पटरीपर आ जाये तो सब कुछ ठीक ही होगा। घोसला बना रहे और झगड़ा मिट जाये तब देखूँगा।

तुम मुझे लिखते रहो।

जैसा छगनलाल लिखता है, वैसे ही बरतोगे तो सब ठीक ही होगा।

वे लोग तुम्हे चाहे या दुतकारे, तुम तो अपना धर्म निभाते ही रहोगे, यह मै जानता हूँ और इसलिए निश्चिन्त हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४७० ए) से।

१. मयाशंकर व्रजलाल देसाई, डॉ० प्राणजीवन मेहताके कारोबारके साझेदार।
२. मगनलाल मेहताकी पत्नी।

३६. एक पत्र

५ सितम्बर, १९३२

तू या तो चालाक है या मूर्ख है। विकारका अर्थ नही समझती? दाल खानेसे होनेवाला विकार और स्पर्श-विकार, दोनो हानिकर है। दोनो समान प्रवाह को असतुलित करते है। एक विकार बाहरका स्थूल पदार्थ पेटमे डालनेसे होता है, दूसरा बाहरी वस्तुको देखनेसे मनोवृत्तिमे होनेवाला परिवर्तन या विकार है। यह विकार जब सारे जीवनको हिला देनेवाला होता है, तब हानिकारक हो सकता है। यदि किसी स्त्रीके मनमे किसी पुरुषके प्रति विकार आ जाये, तो समाज उसे सदा दोषी नही मानता, बशर्ते कि उस विकारके पीछे विवाह करनेका इरादा हो, जिससे विवाह करनेका विचार हो वह त्याज्य न हो, यह बात प्रियजनोसे गुप्त न रखी गई हो और उसे स्वय विवाह करनेका अधिकार हो। मेरे खयालसे तू अभी शादी लायक नही है, क्योकि तू अभी पढ रही है और बच्ची ही है। . . .[1] के साथ ऐसा सम्बन्ध त्याज्य होगा, क्योकि वह शिक्षक था और फिर तेरे लिए भाईके समान था। तेरे मनमे विकार पैदा हुआ या यो कहा जाये कि विवाह-प्रेम पैदा हुआ और तूने उसे छिपाया, इसलिए यह विकार दूषित माना जायेगा।

तू स्वाधीनताका अर्थ भी नही समझती। जब तू अपनी इच्छासे बुजुर्गोको अपने पत्र दिखाती है तो ऐसा करके तू अपनी स्वाधीनता नही खोती, बल्कि अपनी सुरक्षा खोजती है। यदि कोई हमारे घरकी देहलीपर जमकर बैठ जाये, तो वह कुर्क-अमीनकी तरह हमे हमारी स्वाधीनतासे वचित कर देगा। परन्तु यदि हम घरका पहरा देनेको द्वारपाल रखे, तो इससे हमारी स्वाधीनता नही जाती, बल्कि उसकी रक्षा होती है। इसी तरह यदि तू अपनी अज्ञानावस्थामे, कच्ची उम्रमे, बड़ोको अपना पहरेदार समझकर उनके सामने अपना दिल खोलेगी, उन्हे अपने पत्र दिखायेगी, तो तू पराधीन नही होगी, बल्कि अपनी स्वाधीनताकी सुरक्षा खोज पायेगी। मेरी तीव्र इच्छा है कि तू स्वाधीन बने। तेरी यह स्वाधीनता कायम रहे, इसलिए मैंने सलाह दी कि तुझे पत्र आदि सब-कुछ अपने माता-पिताको दिखा देने चाहिए। मगर तेरा मन इस बातको स्वीकार न करे, ऐसा करना तुझे भार-सा लगे तो जरूर अपने पत्रोको गुप्त रख। मै तो तुझपर जरा भी दबाव डालना नही चाहता। ऐसा करनेसे तेरा व्यक्तित्व दब जायेगा। मै तो यही चाहता हूँ कि तू वीर बाला और प्रतापी सेविका बने। तू पत्र लिखना बन्द कर देगी, तो यह मेरे लिए असह्य होगा।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ ६-७

१. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

३७. पत्र : बेगम मोहम्मद आलमको

[६ सितम्बर, १९३२ के पूर्व][१]

मुझे विश्वास है कि आपके पति अच्छे हो जायेंगे।[२] मुझे डॉक्टर साहबका पत्र मिला है, जिससे उनके स्वास्थ्यका हाल मालूम हुआ है। अब आपके पत्रसे उनके स्वास्थ्यका और भी समाचार प्राप्त हुआ। मुझसे बराबर पत्रव्यवहार करती रहिए और डॉक्टर साहबसे मेरी, सरदार पटेल तथा महादेव देसाईकी शुभकामनाएँ कहिए। ईश्वरकी कृपासे यहाँ हम सब अच्छे हैं। आशा है, टूटी-फूटी उर्दूमें लिखे इस पत्रको पढ़नेमें आपको कोई कठिनाई नहीं होगी।

[अंग्रेजीसे]

एडवांस, ७-९-१९३२

३८. पत्र : मोहन न० परीखको

७ सितम्बर, १९३२

चि० मोहन,

चिरायु हो। अच्छा बनना और देशकी सेवा करना। तूने आगामी वर्षमें ['गीता'के] चार अध्याय कण्ठस्थ करनेका व्रत लिया है, उसका पालन करना। उसका भाव भी समझनेकी कोशिश करना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१८३)से।

१. साधन-सूत्रमें रिपोर्टकी तिथि ६ सितम्बर दी गई है। मूल उर्दू पत्र उपलब्ध नहीं है।
२. डॉ० आलम लाहौर सदर जेलमें कैद थे और बीमार थे।

३९. पत्र : रतिलाल सेठको

७ सितम्बर, १९३२

भाईश्री रतिलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। छगनलाल और लीलावती[1] मुझे पत्र लिखा करते है और उनके पत्र सन्तोषजनक होते है। दोनोके खिलाफ शिकायते भी आती है। शिकायतोसे उन्हे अवगत करा देता हूँ। लीलावतीने अपनी तबीयतके बारेमे मुझको भी लिखा था। यदि छगनलाल खुशी-खुशी अपनी स्वीकृति दे दे तो फिलहाल उसे बुला लेनेसे लाभ होना सम्भव है। उसके शरीरको तो लाभ होगा ही। माणिकबहन[2] तो लीलावतीसे बहुत नाराज जान पड़ती है। लीलावती कहती है कि इसमें उसका कोई दोष नही है। मै उसे इतना अधिक निर्दोष नही मानता। लीलावतीकी जबान तो तेज है ही। माणिकबहन भोली औरत है और उसे तो चाहे जो बरगला सकता है। साबरमतीमे और फिर जब मैं रगूनमे था तब भी मैंने देखा कि लीलावती कोई बात बरदाश्त नही कर सकती। लेकिन जो स्वभाव बन जाये, उसके बारेमे तुम भी क्या कर सकते हो? पिताके रूपमे तुम जो शुभ प्रभाव डाल सकते हो, वह तो डाल ही रहे हो।

मगनलालने मुझको सतोषजनक पत्र लिखा है। मजुला तो मुझे अब भी दुनियाके तौर-तरीकोसे अछूती लगती है। जरूरी लगेगा तो तुम्हे रंगून जानेकी तकलीफ दूंगा। आशा करनी चाहिए कि दोनो भाई समझ जायेंगे, और झगड़ा शान्त हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१६८)से। सी० डब्ल्यू० ४६६२ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

१. रतिलाल सेठकी पुत्री, और छगनलालकी पत्नी

२. डॉ० प्राणजीवन मेहताकी विधवा।

४०. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

८ सितम्बर, १९३२

व्यायाममें खडे-खड़े धीरे-धीरे प्राणायाम करनेसे आश्चर्यजनक फायदा होता है। यह धीमे-धीमे और कायदेसे होना चाहिए। जैसे सगीतमें पद-पदपर समयका ध्यान रखना पड़ता है, वैसे ही प्राणायाममें भी होता है। श्वासकी गति लयबद्ध ही चलनी चाहिए। इसका अभ्यास हो जानेपर फेफड़ोको बहुत कम काम करना पड़ता है और वे बाहरसे ज्यादा प्राणवायु खीचते हैं। और फेफड़े जैसे ज्यादा प्राणवायु खीचते हैं, वैसे ही अपानवायु भी ज्यादा निकालते हैं। यह कसरत थोड़ी-थोड़ी बढाते जाना चाहिए। यदि ठीक ढगसे यह कसरत होती रहे तो उसका लाभ तुरन्त ही मालूम होने लगेगा। थकावट कम मालूम होगी, खुलकर भूख लगेगी, दिमाग शान्त रहेगा और यदि शरीर ठंडा होगा तो वह गरम हो जायेगा।

हाँ, मेरा मन इस बातको स्वीकार नहीं करता कि रतिसुख आवश्यक ही है। और मेरा अनुभव उसकी पुष्टि करता है। कृत्रिम उपायोकी नीतिको स्वीकार करनेमें रतिसुखका औचित्य और आवश्यकता आ जाती है। यह भयकर वस्तु है। अगर इस नियमको सार्वजनिक तौरपर स्वीकार कर लिया गया तो ब्रह्मचर्यको अनावश्यक ही नही, बल्कि हानिकारक भी मानना पड़ेगा। अगर यह माना जाये कि ब्रह्मचर्य हर हालतमें स्तुत्य है, तो फिर कृत्रिम उपाय पसन्द नही किये जा सकते। चोरी समाजके लिए घातक है, फिर भी जैसे वह बनी ही रहेगी, वैसे ही सम्भव है कि कृत्रिम उपाय भी बने रहेगें। मगर वे अनुचित है, इस मान्यताके अनुकूल वातावरण बनाना आवश्यक है। रतिसुख भोगनेवाले को सन्तानोत्पत्तिकी जिम्मेदारी भी अपने सिर लेनी ही चाहिए। इसमे जो परेशानी है, उसे सहन करना उचित है। शुद्ध सयमका पाठ इसीसे सीखा जा सकता है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२

४१. एक पत्र

८ सितम्बर, १९३२

आपके पत्रकी भाषामे मुझे कही-कही कपटका भाव दिखाई देता है। यदि इसमें मेरी भूल हो तो धैर्यपूर्वक मेरी भूल सुधारिएगा, और यदि मेरा वहम ठीक हो, तो आप अपनेको सुधारिएगा। यह आपका डॉक्टरके लिए किया हुआ श्राद्ध माना जायेगा। ईश्वर आपको सन्मति दे। मुझसे यदि अन्याय हो रहा हो, तो आप मुझे बचाये।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२

४२. पत्र : विमलकिशोर मेहरोत्राको

८ सितम्बर, १९३२

चि० विमल,

तेरा खत मिला। तुमारे हरफ अच्छे करना होगा। प्रार्थनाके बीचमे भागना नही चाहिए। यह ईश्वरका अविनय है।

बापु

सी० डब्ल्यू० ४९८५ से; सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा

४३. पत्र : एम० जी० भण्डारीको[1]

९ सितम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

क्या आप आनेकी कृपा करेंगे ?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५१२२) से।

१. यरवडा सेंट्रल जेलके अधीक्षक।

४४. पत्र : रैम्जे मैक्डॉनाल्डको

९ सितम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

आपका साफ शब्दोमे लिखा विस्तृत पत्र मुझे आज तारसे मिला। इसके लिए मै आपका कृतज्ञ हूँ। तथापि मुझे अफसोस है कि मेरे सोचे हुए कदमका[1] जो अर्थ कभी मेरी कल्पनामे भी नही आया, ऐसा अर्थ आपने किया है। आपने मुझपर उसी वर्गके हितोको नुकसान पहुँचानेके इरादेसे आमरण अनशन करनेका आरोप लगाया है, जिस वर्गकी तरफसे बोलनेका मै दावा कर रहा हूँ। मै तो यह आशा करता था कि मेरा हेतु स्वार्थपूर्ण है, ऐसे किसी अर्थको रोकनेके लिए यह उग्र कदम ही काफी होना चाहिए। परन्तु किसी बहसमे न पडकर मै दावेके साथ कहता हूँ कि मेरे लिए यह चीज शुद्ध धर्मकी है। "दलित" वर्गोंको दोहरा मताधिकार मिल जाने-भरसे उनका या आम हिन्दू-समाजका छिन्न-भिन्न होना रोका नही जा सकता। "दलित" वर्गोके लिए पृथक् निर्वाचक-मण्डलकी स्थापनाके रूपमें मुझे हिन्दू-समाजको ऐसा जहर दिया जा रहा दिखाई दे रहा है, जो उसका तो सर्वनाश करनेवाला है ही, साथ ही "दलित" वर्गोको भी कोई लाभ पहुँचानेवाला नही है। आपसे मै नम्रतापूर्वक इतना कहूँगा कि आपके मनमें चाहे जितनी सहानुभूति हो, जो मामला सम्बन्धित पक्षोके लिए इतना ज्यादा अहम और धार्मिक महत्त्व रखता है, उसके बारेमे आप सही निर्णयपर पहुँच ही नही सकते। मै तो "दलित" वर्गोंको अनुपातसे ज्यादा प्रतिनिधित्व दिये जानेके भी विरुद्ध नही होऊँगा। मेरा विरोध तो इस बातके खिलाफ है कि जबतक वे हिन्दू-समाजमे रहना चाहते है, तबतक उन्हे सीमित रूपमें भी हिन्दू समाजसे अलग करनेकी बात कानूनसे नही होनी चाहिए। क्या आप यह नही समझ रहे है कि अगर आपका फैसला कायम रहा और सविधान अमलमे आ गया तो हिन्दू सुधारक जीवनके हर क्षेत्रमे अपने दलित भाइयोके उद्धारके लिए जीवन अर्पण करके जो अद्भुत कार्य कर रहे है, वह सब धूलमे मिल जायेगा?

इसलिए मैने अपना जो निर्णय आपको बताया है, उसपर मजबूरन डटे रहना मेरा फर्ज हो जाता है।

आपके पत्रसे एक गलतफहमी पैदा होना सम्भव है। इसलिए मै यह बता देना चाहता हूँ कि "दलित" वर्गोके सवालको जो मै आपके निर्णयके दूसरे भागोसे अलग करके उसके सम्बन्धमे कार्रवाई कर रहा हूँ, उसका यह अर्थ किसी भी तरह नही होता कि आपके निर्णयके दूसरे भागोको मै पसन्द करता हूँ या उन्हे मान लेनेको

१. गाधीजी ने दलित वर्गोको पृथक् निर्वाचक-मण्डल देनेकी सरकारी घोषणाके विरोधमें २० सितम्बरसे आमरण अनशन करनेका इरादा जाहिर किया था।

मेरा मन तैयार है। मेरी रायमे, और बहुत-से भाग भी गम्भीर रूपसे आपत्तिजनक है। बात केवल इतनी ही है कि "दलित" वर्गोके मामलेमे मेरी अन्तरात्माने मुझे जिस तरह प्राणार्पण करनेकी प्रेरणा दी है, वैसा कोई कदम दूसरे भागोके विरुद्ध उठाना मुझे जरूरी मालूम नही होता।

आपका विश्वस्त मित्र,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

भारत सरकार, होम डिपार्टमेंट, राजनीतिक, फाइल स० ३१/११३/३२ पॉल०। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

४५. पत्र : नारणदास गांधीको

९ सितम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

जैसे हो वैसे नीचे लिखी जानकारी तुरन्त भेजो :

१ हमे उतने ही आटेकी रोटियाँ और डबलरोटियाँ बनानेमे कितने ईंधनकी जरूरत होती है?

२. डबलरोटी बनानेका तरीका।

(क) खमीर कैसे तैयार करते है?

(ख) खमीरके सिवा क्या हम नमक, गुड या चीनी मिलाते है?

(ग) सारी प्रक्रियाएँ।

(घ) गूँधे हुए आटेको कितनी देर पडा रहने देते है?

(ङ) भट्ठीमे कितनी देर रखते है?

मतलब यह कि यह सब इस तरह लिखा जाये जिससे उसे पढकर यहाँ पूरा प्रयोग किया जा सके। इसका हेतु यह है कि मै आश्रमके तरीके और यहाँके तरीकेकी तुलना करके देखना चाहता हूँ। इन दिनो हम वहाँ कितने आटेकी डबल-रोटी वनाते है? आटेकी कीमत क्या पडती है? एक ही परिमाणमे आटेकी डबल-रोटी बनानेमे कितने लोगोकी जरूरत पडती है और रोटियाँ बनानेमे कितनेकी?

आशा है, वच्चा मजेमे होगा और शकरभाईका हाथ कैदसे छूट गया होगा।[1]

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२४९ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

१. शकरभाई पटेलके हाथपर प्लास्टर चढा हुआ था; देखिए खण्ड ५०, पृष्ठ० ३८१।

४६. पत्र : भाऊ पानसेको

९ सितम्बर, १९३२

चि० भाऊ,

'गीताजी'के गूढार्थपर विचार न किया करो। उसका जो अनासक्तिका सन्देश है, उसपर अमल करते रहनेसे गूढार्थ अपने-आप खुलता जायेगा, और जब वह पकडमें आ जायेगा तब तुम्हे पूर्ण सन्तोष मिलेगा। इस बीच, विनोबाने जो गूढार्थ बताया हो, उसपर विश्वास रखना। अधिकाशत तो वे जो अर्थ करते है, वही मेरा भी होता है। लेकिन अगर कही हम दोनोके अर्थोमे अन्तर दिखाई दे तो मनको जो रुचे वह अर्थ कामचलाऊ तौरपर स्वीकार कर लो। इसमे तो कोई सन्देह ही नही कि अगर बाँसकी तकलीपर हाथ बैठ जाये तो उत्तम है। यह तकली बनाना भी सीख लेना चाहिए। कोष्ठबद्धताके लिए एनिमाका उपयोग न किया हो तो उसे कर देखो। इससे कई बार बहुत फायदा हुआ दिखाई दिया है। वर्धाकी कुछ थोडी-सी खबर मिलती है। लेकिन वहाँ तुम्हे जो मिले वह भी भेजते रहो। कोष्ठबद्धताके सम्बन्धमे निराश मत होना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७३६) से। सी० डब्ल्यू० ४४७९ से भी, सौजन्य . भाऊ पानसे

४७. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

९ सितम्बर, १९३२

चि० गगाबहन,

इस बार तुमने मुझे काफी लम्बा और सुन्दर पत्र लिखा है।

मै तो यह जानता ही हूँ कि हकीमजी तुम्हारे लिए सिर्फ हकीम ही नही, बल्कि भाई, कुटुम्बी, मित्र, सलाहकार और बुजुर्ग भी है। अत यदि तुम उनकी पूरी-पूरी मदद लेती हो तो यह सर्वथा उचित ही है। तुमने मुसलमानोके घरोमे जाकर ठीक ही किया है। ऐसे काम भविष्यमे फलदायी सिद्ध होगे। यदि हमारे हृदय शुद्ध हो और हमारे हृदयमे प्रेम हो तो हम सभी प्रकारके सन्देहोको दूर कर सकेगे।

काकासाहबके समाचार मुझे इस्पेक्टर-जनरलने दिये। वे अच्छे है। काकाका एक पत्र भी मुझे मिला था। हालांकि उनका वजन कम हो गया है, किन्तु उनके शरीरमे कोई रोग नही है। अत चिन्ता करनेका कोई कारण नही।

लक्ष्मी तो सत्संगका लाभ उठा रही है।

नूरबानूसे[1] मिली, यह अच्छा किया। जबतक तुम वहाँ हो तबतक कुरैशीकी देखभाल करती रहना। रामीबहन तुम्हारे पास ही है, इससे मुझे प्रसन्नता हुई।

यदि तुम्हे शामलभाईके[2] साथ रहना अनुकूल जान पड़े तो उनके साथ अवश्य रहना। जैसा करनेसे तुम्हारा मन प्रफुल्लित रहे, वही करना। नाथ तुम्हारी सहायताके लिए सदा साथ है, अत मै निश्चिन्त हूँ।

बाबूके[3] बारेमे मेरी सलाह यह है कि फिलहाल तो उसे पढना चाहिए। अर्थात् गुजराती, सस्कृत, हिन्दी, गणित, इतिहास, भूगोल, खादी बुनने तक रुईकी सभी क्रियाएँ, बढ़ईगिरी और थोड़ा-सा सगीत — इतना सब पक्का करे। इसके बाद ही पता चल सकेगा कि उसे कौन-सा क्षेत्र चुनना चाहिए। बाबूकी बुद्धिका विकास होना चाहिए और उसका हृदय विशाल होना चाहिए।

सरदार और महादेव तो तुम्हारे पत्र पढते ही है। सभी तुम्हें याद करते है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-६ : गं० स्व० गंगाबहेनने, पृ० ६५-६। सी० डब्ल्यू० ८७९५ से भी; सौजन्य : गगाबहन वैद्य

४८. पत्र : मथुरी ना० खरेको

१० सितम्बर, १९३२

चि० मथुरी[4],

इस बारकी लिखावट खराब है। भाषाकी भूले भी काफी है। जहाँतक बने, सुधारना। अक्षर तो सावधानी बरतनेसे अच्छे आयेगे ही।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २६८) से; सौजन्य. लक्ष्मीबहन ना० खरे

१. प्यारअलीकी पत्नी।

२. शामलभाई बेचरभाई पटेल, बोरसद तालुकेके एक कार्यकर्ता तथा काकासाहबकी पहली नजरबन्दीके दौरान साबरमती जेलके साथी।

३. गंगाबहनका पौत्र और पुरुषोत्तमदास सरैयाका छोटा भाई।

४. नारायण मोरेश्वर खरेकी लड़की।

४९. पत्र : बबलभाई मेहताको

१० सितम्बर, १९३२

चि० बवल,

तुम्हारा पत्र मिला। अमुक काम करना अच्छा है, यह निश्चय हो जानेके बाद उसे करनेमें एक क्षणका भी विलम्ब नही करना चाहिए, क्योकि सिरपर मौत मॅडराती रहती है और इसलिए अच्छा काम आरम्भ करनेमे विलम्ब करनेसे, सम्भव है, वह पूरा-का-पूरा पडा ही रह जाये। कारण, जीव देह छोड़ता है तो वह अपनी करनी भी साथ ले जाता है। जिन विचारोपर वह अमल नही करता, वे तो उसके खाते दर्ज हो जाते है। मान लो कि मैंने गाडीमें यात्रा करते समय पाँच रुपये साथ ले जानेका विचार किया, लेकिन आलस्यवश रुपये लिये नही। अब गाडीमें बैठा हूँ तो विचारको तो भुना नही सकता। और यह बात मेरे मनपर बोझ बनकर मुझे परेशान करती रहेगी। प्रार्थनामे बैठकर भी जो भजनादिमें भाग नही लेता, वह असत्य का आचरण करता है। यदि कोई हमे धोखा देकर हमसे कोई चीज ले ले तो इसमे हमारा दोष हो भी सकता है और नही भी हो सकता।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४४८) से।

५०. पत्र : वसुमती पण्डितको

१० सितम्बर, १९३२

चि० वसुमती,

वाह! पत्र लिखनेका समय जैसे-तैसे बचा ही लिया। ऐसा आलस्य! और लिखा भी तो न लिखने-जैसा ही। तुम्हारे इतने महीनेके अनुभवोका क्या हुआ?

कुरैशीसे मिलती होगी। प्यारअलीका आश्रम देखा?

अमीनाके बच्चोसे मिली?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५७७) से; सौजन्य · वसुमती पण्डित

५१. पत्र : नर्मदा राणाको

१० सितम्बर, १९३२

चि० नर्मदा,

चाहे लोभी ही मानी जाये, मुझसे लम्बा पत्र पानेकी आशा करती ही रहना। किसी दिन शायद लम्बा पत्र लिखनेकी बात भी मनमे आ जाये।

तेरी गुजराती अच्छी नही है। किसीसे सुधरवा लिया करे तो अच्छा हो। लेकिन, न सुधरवा सके तो भी हर्ज नही। तुझे जो लिखना हो, वह तो लिखती ही रहना।

मै तो ऐसा चाहता हूँ कि आश्रममे जितना सीखने योग्य है, सब तू धीरे-धीरे सीख ले।

तुझे गुजराती कौन सिखाता है? और क्या-क्या सीखती है?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २७६३) से; सौजन्य. रामनारायण एन० पाठक

५२. पत्र : रेहाना तैयबजीको

१० सितम्बर, १९३२

प्यारी बेटी रेहाना,

तुमारा खत और भजन मिला है। भजन अच्छा है। आज ज्यादा लिखनेका बखत नही है। फाका करनेका मेरा इरादा तुम सबको पसद आया होगा। अब्बाजान-को तो यह चीज समझनेमे मुश्कील होनी ही नही चाहीये। खुदाके नामसे खुदाके कामके लिये शुरू किया है वही अजाम पहोचा देगा। मुझे अब्बाजानकी, अम्माजानकी दुवाये चाहीये। तु क्या भेजेगी? तुझे तो नाचना चाहीये कि बापुको खुदाने ऐसी पाक कुरबानी करनेका मौका दिया है। हमिदा[1] कब आवेगी? भाइजी वहा ही है क्या? उनको मेरे बदेमातरम्। हम सब आरामसे है।

बापुके आशीर्वाद

उर्दूकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६७०) से।

१. रेहाना तैयबजीकी बहन।

५३. पत्र : आश्रमके बालक-बालिकाओंको

११ सितम्बर, १९३२

बालको और बालिकाओ,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम लोगोंने जैसे कोठार और सफाईके काममें से कई घंटे सहज ही बचा लिये, वैसे ही सोचनेपर दूसरे कार्योंमें से भी बचाये जा सकते हैं। इसमें सबसे ज्यादा आवश्यकता सच्ची भावना और सबके सहयोगकी है। सभी एक होकर, अपनी पूरी शक्ति लगाकर काम करें तो और भी बहुत-से काम किये जा सकते हैं।

यह बात सारी दुनियाके जीव-मात्रपर लागू होती है। तुम कीड़े-मकोड़ोंको देखो तो उनके कामों से भी यही शिक्षा मिलती है।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

५४. पत्र : गुलाबको

११ सितम्बर, १९३२

चि० गुलाब,

अभ्याससे कातनेकी गति बढ़ेगी। अभी क्या गति है? पूनियाँ अच्छी होनी चाहिए। तकुआ सीधा होना चाहिए।

अक्षरोंमें सुधारकी बहुत गुंजाइश है। बने तो सुन्दर अक्षरोंके नमूने सामने रख कर कलमसे धीरे-धीरे अक्षर लिखा करो।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७२४) से।

५५. पत्र : छगनलाल जोशीको

११ सितम्बर, १९३२

चि० छगनलाल (जोशी),

मै नही जानता कि यह पत्र तुम्हे मिलेगा या नही किन्तु मैं लिख तो रहा हूँ। यदि तुमने आश्रमके बारेमे पत्र लिखा होता तो अच्छा होता। यदि यह पत्र तुम्हे मिल जाये तो तुम मुझे अब भी लिख सकते हो। मुझे तो सब-कुछ जानना ही चाहिए।

और क्या लिखूं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५०८) से।

५६. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

११ सितम्बर, १९३२

चि० प्रेमा,

तू धीरज और विश्वास रखेगी तो मेरी 'स्वभाव-पुस्तक' के सारे पृष्ठ तेरे सामने खुल जायेगे। सत्य-भगवान्‌का वचन है कि "जो मुझ (सत्य) को प्रेमपूर्वक सतत भजता है उसे मै बुद्धियोग देता हूँ।"[1] इसपर मनन करनेसे मेरे स्वभावके सभी पृष्ठ खुल जाते है। पुस्तक तेरे सामने पडी हो, किन्तु तुझे पढना न आये या उसे पढनेकी कोई तकलीफ न उठाये तो दोष किसका? लेकिन यह तो मैंने बहुत कह दिया। फिर भी मैंने तुझे उक्त पुस्तकको पढनेका तरीका बता दिया। तू कहेगी कि यह तो तू जानती ही थी। ऐसा कहे तो मैंने तुझे जो 'सर्वज्ञ' कहा है, मेरा वह कथन सच ही सिद्ध हुआ माना जायेगा न?

तू . . .[2]को मेरे सब पत्र भेजती रहती है, उसमे मुझे कोई आपत्ति हो ही नही सकती। आखिरी पत्र तो उसीसे सम्बन्धित था, इसलिए मैंने उक्त पत्रको उसके पास भेजनेकी विशेष इच्छा प्रकट की थी। अब जो लिखने-जैसा लगे, सो अवश्य लिखना। .[3]की दवा मै नही खोज सका, ऐसा . .[4] लिखती है, वह सच है। लेकिन वह अधूरी बात है। दवा तो मैंने खोज ली थी, लेकिन वह मेरे पास न हो तो मै क्या करूँ? उसकी दवा स्त्री थी — ऐसी स्त्री जो उसे पसन्द आये

१. भगवद्गीता, १०-१०।

२, ३ व ४. यहाँ नाम छोड दिये गये हैं।

और जिसके साथ वह विवाह कर ले, या जो उसके लिए सगी वहनसे भी वढकर हो। . पर मेरी नजर तभीसे थी जवसे मैंने . . का उसके प्रति और उसका . के प्रति राग देखा था। इस रागकी निर्मलताको मैंने स्वीकार कर ही लिया था। फिर भी जवतक ठीक अवसर न आये . . . पर मै जिम्मेदारी कैसे डालता? तेरे पत्रने मुझे वह अवसर दे दिया। मेरा निदान ठीक है या नही . . वह दवा है या नही, यह मै नही जानता। शायद . . भी नही जानती। यह तो प्रयोग करनेपर ही मालूम हो सकता है। मैं तो . . की मानसिक स्वस्थता चाहता हूँ। इसके विना उसकी शक्ति प्रकट नही हो पाती और वह क्षीण होता जाता है। काम तो वह करता जाता है, लेकिन उसमे उसे रस आता है या नही, इसका भी उसे पता नही।

मेरे वचपनकी शायद तू काफी वाते चुरा लाई है।

क्या तू यह जानती है कि रमावहन वीमार है? उसके साथ जरा वात तो कर। हमारी कल्पना हमे जितना डरपोक वनाती है, उतने डरका कारण वस्तुस्थितिमें कभी होता ही नही। 'कल्पना भूत और शंका डायन', यह कहावत विलकुल सच्ची है, शत-प्रतिशत सच्ची।

आशा है, नवागत वहनोंकी तू अच्छी तरह देखभाल करती होगी। दूसरे काम कम करके भी इस कामको अच्छी तरह करना।

किसनके[1] वारेमे मैंने अखवारमें पढा था। धुरन्धरका काम सुन्दर है। लेकिन उसे अपने शरीरको मजवूत वनाना चाहिए। उसका वजन कितना है?

मुझे याद नही कि तेरे वारेमें आनन्दी[2]के पत्रमे मैंने क्या लिखा है, या लीलावतीसे[3] क्या कहा है। मुझे तेरे आजके ब्रह्मचर्यके वारेमे जरा भी शंका नही है। कलकी वात मै नही जानता। तू जानती हो तो कहना होगा कि तू नारदजी और रामजी से भी ज्यादा जानती है। इसके वावजूद तेरे सकल्पका तो मैंने हमेशा स्वागत ही किया है। मै यह नही मानता कि तुझे कोई आसानीसे फुसला सकता है। लेकिन तेरी-जैसी ही दृढ स्त्रियोको भी मैंने विवाह करते देखा है। इसमे उनका भी क्या दोष? इसलिए फिलहाल तो मै तेरे वारेमें ऐसी इच्छा ही रख सकता हूँ और तुझे आशीर्वाद देता हूँ। मुझसे जहाँतक हो सकेगा, उतनी तेरी मदद करूँगा, और यथाशक्ति प्रहार भी करूँगा। परिणाम तो तेरे और भगवान्के हाथमे है।

तेरे पत्र जिस रूपमे आते है, मुझे वैसे ही चाहिए। यदि तू कृत्रिम वन जायेगी तो मेरे लिए निकम्मी हो जायेगी। तेरे मनके भीतर गाँठे पड़ी हुई है। मै ज्यो-ज्यो उन्हे देख पाऊँगा, त्यो-त्यो उन्हे खोलनेका प्रयत्न कर सकता हूँ। लेकिन मैं उन गाँठोको खोलनेवाला कौन? यह काम मनुष्यके वशका नही है। मुझे भगवान् जिस हदतक निमित्त वनने देगा, उसी हदतक मै निमित्त वन सकता हूँ। इसमे मेरा स्वार्थ है, क्योकि तुझसे तो मुझे वहुत ज्यादा काम लेना है। यदि यह मान लूँ कि

१. प्रेमावहनके मित्र, किसन घुमतकर।
२ और ३. लक्ष्मीदास पी० आसरकी कन्यायें।

तेरे मनके भीतर जो बाते मै बैठा रहा हूँ वे व्यर्थ जानेवाली है, तो क्या इतने लम्बे पत्र लिखनेकी तकलीफ उठाऊँगा?

किसी व्यक्ति या समाजकी अवनतिका कारण ठीकसे खोजा गया हो, ऐसा जाननेमे नही आया। अनुमान तो बहुत लगाये जाते है। तात्कालिक कारण नजर भी आ जाते है, किन्तु वे हमेशा एक-से नही होते। लेकिन सामान्य रूपसे यह जरूर कहा जा सकता है कि अवनतिके मूलमें धार्मिक न्यूनता जरूर होती है। परतन्त्रता कभी मूल कारण नही हो सकती, क्योकि वह स्वय अन्य कारणोका, दुर्बलताओका परिणाम होती है।

पडोसीका कर्तव्य पडोसीकी हमेशा धार्मिक रीतिसे मदद करना है।

अहकारके बीज अपनी शून्यता अनुभव करनेसे ही नष्ट होते है। एक क्षणके लिए यदि कोई गहराईसे विचार करे, तो उसे 'अपनी' अति अल्पताका भान हुए बिना न रहेगा। पृथ्वीके सन्दर्भमें हम जन्तुको तुच्छ मानते है; किन्तु इस विश्वके सन्दर्भमें मनुष्य-प्राणी उससे भी हजार गुना अधिक तुच्छ है। मनुष्यमें बुद्धि है, उससे इस स्थितिमे कोई फर्क नही पडता। उसकी महिमा अपनी तुच्छता अनुभव करनेमे ही है। क्योंकि इस अनुभवके साथ ही यह दूसरा ज्ञान पैदा होता है; जैसे वह मनुष्यके रूपमे तुच्छ है, वैसे ही भगवान्‌का तुच्छतम अश होते हुए भी जब वह भगवान्‌मे विलीन होता है तो वह भगवान्-रूप बन जाता है, और यह सूक्ष्म अणु भगवान्‌की शक्तिसे भरपूर है।

मायावादको मै अपने ढंगसे मानता हूँ। कालचक्रमे यह जगत् माया है। लेकिन जिस क्षणतक उसका अस्तित्व है, उस क्षणतक वह जरूर है। मै अनेकान्तवादको मानता हूँ।

अगर कोई वस्तु मनुष्यके सामने प्रत्यक्ष है, तो वह मृत्यु ही है। ऐसा होते हुए भी इस अनिवार्य प्रत्यक्ष वस्तुका भारी डर लगता है, यही आश्चर्य है, यही ममता है, यही नास्तिकता है। उससे तर जानेका धर्म अकेले मनुष्यके लिए ही सुलभ है।

पाप-पुण्य मृत्युके बाद भी जीवके साथ जाते ही है। जीव, जीवके रूपमे उन्हें भोगता है, फिर भले वह दूसरे दृश्य शरीरमे हो या सूक्ष्म शरीरमे।

अब तो बहुत हो गया न?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०२) से। सी० डब्ल्यू० ५७५३ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कटक

५७. एक पत्र

११ सितम्बर, १९३२

किये हुए कामका मूल्य है। आचरण-रहित विचार कितने ही अच्छे क्यो न हो, तो भी उन्हे झूठे मोतीकी तरह समझना चाहिए।

हमें हमेशा अपने पडोसीके गुण और अपने दोष देखने चाहिए। तुलसीदास जैसे व्यक्तिने भी अन्तत· अपनेको कुटिल कहा है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १५

५८. एक पत्र

११ सितम्बर, १९३२

तू लिखती है कि तेरा मन ठिकाने नही, इसलिए पत्र नही लिखेगी। यह भी विकारकी निशानी है। विकारका ठीक अर्थ समझनेकी जरूरत है। क्रोध करना भी एक विकार ही है। मनमे अनेक प्रकारकी इच्छाओका उठना भी विकार है। इसलिए यह पहनूं, यह ओढ़ूँ, यह खाऊँ, यह न खाऊँ, यह भी विकार ही है, और विवाह करनेकी इच्छा हो या विवाहकी इच्छा तो न हो किन्तु बराबरीके लडकोका सग अच्छा लगे, उनके साथ गुप्त बाते अच्छी लगे, उन्हें छूना अच्छा लगे, उनसे हँसी-मजाक करना अच्छा लगे, तो यह भी विकार है। यह अन्तिम विकार एक भयकर विकार माना जाता है। जबतक इनमें से कोई भी विकार रहेगा, तबतक स्त्रीको मासिक-धर्म होता रहेगा। पुरुषको वह नही होता, किन्तु दूसरा कुछ तो होता ही है। इस अर्थमे मीराबहनको भी विकार-रहित नही कहा जा सकता। इसीसे उसे अभीतक मासिक-धर्म होता है। इस रूपमे वह कोई पाप नही करती। वह तो बहुत ऊँची पहुँच गई है। वह अपने तमाम विकारोको दूर करनेके लिए सघर्ष कर रही है। पुरुष-संग-रूपी इच्छाका विकार तो उसके मनसे बिलकुल चला गया है। मगर उसमें क्रोध है, राग है, अनेक इच्छाएँ है। इन सबको रोकनेकी भी वह कोशिश करती है। मैंने जिस विकार-रहित स्थितिका वर्णन किया है, जो वहाँतक पहुँच जाये, उस स्त्रीको मासिक-धर्म हो ही नही सकता। तुम सब लड़कियाँ उस स्थिततक पहुँचनेकी कोशिश करो तो मुझे अच्छा लगे। सम्भव है, इस जन्ममे सफलता न मिले, तो भी क्या हुआ? प्रथम पाठ यह है कि कुछ छिपाकर न रखा जाये। किसीके साथ गुप्त सम्बन्ध न रखा जाये। सत्यव्रतपर अडिग रहा जाये।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७-८

५९. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

११ सितम्बर, १९३२

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा खत मिला है। बनारसका और दिल्हीका तुमारा खत नहिं मिला। मैंने देवलाली तुमको खत लिखे है उसकी पहोच तुमने नहिं दी है। अब तुमने सब हाल दिये है वह अच्छा हुआ।

पहले तो तुमारे स्वास्थ्यके वारेमें। नमकसे जो लाभ मीराबहनको हुआ उसमे मानसिक हिस्सा काफी है। सब कुछ नमकके स्थूल असरसे नहिं हुआ है। नमकमे इतनी शक्ति नहिं है। कोई भी खोराकका या औषधका इतना असर ब्रह्मचर्य पर पड हि नहिं सकता है। क्योकि अन्तमे ब्रह्मचर्य मानसिक स्थिति है। मनके विकारका असर शरीरपर होता है। जबतक मन दृढ और विकाररहित नहि हुआ है तबतक खोराकसे हि क्या हो सकता है। हाँ, खोराक अयोग्य या अधिक होनेसे नुकसान हो सकता है। नमक अल्प मात्रामे लेनेसे कोई हानि नहिं हो सकती है। ऐसे हि नमकके त्यागसे तुमको भारी नुकसान पहोचा है ऐसी भी कोई बात नहिं है। नमकमे इतना लाभ या नुकसान पहोचानेकी शक्ति हि नहिं है। खोराक क्या लेना इस बारेमे मैंने आगे लिखा है। अतमे तुमारे प्रयोग करके देखना होगा कोन-सा खोराक अनुकुल आता है। यदि देवलालीका जलवायु अनुकुल प्रतीत हुआ है तो वही जाओ। और साथ-साथ राधाको और दामोदरदासको मदद मिलेगी यह भी अच्छा है। अगर उनको इसी मासके अतमे देवलाली छोडना हि होगा तो दिन बहोत कम रहते है। कितना भी हो तुमारा जाना हितकर हि हो सकता है और उनको यदि सेनेटोरियम खाली करना हि पडे तो भी तुमारे स्वास्थ्यके कारण देवलालीमे थोडा और ठहरनेमे कोई हरज नहिं है। दूसरी जगह तो आसानीसे मिलनी चाहिये। कुवलयानन्दके पास जानेका क्या हुआ? दा० तलवलकरने क्या कहा? शरीर अच्छा बना लो।

अब आश्रमकी बात। सही है कि आश्रमके लोग जैसे होने चाहिये ऐसे नहिं है। उनमे काफी दोष भरे है। इसलिये लोगोको आश्रमवासीयोकी टीका और निंदा करनेका अधिकार है और आश्रमीयोको उसकी बरदास करना चाहिये इतना हि नहिं परंतु उसमे से शिक्षा भी लेना चाहिये। तुमारे मनपर भी कुछ ऐसा हि असर हुआ है उसका मुझे आश्चर्य नहिं है। क्योंकि ऐसा है हि। लेकिन ऐसा होते हुए भी परीणाम बुरा नहिं है ऐसा मेरा विश्वास है। आश्रममे रहनेवालोनें कुछ-न-कुछ उन्नति की है। बात यह है कि करनेका बाकी बहोत है, हुआ है कम। और ऐसे हि हो सकता था। और आश्रमवासी किसको कहा जाय? तुमने यदि इस बारेमे नारणदाससे बात !ंह की है तो दिल खोलकर सब बात करो और उसकी सुनो। नारणदाससे बढकर कोई आदमी इतना हि दृढ, विवेकी, समझदार और कर्त्तव्यपरायण

मुझको मिलनेकी मुझे कोई उमेद नहिं है और नारणदास मिला है उसको मै ईश्वरका अनुग्रह मानता हु। आश्रमके लोग व्याधिमुक्त नहिं है यह भी सत्य है। इतना है कि आश्रममे आकर बीमार नहिं पडते है, बीमारी लेकर आते हैं। वात यह है कि अपूर्णतामें से पूर्णता पैदा करनेका प्रयत्न करते हैं। ईश्वर आज्ञा है, प्रयत्न करते-करते मर जाओ फलका स्वामी मै हु। इसलिये यदि इतना कहा जा सकता है कि आश्रममे प्रयत्नमें मदता नहिं है तो मुझे सतोष होगा। मै तो यह भी कबूल कर लुगा कि प्रयत्नमे भी सुधारणाकी गुजायश है।

प जगतरामके[1] लिये कोई कुछ प्रयत्न करते है क्या?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २३९४) से।

६०. कार्य और विचार[2]

११ सितम्बर, १९३२

कोई कार्य करते हुए वैचारिक शक्तिका पूरा उपयोग करनेके बारेमें मैं पहले लिख चुका हूँ[3]। उसमें मैंने अन्तमें जो-कुछ कहा था उसपर विस्तारसे विचार करना जरूरी है। उसमें मैंने कहा है कि हमारे विचार समाजको जीवन देनेवाले या उसका नाश करनेवाले होते है, दैवी होते है और आसुरी भी होते है। हो सकता है, चरखा चलाते हुए कोई व्यक्ति रोज ऐसे सुधारोके बारेमें विचार करे कि जिससे चरखा चलानेवाले लाखो-करोडो व्यक्तियोको आसानी हो और वे लाभान्वित हो। दूसरा यह सोच सकता है कि यदि वह एक ही चरखेसे लाखो चरखा चलानेवालो के बराबर सूत कातकर लाखो कमा सके तो कितना अच्छा हो। पहले व्यक्तिके विचार दैवी है, समाजको जीवन देनेवाले है, दूसरेके आसुरी है, सामाजिक हितके विरोधी है। इसलिए प्रत्येक कार्य करते हुए हमारे लिए विचार करना-भर काफी नही है बल्कि वह विचार सभीके हितका हो, केवल स्वार्थका नही। सचमुच, यदि देखा जाये तो जो व्यक्ति केवल अपना ही स्वार्थ साधनेकी कोशिश करता है वह दूसरोका नुकसान तो करता ही है किन्तु आखिरकार अपना भी स्वार्थ सिद्ध नही कर पाता।

इस दृष्टिकोणको सामने रखकर यदि प्रत्येक अपनी-अपनी प्रवृत्तिके बारेमें विचार करे और समझदारीसे काम करे तो वह उत्तम शिक्षा प्राप्त करता है, अपने कामको रुचिपूर्ण बनाता है, अपनी बुद्धिका विकास करता है, अपने हृदयको निर्मल और

१. एक क्रान्तिकारी जो उन दिनों मुल्तान जेलमें सजा काट रहे थे।

२. सम्भवत यह "पत्र: नारणदास गाधीको", [७]/११-९-१९३२ के साथ भेजा गया था; देखिए अगला शीर्षक।

३. देखिए खण्ड ५०, पृ० ४४५-६।

विशाल बनाता है, कार्यकुशलता प्राप्त करता है और ऐसे आविष्कार और सुधार करता है जिससे समाजका कल्याण हो। परिणामस्वरूप, कार्यमे उसकी रुचि बढ जाती है, जिससे उसे आनन्द मिलता है, थकावट महसूस नही होती और काम कलात्मक होता है — फिर चाहे वह काम पाखाना साफ करनेका हो या रास्तोकी सफाईका, साग-भाजी सँवारनेका हो या गोशालाका, हिसाब-किताब लिखनेका या और कुछ। उसका दृष्टिकोण पारमार्थिक बन जाता है और उसे कोई काम हलका या नीरस नही लगता। जो काम उसे मिलेगा उसमे वह ईश्वरके दर्शन करेगा, उसमे उसे उसीकी सेवा नजर आयेगी। उसकी रुचि कामके रग-ढगपर निर्भर नही रहती। कामके प्रति उसका रस अन्तरसे, कर्त्तव्य-परायणतासे निकलता है। जो व्यक्ति अनासक्तियोगको समझना-साधना चाहता है, उसे इसी प्रकार प्रत्येक कार्य करना चाहिए।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से। सी० डब्ल्यू० ८२४८ से भी, सौजन्य : नारणदास गाधी

६१. पत्र : नारणदास गांधीको

[७][1]/११ सितम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

अभी बुधवारकी सुबह है। बकरी-माताओकी दोहनी हो रही है और वे अपना सगीत भी सुना रही हैं। तुम्हारी डाक नियमानुसार कल शाम मिली। तुम्हे अजली भर-भरकर आशीर्वाद देता हूँ। क्यो न दूँ? मेरी सारी आशाएँ तुम पूरी कर रहे हो और अपनी अनन्य तथा ज्ञानमय सेवासे हम तीनोको आश्चर्यचकित कर रहे हो। ईश्वरसे तुम्हे सारी अग्निपरीक्षाओमे से सफल होकर निकलनेकी शक्ति प्राप्त हुई जान पडती है। मेरी यही कामना है कि तुम दीर्घायु बनो और अहिसा-देवीकी साधनाके बलपर सत्यनारायणका साक्षात्कार करो तथा उसका साक्षात्कार करनेमे दूसरोके लिए भी सहायक होओ।

बाबाके विषयमे तुम्हारे दो पोस्टकार्ड मिले, लेकिन प्रत्येक एक-एक दिन देरसे। कारण यह था कि वे डाकघर समयसे नही पहुँचे। दोनो पर "डिटेड — लेट फी नॉट पेड"की[2] मुहर लगी हुई है। इसलिए डाकघरसे डाक निकलनेका समय मालूम कर लेना। तुम्हारी सोमवारकी मोटी डाक और रविवारका लिखा पोस्टकार्ड दोनो साथ ही पहुँचे।

१. गाधीजी ने यह पत्र बुधवारको लिखना शुरू किया था और उस दिन सितम्बरकी ७ तारीख थी।
२. "रोक रखा गया — विलम्बसे चिट्ठी डालनेका शुल्क नही दिया गया।"

१० सितम्बर, १९३२

आजतक तुम्हारी ओरसे कोई विशेष पत्र नही आया है, इसलिए मै समझता हूँ कि कानजी सेठ खतरेसे बाहर है; इतना ही नही, बल्कि उनमे शक्ति भी आ गई है। आशा है, डाहीबहन[1] ठीक होगी। अखबारोमें तुम्हारे यहाँ अच्छी वर्षा होनेकी खबर छपी है। केशूकी पूनियोसे तो महादेवने १०५ अकतक का सूत काता है। लगता है, अगर सीधा और बारीक तकुआ मिल गया तो १५० तक पहुँचनेमे भी कोई कठिनाई नही होगी। वहाँसे बारीक तकुआ मँगवाया है, लेकिन इसके बावजूद यहाँ भी बारीक तकुआ तैयार करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। आश्रमकी कपास अच्छी नही होती, इसके कारणका तो पता लगाना चाहिए। उसमें कीडे लग जाते है, इससे यह प्रकट होता है कि या तो कम खाद दी जाती है या ज्यादा अथवा खराब खाद दी जाती हैं। किसी अच्छे जानकार आदमीसे पूछकर अथवा कपासकी खेती-सम्बन्धी पुस्तकमें से अलग-अलग खादो तथा भिन्न-भिन्न प्रकारकी जमीनसे सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करके प्रयोग करना चाहिए। आजकलके कृषि-विशेषज्ञोकी ऐसी मान्यता है कि अमुक मर्यादाके अन्दर चाहे जिस जमीनसे चाहे जो भी फसल पैदा की जा सकती है। इस मान्यताके अनुसार बरतते हुए फ्रान्समें, पहले जिन फसलोका खयाल भी नही किया जाता था, उनकी बोआई होती है और उनसे मुनाफा भी कमाया जाता है। यदि किसीको अवकाश हो तो इस सम्बन्धमे छानबीन कर ले। मै यह मानता हूँ कि मगनलालने खेतीके बारेमे पुस्तके इकट्ठी की थी। हमारे यहाँ 'कॉटन कमेटी'की रिपोर्ट भी है, उसमे भी कुछ मिलेगा। प्रोफेसर हिगिनबॉटमको इलाहाबादके पतेपर लिखकर देखा जाये तो वे भी शायद कुछ मदद कर सके। आश्रमकी जमीन तो उनकी देखी हुई ही है।

गाण्डीव चरखेको सामने रखनेके बजाय बगलमे समकोणसे रखा जाये तो इच्छा होनेपर पैर पसारा जा सकता है। मचियापर बैठकर कातना हो तो वह भी सहज ही हो सकता है। चरखेको मचियाकी ऊँचाईके बराबर ऊँची पेटी अथवा उसके लिए खास तौरसे बनवाये चौखटेपर रखा जा सकता है।

अनन्तपुरकी रिपोर्टके बारेमें मै समझा नही। यदि वह रजिस्ट्रीसे भेजी गई हो तो रजिस्ट्रीकी पहुँचकी रसीद होनी ही चाहिए। यह हो तो काम चल जायेगा, और डाकघरमे इतना पता लगाया जा सकता है कि पहुँचकी रसीदपर किसके हस्ताक्षर है। यह पता करनेके लिए शुल्क देना पडता हो तो दे देना। यदि अनन्तपुरकी रिपोर्ट फिर मँगवाई हो तो उसका अर्थ तो यह होगा कि अब तीसरी प्रति भेजनी है। यह तकलीफ उन्हे कैसे दी जा सकती है?

पद्माके विषयमे तुमने जो कहा है, वह ठीक है। मन्दिरके सम्बन्धमें पण्डितजी को लिखा है,[2] वह पत्र तुम देख लेना। मैने ऐसा समझा है कि व्यायाम मन्दिरमें

१. आश्रमके निकट रहनेवाले बुधाभाईकी पत्नी।
२. देखिए "पत्र: नारायण मोरेश्वर खरेको", ३-९-१९३२।

गणपतिकी मूर्ति हमेशा स्थायी रूपसे नही रहेगी। मजुला और कॉडलिवर ऑयलके[1] सम्बन्धमे मै लिख चुका हूँ। इन्दुका खयाल रखना। अगर उसका दिमाग खराब हो जानेका भय हो तो बीमारीके उस सीमातक पहुँचनेके पहले ही[2] उसका निवारण करना।

आश्रममे रहनेवाले लोगोकी सख्या अच्छी ही मानी जायेगी। जमना[3] राजकोटमे रुक गई है, वह तो अच्छा ही माना जायेगा। आशा है, अब देवभाभी[4] अच्छी हो गई होगी। वीरमतीको[5] कहाँ रखा है? अमतुलबहनने अपने पत्रमे लिखा है कि उर्दूमे मैने जो उसे उसका पूरा नाम अमतुलसलाम लिखा वह उसको अच्छा लगा। मै तो उससे पूछने जा ही रहा हूँ,[6] लेकिन तुम भी पूरा नाम अच्छा लगनेका कारण जान लेना और अगर वही ठीक हो तो तुम सब उसे इसी नामसे बुलाना। हो सकता है, 'अमतुल' कोई नाम ही न हो, बल्कि 'अमतुलसलाम' ही एक अविभाज्य नाम हो। जिस प्रकार हम इब्राहीमके बदले किसीको इब्रा नाम नही दे सकते अथवा ब्रजकृष्णके बदले ब्रज नही कह सकते है, वैसे ही।

११ सितम्बर, १९३२

लगता है, डॉ० शर्मा कुछ दिन आश्रममे रहनेके लिए आना चाहते है। उन्हे आश्रमकी नियमावली भेज देना। जबतक वहाँ रहे, उनका पालन करते रहे तो उन्हे आनेके लिए लिखनेमें मुझे कोई अड़चन नही दिखाई देती। फिर भी, तुम्हें जैसा ठीक लगे वैसा ही करना।

ब्रजकृष्णको लिखा पत्र[7] पढना। वह स्वच्छ-हृदय व्यक्ति है। उससे बात करना। उसकी शंका दूर की जा सकती हो तो दूर करना।

वहाँ जो रोटी बनती है, उसके सम्बन्धमे जानकारी भेजनेके लिए मैने शुक्रवार को एक पोस्टकार्ड[8] लिखा था। वह पहुँच गया होगा। मैने रोटी बनानेके तरीकेका ब्योरा माँगा है। अभी मैने यहाँ जो रोटी बनती है, उसमे हाथ डाला है, और मै भी रोटी खाने लगा हूँ। रोटी बड़ी अच्छी बनती है। इससे अच्छी रोटी शायद हम नही बनाते।

शारदाको लिखा पत्र पढना। लड़कियोकी समस्यापर हमे विचार कर लेना है। मुझे ऐसा भासित होता है कि उनके स्वास्थ्यकी कुंजी शायद हाथ लग गई

१. देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको", ३/४-९-१९३२।

२. **बापुना पत्रो-९: श्री नारणदास गांधीने**, भाग-१ में इससे आगेका अंश ३ सितम्बरके अंतर्गत छापा गया है, जो कि अशुद्ध है, देखिए पृ० १६ की पाद-टिप्पणी २।

३. नारणदास गांधीकी पत्नी।

४. नारणदास गांधीकी माँ।

५. माधवलाल शाहकी पत्नी।

६. देखिए "पत्र: अमतुस्सलामको", ११-९-१९३२।

७. देखिए "पत्र: ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको", ११-९-१९३२।

८. देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको", ९-९-१९३२।

है। बहुत कम शिक्षा पाई इन सारी बहनोंको हमें सब तरहसे कुशल बनाना है। यह कैसे हो सकता है, यह तो तुम्हारे ही सोचनेकी बात है।

३७ एक साथ बँधे हुए और १५ खुले हुए, कुल ५२ पत्र हैं।

बापू

[पुनश्च :]

मेरा वसीयतनामा वहीं कहीं पड़ा होगा। मुझे उसकी नकल भेजना। सीलबन्द हो तो सील तोड़कर निकाल लेना। उसके सम्बन्धमें कोई सुझाव देना हो तो देना। ट्रस्टियोंके नाम बदलनेकी तो अब जरूरत होगी न? इमाम साहब तो रहे नहीं। सभी नाम मुझे याद नहीं हैं।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५० और ८२४८ से भी, सौजन्य: नारणदास गांधी

६२. पत्रोंके अंश

११ सितम्बर, १९३२

परमेश्वर और प्रकृति एक ही वस्तु है। देवता परमेश्वरकी एक-एक शक्ति है। उसकी उपासनासे भी अन्तमें परमेश्वरतक पहुँचा जा सकता है।

× × ×

कर्मप्राधान्यका वर्णन करके तुलसीदासजी ने ईश्वरी न्यायकी प्रशंसा की है। भक्तके पापोंको भगवान् क्षमा करता है। शास्त्रकी भाषामें इसका अर्थ यह है कि भक्त जब भगवान्में लीन हो जाता है तब शुद्ध होता है। शुद्ध होना पापका क्षय ही है, जैसे सुवर्णमें से कुधातुका निकलना। . . .

× × ×

सन्त पुरुषका एकान्तमें रहकर विचार-मात्रसे भी सेवा कर सकना सम्भव है। ऐसा लाखोंमें एक निकल सकता है।

× × ×

शरीरका अस्तित्व पूर्ण अहिंसाका विरोधी है। बिना पूर्ण अहिंसा सत्यका साक्षात्कार असम्भव है। लेकिन जो निर्विकार हुआ है वह बहुत नजदीक जाता है, उतना काफी होना चाहिये।

× × ×

दण्डका अर्थ आजतक मैंने शरीर-दण्ड समझा है। भोजनादिक बन्द करना मेरी कल्पनाके बाहर नहीं है। उसे मैं दण्ड नहीं कहूँगा। भोजनका स्वतन्त्र अधिकार किसी संस्थामें किसीको नहीं है। समझौतेकी बात है। एक तरफसे नियम-पालनकी

शर्त है, दूसरी तरफसे भोजनादि देनेकी। सस्थामे भोजनकाक वदला पैसा ही नही, परन्तु नियमपालन है।

× × ×

भय और सत्य विरोधी वस्तु है। परन्तु जिसमे भयका अंश भी नहीं ह उसे छिपाना सत्यका अविरोधी और आवश्यक हो सकता है। दरदीके स्वास्थ्यके लिये वैद्य अवश्य भयानक व्याधिकी बात छिपा सकता है, छिपानेका धर्म भी हो सकता है।

× × ×

सब इन्द्रियाँ जिसके वशमे है वह पूर्ण ब्रह्मचारी है। यह स्थिति शरीर रहते हुए सम्भवित है। खोराकका सयम आवश्यक है, ब्रह्मचर्य-पालनमे उसका हिस्सा कम है। असयम अवश्य घातक है। दूध-घी, औषधकी मात्रामे लेनेसे हानिकारक नही है ऐसी कुछ मेरी प्रतीति है।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १५-१६

६३. पत्र : अमतुस्सलामको

११ सितम्बर, १९३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम,

सिर्फ अमतुल[1] क्यो नही, मुझे समझाओ। जिस पैसाकी उम्मीद रखती है वह मिले तो ठीक है, न मिले तो भी ठीक समझना। तुम्हारे हरफ अच्छे तो है, लेकिन और भी साफ लिखो। ऐसे भी दो-चार खत पढनेसे सब समझा जायेगा। बम्बईमे लडकियोकी पढाईका कोई इन्तजाम नही है, यह सुनकर ताज्जुब होता है। मेरा तो खयाल था कि अजुमनने बहुत अच्छा इन्तजाम किया है। डॉ० शर्माके बारेमे नारणदाससे बात करो। मेरे खयालसे तो अगर वे आश्रमके कानूनके पाबन्द रहे, तो आनेमे कोई हर्ज नही है।

कुदसिया[2] के बारेमे मै समझा हूँ। लडकी आश्रममे अच्छी हो जाये तो कैसा अच्छा होगा? तुम्हारी सेहतके लिए आराम ही बड़ी बात है।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० २५७) से।

१. लगता है गाधीजी ने अपने पहलेके पत्रोंमें उन्हें 'अमतुल' से सम्बोधित किया था जिसका उन्होंने विरोध किया; देखिए "पत्र: नारणदास गाधीको", [७]/११-९-१९३२। उनका पूरा नाम दो शब्दोंसे मिलकर बना है—'अमतुल'–बन्दी और 'सलाम'–शान्ति अर्थात् शान्तिकी बन्दिनी।

२. अमतुस्सलामकी भतीजी।

६४. पत्र : कृष्णदासको

[१३ सितम्बर, १९३२ के पूर्व]

तुम्हारे पत्रकी राह ही देख रहा था, और आज वह मिल भी गया। दुर्घटना-मे वच रहनेवाले लोगोकी भावनाओको मै समझ सकता हूँ। लेकिन, तुम्हे उनमे मृत्युके प्रति निर्भयताका भाव भरना चाहिए और यह समझाना चाहिए कि मृत्यु तो एक मित्रकी तरह आती है। चाहिए तो यह था कि मृत्युके प्रति हम सबसे अधिक उदासीन होते, पर पता नही क्यो, अन्य धर्मोके अनुयायियोकी अपेक्षा हम लोग ही उससे अधिक डरते है। मुसलमान उससे सबसे कम डरते जान पडते है। उनके बाद ईसाइयोका स्थान आता है। मेरा खयाल है, चीनी लोग भी मृत्युको जीवनकी अत्यन्त साधारण घटना मानते है, और वास्तवमे वह है भी ऐसी ही। लेकिन हम लोग किसी महत्त्वपूर्ण मृत्यु-प्रसगके बाद बहुत दिनोतक निर्जीव-से बने रहते है और उसपर शोक करना तो कभी नही छोड़ते।

तुम सबको मेरा स्नेह-वन्दन। वल्लभभाई और महादेवकी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ है।

तुम्हारा,
बापू

[अंग्रेजीसे]
एडवांस, १३-९-१९३२

६५. तार : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

[१३ सितम्बर, १९३२][1]

चार्ली एण्ड्रयूज
११२ गोवर स्ट्रीट
लन्दन

तुम्हारा तार मिला। मै इस उपवासको ईश्वरका आदेश मानता हूँ। दलित वर्गोके लिए पृथक् निर्वाचक-मण्डल व्यवस्थाका वापस लिया जाना निश्चित हो, केवल इसी आधारपर उपवास स्थगित[2] कर

१. महादेवभाईनी डायरीके अनुसार।

२. सी० एफ० एण्ड्रयूजने यह तार भेजा था: "कृपया मेरे वहाँ आनेतक उपवास स्थगित रखें। शीघ्र ही रवाना हो रहा हूँ।"

सकता हूँ। तुम्हारा लन्दनमे रहना भारत आनेसे अधिक उपयोगी है। वल्लभभाई और महादेव इस वातसे सहमत है।

[अंग्रेजीसे]

वम्वई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०/१३ से; **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२, पृ० २० से भी।

६६. पत्र : मोहनलाल एम० भट्टको

१३ सितम्बर, १९३२

मै मानता हूँ कि यह मेरा परम धर्म है। इसलिए रामदास या तुम, कोई भी बिलकुल खिन्न न होना, वल्कि सव प्रसन्न होना और ईश्वरका अनुग्रह मानना कि तुम्हारे एक साथीको धर्मपालनके मार्गमे यह अन्तिम कदम उठानेकी बात सूझी और उसे इसका अवसर मिला है। यह तो सभी समझ सकेगे कि इसका अनुकरण किसीको नही करना चाहिए। अनशन करनेका अधिकार सबको नही होता। और अधिकारके विना जो अनशन करते है, उनका तप शास्त्रविरुद्ध और आसुरी है। इसलिए उनके पल्ले निरे कष्टके सिवा और कुछ पड़ता ही नही। इसलिए मेरे अनशनके विषयमे तुम सबका धर्म किसी भी प्रकारका विचार या चिन्ता किये विना ज्यादा कर्त्तव्य-परायण वनना, ज्यादा शुद्ध वनना और ज्यादा जाग्रत रहना है। . . .[1] वहाँ किसी भी तरहकी खलबली न होनी चाहिए। यह निश्चित समझना कि जो [जेलके] अन्दर है, उनके लिए तो मैने ऊपर जो-कुछ कहा है, उसके सिवा अन्य कोई कर्त्तव्य है ही नही।[2]

पुनर्जन्मका अर्थ है शरीरका रूपान्तर, आत्माका — शरीरीका — नहीं। इसलिए पुनर्जन्म [रूपान्तरकी] वैज्ञानिक मान्यतासे भिन्न है। आत्माका रूपान्तर नही, बल्कि स्थानान्तर होता है। अपनेको कर्त्ता न माननेवाले के हाथसे किसीकी मौत होती ही नही। कर्तृत्वको मानना, न मानना बुद्धिका नही, हृदयका विषय है। इसलिए सच पूछा जाये तो 'कर्त्ता न मानकर' और 'ईश्वरार्पण करके', यह प्रयोग ही गलत है। क्योकि यह वुद्धिका प्रयोग हुआ। और 'गीता' या अन्य शास्त्रोमे ईश्वरार्पणताके जो वचन आते है, उनका वुद्धिके साथ कुछ भी सम्बन्ध नही। मै जिस रूपमे वेदान्तको समझता हूँ, उस रूपमे तो इसका हमारे कार्यके साथ अच्छी तरह मेल वैठता है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१-२

१. साधन-सूत्रमें यह स्थान रिक्त है।

२. इसके वाद साधन-सूत्रमें एक अन्य पत्र दिया गया है (देखिए अगला शीर्षक) किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि इस अनुच्छेद और अगले अनुच्छेदके वीचमें कोई अंश छोड़ दिया गया है या नहीं।

६७. पत्र : देवदास गांधीको

१३ सितम्बर, १९३२

अनशनकी डौडी पिट गई। मै यह मान लेता हूँ कि तू विलकुल घवराया न होगा। ऐसा अपूर्व अवसर किसीको माँगे नही मिलता। यह तो कभी-कभी और किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। मै यह मानता हूँ कि उक्त अवसर मुझे मिला है, और जो ऐसा मानता है, वह तो उसका स्वागत ही करेगा। इसलिए उद्वेगका कोई कारण नही। कलकत्तेमे घनश्यामदास मिले तो उन्हे यह समझाना। मालवीयजी को समझानेकी जरूरत ही नही। मै यह मानता हूँ कि वे तो हर्षके आँसू वहाते होगे और उनके हृदयसे पल-पल मेरे लिए आशीर्वादके उद्‌गार निकलते होगे। इतना तू उनसे कहना और यदि अन्य स्नेही खिन्न हो तो तू खुद वहादुरीसे उन लोगोको खिन्न होनेसे रोकना। दूसरे अगर समझे तो उनका धर्म तो अधिक कर्त्तव्य-परायण होना, लोगोको जाग्रत करना और लोकमत तैयार करना है। और यदि शान्त किन्तु प्रचण्ड लोकमत तैयार हो जाये तो शायद मुझे अन्ततक उपवास करना भी न पडे। जहाँतक मै अपनेको समझ सकता हूँ, उसके अनुसार मुझे ऐसा करना पडे तो इसमे परम शान्ति ही है। और यदि यह अधूरा रहे और इस देहके द्वारा अभी और सेवा करनी वाकी होगी, तो भी मै उसका स्वागत 'करूँगा। मेरा मन आखिरतक स्थिर रहे तो दोनो दृष्टियोसे अच्छा है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २२

६८. पत्र : कस्तूरबा गांधीको

१३ सितम्वर, १९३२

तेरा पत्र मिल गया। तूने शायद मेरे उपवासकी वात सुनी होगी। इससे तू जरा भी न घवराना, और न अन्य वहनोको घवराने देना। तुझे तो हर्ष ही होना चाहिए कि ईश्वरने मुझे ऐसा कठिन धर्म पालन करनेका अवसर दिया है। आशा है, इस उपवासका अर्थ भी तू समझ गई होगी। अन्त्यज भाइयोके वारेमे मैने जो माँग की है, वह मजूर हो जाये तो मेरे लिए उपवास करनेकी वात नही रह जाती, और यदि उपवास शुरू हो गया हो, तो उसे तोडा भी जा सकता है। लेकिन अन्त तक पूरा करना पडे तो ईश्वरकी कृपा ही माननी चाहिए। करोडोमे किसी-किसीको ही माँगी हुई मौत मिलती है। यदि ऐसी मौत मुझे मिले तो कितना अच्छा हो? और यह तो सूरजके प्रकाशकी तरह स्पष्ट है कि मौत न मिले तो और भी ज्यादा

शुद्ध होना, और ज्यादा सेवा करना मेरा धर्म हो जायेगा। मैं समझता हूँ कि पचास वर्षतक मेरे साथ रहनेके बाद इतनी आसान बात तो तू अच्छी तरह समझ ही जायेगी और इसे बरदाश्त कर सकेगी।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २२-३

६९. पत्र : नारणदास गांधीको

१३ सितम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

मेरे अनशनकी खबर अखबारोमे देखी होगी। मैं मान लेता हूँ कि उससे वहाँ कोई घबराया नही होगा। यदि समझे तो यह तो सभी आश्रमवासियोके लिए उत्सव का अवसर होना चाहिए। अनशन आश्रमकी कल्पनाकी सबसे अन्तिम और उत्तम वस्तु है। इसका अधिकार किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। शुद्ध अनशन रोज-रोज नही किया जाता। इसका अधिकार किसी-किसी समय और बिरले लोगोको ही मिलता है। मैंने यह मान लिया है कि इस बार यह अधिकार मुझको मिला है। अगर इसमे मुझसे भूल हुई होगी तो अनशन मिथ्याभिमान माना जायेगा और वह आसुरी तप होगा। अपने अन्त करणको इतना शुद्ध करनेके लिए कि अन्तरात्माकी आवाज ठीक-ठीक सुनाई दे, मै लगभग आधी शताब्दीसे अविच्छिन्न प्रयत्न करता आ रहा हूँ। मै मानता हूँ कि इस प्रयत्नके अन्तमे मुझे अन्तरात्माकी आवाज सुननेकी थोड़ी-बहुत शक्ति मिल गई है। अन्तरात्माकी इसी आवाजके वशीभूत होकर मैंने यह कदम उठाया है। २० तारीख तो अभी दूर है। अभी तो संकल्प-मात्र है। यह चीज क्या है, यह समझाने-भरके लिए और फिर यह सुझानेके लिए ही यह पत्र लिख रहा हूँ कि वहाँ कोई घबराहटमे न पड़े, बल्कि यह समाचार सुनकर अधिक कर्त्तव्यनिष्ठ बने, अधिक शुद्ध बने और अधिक जाग्रत हो। तुम खुद तो यह समझते ही होगे कि वहाँ किसीको इस उपवासका अनुकरण नही करना है। दूसरोको भी समझाओ। अनशन करनेकी इच्छा मैंने गुप्त रखी और हम तीनके अलावा और किसीके कानमे यह खबर नही पड़ने दी, इससे वहाँ किसीको आश्चर्य तो नही हुआ होगा। जेलका तो यह नियम ही है कि ऐसे पत्रोकी बात मुझे प्रकट नही करनी चाहिए, और यदि मै अनुचित रूपसे इसे प्रकट करनेकी इच्छा भी करूँ तो इतनेसे ही मेरा सत्याग्रह कलंकित हो जायेगा और इसकी शुद्धतामे बहुत बडा धब्बा लगेगा। इस व्रतका महत्त्व इसकी सम्पूर्ण शुद्धतामे ही निहित है। तुम्हारा साप्ताहिक पैकेट मिल गया है। इस बार तो उसके उत्तरमे पत्र नियमपूर्वक लिख सकूँगा, ऐसा मानता हूँ। जरा शंकित मनसे लिख रहा हूँ, क्योंकि इन शेष दिनोमे काम ज्यादा होनेकी सम्भावना है। तुम्हारे

जानने योग्य कोई नई बात होगी तो लिखूंगा। आश्रमके सम्पर्कमे रहनेवालों को यह पत्र दिखाना चाहो तो दिखा सकते हो।

आनन्दीसे कहो कि उसे मैं विस्तारसे पत्र लिखूंगा। उसका पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा है। वह बिलकुल निर्भय रहे। सभी लड़कियोको तुम निर्भय बनाना। आश्रममे यदि कोई लड़कियोंके बारेमे कानाफूसी करता हो तो इसे बुरी आदत मानना चाहिए। हमारे और लड़कियोके भाग्यमे जो होगा वह होकर रहेगा। लेकिन, उनके बारेमे शकाशील रहकर हमें उनको भयभीत नही करना चाहिए। जहाँ चेतावनी देनेका कारण मिले वहाँ चेतावनी दे देनी चाहिए और फिर निश्चिन्त हो जाना चाहिए। लड़कियोको ऐसा लगना ही नही चाहिए कि उनको किसी प्रकारसे दबाया जा रहा है। उनपर जो प्रतिबन्ध लगाये जाते हो, उनके बारेमे उन्हे समझाना चाहिए और ये प्रतिबन्ध इस तरहसे लगाने चाहिए कि उनको अनुकूल पडे।

हरियोमलको वापस आनेकी इजाजत दे दी, यह मुझे तो ठीक ही लगता है। आशा है, बाबा अब बिलकुल अच्छा हो गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५१ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

७०. एक पत्र

[१३ सितम्बर, १९३२ के पश्चात्][1]

प्रिय बहन,

तुम और दूसरी बहनें आकर मुझसे मिल सकती हो, मगर ऐसा नही है कि यह जरूरी हो। हाड़-मासकी इस क्षयशील कायाको देखने आनेकी अपेक्षा उस कामको करना अच्छा है जिसके लिए तपश्चर्या की जा रही है।

बापू

[अंग्रेजीसे]

एपिक फास्ट, पृ० १२८

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह पत्र १३ सितम्बरको गांधीजी का सरकारके साथ पत्र-व्यवहार छप जाने पर उन्हें मिले अनेक पत्रोंके उत्तरोंमें से एक है।

७१. पत्र : कामकोटि नटराजन्को

१४ सितम्बर, १९३२

प्रिय कामकोटि,

तुम्हारा स्नेहसिक्त हृदयस्पर्शी पत्र मिला। अपनी अन्तरात्माके आदेशपर मैंने जिस अग्नि-परीक्षासे गुजरनेका निश्चय किया है, उसपर दुःख करनेका कोई कारण नही है। यह ऐसा सौभाग्य है, जो किसीको बहुत कम ही मिलता है। पचास वर्षो तक अपने दलित वर्गोके भाइयोके साथ अपनत्वका नाता रखनेके बाद मुझे इस अग्नि-परीक्षासे बचनेका कोई रास्ता दिखाई नही दिया। फिर भी, यदि ईश्वर मेरे इस शरीरसे और अधिक सेवा चाहता होगा तो वह मेरे लिए रास्ता साफ कर देगा।

और प्रार्थनामे श्रद्धा क्यो नही? श्रद्धा या तो अपने अन्दरसे प्राप्त की जाती है या फिर वह वहाँ स्वत प्रगट होती है। प्रत्येक देश और प्रत्येककालमे जो ऋषि-मुनी हो गये है, उन्होने निर्विवाद रूपसे जिस बात की साक्षी दी है, उससे तुम्हे यह विश्वास हो जाना चाहिए। सच्ची प्रार्थना केवल ओठोसे बुदबुदाई नही जाती। सच्ची प्रार्थना कभी झूठी नही पड़ती। निस्स्वार्थ सेवा प्रार्थना ही है। तुम्हे ऐसा कभी नही कहना चाहिए कि 'मुझे प्रार्थनामे श्रद्धा नही है'।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४

७२. तार : घनश्यामदास बिड़लाको

[१५][1] सितम्बर, १९३२

त्वरित

घनश्यामदास बिडला
बिड़ला पार्क
बालीगज, कलकत्ता

तार मिला। परेशान होनेका कोई कारण नही। खुशी मनानेका पूरा कारण है। दलितोके लिए अन्तिम बलिदान करनेका ईश्वर-प्रदत्त अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। मेरा निश्चित मत है कि उपवासकी तिथि टाली

१. देखिए "तार : घनश्यामदास बिड़लाको", १८-९-१९३२; लेकिन साधन-सूत्रमें तिथि १६ सितम्बर, १९३२ ही दी हुई है।

नही जानी चाहिए। किसी कामका निर्देश भेजने अथवा भावी कार्रवाईके विपयमे कुछ कहनेमे सर्वथा असमर्थ हूँ।[1]

[अग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फा० न० २०/९, हिन्दू, १७-९-१९३२, से भी।

७३. सन्देश : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

[१५ सितम्बर, १९३२][2]

चिन्ताकी कोई वात नही। इसके विपरीत मै तो आपसे यह अपेक्षा रखता हूँ कि आपके एक साथीको दलितोके हितमे सत्याग्रह-यज्ञमे अन्तिम आहुति देनेका ईश्वर-प्रदत्त अवसर प्राप्त हुआ है, ऐसा मानकर आप हर्षोल्लसित होगे। अनशनकी तिथि पर पुनर्विचार करनेकी गुजाइश नही है। अगर आप अनुमति ले सके तो आपसे मिल सकता हूँ।

[अग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका १८-९-१९३२

७४. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

१५ सितम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

दो महत्त्वपूर्ण तार तत्परतासे भेजनेके लिए धन्यवाद। यदि आपको मेरे उत्तर भिजवानेका भी अधिकार हो तो मै चाहूँगा कि साथके उत्तर आप एक्सप्रेस डाक द्वारा भिजवा दे। राजगोपालाचारीको भेजे मेरे उत्तरमे[3] आप देखेगे कि मैने लिखा है कि वे जब भी चाहे आ सकते है। ऐसा मैने यह मानकर लिखा है कि जब आपने वह तार मुझतक पहुँचा दिया जिसमे मुझसे मुलाकातकी माँग की गई है तब तो मुलाकातकी इजाजत देनेका भी अधिकार आपको होगा ही। शायद आप मूल तारोको देखना चाहे, ऐसा सोचकर उन्हे भी साथमे भेज रहा हूँ। इन्हे कल सुबह लौटा देनेकी कृपा क .

हृदयसे आपका,

मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५१२७) से।

१. देखिए "पत्र एम० जी० भण्डारीको", १७-९-१९३२।

२. साधन सूत्रमें तिथिका उल्लेख नही किया गया है। लेकिन, लगता है कि एम० जी० भण्डारीको सम्बन्धित व्यक्तियोंको भेजनेके लिए जो सन्देश दिये गये थे, यह उन्हींमें से था। देखिए अगला शीर्षक।

३. देखिए पिछला शीर्षक।

७५. पत्र : मीराबहनको

१५ सितम्बर, १९३२

चि० मीरा,

मै तुम्हारे पत्रकी वाट देख रहा था। वह आज पहुँचा। प्रसन्नताकी वात है कि तुमने उपवासका कारण समझ लिया है। उसके सिवा कोई चारा नही था। यह एक सौभाग्य भी है और कर्त्तव्य भी। यह सौभाग्य एक या अनेक पीढियोमे किसी विरलेको और क्वचित् ही प्राप्त होता है। अहिसाके मार्गमे उपवास सर्वोत्कृष्ट कदम है, वशर्ते कि वह अहिंसाकी भावनासे ओतप्रोत हो और जिस कार्यके लिए उपवास किया जाता है, उसमे स्वार्थका लेश भी न हो। इसलिए मै कहता हूँ कि तुम भी मेरी तरह हर्ष मनाओ कि मुझे ऐसा अवसर प्राप्त हुआ दीखता है। 'दीखता है' इसलिए कहता हूँ कि अभी मेरी श्रद्धाकी परीक्षा होनी है। जीवन-मरणके मामलेमे कोई अपनी शक्तिकी बात करनेका साहस नही कर सकता। इसलिए प्रश्न यह है कि क्या मुझमे आवश्यक शक्ति है। दूसरे यह, कि जिस उद्देश्यके लिए वह किया जा रहा है, उसमे क्या अपेक्षित शुद्धता है; और तीसरे, कि क्या इस व्रतको लेनेमे मै सचमुच हिंसासे सर्वथा मुक्त हूँ। जब मै कहता हूँ कि मुझे ये सब बाते प्रतीत होती है, तव मै केवल अपना विश्वास ही प्रकट करता हूँ। निर्णय तभी दिया जा सकता है, जब कार्य पूरा हो जाये। मै चाहता हूँ कि तुम इस घटनाकी प्रगतिको जरा भी अशान्त हुए विना देखती रहो। और न तुम्हे किसी भी स्थितिमे सहानुभूतिमे उपवास करना चाहिए। तुम्हे अपने ही काममे डूबे रहना चाहिए, और वह काम यह है कि पूर्ण धीरज और सन्तोषके साथ अपनी कैद पूरी करो और जो भी समय तुम्हे मिले, उसके हर क्षणका अच्छेसे-अच्छा उपयोग करो।

अगर तुम दूसरी तरहसे तन्दुरुस्त और अच्छी हो, तो तुम्हारे वजनके घटनेकी मुझे चिन्ता नही है। जव तुम्हारे लिए वहाँकी जलवायु अनुकूल हो जायेगी और मौसम सुवर जायेगा — जो अभी एक महीने और नही होगा — तब वजन धीरे-धीरे वढ़ जायेगा।

मै तो विलकुल अच्छा हूँ। अभी मेरी खुराक डबलरोटी, दूध, एक शाक, देसी खजूर (जो वुरे नही है) और मोसम्बी है।

यह जानकर खुशी हुई कि किसन तुम्हारे साथ है। अब तो तुम लोगोका वहाँ एक खासा परिवार वस गया होगा। मुझे मालूम है कि तुममे स्वभावत वृक्षो और पशुओको मित्र वनानेकी कला थी। मै चाहता था कि तुम इस विचारका विस्तार इस तरह कर लो कि तुम्हे बाहरी मित्रोका अभाव न खटके। इसीलिए मैने अजनवियोको भी उसी श्रेणीमे रखा था। यानी हमे निश्चित रूपसे अनुभव होना चाहिए कि निजी मित्र और सम्बन्धी लोग अजनबी लोगो, पशु-पक्षियो और पेडोसे

अधिक मित्र नही होते। वे सब एक ही है और अगर हम केवल महसूस कर सके, तो वे सब ईश्वरके ही अश हैं। जब हम जेलकी दीवारोमें बन्द होते है, उस वक्त निश्चित तौरपर ऐसा अनुभव होनेसे बाहरके मित्रोसे मिलनेकी सारी लालसा मिट जाती है।

इग्लैंडसे परिवारकी जो खबरे तुम्हें मिली है, वे हर्षप्रद हैं। उन्हें पत्र लिखो तब सबको मेरा स्नेह लिखना।

हमारे बिल्ली-परिवारको या उसके कुछ सदस्योंको चरखेकी मालसे प्रेम है। उनमे से एकने पिछले दिनो उसे नष्ट कर दिया। वे भोजनके समय अपना सगीत छेड़ देते है और जब वल्लभभाई उन्हे खाना परोस देते है, तभी बन्द करते है। माँको शाकाहारका शौक है। उसे दाल, चावल और खासकर तरकारियाँ बहुत पसन्द है। क्या मैंने बता दिया कि इस परिवारमे वृद्धि हुई है? माँको जब प्रसव-पीडा हो रही थी तब, और प्रसवके बाद दो-तीन दिनतक उसमे मानवताके दर्शन हुए। वह हमे लाड करती और हमसे कराये बिना नही छोड़ती थी। वह करुण दृश्य था। अपने बच्चेकी वह कितनी सँभाल रखती है, यह देखकर बडा आश्चर्य होता है।

हम सबकी ओरसे तुम सबको स्नेह।

बापू

[पुनश्च:]

आजकल 'रामायण' का पाठ नियमित रूपसे हो रहा है; परशुराम हम सबको सुनाता है।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२३७) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९७०३ से भी।

७६. पत्र: फ्रैन्सिस्का स्टैंडेनेथको

१५ सितम्बर, १९३२

मै समझता हूँ, सत्यवानकी[1] समस्या सरल है। कोई भी आदमी अपनी शक्तिसे आगे नही जा सकता। किसीको ब्रह्मचर्यका पालन करनेके लिए मजबूर नही किया जा सकता। उसके लिए आन्तरिक विश्वासकी प्रेरणा होनी चाहिए। तुम उसे अपनेसे अलग होनेकी, और जरूरत पड जाये तो, तलाकका हुक्मनामा लेनेकी पूरी आजादी दे सकती हो। उसे अपनी पसन्दकी किसी दूसरी स्त्रीके साथ विवाह करनेकी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। निरन्तर वासनाकी तृप्तिके सम्बन्धमें ही सोचता रहे, ऐसे विषयी मनका होना तो बहुत भयंकर बात है। तुम उसपर जितना प्रेम बरसा सको, बरसाओ। उसके प्रति कठोर दृष्टिकोण न रखो। इतने वर्षोंतक उसने अपनेपर काबू

१. फ्रैन्सिस्का स्टैंडेनेथके पति फ्रेडरिक स्टैंडेनेथ।

रखनेका प्रयत्न किया, यह उसके लिए बहुत माना जायेगा। उसकी वासनाको सन्तुष्ट करनेकी तुम्हे जरा भी इच्छा हो, तो यह मानो कि इसके लिए तुम्हे स्वतन्त्रता है। कारण, आत्मसयमका निर्णय तुम दोनोने मिलकर किया था। इसलिए इस करार पर फिरसे विचार करनेकी एक पक्ष इच्छा करे, तब दूसरे पक्षकी भी अगर ऐसी मरजी हो जाये, तो उसे यह करनेकी स्वतन्त्रता है। लेकिन यदि तुम्हें विश्वास हो कि तुममे वासनाका लेश भी नही है, तो यथासम्भव अधिकसे-अधिक प्रेमसे, परन्तु पूरी दृढताके साथ, सत्यवानके हर अनुनय-विनयका तुम्हे विरोध करना चाहिए। यह पत्र उसे पढ़नेको देना। वह इसपर विचार करे और प्रकाशके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करे। मगर उसे लगे कि वह अपने विकारपर काबू नही रख सकता और उसके अधीन होनेकी तुम्हारी इच्छा न हो, तो उसे दूसरी स्त्रीसे शादी कर लेनी चाहिए। तुम दोनोको मित्र बनकर अलग होना चाहिए। तुम्हे अलग ही होना पडे तो यह विचार गौण होना चाहिए कि बादमे मेरा क्या होगा। यदि तुम्हारे अन्दर शक्ति होगी और मै जानता हूँ कि वह है, तो तुम अपनी मेहनतसे ही अपनी गुजर कर लोगी।

ईश्वर तुम्हारी मदद करे और तुम दोनोंको उसका आशीर्वाद मिले।

अपार प्रेम-सहित,

बापू

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २६

७७. तार: सतीशचन्द्र दासगुप्तको

१६ सितम्बर, १९३२

सतीशबाबू
खादीप्रतिष्ठान
सोदपुर

तार मिला। तुमने मेरे हृदयकी भावनाको बिलकुल ठीक समझा है। अपने, हेमप्रभा [और] अरुणके[1] स्वास्थ्यका समाचार तारसे देना। बहुत समय हो गया हेमप्रभाका कोई पत्र नही मिला है। मैंने स्वयं कई लिखे। स्नेह।

बापू

[अंग्रेजीसे]
बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०/९।

१. सतीशचन्द्र दासगुप्तका पुत्र।

७८. तार: जमशेद मेहताको

१६ सितम्बर, १९३२

जमशेद मेहता
कराची

कृपया मुझे ईश्वरके नामपर और उसीके आदेशानुसार लिया गया निर्णय वदलनेको न कहे। यदि उसकी इच्छा होगी तो वह उपवास के वावजूद मुझे कोई समाधान होनेतक जीवित ही रखेगा। कीकीवहन[1] कैसी है? सस्नेह।

[अंग्रेजीसे]

वम्वई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०/९, हिन्दू, १७-९-१९३२, से भी।

७९. तार: तेजबहादुर सप्रूको

१६ सितम्बर, १९३२

सर तेजवहादुर सप्रू
इलाहावाद

तारके[2] लिए धन्यवाद। आप मुझसे ईश्वरके नामपर लिया गया निर्णय वदलनेको तो नही ही कहेगे और न वैसी अपेक्षा करेगे। बिलकुल लाचार होकर मुझे यह निर्णय करना पडा। यदि ईश्वरकी इच्छा होगी तो मेरा शरीर उपवासको समझौता हो सकनेतक झेल लेगा और समझौता तो आप और जेलसे बाहर मौजूद अन्य मित्र ही करवा सकते है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

वम्वई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०/९। अमृतवाजार पत्रिका, १८-९-१९३२ से भी।

१. कीकीबहन लालवानी, जे० बी० कृपलानीकी बहन।

२. तार इस प्रकार था. "हार्दिक अनुरोध करता हूँ कि अभी आप उपवास न करें और उपवास करनेसे पहले एक बार दलित वर्गोंकी समस्याको सुलझानेकी कोशिश करके देखें। अगर इसमें आप विफल हो जायेंगे तो कोई अन्य तो सफल हो ही नहीं सकता। हिन्दू-समाजको इस कलकसे मुक्त करनेके लिए आपको जीवित रहना ही है।"

८०. तार : वाइसरायके निजी सचिवको

१६ सितम्बर, १९३२

नि० स० वा०
शिमला

बड़े दुःखके साथ अभी-अभी मैंने इस सरकारी निर्णयकी घोषणा पढ़ी कि मैं जो उपवास करनेकी सोच रहा हूँ, उसको प्रारम्भ करते ही मुझे यहाँसे किसी अज्ञात खानगी आवासमें ले जाया जायेगा, जहाँ मुझे कुछ प्रतिबन्धोंके अधीन रखा जायेगा। इससे जो अनावश्यक झंझट होगी, सरकारी पैसेका जो निरर्थक व्यय होगा तथा खुद मुझे भी बेकारकी जो परेशानी होगी, उस सबको बचानेके लिए मैं सरकारसे यह अनुरोध करता हूँ कि वह मुझे चुपचाप जहाँका-तहाँ रहने दे, क्योंकि इस सोची जा रही रिहाईके साथ मुझपर यहाँ-वहाँ आने-जाने या अन्य गति-विधियोंपर जो प्रतिबन्ध लगाये जायेंगे, उनका पालन मैं किसी भी तरह नहीं कर पाऊँगा।

गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८५९) से।

८१. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

१६ सितम्बर, १९३२

कृपया तुरन्त कार्रवाई करें

प्रिय मेजर भण्डारी,

साथमें एक सन्देश[1] भेज रहा हूँ। अगर इसे भेजना सम्भव हो तो मैं चाहूँगा कि इसे अभी भेज दिया जाये। यह देखते हुए कि यह सन्देश सरकारके लिए है, इसे भेजनेमें शायद कोई कठिनाई या विलम्ब न होना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८५८) से।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

८२. पत्र : मु० अ० अन्सारीको

१६ सितम्बर, १९३२

आपके स्नेहपूर्ण कार्ड मुझे मिलते रहे हैं। यह पत्र तो बस आपको और बेगम-सानीको हम सबका स्नेह और यह शुभकामना पहुँचानेके लिए ही लिख रहा हूँ कि आप दोनों शीघ्र ही स्वस्थ होकर घर लौट आयें।

मैंने जो कदम उठाया है, उसके बारेमें तो आपने पढ़ा ही होगा। यह ईश्वरका ऐसा आदेश था जिसकी मैं अवज्ञा नहीं कर सकता था। आशा है, मेरे इस निर्णयका मर्म समझनेमें आपको कोई कठिनाई नहीं हुई होगी। भविष्य तो ईश्वरके ही हाथोंमें है।

परिस्थितियाँ इतनी तेजीसे नये-नये मोड़ लेती जा रही हैं कि इस पत्रके आपके पास पहुँचते-पहुँचते क्या हो चुका होगा, कहना कठिन है।

अगर कहीं यह आपको लिखा मेरा अन्तिम पत्र साबित हुआ तो इसको ध्यानमें रखते हुए मैं आपको बता दूँ कि हिन्दू-मुस्लिम एकतामें मेरा विश्वास आज भी उतना ही ताजा है जितना पहले कभी रहा है, और मेरे जो सगे भाइयों-जैसे इतने सारे मुसलमान मित्र हैं, उनके कारण मैं अपनेको और भी धन्य मानता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २८-९

८३. पत्र : म्यूरियल लेस्टरको

१६ सितम्बर, १९३२

अब जब कि मैं (अपनी दृष्टिमें) यह पवित्र कदम उठाने जा रहा हूँ, उसके पहले मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि मैं पूरे किंग्सले-हॉल परिवारको, जिसके बीच मैंने अनेक सुखद महीने गुजारे[1] हैं, बराबर याद करता रहा हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३०

१. यह बात १९३१ की है, जब गांधीजी इंग्लैंड गये हुए थे; देखिए खण्ड ४८।

८४. पत्र : हे० सॉ० लि० और मिली पोलकको

१६ सितम्बर, १९३२

प्रिय हेनरी और मिली,

तो मैं तुम लोगोसे यह उम्मीद रखता हूँ कि जो कदम[1] मै उठाने जा रहा हूँ, उसे तुम ठीकसे समझोगे और उसके औचित्यको स्वीकार करोगे। यह निर्णय मैंने अन्तरात्माके दुर्निवार आदेशपर लिया है। चार्लीको सूचित कर देना। उसे पत्र इसलिए नही लिख रहा हूँ कि मुझे उसकी गति-विधिका ठीक पता नही है।

तुम सबको प्यार।

भाई

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग २, पृ० ३०

८५. वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको

१६ सितम्बर, १९३२[2]

अब कुछ ही दिनोमे मै जो उपवास करने जा रहा हूँ, उसका निश्चय मैंने ईश्वर के नामपर, उसीके कामसे, और जैसी कि मेरी विनम्र मान्यता है, उसीके आदेश पर किया था। मित्रोंने मुझसे यह अनुरोध किया है कि जनताको सगठित होनेका अवसर देनेके लिए मैं उपवास आरम्भ करनेकी तिथि आगे बढ़ा दूँ। किन्तु, मुझे दु:खके साथ कहना पड़ता है कि प्रधान मन्त्रीको लिखे अपने पत्रमे मैंने जो कारण बताये हैं[3], उनके अलावा किसी अन्य कारणसे उपवास शुरू करनेकी तिथिमें तो क्या, उसके लिए निश्चत समयमें भी कोई परिवर्तन करनेकी गुंजाइश मेरे सामने नही है।

१. हरिजनोंको पृथक् निर्वाचक-मण्डल देनेके प्रस्तावके खिलाफ; देखिए "वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको", १६-९-१९३२।

२. २२-९-१९३२के **बॉम्बे क्रॉनिकल**में छपी एक रिपोर्ट तथा **एपिक फास्ट**के अनुसार यह वक्तव्य बम्बई सरकारको समाचार-पत्रोंमें प्रकाशनार्थ १५ सितम्बरको भेजा गया था। लेकिन गांधीजी के हस्ताक्षरयुक्त वक्तव्यपर "१६-९-१९३२"की तिथि दी गई है, जो उन्हींकी लिखावटमें है। देखिए अगला शीर्षक भी।

३. यह कारण इस प्रकार था : "यदि उपवासके दौरान अपनी ही इच्छा अथवा जनमतके दबावके कारण ब्रिटिश सरकार अपना निर्णय बदल देगी और 'दलित' वर्गोंके लिए साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्वकी योजना वापस ले लेगी तो मैं उपवास समाप्त कर दूँगा। सरकारके यह योजना वापस ले लेनेपर 'दलित' वर्गोंके प्रतिनिधियोंका चुनाव मिले-जुले निर्वाचक-मण्डल द्वारा होगा।" देखिए खण्ड ५०, पृ० ३९३-४। साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यता के सम्बन्धमें गांधीजीके विचारोंके लिए देखिए परिशिष्ट १।

यह आसन्न उपवास उन लोगोके विरुद्ध है — चाहे वे भारतीय हो या विदेशी — जिनका मुझमे विश्वास है, और यह उन लोगोके पक्षमे है जिनका मुझमें विश्वास नही है। इसलिए यह अग्रेज अधिकारी-वर्गके खिलाफ नही, बल्कि उन अग्रेज पुरुषो एव स्त्रियोके विरुद्ध है जो अधिकारी-वर्गके प्रतिकूल प्रचारके बावजूद मुझमें और जिस उद्देश्यको लेकर मै चल रहा हूँ, उसकी न्याय्यतामे विश्वास रखते है। इसी तरह यह मेरे उन देशभाइयोके भी विरुद्ध नही है — वे हिन्दू हो या मुसलमान — जिनका मुझमे विश्वास नही है। यह तो उन असख्य भारतीयोके विरुद्ध है — वे चाहे किसी भी धर्मके अनुयायी हो — जो यह मानते है कि मै एक न्यायसगत उद्देश्य को लेकर चल रहा हूँ। और सबसे ज्यादा तो इसका उद्देश्य हिन्दुओकी अन्तरात्माको सही धार्मिक आचरण करनेको प्रेरित करना है।

जो उपवास करनेका विचार मैंने किया है, वह केवल लोगोकी भावनाको प्रभावित करनेके लिए नही किया है। उपवासके द्वारा मै अपना सारा प्रभाव (वह जितना भी है) विशुद्ध न्यायके पक्षमे डालना चाहता हूँ। इसलिए मेरी जान बचानेके लिए अनुचित जल्दबाजी या अतिशय चिन्ता करनेकी जरूरत नही है। मै इस कहावतमे पूरा विश्वास करता हूँ कि जगन्नियन्ताकी इच्छाके बिना पत्ता भी नही हिलता। यदि इस शरीरसे उसे और सेवा लेनी होगी तो वह इसे बचा ही लेगा। उसकी इच्छाके विरुद्ध तो इसे कोई बचा नही सकता। वैसे जहाँतक कहा जा सकता है, मै तो कहूँगा कि कुछ समयतक मेरा शरीर इसे झेल लेगा।

पृथक् निर्वाचक-मण्डलने तो केवल उस तिनकेका काम किया है जिसके जुड जानेसे बोझ असह्य हो गया है। सवर्ण हिन्दुओ तथा विरोधी "दलित" वर्गीय नेताओ के बीच कोई कृत्रिम समझौता होनेसे काम नही चलेगा। समझौता कारामद तो तभी हो सकता है जब वह वास्तविक समझौता हो। यदि आम हिन्दुओका मन अब भी अस्पृश्यताको समूल नष्ट कर देनेको तैयार न हो तो उसे मुझको तो तनिक भी हिचकिचाहटके बिना बलिदान कर देना चाहिए।

जो लोग सम्मिलित निर्वाचक-मण्डलके विरुद्ध है, उनके साथ कोई जोर-जबरदस्ती नही की जानी चाहिए। उनके तीव्र विरोधको समझनेमे मुझे कोई कठिनाई नही होती। मुझमे अविश्वास करनेका उनके पास पूरा कारण है। क्या मै हिन्दू समाजके उसी वर्गका सदस्य नही हूँ जिसे उच्चतर वर्ग या सवर्ण हिन्दू, इस गलत नामसे जाना जाता है और जिसने तथाकथित अस्पृश्योको अपने पैरो तले रौदकर रख दिया है? आश्चर्यकी बात यह है कि इतनेपर भी तथाकथित अस्पृश्य लोग हिन्दू समाजसे अलग नही हुए है।

किन्तु, जहाँ मै इस विरोधका औचित्य सिद्ध कर सकता हूँ, वही यह भी मानता हूँ कि विरोध करनेवाले लोग गलतीपर है। अगर उनका बस चले तो वे "दलित" वर्गको हिन्दू समाजसे अलग करके उनका एक पृथक् वर्ग खडा करना चाहेंगे। यह वर्ग हिन्दू धर्मके माथेपर कलककी एक जीती-जागती निशानी होगा। अगर इससे उनका हित-साधन होता हो तो मै इसका बुरा न मानूँ।

किन्तु, मेरा तो अस्पृश्यताके हर पहलूसे अन्तरग परिचय है और उक्त परिचय मुझे यह माननेको बाध्य करता है कि अस्पृश्योका जीवन — वह जैसा भी है — उन सवर्ण हिन्दुओके जीवनसे, जिनके बीच और जिनकी सेवा करते हुए वे जीते है, इस तरह गुँथा हुआ है कि उनको उनसे अलग करना असम्भव है। वे एक ही अविभाज्य परिवारके अग है।

जिन हिन्दुओके बीच वे रहते है, उनके खिलाफ उनके विद्रोह तथा उनके हिन्दू धर्मसे विमुख होनेको मै समझ सकता हूँ। लेकिन जहाँतक मै समझ पाता हूँ, वे ऐसा नही करेगे। हिन्दू धर्ममे कोई ऐसा सूक्ष्म तत्त्व है, कोई ऐसी परिभाषा-तीत चीज है जो उनके न चाहनेपर भी उन्हे इससे जोडकर रखे हुए है।

और इस तथ्यको देखते हुए मुझ-जैसे आदमीके लिए, जिसको इसका जीवन्त अनुभव है, यह आवश्यक हो जाता है कि वह प्राणोकी बाजी लगाकर भी उस पृथक्करणका विरोध करे जिसकी योजना बनाई गई है।

हमे तलाश है प्रस्तावित पृथक्करणके ठीक विकल्पकी, और ऐसा कोई भी समझौता उसका ठीक विकल्प नही हो सकता जो हिन्दू समाजमे "दलित वर्गों"को पूर्णतम स्वतन्त्रताकी गारन्टी नही देता। यदि इस सम्बन्धमे कोई विश्वासघात किया गया तो उससे केवल इतना ही हो सकता है कि मेरी आत्माहुति कुछ दिन और टल जाये, लेकिन वह होगी अवश्य और उसके बाद और भी बहुत-से लोग, जो मेरे-जैसे विचार रखते है, आत्माहुति देगे। इसलिए अब जिम्मेदार हिन्दुओको इस सवालपर विचार करना है कि "दलित वर्गों" पर सामाजिक, नागरिक अथवा राजनीतिक अत्याचार होते रहनेकी हालतमे मुझ-जैसा कोई एक सुधारक नही, बल्कि अनेक सुधारक — जो मेरे खयालसे आज भारतमे मौजूद है और जिनकी सख्या बढती ही जा रही है तथा जो इन वर्गोंको स्वतन्त्रता दिलाने और इस प्रकार हिन्दू धर्मको इस युगो पुराने अन्धविश्वाससे मुक्त करानेके लिए अपने प्राणोका कोई मूल्य नही समझेगे — सतत उपवासके रूपमे जो सत्याग्रह करेगे, क्या वे उस सत्याग्रहका सामना करनेको तैयार है।

मेरे साथ काम करनेवाले सहयोगी सुधारक भी इस उपवासके मर्मको समझे।

यह या तो मेरे मनका भ्रम है या फिर मुझे मिला हुआ प्रकाश। अगर यह मेरे मनका भ्रम है तो मुझे शान्तिपूर्वक अपना प्रायश्चित्त पूरा करने दिया जाये। इससे हिन्दू धर्म एक जड प्राणीके भारसे मुक्त हो जायेगा। और यदि यह मुझे मिला ईश्वरीय प्रकाश है तो मेरी यह कामना है कि मेरी पीडा हिन्दू धर्मको पवित्र बनाये और उन लोगोके हृदयको भी द्रवित करे जो आज मुझमे अविश्वास करते है।

चूँकि मेरे उपवासके उद्देश्यके सम्बन्धमे कुछ भ्रम फैला जान पडता है, इसलिए मै यह बात एक बार फिर कह दूँ कि मेरा उपवास "दलित" वर्गोंके लिए किसी भी प्रकारके सवैधानिक पृथक् निर्वाचक-मण्डलकी व्यवस्थाके खिलाफ है। ज्यो ही वह खतरा सदाके लिए मिट जायेगा, मै अपना उपवास तोड दूंगा। [विधान-सभाओमे] स्थानोंके आरक्षणके विषयमे तथा पूरे मामलेको सुलझानेका सबसे सही तरीका क्या है,

इसके सम्बन्धमें भी मेरे कुछ प्रबल आग्रह हैं। लेकिन, मैं नहीं मानता कि एक कैदीके नाते मुझे अपने सुझाव किसीके सामने रखनेका अधिकार है। लेकिन, सवर्ण हिन्दुओं तथा "दलित" वर्गोंके जिम्मेदार नेताओंके बीच सम्मिलित निर्वाचक-मण्डलके आधारपर जो समझौता होगा और ऐसे जिस समझौतेको सभी हिन्दुओंकी आम सभाओंमें स्वीकृति मिल जायेगी, उससे मैं अपनेको बँधा हुआ मानूँगा।

एक बात मुझे साफ कर देनी चाहिए। अगर "दलित" वर्गोंकी समस्याका सन्तोषजनक समाधान हो भी जाये, तो उसका मतलब किसी भी तरहसे यह नहीं लगाया जाना चाहिए कि साम्प्रदायिक प्रश्नके दूसरे पहलुओंके सम्बन्धमें महामहिमकी सरकारका निर्णय स्वीकार करनेके लिए तब मैं बँधा हुआ होऊँगा। खुद मैं तो इसकी और भी कई बातोंके खिलाफ हूँ। मेरे विचारमें ये ऐसी बातें हैं जिनके कारण किसी भी स्वातन्त्र्यपूर्ण तथा लोकतान्त्रिक संविधानका काम कर सकना लगभग असम्भव होगा। इसी तरह इस समस्याके सन्तोषजनक हलका यह मतलब भी नहीं होगा कि जो भी संविधान बनाया जाये, उसे मैं स्वीकार ही कर लूँ। ये सब तो राजनीतिक सवाल हैं, जिनपर राष्ट्रीय कांग्रेसको विचार करना और निर्णय लेना है। व्यक्तिके रूपमें मेरा जो क्षेत्र है, ये बातें उससे बिलकुल बाहरकी हैं। इसी प्रकार एक कैदीके नाते मुझे इन प्रश्नोंपर अपने व्यक्तिगत विचार प्रकट भी नहीं करने चाहिए। मेरे उपवासका उद्देश्य सीमित है। चूँकि "दलित" वर्गोंका सवाल मुख्यतः एक धार्मिक सवाल है, इसलिए मैं इसे खास अपना सवाल मानता हूँ, क्योंकि मैं जीवन-भर अपना ध्यान इसपर लगाता रहा हूँ। यह मेरा पवित्र निजी दायित्व है, जिससे मुझे मुँह नहीं मोड़ना चाहिए।

प्रकाश पाने और प्रायश्चित्त करनेके लिए उपवास करनेकी प्रथा अति प्राचीन है। मैंने इसे ईसाई धर्म और इस्लाममें भी देखा है। हिन्दू धर्म तो शुद्धि और प्रायश्चित्तके लिए उपवास करनेके उदाहरणोंसे भरा हुआ ही है। लेकिन अगर यह एक कर्त्तव्य है तो साथ ही एक विशेषाधिकार भी है — जिसके लिए समुचित तैयारी चाहिए। इसके अलावा, अपनी समझके अनुसार मैंने इसे एक शास्त्रका भी रूप दे दिया है। इसलिए, एक विशेषज्ञके नाते मैं अपने मित्रों तथा हमदर्दोंको इस बातके लिए आगाह कर देता हूँ कि वे आँख मूँदकर अथवा झूठी या भावुकतामूलक सहानुभूतिसे प्रेरित होकर मेरा अनुकरण न करें। ऐसे सभी लोग पहले "अस्पृश्यों" के लिए कठोर श्रम करके तथा उनकी निस्स्वार्थ सेवा करके इसकी योग्यता प्राप्त करें। फिर तो जब उनके उपवास करनेका समय आयेगा तो उन्हें स्वयं ही प्रकाश मिलेगा।

और अन्तमें, जहाँतक मैं अपने-आपको जानता हूँ, यह उपवास मैं विशुद्धतम उद्देश्योंसे तथा किसीके भी प्रति तनिक भी दुर्भावना अथवा क्रोध रखे बिना करने जा रहा हूँ। मेरे लिए तो यह अहिंसाकी एक अभिव्यक्ति, उसपर लगाई जा रही अन्तिम मुहर है। इसलिए इस विवादमें जो लोग ऐसे लोगोंके प्रति हिंसाका व्यवहार करेंगे जिन्हें वे मेरा अथवा जिस उद्देश्यको लेकर मैं चल रहा हूँ उसका विरोधी मानें, वे केवल मेरे अन्तको निकट लानेके ही साधन बनेंगे। विरोधियोंके प्रति

पूर्ण शिष्टता तथा सौजन्यका व्यवहार इस उद्देश्यकी सफलताके लिए तो नितान्त आवश्यक है[1] — सभी मामलोमें ऐसा न हो तो न सही।

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८५७) से।

८६. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

१६ सितम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

अगर सरकारको मंजूर हो तो मैं चाहूँगा कि साथका वक्तव्य[2] तत्काल प्रकाशनार्थ एसोसिएटेड प्रेसको भेज दिया जाये।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८५७) से।

८७. पत्र : नरगिस कैप्टेनको

१६ सितम्बर, १९३२

दु:खी होनेका कोई कारण नही है। इसके विपरीत, यह तो हर तरहसे खुशियाँ मनानेका प्रसंग है, क्योंकि हमे ऐसा सोचना चाहिए कि ईश्वरने परिवारके एक सदस्यको, हम जिस पवित्रतम उद्देश्यकी कल्पना कर सकते है, उसके लिए सर्वोच्च बलिदान करनेका अवसर प्रदान किया है। इस उपवासका आंशिक रूपसे भी अनुकरण नही करना चाहिए। तुम सबके लिए यह कर्म और आत्म-शुद्धिकी दिशामे और अधिक लगनसे जुट जानेका समय है। तुम्हे उन सब लोगोको हिम्मत बँधानी है जो तनिक भी दु:खी लगते हों।

पिंजरेके पंछियों-सहित सबको मेरा प्यार।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २७-८

---

१. यहाँतक यह वक्तव्य महादेव देसाईकी लिखावटमें है और इससे आगेके शब्द गांधीजीके अक्षरोंमें हैं।

२. देखिए पिछला शीर्षक।

८८. पत्र : वेरियर एलविनको

[१६ सितम्बर, १९३२][1]

प्रिय वेरियर,

मैं जो कदम उठाने जा रहा हूँ, उसे समझनेमे तुम्हे कोई कठिनाई नही हुई होगी, ऐसी आशा करता हूँ। इसलिए यह पत्र तुम्हे सिर्फ यह बतानेके लिए लिख रहा हूँ कि प्रधान मन्त्रीको[2] पत्र लिखते समय मेरे मनमे सभी अंग्रेज मित्रोका खयाल बना हुआ था। मै ऐसी कामना करता हूँ कि प्रभु इसमे से शुभकी सृष्टि करेगा।

तुम सबको मेरा और सरदार तथा महादेवका भी प्यार।

आज (शुक्रवारकी) शाम हम वह भजन गायेंगे।

बापू

[अंग्रेजीसे]

ट्राइबल वर्ल्ड ऑफ वेरियर एलविन, पृ० ८३

८९. पत्र : अगाथा हैरिसनको

१६ सितम्बर, १९३२

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। मै जो कदम उठाने जा रहा हूँ, उसके बारेमें तो तुम सब-कुछ जानती ही हो। इसलिए यह तो बस अपना प्यार बतानेको ही लिख दिया है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४५५)से।

१. पत्रसे स्पष्ट है कि यह शुक्रवारको लिखा गया था। उपवास २० सितम्बरको शुरू होनेवाला था और उससे पहलेका शुक्रवार १६ सितम्बरको पड़ा था।

२. इंग्लैंडके प्रधान मन्त्री, देखिए "पत्र : रैम्जे मैकडॉनाल्डको", ९-९-१९३२ तथा खण्ड ५०, पृष्ठ ३९३-४ ।

९०. पत्र : एडमण्ड प्रिवा और श्रीमती प्रिवाको

१६ सितम्बर, १९३२

प्रिय आनन्द और भक्ति,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। मैं जो कदम उठाने जा रहा हूँ, उससे पहले यह सिर्फ तुम दोनोंतक अपना प्यार पहुँचानेके लिए ही लिखा है।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७९३) से।

९१. पत्र : रोमाँ रोलाँको

१६ सितम्बर, १९३२

प्रिय मित्र और भाई,

अपने जीवनमें यह महत्त्वपूर्ण कदम उठानेसे पहले मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आपके और आपकी महान्, नेक और निष्ठावान बहनके साथ बिताये उन दिनोंको मैं कितना अधिक मूल्यवान् समझता हूँ। महादेव देसाई मेरे साथ ही हैं। हम लोग अकसर आपको याद करते हैं।

पता नहीं, मैं जो कदम उठाने जा रहा हूँ, उसके बारेमें आपको कैसा लगा है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि यह निर्णय मैंने अन्तरात्माके आदेशात्मक स्वरपर किया है।

आप दोनोंको स्नेह।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २९

९२. पत्र : सरलादेवी चौधरानीको

१६ सितम्बर, १९३२

तुम्हारा अत्यन्त प्रेमपूर्ण पत्र मिला। उस प्रेममें सब बच्चे भी शामिल हैं, जिससे यह मेरे लिए प्रसादी-रूप है। जब मुझे ऐसा करना अपना निश्चित धर्म जान पड़ा, तभी मैंने यह कदम उठाया है। ईश्वरके नाम और उसीके कामसे यह कदम उठाया है। वह लाज रखेगा, यह मानकर मैं बिलकुल निश्चिन्त हो गया हूँ। ऐसा शुभ अवसर तुम्हारे एक कुटुम्बीजनके हाथ लगा, यह जानकर सब खुश होना।

[गुजरातीसे
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २८

९३. पत्र : अनसूयाबहन साराभाईको

१६ सितम्बर, १९३२

तुम्हारी और शकरलालकी व्याकुलता मैं यहाँ बैठे हुए भी सुन और देख सकता हूँ। मगर इसे मोह ही समझना। तुम्हारा धर्म तो निर्मल आनन्दका अनुभव करना है। ऐसा शुभ अवसर ईश्वरने मुझे अनायास ही दिया है। तुम सबको भी तो ज्यादा कर्त्तव्यपरायण और ज्यादा शुद्ध होना है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २८

९४. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

१७ सितम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

घनश्यामदास बिडलाको भेजे गये मेरे तारमें[1], जो बम्बईके समाचार-पत्रोंमें छपा है, "हेल्पफुल इंसट्रक्शन" के बाद दो महत्त्वपूर्ण शब्द छूट गये हैं। मैं देखता हूँ इनके छूटनेसे अर्थ बदल जाता है। क्या कृपा कर आप एसोसिएटेड प्रेसको सूचित करेंगे कि वे आवश्यक सुधार[2]को प्रचारित करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०/९

१. देखिए "तार : घनश्यामदास बिड़लाको", १५-९-१९३२।
२. देखिए "तार : घनश्यामदास बिड़लाको", १८-९-१९३२।

९५. पत्र : भीमरावको[1]

१७ सितम्बर, १९३२

आपका हृदयस्पर्शी तार मिला। उपवास ईश्वरके नामपर और उसीकी इच्छाके अनुसार करने जा रहा हूँ। अब रुकना गलत और कायरतापूर्ण होगा। आशा करनी चाहिए कि ईश्वर मुझे इसको झेल लेनेकी शक्ति देगा। आखिरकार उसकी इच्छाके बिना तो कोई जीवित रह नही सकता। अगर इस शरीरसे वह आगे कोई काम लेना चाहता है तो वह जानता ही है कि इसे सुरक्षित कैसे रखा जाये।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३४

९६. पत्र : गोसीबहन कैप्टेनको

१७ सितम्बर, १९३२

तुम यह तो जानती हो न कि मुझे इस विचारसे बल मिलता है कि इस परीक्षामे बहुत-सी बहने मेरे साथ है? कमलाको अलगसे लिखनेका मेरे पास समय नही है। लेकिन वह तो मुझको लिखे ही। तुम सबको प्यार। ईश्वरका चाहा होने दो, हमारा चाहा नही।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३२

९७. पत्र : कृष्णदासको

१७ सितम्बर, १९३२

तुम मुझे यही समझकर लिखते रहो जैसे कुछ होनेवाला नही है। लेकिन सम्भव है कि तुम्हारे नाम मेरा यह आखिरी खत हो। ऐसा हो तो इतना ध्यानमे रखना कि मै तुमसे यह अपेक्षा रखता हूँ कि तुम किसी दिन आश्रमकी तरफ खिंच आओगे और तुम्हारे बारेमे मैने जो आशाएँ बाँधी है, उन्हे पूरा करोगे। जहाँतक उपवासकी बात है, मै मानता हूँ कि तुम अच्छी तरह समझ गये होगे कि ईश्वरने मुझे यह एक दुर्लभ अवसर दिया है। इसलिए इसका दुःख न मानकर खुशी ही मनानी चाहिए। इसके साथ यह भी समझ लो कि किसीको इसका अनुकरण

१. बंगलौर कैंटूनमैंट कांग्रेस कमेटीके मन्त्री।

नही करना है। अन्तरसे बहुत ही स्पष्ट आवाज आये, तभी उसका अनुकरण किया जा सकता है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३४-५

९८. पत्र : एस० एम० माटेको

१७ सितम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

आपका तार और पत्र दोनो एक ही साथ मिले, तदर्थ धन्यवाद। कैदीकी हैसियतसे मुझे व्यक्तिगत तौरपर पूछे गये प्रश्नोके उत्तर नही देने चाहिए। लेकिन मैंने एक आम ढगका वक्तव्य[1] अधिकारियोके पास प्रकाशनार्थ भेज दिया है। अगर वे उसके प्रकाशनकी अनुमति दे देंगे तो आपको अपनी बातका उत्तर उसीमें मिल जायेगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत एस० एम० माटे, एम० ए०
तिलक रोड
पूना-२

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल नं० ८०० (४०) (३), भाग-३, पृ० १८१

१. देखिए "वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको", १६-९-१९३२।

९९. पत्र : सरोजिनी नायडूको

१७ सितम्बर, १९३२

प्यारी वात्सल्यमयी गायिका, मेरी आत्माकी सरक्षिका,

तुम्हारा मनोहर पत्र मिला। उससे पहले पद्मजाका — अगर ऐसा सम्भव हो तो कहूँगा — इससे भी अधिक मनोहर पत्र मिला था। यह निर्णय मैंने खूब प्रार्थना करनेके बाद ईश्वरके नामपर और उसीके आदेशपर लिया है। इसलिए इसके अनुष्ठान के मुहूर्त्तको आगे बढानेका मुझे अधिकार नही है।

मुझसे अपने निर्णयो तथा कार्योंपर फिरसे विचार करनेको कहनेका तुम्हे पूरा अधिकार है और अगर मुझे अपनी भूलका पता चल जाये तो तुम्हारी बात मानना मेरा कर्त्तव्य है। किन्तु, साथ ही मै मानता हूँ कि मुझे भी यह अधिकार है कि अगर मै अपने समस्त प्रार्थनापूर्ण प्रयत्नोके बाद भी अपनी भूल नही ढूँढ पाता तो मै तुमसे निर्विवाद 'आज्ञाकारिता' की अपेक्षा रखूं। तुमने 'पुरुषोचित ढगसे' अपने अधिकारका आग्रह किया है और नारी-सुलभ रीतिसे आज्ञा माननेकी रजामन्दी भी बताई है।

तुम्हारे वात्सल्यने तुम्हारी कवि-दृष्टिको धूमिल बना दिया है और उसीके वशीभूत होकर तुमने मेरे अभिमानको जगानेकी कोशिश करते हुए मुझसे अपना निर्णय बदलनेको कहा है और यह इसलिए कि मै जीवनसे चिपटा रह सकूँ।

लेकिन मुझे मालूम है कि तुमने, मेरे अन्दर जो नारी बैठी हुई है, उसे तो लक्ष्य किया ही होगा। उसीके कारण मैंने जीवनका वह मार्ग अपनाया है जिसमे कष्ट — मृत्युका कष्ट भी — सहन करना पड़ता है। अतएव, मुझे अपने दौर्बल्यमें ही अपना बल ढूँढना है।

अब यह बताता हूँ कि किस प्रकार तुम्हारी दृष्टि चूक गई है। साम्प्रदायिक प्रश्नसे सम्बन्धित निर्णय तो बस एक ऐसा प्रसग था जिससे परिस्थिति सर्वथा असह्य हो गई। अस्पृश्योके लिए अपने प्राणोकी बलि चढा देनेका मेरा विचार कोई नया नही है। यह तो बहुत पुराना है। वर्षोंतक अन्दरसे वैसा आदेश नही मिला था। लेकिन मन्त्रिपरिषद्का निर्णय खतरेका भयकर बिगुल साबित हुआ, जिसने मुझे गहरी निद्रासे जगाकर सूचित किया — यही वह समय है। इस प्रकार उस निर्णयने मनोनुकूल अवसर प्रदान किया और मैंने सहज ही उस अवसरको अगीकार कर लिया। मैंने आधिकारिक तौरपर यह जो पत्र लिखा है, उसकी भाषा तो अनिवार्यत मर्यादित है, किन्तु उसकी गहराईमे उतरनेपर तुमको उसमे वही चीजे मिलेगी जिनके लिए तुम मुझसे मरने और जीनेका — दोनो तत्त्वत एक ही हैं — अनुरोध कर रही हो। जो मृत्यु मे जीवन और जीवनमे मत्यु देखती है, वही सच्ची कवयित्री और द्रष्टा है। भोजन कैसा बना है, यह तो खाकर ही जाना जा सकता है। जल्दी ही तुम इसको परखोगी

और तब स्वयं इसकी सचाईका प्रमाण पा लोगी। फिलहाल तो ईश्वरसे यही प्रार्थना करो कि वह मुझे इस दुर्गम पथको पार करनेकी यथेष्ट शक्ति प्रदान करे। यदि हिन्दू धर्मको जीवित रहना है तो अस्पृश्यताको मिटना ही होगा।

हो सकता है, यह तुम्हारे नाम मेरा आखिरी पत्र साबित हो। मैं तुम्हारे स्नेहसे सदा अवगत रहा हूँ और हमेशा उसे मूल्यवान समझता रहा हूँ। मेरा खयाल है, मैंने क्राइटेरियनमें १९१४ मे जब तुम्हे पहली बार देखा और सुना था, तभी मैं तुमको भलीभाँति पहचान गया था। यदि मैं मर जाता हूँ तो इस विश्वासके साथ मरूँगा कि ईश्वरके वरदानस्वरूप मुझे तुम-जैसे जो साथी-सहयोगी मिले हैं वे देशकार्यको, जो मानवताका भी कार्य है, उसी भावनासे जारी रखेंगे, जिस भावनासे यह शुरू किया गया था। यदि हमारे देशके हितोको मानवताके हित साबित होना है, यदि एक धर्मके कल्याणको सभी धर्मोके कल्याणका पर्याय सिद्ध होना है तो यह मन, वचन और कर्मसे सत्य तथा अहिंसाके सम्यक् पालनसे ही होगा।

और अब अपनी सीमाएँ स्वीकार करनेके बारेमे कुछ थोडी-सी सीख भी ले लो। हो सकता है, तुम पकवान आदि बनानेमे बडी कुशल हो, लेकिन इसका मतलब यह नही कि तुम ऐसा मान बैठो कि तुम अच्छी नानबाई भी हो या तुम्हे रोटीकी भी ठीक पहचान हो। हाँ, मेरी बिना छने आटेकी रोटी तुम्हारी "अच्छी और सफेद रोटी"से सचमुच बेहतर है। और इसके पीछे एक रोचक तथा ऐसा इतिहास है जिससे बहुत-कुछ सीखा जा सकता है। यह इतिहास तो तुम, अगर मेजर भण्डारी तैयार हो, तो उन्हीसे बयान करनेको कहो। खैर, चुनाव तो मेरी बिना छने आटेकी स्वादिष्ट और सुपाच्य रोटी और चीमड चपातीके बीच ही करना था। जिन लोगोके भाग्यमें वही चीमड चपाती लिखी थी, उन्होने बिना छने आटेकी रोटी पसन्द की है। यह मानते हुए कि इस विषयमे तुम क्षमा-याचना करोगी ही, मैं उसे स्वीकार करता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३८-४०

१००. पत्र : नारायणराव देसाईको

१७ सितम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

तारके लिए धन्यवाद। जबतक कोई समझौता नहीं हो जाता, तबतक उपवास स्थगित करनेका मुझे अधिकार नहीं है। जहाँतक आपके सवालका सम्बन्ध है, मैंने सरकारको एक वक्तव्य[1] प्रकाशनार्थ भेजा है। अगर उसे प्रकाशित कर दिया जायेगा तो उसीमें आपको अपने सवालका जवाब मिल जायेगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत नारायणराव देसाई टोपीवाला
अध्यक्ष
डेकन मर्चेन्ट्स एसोसिएशन
बम्बई

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं० ८०० (४०) (३), भाग-३, पृ० १८१

१०१. पत्र : बरजोरजी एफ० भरूचाको

१७ सितम्बर, १९३२

भाई बरजोरजी,

आपका तार तो आये बिना कैसे रहता? सीधी बात तो यह है कि अनशन व्रत कोई अपने बलपर नहीं ले सकता, और यदि लेता है तो वह मूढ़मति है। अपने सम्बन्धमें तो मैं कह सकता हूँ कि यह व्रत मैंने नहीं लिया, ईश्वरने मुझसे लिवाया है। तारीख भी उसीने निश्चित की है और तारीख बदलनेके नियम भी उसीने बनाये हैं। इन नियमोंमें आपके आग्रहके लिए कोई जगह नहीं है। अब क्या किया जाये?

दूसरी सीधी-सी बात यह है कि कैदी अपनी ओरसे और अपनी इच्छासे बाहरी दुनियाको कुछ कह नहीं सकता। इसलिए मैं जो कर रहा था, उसका एक शब्द भी यदि टेढ़े-मेढ़े तरीकेसे जनतातक पहुँचाता तो सत्याग्रहीकी हैसियतसे पापका भागी होता। सत्याग्रही कैदी स्वेच्छासे जेलके कानूनोंका पालन करता है; और उन्हें

१. देखिए "वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको", १६-९-१९३२।

तोडनेका यदि कभी कोई मौका आये तो खुलेआम ही वैसा कर सकता है। इसलिए कैदीके नाते तो सरकारको जो नोटिस मिला, वह जनताको ही मिला माना जायेगा, अर्थात् जनताको उसकी जानकारी कराना सरकारकी न्यायप्रियतापर ही निर्भर था। यदि जनताको उसकी जल्दी जानकारी नही मिली तो इसका हमे यही अर्थ करना चाहिए कि ईश्वरने यह नही चाहा कि जनताको जल्दी मालूम हो। जनताकी असुविधाको दूर करनेके लिए मै मीयाद कैसे बढा सकता हूँ? लेकिन जो लोग खुदापरस्त है, वे यह क्यो न माने कि अगर ईश्वरको मुझसे ज्यादा सेवा लेनी होगी तो उपवासके बावजूद वह उतने दिनोतक मेरी जिन्दगी बनाये रखेगा? आप तो खुदापरस्त ही है। इसलिए मेरे इस पत्रको समझकर, जो भाई-बहन व्याकुल हो, उन्हे इसका अर्थ समझाइए और दिलासा दीजिए। इस समय साथियोका धर्म सामने आ पडे कामको तेजीसे करते रहना है। परिणाम ईश्वरके हाथमे है, वह जो करना चाहेगा सो करेगा।

इतना-भर याद रखिए कि मेरा यह उपवास किसीपर दबाव डालनेके लिए नही हो सकता, और है भी नही। इसका हेतु तो सिर्फ अन्त्यज भाइयोके लिए जो उचित हो, वही करना है। मुझे जो ठीक लगता है, वह दूसरेको ठीक न लगे, तो उसे अपना विरोध जारी रखना ही चाहिए। सार्वजनिक हेतुसे किये जानेवाले ऐसे शुद्ध उपवास जन-जीवनमे जागृति लाते है। वे मोहवश नही किये जाते और इसलिए जन-जीवनको उलटे रास्ते तो हरगिज नही ले जा सकते। यदि अज्ञानपूर्वक उपवास करके मै जनतासे कोई अनुचित वस्तु भी माँगने लगूँ तो मुझे विश्वास है कि भूतकालमे मैने उसकी बहुत सेवा की है, ऐसा मानते हुए भी जनताको मुझे जिलानेकी खातिर मेरी अनुचित माँगके सामने हरगिज न झुकना चाहिए। उसके सामने न झुकनेमे जनताका भला तो है ही, मेरा भी भला ही होगा।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३३-४

१०२. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

१७ सितम्बर, १९३२

भाई खम्भाता,

आशा है, तुम दोनो घबराये नही होगे। घबरानेका कोई कारण नही है, बल्कि इससे तुम्हे खुशी होनी चाहिए कि तुम्हारे एक साथीको ईश्वरने अहिंसाकी दृष्टिसे आखिरी कदम उठानेका सुन्दर अवसर प्रदान किया। हरएकको ईश्वरसे यही प्रार्थना करनी चाहिए कि उसके नामपर और उसकी प्रेरणासे जो कदम उठाया गया है, उसे वह अन्तिम हदतक ले जानेकी शक्ति दे। इसके साथका पत्र[1] पढ लेना और भाई बरजोरजी भरूचाको भेज देना। मै पक्के तौरपर उनका पता-ठिकाना नही जानता।

१. देखिए पिछला शीर्षक।

तुम्हारा मरहम तो मै रोज हाथपर लगाता हूँ। कुहनीका दर्द बढ़ा तो नही किन्तु कम भी नही हुआ है। इस कारण मै चिन्तित भी नही हूँ।

तुम दोनोको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५५२) से। सी० डब्ल्यू० ५०२७ से भी; सौजन्य तहमीना खम्भाता

१०३. पत्र : दरबारी साधुको

१७ सितम्बर, १९३२

मुझे भय है कि शायद अब हम नही मिल सकेगे। फिर भी आप माँग तो करना ही। यदि मै बुला सका तो बुलवा लूँगा। मगर मिलना न हो सके तो समझ लेना कि मिट्टीके पुतलेसे मिलनेमे कोई सार नही निकलता। मिलना तो मनके साथ मनका और हृदयके साथ हृदयका होता है, और इनमे तो दुनियाके किसी भी छोर पर बैठे होनेपर भी एक क्षणके भीतर मिल सकनेकी शक्ति है। और जहाँ इनमे मेल न हो वहाँ मिट्टीके पुतले एक-दूसरेके बहुत नजदीक और सटे हुए हो तो भी मनोमे उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुवके बराबर अन्तर हो सकता है। इसलिए मिट्टी [के पुतले]के साथ मिलनेका कोई मूल्य नही रह जाता। लेकिन मिट्टीके पुतलेमे जीव हिल-डुल रहा है, इसीलिए हमे मिलना अच्छा लगता है। इसीको सबसे बड़ा मोह कहते है, और जबतक यह निकल न जाये, तबतक हम लोहेसे भी ज्यादा कठोर बेडियोमे जकडे हुए है। मगर इतना सब बुद्धिसे जान लेनेसे कोई लाभ नही। यह हृदयमे पैठना चाहिए। और यह ज्ञान जिसके हृदयमे उतर गया है, उसे सब-कुछ मिल गया। मगर इस ज्ञानको प्राप्त करनेमे कितने ही जन्म बीत जाये, तो भी थोड़े ही रहेगे। इसलिए 'गीता'की ध्वनि यह है कि कर्त्तव्य करते-करते शरीरको घिस डाले। अनासक्ति या निर्मोह इसीसे पैदा हो सकता है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३५

१०४. एक पत्र

१७ सितम्बर, १९३२

तेरा पत्र विचित्र है। एक तरफ तो उपवासकी बात करती है, दूसरी तरफ विवाहकी। तू अभी उपवास करने योग्य नही, और न तुझे वैसा करनेका अधिकार है।

जबतक गाँठ न जुड जाये, तबतक जिस युवकके साथ तेरा सम्बन्ध निश्चित हुआ है, माता-पिताकी आज्ञा लेकर उससे निर्विकार पत्र-व्यवहार तू जरूर कर सकती है। 'निर्विकार' शब्दका मैंने जान-बूझकर प्रयोग किया है। जो विकार आज कार्यरूपमें

परिणत नहीं होनेवाला, उसे मनमें पोसते रहनेमें दोष है। इससे मानसिक शक्ति व्यर्थ व्यय होती है। ऐसा करनेमें समझदारी बिलकुल नहीं है। मुझे पता नहीं, तेरी उम्र कितनी है। लेकिन यदि तेरी उम्र हो गई हो और तू विकारग्रस्त हो जाती हो, तो मैं तेरी शादी कर देना पसन्द करूँगा। अगर तेरी उम्र हो गई है तो तुझे विकारोंको काबूमें रखना चाहिए और अपने भावी पतिके साथ पत्र-व्यवहार करनेका लालच न रखना चाहिए। मेरे खयालसे तेरी सारी परेशानियोंका हल इसीमें है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ३२-३

१०५. पत्र : एफ० मेरी बारको

[१८ सितम्बर, १९३२ या उसके पूर्व][1]

प्रिय मेरी,

काम ज्यादा होनेसे जल्दीमें हूँ। इसलिए केवल यह कार्ड लिख रहा हूँ। मैसूरकी पत्रिकामें प्रकाशित कहानी मुझे अविश्वसनीय लगती है। यदि इस अग्नि-परीक्षामें मैं बच जाऊँ, तो तुम मुझे जरूर याद दिलाना और मैं पूछताछ करूँगा। 'गीता' पर मेरी भूमिका[2] 'यंग इंडिया'के एक अंकमें निकली है। आशा है, तुम इस अग्नि-परीक्षाको समझ पा रही हो। मेरे लिए तो यह विशुद्ध आनन्दकी बात है। तुम 'गीता'का ९वाँ और १२वाँ अध्याय पढ़ना, पर 'गाइड टु हेल्थ'[3] पुस्तकके बारेमें फिर पूछना।

सस्नेह,

बापू

मिस एफ० मेरी बार
करीमनगर
महाविभव निजामकी रियासत

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९८३) से। सी० डब्ल्यू० ३३११ से भी; सौजन्य : मेरी बार

१. डाककी मुहरसे।
२. **अनासक्तियोग**की भूमिकाका अंग्रेजी अनुवाद; देखिए खण्ड ४१, पृ० ९२-९।
३. **इंडियन ओपिनियन**में प्रकाशित गांधीजी के स्वास्थ्य-सम्बन्धी गुजराती लेखोंके अंग्रेजी अनुवादका संग्रह जो इस नामसे भारतमें प्रकाशित हुआ था; देखिए खण्ड ११ और १२।

१०६. तार: घनश्यामदास बिड़लाको

१८ सितम्बर, १९३२

घनश्यामदास बिड़ला
बिडला हाउस
मलाबार हिल, बम्बई

बम्बईके समाचार-पत्रोमे आपके नाम मेरा १५ तारीखका तार[1] जैसा प्रकाशित हुआ है उसमे "हेल्पफुल इसट्रक्शस" के बाद दो महत्त्वपूर्ण शब्द "फ्रॉम हीयर" छूटे हुए है। कृपया यह भूल सुधरवा दीजिए।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०/९।

१०७. तार: छगनलाल पी० मेहताको

[१८ सितम्बर, १९३२[[2]

छगनलाल
मार्फत आर्य
रंगून

आवश्यकता महसूस होती हो तो जरूर आ जाओ। आशा है माँ का मन शान्त होगा।

बापू

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०।९।

१. देखिए "तार: घनश्यामदास बिड़लाको", १५-९-१९३२।
२. साधन-सूत्रमें जिस स्थानपर इस शीर्षकको रखा गया है, उसके आधारपर यह तारीख दी गई है।

१०८. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

१८ सितम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

मुझे अफसोस है। दोपहर १ बजेसे मैंने मौन प्रारम्भ कर दिया है, ताकि कल जल्दी ही उससे छुट्टी पा सकूं। अब सिर्फ यही हो सकता है कि जो लोग आ रहे हैं, उनसे मिल लूं और जो-कुछ वे कहे, उसे सुन लूं। मै अपने उत्तर लिखकर दे सकता हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५१२६) से।

१०९. पत्र : एच० कैलनबैकको

१८ सितम्बर, १९३२

प्रिय 'लोअर हाउस',

यदि मै चला भी जाऊँ तो इस आशाके साथ ही जाऊँगा कि इतने दिनोसे जो उम्मीद तुमसे मै रखता रहा हूँ और तुम खुद रखते रहे हो, उसे तुम जरूर पूरा करोगे।

यदि ईश्वरको इस शरीरसे और काम लेना होगा तो यह इस अग्नि-परीक्षाको झेल लेगा। उस हालतमे तुम्हे जल्दी ही यहाँ आकर मुझसे मिलनेकी कोशिश करनी पड़ेगी। नही तो अलविदा और बहुत-बहुत प्यार,

अपर हाउसकी ओरसे

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४३

११०. पत्र : डॉ० मुथुको

१८ सितम्बर, १९३२

आपके और आपकी पत्नीके अति कृपापूर्ण और प्रेमभरे पत्रका मेरे हृदयपर बहुत असर हुआ। यदि लोगोको मेरे इस शरीरकी जरूरत है और ईश्वरकी इच्छा हुई, तो मेरा विश्वास है, मै तबतक अवश्य बचा रहूँगा जबतक कि लोगोको सम्मानपूर्ण समझौता प्राप्त नही हो जाता। उस समझौतेका अर्थ हमारे दलित भाइयोके लिए सच्ची स्वतन्त्रता होगा। मेरे सामने जो अग्नि-परीक्षा है, मै उसमे पूरा उतर सकूं, इसके लिए मुझे आपकी और श्रीमती मुथुकी प्रार्थनाओकी जरूरत है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४५

१११. पत्र : पद्मजा नायडूको

१८ सितम्बर, १९३२

प्रिय पद्मजा,

तुम्हारे अति सुन्दर पत्रको मै एक मूल्यवान निधि मानूंगा। तुम्हारे पत्रके बाद तुम्हारी माताजी के स्नेह-भरे उपदेश भी मिले। तुम मुझे इतना अभिमानी तो मत समझो कि मै अपने लिए अपने "मित्रो, साथियों और हमजोलियो" की शुभकामनाओ और प्रार्थनाओको जरूरी न मानता होऊँ। निस्सन्देह मैं महसूस करता हूँ कि मेरे चारो ओर जो हवा व्याप्त है और जिसमे मै साँस लेता हूँ, उसकी अपेक्षा ईश्वर मेरे कही निकट है। लेकिन भोले-भाले लोगोकी प्रार्थनाओमे मुझे उसकी अदृश्य उपस्थितिकी अनुभूति होती है। उनसे मुझे बल मिलता है। इसलिए अवश्य ही उससे प्रार्थना करो कि, जो अग्नि-परीक्षा मेरी राह देख रही है, वह मुझे उसमे से गुजरनेकी शक्ति दे।

स्वस्थ हो जाओ और खूब सेवा करो।

तुम्हारे आश्रमवासी मित्र, साथी और हमजोली तुम्हे प्यार भेजते है।

दास-अधीक्षक

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४२

११२. पत्र : च० राजगोपालाचारीको

१८ सितम्बर, १९३२

प्रिय च० रा०,

तुम्हारे दुखसे मेरा हृदय द्रवित है। अन्तर्नादकी सचाईके बारेमे मेरे मनमे जरा भी सन्देह नही है। और मुझे इसमे भी कोई सन्देह नही है कि तुम शीघ्र ही अधकारमे प्रकाश देख सकोगे।

बहुत-बहुत प्यार।

बापू

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४४

११३. पत्र : कुसुम देसाईको

१८ सितम्बर, १९३२

चि० कुसुम (बडी),

तेरे पत्र आजकल बिलकुल बन्द हैं। आशा है, अनशनसे तू घबराती नही होगी। यदि मैं चला जाऊँ तो मेरी आशा पूरी करना। यदि इसका उत्तर निश्चयपूर्वक दिया जा सके तो जल्दी देना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १८४७) से।

११४. पत्र : छगनलाल और काशी गांधीको

१८ सितम्बर, १९३२

चि० छगनलाल और काशी,

रात थोडी है, पत्र बहुत लिखने हैं। तुम्हे क्या लिखूँ? ये दिन उत्सवके मानना। प्रभुदास,[1] तुझे घबरानेकी मनाई है। अपने ज्ञानका पूरा उपयोग कर्त्तव्यपरायण बने रहनेमें करना। ईश्वर तेरी मदद जरूर करेगा।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४७

१. छगनलाल गांधीके पुत्र।

११५. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको

१८ सितम्बर, १९३२

चि० मणिलाल और सुशीला,

मैं प्राय तुम दोनोके बारेमे सोचता रहता हूँ। किन्तु यह मानकर मैं अपनेको आश्वस्त कर लेता हूँ कि तुम दोनोमे धीरज और साहस है। तुम दोनोकी यहाँ भागे चले आनेकी इच्छा तो होती ही होगी। किन्तु उस इच्छाको दबाना। मेरी सभी आशाएँ पूर्ण करना। मैं तुमसे क्या आशा करता हूँ, सो तुम जानते हो। बापू जो विरासत छोड जाये, उसमे खूब वृद्धि करना। ईश्वर अवश्य तुम दोनोका कल्याण करेगा।

प्रागजी[1] और पार्वतीको आशीर्वाद देते हुए अलगसे पत्र लिखनेका समय नही है। आज रविवार है। मैंने मौन ले रखा है। मैं बहुत-से पत्र लिख डालना चाहता हूँ।

यह तो तू जानता ही है कि मुझे कैलेनबैकका तार मिला था।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७९५)से।

११६. पत्र : छगनलाल जोशीको

१८ सितम्बर, १९३२

चि० छगनलाल (जोशी),

तुम्हारे कुछ पत्र तो बीचमे ही गुम हो गये मालूम होते है। आशा है, अनशन-व्रतका पूरा रहस्य समझमे आ गया होगा। खबरदार, हिम्मत न हारना। प्रयत्नमे शिथिलता कदापि न आने पाये। देहसे चिपटे रहनेसे क्या होगा? देहकी ममता छोडनेकी रट तो हम आश्रममे रोज ही लगाते रहे हैं। रटे हुए को हम हजम कर पाये है, यह साबित करनेका अवसर अब आया है। तुम सब यह कामना करना कि मैं इस परीक्षाको पार करूँ। उसमे प्रवेश करना तो अपेक्षाकृत आसान है, मगर तैरकर उस पार पहुँचना कौन जानता है? इसलिए जबतक परीक्षा पूरी न हो जाये, तब तक खुश होनेका कोई कारण ही नही है। परन्तु मैं तो यह आशा किये ही हुए हूँ कि मैंने यह कार्य भगवान्‌के नामपर आरम्भ किया है, तो वही पार उतारेगा।

शोभित होना, शोभित करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५०९)से।

१. प्रागजी खण्डूभाई देसाईने दक्षिण आफ्रिकाके सत्याग्रह-आन्दोलनमें भाग लिया था। **इंडियन ओपिनियन**के गुजराती खण्डमें वे नियमित रूपसे लिखा करते थे।

११७. पत्र : माधवदास और कृष्णाबहन कापड़ियाको

१८ सितम्बर, १९३२

चि० माधवदास और कृष्णा,

तुम दोनोके पत्र मिले। मेरे अनशनसे तनिक भी घबरानेकी आवश्यकता नही। उसके कारण खुशी ही होनी चाहिए। ऐसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। तुम दोनोपर उसका असर यह होना चाहिए कि तुम्हारी त्यागवृत्ति और सेवावृत्ति बढे। आर्थिक कष्टका अफसोस न करके जो आ पडी है, उसे निभा लेना चाहिए। मेरे इस शरीरसे और सेवा लेनी होगी तो प्रभु उसे बनाये रखेगा और यदि न लेनी होगी तो उसका नाश कर देगा। दोनो ही तरहसे ठीक है। तुम्हे अपने मनमे इस विचारको दृढतापूर्वक जमा लेना चाहिए कि उसकी इच्छाके बिना एक तिनका भी नही हिल सकता।

यह पत्र मैंने मौन लेनेके बाद लिखा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२२) से।

११८. पत्र : नानाभाई आई० मशरूवालाको

१८ सितम्बर, १९३२

भाई नानाभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। यह व्रत मैंने ईश्वरार्पित बुद्धिसे लिया है, अत यदि इस शरीरसे उसे और अधिक सेवा लेनी होगी तो वह इसे बनाये रखेगा और नही लेनी होगी तो इसका नाश कर देगा। दोनो स्थितियाँ एक-जैसी ही है। इसलिए तुम दु खी न होकर प्रसन्न होना कि तुम्हारे एक साथीको सहज ही ऐसा मौका मिला है।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

श्री नानाभाई मशरूवाला
अकोला (सी० पी०)

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६८६) से। सी० डब्ल्यू० ४३३१ से भी; सौजन्य · कनुभाई मशरूवाला

११९. पत्र : तारामती मथुरादास त्रिकमजीको[1]

१८ सितम्बर, १९३२

तेरा पत्र मिला। मेरे अनशनके कारण दुःखी मत होना। उसके बजाय खुश होना कि ईश्वरने मुझे ऐसी त्याग-बुद्धि सुझाई है। देह तो एक दिन छोड़नी ही है। लेकिन दुःखियोंके निमित्त छूटे, इसके समान शुभ और क्या हो सकता है? मनुष्य खाते-पीते हुए भी तो मरता ही है न? यदि ईश्वरको मुझसे और सेवा लेनी होगी तो सारे सयोग पैदा हो जायेंगे और मैं बच जाऊँगा। अगर मेरे दिन पूरे हो गये होंगे, तो किसी भी तरह बचनेका उपाय ही नहीं है।

इस पत्रका [उपर्युक्त] अंश मथुरादासके पत्रमें उद्धृत कर देना। मेरा चाहे जो हो, किन्तु मैं यह जानता हूँ कि मथुरादास मेरे कामको शोभान्वित करेगा। तू उसकी मदद करना।

आज दिलीपको अलगसे पत्र नहीं लिख रहा हूँ, क्योंकि मुझे और भी बहुत-से पत्र लिखने हैं।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृ० ११६

१२०. पत्र : हंसा मेहताको[2]

१८ सितम्बर, १९३२

मेरे अनशनसे न तो तुम्हें घबराना चाहिए और न डॉक्टरको। मगर तुम्हें खुशी मनानी चाहिए कि तुम्हारे एक साथीको ईश्वरने ऐसा शुभ अवसर दिया। ऐसा अवसर तो कभी-कभी, किसी-किसीको ही प्राप्त होता है। यदि ईश्वरको मुझसे इस देहके द्वारा सेवा लेनी होगी तो वह किसी भी तरह जिलायेगा। और मेरी घड़ी आ पहुँची होगी तो खाते-पीते भी बच नहीं सकता।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४७-८

१. मथुरादास त्रिकमजी की पत्नी।

२. डॉ० जीवराज मेहताकी पत्नी और म० स० यूनिवर्सिटी, बड़ौदाकी उप-कुलपति।

१२१. पत्र : वसुमती पण्डितको

१८ सितम्बर, १९३२

चि० वसुमती,

आखिरकार तेरा विस्तृत पत्र मिला। किन्तु फिलहाल तो तू मुझसे विस्तृत पत्रकी आशा नही करती न? देख, मेरे अनशन-व्रतसे दुखी मत होना। और अधिक कर्त्तव्यपरायण बनना। मै यह कबसे जानता हूँ कि तुझमे आत्मबलिदानकी शक्ति तो है ही। भगवान् तुझे पूरी शक्ति देंगे।

कभी हताश मत होना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९३३३) से। सी० डब्ल्यू० ५७९ से भी; सौजन्य. वसुमती पण्डित

१२२. पत्र : नारणदास गांधीको

१८/१९ सितम्बर, १९३२

चि०, नारणदास,

अभी दो बजे है। मैंने मौन ले रखा है। रोटीके बारेमें तुम्हारा पत्र मिल गया है। साप्ताहिक डाक तो मिली ही है। तुमने ठीक ही लिखा है कि ईश्वरकी लीला जानी नही जाती। मै तो मानता हूँ कि वह जैसे नचा रहा है, वैसे मै नाच रहा हूँ इसलिए मनपर कोई बोझ नही लगता। अन्तिम परीक्षा इसी तरह पार कर जाऊँ तो कितना अच्छा हो! वह जैसे रखेगा वैसे रहूँगा। मैं चाहता हूँ, वहाँ सभी लोग अन्ततक उल्लसित रहे, अपने-अपने निर्धारित कार्योंमे और भी दत्तचित्त होकर लगे रहे और विह्वल न हो। कल क्या खबर आयेगी, इसपर सोचे ही नही। जो होना हो उसके लिए तैयार रहे। ऐसे बने रहनेका सबसे अच्छा रास्ता यह है कि हरएक जिस क्षण जो काम कर रहा हो, उस क्षण उसी काममे मस्त रहे। मुझे इसका कुछ भी पता नही है कि मगलवारको क्या होना है।

निर्मलाने[1] राजकोटसे पत्र लिखा है। वह लिखती है कि एक बार फईबाका[2] मोतियाबिन्दका ऑपरेशन हुआ था, उसका पैसा तुमने चुकाया था — शायद आश्रमके कोषसे ही? अब उन्हे फिर ऑपरेशन कराना होगा। इसपर ध्यान देना और जो जरूरी हो, करना।

१. गाधीजी की बहन रलियातबहनकी पुत्र-वधू।

२. बूआ; रलियातबहनके लिए प्रयुक्त हुआ है।

चम्पा और रतिलालके विषयमे तो अभी मै बहुत-सी बातोका खयाल कर रहा हूँ। लेकिन अगर सारा भार तुम्हारे ही सिर आ पडा तो उसे सँभालनेकी शक्ति ईश्वरने तुम्हे दे रखी है। चम्पाके नाम २५,००० रुपये रेवाशंकरभाईके[1] पास जमा है, यह तो तुम जानते ही होगे। इससे सम्बन्धित रसीद मैंने शायद चम्पाको दी है। डॉक्टरके वसीयतनामेके आखिरी मसविदेपर उनका हस्ताक्षर नही है। तुम्हे वह मिल जाये, ऐसी व्यवस्था करूँगा। अगर मुझसे रह जाये तो मँगवा लेना। उस कागजके मुताबिक दोनोको ५०,००० रुपये मिलने चाहिए और लाल बँगला भी उन्ही दोनोके लिए है। ट्रस्टियोके नाम डॉक्टर दे गये है। लेकिन, छगनलालने उनके बदले दूसरे नाम सुझाये है, जो मुझे ठीक लगे है। मगर चाहे जो भी ट्रस्टी नियुक्त हो, बोझ तो आश्रमपर ही पड़नेकी सम्भावना है।

डॉक्टरके नामपर आश्रमको ६,५०० रुपये दान किये गये है। छगनलालने वह पैसा भेज देनेके लिए लिखा था, लेकिन ऐसा कहा था कि मिल्कियतकी व्यवस्था हो जानेके बाद ही उसे भेजना ठीक रहेगा। छगनलालके अलावा नानालाल यह सब जानता है। कही कोई कठिनाई पड़े तो उससे पूछना।

रातके ८-३० बजे

कुसुम्बाका[2] अत्यन्त दुःख-भरा पत्र आया है। उसने लड़कियोको वापस भेजने को कहा है। लड़कियोने भी पत्र लिखा है। उसमे उन्होने बताया है कि आश्रममें उनका जी नही लगता। उनके साथ साफ-साफ बात करना और मुझे लगता है कि यदि लड़कियाँ माँ के पास जाना ही चाहती हों तो उन्हे जाने देना चाहिए। जयसुखलालसे बात करके जैसा ठीक लगे वैसा करना। उसको भेजा मेरा पत्र भी पढ़ जाना।

प्रातः ४-१५ बजे, मौनवार [१९ सितम्बर, १९३२]

सुबहकी प्रार्थना करके, थोड़ा घूमनेके बाद अब आश्रमके लिए पत्र लिख रहा हूँ। जैसे-जैसे लिखता जा रहा हूँ, लिखनेकी जरूरत बढ़ती जा रही है। जितना लिख सकूँगा, लिखूँगा। जिसको पत्र न मिले, वह निराश न हो। जिसका कुटुम्ब बड़ा होता है, उसके सुखका भी पार नही होता और दुःखका भी नही। जिसे पत्र न मिले, वह जिसको मिले, उससे ईर्ष्या न करते हुए ऐसा माने कि एकको मिला तो सबको मिल गया। ऐसी छोटी-छोटी बातोमे जो मैं-तू का भेद भूलना सीखेंगे, वे ही अन्तमे भेद-बुद्धिका त्याग कर सकेंगे। जिसको एकतक नही गिनना आता वह करोडोका हिसाब कभी नही कर सकता। मै तो, जितने पत्र लिखे जा सके, उतने लिखकर अभी अपने मनको आश्रमसे जोड़नेकी कोशिश कर रहा हूँ। वहाँसे प्राण-रस खीचकर अपनेमे भर रहा हूँ और अपने प्राण-रससे वहाँ आश्रमका अभिसिंचन कर रहा हूँ। इस बारके तो लगभग सारे पत्र मै इसीके साथ भेज रहा हूँ। सबको

1. डॉ० प्राणजीवन मेहताके भाई।
2. जयसुखलाल गांधीकी पत्नी।

पढ जाना। आश्रमके कार्यक्रमका सिलसिला एक क्षणके लिए भी न टूटने देना। कोई उलझन या चिन्तामें न पडे, बल्कि सभी पूर्णाहुतिके लिए योग्यता प्राप्त करनेकी बराबर तैयारी करते रहे। मेरी अपनी योग्यता भी जब सिद्ध होगी तभी तो मानी जायेगी। सोलनका यह कथन सोलहो आने सच है "मृत्युसे पहले कोई भला या सुखी नही माना जा सकता।" कौन जाने, मेरा तप आसुरी ही न हो? यदि मेरे हृदयकी गहराईमे कही द्वेष अथवा रोष हुआ या स्वार्थ हुआ तो उसे आसुरी तप ही माना जाना चाहिए और तब तो वह दुनियाके लिए भाररूप ही होगा। किन्तु मेरे सम्बन्धमे तुम सब इतनी साक्षी जरूर भर सकोगे कि यह व्रत द्वेषादिकी प्रेरणासे लिया गया हो, तो भी [इतना निश्शक कहा जा सकता है कि] उसे इन भावनाओका भान बिलकुल नही था। उसने तो निर्दोष जानकर ही यह व्रत लिया था। मेरा यह सब लिखना शायद अनावश्यक भी हो। जनता अबतक जो प्रयत्न करती रही है, सम्भव है, वह सफल सिद्ध हो और मुझे अन्ततक उपवास जारी न रखना पडे। ऐसा हो तो ठीक ही है, मगर ऐसा होगा ही, यह समझकर तो यह पत्र नही लिख सकता। मुझे तो यह पत्र यही मानकर लिखना चाहिए कि शरीर छूट जायेगा।

रामभाऊका बहुत जोरदार पत्र मिला। उसको दिया मेरा उत्तर[1] पढ जाना। उसके पत्रसे लगता है कि अगर उसपर पडे मैलकी परतको हम हटा सके तो वह हीरा बनकर हमारे सामने आयेगा। काम कठिन है। लेकिन, चूँकि इस कामको तुमने हाथमे लिया है, इसलिए हो सकता है कि उसके अन्दर छिपा हीरा प्रकट हो जाये।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५२ से भी, सौजन्य: नारणदास गाधी

१२३. तार: राजा महेन्द्ररंजनको

[१९ सितम्बर, १९३२][2]

लम्बे तारके लिए धन्यवाद। सकल्प अन्त करणकी अलघनीय पुकारपर किया गया है। उसे तबतक नही छोडा जा सकता जबतक उसके प्रतिकूल कोई दूसरी पुकार सुनाई न पडे। ईश्वरकी जो इच्छा होगी, सो होगा।

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-९-१९३२

१. देखिए "पत्र: रामचन्द्र ना० खरेको", १९-९-१९३२।

२. समाचार-पत्रमें इस तारपर "२० सितम्बर" की तारीख दी गई थी। किन्तु देखिए "दैनन्दिनी, १९३२" के अन्तर्गत १९ सितम्बरकी प्रविष्टि।

१२४. पत्र : रामचन्द्र ना० खरेको

मौनवार, (प्रात.), १९ सितम्बर, १९३२

चि० रामभाऊ,

तेरा पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। उसमे तूने अपनी सारी शक्ति लगा दी है। तेरी लिखावट सुन्दर है और भाषा भी वैसी ही है। तुझमे लिखनेकी सामर्थ्य खूब दिखाई देती है। तुझमे विनोद-वृत्ति खूब है और विनोदको तू खूब तीखा भी बना सकता है।

तूने प्रेमाबहनके दोष गिनाये किन्तु उन दोषोको तो मै यहाँ बैठे हुए भी देख सकता हूँ। किन्तु तू अपने दोष नही देखता या फिर उन्हे छिपा रहा है। सदाचारी और अहिंसक ब्रह्मचारी गुणग्राही होता है और वह दूसरोके दोष देखनेकी बजाय उनके गुण देखता है तथा अपने राई-जैसे दोषको पहाड-जितना मानता है। तुलसी-दास, सूरदास, तुकारामने इसी प्रकार अपने दोषोंको देखा और उनका वर्णन किया है। फिर प्रेमाबहन चाहे जैसी क्यो न हो, वह तेरी शिक्षिका है। यह कितनी आश्चर्य-जनक बात है कि तुझे उसमें कोई गुण नजर ही नही आया। मुझे तो उसमे अनेक गुण दिखाई देते हैं। मैंने तुझे लिखा नही था कि मुझे लिखे एक पत्रमे प्रेमाबहनने तेरी प्रशंसा की थी। देख, तेरे आलसी स्वभाव और झूठ बोलनेकी तेरी आदतकी बात तो बहुत-से लोग जानते है। और तू स्वयं भी यह जानता है। अपनी इस कुटेवका तो तूने उल्लेखतक नही किया। मेरा आग्रह है कि तू अपनी महान् शक्तिका सद्व्यय कर और माता-पिताका, मेरा तथा आश्रमका नाम रोशन कर। ईश्वर तेरी सहायता करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २९८) से; सौजन्य : लक्ष्मीबहन ना० खरे

१२५. पत्र : क्राइस्ट सेवा संघके सदस्योंको

१९ सितम्बर, १९३२

क्राइस्ट सेवा संघके प्रिय भाइयो तथा बहनो,

फूलोकी भेटके बिना भी मै जानता हूँ कि आपके हृदय और आपकी शुभा-काक्षाएँ मेरे साथ ही है। फिर भी इस भौतिक प्रतीकको मै कीमती मानता हूँ।

सस्नेह,

बापू

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५२

१२६. पत्र : वेलाबहन ल० आसरको[1]

१९ सितम्बर, १९३२

तुमने अच्छा धीरज रखा। आनन्दीकी तनिक भी चिन्ता न करना और मेरी भी चिन्ता न करना। यदि इस मिट्टीके पुतलेको जाना हो तो भले जाये। और फिर वह धर्मकार्यमें खप जाये, तो उससे अच्छा और क्या हो सकता है? मैं तो तुम्हारे पास ही रहूँगा। फिर किसके लिए रोओगी? आश्रमको शोभित करना, शरीरका खयाल करना और उसे सेवामें लगाये रखना।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४९-५०

१२७. पत्र : आश्रमके बालक-बालिकाओंको

१९ सितम्बर, १९३२[2]

प्रिय बालको और बालिकाओ,

तुम्हें ऐसी कौन-सी छूट पहले मिलती थी जो अब नहीं मिलती? यदि तुम्हारी बात सही हो तो अपना एक प्रतिनिधि-मण्डल लेकर नारणदासके पास जाना। अपनी बात कहनेके लिए उनके तीन मिनट लेना और दो मिनट उन्हें जवाब देनेके लिए देना। इसके बाद यदि मैं तबतक अपनी खटियापर अशक्त पड़ा बचा होऊँ[3] तो तुम मुझे लिखना। और यदि मैंने आखिरी नींद ले ली हो तो तुम लोग खुशीसे नाचना और यह प्रतिज्ञा लेना कि इनका काम अब हम करेंगे। इसमें कैसा आनन्द और कैसा मजा आयेगा! इस अग्नि-परीक्षाके लिए तुम सब लोग अपने-आपको तैयार करना।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५३ से भी

१. लक्ष्मीदास आसरकी पत्नी।

२. यह तारीख महादेवभाईनी डायरीसे दी गई है।

३. माइक्रोफिल्मका अवशिष्ट अंश पढ़ा नहीं जा सका, अत आगेका भाग महादेवभाईनी डायरीसे लिया गया है।

१२८. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० जानकीमैया,

तुम-जैसोको 'क' वर्ग ['सी' क्लास] का खाना खाकर मरनेका भय लगता है, इसीलिए मैने बिना खाये जीनेका रास्ता पकडा है। कलसे यह देख लेना। खा-खाकर तो सारा ससार मरता है। 'अ' वर्ग ['ए' क्लास] का खाकर कितना जी लोगी, यह देख लूँगा। परन्तु अनशन करते-करते जीनेकी कलाकी बात कुछ और है। एक शर्त जरूर है। तमाम मैयाओको जोगन बनकर बाहर निकलना पड़ेगा और अस्पृश्योको स्पृश्य बनाकर स्वय ईश्वरी शक्ति होनेका अपना दावा साबित करना पड़ेगा। इतना करना और फिर 'अ' वर्गका ही खाना खाती रहना। परन्तु यदि कोई 'अ' वर्गका खाना न दे तो 'क' वर्गके खानेसे ही सन्तोष करना।

परन्तु मान लो कि जोगनोका भी कोई बस न चले तो भले ही यह मिट्टीका पुतला अभी टूटकर गिर जाये, मै तो जीनेवाला ही हूँ। जबतक एक भी मैया मेरा काम करती रहेगी, तबतक कौन कह सकता है कि मै मर गया? आत्माकी अमरता-सम्बन्धी 'गीता' का तत्त्वज्ञान हम भले छोड़ दे; किन्तु जो अमरता मैने बताई है, उसे तो हम चर्म-चक्षुओसे भी देख सकते हैं। इसलिए खबरदार, जो जरा भी घबराईं! स्वय शोभित होना और शोभित करना। तन, मन, धन ईश्वरको सौप कर सुखी होना और सुखी रहना। नखरेबाज ओम और ज्ञानी मदालसाको आज नही लिख सकूँगा। यह मान लेना कि यह तुम सबके लिए है।

तुम्हारा सौभाग्य अखण्ड रहे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९०१) से।

१२९. पत्र : विनोबा भावेको

१९ सितम्बर, १९३२

कृतयुगी[1] विनोबा,

हमारे लिए तुम्हारे कृतयुगसे द्वेष करनेका कोई कारण नही है, क्योकि हमारे साथ भी कृतयुगी सरदार है। अत तुमसे कमसे-कम एक मुट्ठी तो ऊँचे उठ ही आते है न? क्या तुम जानते हो कि सरदार तो अधिकाश समय चलते ही रहते हैं? उनकी चले तो वे खाये भी चलते-चलते और काते भी चलते-चलते। बुढापेमे 'गीता'

१. विनोबा भावेने 'कलिः शयानो भवति' का उल्लेख करते हुए लिखा था कि कृतयुगमें चलते रहना ही धर्म है। विनोबा उन दिनों गाँवोंमें घूम रहे थे।

तो चलते-चलते घोखते ही है। उच्चारण सुधारनेके लिए उन्हे तुम्हारे पास भेजना चाहिए और तुम्हारे हाथमें एक वेत थमा देनी चाहिए। किन्तु यह सौभाग्य तो तुम्हे जव मिलेगा तव मिलेगा।

लगता है, तुम गरीवोको काफी फुसला रहे हो। मुझ-जैसा गरीव आदमी जव तुम्हारे पत्रकी आतुरतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था तव उसे विलकुल न लिखा और जव वह मृत्युशय्यापर सोनेकी तैयारी करने लगा तब उसे यह लिखा है कि "अव लिखना शुरू कर दिया है, अतः नियमित रूपसे लिखता रहूँगा।" परन्तु भगवान् जाने! कृतयुगी लोगोकी प्रतिज्ञा भंग होते नही सुनी गई, इसलिए तुम्हारी प्रतिज्ञाके पालनके लिए मुझे इस खटियासे भले ही उठना पडे, मै तो नियमित रूपसे तुम्हारे पत्र पानेकी आशा करूँगा।

इस प्रकार परिहास करके मैंने अपना मन [कुछ क्षणोके लिए] उन गम्भीर पत्रोसे हटा लिया है जो मै लिखता रहा हूँ, और साथ-साथ यह भी सुझाया है कि तुम्हारे कामके वारेमे किसी प्रकारकी आलोचना करनेकी बात नही उठती। मुझे सूचित करते रहना। यदि इस अग्नि-परीक्षासे मेरा शरीर और मन दोनो पार निकल आये और यदि कुछ लिखने लायक हुआ तो मै तुम्हे लिखूंगा। मैंने तुम्हारा पत्र सँभालकर रख लिया है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५१-२

१३०. पत्र : नारायण म० देसाईको[1]

१९ सितम्वर, १९३२

कृष्णसे प्रश्न पूछनेवाला एक ही अर्जुन था, इसीलिए उन्हे उसे तरह-तरहसे दुलरानेकी और [उसके सव प्रश्नोके] लम्बे उत्तर देनेकी सूझी। फिर, कृष्ण ठहरे ज्ञानी और मै हूँ अल्पज्ञ, और पूछनेवाले अर्जुन कितने है? गिनकर तो देख। सभीको थोडा-थोडा बाँट दूं तो कितनी वडी और कितनी 'गीताएँ' हो जाये? क्योंकि कृष्णसे तो एक वार ही प्रश्न पूछे गये थे, जब कि मुझसे तो इतने अर्जुन हर सप्ताह प्रश्न पूछते है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५४

१. महादेव देसाईके पुत्र।

१३१. पत्र : निर्मला एच० देसाईको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० निर्मला[1] (बूआ),

हाँ, चित्रकी पूजा भी मूर्तिपूजा ही है, फिर भी तीज-त्योहारके दिन चित्र सामने रखकर बैठने और मन्दिर बनवाकर उसमे मूर्तिकी प्रतिष्ठा करने, इन दोनोमे निश्चय ही अन्तर तो है न? आश्रममे हमे मूर्तिपूजा आरम्भ नही करनी चाहिए। आश्रममे तो सभी धर्मोंके लिए स्थान होना चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४६५) से।

१३२. पत्र : वालजी और दूधीबहन देसाईको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० वालजी और दूधीबहन,

तुममे मेरा जो असीम विश्वास है उसे तुम जानते हो। इसको पूरी तरह सिद्ध करनेके लिए ईश्वर तुम्हें बल दे। महायज्ञमे शामिल होनेके लिए जहाँतक हो सके अपने शरीरकी रक्षा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४३७) से, सौजन्य : वा० गो० देसाई

१३३. पत्र : जमनाबहन गांधीको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० जमना,

बडोकी सेवाके लिए राजकोटमे रहनेको मिला, यह तो श्रेयस्कर ही माना जायेगा। अपना स्वास्थ्य सुधारो। मेरे यज्ञके कारण दुःखी नही होना है बल्कि उसमे सुखका ही अनुभव करना है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८५०) से, सौजन्य : नारणदास गाधी

१. महादेव देसाईकी सौतेली बहन।

१३४. पत्र : केशव गांधीको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० केशू,

स्याहीके धब्बे मिट नही सकते। इन्हे या तो रहने देना चाहिए या दूसरा कागज लेना चाहिए।

यदि अपने साथ कोई दुर्व्यवहार करे तो भी उसके प्रति नम्र रहना चाहिए, परन्तु उसके सामने झुकना नही चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२८१)से।

१३५. पत्र : खुशालचन्द गांधीको[1]

१९ सितम्बर, १९३२

जो यज्ञ कलसे आरम्भ होगा, आशा है, वह आपको भाया होगा। अगर वह आपको धर्मसगत प्रतीत हुआ हो तो मैं चाहूँगा कि आप दोनो बुजुर्ग अजली भरकर आशीर्वाद भेजे। अगर मैं आपसे पहले चला जाऊँ तो शोक न करे, बल्कि यह जानकर खुश हो कि आपको ऐसा छोटा भाई मिला जिसे ईश्वरने ऐसा यज्ञ पूरा करनेकी शक्ति दी। आपने भाईसे ज्यादा मेरी जरूरत पूरी की है। आशा है, मेरी भाभी[2] स्वस्थ हो गई होगी।

प्रात.कालके समय सिर नवाते हुए आपके छोटे भाईका दोनोको प्रणाम।

मोहनदास

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४८-९

१. गांधीजी के चचेरे भाई और नारणदास गांधीके पिता।
२. देवकुँवर, खुशालचन्द गांधीकी पत्नी।

१३६. पत्र : निर्मलाबहन गांधीको

१९ सितम्बर, १९३२

तू जरा भी न घबराना। रामदास-जैसा वीर और साधु तुझे सौंपा है, फिर तू क्यो घबराये? मुझे कहाँ तक बचाकर रख सकेगी; और यदि बचाकर रखना ही हो तो [जिसे बचाना है] वह [आत्मा] तो सदा तुम सबके साथ ही है। देह तो जड़ है। उसका क्या करेगी? शुक्रवारको रामदासके साथ दो घंटे बिताये। उसने जरा भी घबराहट नही दिखाई। यह देखकर उसके पिता और शिक्षकके नाते मैं फूला न समाया। तू भी वैसी ही बनना और बच्चोको सँभालना। घी-दूध लेती रहना।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५१

१३७. पत्र : गजानन वी० खरेको[1]

१९ सितम्बर, १९३२

चि० गजानन,

तेरे बारेमे समाचार तो मिलते ही रहते हैं। यदि अन्य कोई सीखने नही आता तो कोई बात नही। धीरू तैयार हो तो ठीक ही है।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३०८) से; सौजन्य : लक्ष्मीबहन ना० खरे

१३८. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० पण्डितजी,

रामभाऊके पत्रको बहुत अच्छा और बहुत खराब माना जा सकता है। मैंने उसे उत्तर दे दिया है।[2] परन्तु जिस बच्चेमे इतनी अधिक होशियारी हो उसकी आशा मैं छोड़नेवाला नही।

तो काकाने सुन्दरबहनका किस्सा जब मैं इंग्लैंड जा रहा था तब मुझे सुनाया था। उससे मैं यह समझ पाया था कि सुन्दरबहनने विवाह-सुख कभी नहीं भोगा। उसके पतिने शुरूसे ही उसका तिरस्कार किया, क्योकि उसने उसे रूपवान अर्थात् गोरी

१. नारायण मोरेश्वर खरेका भतीजा।

२. देखिए "पत्र: रामचन्द्र ना० खरेको", १९-९-१९३२।

नहीं माना। इस प्रकार जिसे उसका पति सर्वथा त्याग दे उसे विवाहित माननेका कोई नीतियुक्त कारण नहीं है। जहाँ नीति नहीं है वहाँ कानूनकी उपेक्षा करके नीतिकी स्थापना करना उचित है। यदि सुन्दरबहन कुमारी रह सकती तो अच्छा होता।[1] किन्तु जब कि वह इस प्रकार रहनेमें असमर्थ थी तो उसके सामने नीति-सम्मत रास्ता यही था कि वह योग्य पति खोज ले। यह ठीक है कि ऐसा करनेमें उसे दण्डका भय था। इतनी जोखिम उसे उठानी चाहिए और उसने उठाई भी है। ऐसे विवाहमें किसी तरहका धार्मिक निषेध मुझे दिखाई नहीं देता। विवाह-सम्बन्धी विधि-विधान रूढ़ियोंसे ही निकले हैं। उन्हें जाँचनेके लिए संयमकी तुलाका प्रयोग करना चाहिए। जो कर्म कुल मिलाकर संयमके पालनमें सहायक हों, वे कर्म भले ही रूढ़ि-विरुद्ध हों फिर भी उनपर आचरण करना चाहिए।

बहनोंके बारेमें यदि मुझसे विशिष्ट प्रश्न पूछो तो मैं और अधिक स्पष्ट कर सकूंगा।

लक्ष्मीबहनकी दाढ़ यदि ठीक तरहसे भरी नहीं गई होगी तो वह अवश्य कष्ट देगी। यदि आवश्यक हो तो बम्बईमें बारगलकरको दिखाना। मेरा नाम ले देनेसे वे पीड़ितको ध्यानसे देखेंगे और फीस नहीं लेंगे। उनकी फीस बहुत अधिक होती है।

अनशनके बारेमें इस पत्रमें कुछ नहीं लिख रहा हूँ।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २३४) से; सौजन्य: लक्ष्मीबहन ना० खरे

१३९. पत्र: कुसुमको

१९ सितम्बर, १९३२

मेरे व्रतसे तुझे घबराना नहीं चाहिए। तेरा कर्त्तव्य पर्याप्त आराम लेकर अपना शरीर स्वस्थ बनाना है। इस बारेमें ज्यादा क्या लिखूं? लड़कियोंकी बीमारीके समय उनकी शादी कर देनेकी बात उठानेवाले अज्ञानी हैं। विवाहिता स्त्रियाँ जितनी बीमार रहती हैं, कुमारियाँ उतनी बीमार कभी नहीं रहती। और तूने लड़कियोंकी लड़कोंके साथ तुलना की, सो भी ठीक है। फिर भी, हमें इस व्यंग्यका सीधा ही अर्थ करना चाहिए और बीमार पड़ना ही नहीं चाहिए। बीमार न पड़नेके लिए जैसा मैंने लिखा है, वैसे थोड़े ज्ञानकी जरूरत तो है ही। कुमारियोंके शरीर वज्रके समान होने चाहिए, और वैसे ही कुमारोंके भी। सच पूछा जाये तो आजकल दोनों ही बीमार रहते हैं। लेकिन ब्याह करके दोनों और ज्यादा बीमार रहते हैं। रमिया, रुखी और हरि-इच्छाको देख। रुखीको विवाह फला हो, ऐसा कुछ लगा जरूर मगर इतनेमें तो वह फिर बीमार पड़ गई। लेकिन लड़कियोंको इसका यह अर्थ भी नहीं लगाना चाहिए कि जो ब्याह करती हैं, वे बीमार अवश्य पड़ती हैं। यह सही है कि जो कुमारियाँ

१. अपने प्रथम पतिसे अलग होनेपर उसने पी० जी० देशपाण्डेसे शादी कर ली।

विकारसे जलती रहती हैं, उनका छुटकारा तो शादी करनेसे ही होगा। क्योंकि उनका विकार उन्हें खाता रहता है। मगर इसका मतलब तो यही हुआ कि वे विवाह किये बिना ही विवाहिता स्त्रीकी तरह व्यवहार करती हैं, इसलिए व्यभिचारिणी हैं। जो स्त्री या पुरुष मन-ही-मन विकारोंको पोसता रहता है, वह भी व्यभिचारी ही है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५२-३

१४०. पत्र : लक्ष्मीदास पु० आसरको

१९ सितम्बर, १९३२

तुम्हारी आयु अधिक हो तो हो किन्तु मैंने शुरूसे ही, जब तुम अमृतसरमें पहली बार मिले थे, तभीसे तुम्हें समझदार बेटोंमें गिना है। अत: मैं यह मानता हूँ कि तुम मेरे अनशनका ठीक-ठीक अर्थ समझ गये हो, और यह भी कि यदि मैं चला जाऊँ तो तुम मेरे उत्तराधिकारकी शोभा बढ़ाओगे। और इसीलिए मैं आवश्यकताके बिना तुम्हें नहीं लिखता।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४९

१४१. पत्र : मोहन एन० परीखको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० मोहन,

मुझे हर बार लिखनेके लिए तुझे कुछ क्यों नहीं सूझता? हर सप्ताह तूने आगे जितना पढा हो और इस बीच जितनी शरारत की हो उसका विवरण मुझे लिख भेजना चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१८४) से।

१४२. पत्र : नर्मदाबहन राणाको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० नर्मदा,

तेरा पत्र मिला। तू धीरज रखेगी तो तेरे दोष दूर हो जायेंगे। चिन्ता न करना। नारणदास जो कहे, वैसा करती जाना।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७६४) से; सौजन्य : रामनारायण एन० पाठक

१४३. पत्र : शारदा सी० शाहको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० बबुडी (शारदा),

तेरे प्रश्न कितने बढ़िया है? जिसे मरना है वह तो सदा ही मर सकता है: जीभ काटकर, कठ दबाकर, कोई बाँध दे तो बन्धन तोडनेमे हड्डियाँ तोडकर और बहुत बडी सती स्त्री तो कल्पना-मात्रसे अपनी मृत्यु ला सकती है। यह आत्महत्या तो कही जायेगी, मगर कुछ मौकोपर आत्महत्या करना धर्म हो जाता है। यदि किसी स्त्रीसे कोई राक्षस बलात्कार करना चाहे तो वह मौका आत्महत्या करनेका है, बशर्ते उससे बचनेका दूसरा कोई उचित उपाय न हो।[1]

मुझे विश्वास है कि तू सचिवके पदपर बनी रहेगी, क्योकि तू ईमानदार और दृढनिश्चयी है।

विद्यार्थी मुझसे शरमाकर नही झगडेंगे, ऐसा नही, बल्कि उन्हे खुद अपनी भूलोकी वजहसे शर्म आयेगी और वे नही झगडेगे। मुझसे तो किसीको शरमाना ही नही चाहिए।

तुझे अपना शरीर लोहेके समान मजबूत बना लेना चाहिए।

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९९५६) से; सौजन्य . शारदाबहन जी० चोखावाला

१४४. पत्र : सुलोचनाको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० सुलोचना;

गुलाब तुम्हे क्यो परेशान करती है? इस बारेमे प्रेमाबहनसे कहो।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७३९) से।

१. देखिए "संकटमें बहनें क्या करें", ४-९-१९३२।

१४५. पत्र : नानीबहन झवेरीको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० नानीवहन झवेरी,

इतने दिनोतक तूने मुझे पत्रके बिना तरसाया, उसकी माफी तो नही देनी चाहिए। मगर यज्ञ आरम्भ करते समय तो बडेसे-बडे बैरीको भी माफी दे दी जाती है, तभी यज्ञ सफल होता है। इसलिए यदि तुझ-जैसी लडकियोको माफी न दूँ तो मेरा सफाया ही हो जायेगा।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५१

१४६. पत्र : गंगाबहन वैद्यको

[१९ सितम्बर, १९३२][1]

चि० गगाबहन,

तुम आजकल ठीक समयसे पत्र लिख रही हो। मेरे यज्ञसे बिलकुल विचलित न होना, उत्तेजित भी मत होना। ऐसे यज्ञ तुम सबसे कराने है। अगर इस देहको छूटना होगा तो इस विश्वासके साथ ही छोडूँगा कि तुम ऐसे यज्ञ कर सकोगी। जब बहुत-से पापोकी तह जम जाती है तो उनका प्रायश्चित्त इसी प्रकार होता है।

ऐसे व्रतोका अनुकरण नही किया जा सकता। इसकी प्रेरणा हमे अपने अन्तरसे मिले, तभी वह पार लगता है। अन्तर शुद्ध न होनेके बावजूद यदि ऐसी प्रेरणा मिले तो वह अनगन राक्षसी हो सकता है। अत: पहले अन्तर शुद्ध हो जानेपर ही ऐसे यज्ञ किये जा सकते है। ऐसी शुद्धि करनेके लिए ही आश्रमका अस्तित्व है।

किन्तु तुम तो कहती हो कि उसकी बहुत निन्दा सुनती हो। तुम्हे इस निन्दाको सहन करना चाहिए। निन्दाके पीछे जितनी सशाई जान पडे, उसे ग्रहण कर लेना चाहिए, और सुधार करना चाहिए। जो गलत जान पडे, उसके बारेमे तटस्थ रहना चाहिए। लोगोको जैसा लगता हैं, उन्हे वैसा कहनेका अधिकार है। और कुछ लोग तो केवल द्वेषवश भी निन्दा करते है। ऐसी निन्दाके बारेमे विचार भी क्या करना?

. . .[2]के बारेमे जो-कुछ हम सुन रहे है, उसमे कुछ सचाई है। जितनी है, उसकी उपेक्षा की जा सकती है। . . .[3]का मेरा थोड़ा-सा अनुभव बहुत अच्छा है। वह सीधा-सादा आदमी है। . . .[4]ने वहाँ मौज नही की। . . .[5]को आबोहवा

१. महादेवभाईनी डायरीसे।

२, ३, ४ व ५. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिये गये हैं।

बदलनेकी जरूरत थी। आसानीसे ऐसा मौका मिल जानेके कारण उसने उसका लाभ उठाया। . . .[1] का सम्बन्ध सर्वथा निर्मल है। . .[2] वहाँ अशोभन ढगसे नही रही। उसके पत्रसे मेरे मनपर ऐसी छाप पडी है कि वह अपनी सामर्थ्य-भर आत्म-शुद्धिका निरन्तर प्रयास करती रही है। . . .[3] तो अब बिलकुल थक गया है। इस-लिए मैंने उसे आश्रम-जीवन बितानेकी सलाह दी है।

अब तुम्हारी अशान्तिके बारेमे। उसके दो कारण हो सकते है। एक तो तुम्हे अपने कामसे सन्तोष नही मिलता। जितना तुमसे हो सकता है, उससे बहुत अधिक करनेका लोभ बना रहता है। एक हदतक यह लोभ बहुत अच्छा है। किन्तु हदके बाहर चले जानेके बाद दुःख होता है। उससे भी अधिक अशान्तिका कारण तुम्हारी असहिष्णुता है। जितना तुम कर सकती हो यदि उतना दूसरे न करे या तुम्हारी बात न माने तो तुम व्याकुल हो जाती हो। इसकी दवा आसान है। तन-मनसे करने पर जितना काम हो सके, उतनेसे सन्तोष करना और जितना आगे बढा जा सके, उतना आगे बढते जाना चाहिए। इतना जान लो कि स्वर्ग जानेका जितना अधिकार वेदोके ज्ञाताको है उतना ही अधिकार भगीका काम करनेवाले को है। किन्तु यदि वेदोका ज्ञाता कोरा पण्डित या पाखण्डी हो तो वह चाहे जितना बडा विद्वान् क्यो न हो, फिर भी नरकमे पडेगा और भगी 'ब्रह्म' शब्द न जानते हुए भी यदि ईश्वरार्पण-बुद्धि तथा सेवा-भावसे रोज पाखाना साफ करे तो अवश्य ऊँचा उठ जायेगा। एक दवा तो यह सन्तोष है। दूसरी दवा है — उदारता। हम जितना चाहे या करे, उतना दूसरे न करे तो भी मनको बुरा नही लगना चाहिए। ऐसा करने पर ही पास-पास रहनेके बावजूद हम समाजमे शान्ति बनाये रख सकेगे। नाथके[4] साथ इस पत्रको दो-चार बार पढकर विचार करना। . . .[5] बहनको अपना आश्रय देना। शेष तो ईश्वरेच्छा होगी तो तुम सुशोभित होओगी।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो - ६ : गं० स्व० गंगाबहेनने, पृ० ७३-५। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५०-१ से भी

१, २ व ३. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिये गये है।

४. केदारनाथ कुलकर्णी, किशोरलाल मशरूवालाके गुरु।

५. साधन-सूत्रमें नाम छोड दिया गया है।

१४७. एक पत्र

१९ सितम्बर, १९३२

तुम्हारा अत्यन्त सुन्दर पत्र पढकर हम सबको बडा हर्ष हुआ। तुम बहुत ऊँचे पहुँच गये हो। और भी ऊँचे उठना। ईश्वर तुम्हें बल जरूर देगा। तुम्हारे पत्रका तो विस्तारपूर्वक उत्तर देना चाहिए। मगर फिलहाल मै उतना वक्त नही दे सकता। मै तुम्हारा यह पत्र रख छोडूँगा। यदि समय और शक्ति होगी तो लिखूंगा, नही तो कोई बात नही। आशा है, इस यज्ञसे तुम या अन्य भाई घबराये न होगे। ईश्वर ही यह [उपवास-रूपी यज्ञ] करा रहा है, वही इसे पार लगायेगा। कहा नही जा सकता कि इस अस्पृश्यताको मिटानेके लिए हमे कितने यज्ञ करने पडेगे। उसके लिए तैयारी करना। तैयारीका अर्थ आत्मशुद्धि ही है। आत्मशुद्धिमे कार्यदक्षता आ ही जाती है।

बारीक सूत महँगा तो पड़ेगा ही। परन्तु हममे ढाकेकी मलमलका पुनरुद्धार करनेकी शक्ति होनी चाहिए। ऐसा करते हुए हम छोटी-छोटी अनेक शोध कर सकते है। पहले ऐसा सूत राजा लोग बेगारमे कतवाते और बुनवाते थे। अब हम उसे यज्ञके रूपमे कातें और बुनें। इस प्रकार उसकी कीमतका प्रश्न ही नही रह जाता, और हाथ-कताईकी महिमा बढती है। ईश्वरकी इच्छा होगी तो इस बातको और अच्छी तरह समझाऊँगा।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ४९

१४८. एक पत्र

१९ सितम्बर, १९३२

अपने स्थानको सुशोभित करना। सीताजी रामकी जायदाद नही थी, पर राम की आँखकी पुतली थी। सीताको वनवास देकर वे स्वय वनवासी हो गये थे, क्योकि उनके हृदयने सीताका अनुगमन किया था। किन्तु कोई सामान्य व्यक्ति अपनी स्त्रीके प्रति ऐसा व्यवहार नही कर सकता, क्योकि उनकी स्त्री और वे स्वय एक ही है, ऐसा अलौकिक प्रेम हमे नजर नही आता।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५५

१४९. पत्र : कन्हैयालालको

१९ सितम्बर, १९३२

दरिद्र वह है जिसमें शुद्ध प्रेमकी बुदतक नही है। धनवान वह जिसके प्रेममें जतुसे लेकर मस्त हाथी समा सकता है। नास्तिक वह जो शरीरके बाहर विश्वव्यापी आत्माको नही पहचानता। आस्तिक वह जो हर जगह आत्माके सिवा और कुछ देखता नही।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५४

१५०. पत्र : रामेश्वरदास पोद्दारको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० रामेश्वरदास,

तुमारे गगादेवीको[1] सताना नहिं चाहिये। जैसे वह तुमको नहिं सताती है, तुमारी सब चेष्टा ताक-ताककर नहिं देखती वैसे हि तुमारे उनके प्रति वर्ताव रखना है।

राम विनोवाके पास खुश है। वही रहने दो।

मेरे यज्ञका सुनकर नाचो और राम-नामपर अधिक विश्वास रखो। देखो वह क्या करता है। अनशन मेरा नहिं रामका है। चिंता मुझे नहिं उसको है। यदि निष्फल हुआ तो निंदा उसकी होगी मेरी नहिं, सफल हुआ तो उसे स्तुति नहिं चाहिये। इसलिये मैं भीखारी उसके द्वार पड़ा रहता ले लुगा।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १७६) से।

१. रामेश्वरदास पोद्दारकी पत्नी।

१५१. पत्र : लक्ष्मीको[1]

१९ सितम्बर, १९३२

क्या जाने ईश्वर क्या करना चाहता है। मेरे यज्ञसे तुम्हे घबरानेका नही है। देखो देवदासने कैसा सुदर खत अखबारमे निकाला है? वह घबराया नही है, परन्तु हर्षमे आ गया है। और होना भी ऐसा ही चाहिये। धर्मके कारण देहका बलिदान देनेका अवसर किसीको क्वचित ही मिलता है।

ईश्वर तुम सबका कल्याण ही करेगा। और उसकी इच्छा होगी तो इस मृत्यु-शय्यापर से मै उठ खड़ा होऊगा।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५१

१५२. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

१९ सितम्बर, १९३२

चि० प्रेमा,

आज तो पत्र लिखते-लिखते थक गया हूँ। डाक निकलनेका समय भी हो गया है। इसलिए छोटा ही पत्र लिखता हूँ। दूसरा बादमे। हमारे पास यहाँ एक बिल्ली है। वह 'स्मार्ट लिटल गर्ल' है। इसलिए उसका नाम तेरे कॉलेजकी याद बनाये रखनेके लिए प्रेमा रखा है। तू कितनी 'स्मार्ट' (चुस्त) है, इसकी परीक्षा अब हो जायेगी।

पास हो सकेगी क्या?

समय मिला तो दूसरा पत्र बादमे लिखूंगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०३) से। सी० डब्ल्यू० ६७४२ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कंटक

१. च० राजगोपालाचारीकी पुत्री।

५३. पत्र: रवीन्द्रनाथ ठाकुरको

२० सितम्बर, १९३२

प्रिय गुरुदेव,

आज मगलवार है और सुबहके तीन बजे है। दोपहरको मुझे अग्निद्वारमें प्रवेश करना है। इस प्रयासको यदि आप अपना आशीर्वाद दे सकते हो तो मुझे वह चाहिए। आप मेरे सच्चे मित्र है, क्योकि आप स्पष्टवादी मित्र रहे है और अपने विचारोको प्राय साफ-साफ कहते आये है। मैंने आपसे अपने उपवासके सम्बन्धमे निश्चित रायकी आशा रखी थी, वह चाहे पक्षमे हो या विपक्षमे, पर आपने आलोचना करनेसे इनकार कर दिया। अब तो आपकी आलोचना मेरे उपवासके दौरान ही आ सकती है, फिर भी यदि आपका हृदय मेरे इस कार्यकी निन्दा करता हो तो मेरे लिए वह आलोचना अमूल्य होगी। यदि मुझे अपनी भूलका पता चल जाये तो मै इतना अभिमानी नही हूँ कि उसे खुलेआम स्वीकार न कर सकूँ, फिर चाहे उस स्वीकृतिका मुझे कितना ही मूल्य क्यो न चुकाना पडे। और यदि आपका हृदय मेरे इस कार्यका अनुमोदन करता है, तो मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। उससे मुझे बल मिलेगा। आशा है, मै अपनी बात स्पष्ट कर सका हूँ।

सप्रेम,

मो० क० गांधी

१०-३० प्रात:

[पुनश्च:]

इस पत्रको सुपरिंटेंडेटको दे रहा था, तभी मुझे आपका प्रेमपूर्ण और उत्कृष्ट तार मिला। जिस तूफानमे मै प्रवेश करने जा रहा हूँ, यह उसमें मुझे बल देगा। मै आपको एक तार[1] भेज रहा हूँ। धन्यवाद।

मो० क० गां०

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४६३४) से।

१. देखिए "तार: रवीद्रनाथ ठाकुरको", २०-९-१९३२।

१५४. पत्र : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

२० सितम्बर, १९३२

मेरे सबसे प्रिय मित्र और बधु,

मगलवारका दिन है और वेला ब्राह्म मुहूर्तकी — तीनसे कुछ ही अधिक हुए हैं। मैंने अभी-अभी गुरुदेवको एक छोटा-सा पत्र[1] पूरा किया है।

दु खके इन दिनोमे आप सदा मेरे सम्मुख रहे हैं। आपके विचारोको शायद मैं पढ पाया हूँ। आपके प्रति मेरी जो आदरकी भावना है, उसे आप जानते ही हैं। यद्यपि बहुत-से विषयोपर हमारे दृष्टिकोणोमे जमीन-आसमानका अन्तर है, या लगता है, पर हमारे हृदय एक हैं। इसलिए जहाँ-कही भी मैं आपके साथ सहमत हो सका हूँ, उससे मुझे वास्तविक आनन्द मिला है। मेरा यह कदम शायद आपको कहावतके उस अन्तिम तिनकेकी तरह असह्य लगा होगा। फिर भी आपकी ताडनाकी मुझे जरूरत है, क्योकि मैं यह नही चाहता कि आप मुझे रास्तेपर लानेकी अपनी कोशिश बन्द कर दे — अपने सबसे बडे भाईसे, मेरा खयाल है, मैं कोई चौदह साल बिछुडा रहा। हर साल वे रजिस्ट्रीसे मुझे भर्त्सनाके शब्द लिख भेजते थे। उनकी इस भर्त्सनामे मुझे आनन्द मिलता था। उनके वे शब्द प्रेमकी चिनगारियाँ होते थे — अन्तमे मैंने उनका मन जीत लिया। अपनी मृत्युसे छ महीने पहले वे यह समझ गये कि मैं सही राहपर था।[2] उनके रोषका एक कारण अस्पृश्यताका यह प्रश्न ही था। हमारे मामलेमे गलत कौन है, मैं नही जानता। पर मैं यह जानता हूँ कि आप मेरे लिए सगे भाई-जैसे हैं। इस सकटमे भी, जो हो सकता है आखिरी हो, आप मुझसे झगडना बन्द न कीजिए। मुझे अपने अभिशाप या आशीर्वाद भेजिए। यदि आप यह सोचते है कि मै गलतीपर हूँ तो आप मेरी आँखे खोल सकते हैं, जबकि दूसरे ऐसा नही कर सके हैं। आप मुझे खूब अच्छी तरह जानते है, इसलिए आपको यह मालूम है कि यदि मुझे अपनी गलतीका विश्वास हो जाये तो मुझमे उसे स्वीकार करनेकी ईश्वर-प्रदत्त क्षमता है। मुझे अवश्य पत्र लिखिए या तार दीजिए।

एक महीने पहले मैंने आपको पत्र लिखकर आपके स्वास्थ्यके बारेमे पूछा था। मुझे उसका कोई उत्तर नही मिला। पता नही मेरा पोस्टकार्ड आपको मिला भी या नही।

हार्दिक प्रेम-सहित,

मो० क० गांधी

[अग्रेजीसे]

लेटर्स ऑफ श्रीनिवास शास्त्री, पृ० २३४

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. देखिए खण्ड ३९, पृ० २०२-३।

१५५. पत्र : मीराबहनको

२० सितम्बर, १९३२

चि० मीरा,

आज सुबह मैं ढाई बजे ही उठ गया क्योंकि पहले गुरुदेवको, फिर शास्त्रीजी को और फिर तुम्हे पत्र लिखना था। तुम्हारा हृदय-विदारक पत्र मिला। पहले मैंने सोचा कि उसे गवर्नरके पास भेज दूं। पर तत्काल ही वह विचार मैंने छोड दिया। तुमने जब भट्टीमे प्रवेश करना पसन्द किया है, तो उसीमें तुम्हे रहना चाहिए। जैसा कि इन सालोमे तुमने देख लिया है, मेरी सगति कोई आसान चीज नही है। तो इस जहरको अब आखिरी बूंदतक पियो।

अपने सकल्पका समाचार देते हुए जब मैंने वह पहला पत्र लिखा तो मुझे तुम्हारा और वा का खयाल आया था। और कुछ देरके लिए मेरा सिर चकरा गया। तुम दोनो इसे कैसे सहन करोगी? परन्तु मेरे अन्त.करणने कहा, 'अगर तुम्हे इसमें पडना है तो सभी तरहकी आसक्तिका विचार छोडना होगा।' और पत्र चला गया। अस्पृश्यताके पापको धोनेके लिए कितनी भी भयकर यातना सही जाये, वह ज्यादा नही कही जा सकती। इसलिए तुम्हे इस कष्टमे प्रसन्न होना चाहिए और इसे वीरतापूर्वक सहना चाहिए। यह सब करना कितना कठिन है — यह मैं जानता हूँ। फिर भी तुम्हे ठीक इसीकी कोशिश करनी है। जरा सोचो और समझो कि अन्तिम दर्शन करनेका कोई अर्थ नही है। जिस आत्मासे तुम्हे प्रेम है, वह सदा तुम्हारे साथ है। जिस शरीरके द्वारा तुमने इस आत्मासे प्रेम करना सीखा, उसकी उस प्रेमको कायम रखनेके लिए अब आवश्यकता नही है। जबतक इसका उपयोग है, तबतक इसका बने रहना अच्छा है। जब इसका कोई उपयोग न रहे, तब इसका नष्ट हो जाना भी उतना ही अच्छा है। और क्योंकि हमें नही मालूम कि इसका उपयोग कब समाप्त हो जायेगा, इसलिए हम यह निष्कर्ष निकालते है कि मृत्यु चाहे किसी भी कारणसे हो, उसका अर्थ यही है कि इसका अब कोई उपयोग नही रहा। अगर तुम्हे इससे कोई तसल्ली होती हो तो यह जान लो कि वल्लभभाई, महादेव, रामदास, सुरेन्द्र, देवदास, जिनसे भी मैं मिला हूँ, सभी इसे बहुत ही अच्छी तरह सहन कर रहे हैं। तुम्हारी साथिनोको प्यार। किसन तुम्हारे साथ है, मुझे इसकी खुशी है। वह भली और बहादुर लडकी है। भगवान् तुम्हे शक्ति दे।

सस्नेह,

बापू

श्री० मीरावाई (स्लेड)
आर्थर रोड जेल
बम्बई

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५०९) से, सौजन्य: मीराबहन

१५६. तार : होरेस जी० अलेक्जेंडरको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

होरेस अलेक्जैंडर
फ्रेंड्स हाउस
यूस्टन, लन्दन

जिसे मैं ईश्वरका आदेश मानता हूँ उसकी अवज्ञा कैसे कर सकता हूँ। तो उसकी इच्छा पूरी हो। स्नेह।

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१५७. तार : अगाथा हैरिसनको

[२० सितम्बर, १९३२][2]

अगाथा हैरिसन
मार्फत कैलोफ लन्दन

तुम्हारी कशमकशको समझता हूँ। ईश्वर तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४५७) से।

१. "दैनन्दिनी, १९३२" से।

२. "दैनन्दिनी, १९३२" से। यह अगाथा हैरिसनके १७ सितम्बरके निम्न तारके उत्तरमें भेजा गया था: "इस समय आपकी दी हुई कोई भी सलाह मैं मूल्यवान् समझूँगी।"

१५८. तार: महमूदजी अल्लीजीको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

महमूदजी अल्लीजी
अहमदाबाद

प्रस्तावके लिए धन्यवाद। किन्तु मैं अब भी कैदी हूँ यह तो आप देख ही रहे हैं।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार होम डिपार्टमेंट आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१५९. तार: आशुतोष चौधरीको

२० सितम्बर, १९३२

आशुतोष चौधरी
६. लायल रोड
इलाहाबाद

अपर्णासे कहिए उपवास बिलकुल न करे। सब लोगोंको खुश होना चाहिए और अस्पृश्यता दूर करनेके लिए अपनी पूरी शक्ति लगाकर सर्वोत्तम प्रयत्न करना चाहिए।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार. होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१. साधन-सूत्रमें जिस स्थानपर इस शीर्षकको रखा गया है, उसके आधारपर यह तारीख दी गई है।

१६०. तार: बलवन्तराय देसाईको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

बलवन्तराय देसाई वकील
पैलेस रोड
बड़ौदा

अखबारोको दिये गये मेरे वक्तव्यमे[2] शायद तुम्हे अपने प्रश्नोका उत्तर मिल जायेगा।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१६१. तार: रमणीकलाल देसाईको

[२० सितम्बर, १९३२][3]

रमणीकलाल देसाई
गोकुलदास तेजपालका अहाता
विले पार्ले
बम्बई

कृपया भावी घटनाओकी प्रतीक्षा कीजिए।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१. साधन-सूत्रमें इस शीर्षकको जिस स्थानपर रखा गया है, उसके आधारपर यह तारीख दी गई है।
२. देखिए "वक्तव्य: समाचार-पत्रोंको", १६-९-१९३२।
३. "दैनन्दिनी, १९३२" के अनुसार।

१६२. तार: जमनादास द्वारकादासको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

जमनादास द्वारकादास
वलकेश्वर रोड
बम्बई

आपको और आपके परिवारको हम सबकी संवेदनाएँ। स्नेह।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१६३. तार: डाह्याभाई जिनवालाको

[२० सितम्बर, १९३२][2]

डाह्याभाई जिनवाला
मार्फत सर्वइंडिया
बम्बई

धन्यवाद। नहीं जानता कि भविष्यके गर्भमें क्या है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१. साधन-सूत्रमें इस शीर्षकको जिस स्थानपर रखा गया है उसके आधारपर यह तारीख दी गई है।
२. "दैनन्दिनी, १९३२" से।

१६४. तार: हरिबख्श सिंहको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

हरिबख्श सिंह
मार्फत रोज़
सियालकोट

सहानुभूतिमें उपवास करना गलत होगा किन्तु अस्पृश्यताके अभिशापको निश्चिह्न करनेके लिए आप जो भी कर सकते हो अवश्य करें।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१६५. तार: ए० जे० दूदामती जक्कीलीको

[२० सितम्बर, १९३२][2]

ए० जे० दूदामती जक्कीली
कर्नाटक-बन्धु कार्यालय
गदग

तुम जो कर रहे हो वह अच्छा है किन्तु ठोस सेवाकार्य और भी अच्छा रहेगा।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१ व २. साधन-सूत्रमें इस शीर्षकको जिस स्थानपर रखा गया है, उसके आधारपर यह तारीख दी गई है।

१६६. तार : काशी कृष्णाचार्यको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

काशी कृष्णाचार्य
अखिल भारतीय सनातन धर्म वैदिक महासभा
गुन्टूर

मुझे खेद है [किन्तु] उपवास स्थगित करना मेरी शक्तिके बाहर है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१६७. तार : कृष्णदासको

[२० सितम्बर, १९३२][2]

कृष्णदास
मार्फत मोती
कलकत्ता

वहीं रहकर माँकी सेवा करो।

बापू

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१ व २. "दैनन्दिनी, १९३२" से।

१६८. तार: ताईपिंग, पेराकके भारतीयोंको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

भारतीय
ताईपिंग
पेराक

भगवान्की इच्छा पूरी होने दीजिए।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१६९. तार: डॉ० विधानचन्द्र रायको

[२० सितम्बर, १९३२][2]

डॉ० विधान राय
३६, विलिंगटन स्ट्रीट
कलकत्ता

कृपया उर्मिलादेवीसे कहिए कि तुम्हारा हृदयद्रावक तार मिला ही नही। जिन पत्रोका तुमने उल्लेख किया है उनमे से कुछको मैंने निराशाकी मन.स्थितिमे लिखा था। उत्तर नही मिला। अवश्य लिखो। मैं जानता हूँ कि इस व्यथा को तुम बहादुरीसे सहोगे। महादेव भी मेरे साथ तुम्हे अपना स्नेह भेजता है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१. "दैनन्दिनी, १९३२" से।
२. साधन-सूत्रमें यह शीर्षक जिस स्थानपर रखा गया है, उसके आधारपर यह तारीख दी गई ह

१७०. तार : अम्बालाल साराभाईको

[२० सितम्बर, १९३२][1]

सेठ अम्बालाल साराभाई
शाहीबाग
अहमदाबाद

बेशक तुम्हारा घर मेरी विश्रामस्थली है। जानता नही क्या होगा।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१७१. तार : अम्बालाल साराभाईको

[२० सितम्बर, १९३२][2]

अम्बालाल साराभाई
शाहीबाग
अहमदाबाद

सुना कि भारती घोड़ेसे गिर पडी थी। तारसे सूचित करो कि कैसी हालत है। तुम सब जब चाहो मुझसे मिल सकते हो। स्नेह।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१. "दैनन्दिनी, १९३२" से।
२. साधन-सूत्रमें यह तार जिस स्थानपर रखा गया है, उसके आधारपर यह तारीख दी गई है।

१७२. एक तार

[२० सितम्बर, १९३२][1]

मेहद[2]
मार्फत भद्रजी ध्रु महाराज मैंशन्स
सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई

सहायताके [प्रस्तावके] लिए धन्यवाद। आप देखते ही है अब चिन्ताकी कोई बात नही रही।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९।

१७३. तार: रवीन्द्रनाथ ठाकुरको[3]

२० सितम्बर, १९३२

गुरुदेव
शान्तिनिकेतन

ईश्वरकी कृपाका परिचय मुझे सदा मिलता रहा है। आज प्रात. ही बहुत सवेरे[4] मैंने यह लिखा था कि यदि आप इस कार्यका अनु-

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह शीर्षक जहाँ रखा गया है उसके आधारपर यह तारीख दी गई है।

२. मूलके अनुसार।

३. यह रवीन्द्रनाथ ठाकुरके १९ सितम्बर, १९३२ के तारके उत्तरमें था, जिसमें कहा गया था: "भारतकी एकता और सामाजिक अखण्डताके लिए अमूल्य जीवनका बलिदान उचित है। यद्यपि हम पहलेसे यह नही जान सकते कि हमारे शासकोंपर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि हो सकता है वे हमारे लोगोंके लिए इसके भारी महत्त्वको न समझते हों—पर हमें विश्वास है कि हमारे अपने देशवासियोंके अन्त करणको आत्माहुतिका इस तरहका सर्वोच्च आह्वान छुए बिना नहीं रहेगा। मुझे पूर्ण आशा है कि हम ऐसे हृदयहीन नहीं है कि इस तरहकी राष्ट्रीय विपत्तिको उसकी चरम सीमातक पहुँच जाने दें। हमारे दु:खी हृदय आपकी महान् तपस्याको श्रद्धा और प्रेमसे निहारते रहेंगे।"

४. देखिए "पत्र: रवीन्द्रनाथ ठाकुरको", २०-९-१९३२।

मोदन कर सकें तो अपना आशीर्वाद दें, और लीजिए अभी-अभी प्राप्त आपके सन्देशमें वह मुझे भरपूर मिल गया। धन्यवाद।

गांधी

[अंग्रेजीसे]
विश्वभारती न्यूज, पृ० २५

१७४. तार: मथुरादास त्रिकमजीको

२० सितम्बर, १९३२

मथुरादास त्रिकमजी
कैदी, 'ब' श्रेणी
बेलगाँव जेल

तुम्हें बहादुर बनना चाहिए। 'पैरोल' पर छूटनेकी कोशिश मत करना। जहाँ दिल मिले हुए हों वहाँ रूबरू मिलनेकी क्या जरूरत? ईश्वरकी जैसी इच्छा हो वैसा होने दो। स्नेह।

बापू

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, गृह विभाग, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

१७५. पुरजा: एम० जी० भण्डारीको

२० सितम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

आपके पुर्जेके लिए धन्यवाद। मेरा खयाल है कि यदि आप बुरा न मानें तो मुझे 'रायटर'के प्रतिनिधिसे अब मिल लेना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५१२५)से।

१७६. पत्र : जी० के० देवधरको

२० सितम्बर, १९३२

प्रिय देवधर,

बेशक सोसाइटीका घर मेरा घर है।[1] मै स्वेच्छासे ही निर्वासित रहा हूँ। ईश्वरकी जब इच्छा होगी वह मुझे वापस घर भेज देगा।

उपवास कहाँ शुरू होगा इसका मुझे जरा भी खयाल नही है। यह अद्भुत परीक्षा है। पर मै इसी सबके लायक हूँ, क्योकि मेरा मन हिन्दूका ही मन है। अस्पृश्योके प्रति अपने व्यवहारके लिए क्या हमे ईश्वरकी ओरसे भयकरसे-भयकर सजा नही मिलनी चाहिए? इसलिए मुझे अस्पृश्योकी बिरादरीमे शामिल करनेसे पहले वह मेरी पूरी तरह परीक्षा कर रहा है। मेरा यह प्रयास पिछले पचास वर्षोसे चल रहा है। साथका पत्र[2] कृपया शास्त्रीजी को भेज दे।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५७-८

१७७. पत्र : पी० एन० राजभोजको

२० सितम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मुझे कल ही, जब मै मिलनेके लिए आये कुछ मित्रोसे बाते कर रहा था, मिला। अब मै सबसे पहला मौका मिलते ही उसका जवाब दे रहा हूँ। आपके पत्रके लिए धन्यवाद।

मेरी स्थिति यह है. मेरे उपवासका सम्बन्ध केवल पृथक निर्वाचक-मण्डलकी व्यवस्थासे है। जैसे ही वह वापस ले लिया जायेगा, व्रतके शब्दार्थकी पूर्ति हो जायेगी और मुझे उपवास तोडना होगा। पर तब मुझपर पृथक् निर्वाचक-मण्डलसे बेहद अच्छा एक विकल्प रखनेकी भारी जिम्मेदारी आ जायेगी।

यदि आपको मेरी बात बुरी न लगे तो मै यह कहना चाहूँगा कि जहाँ मै जन्मसे 'स्पृश्य' हूँ, वहाँ 'स्वेच्छासे 'अस्पृश्य' हूँ। इसी दुहरी हैसियतसे मैने सर सैम्युअल होरको और फिर प्रधान मन्त्रीको लिखा था। इसी दुहरी हैसियतने मुझे

१. श्री देवधरने गाधीजीको उपवासके दौरान पूनामें सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटीके भवनमें रहनेके लिए आमन्त्रित किया था।

२. देखिए "पत्र : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको", २०-९-१९३२।

उपवासके लिए मजबूर किया। इस मामलेको इस रोशनीमें देखते हुए, मैं यह कहता हूँ कि कानूनी आरक्षणका विचार मुझे प्रिय नहीं है। यद्यपि इसपर वही आपत्ति नही है जो पृथक् निर्वाचक-मण्डलपर है, पर मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि इससे पीड़ित वर्गोंका स्वाभाविक विकास रुकेगा और पीड़कोंकी ओरसे पीड़ितोको, क्षतिपूर्तिके रूपमें, जो सम्मानपूर्ण सुविधाएँ दी जानी चाहिए उनके लिए कोई प्रेरणा नहीं रह जायेगी। मैं जिस चीजकी कोशिश कर रहा हूँ वह दोनोका हार्दिक मेल है, पीडकोको पश्चात्ताप और क्षतिपूर्तिका सबसे बडा अवसर प्रदान करना है। मुझे यकीन है कि यह समय उनके हृदय-परिवर्तनके लिए उपयुक्त है। इसलिए मैं इस बातका समर्थन करूँगा कि दलितोको यथासम्भव अधिकसे-अधिक व्यापक मताधिकार हो और दोनो समुदायोंके बीच पीड़ितोके प्रतिनिधियोंके उपयुक्त चुनावके लिए एक परम्परा स्थापित हो जाये। मैंने आजमाइशके लिए एक योजनाका मसविदा मोटे तौरपर तैयार किया है, वह मैंने मित्रोको दिया है और कल अपने पुत्र देवदासको पूरी तरह समझाया है। परन्तु जो सुधार मैं चाहता हूँ यह मेरे लिए उसका अधिकतम नही बल्कि न्यूनतम भाग है।

जबतक अस्पृश्यताका नामो-निशान नहीं मिटता, मैं किसी भी तरह सन्तुष्ट नही हूँगा। इसलिए मैं इस आशयकी एक कानूनी घोषणापर जोर दूंगा कि सभी सार्वजनिक पूजा-स्थान, कुएँ, स्कूल आदि पीड़ितोंके लिए बिलकुल उन्ही शर्तोंपर खुले होने चाहिए जो पीड़कोके लिए है। मोटे तौरपर मेरा विचार यह है। परन्तु यदि पीड़ित वर्गोंके प्रतिनिधि मेरे विचारपर ध्यान न दे, तो उन्हे 'सीटो' का कानूनी आरक्षण प्राप्त करनेकी स्वतन्त्रता होगी। मैं उसके विरुद्ध उपवास नहीं करूँगा, पर आप मुझसे इस तरहकी किसी योजनाके लिए आशीर्वादकी अपेक्षा न करें। सरकारसे उसकी स्वीकृतिके लिए मेरा आशीर्वाद आवश्यक भी नही है। यदि मुझे मौका मिला तो मैं निश्चय ही पीड़ितोमे कानूनी आरक्षणके विरुद्ध जनमत पैदा करनेकी कोशिश करूँगा।

यदि मेरी स्थिति आपको स्पष्ट या सन्तोषजनक न लगे तो आप और आपके मित्र आर० बी० राजा और डॉ० अम्बेडकर सहित पहलेसे समय निश्चित करके, मुझसे मिल सकते हैं। मुझे इससे प्रसन्नता होगी। जैसा कि आपको विदित है, यह चीज केवल अभी सम्भव हुई हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८३) से। ऐपिक फास्ट, पृ० १६८-९ से भी

१७८. पत्र : विट्ठल आर० शिन्देको[1]

२० सितम्बर, १९३२

आपका मर्मस्पर्शी पत्र मिला। मुझे इसका जरा भी आभास नही है कि मेरा क्या किया जायेगा। इसलिए अभी कुछ भी कहना सम्भव नही है। मैं निश्चय ही यहाँ १२ बजे उपवास शुरू कर रहा हूँ। कहाँ, कब और कैसे उसका अन्त होगा, यह केवल ईश्वर ही जानता है। खैर, आपकी सहानुभूति और आमन्त्रणके लिए धन्यवाद।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ५८

१७९. पत्र : द० बा० कालेलकरको

२० सितम्बर, १९३२

चि० काका,

तुम्हारा पत्र मिला। कल १९-९ . . .।[2] जिस तरह कताई बन्द करके तुम आराम करते हो उसी प्रकार यदि पढाई-लिखाई छोडकर भी आराम करो तो इसमे कोई बुराई नही है। तुम घूमना-फिरना बन्द नही कर सकते, यह हम यरवडाके अपने पिछले अनुभवसे जानते है। खूब चलना-फिरना। कसरत करते, खाते-पीते, आराम करते हुए जितना पढा-लिखा जा सके उतना लिखना-पढना। [सर जेम्स] जीन्स कृत जो तीन पुस्तकें मेरे पास है, वे मै भेज रहा हूँ। मुझे वे बहुत अच्छी लगी। किन्तु देखता हूँ कि उनके विचारोका विरोध करनेवाले लोग भी है। उक्त पुस्तके मुझे तो दो-तीन बार पढनी चाहिए। उनमे बहुत-सी चीजे ऐसी है जो मुझे स्पष्ट नही हो पाई। फिर भी अब तो इन्हे पढनेमे मुझे आनन्द आता है। तुम जो गेलीलियो आदिको ऋषिकी सज्ञा देते हो सो एक प्रकारसे गलत नही है। 'एक प्रकारसे' कहनेका तात्पर्य यह है कि ऋषिगण अपनी अन्तर्दृष्टिसे काम लेते थे। और जो इस दृष्टिसे काम ले उसका नाम ही यह शब्द विशेष है। ऐसा कहनेसे गेलीलियो आदिकी तनिक भी निन्दा नही होती। किन्तु यह ध्यानमे रखना आवश्यक लगता है कि दोनोके क्षेत्र अलग-अलग है। अत. यदि और कोई नाम खोज सको तो खोजना।

१. श्री शिन्देने गांधीजी को अहल्या आश्रममें आमन्त्रित किया था।
२. जेलके अधिकारियोंने एक वाक्यपर स्याही फेर दी है।

मेरी अग्नि-परीक्षाके बारेमे तो तुमने सुना ही होगा।[1] सुनकर तुम्हे खूब हर्ष हुआ होगा। दु खका तो कोई कारण ही नही हो सकता। जिस प्रकार जन्म और मरण एक ही है उसी प्रकार अनशन और अशन दोनो एक है।[2] पर यदि कोई साथी केवल धर्म-पालनके लिए देह छोडे तो वह शोकका कारण हो ही नही सकता। ऐसा अवसर किसी-किसीको कभी-कभी ही मिलता है। उसे तो उसका स्वागत ही करना चाहिए। अत. तुम व्याकुल न होकर अधिक जाग्रत, और अधिक कर्त्तव्यपरायण बनना। शरीरको अधिक स्वस्थ बनाकर बाहर निकलना। बहुत-सी आहुतियाँ देने पर ही अस्पृश्यता-रूपी मैल धुलेगा।

हम सब आनन्दमे है।

शकर[3] ठीक है। मै उससे मिला था।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४८९) से, सौजन्य : द० बा० कालेलकर

१८०. पत्र : केदारनाथ कुलकर्णीको

२० सितम्बर, १९३२

मै तुम्हारे पत्रकी राह देख ही रहा था। कल रातको ही मिला। तुम्हारे साथ चर्चा हो सकती तो अच्छा लगता। उपवासके दौरान भी यदि मुझे उपवास करना अधर्म जान पडेगा तो मै नि सकोच उसी क्षण उसे छोड दूंगा। इस ससारमे मुझे एक ही बातका सकोच है असत्य बात विचारने, बोलने या आचरण करनेका।

यह काम बुद्धिसे नही हुआ, अन्तर्नादसे हुआ है। मगर बुद्धिने यो कहा 'अस्पृश्यताके मैलको धोनेके लिए शायद तुम्हारे-जैसे सैकड़ोको मरना पडे।' अनशन हिन्दू धर्ममे बहुप्रचलित है। मुझे वह हमेशा प्रिय रहा है। यह तो अन्तर्नाद है। प्रधान मन्त्रीका प्रस्ताव तो निमित्त-मात्र है। वह सहज ही अनशनका मुहूर्त बन गया। अनशनका हेतु केवल निर्णय बदलवाना नही, परन्तु बदलवाने के उस प्रयत्नसे जो जागृति और शुद्धि उत्पन्न होनी चाहिए, उसे पैदा करना है। मतलब यह है कि अस्पृश्यताकी जडको हिलानेका यह अवसर था।

यह सही है कि वाछित परिणाम निकल आनेसे ही यह कदम धर्म-सगत है, ऐसा निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता। यह निश्चय तो सबको अपने-अपने लिए करना होगा, और अगर हममे ऐसा करनेकी शक्ति न हो तो गुरुजनोकी राय माननी चाहिए। इतना ही नही कि मुझे यह कदम धर्म-सगत लगता है, मुझे तो

१ व २. इन वाक्योंपर भी जेल-अधिकारियोंने स्याही फेर दी थी, अतः ये महादेवभाईनी डायरी भाग-२, पृष्ठ ६१ से लिये गये हैं।

३. सतीश कालेलकर, द० बा० कालेलकरके पुत्र।

यह कर्त्तव्य — आवश्यक — मालूम होता है। मेरी बातपर विचार करके मुझे फिर लिखना। मेरी ओरसे निराश न होना। आशा है, तुम्हारा एक्जीमा ठीक हो गया होगा।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६०

१८१. पत्र : जयशंकर पी० त्रिवेदीको

२० सितम्बर, १९३२

आपकी प्रेमपूर्ण पंक्तियाँ मिली। आपके प्रेमको मैं जानता हूँ। ईश्वर कोई आकाशमें नहीं रहता। मेरे लिए ऐसा निर्मल प्रेम ईश्वर-रूप है और वही मुझसे ऐसे यज्ञ करवाता है।

[गजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६२

१८२. पत्र : नारणदास गांधीको

शामके ४-४५ बजे, २० सितम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

तुम्हारा पैकेट मिला। जो हुक्म निकला है, वह तो देखा ही होगा। अभी तो ऐसा मालूम होता है कि हम जहाँ थे वही हैं। आज तो यही स्थिति है, कलकी राम जानें। इसलिए अभी तो तुम चाहो तो रोज लिख सकते हो। यहाँसे तो रोज डाक निकलेगी ही। लेकिन मेरे पत्रकी बहुत आशा न करना। जितनी बने उतनी शक्ति सचित करना चाहता हूँ। और काम तो अच्छे-खासे परिमाणमें रहेंगे ही। किसीको मिलने आनेकी इच्छा हो तो आ सकता है। लेकिन मिलने आनेका बहुत लोभ न रखना चाहिए। अनसूयाबहन, शकरलाल और रमासे यह कह देना। सरलादेवीको भी खबर देना। लेकिन मेरी सलाह यह है कि जिससे आये बिना रहा ही न जाये, वही आये। सब लोग जितनी बने उतनी अन्त्यज-सेवा करें।

दूसरे जो पत्र हैं, उनमें से किसीका जवाब देते बना तो दूँगा। न दिया जाये तो समझे कि दूसरे काम होनेके कारण नहीं दे सका।

आज सवेरे प्रार्थनामें "वैष्णव जन" वाला भजन गाया गया था। ६-३० से ८ बजेतक महादेवने 'गीता'का पारायण किया। वल्लभभाई और महादेवने आज-भरके लिए उपवास रखा है। दोपहरको अनशन प्रारम्भ होते समय रेहानाबहनवाला यह भजन गाया गया :

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो सोवत है वह खोवत है,
जो जागत है सो पावत है।

वहाँ यह भजन मिल जाये तो पण्डितजी सुनायें। न हो तो यहाँसे भेज दूँगा।

कुसुमको लेकर थोड़ी चिन्ता होती है। वह पूरा विश्राम लेती है न? इसके लिए वह भले ही चरखा भी छोड़ रखे।

मेरी कलवाली भारी-भरकम डाक तो मिली ही होगी। आज इतना ही। हाँ, कल पुंजाभाईको पत्र लिख ही नही पाया। आज एक छोटा-सा पुरजा साथमे भेज रहा हूँ।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५३ से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

१८३. भेंट: समाचार-पत्रोंके प्रतिनिधियोंको[1]

२० सितम्बर, १९३२

नौ महीनोंमें पहली बार, आज शाम ५-३० बजे पत्रकारोंको यरवडा जेलमें महात्मा गांधीसे मिलनेकी इजाजत दी गई। गांधीजी ने अपनी बात जिस सहज-स्वाभाविक ढंगसे कही और उनके विचारोंमें जो चिन्तनकी गहराई थी, उसकी दृष्टिसे यह एक विरल भेंट-वार्ता थी और संवाददाताओंको उसमें उपस्थित रहकर कृतार्थताका अनुभव हुआ। 'आमरण उपवास' आरम्भ होनेके पाँच घंटे बाद, आज महात्मा गांधीसे मिलकर और उनके साथ सारी स्थितिपर विचार-विमर्श करके कोई भी पत्रकार ऐसा न था जो बेहद प्रभावित न हुआ हो . . .

उनसे जब यह पूछा गया कि क्या उन्हें इस प्रकरणके सुखद अन्तकी आशा है तो उन्होने कहा:

मै अदम्य आशावादी हूँ। ईश्वरने ही मुझे त्याग दिया हो तो बात दूसरी है, नही तो मुझे आशा है कि यह उपवास मरण पर्यन्त नही चलेगा।

महात्मा गांधीने बताया कि उन्हें लोगोंके बहुत-से ऐसे तार मिले हैं जिनमें उन्होने सहानुभूतिमें उपवास करनेका निश्चय किया है या वे उपवास करना चाहते हैं।

प्रत्येक व्यक्तिसे मेरा यह आग्रह है कि वह सहानुभूतिमे उपवास न करे। मैंने यह ईश्वरके आदेशपर शुरू किया है। इसलिए जबतक उन लोगोको वैसा ही निश्चित

१. भेंटकी यह रिपोर्ट पहले टाइम्स ऑफ इंडिया, २१-९-१९३२ में छपी थी।

आदेश न मिले, उनके उपवास करनेका कोई कारण नहीं है। आत्मशुद्धिके लिए या इस ध्येयके साथ एकता दिखानेके लिए एक दिनका उपवास ठीक है, पर बस इतना ही काफी है। इस तरहका उपवास विशेषाधिकार और कर्त्तव्य, दोनों है, और विशेषाधिकार केवल उन्हींको प्राप्त होता है जिन्होंने उसके लिए आवश्यक साधनाकी हो।

बातका रुख तब आजके मुख्य प्रश्न दलित वर्गों, या जैसा कि महात्मा गांधी उन्हें कहते हैं, पीड़ित वर्गोंके प्रतिनिधित्वकी ओर मुड़ गया।

सबसे पहले उन्होंने इस बातपर आश्चर्य प्रकट किया कि बम्बई सरकारको जो वक्तव्य दिया गया था, वह अभीतक प्रकाशित नहीं किया गया है। वह पाँच दिन पहले भेजा गया था। अगर वह उन्हें आज फिर लिखना पड़े तो तबसे हुई घटनाओंके प्रकाशमें वह कुछ और ही होगा। और भेंटके अन्तमें उन्होंने कहा कि उनका नया वक्तव्य उस वक्तव्यका पूरक है, पर उसपर आधारित नहीं। वे बोले :

मेरी स्थिति तो स्पष्ट ही है, पर जहाँतक इस विषयका सम्बन्ध है, मैं जेलके सीखचोंके भीतरसे कुछ कह नहीं सकता था। अब क्योंकि प्रतिबन्ध हटा दिये गये है, इसलिए समाचार-पत्रोंका पहला ही अनुरोध मैंने स्वीकार कर लिया है। मेरा उपवास केवल पृथक् निर्वाचक-मण्डलके विरुद्ध है, कानून द्वारा सीटोंके आरक्षणके विरुद्ध नहीं है। यह कहना कि मैं कानून द्वारा सीटोंके आरक्षणका अडिग विरोध कर उनके ध्येयको नुकसान पहुँचा रहा हूँ, आंशिक रूपसे ही सच है। मैं इसके विरुद्ध था और अब भी हूँ, पर कानून द्वारा सीटोंके आरक्षणकी कोई योजना स्वीकृति या अस्वीकृतिके लिए मेरे आगे कभी नहीं रखी गई। इसलिए उस मुद्देपर मेरे लिए कोई फैसला करनेका सवाल ही नहीं उठता। मैंने जब उस मुद्देपर अपने विचार स्थिर किये तो निश्चय ही मैंने निराशा प्रकट की। मेरी विनम्र रायमें इस तरहके कानूनी आरक्षणसे लाभकी बजाय उलटे इस अर्थमें हानि हो सकती है कि इससे स्वाभाविक विकासकी क्रिया रुक जायेगी। कानूनी आरक्षण वैसा ही है जैसे आदमीके लिए सहारा। इस तरहके सहारेपर देरतक निर्भर रहनेसे वह अपनेको दुर्बल कर लेता है।

अगर लोग मुझपर हँसे नहीं तो मैं नम्रतापूर्वक अपना यह दावा रखूंगा और इसपर मैं हमेशा जोर देता आया हूँ कि मैं जन्मसे 'स्पृश्य' हूँ, पर स्वेच्छासे 'अस्पृश्य' हूँ। और मेरी कोशिश अस्पृश्योंमें भी ऊपरकी दस जातियोंका प्रतिनिधि बननेकी नहीं रही है — अस्पृश्योंके लिए यह एक शर्मकी बात है कि उनमें भी जातियाँ और वर्ग है — मेरी महत्त्वाकांक्षा तो, यथासम्भव अस्पृश्योंके सबसे निचले स्तरका, उनका प्रतिनिधि बननेकी रही है जिन्हें 'अदर्शनीय' कहा जाता है, जिन्हें पास नहीं आने दिया जाता। मैं तो उनके साथ उन्हींमें से एक होकर रहना चाहता हूँ। मैं चाहे कहीं भी जाऊँ, वे सदा मेरी मनकी आँखोंके आगे रहते हैं, क्योंकि जहरका प्याला उन्हें पूरा पीना पड़ा है। मैं उनसे मलाबारमें मिला हूँ और उड़ीसामें मिला हूँ। और मुझे इस बातका विश्वास हो गया है कि यदि कभी

उनका उत्थान होगा तो वह सीटोके आरक्षणसे नही बल्कि हिन्दू सुधारकोके उनके बीच जी-तोड काम करनेसे होगा। मुझे लगता है कि यह अलगाव सुधारकी सारी सम्भावनाको खत्म कर देगा, इसीलिए मेरी समूची आत्माने इसके खिलाफ विद्रोह किया है। मै यह बात स्पष्ट कर दूँ कि पृथक् निर्वाचक-मण्डलोको वापस लेनेसे मेरे प्रणका शब्दार्थ पूरा हो जायेगा, पर उसके पीछे जो भावना है उसकी पूर्ति नही होगी। मैने तो अपने लिए स्वेच्छासे अस्पृश्यताका वरण किया है और अपनी इस हैसियतसे, मुझे 'स्पृश्यो' और अस्पृश्योके किसी कामचलाऊ समझौतेसे सन्तोष नही होगा।

मै जिस चीजके लिए जी रहा हूँ, और जिसके लिए मरनेमे भी मुझे खुशी होगी, वह तो अस्पृश्यताको जड-मूलसे खत्म करना है। इसलिए मै एक सजीव समझौता चाहता हूँ, जिसका जीवनदायी प्रभाव सुदूर भविष्यमे नही बल्कि आज ही महसूस होना चाहिए। उस समझौतेकी पुष्टि 'स्पृश्यो' और अस्पृश्योके मिलनके अखिल भारतीय प्रदर्शनसे होनी चाहिए, और वह कोई नाटकीय प्रदर्शन नही बल्कि भाइयोका सच्चा मिलन होना चाहिए। अपने जीवनके पिछले पचास वर्षोके इसी स्वप्नको पूरा करनेके लिए मैने आज अग्नि-द्वारमे प्रवेश किया है। ब्रिटिश सरकारका फैसला मेरी सहिष्णुताकी सीमाको पार कर गया। वह निर्णायक लक्षण था, और इस तरहके मामलोमे मै चिकित्सककी जिस अचूक नजरका दावा करता हूँ उससे मैने उस लक्षणको पहचान लिया। अत, पृथक् निर्वाचक-मण्डलोकी समाप्ति मेरे लिए अभीष्टकी प्राप्तिका केवल आरम्भ ही होगा, और मै बम्बईमे इकट्ठे हुए और अन्य सभी नेताओको सावधान करना चाहूँगा कि वे जल्दबाजीमे कोई निर्णय न करे।

अपने जीवनको मै कोई महत्त्व नही देता। हिन्दुओने अपने ही धर्मके असहाय नर-नारियोके साथ लगातार जो नृशस अनाचार किये है, उसके प्रायश्चित्तमे यदि इस महान् ध्येयके लिए सौ जीवन भी बलिदान कर दिये जाये तो वे भी काफी नही होगे। इसलिए मै उनसे यह आग्रह करूँगा कि वे पूर्ण न्यायके पथसे तिल-भर भी विचलित न हो। अपने उपवासको मै न्यायके पलडेपर रखना चाहता हूँ। यदि यह सवर्ण हिन्दुओको उनकी तन्द्रासे जगा देता है, और यदि उनमे अपने कर्त्तव्यकी चेतना पैदा हो जाती है तो इसका उद्देश्य पूरा हो जायेगा। लेकिन यदि मेरे प्रति अन्ध प्रेमके कारण वे पृथक् निर्वाचक-मण्डलकी व्यवस्थाको रद्द करवानेके खयालसे जैसे-तैसे कोई उलटा-सीधा और गढा-गढाया समझौता कर लेते है, और फिर सो जाते है तो वे भयकर भूल करेगे और मेरे जीवनको दु खसे भर देगे। पृथक् निर्वाचक-मण्डलके रद्द हो जानेसे मै उपवास तो तोड दूँगा, पर जिस सजीव समझौतेके लिए मै प्रयत्नशील हूँ वह यदि नही हुआ तो वह मेरे लिए जीते-जी मौतकी स्थिति होगी। उसका अर्थ केवल यह होगा कि उपवास तोडते ही मुझे प्रणकी भावनाको सोलहो आने प्राप्त करनेके लिए, एक और उपवासकी सूचना देनी होगी।

यह चीज दूसरेको बचकानी लग सकती है, पर मुझे नही लगती। इस अभिशापको खत्म करनेके लिए यदि मेरे पास कुछ और होता तो मै वह भी दे देता। पर अपने जीवनसे अधिक मेरे पास कुछ है ही नही।

मेरा यह विश्वास है कि यदि अस्पृश्यता जड़से खत्म हो जाये तो इससे न केवल हिन्दू धर्मका एक भयानक कलक दूर हो जायेगा, बल्कि इसका प्रभाव विश्व-व्यापी होगा। अस्पृश्यताके खिलाफ मेरी लडाई पूरे मानव-समाजमे पैठे हुए एक दूषणके खिलाफ है। इसलिए जब मैने सर सैम्युअल होरको अपना पत्र[1] लिखा तो मुझे पूरा विश्वास था कि यदि मैंने यह कार्य ऐसे हृदयसे शुरू किया है जो अशुद्धिसे, हर तरहके द्वेष और क्रोधसे उस सीमातक मुक्त है जो एक मानव-प्राणीके लिए सम्भव है तो मानवकुलके सर्वोत्तम तत्त्व मेरी सहायताको आ जायेंगे। इस तरह आप देखेंगे कि मेरा उपवास सर्वप्रथम हिन्दू समाजमे आस्था, मानव-स्वभावमे आस्था और अधिकारी-वर्गतकमे आस्थाके ध्येयपर आधारित है।

अस्पृश्यताके खिलाफ अपने इस सघर्षमे मै समस्याकी तहतक जा पहुँचा हूँ, और इसलिए मै कहता हूँ कि प्रश्न चिरन्तन महत्त्वका — किसी राजनीतिक सविधानके चौखटे मे जडकर दिये जा सकनेवाले स्वराज्यसे बहुत अधिक महत्त्वका — है, और मै तो यह कहूँगा कि स्वराज्यका जो सविधान आवश्यक नैतिक आधारपर खडा न हो — करोडो पददलित लोगोके मनमे जगी इस आशाको साकार करनेकी सम्भावनासे आपूरित न हो कि उनके सिर पडा हुआ बोझ अब उतरनेवाला है — वह सविधान भी एक दुर्वह भार ही साबित होगा। अग्रेज अधिकारी चित्रके इस सजीव पहलूको देख ही नही सकते। इसीलिए अपने अज्ञान और आत्म-सन्तोषमे वे ऐसे प्रश्नोपर अपना फैसला देनेकी हिम्मत कर रहे है जो करोडो लोगोके मूल अस्तित्वको प्रभावित करते है — मेरा आशय यहाँ सवर्ण हिन्दुओ और अस्पृश्यो, अर्थात्, पीडको और पीडितो दोनोसे है, अधिकारी-वर्गको उसके इस घोर अज्ञानसे — इस तरहके शब्दका प्रयोग यदि मै आघात पहुँचानेका दोषी हुए बिना कर सकूँ तो — जगानेके लिए भी मेरे अन्त करणने मुझे पूरी शक्तिसे प्रतिरोध करनेको प्रेरित किया है।

उन्होंने बताया कि आपत्कालीन समितिका जो प्रतिनिधि-मण्डल कल उनसे मिला था उसके आगे उन्होंने सुनिश्चित सुझाव रखे थे और उनका यह खयाल है कि आज बम्बईमें समाचार-पत्रोंको उनकी सूचना दे दी गई होगी।

क्या उनका एक फोटो लिया जा सकता है, यह पूछनेपर महात्मा गांधीने मजाकमें अपने अन्तिम संस्कारकी बात कही। इसपर मैंने उनसे पूछा कि यदि कहीं ऐसा अनिष्ट हो जाये तो अन्तिम संस्कारकी तैयारियोंके बारेमें क्या उन्होने कल अपने पुत्र देवदाससे अपनी भेंटमें कुछ कहा है। इसका उन्होंने यह विलक्षण उत्तर दिया:

मैंने अपने पुत्रसे कहा है कि वह बम्बईके सम्मेलनमे यह कह दे कि आवेशपूर्ण जल्दबाजीमे दलित वर्गोको कोई क्षति होने देनेके बजाय, वह, अपने पिताका पुत्र होनेके नाते, अपने पिताके जीवनका बलिदान होने देनेको तैयार है।

उनका उपवास कबतक चल सकता है, इस बारेमें वस्तुतः वे क्या सोचते हैं? उनका उत्तर था:

१. देखिए खण्ड ४९, पृ० १८१-४।

जीनेकी मुझे भी उतनी ही इच्छा है जितनी कि औरोको होती है। जलमें जीवनको कायम रखनेकी असीम क्षमता है, और मुझे उसकी जब भी जरूरत महसूस होगी मै उसे लूंगा। आप मुझपर इतना विश्वास रखिए कि मैं अपने-आपको जीवित रखनेका अधिकसे-अधिक प्रयत्न करूँगा, ताकि हिन्दू चेतना और ब्रिटिश चेतना भी जाग्रत हो जायें और इस वेदनाका अन्त हो। मेरी पुकार सर्वशक्तिमान् ईश्वरके सिंहासनतक पहुँचेगी।

[अंग्रेजीसे]

एपिक फास्ट, पृष्ठ ११८-२३

१८४. तार: हे० सॉ० लि० पोलकको[1]

[२१ सितम्बर, १९३२][2]

कैलोफ[3]
इस्ट्रैन्ड
लन्दन

उपवास और उससे सम्बन्धित मामलोपर अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए पन्द्रह तारीखको सरकारको एक खुला वक्तव्य[4] भेजा था और प्रार्थना की थी कि वह प्रकाशित कर दिया जाये। मुझे बताया गया है कि वह अब प्रकाशित किया जायेगा।[5] सप्रेम।

गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० १८५३४) से। बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल स० २०-९ से भी

१. यह श्री पोलकके २० सितम्बरके तारके उत्तरमें था, जो इस प्रकार था: "टाइम्सके सवाद-दाताकी रिपोर्ट है कि आपने शिकायत की है कि अपनी शर्तें बताते हुए जो प्रलेख आपने सरकारको दिया था वह सरकारने प्रकाशित नहीं किया है। क्या इसका सम्बन्ध दलित वर्गोंके प्रश्नसे है? इंडिया ऑफिससे यह सूचना मिली है कि उन्हें उस प्रलेखकी कोई जानकारी नहीं है।"

२. "दैनन्दिनी, १९३२" से।

३. श्री पोलकका तारका पता।

४. देखिए "पत्र: एम० जी० भण्डारीको", १९-९-१९३२।

५. यह २१ सितम्बर, १९३२ के हिन्दूमें छपा था।

१८५. पत्र : जयरामदास दौलतरामको

२१ सितम्बर, १९३२

मै जानता हूँ कि तुम्हें मेरी इस प्रायश्चित्त-स्वरूपकी जा रही तपस्यासे कैसा लग रहा होगा। पर तुम इतने बहादुर तो हो ही कि यह समझ सको कि यह अवसर शोकका नही, आनन्दका है। अस्पृश्यताके इस दानवके अन्तिम रूपसे नष्ट होनेसे पहले, हममे से बहुतोको मरना पड़ सकता है। तुम्हे तो इससे खुशीसे फूले न समाना चाहिए कि एक साथीने अग्नि-द्वारमे प्रवेश किया है। यदि मैं इसमे से सही-सलामत बाहर आ जाता हूँ तो यह अच्छा है, और यदि यह अग्नि मुझे भस्म कर देती है तो यह भी ज्यादा नही तो उतना ही अच्छा तो जरूर है। ईश्वरने मुझे मार्ग दिखाया है, और अन्ततक दिखायेगा।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६७

१८६. पत्र : जमनालाल बजाजको

[२१ सितम्बर, १९३२][1]

चि० जमनालाल,

आशा है, तुम तनिक भी परेशान नही होगे। तुम्हे तो आनन्दसे नाचना ही चाहिए कि जिसे तुमने पिता माना है वह तुम्हारे प्रिय कामके लिए पूर्णाहुति दे। तुम्हारे लिए तो यह उत्सव मनानेकी ही बात हो सकती है।

जानकीमैयासे मेरा विनोद जारी है। सरदार और महादेव तुम्हे याद कर रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ९४-५

१. साधन-सूत्रमें २७ सितम्बर है। लेकिन **महादेवभाईनी डायरी**, पृ० ६८ पर २१ सितम्बर है, जिसकी पुष्टि श्री जमनालाल बजाजके इसी तिथिको मदालसाको लिखे पत्रसे होती है, जिसे **बापू-स्मरण**, पृ० २७४ पर इसी तिथिके अन्तर्गत रखा गया है।

१८७. पत्र : मणिलाल बी० कोठारीको

२१ सितम्बर, १९३२

सरदार कहते हैं कि अपने पट्ट शिष्यको तो मुझे अलगसे ही पत्र लिखना चाहिए। मैंने कहा, जमनालालजी के साथ मणिलाल भी आ जाता है। तो इसपर वे लाल-लाल आँखे दिखाकर बोले कि जमनालालजी और अन्य सब लोगोका समावेश मणिलालमे हो सकता है, पर मणिलालका समावेश किसी अन्यमे नही हो सकता। मेरा कहना है कि ऐसा नही है। मणिलाल तो अहिंसाका पुजारी होनेके कारण सबमे समा सकता है, किन्तु किसीको उसमे समाविष्ट माना जाये, ऐसा वह कदापि नही चाहेगा। हमारी कोठरीमे उठ खडे हुए इस विवादको अब तुम्ही मिटा सकते हो। देखना, इन्साफ करना। कौन सच्चा है, सरदार या मै? और जहाँ इस तरहका वाद-विवाद चलता हो, वहाँ जैनोको प्रिय लगनेवाले अनशनकी ऊहापोहमे हम पड़े ही क्यो?

तुम इस पत्रसे हमारे आनन्दका अन्दाज लगा सकोगे। रोना सख्त मना है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६८

१८८. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

२१ सितम्बर, १९३२

तुम्हे मेरा कदम नीतिमय लगा या नही, यह जाननेकी इच्छा तो रहती ही है। नाथको शका है। मैंने उन्हे उत्तर[1] दे दिया है। यदि तुमने इस बारेमे विचार किया हो तो लिखना। यह तो समझ ही लिया होगा कि अगर यह कदम धर्मके अनुकूल जान पडे तो यह हमारे लिए आनन्दोत्सवका मौका है।

वल्लभभाईकी सस्कृतके बारेमे तुम्हे जो डर है, उसके लिए कोई कारण नही है। वल्लभभाईकी देहाती गुजराती तो कोई उनसे छीन ही नही सकता। सस्कृत इस प्रवाहको ज्यादा मजबूत बनायेगी। और इस बार वे जो भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं, हमे तो उसीका स्वागत करना है। इसका असर विद्यार्थियोपर पडे बिना नही रह सकता। हमारी भाषाके लिए सस्कृत गगा नदी है। मुझे लगता रहता है कि यदि वह सूख जायेगी तो भाषाएँ निसत्त्व हो जायेगी। मुझे लगता है कि उसका साधारण ज्ञान आवश्यक है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६७

१. देखिए "पत्र: केदारनाथ कुलकर्णीको", २०-९-१९३२।

१८९. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२१ सितम्बर, १९३२

तुम्हे उपवासका क्षोभ नही होना चाहिए। जिसकी लालसा थी, उसे प्रभुने घर बैठे भेज दिया। इच्छित वस्तु मिल जाये, तो यह शोकका विषय नही हो सकता। हम तीनो आनन्दमे है, और प्रभुकी लीला देखकर नाचनेकी कोशिश करते है। नाचना अभीतक पूरी तरह तो नही आया है। लोग मुझे लिख सके, इसकी इजाजत मैंने प्राप्त कर ली है, इसलिए लिखना।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६६

१९०. पत्र : मणिबहन पटेलको

२१ सितम्बर, १९३२

चि० मणि,

तुझे आश्वासनकी जरूरत होगी क्या? खबरदार, यदि एक भी आँसू गिराया तो। जो सौभाग्य मुझे मिला है, वह बिरलोको ही कभी-कभी मिलता है। इस कारण खुश हो सकते है, रो तो सकते ही नही। तेरे और तुझ-जैसोके लिए उपवास नही है। परन्तु पूर्ण तन्मयताके साथ कर्त्तव्य-पालन करना है। मुझे जब लिखना हो तब लिख सकती है; इसकी अनुमति मैंने ले ली है। इसलिए मुझे लिखना।

यह पत्र तुझे तुरन्त मिलना चाहिए। अन्य बहनोंको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

मणिबहन पटेल
प्रिजनर,
सेंट्रल प्रिजन, बेलगाँव

[गजरातीसे]
बापुना पत्रो-४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० ८७

१९१. पत्र : फूलचन्द बा० शाहको

२१ सितम्बर, १९३२

भाई फूलचन्द,

उपवासकी खबर सुनकर सब खुशी मनायें। रोना हरगिज नहीं। ऐसा शुभ अवसर कहाँ मिलता है? मुझे देखकर कोई उपवास न करे। सब अपना-अपना अवसर आनेपर अपनी आहुति दे। जो मरना न जाने वह मनुष्य काहेका? फिलहाल तो तुम सबको अधिक जाग्रत, अधिक कर्त्तव्यपरायण, और ऐसे बलिदानके लिए शुद्ध होनेका ज्यादा प्रयत्न करना चाहिए।

सभीको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ६८। सी० डब्ल्यू० ९४७२ से भी, सौजन्य: चन्द्रकान्त फू० शाह

१९२. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

२१ सितम्बर, १९३२

तेरे तारसे मैं तेरा सताप देख सका हूँ। मेरा तार मिला होगा।[1] मैंने तुझे ज्ञानी माना है, और आशा है, तू वैसा ही निकलेगा। मेरे कदमके नीति-सगत होनेमें यदि तुझे सन्देह हो तो मुझे लिखना। मैंने ऐसा प्रबन्ध किया है कि तुझे यह पत्र जल्दी ही पहुँचा दिया जायेगा और जवाब लिखनेकी इजाजत दे दी जायेगी। तू जानता है कि मैं तुझे अपनी नीतिका रक्षक मानता हूँ। अपने इस अधिकार और धर्मका अच्छी तरह पालन करना। अगर तुझे मेरा कदम पसन्द आया हो, तो यह सिर्फ उत्सव मनानेका अवसर है, यह तो समझमे आ जाना चाहिए। मुझे खुलकर लिखना। तारामती और बच्चोको मैं मिलनेके लिए बुला रहा हूँ।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृ० ११५-६

१. देखिए "तार: मथुरादास त्रिकमजीको", २०-९-१९३२।

१९३. पत्र : ई० ई० डॉयलको

२१ सितम्बर, १९३२

प्रिय कर्नल डॉयल,

आपसे हुई बातचीतके अनुसार मैं साथमें आठ पत्र भेज रहा हूँ। आशा है, आप इन्हे सम्बन्धित कैदियोको भिजवा देगे और साथ ही यह निर्देश भी दे देगे कि इन्हे तुरन्त पहुँचा दिया जाये और जिनके नाम ये पत्र लिखे गये है उन्हे मुझे उत्तर लिखनेकी छूट है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० ९

१९४. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

२१ सितम्बर, १९३२

चि० हेमप्रभा,

यह क्या बात है, मेरे खत तुमको नहिं मिलते तुमारे मुझको नहिं मिलते है। यह खत मिलने पर मुझे तार दो कि इस उपवासको तुम समझ गई है। और समझी है तो रोवेगी नहि पर गायगी। तुमारा कर्तव्य अपने कार्यमे रत रहनेका है। हम सब ईश्वरके हाथोमे है। वह चाहे वैसा करेगा और सो भला हि होगा। अरुणसे कहो लिखे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६८८) से।

१९५. भेंट : एस० एम० माटे, पी० एन० राजभोज और लिमयेको[1]

२१ सितम्बर, १९३२

यदि मेरा वस चले तो मै आपसमे सम्पन्न होनेवाले किसी भी समझौतेमे मन्दिर-प्रवेग और इसी तरहकी चीजे शामिल करनेपर जोर दूँगा और सभी सुधारको और अस्पृश्योको ऐसा करनेके लिए आमन्त्रित करूँगा। मै यह जानता हूँ कि मेरा शरीर जितने दिन उपवास झेल सकता है, उस अति सीमित समयमे मन्दिर-प्रवेशकी सिद्धि एक कठिन काम है। परन्तु समझौतेसे सम्वन्ध रखनेवाले सभी पक्षोको मानव-प्राणियोके इस मूल अधिकारको शीघ्रातिशीघ्र साकार करनेका प्रण कर लेना चाहिए। साथ ही, मै यह नही चाहता कि उपवासका उपयोग कट्टरपन्थियोको विवश करनेके लिए किया जाये। उसका उद्देश्य कट्टरपथियोतक को सोच-विचारके लिए प्रेरित करना अवश्य है। किन्तु यदि वे मानव-अधिकारोके सम्वन्धमे इस मूल सत्यको ग्रहण नही कर पाते है तो हमे धैर्य रखना चाहिए। लेकिन मन्दिर और इसी तरहके स्थान केवल कट्टर-पथियोकी नही, वल्कि सभी हिन्दुओकी सम्पत्ति है। इसलिए, हिन्दुओके एक भागको सार्वजनिक सुविधाओके उपयोगसे वचित करनेका यह विचार, अपने-आपमे, एक प्रकार की हिंसा है। अत इस मूल अधिकारकी रक्षाके लिए कानूनकी सहायताकी माँग करनी होगी। पर, मै यह मानता हूँ कि यदि हिन्दुओकी वहुसख्या इस वातके विरुद्ध है कि तथाकथित अस्पृश्य इस अधिकारका उपयोग करे, तो केवल कानून विलकुल वेकार रहेगा। लेकिन मेरा यह खयाल है कि यदि यह सुधार चुपचाप आये तो वहुसख्याका मन इसके पक्षमे है। इसलिए सुधारकोको चाहिए कि वे अव सुधारके प्रति लोगोके इस निष्क्रिय रुखको सुधारके सक्रिय समर्थनमे वदलनेके लिए सावधानीसे लगातार जमीन तैयार करे। सुधारके पक्षमे जनमतकी इस उत्तरोत्तर वढती वाढसे कट्टरपथियोको यह यकीन हो जायेगा कि यह अनिवार्य है। अत यह कार्य सभी तरहकी हिंसासे, मानसिक हिंसातकसे मुक्त होना चाहिए।

स्वतन्त्र राज्यमे कानून सदा वहुसख्याकी इच्छाका प्रतिनिधित्व करता है। किसी कानूनके पक्षमे आम राय वननेके पहले यदि वह कानून पास कर दिया जाता है तो उससे उसकी खातिर काम करनेवाले लोगोकी कोशिशे वेकार हो जाती है, वाछित उद्देश्य सिद्ध नही हो पाता। इसलिए मै ऐसे कामके वारेमे सदा उन्ही लोगोके पराक्रमपर भरोसा रखता हूँ जो उस कामको अपने जीवनका व्रत मानकर चल रहे है। अत समझौतेको एक सजीव समझौता वनानेके लिए यह नितान्त आवश्यक है

१. साधन-सूत्रके अनुसार, यहाँ जो दिया गया है, वह गांधीजी की वार्ताका सार है।

कि उसके राजनीतिक अगकी स्वीकृतिके लिए पहले एक शर्त यह हो कि समझौतेमे भाग लेनेवाले सवर्ण हिन्दू इसका केवल अनुमोदन ही नही करेगे वल्कि इस मामलेमे सक्रिय कार्य भी करेगे। मेरी अपनी राय विलकुल साफ है। मै किसी भी ऐसे समझौतेको जिसमे पृथक् निर्वाचिक-मण्डलकी छायातक न होगी, स्वीकार कर लूँगा। सयुक्त निर्वाचक-मण्डलकी किसी योजनाके अधीन सीटोके आरक्षणको मै वहुत ही अनिच्छाके साथ सहन करूँगा। लेकिन मै सामाजिक और धार्मिक सुधारपर, जो मेरे लिए समझौतेका मुख्य भाग है, जोर दूँगा। इसलिए, जहाँ मै सयुक्त निर्वाचक-मण्डलकी योजनापर कोई समझौता हो जाने और पृथक् निर्वाचक-मण्डलके व्रिटिश सरकार द्वारा वापस ले लिये जानेकी हालतमे अपना उपवास तोड दूँगा, वहाँ मै लाखो-करोडो हिन्दुओको, जो भारतके एक छोरसे दूसरे छोरतक अनेकानेक सभाओमे मेरे गिर्द इकट्ठे होते रहे हैं, तुरन्त ही यह सूचित कर दूँगा कि यदि, मान लीजिए, छ· महीनेके अन्दर सामाजिक सुधार स्पष्ट रूपसे सम्पन्न नही होता है तो उपवास फिर शुरू कर दिया जायेगा। क्योकि यदि मै ऐसा नही करता हूँ तो मै ईश्वरके प्रति, जिसके नामपर मैने यह महान् उपवास शुरू किया है, और अस्पृश्योके हितोके प्रति, जिनके लिए यह शुरू किया गया है, विश्वासघातका दोषी हूँगा।

कालाराम मन्दिरके वारेमे नासिक सत्याग्रहको मैने अभीतक स्वीकृति केवल इसलिए नही दी है कि उस सत्याग्रहमे मुझे हिंसाकी कुछ गन्ध आ रही थी, और सत्याग्रहका हिंसासे, वह चाहे जितनी थोडी हो, कोई मेल नही है। मुझे यह भी मालूम हुआ है कि पार्वती मन्दिर-जैसे मन्दिरोके वारेमे 'ट्रस्ट'-सम्वन्धी कठिनाई है। ट्रस्टनामा खुद ट्रस्टियोपर यह जिम्मेदारी डालता है कि वे अस्पृश्योको मन्दिरमे दाखिल न होने दे। जहाँ इस तरहकी निर्योग्यता है, वहाँ ट्रस्टियोकी लाचारी मेरी समझमे आ सकेगी। इस तरहके मन्दिरोके सम्वन्धमे कोई भी सत्याग्रह विशुद्ध हिंसा होगी। मै यह कहूँगा कि आजके वातावरणमे इस तरहकी शर्त किसी भी ट्रस्टमे सार्वजनिक सभ्याचारके विरुद्ध समझी जानी चाहिए और, इसलिए अप्रभावी होनी चाहिए। और यदि इस तरहका अदालती निर्णय प्राप्त हो सके, तो इस तरहकी धाराको अवैध करनेवाला कानून वन जाना चाहिए। श्रीयुत राजभोजको डर है कि यदि डॉ० अम्वेडकर एक युक्तियुक्त समझौता स्वीकार कर लेते है, तो सरकार कोई और नेता पैदा कर सकती है, जो उसका विरोध करेगा, और यदि यह डर सच निकलता है, तो सरकार द्वारा किसी भी समझौतेका सदा ही विरोध होगा, और इसलिए मेरे उपवासकी परिणति, मेरी मृत्युमे ही होगी, अत मुझे उपवास तोड देना चाहिए। श्री राजभोजका डर उचित मानते हुए भी, मै ईश्वरको साक्षी मानकर लिये गये प्रणको तोड़ नही सकता। सभी भावी घटनाओकी हम पहलेसे कल्पना नही कर सकते। इसलिए हम केवल अपने कर्मोको ही नियन्त्रित कर सकते है। यदि हम भारीसे-भारी कठिनाइयोके वावजूद विचलित हुए विना ईमानदारीसे अपना कर्त्तव्य करते जाये तो हमे यह श्रद्धा रखनी चाहिए कि परिणाम हमारे और हमारे ध्येयके लिए शुभ ही होगा। सत्यकी सुनिश्चित विजयमे हमारा अटल विश्वास होना चाहिए। इस तरहके सही कार्यसे, विना किसी अपवादके, विरोधियोको परास्त होते और अभीष्ट परिणाम

पैदा होते देखा गया है। पर शर्त यही है कि कार्य जितना सही है, ध्येय उतना ही न्यायोचित होना चाहिए। अत जबतक उपवासकी शर्ते पूरी नही होती तबतक मैं इसे किसी भी कारण स्थगित नही कर सकता।

[अंग्रेजीसे]
एपिक फास्ट, पृ० १६५-७

१९६. पत्र : विद्या आर० पटेलको

२२ सितम्बर, १९३२

चि० विद्या,

खाने और सोनेकी जैसी आदत हम डालना चाहे, पड़ सकती है। सवेरे उठे और दिनमे न सोये तो जल्दी सोनेकी आदत पड़े बिना न रहेगी।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९४३३) से, सौजन्य रवीन्द्र आर० पटेल

१९७. तार : विलियम शाइररको[1]

[२३ सितम्बर, १९३२ या उसके पूर्व][2]

विलियम शाइरर
शिकागो ट्रिब्यून
वियना (आस्ट्रिया)

धन्यवाद। अमेरिकाकी हैरानीपर मुझे आश्चर्य नही है। मेरा यह दुर्भाग्य या सौभाग्य रहा है कि मैं दुनियाको चौकाऊँ। नये प्रयोग या नये ढगसे किये जा रहे पुराने प्रयोग कभी-कभी गलतफहमी पैदा कर ही देते है। औचित्यके नियमोके फलस्वरूप सरकारको लिखे गये अपने पत्रोमे मुझे कठोर सयम बरतना पडता है। जेलके प्रशासनिक नियमोके अनुसार बाहरकी दुनियासे कोई भी पत्र-व्यवहार निषिद्ध ठहरता था। उन नियमोके शब्दो और भावका मैंने पूरी तरह पालन किया। इस समय जो समझौता तैयार हो रहा है वह दलित वर्गोको ब्रिटिश फैसलेसे कही अच्छा और अधिक प्रतिनिधित्व प्रदान करेगा। यदि मुझे यह विश्वास न होता कि दलित वर्गोका जनमत — यानी उनके नेताओके मतसे भिन्न

१. यह अमेरिकी पत्रकार विलियम शाइररके वियनासे भेजे गये तारके उत्तरमें था, जिसमें कहा गया था कि गाधीजी के उपवाससे अमेरिकी जनमत "हतबुद्धि" है और उसकी समझमें नहीं आता कि वे "भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलनपर अपने निर्विवाद राजनीतिक नेतृत्वको आमरण अनशन द्वारा" जान-बूझकर क्यों छोड़ रहे हैं।

२. यह तार बॉम्बे क्रॉनिकलमें "पूना, २३ सितम्बर, १९३२" की तिथि-पंक्तिके अन्तर्गत छपा था।

दलित जनताका मत — मेरे साथ है तो यह उपवास जिस तरह मैंने शुरू किया है उस तरह न किया होता। जहाँतक मुझे मालूम है, दलितोके नेताओकी भी भारी बहुसख्या मेरे पीछे है। मै उनके साथ, दलित वर्गोके मुख्य हितोकी रक्षा करते हुए जिस हदतक जाना सम्भव हो, उस हदतक जाकर समझौता करना चाहूँगा। दलितोके हितोको उनके नेताओसे भी अधिक जाननेके मेरे दावेकी ढिठाईसे आपको चौकना नही चाहिए। जन्मसे स्पृश्य होते हुए भी, मै पिछले पचास वर्षोमे स्वेच्छासे अस्पृश्य बन गया हूँ। अमेरिकियोको यह जान लेना चाहिए कि मेरी राजनीति मेरे धर्ममे से ही पैदा हुई है। यदि ईश्वरने मेरी मृत्यु अनशनसे ही निश्चित की है, तो मुझे यह मालूम है कि इससे मेरे राजनीतिक नेतृत्वपर आखिरी मुहर लग जायेगी। एक यज्ञ-कार्यमे हो रही इस मृत्युसे राष्ट्रीय आन्दोलन और मजबूत होगा। भारतीय समाजकी विशाल बहुसख्या अपनी सहज प्रेरणासे ही इस उपवासकी सचाई और गूढार्थोको समझ गई है। मुझे विश्वास है कि इस तपस्यासे सच्चा स्वराज्य कुछ निकट आ गया है और यदि ईश्वरने मुझे तन और मनसे विचलित हुए विना इस उपवासको पूरा करनेकी शक्ति दी, तो वह और निकट आ जायेगा। अविचलित शान्तिकी अवस्थामे बीता प्रत्येक दिन स्वराज्यको इतना निकट लाता जा रहा है जितना कोई और कदम नही ला सकता। अस्पृश्यताकी समाप्तिके लिए मृत्युकी यह तैयारी, वस्तुत, समूचे भारतके हितके लिए मृत्युकी तैयारी है, क्योकि अस्पृश्यताकी समाप्ति मेरे लिए स्वराज्यका अभिन्न अंग है। मै ऐसे स्वराज्यको जिसके प्रसादमय प्रभावसे क्षुद्रतम या अधमाधम भारतीय भी वचित रहे, स्वीकार नही करूँगा। मेरे लिए धर्म, सार-रूपमे, एक ही है, पर उसकी शाखाएँ अनेक है। हिन्दू शाखासे सम्बन्धित मै यदि उसके मूल तनेके प्रति अपने कर्त्तव्यसे च्युत होता हूँ, तो मै उस अखण्ड और प्रत्यक्ष धर्मका एक कुपात्र अनुयायी ही हूँगा। इस तर्कके अनुसार, मेरा बलिदान मानवताको अस्पृश्यताके हर रूप या प्रकारसे मुक्त करनेके कार्यको आगे बढाता है और, इसलिए, सभी धार्मिक समुदायोकी उससे सेवा होती है। अमेरिकाने ज्ञात और अज्ञात मित्रोके जरिये मेरी विपत्तिमें मुझे बहुत सहानुभूति भेजी है। इसलिए यदि अब वह इस बलिदानके मर्मको समझ लेता है तो मै उससे यह अपेक्षा करता हूँ कि वह इस बलिदानके पक्षमे विश्वमत सगठित करे। प्रकट रूपसे यद्यपि यह इस दुनियाके एक कोनेपर लागू करनेके लिए किया गया है, पर वस्तुत इसका उद्देश्य सारी दुनियाको अपनी लपेटमे लेना है। मेरी जीवन-यात्रा पर जिनकी जरा भी दृष्टि रही है, चाहे वह सरसरी ही क्यो न हो, वे यह देखे विना नही रह सकते कि मेरे जीवनमे कोई

भी काम किसी व्यक्ति या राष्ट्रको क्षति पहुँचानेके लिए नही किया गया है। मेरा राष्ट्र-प्रेम और मेरा धर्म वहिष्कारक नही, समावेशक है और सभी प्राणियोके कल्याणका उनमे सदा समावेश होना चाहिए। मुझसे कभी कोई दोष हो ही नही सकता — मेरा यह दावा नही है। मैंने हिमालय-जैसी गलतियाँ की है, इसका मुझे वोध है। पर मैंने वे जान-बूझकर की हो या कभी किसी व्यक्ति या राष्ट्रके प्रति अथवा किसी मानव या अन्य प्राणीके प्रति मैंने मनमे शत्रुता रखी हो, इसका मुझे बोध नही है।

[अंग्रेजीसे]

वम्बई सरकार, होम डिपार्टमेट, आई० जी० पी० फाइल सं० २०-९

१९८. तार: हेमप्रभा दासगुप्तको

२३ सितम्वर, १९३२

हेमप्रभादेवी
खादीस्थान
कलकत्ता

आशा है तुम अब पहलेसे अच्छी होगी। तुम आ जाती तो अच्छा रहता। उपवास ठीक चल रहा है। शक्ति वनी हुई है। सस्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १६२१) से।

१९९. तार: नारणदास गांधीको

२३ सितम्वर, १९३२

नारणदास
आश्रम
सावरमती

जो भी इच्छुक है तुम उन सवके साथ आ सकते हो, पर आश्रमके काममे वाधा नही पड़नी चाहिए। मै विलकुल ठीक हूँ। सतीशवावू कल सुवह सावरमती पहुँच रहे है। तुमसे मिलेगे।

वापू

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५४से भी; सौजन्य: नारणदास गांधी

२००. तार : मगनलाल वे० मेहताको

[२३ सितम्बर, १९३२][1]

मगनलाल वेलजी मेहता
११४, चिचपोकली
बम्बई

यदि मुझमे तुम्हारा विश्वास है तो तुम्हे उपवास नही करना चाहिए — न पानी लेते हुए, न निर्जल।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९

२०१. तार : श्रीकृष्णदास मोरको

[२३ सितम्बर, १९३२][2]

श्रीकृष्ण मोर
वैंकटेश्वर स्टीम प्रेस
७, खेतवाडी
बम्बई

यदि मुझमे विश्वास रखते हो तो उपवास मत करो।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९

१. साधन-सूत्रमें इस तारको इसी तिथिके अन्तर्गत रखा गया है।
२. साधन-सूत्रमें यह शीर्षक इसी तारीखके अन्तर्गत रखा गया है।

२०२. तार : सी० कृष्ण नायरको

[२१ सितम्बर, १९३२][1]

कृष्ण नायर
स्वदेशी लीग
चाँदनी चौक
दिल्ली

तुम्हे उपवास नही करना चाहिए। तुम तो अनुशासनके अधीन हो और ऐसा कदम उठानेसे पहले स्वीकृति लेनेके लिए बँधे हुए हो। तुम्हारा [यह] समय कठिन कार्य करनेका है। तुम्हारे उपवासके लिए ईश्वर स्वय समय निश्चित करेगा।

बापू

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९

२०३. पत्र : मीराबहनको

२३ सितम्बर, १९३२

चि० मीरा,

तुम्हारा खयाल मुझे भीतर-ही-भीतर कुतर रहा है। तुम अपनेको शान्त रख सको तो कितना अच्छा हो। रोज पत्र लिखती रहो और कल अपनी हालत तारसे बताओ। मेरा उपवास बहुत अच्छी तरह चल रहा है। यह पत्र मैं, पहलेकी तरह, एनिमाके बाद लेटा-लेटा लिख रहा हूँ। सुस्थिर और दृढ रहो। ईश्वरमे आस्था रखो। महादेवके जरिये तुम्हे रोज खबर भेजूंगा। शायद खुद न लिख सकूँ।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५१०)से, सौजन्य · मीराबहन

१. साधन-सूत्रमें यह शीर्षक इसी तिथिके अन्तर्गत रखा गया है।

२०४. वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको[1]

२३ सितम्बर, १९३२

यद्यपि दुर्बलता तो स्वाभाविक रूपसे, दिन-प्रतिदिन बढेगी ही, फिर भी पहलेके उपवासोकी अपेक्षा मै इस उपवासको बहुत आसानीसे झेल रहा हूँ। अपने-आपको मै पूर्णतया शान्त भी अनुभव कर रहा हूँ और अभीतक मुझे अस्पृश्यताके प्रश्नपर विभिन्न प्रतिनिधि मण्डलोके साथ लम्बी और लगातार हुई बातचीतोमे कोई कठिनाई पेश नही आई है। इसके लिए भारी एकाग्रता आवश्यक थी, फिर भी मुझे कोई कठिनाई महसूस नही हुई। पर मुझे मालूम है कि मै इस तरह बहुत दिन चला नही सकूंगा। आज तीसरे पहरके सम्मेलनके बारेमे मै पूरी तरह आशावान हूँ।[2] मेरा आशावाद बिलकुल मूर्खतापूर्ण हो सकता है, क्योकि यदि आप मुझसे इसके कारण बतानेको कहे, तो मेरे पास सिवा इसके और कोई कारण नही है कि इस उपवासमे, जिसे मै ईश्वरादिष्ट मानता हूँ, मेरी बहुत आस्था है और उतनी ही आस्था इस ध्येयमे भी है।

ब्रिटिश और अमेरिकी लोगोके लिए मेरा सन्देश यह है कि उन्हे इसे राजनीतिक कदम समझनेकी गलती नही करनी चाहिए। यह गहरा आध्यात्मिक प्रयास है, एक आदर्शको पचास वर्षतक लगातार प्रयोगमे लानेका परिणाम है। यह एक तपस्या है, क्योकि इसके पीछे जो आदर्श है, वह लाखो-करोडो मानव-प्राणियोकी भयानक धार्मिक दासतासे मुक्तिसे कम और कुछ नही है, इसलिए इसकी सफलता समूची मानव-जातिपर अपना प्रभाव डाले बिना नही रह सकती। सही या गलत, मै यह मानता हूँ कि पृथक् निर्वाचक-मण्डल थोपनेका ब्रिटिश फैसला पिछले दस वर्षोसे गुणोत्तर गतिसे हो रहे सुधारके रास्तेमे भारी बाधा खडी करता है। इसीलिए उसका प्रतिरोध करनेके लिए मैने अपने प्राणोकी बाजी लगाई है।

अब तीन दिन बाद, मेरा यह विश्वास और भी पक्का हो गया है कि मैने जो कदम उठाया है, वह बिलकुल सही है। मेरी स्थापना यदि सच्ची है, तो इस ध्येयके लिए विश्वमत सगठित किया जाना चाहिए, ताकि ब्रिटिश सरकारको सही आचरणके लिए बाध्य किया जा सके।

[अंग्रेजीसे]

टाइम्स ऑफ इण्डिया, २४-९-१९३२

१. यह वक्तव्य "एक-दो प्रश्नोंका उत्तर देनेकी प्रार्थनाके उत्तरमें था" और महादेव देसाई द्वारा लिया गया था।

२. **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२ में इस तारीखकी प्रविष्टिके अन्तर्गत कहा गया है. "डॉ० अम्बेडकर-सहित कमेटीके सभी लोग शामको ४ बजे पहुँचनेवाले थे।"

२०५. तार: हेमप्रभा दासगुप्तको

२४ सितम्बर, १९३२

हेमप्रभादेवी
खादीस्थान
कलकत्ता

तुम्हारा तार मिला। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे और तुम्हारी रक्षा करे। आना जरूरी नही है। मै ठीक हूँ। सस्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १६२२) से।

२०६. तार: सफ़िया जगलुल पाशाको[1]

२४ सितम्बर, १९३२

प्रेम और प्रेरणापूर्ण सन्देशके लिए धन्यवाद। ईश्वरकी इच्छा पूरी हो।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० ३५५

१. मिस्रके राष्ट्रवादी नेता जगलुल पाशाकी विधवा। गांधीजी के उपवासकी खबर सुनकर उन्होंने २३ सितम्बरको तारसे निम्नलिखित सन्देश भेजा था:

"मिस्रके नर-नारी, जो भारत और उसके महान् नेता महात्मा गांधीके वीरतापूर्ण स्वाधीनता-संघर्षको भाइयों-जैसी सहानुभूतिसे देखते आये हैं, भारतकी एकता और स्वतन्त्रताके लिए महात्माके आत्मबलिदानके इस महान् कार्यको अब धड़कते दिलोंसे देख रहे हैं। अपने स्वर्गीय पतिके साथ मैं मिस्रके ईसाइयों, मुसलमानों, कौप्टों और विभिन्न धर्मों और सम्प्रदायोंके अन्य समुदायोंकी भी पवित्र एकताके लिए काम करने और उसे प्राप्त करनेके आनन्दमें भाग ले चुकी हूँ। इसलिए मैं यह हार्दिक आशा प्रकट करती हूँ कि भारतके लोग गांधीजी के आत्मबलिदानके इस महान् कार्यसे प्रेरणा प्राप्त कर, भारतकी आजादीकी रक्षाके लिए बन्धुओं और देशभक्तोंके एक विराट समूहमें एकजुट हो जायेंगे और भारतके इस महान् सपूतके प्राणोंको बचायेंगे, जिसका जीवन और कार्य पूर्व और पूरी मानवजातिकी बपौती है।"

२०७. पत्र : मीराबहनको[1]

२४ सितम्बर, १९३२

मेरी सबसे प्यारी बच्ची,

तुम्हे हिम्मत नही हारनी है। तुम देख ही रही होगी कि ईश्वरकी कृपाकी कैसी प्रचुर और अपूर्व वर्षा हो रही है। यह शायद अभूतपूर्व ही है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२३८) से, सौजन्य मीराबहन

२०८. तार : जवाहरलाल नेहरूको

२४ सितम्बर, १९३२

पण्डित जवाहरलाल नेहरू
देहरादून जेल

कसौटीके इन दिनोमे तुम सदा मेरी मनकी आँखोके आगे रहे हो। तुम्हारी राय जाननेको मैं बहुत उत्सुक हूँ।[2] तुम्हारी रायका मेरे लिए क्या मूल्य है, तुम जानते ही हो। इन्दु[3] और सरूपके[4] बच्चोसे भेंट हुई। इन्दु खुश नजर आई, देह भी कुछ भर गई है। मेरी तबीयत बहुत अच्छी है। जवाब देना। स्नेह।

बापू

[अंग्रेजीसे]

गाधी-नेहरू पेपर्स, १९३२। सौजन्य: नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

१. यह गाधीजी ने मीराबहनको लिखे गये महादेव देसाईके उस पत्रपर ही घसीट दिया था जिसमें उन्हें उपवासके पाँचवें दिन गाधीजी की हालतकी जानकारी दी गई थी।

२. २६ सितम्बरको प्राप्त अपने तारमें जवाहरलाल नेहरूने कहा था: "आपके तार और सक्षिप्त समाचारने, कि कोई समाधान हो गया है, मुझे राहत दी और मेरा मन खुशीसे भर गया। आपके उपवासके निर्णयका समाचार जानकर पहले तो मन व्यथित हुआ, लेकिन आखिर इस निराशापर आशा हावी हो गई और मनकी शान्ति लौट आई। दलित वर्गोकी मुक्तिके लिए कोई भी बलिदान ज्यादा बड़ा नहीं। स्वतन्त्रताको तो निम्नतम वर्गोकी स्वतन्त्रताकी कसौटीपर ही परखा जा सकता है। लेकिन डर है कि कही और सवालोके नीचे हमारा एक-मात्र ध्येय दब न जाये। धार्मिक दृष्टिसे विचार करके कुछ कहनेमें असमर्थ हूँ। यह खतरा है कि आपकी पद्धतिसे कही दूसरे नाजायज फायदा न उठायें।" . . .

३. इन्दिरा नेहरू।

४. श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित।

२०९. भेंट : 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के प्रतिनिधिको

२४ सितम्बर, १९३२

हाँ, अगर जरूरत हुई तो मैं निस्सन्देह फिर उपवास करूँगा, क्योंकि मेरा यह पक्का विश्वास है कि व्यक्ति इस उपायसे दुनियाको अपने दृष्टिकोणकी सचाईका यकीन दिला सकता है।

गांधीजी के उपवासके पाँचवें दिन जब मुझे उनसे यरवडा जेलमें देरतक बातचीत करनेका सौभाग्य मिला, तो ये शब्द उन्होंने मेरे एक प्रश्नके उत्तरमें कहे। . . .

सुबह सातसे भी पहले मैं जब पूना स्टेशनसे चला था तो निश्चय ही मुझे यह आशा नहीं थी कि मैं गांधीजी से इतनी जल्दी मिल सकूँगा . . .। इसलिए जेल-अधिकारियोंसे जब यह जवाब मिला कि यह समय भेंटके लिए उपयुक्त है तो वह एक सुखद आश्चर्य लगा। यरवडाका बड़ा फाटक खुला और मैं भीतर चला गया। . . .

पहरेदार पहले एक आँगनसे और फिर एक छोटे दरवाजेसे गुजरता हुआ मुझे एक छोटे सहनमें ले आया, जो मोटे हिसाबसे कोई १५० फुट लम्बा और ४० फुट चौड़ा होगा। उसमें एक तरफ राजकीय बन्दियोंके लिए कुछ कोठरियाँ बनी थी, पर वे सब खाली लगती थीं। सहनके एक सिरेपर आमके एक छोटे-से पेड़की छायामें गांधीजी खाटपर लेटे थे जिसपर जेलका कम्बल बिछा था।

सिरहाने बैठा उनका एक श्रद्धालु अनुयायी जिद्दी मक्खियोंको उड़ानेके लिए, तौलियेसे धीरे-धीरे हवा कर रहा था। उनके इर्द-गिर्द श्री वल्लभभाई पटेल, श्रीमती गांधी, श्री महादेव देसाई बैठे थे। परिचयके बाद, गांधीजी ने तुरन्त ही मुझसे पूछा कि मैं कौन-सा विशेष प्रश्न उनसे पूछना चाहता हूँ। पर वे इतने क्षीण और दुर्बल दिख रहे थे और उनके स्वास्थ्यकी हालत स्पष्टतः इतनी नाजुक थी कि सवाल-जवाब शुरू करना मुझे ज्यादती लगा।

लेकिन मेरे प्रश्नका जब उन्होंने इस लेखके आरम्भमें उद्धृत उत्तर दिया तो उनकी आँखोंमें चमक आ गई। उसके बाद, पास ही रखी बोतलमें से पानी पीनेको अपनी कुहनियोंके बल कुछ उठते हुए वे फिर अपने-आपमें सिमटते मालूम हुए।

वे बोले :

आपको पता है, कभी-कभी यह बहुत ही बेस्वाद लगता है। मैं एक चुटकी नमक डालकर इसे बदलनेकी कोशिश करता हूँ, पर इससे मेरे मेदेमें बड़ी मतली-सी उठती है।

गांधीजी ने कहा कि यदि उनकी माँगें मान ली जाती है तो वे तीसरे सम्मेलन के लिए खुशीसे लन्दन जायेंगे, लेकिन अन्यथा नहीं।

उसके बाद मैंने उनसे जो पूछा वह मेरे खयालसे एक प्रासंगिक प्रश्न था; अलबत्ता मुझे निश्चय ही उत्तरकी आशा न थी। पर वह बीमार व्यक्ति उत्तरके लिए सदैव तैयार था। उन्होंने जो कहा वह इस प्रकार है:

आपका सवाल है, 'अगर सभी भारतीय नेता, चाहे जिस कारणसे भी हो, अपने-अपने उद्देश्योंकी प्राप्तिके लिए इस तरीकेको अमलमें लानेका फैसला कर ले तो?' देखिए, मैं यह मानता हूँ कि इस तरीकेमें बहुत खतरा है। पर यह तो दुनियाकी हर बड़ी शक्तिके लिए कहा जा सकता है। उनका दुरुपयोग अनिष्टकारी होता है। हम एक सुप्रसिद्ध विष — संखियाका ही उदाहरण ले। वह बहुत ही शक्तिशाली औषध है। यद्यपि हम यह जानते हैं कि बहुत-से लोग उसका दुरुपयोग करते है, पर इसीलिए उसका अस्तित्व मिटा नही देना चाहिए। अतः यदि कोई चीज स्वभावत. अच्छी है, और वह ठीक समयपर ठीक मात्रामें प्रयुक्त की जाती है तो आशा करनी चाहिए कि वह विशाल पैमानेपर सबकी भलाई करनेवाली लगभग चमत्कारी ही होगी। उस शक्तिका, इस सचाईके बावजूद कि दूसरे उसका दुरुपयोग कर सकते है, उपयोग किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, जहाँतक इस तरहके उपवासका सम्बन्ध है, इसके खूब बढ़ने या लोकप्रिय होनेकी बहुत गुंजाइश नही है, और उसका सीधा-सादा कारण यह है कि यह इतनी यातनादायी प्रक्रिया है कि साधारण मानव-स्वभाव इससे गुजरनेके विचारसे ही काँप उठता है।

इस तरह आप देखेंगे कि खतरा बहुत ज्यादा नही है। शरीरको प्रशिक्षित करके ही कोई लम्बे समयतक भोजनके बिना रह सकता है। जिन्होने अपने शरीरको इसकी शिक्षा नहीं दी है और जो कमजोर है वे शीघ्र ही इसका विचार छोड़ देंगे।

इस लम्बे वक्तव्यके बाद गांधीजी थकावटसे कमजोरी महसूस करते हुए अपने बिस्तरके सहारे टिक गये। जेलके दो डॉक्टर तुरन्त ही सहायता देनेके लिए उनके पास आ गये। परन्तु ऐसा लगता था कि गांधीजी को सबसे ज्यादा आराम श्रीमती गांधीसे मिल रहा था, जो स्पष्टतः स्वयं दुःखी होते हुए भी उनका तकिया बदलने, उनके माथेपर जैतूनके तेलकी मालिश करने और धीरे-धीरे उनसे बातें करनेका अवसर प्राप्त कर प्रसन्न लगती थीं।

इस बीच गांधीजी के अनुयायी अन्य राजनीतिक अभ्यागतोंका स्वागत करने लगे और वह सहन शीघ्र ही चहल-पहलसे भर गया।

उनके सचिवसे मुझे पता लगा कि गांधीजी अपने उपवासके दिनोंमें रोज सुबह चार बजे उठते हैं; उसके बाद साढ़े चार या पाँचतक प्रार्थना होती है; फिर जेलका नाई उनकी हजामत बनाता है; तब वे अपना नाश्ता — यानी पानी लेते हैं; और फिर शायद एक घंटे सोते हैं। परन्तु विश्व-भरसे आनेवाले विशेष तारोके कारण उसमें बराबर विघ्न पड़ता रहता है। . . .

[अंग्रेजीसे]

एपिक फास्ट, पृ० १३८-४१

२१०. तार : सुन्दरसिंह ऐंड सन्सको[1]

[२४ सितम्बर, १९३२ या उसके पश्चात्]

बधाइयाँ। आशा है, आपके दृष्टांतका और भी बहुत-से लोग अनुकरण करेंगे।

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्म (एस० एन० १८५५१) से।

२११. तार : सी० एफ० एन्ड्र्यूजको

२५ सितम्बर, १९३२

भारत-भरमें [इस विषयमें भावनाका] जैसा प्रदर्शन हुआ है वह आधुनिक युगका एक आश्चर्य है। गुरुदेव शक्ति-स्तम्भ सिद्ध हुए हैं। सभी मित्रोंको हार्दिक स्नेह। मनमें पूरी शान्ति है। समझौतेकी शर्तबन्द स्वीकृतिसे मेरा उपवास टूट नहीं सकता।

[अंग्रेजीसे]
एपिक फास्ट, पृ० १३४

२१२. तार : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको[2]

[२५ सितम्बर, १९३२][3]

आपके सन्देशकी नित्य लालसा लगी थी। इसने मुझे नई हिम्मत और आशा दी है। आशा है आप ठीक होंगे। सप्रेम।

गांधी

[अंग्रेजीसे]
एपिक फास्ट, पृ० १९६-७

१. यह सुन्दरसिंह ऐंड सन्सके २४ सितम्बरके इस तारके उत्तरमें भेजा गया था: "आपके आदेशानुसार अपने शर्बत-घरके द्वार, गत बीस वर्षोंमें पहली बार, अस्पृश्योंके लिए भी खोल रहा हूँ। इसमें रूढ़िवादी ग्राहक खो बैठनेका खतरा है। मोची जातिके विधान-परिषद् सदस्य रामदयाल मंगलवारको विधिवत उद्घाटन करेंगे। आपके पितृवत् आशीर्वादकी प्रतीक्षा है।"

२. यह श्रीनिवास शास्त्रीके तारके उत्तरमें था जो इस प्रकार था: "अपनी उत्कृष्ट शैलीमें आपने जो उत्कृष्ट सेवा की है, उसपर लाखों घरोंमें आनन्द मनाया जा रहा है और आपके लिए मंगलकामना की जा रही है। मैं यह जानता हूँ कि मेरा मन शंकासे काँपा था, पर परिणाम आपको सही ठहराता है और निर्विवाद रूपसे सर्वोच्च अस्पृश्य और 'अगम्य' सिद्ध करता है।"

३. महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ८२ से।

२१३. तार: पाण्डुरंग महादेव बापटको[1]

२५ सितम्बर, १९३२

उपवासके लिए आप जो कारण देते हैं, वह मेरे हृदयको छूता है। किन्तु ऐसे मामलेमे मै निष्णात माना जाऊँगा; और मेरी राय इसके खिलाफ है, इसलिए मै चाहता हूँ कि आप फिरसे विचार करे। मेरा विश्वास है कि आपके उपवासको धर्मकी मजूरी नही है। आपका मेरे प्रति प्रेमभाव है, तो उसके लिए आपको मेरे साथ मरना नही चाहिए। आपको तो मेरा काम करनेके लिए जीना चाहिए। सभी साथी मेरे साथ मर जाये, तो क्या परिणाम होगा, इसे सोचिए। ऐसा करना क्या अपराध नही होगा? इसलिए मेरा कहा मानिए। ईश्वर आपका कल्याण करे।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ८२-३

२१४. तार: लॉरेंस हाउसमैनको[2]

२५ सितम्बर, १९३२

लॉरेंस हाउसमैन
४६, लैंकास्टर गेट
लन्दन

तारके लिए धन्यवाद। मेरा यह उपवास एक अपील है — केवल हिन्दुओ या सारे भारतसे ही नही, बल्कि ब्रिटिश जनताकी अन्तरात्मा और तमाम -दुनियासे भी। जो आदमी ब्रिटिश लोगोसे प्रेम करता है उस पर यह अविश्वास और उसके बारेमे यह गलतबयानी मेरे लिए एक पहेली है, क्योकि मेरी हार्दिक आस्था मुझे शारीरिक बलका आसरा लेनेसे रोकती है। मै ईश्वरसे प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मुझे चरम कोटिके सामूहिक कष्टसहनका अन्तिम मार्ग दिखाये और मुझे उसमे से गुजरनेकी शक्ति दे। मै यह जानता हूँ कि जब इस तरहका अपेक्षित

१. सेनापति बापटके नामसे प्रसिद्ध महाराष्ट्रके एक लोकसेवक।

२. २७ सितम्बर, १९३२ को गाधीजी के उपवासका महत्त्व समझानेके लिए फ्रेन्ड्स ऑफ इडियाकी एक विशेष बैठक होनेवाली थी; लॉरेंस हाउसमैनने गाधीजी से उक्त बैठकके लिए सन्देश भेजनेकी प्रार्थना की थी।

समय आयेगा, तो इसका असर प्रत्येक ब्रिटिश घरतक पहुँचेगा। मुझे आशा थी कि इस अग्निशय्यासे मेरी यह अपील ब्रिटिश जनताको भी कुछ जगायेगी, जैसे कि उसने भारतको आश्चर्यजनक रूपसे जगा दिया लगता है। परन्तु ईश्वरकी इच्छा शायद कुछ और थी। ब्रिटेनकी सहानुभूति और सहायता मुझे चाहिए, इसलिए आपकी सभा जो भी कुछ करेगी वह मेरे लिए मूल्यवान होगा। मै यह जानता हूँ कि मेरे लिए हजारो ब्रिटिश स्त्री-पुरुषोके मनमे मूक सहानुभूति और प्रार्थना है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० २०-९। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ८३-४से भी

२१५. तार: डॉ० नीलरंजन राय और डॉ० विधानचन्द्र रायको

२५ सितम्बर, १९३२

डॉक्टरोकी हैसियतसे आपकी सलाह बिलकुल ठीक है। पर मानवताकी दृष्टिसे उसका कोई मूल्य नही है। एक बन्धु-मानव अपने धर्मसे इनकार कर दे, यह तो आप नही चाहेगे। बहुत-बहुत धन्यवाद। उपवास ठीक चल रहा है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ८४

२१६. प्रस्ताव: हिन्दूनेता सम्मेलन, बम्बईमे[1]

२५ सितम्बर, १९३२

इस सम्मेलनका सकल्प है कि आजसे हिन्दुओमे किसीको जन्मके कारण अछूत नही समझा जायेगा। और जिन्हे अभीतक अछूत समझा गया है, उन्हे सार्वजनिक कुओसे पानी भरने तथा सार्वजनिक सड़को और अन्य सार्वजनिक सस्थाओका उपयोग करनेके वे सभी अधिकार होगे जो अन्य हिन्दुओको है। इस अधिकारको पहला मौका मिलते ही वैधानिक मान्यता प्रदान कर दी जायेगी और यदि इसे स्वराज्य सरकारकी स्थापनासे पहले ही मान्यता नही मिली तो यह स्वराज्य पार्लियामेटके सर्वप्रथम कार्योमे से एक होगा।

१. इस प्रस्तावका मसविदा गाधीजी ने तैयार किया था।

यह सम्मेलन इस बातको भी स्वीकार करता है कि सभी हिन्दू-नेता समस्त वैधानिक और शान्तिपूर्ण तरीकोसे — मन्दिर-प्रवेश-सहित — उन सभी सामाजिक निर्योग्यताओको यथाशीघ्र दूर करवायेगे जो प्रचलित रिवाजने आज तथाकथित अछूत वर्ग पर लाद रखी है।

[अंग्रेजीसे]

महात्मा, खण्ड ३, पृ० २१३

२१७. सन्देश : ग्रेट ब्रिटेनके लिए[1]

२५ सितम्बर, १९३२

उपवासका प्रत्येक दिन मुझे इस बातका अकाट्य प्रमाण लगता है कि इसमे ईश्वरका हाथ है। ईश्वर और उसकी दयामे अगाध श्रद्धा रखते हुए भी मै अस्पृश्यताके विरुद्ध जागृतिकी इस भारी लहरके लिए तैयार नही था। किसीके बिना कुछ कहे कुछ बडे मन्दिरोने अपने द्वार अस्पृश्योके लिए निर्बाध रूपसे खोल दिये है, यह घटना मुझे एक आधुनिक चमत्कार ही लगती है। मै तो कहूँगा कि उनमे ईश्वरका प्रवेश अब हुआ है। अबतक वे मूर्तियाँ जिनमे उनके पुजारी गलतीसे और अपने अहंकारवश ईश्वरका अस्तित्व मानते थे, ईश्वरविहीन थी।

मन्त्रिमण्डलके फैसलेके द्वारा ईश्वरने समय रहते मुझे यह चेतावनी दे दी कि जब वह मेरा द्वार खटखटा रहा था और मुझे जगा रहा था तब मै सोया हुआ था। जो समझौता[2] हुआ है वह मेरे लिए शुद्धिके कार्यका केवल आरम्भ-मात्र है। जबतक अस्पृश्यताका नामो-निशान मिट नही जाता, तबतक आत्माकी इस वेदनाका अन्त नही होगा। मै नही चाहता कि ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल जल्दबाजीमे कोई निर्णय ले। मेरी जान बचाने या दुनियाके आगे सही दीखनेके लिए वे बेमनसे इसे स्वीकार करे, यह मै नही चाहता। समझौतेके असली मर्मको यदि उन्होने न समझा हो तो उन्हे इसे तुरन्त अस्वीकार कर देना चाहिए। लेकिन यदि उन्होंने उसे समझा है, तो तथाकथित अस्पृश्यो और तथाकथित स्पृश्योके बीच पूरे दिलसे और ईश्वरकी साक्षीमे हुए इस महान् समझौतेमे उन्हे एक भी शब्द या विराम-चिह्नका फेर-बदल किये बिना इसकी प्रत्येक शर्तको अमलमे लाना चाहिए।

मुझे आशा है कि मन्त्रिमण्डलके सदस्य और दुनिया यह महसूस करेगी कि यह समझौता मन्त्रिमण्डलके फैसलेसे बहुत अच्छा है। मै यह बात बहुत ही विनम्रतासे कह रहा हूँ और इसमे कोई अहकार नही है। मन्त्रिमण्डलमे तो सिर्फ विदेशी लोग है। अतः उसे भारतकी परिस्थितियोकी या अस्पृश्यताका क्या अर्थ है, इसकी सीधी जानकारी

१. यह सन्देश इंडिया लीगके एलेन विल्किंसन और वी० के० कृष्ण मेननको एक भेंटके दौरान दिया गया था और पहली बार लन्दनके डेली हेरॉल्डमें प्रकाशित हुआ था।

२. २४ सितम्बरको सम्पन्न हुए समझौतेके मजमूनके लिए देखिए परिशिष्ट २।

नही है। इसलिए यह कार्य ठीक तरहसे कर सकनेमे उनके रास्तेमे बडी कठिनाई थी। यद्यपि कुछ भारतीयोने ही यह मामला उन्हे सौपा था, पर उन्हे यह जिम्मेदारी, जो उनके बूतेके बाहरकी थी, लेनी नही चाहिए थी।

प्रायश्चित्तकी अपनी शय्यापर पडे-पडे मै यह सब छिद्रान्वेषणकी भावनासे या झुंझलाहटके कारण नही कह रहा हूँ।

मै ब्रिटिश जाति और मन्त्रिमण्डलका भी सच्चा मित्र होनेका दावा करता हूँ। इसलिए इस घड़ी यदि मै अपनी प्रसगोचित रायको दबाकर रखूँ तो मै उनके प्रति, अपने प्रति और अपने कार्यके प्रति सच्चा नही रहूँगा। अन्तमे, मै ब्रिटेनको यह विश्वास दिलाना चाहूँगा कि जबतक मुझमे प्राण है, मै हिन्दू धर्मको इस असह्य कलकसे मुक्त करनेके लिए जितने भी उपवास आवश्यक होगे करूँगा। ईश्वरकी कृपा-से इस आन्दोलनमें केवल एक आदमी नही बल्कि, मेरे खयालसे, हजारो ऐसे लोग है जो इस सुधारको पूर्णतया सम्पन्न करनेके लिए अपने प्राण न्योछावर कर देनेको तैयार है।

[अग्रेजीसे]
एपिक फास्ट, पृ० १३६-७

२१८. वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको

२५ सितम्बर, १९३२

यदि प्रधान मन्त्री समझौतेको ज्योका-त्यो स्वीकार कर लेते है तो मै उपवास ाडनेको बाध्य हूँगा। समझौता, जहाँतक उसके राजनीतिक भागका सम्बन्ध है, केवल उस जबरदस्त बाधाको दूर करता है जो मन्त्रिमण्डलके फैसलेसे सुधारके रास्तेमे पैदा हो गई थी। समझौतेका असली भाग अब शुरू होना है और यद्यपि समझौतेके, जो प्रधान मन्त्रीके पास तारसे भेजा गया है, उनके द्वारा ज्योका-त्यो स्वीकृत हो जानेपर, मेरा उपवास अवश्य समाप्त हो जायेगा, पर मेरे लिए असली सघर्ष तो इसके बाद ही शुरू होता है। वस्तुत, यदि मन्त्रिमण्डलने पत्रव्यवहार समय रहते ही प्रकाशित कर दिया होता, तो जो कर्त्तव्य तथाकथित सवर्ण हिन्दुओपर आता है उसकी समुचित पूर्तिपर जोर देनेको मै नैतिक रूपसे बाध्य होता।

यदि मै सवर्ण हिन्दुओसे कर्त्तव्य-पालन नही करवा पाता हूँ तो विश्वासघातका दोषी होता हूँ। पर क्योकि उन्हे उपवासके मेरे इरादेकी समय रहते कोई सूचना नही मिली थी, इसलिए मैं उनसे हिन्दू विचारधारामे अचानक क्रान्ति कर देनेकी अपेक्षा नही कर सकता। अत. उन्हे कामके लिए कुछ विराम अवश्य मिलना चाहिए। इसीलिए मैंने अपने साथी कार्यकर्त्ताओको बता दिया है कि यदि यह उपवास मन्त्रिमण्डलसे सन्तोषजनक उत्तर मिलनेपर तोड दिया जाता है, तो भी यह केवल स्थगित ही रहेगा और जो भूमिका सवर्ण हिन्दुओको निभानी है वह यदि

आगामी महीनोमे अच्छी तरह नही निभाई गई तो यह बिलकुल निश्चित है कि यह फिर शुरू कर दिया जायेगा।

इन पाँच दिनोमे देशमे जो जबरदस्त जागृति आई है वह मुझमे यह आशा पैदा करती है कि कट्टरता समाप्त हो जायेगी और हिन्दू धर्म अस्पृश्यताके इस विकारसे, जो उसकी जडोको खा रहा है, मुक्त हो जायेगा।

मै समझता हूँ, आगेकी योजना सरकारके हाथोमे है।

[अंग्रेजीसे]
एपिक फास्ट, पृ० १३५

२१९. सन्देश : दक्षिण भारतके लिए

२५ सितम्बर, १९३२

यह जानकर दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक हर्ष हो रहा है कि बडे-बडे प्राचीन मन्दिर तथाकथित 'अस्पृश्यो' के लिए खुलते जा रहे हैं और इस प्रकार पवित्र होते जा रहे हैं। तन, मन और आत्माकी पीडाके इन दिनोमे, बहुत-सी अन्य बातोके साथ यह तथ्य मेरे लिए एक बडी जीवनदायी शक्तिका काम करता रहा है। परन्तु मन्दिरोके खुलनेसे मिला यह हर्ष दु:खसे अछूता नही रहा है, क्योकि दक्षिणने अपने मन्दिरोके द्वार अवर्णोके लिए खोलनेमे वैसी तत्परता और उदारता नही दिखाई है जैसी कि इस बातको ध्यानमे रखते हुए अपेक्षित थी कि दक्षिणके अस्पृश्योके बीच मैने दक्षिण आफ्रिकामे रहते हुए ही बडे पैमानेपर काम शुरू कर दिया था। एक ऐसे हिन्दूके नाते जो उसके मूल तत्त्वको जानने और उसके अनुसार रहनेके लिए प्रयत्नशील है, मुझे यह कहनेमे रत्ती-भर भी झिझक नही है कि इन मन्दिरोकी मूर्तियोमे ईश्वरकी प्रतिष्ठा केवल तभी होगी जब अवर्णोके लिए उनके द्वार पूरी तरह खोल दिये जायेंगे। आज तो समाज-बहिष्कृत मानवोके साथ-साथ ईश्वर भी उनसे बहिष्कृत है।

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २६-९-१९३२

२२०. तार: मुस्तफा नहास पाशाको[1]

२६ सितम्बर, १९३२

आपका सन्देश बहुत ही मार्मिक लगा। ईश्वर करे आत्मशुद्धिका यह उपवास सभी धर्मोको प्रभावित करे, और उन्हे और हमे एक सजीव सूत्रमें जोड दे। पिछली यात्रामे आपने मुझे जो मिस्री कम्बल भेट किया था, वह मुझे इस सघर्षमे महान् और दयामय अल्लाहके साथ-साथ साया दे रहा हैं।

गांधी

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ८५

२२१. तार: मीराबहनको

२६ सितम्बर, १९३२

मीराबहन
आर्थर रोड जेल

आज कोई पत्र नही भेजा है। ईश्वरकी कृपा से सवा पाँच बजे गुरुदेव और अन्य स्नेही मित्रोकी उपस्थितिमे उपवास समाप्त हुआ।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२३९) से; सौजन्य: मीराबहन

१. यह नहास पाशाके २४ सितम्बरके तारके उत्तरमें था जो इस प्रकार था: "भारतीयोंमें फूट या जातीय भेदभावको बढावा देनेवाली किसी भी कार्यवाहीको सहनेकी अपेक्षा, स्वयं अपने प्राणोंके बलिदानके आपके निश्चयने मिस्रकी आत्माको झकझोर दिया है, क्योंकि मिस्र पिछले दशकसे भारतके साथ राष्ट्रीय आत्माभिव्यक्ति और स्वतन्त्रताके समान आदर्शके लिए कष्ट भोगनेके पवित्र सूत्रमें बँधा है। सभी सम्प्रदायों और धर्मोंके मिस्रियोंको, जो अपने पितृदेशके प्रेमसे एकजुट हैं, पूर्ण विश्वास है कि महान् भारतीय जनता अपनी पवित्र एकताकी फिरसे स्थापना कर महात्माजी के जीवनकी रक्षाके लिए एक हो जायेगी। गांधीजी जिस महान् आदर्शके लिए अपने जीवनका त्याग कर रहे हैं, पूर्वके सभी संघर्षशील राष्ट्र उसकी पूर्तिके लिए भारतकी ओर आँखें लगाये हुए हैं। मिस्र और उसके लोगोंकी ओरसे, मैं आपके और भारतीय जनताके प्रति अपना बन्धुत्वपूर्ण प्रेम प्रकट करता हूँ और सत्य, स्वतन्त्रता और समानताके आदर्शोंकी पूर्तिके लिए, जो आपके द्वारा संसारके सम्मुख रखे गये इस महान् उदाहरणमें मूर्तिमान हैं, अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ भेजता हूँ।" एपिक फास्ट।

२२२. वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको

२६ सितम्बर, १९३२

ईश्वरके नामपर शुरू किये गए उपवासका पारण मैंने गुरुदेव तथा उनके सामने बैठे हुए कुष्ठग्रस्त कैदी और विद्वान् पण्डित श्री परचुरे शास्त्रीकी और मेरे आसपास घेरा डालकर बैठे हुए अनेक प्रियजनोकी मौजूदगीमे किया। पारणा करनेसे पहले कविने अपना एक बँगला भजन गाया, फिर परचुरे शास्त्रीने उपनिषदोके मत्र बोले और बादमे मेरा प्यारा भजन 'वैष्णवजन' गाया गया।

उपवासके सप्ताहमे देशके एक कोनेसे दूसरे कोनेतक भावनाके जिस भव्य ज्वारके दर्शन हुए, उसमे ईश्वरका हाथ साफ दिखाई देता था। दुनियाके अनेक भागोसे उपवासके प्रति शुभकामनाओके जो तार मिले, उन्होने इन सात दिनोमे शरीर, मन और हृदयकी जिस यातनासे मै गुजर रहा था, मुझे टिकाये रखा। पर जिस ध्येयके लिए यह उपवास किया गया वह इस योग्य था कि यह यातना सही जाये।

एक वार प्रगट हुई यह यज्ञाग्नि तबतक नही बुझेगी जबतक हिन्दू धर्ममे अस्पृश्यताका लेश भी रहेगा। यदि ईश्वरकी ऐसी मर्जी होगी कि अस्पृश्यताका नाश मेरे जीवनमे न हो तो मुझे विश्वास है कि सच्ची लगनवाले ऐसे हजारो सुधारक मौजूद है, जो इस भयकर कलकसे हिन्दू धर्मकी शुद्धि करनेकी खातिर अपने प्राण दे देगे।

जो समझौता हुआ है उसमे, जहाँतक मै समझ सकता हूँ, सभी पक्षोने उदारता दिखाई है। यह हृदयोका मिलन है, और मै एक हिन्दूकी हैसियतसे एक ओर डॉ० अम्बेडकर, रावबहादुर श्रीनिवासन् और उनके दल तथा दूसरी ओर रावबहादुर एम० सी० राजाका आभारी हूँ। वे यदि चाहते तो, तथाकथित सवर्णोको पीढियोके पापोका दण्ड देनेके लिए, हठीला और विद्रोही रुख अपना सकते थे। उन्होने यदि ऐसा किया होता तो कमसे-कम मै तो उनके रवैयेपर रोष प्रकट नही कर सकता था और जो अत्याचार हिन्दू समाजके बहिष्कृत लोगोपर न जाने कितनी पीढियोसे होते आ रहे है, मेरी मृत्यु उनकी एक बहुत ही तुच्छ कीमत होती। परन्तु उन्होने उससे अधिक सुशोभन मार्ग चुना और इस तरह यह दिखा दिया कि उन्होने क्षमाके सिद्धान्तका अनुकरण किया है, जिसका सभी धर्म आदेश देते है। मुझे आशा है कि सवर्ण हिन्दू अपने-आपको इस क्षमाके योग्य सिद्ध करेगे और समझौतेके शब्दो और भावको, उसके सारे गूढार्थो-सहित, अमलमे लायेगे।

यह समझौता अन्तिम लक्ष्यका आरम्भ-मात्र है। इसका राजनीतिक भाग यद्यपि नि सन्देह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, फिर भी सवर्ण हिन्दुओको आनेवाले दिनोमे जो सुधार करना है — यानी, हिन्दू आबादीका एक बडा भाग जिन सामाजिक और धार्मिक

निर्योग्यताओसे कराह रहा है उन्हे बिलकुल समाप्त करना — उसके विशाल क्षेत्रमे इसका स्थान बहुत ही छोटा है। मै यदि अपने साथी सुधारको और आम तौरपर सभी सवर्ण हिन्दुओको यह चेतावनी न देता कि उपवास एक सुनिश्चित प्रतिज्ञाके साथ तोडा गया है, तो मै विश्वासघातका दोषी होता। वह प्रतिज्ञा यह है कि यदि इस सुधारके लिए कडाईसे प्रयास नही हुआ और यह एक मर्यादित अवधिमे नही हुआ तो उपवास फिर शुरू कर दिया जायेगा। पहले मैने एक अवधि निर्धारित कर देनेकी बात सोची थी, पर मुझे लगता है कि अन्त करणसे निश्चित पुकार सुने बिना मै ऐसा नही कर सकता

स्वतन्त्रताका सन्देश प्रत्येक अस्पृश्यके घरमे पहुँचना चाहिए और यह केवल तभी हो सकता है जब सुधारक गाँव-गाँव पहुँचें। फिर भी, उत्साहकी इस लहरमे और मुझे इस यातनाकी पुनरावृत्तिसे बचानेकी अत्यधिक इच्छाके कारण, किसी तरहकी जोर-जबर्दस्ती नही होनी चाहिए। हमे धैर्यसे मेहनत करके और स्वय दु ख उठाकर अज्ञानियो और अधविश्वासियोके विचारोको बदलना चाहिए, लेकिन उन्हे बल-प्रयोग द्वारा बाध्य करनेकी कोशिश नही करनी चाहिए।

मेरी यह भी इच्छा है कि यह जो लगभग आदर्श समझौता हुआ है, अन्य सम्प्रदाय भी इसका अनुकरण करे और हम आपसी विश्वास, आदान-प्रदान और सभी सम्प्रदायोकी मूल एकताकी स्वीकृतिसे उज्ज्वल नवयुगका सुप्रभात देख सके। यहाँ मै अकेले हिन्दू-मुस्लिम-सिख प्रश्नको ही लूंगा। मुसलमानोके प्रति मै जैसा १९२०-२२ मे था वैसा ही आज भी हूँ। उनमे जीवन्त एकता और स्थायी शान्ति स्थापित करनेके लिए जिस तरह मै दिल्लीमे[1] अपने प्राण देनेको तैयार था, उसी तरह अब भी तैयार हूँ। मै यह आशा रखता हूँ और प्रार्थना करता हूँ कि इस उथल-पुथलके फलस्वरूप इस दिशामें अपने-आप प्रयत्न होगा और तब अन्य सम्प्रदाय भी नि सन्देह अलग नही रह सकेंगे।

अन्तमे, मै सरकार, जेलके कर्मचारियो और मेरी देखभालके लिए सरकारने जो डॉक्टर आदि नियुक्त किये थे उन सबके प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूँ। मेरी अधिकसे-अधिक फिक्र और देखभाल की गई। कोई भी कसर नही छोडी गई। जेलके कर्मचारियोपर कामका जबरदस्त दबाव रहा, और मैने देखा कि उन्होने मेहनतमे कोताही नही की। मै उन छोटे-बड़े सभी कर्मचारियोका आभारी हूँ।

ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलने इस समझौतेपर निर्णय लेनेमे जो तत्परता दिखाई, उसके लिए मै उसका आभारी हूँ। उस निर्णयकी जो शर्तें मुझे भेजी गई है उनके बारेमे मुझे कोई अन्देशा न रहा हो, यह बात नही है। मेरे खयालसे उसमे, स्वाभाविक रूपसे समझौतेका केवल वही भाग स्वीकार किया गया है जिसका सम्बन्ध ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलके साम्प्रदायिक फैसलेसे है। मै समझता हूँ कि उन्हे पूरे समझौतेके लिए अपनी स्वीकृतिकी घोषणा करनेमे वैधानिक कठिनाई होगी। परन्तु मै अपने हरिजन-मित्रोको, अबसे मै उन्हे यही नाम देना चाहूँगा, यह विश्वास दिलाता हूँ कि जहाँ

१. सितम्बर, १९२४ में, देखिए खण्ड २५।

तक मेरा सवाल है, मै पूरे समझौतेसे बँधा हुआ हूँ, और इसकी समुचित पूर्तिके लिए वे मेरे प्राण वन्धक समझे। हाँ, यदि हम स्वय अपनी स्वतन्त्र इच्छासे इससे भी अच्छा कोई और समझौता कर ले तो बात दूसरी है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २७-९-१९३२ तथा **एपिक फास्ट**, पृ० १४२-५

२२३. तार : एम० कृष्णन् नैयरको[1]

[२७ सितम्बर, १९३२ या उसके पूर्व][2]

आप जानते है कि केलप्पन केरलके एक सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्त्ता है जिन्हे अस्पृश्योके कार्यकी सबसे अधिक लगन है। यदि आवश्यक हो तो आप और अन्य प्रभावशाली लोगोको उपवासकी जगह जाना चाहिए और मन्दिरको हरिजनोके लिए खुलवाकर[3] केलप्पनके[4] प्राण बचाने चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २९-९-१९३२

२२४. वक्तव्य : समाचार-पत्रोंको[5]

[२७ सितम्बर, १९३२ या उसके पूर्व][6]

आपकी बधाइयोके लिए धन्यवाद। सरकार और गोलमेज परिषद्के साथ कांग्रेसके सहयोगपर किसी भी उपयुक्त सुझावका समर्थन करनेसे मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता होगी। मै केवल "उपयुक्त" विशेषणपर जोर देना और उसे रेखांकित करना चाहूँगा। बार-बारकी मेरी घोषणाओके बावजूद, यह बात आम तौरपर स्वीकार नही की जाती है कि मै अपनी नैसर्गिक प्रवृत्तिसे ही सहयोगी हूँ। मेरे असहयोगका उद्देश्य ही उस सहयोगको खत्म कर देना है जो नि सार है। इसलिए, जहाँतक

१. कृष्णन् नैयर मद्रासके लॉ मेम्बर थे।

२. समाचार-पत्रकी रिपोर्टपर २७ सितम्बरकी तारीख है।

३. कृष्णन् नैयरका विचार था कि मन्दिर क्योंकि निजी सम्पत्ति है, इसलिए उनका या सरकारका उसमें हस्तक्षेप करना उचित नही होगा।

४. केलप्पन २० सितम्बरसे अनशन कर रहे थे; देखिए "तार: त्रावणकोरके महाराजाको", २७-९-१९३२।

५. यह समाचार-पत्रोंके प्रतिनिधियोंके एक बधाई-सन्देशके उत्तरमें था, जिसमें यह भी जिज्ञासा की गई थी कि गोलमेज परिषद्के कार्यमें कांग्रेसके सहयोगकी क्या सम्भावनाएँ हैं।

६. समाचार-पत्रकी रिपोर्टपर २७ सितम्बरकी तारीख है।

व्यक्तिगत रूपसे मेरा सवाल है, उचित समय आनेपर मैं अपना सारा प्रभाव सहयोगके पक्षमें प्रयुक्त करूँगा।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २८-९-१९३२

२२५. तार: एम० आर० जयकरको

२७ सितम्बर, १९३२

एम० आर० जयकर
मलाबार हिल
बम्बई

तारके लिए धन्यवाद। अस्पृश्यताके पूर्णतया मिटनेतक आप अथक प्रयास जारी रखेंगे ऐसी अपेक्षा है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

जयकरके निजी कागज-पत्र: पत्राचार फाइल स० ४२१, पृष्ठ ४६ से। सौजन्य: राष्ट्रीय अभिलेखागार

२२६. तार: रामेश्वरदास पोद्दारको

२७ सितम्बर, १९३२

रामेश्वर सेठ
धूलिया

तेजीसे पुन स्वास्थ्य-लाभ कर रहा हूँ। चिन्ता मत करो।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४०)से।

२२७. तार: त्रावणकोरके महाराजाको

२७ सितम्बर, १९३२

केरलके एक महान् समाजसेवी, केलप्पनके प्राण गुरुवायूरको खुलवानेके लिए अधरमें लटके है। यह देखते हुए कि देश-भरमे उठ रही जागृतिकी अपूर्व लहर सभी मन्दिरोको खुलवानेके पक्षमे है, क्या आप अपना महान् प्रभाव गुरुवायूर और, यदि सम्भव हो तो, अन्य मन्दिरोको खुलवानेके लिए प्रयुक्त नही करेगे? आपको शायद मालूम ही है कि केलप्पनने मन्दिरको खुलवानेके लिए २० सितम्बरसे उपवास कर रखा है।[1]

गांधी

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १-१०-१९३२

२२८. तार: अब्बास तैयबजीको

२७ सितम्बर, १९३२

अब्बास साहब तैयबजी
मार्फत डॉक्टर शाह
वढ़वान सिटी

तुम्हारी घबराहट आस्थाकी कमी जाहिर करती है। सन्तरो और अंगूरोसे ताकत आती जा रही है। अल्लाहो अकबर।

भुर्रर[2]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (एम० एन० ९५७९) से।

१. पुरुषोत्तमदाससे इसी तरहका एक तार मिलनेपर त्रावणकोरके दीवानने उन्हें उत्तरमें लिखा था: "महामान्यकी सरकारको इस वक्तव्यपर आश्चर्य है कि गुरुवायूर मन्दिरको खोलनेके लिए महाराजकी स्वीकृति आवश्यक है। गुरुवायूरपर अपने किसी अधिकार या विशेषाधिकारकी सरकारको कोई जानकारी नहीं है।... कृपया श्री गांधीको सूचित कर दें।"

२. साधन-सूत्रमें, 'बरी' है जो गलतीसे 'भुर्रर' की जगह लिखा गया लगता है; गांधीजी और तैयबजी अपने पत्र-व्यवहारमें एक-दूसरेके लिए यह दूसरा शब्द ही प्रयुक्त करते थे।

२२९. पत्र : ई० ई० डॉयलको

२७ सितम्बर, १९३२

प्रिय कर्नल डॉयल,

कल अपना उपवास तोडनेसे पहले मैंने आपसे जो-कुछ कहा, उसका सार यह था। उपवास तोडते समय मेरे मनमे इस बातको लेकर कुछ आशकाएँ जरूर थी कि समझौतेके लिए ब्रिटिश सरकारकी स्वीकृति केवल उस भागसे सम्बन्धित थी जो ब्रिटिश सरकारके साम्प्रदायिक निर्णयमे शामिल था। यह शायद स्वाभाविक था। परन्तु मेरे लिए अपनी स्थिति स्पष्ट कर देना आवश्यक था। मेरी स्थिति यह है कि पूरे समझौतेको यथोचित रूपसे पूरा करानेके लिए कर्त्तव्यवद्ध हूँगा। दूसरी बात जिसकी ओर मैंने आपका ध्यान आकर्षित किया था यह थी कि मै सरकारसे यह अपेक्षा रखूंगा कि इस २० तारीखसे अस्पृश्यताके प्रश्नपर मुझे मित्रोसे मिलने और सन्देश भेजनेकी जो सुविधाएँ दी गई है, वह उन्हे जारी रखेगी। ब्रिटिश स्वीकृतिमे समझौतेके केवल राजनीतिक भागका, ही उल्लेख है, पर पूरे हिन्दू समाजके लिए सवसे महत्त्वपूर्ण भाग वह है जिसका सम्बन्ध सामाजिक और धार्मिक सुधारसे है। उसे एक सुदृढ़ आधार प्रदान करनेके लिए मेरा कुछ समयतक कार्यकर्त्ताओसे सम्पर्क रखना आवश्यक है। किसी तरहकी कोई गलतफहमी न हो, इसीलिए मैंने उपवास तोडनेसे पहले यह अति महत्त्वपूर्ण बात आपसे कह दी थी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८६०) से। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्सट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८००(४०)(४), भाग-१ पृ० १४१ से भी

२३०. पत्र : मीराबहनको

२७ सितम्बर, १९३२

चि० मीरा,

ईश्वर महान् और दयालु है। अपने सेवकोकी वह उनकी सहन-शक्तिसे अधिक परीक्षा नही लेता। इसीलिए सरकारका जवाब समयपर आ गया, और मै कल पाँच बजे उपवास तोड सका। पहले कविवरने प्रार्थना कराई और उनके बाद कुष्ठ-पीडित कैदी परचुरे शास्त्रीने, जो कुछ समय आश्रममे रह चुके है।

आजके लिए इतना ही काफी है।

सस्नेह,

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४०) से, सौजन्य : मीराबहन

२३१. पत्र : मीराबहनको

२८ सितम्बर, १९३२

चि० मीरा,

कल तुम्हारे दो पत्र मिले। मैने खुद एक छोटा-सा पुरजा[1] लिखा था, जो आशा है तुम्हे मिल गया होगा। यहाँसे रोज तुम्हारे पास कुछ-न-कुछ जाता रहा है और आई० जी० ने मुझे आश्वासन दिया था कि मेरे पत्र तुम्हे तुरन्त पहुँचा दिये जायेंगे। इसलिए मेरे पत्र तुम्हे क्यो नही मिले, मै समझ नही पाता।

परन्तु, अब तो सब समाप्त हो गया है। मै खूब सतरे और अगूर ले रहा हूँ और ताकत आती जा रही है। नीद अच्छी आती है। इसलिए अब चिन्ताकी कोई बात नही है।

उडीसाका दृश्य, जिसका तुमने वर्णन किया, और मलाबारके दो अन्य दृश्य इन दिनो मेरे मनपर छाये रहे और उनके कारण मै पीडाको सह सका। गुरुदेवके आगमनसे बडी सान्त्वना मिली और अब भी मिल रही है। उनसे पूरा-पूरा समर्थन मिला है।

आशा है तुम अब प्रसन्न होगी। अपनी साथिनोको मेरा आशीर्वाद कहना।

तुम्हे और किसनको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४१) से; सौजन्य : मीराबहन

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२३२. पुरजा : पी० एन० राजभोजको

२८ सितम्बर, १९३२

सवर्ण हिन्दुओके नाम मै उनके कर्त्तव्यके बारेमे अपनी अपील निकाल चुका हूँ। परन्तु, स्वेच्छासे बने एक हरिजनके नाते, मै दो शब्द उनसे भी कहना चाहूँगा। आत्म-शुद्धिके इस पर्वमे उन्हे भी अपनी भूमिका अदा करनी है। अपनी दलितावस्थाके कारण, वे सफाई आदिके सामान्य नियमोका पालन करनेके उपायो और साधनोसे वचित रहे है और उन्हे उसके लिए प्रोत्साहन भी नही मिला है। पर हमे यह आशा करनी चाहिए कि हमारे लिए एक नये युगका अरुणोदय हुआ है। मुझे आशा है कि हरिजन इस चीजको समझेगे और जहाँतक सम्भव है, सफाईके नियमोका पालन करेगे, मादक पेयो और द्रव्योसे बचेगे और सभी सामाजिक बुराइयोसे मुक्त होनेके लिए जबरदस्त कोशिश करेगे।

मो० क० गांधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९०) से।

२३३. तार : के० केलप्पनको

२९ सितम्बर, १९३२

जमोरिनने तार देकर मुझसे कहा है कि मै आपसे उपवासको कुछ महीनोके लिए स्थगित करनेकी अपील करूँ। उनका कहना है अभी अस्पृश्योके प्रवेशसे कट्टरपथी चेतनाको आघात पहुँचेगा और इस तरहका आघात पहुँचाना जोर-जबरदस्ती होगी। आप स्वय सोचिए कि इस आधारपर उपवासको स्थगित करनेकी आपके लिए कोई गुजाइश है या नही, और जमोरिनने अपने उक्त तारमे इस सम्बन्धमे जो कुछ कहा है क्या आप उसे ध्यानमे रखते हुए, ऐसा कह सकते है कि इस आखिरी कदमका नोटिस आपने काफी समय पहले दिया था।[1]

गांधी

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, ३०-९-१९३२

१. केलप्पनने इसका उत्तर इस प्रकार दिया था. "जमोरिन इस बातकी शिकायत नहीं कर सकते कि नोटिस काफी दिन पहले नहीं दिया गया था। एक-दो आदमी हमेशा ऐसे मिल जायेंगे जो किसी भी सुधारका अनत कालतक विरोध करेंगे। पर हजारों दलित बधुओंके हृदयों और आत्म-सम्मानको आघात पहुँचानेका सवाल कट्टरपथी चेतनाको तथाकथित आघात पहुँचानेसे अधिक यथार्थ और महत्त्वपूर्ण है।"

२३४. तार: के० केलप्पनको

[२९ सितम्बर, १९३२][1]

तुम्हारा पत्र अभी-अभी मिला। आज बहुत सवेरे मैंने पण्डित मालवीय, श्री रंगस्वामी अय्यंगार और अन्य लोगोंसे मालवीयजी के वहाँ जानेके औचित्यके बारेमें सलाह-मशविरा किया। कुछ और लोगोंके साथ मैंने तार द्वारा भी सम्पर्क किया है। वे सब मुझपर यह दबाव डाल रहे हैं कि मैं तुम्हें उपवास बन्द करनेका आदेश दूँ। मैं झिझक रहा था। पर तुम्हारा पत्र मेरा मार्ग स्पष्ट कर देता है। मैं निश्चित रूपसे यह सोचता हूँ कि तुमने दो गलतियाँ की हैं। यद्यपि तुम्हें मुझसे सलाह करनी चाहिए थी, पर चाहे किसी भी कारण हो, तुमने वैसा नहीं किया। दूसरे, तुम्हें उपवासके इरादेका काफी पहलेसे नोटिस देना चाहिए था। इसलिए मेरी पक्की सलाह यह है कि तुम्हें इस तारके आधारपर उपवास स्थगित कर देना चाहिए और उसे स्थगित करनेकी तारीखसे पूरे तीन मासका नोटिस दे देना चाहिए। यदि इस बीच मन्दिर हरिजनोंके लिए नहीं खोला जाता है तो मेरी सहमति मिलनेपर तुम उपवास फिर शुरू कर दोगे। इस अवधिमें मन्दिरको खुलवानेके लिए पूरी एकाग्रतासे प्रयत्न किया जायेगा और यदि आवश्यकता हुई तो मालवीयजी वहाँ जायेंगे। तुम मुझे यह सूचना देकर कि तुमने मेरी सलाह मान ली है, मुझे चिन्तासे बहुत राहत दे सकते हो।[2]

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ३-१०-१९३२

१. **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२, पृ० ८९।

२. केलप्पनका उत्तर था: "न तो जमोरिन और न जन-साधारण ही यह कह सकते हैं कि नोटिस काफी पहले नहीं दिया गया था। सत्याग्रहके लिए दस महीनेका नोटिस पर्याप्त था। स्वयंसेवक धूप और वर्षामें खड़े हैं — यह दृश्य मेरे उपवाससे भी अधिक हृदय-स्पर्शी है। . . . मेरा खयाल है, मेरे उपवासने जनताको जगा दिया है और यदि यह जारी रहा तो संघर्षमें शीघ्र ही विजय मिल जायेगी। मेरी रायमें उपवास तोड़ देनेसे आन्दोलन कमजोर पड़ जायेगा। . . ."

२३५. तार : रामस्वामी अय्यर गोपाल नायरको

[२९ सितम्बर, १९३२][1]

रामस्वामीअय्यर गोपालनायर
चावक्काट

स्वय वैसी ही परिस्थितिमे होनेके कारण मै केलप्पनकी अन्त प्रेरणामे हस्तक्षेप नही कर सकता। यदि ऐसा नि स्वार्थ और सच्चा सेवक चला जाता है तो इसकी लज्जा आपको और उन दूसरे लोगोको उठानी होगी जो वहाँ है। मै मानता हूँ, केलप्पनके उपवासका मेरे उपवाससे कोई सम्वन्ध नही तथापि पूरा विश्वास कर लेनेके लिए मैने अभी-अभी केलप्पनको लम्वा तार भेजा है [कि] यदि उनका उपवास मेरे अनुकरणमे हो तो वे उसे तोड दे।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

वम्वई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल नं० २०-९।

२३६. पत्र : एम० जी० भंडारीको

२९ सितम्वर, १९३२ (अपराह्ण १-४५)

प्रिय मेजर भण्डारी,

आज प्रात १२-३० बजे जो जवानी आदेश आपने मुझतक पहुँचाये है, उनका अर्थ मै इस प्रकार लगाता हूँ: आजसे मुझे अस्पृश्यता या अन्य किसी सार्वजनिक कार्यके सिलसिलेमें श्रीयुत घनश्यामदास विड़ला और मथुरादास वसनजीके सिवा और किसी भी मुलाकातीसे मिलनेकी अनुमति नही होगी। दूसरे, श्रीमती गाधीको तुरन्त जनाने यार्डमे भेज दिया जायेगा। और सव मुलाकाते उपवाससे पहलेकी तरह, उन आम हिदायतो द्वारा नियमित होगी जो मुझे मेरे यहाँ प्रवेशके तुरन्त वाद दी गई थी और जो वादमे सशोधित हुई थी। इसका अर्थ यह है कि मुझे श्रीमती सरोजिनी देवीसे, जिनकी उपस्थिति मेरी वीमारीमे मेरे लिए आरामदेह सिद्ध हुई है, या अपने पुत्र देवदास और उसकी भावी पत्नीसे, या आश्रमवासियोसे, जो इस सकट-कालमे मेरी सेवा-शुश्रूषा करते रहे है, मिलनेका अधिकार नही रहेगा। इस तरह वहुत ही

१. देखिए पिछला शीर्षक।

आकस्मिक और कठोर ढंगसे मुझे यह याद दिलाया गया है कि मैं केवल एक कैदी हूँ जिसका शरीर पूर्णतया सरकारकी दयापर निर्भर है। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि मैं इस चीजके लिए कतई तैयार नहीं था। परन्तु मैं सरकारको यह बताना चाहूँगा कि मुझे अब [उपवासके बाद] भी काफी कमजोर माना जा रहा है और अपने बिस्तरसे उठनेतककी इजाजत नहीं है। मैंने यह आशा की थी कि कमसे-कम पूर्ण स्वस्थ होनेतक मुझे सभी तरहके अनावश्यक स्नायविक आघातसे बचाया जायेगा। तथापि मैं स्वीकार करता हूँ कि सरकार इस चीजको बहुत महत्त्वकी समझे, यह जरूरी नहीं है और यदि इससे मुझे चिन्ता होती भी है तो बहुत नहीं होनी चाहिए। वस्तुतः मैं सरकारका आभारी हूँ कि उसने उपवासके दौरान मेरे लिए डॉक्टरी देख-भालकी व्यवस्था की और मुलाकातियों और मित्रोंको स्वतन्त्रतासे मेरी सेवा-शुश्रूषा करने दी। लेकिन जो चीज मैं नहीं समझ पाता हूँ वह तो यह है कि अस्पृश्यता तकके सिलसिलेमें सिवा श्रीयुत घनश्यामदास और मथुरादासके और सभी मुलाकातियों का आना अचानक रोक दिया गया है। सरकार देशमें आई अपूर्व जागृति और इस उपवासकी प्रतिक्रियाओंसे अनभिज्ञ नहीं हो सकती। उपवासकी सीमाओंको अभी ठीकसे समझा नहीं गया है और जोशीले नौजवान उसकी अंधाधुंध नकल कर रहे हैं। अतः मैं यह बहुत ही आवश्यक समझता हूँ कि अस्पृश्यताके सिलसिलेमें मैं जिससे भी आवश्यक समझूँ उससे मिलनेकी मुझे पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए। पत्र-व्यवहारके सिलसिलेमें सरकारने अपने आदेश अभी बदले नहीं लगते हैं। यह बतानेकी जरूरत नहीं है कि जो बात अस्पृश्यताके सिलसिलेमें मुलाकातियोंपर लागू होती है वही पत्र-व्यवहारपर भी लागू होती है। मुझे यह कहनेकी भी जरूरत नहीं है कि यदि मुलाकातियोंसे मेरी भेंटोंके समय सरकारी अधिकारी या दुभाषिये उपस्थित रहते हैं और मेरे पत्र-व्यवहारकी जाँच की जाती है, तो मुझे उसमें रत्ती-भर भी आपत्ति नहीं होगी। क्योंकि यह मामला बहुत ही आवश्यक है, इसलिए मैं आशा करता हूँ कि सरकार यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र अपने निर्णयसे मुझे सूचित कर देगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८६१) से। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं० ८००(४०)(४), भाग १, पृ० १९१ से भी

२३७. पत्र : मीराबहनको

२९ सितम्बर, १९३२

चि० मीरा,

उपवास टूटनेके बाद यह तीसरा पत्र है, जो सतरो और अगूरके रसका पहला फलाहार लेनेके तुरन्त बाद लिखा जा रहा है। यही मेरा मुख्य आहार रहा है। कल मैंने तोरईका पतला रसा लिया था। आज दूध लेनेका विचार है।

तुम्हारे पत्र नियमित रूपसे आते रहे हैं। मेरे तुम्हे क्यो नही मिले, मैं समझ नही पाता। मैं पूछताछ कर रहा हूँ।

ताकत तेजीसे आती जा रही है। कलतक डेढ पौड वजन बढ गया था, यानी ९५ पौड हो गया था।

रोमाँ रोलाँको मैंने पत्र[1] लिखा था। उपवास टूटनेपर उनका तार मिला था।

तुम्हारा सन्देश मैंने कल गुरुदेवको सुनाया और तुम्हारी ओरसे उनके चरण छूए क्योकि कविमना महादेव तो ऐसा करना भूल ही गया था।

बा, बेशक, यहाँ आते ही अपना सब दुःख भूल गई। ऐसा लगता है कि उसने इस सबको, सचमुच, बड़ी बहादुरीसे सहा है।

आशा है, तुम सब अब बिलकुल निश्चिन्त हो गयी होगी। अछूतोने युगोसे जो कष्ट सहे हैं, उपवास उनकी तुलनामे वस्तुतः कुछ नही था।

तुम्हे और किसनको प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४२) से; सौजन्य मीराबहन

१. यह पत्र उपलब्ध नही है।

२३८. पत्र : नारणदास गांधीको

२९ सितम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

सबको लिखनेके लिए आकुल हो रहा हूँ। आशा है, दो-तीन दिनोमे लिखनेको तैयार हो जाऊँगा। आज सुबह कुछ फल खाकर चार-पाँच पत्र, जो बहुत जरूरी लगे, लिख डाले।

त्रिवेदीकी[1] भाभीके दुर्घटनाग्रस्त हो जानेके कारण गुजर जानेकी खबर शायद तुमने सुनी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५७ से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी

२३९. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

३० सितम्बर, १९३२

मेरे उपवाससे आपके मनपर क्या बीती है, यह तो आपके पहले तारसे ही समझमे आ गया था। मेरे लिए यह ईश्वरका स्पष्ट आदेश था। घटनाओंने मजाक उडानेवालोंके विचार भी बदल दिये है। सनातनियोकी ओरसे भारी प्रमाणमे और अनुकूल उत्तर मिलेगा, इसकी तो मुझे अपेक्षा थी, पर [सहानुभूति और समर्थनकी] भावनाका जो विराट् प्रदर्शन सहसा हुआ उसके लिए मैं तैयार नही था। लेकिन मैं इससे धोखा नही खाऊँगा। अभी यह देखना है कि जो मन्दिर खोले गये हैं वे खुले रहते हैं या नही और इस दिशामें जो अन्य विविध कार्य किये गये हैं वे जारी रहते हैं या नही। इसलिए उपवासका यह टूटना उसका केवल स्थगित होना ही है। फिर भी मुझे कोई चिन्ता नही है। उपवास और उसका टूटना ईश्वरके किये हुआ है। और उसका फिर शुरू होना भी, यदि वह फिर शुरू हुआ, उसीपर निर्भर है।

गुरुदेवका आगमन आशीर्वाद-रूप था। हम अब पहलेकी अपेक्षा एक-दूसरेके अधिक निकट आ गये हैं। पता नही महादेवने आपको यह लिखा या नही कि उपवाससे पहले दिन उन्हे लिखे मेरे पत्र[2] और मुझे भेजे गये उनके आशीर्वादके

१. कृषि-विश्वविद्यालय, पूनाके जे० पी० त्रिवेदी।

२. देखिए "पत्र : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको", २०-९-१९३२।

तारका सगम हो गया था। और उसके बाद ही आ गया शास्त्रीजी का अत्यन्त प्रेम-भरा तार।

पर यह सब तो अब इतिहासकी बात हो गई है। मै रोज शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ। कृपया कतई चिन्ता न करे।

[पुनश्च]

मै अभी जब यूरोपको प्रेम-पत्र लिख रहा था कि वेरियरके हस्ताक्षरोवाला आपका तार भी मिला। ईश्वरको धन्यवाद। मै जानता हूँ कि आप कठोर श्रम कर रहे है।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९०-१

२४०. पत्र: हॉरेस एलेक्जेंडरको

३० सितम्बर, १९३२

प्रिय हॉरेस,

आज मै अपनी शक्ति अपने इग्लैंडवासी मित्रोको प्रेम-पत्र लिखनेमे खर्च कर रहा हूँ। मै अभीतक इतना अधिक लिख चुका हूँ कि अब तुम्हे, ऑलिवको और आश्रमके सभी भाई-बहनोको अपना प्यार भेजनेके अतिरिक्त और कुछ नही कहूँगा। उपवासके दिनोमे अंग्रेज मित्रोका खयाल मेरे हृदयमे बराबर बना रहा।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४१४) से।

२४१. पत्र: एफ० मेरी बारको

३० सितम्बर, १९३२

प्रिय मेरी,

यह केवल तुम्हे अपना प्यार भेजनेके लिए लिख रहा हूँ। तुम्हारे भेजे सुस्वादु सन्तरे मिले। बनयन [की पुस्तक] से जो अंश तुमने भेजा है बहुत ही अच्छा है। मै बराबर शक्ति अर्जित कर रहा हूँ। हर घडी मै यही रटता रहता हूँ कि ईश्वर महान् और दयालु है।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९८४) से। सी० डब्ल्यू० ३३१२ से भी, सौजन्य: एफ० मेरी बार

२४२. पत्र : चि० य० चिन्तामणिको

३० सितम्बर, १९३२

त्रिविध सन्तापके उन दिनोमे ईश्वर मेरा पथ-प्रदर्शक और सहारा था।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९४

२४३. पत्र : वेरियर एल्विनको

३० सितम्बर, १९३२

सघके[1] सदस्योके साथ मेरे सीधे सम्पर्कके लिए, बहुत-सी अन्य बातोके अलावा, मेरा उपवास भी आवश्यक था। फादर विन्सलोसे मेरी प्रेम-भरी बातचीत हुई। इन भाइयोके साथ परिचय करके प्रसन्नता हुई। श्यामराव भी उनके साथ थे।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९२

२४४. पत्र : अगाथा हैरिसनको

३० सितम्बर, १९३२

प्रिय अगाथा,

तुम्हारी व्यथाको मैं तुम्हारे तार और तुम्हारे पत्रमे पढ सका था। पर जिस उद्देश्यके लिए हम यह-सब सह रहे है उसके लिए यह कोई वडी कीमत नही है। मुझे इस बातकी प्रसन्नता थी कि चार्ली एन्ड्रूयूज तुम्हारे साथ है। मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम जो भी कर सकती हो कर रही हो, इससे अधिकको किसीसे अपेक्षा नही की जा सकती। एक-दूसरेके पत्र शायद तुम पढती ही होगी, इसलिए मैं प्रेमके इस छोटेसे पुरजेमे अधिक कुछ नही कह रहा हूँ।

सस्नेह,

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४५८) से।

१. पूनाका क्राइस्ट सेवा संघ।

२४५. पत्र : म्यूरिएल लेस्टरको

३० सितम्बर, १९३२

सब समाप्त हो गया है और जिस उपवासकी इतनी धूम मची थी, वह अतीत की बात हो गई है। यह अनुभव भोगने लायक ही था, और नही तो केवल इसी लिए कि इससे विश्वके सभी भागोसे प्रेमकी वर्षा हुई और भारतमे एक सिरेसे दूसरे सिरेतक सुधारकी लहर दौड गई।

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९२

२४६. पत्र : एस्थर मेननको

३० सितम्बर, १९३२

मेरी प्यारी बच्ची,

इतनी दूरसे भी मैं तुम्हारी व्यथाको समझ सकता था। परन्तु ईश्वर हमारे पास अग्निपथसे ही आता है। इस तरहकी पावन वेदनामे एक गहरे अगोचर आनन्द का अनुभव होता है। मुझे आशा है इस परीक्षामे तुम भी इस तरहके आनन्दमे भागीदार बनी होगी। इग्लैडसे प्रेम-सन्देश भेजनेवालो मे हॉरेस एलेक्जैडर और एन्ड्रचूजके साथ मैने तुम्हारा नाम भी देखा या कहूँ कि सुना था। मैं दिन-प्रतिदिन शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ।

आज तुम मुझसे लम्बे पत्रकी अपेक्षा तो नही रखती होगी। मुझमे जो शक्ति है, वह मैं इग्लैडके मित्रोको प्रेम-पत्र लिखनेमे खर्च कर रहा हूँ।

सस्नेह। बच्चोको प्यार।

बापू

[अग्रेजीसे]
माई डियर चाइल्ड, पृ० ९३

२४७. पत्र : हे० सॉ० लि० पोलक और मिली पोलकको

३० सितम्बर, १९३२

प्रिय हेनरी और मिली, या तुम चाहो तो, मिली और हेनरी,

तुम्हारे तारो और मन-ही-मन मिले सदेशोसे मुझे यह पता चल गया है कि आनन्दमयी पीडाके इन तमाम दिनोमे तुमने क्या महसूस किया होगा और क्या किया होगा। यह नये जन्मकी पीड़ा थी और निस्सन्देह, यह मेरे लिए और मेरा खयाल है, अधविश्वास और अज्ञानमे डूबे हिन्दू धर्मके लिए भी नया जन्म रहा है। लोगोकी भावनाका जो महान् दर्शन हुआ, वह एक इतनी बडी उपलब्धि थी कि उसके लिए उपवास उचित ही था। भारतके बाहरसे, इग्लैडसे प्रेमके बहुत-सारे और सच्चे सकेत मिले। इन सब बातोको देख-सुनकर मेरा वह त्रिविध ताप बहुत कम हो गया था।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९३

२४८. पत्र : रेजिनाल्ड रेनॉल्ड्सको

३० सितम्बर, १९३२

प्रिय रेनॉल्ड्स

तुम्हे मुझसे प्रेमके किसी लिखित सकेतकी आवश्यकता नही है। पर क्योकि मै अंग्रेज मित्रोको लिख रहा हूँ, इसलिए प्रेमका यह अनावश्यक शब्द तुम्हे भी भेज रहा हूँ।

बापू

अग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५४२)से; सौजन्य. स्वार्थमोर कॉलेज, फिलाडेल्फिया

२४९. पत्र : रोमाँ रोलाँ और मैडलिन रोलाँको

३० सितम्बर, १९३२

आपका प्रेम-भरा सन्देश मिला। पीडाकी इस अवधिमे आप सदा मेरी स्मृतिमे झूलते रहे। इस महान् नाटकमे ईश्वरकी दया भरपूर रही और आदिसे अन्ततक उसका प्रमाण मिलता रहा। इसे समाप्त करते-करते मीराका पत्र मिला है। उसने आनन्द अनुभव किये बिना पीड़ा सही है। पर उसने काँटोकी सेज ही चुनी है और वह उसपर बहादुरीसे लेटी हुई है।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९३

२५०. पत्र : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

३० सितम्बर, १९३२

परम प्रिय भाई और मित्र,

आपका तार[1] और आपका पत्र मेरा धन और मेरा आहार है। आपके बारेमे मुझे गलतफहमी नही होगी। मै समझता हूँ कि अधिक अच्छी परिस्थितियोमे, मुझे लन्दनके अपने कार्यका पूरा-पूरा और समझमे आने लायक हिसाब देनेमे कोई कठिनाई नही होगी। पर वह एक छोटी बात है। मै तो यह चाहता हूँ कि हमारा प्रेम कठिनसे-कठिन परीक्षामे भी पूरा उतरे।

मै स्वास्थ्य-लाभ कर रहा हूँ। हार्दिक प्रेम।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९४

१. देखिए "तार : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको", २५-९-१९३२।

२५१. पत्र : अब्बास तैयबजीको

३० सितम्बर, १९३२

प्रिय भुर्रर,

आपकी आस्था सचमुच जबरदस्त थी और घटनाओसे वह सही सिद्ध हुई है। वह इतनी जीवन्त थी कि आपको दूसरे बहुत-से मित्रोकी तरह मेरे पास दौड आनेसे अपनेको रोकनेके लिए किसी प्रयासकी आवश्यकता नही पडी। सचमुच बेगम अब्बास की भविष्यवाणी या उनका पूर्वाभास सच निकला। उन्हे मेरी हार्दिक बधाई दीजिए।

दूध और फलोसे मुझमे शक्ति आती जा रही है।

हम सबका प्रेम स्वीकार करे।

तुम्हारा,
भुर्रर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५८०) से।

२५२. पत्र : एडा वेस्टको

३० सितम्बर, १९३२

प्रिय देवी,

मेरे उपवासकी खबर सुनकर तुमपर क्या बीती होगी, मै जानता हूँ। पर ईश्वरकी इच्छा यही थी। उसके बादकी हर घटनामे क्या तुम उसे देख नही सकती थी?

सप्रेम,

भाई

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४४३४) से; सौजन्य . ए० एच० वेस्ट

२५३. पत्र : नाजुकलाल और मोतीबहन चोकसीको

३० सितम्बर, १९३२

चि० नाजुकलाल और मोती,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला था। ईश्वरने मुझे नया जीवन ही दिया है। वह अपनी इच्छाके अनुसार राह दिखायेगा।

आशा है, तुम तीनो कुशल होगे। मेरी शक्ति धीरे-धीरे बढ रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० १२१५१) से।

२५४. पत्र : डॉ० हीरालाल शाहको

३० सितम्बर, १९३२

इस उपवासमे शारीरिक यातना काफी भोगनी पड़ी। अन्त्यज भाई-बहनोके प्रति हमने जो पाप किया है, उसके प्रायश्चित्तके लिए यह यातना भोगनी पडी, सो ठीक ही हुआ है। मगर शरीर चोर है। जितना दु:ख टाल सके, उतना टालना चाहता है। मै नही जानता, अभी मेरे भाग्यमे कितने उपवास और लिखे है। मगर पानी आनेसे पहले मेड बाँधना चाहता हूँ। जैन उपवासमे अबर किसलिए लेते है? कितना लेते है? क्या इससे मुँहमे लारका आना मिटता है? पानी पीनेमे मदद मिलती है? अम्बर किससे पैदा होता है? कोई-कोई तो कस्तूरी लेते है। इस बारेमे अनुभवियोसे जानकारी मिल सके, तो भेजना।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९४

२५५. पत्र : शारदा चि० शाहको

३० सितम्बर, १९३२

तुम्हारे पत्रकी हर पंक्तिसे प्रेम टपकता है। तुम-जैसी पुत्री मुझे मिले, यह मेरा सौभाग्य ही है न? तुम-जैसी बहनोंने मुझे जो पद दिया है, वह ले तो बैठा हूँ, लेकिन ईश्वरके नामपर लिया है। इसकी शोभा और मेरी प्रतिष्ठा उसीके हाथमें है। मुझमें बड़ी तेजीसे शक्ति आ रही है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९४

२५६. पत्र : सेठ गोविन्ददासको

३० सितम्बर, १९३२

अंत्यज भाइयोंके प्रेमके बारेमें मुझे कभी अविश्वास था ही नहीं। ईश्वरने सब अच्छा ही किया है अब हम आशा रखें कि जो उत्साह पैदा हुआ है, चिरस्थायी रहेगा और अस्पृश्यताकी जड़ उखड़ जायेगी।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९५

२५७. तार : डॉ० मु० अ० अन्सारीको

[१ अक्टूबर, १९३२][1]

एम० ए० अन्सारी
पेरिस

हिन्दू-मुस्लिम-सिख एकताकी अपील जारी करके मैंने आपकी इच्छा पहले ही पूरी कर दी।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० २६५

१. यद्यपि साधन-सूत्रमें इस तारका उल्लेख ५ अक्टूबरकी तारीखमें है, पर गांधीजी की "दैनन्दिनी, १९३२" में यह इसी तारीख में दर्ज है।

२५८. तार: गणेशन्को[1]

१ अक्टूबर, १९३२

शकरकी तरहके उपवास चाहे अनुचित न कहे जाये किन्तु वे उपयुक्त समयके पूर्व किये जा रहे है, ऐसा तो है ही। उसे उपवास छोड देनेको कहो।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९७

२५९. तार: के० केलप्पनको

[१ अक्टूबर, १९३२][2]

आपका तार मिला। विशुद्ध नीतिके आधारपर जो निर्णय लिया गया है उसे उसके तुरन्त ही होनेवाले परिणामोसे प्रभावित नही होने देना चाहिए। मै यह राय फिर दोहराता हूँ कि आप उपवास स्थगित कर दे और मेरे तारके अनुसार नोटिस दे।[3] ईश्वर सहायक रहा तो मै इस भारमे हाथ बँटाऊँगा। सहमतिकी[4] तारसे सूचना दे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ३-१०-१९३२

१. यह गणेशन्के तारके उत्तरमें था जिसमें कहा गया था कि शकर पार्थसारथि एक मन्दिरको हरिजनोंके लिए खुलवानेके लिए उपवास कर रहे हैं।

२. तारीख महादेवभाईनो डायरी, भाग-२, पृ० ९७ से ली गई है।

३. देखिए "तार: के० केलप्पनको", २९-९-१९३२।

४. केलप्पनने अपना उपवास २ अक्टूबरको प्रात ८ बजे तोड़ा।

२६०. तार : डॉ० मोहनलालको[1]

१ अक्टूबर, १९३२

डॉ० मोहनलाल
अलीगढ़

यदि बिलकुल सचाईसे हो और भगीभाई इसकी असली भावनाको समझे, तो सवर्ण हिन्दुओका इस तरह असली भगियोके साथ सफाईका काम करना अच्छा हो सकता है।

गांधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० १८५६२) से। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९८से भी

२६१. पत्र : अब्दुल रहीमको

१ अक्टूबर, १९३२

आपकी इस बातसे मै बिलकुल सहमत हूँ कि दूसरे साम्प्रदायिक सवाल भी आपसी आदान-प्रदानकी भावनासे सुलझाये जाने चाहिए। मुझे आशा है कि उस दिशामे प्रयत्न किये जायेंगे।

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९६

२६२. पत्र : क्रेसवेलको

१ अक्टूबर, १९३२

हाँ, ईश्वरकी मुझपर बड़ी कृपा रही है।

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९६

१. यह डॉ० मोहनलालके तारके उत्तरमें था जिसमें कहा गया था कि सवर्ण हिन्दुओंने अस्पृश्यता-निवारण-कार्यमें अपने सहयोगका प्रदर्शन करनेकी दृष्टिसे टट्टियोंकी सफाई शुरू कर दी है।

२६३. सन्देश : फिलिप किंग्सलेको

१ अक्टूवर, १९३२

मैं चाहता हूँ कि पिछले कुछ दिनोमे भारतमे जो घटनाएँ घटी है, अमेरिका उन सवमें ईश्वरका हाथ देख सके। वह मनुष्यका काम नही था, वह निस्सन्देह ईश्वरकी कृपा थी।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९५

२६४. पत्र : मीराबहनको

[१ अक्टूवर[1]], १९३२

चि० मीरा,

क्योकि मेरे पत्र तुम्हे नियमित रूपसे नही मिल रहे थे, इसलिए कल मैंने तुम्हे जान-बूझकर नही लिखा। यह पत्र मै बहुत सवेरे और अंगूरका रस लेनेके तुरन्त वाद लिख रहा हूँ। मै स्वस्थ होता जा रहा हूँ। मेरा वजन, जो सोमवारको ९३½ था, कल ९९¾ हो गया। यह सुधार आश्चर्यजनक है। मै एक या दो दिनमें थोड़ा चलने लगूँगा। आँतोको अव भी एनीमाकी जरूरत होती है, पर मुझे उम्मीद है कि वे शीघ्र ही सामान्य स्थितिमे आ जायेंगी। आहार है : आठ सन्तरे, अंगूर, चार चायके चम्मच-भर ग्लूकोज पाउडर, १½ पौंड दूध, सब्जियोका पतला रसा और टमाटर। इनमे से कोई-न-कोई चीज औसतन हर ढाई घंटे वाद लेता हूँ। कल मैंने २३५ तार काते पर कोई खास थकान महसूस नही हुई। कताई दो वारमे की गई थी। इग्लैंडकी डाक और यहाँ जिनके पत्रोका उत्तर देना था, उन्हे भी कुछ पत्र लिखे। वीच-वीचमे भोजन और विश्रामका अन्तराल देते हुए कल मैंने रात आठ वजेतक काम किया था और ऐसा नही लगता कि उससे तवीयतपर कोई वुरा असर हुआ है। यह सव बड़ी अच्छी प्रगति है। अतः मै वरावर यही रटता रहता हूँ कि "ईश्वर महान् और दयालु है"। उपवासका जो फल निकला उसकी तुलनामें वह कुछ नही था। वह उपलब्धि मनुष्यकी नही थी। वह ईश्वरका काम था। तुम्हारा विषाद इस सवसे मिट जाना चाहिए।

समाचार-पत्रोसे तुमने यह जान ही लिया होगा कि मुलाकात आदिके वारेमे उपवाससे पहलेके प्रतिवन्ध एक तरहसे लागू ही है। वा दिनमे मुझसे मिल सकती है।

१. साधन-सूत्रमें ३१ सितम्बरकी तारीख दी गई है जो कि अशुद्ध है। यह पत्र महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९६ पर इसी तिथिके अन्तर्गत रखा गया है।

तुम्हे और किसनको प्यार।

बापू

[पुनश्च :]

मेरा खयाल है तुम्हारे साथ अब और कोई नही है।

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४३) से; सौजन्य : मीराबहन

२६५. पत्र : आनन्दशंकर बा० ध्रुवको

१ अक्टूबर, १९३२

मेरे खयालसे मेरे अनुभव ईश्वर-साक्षात्कार ही है। दूसरे साक्षात्कारमे और ज्यादा क्या होगा?

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९६

२६६. पत्र : मनमोहनदास पी० गांधीको

[१ अक्टूबर][1], १९३२

भाई मनमोहनदास,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं धीरे-धीरे शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ।

किसी एक अन्त्यज बालक या वयस्कको घरमे रखकर सीधी सेवा तो अवश्य ही करना।

तुम्हारी पुस्तकका[2] अनुवाद हो गया, यह ठीक हुआ।

तुम्हारा नाम मेरे-जैसा है इसलिए कभी-कभी मेरे नामके पत्र तुम्हारे पास पहुँचेगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १६) से।

१. "दैनन्दिनी, १९३२" से। पत्रमें "३१-९-१९३२" तिथि ही दी गई है, जो स्पष्टत: चूक है।

२. परदेशी कापड़नी सामे हरीफाई केम करवीका अंग्रेजी अनुवाद हाउ टु कम्पीट विद फॉरेन क्लॉथ शीर्षकसे।

२६७. पत्र : जमशेद मेहताको

१ अक्टूबर, १९३२

ईश्वरके नामका कितना दुरुपयोग होता है, यह सोच लीजिए। जब वह इस दुरुपयोगको सह लेता है, तो फिर महान् शक्तियोका उपयोग करनेमे उनका दुरुपयोग भी हो जाये, तो वह सहने लायक है। फिर भी, जैसा आप कहते है, उसे रोकनेके लिए भरसक कोशिश करनी ही चाहिए। वह करनेमे मै नही चूकूंगा।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९६

२६८. पत्र : कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशीको

[१ अक्टूबर][1], १९३२

भाईश्री मुशी,

तुम्हारा प्रेमार्द्र पत्र मिला था। जो शक्ति मुझमे आ गई है उसका उपयोग ऐसे पत्रोके उत्तर देनेमे कर रहा हूँ। जो-कुछ हुआ है वह मनुष्यका काम ही नही था। 'मैने' कुछ किया है, ऐसा खयालतक मेरे मनमे नही आता। "जो-कुछ कर वह मुझे अर्पित करके मेरे लिए कर", 'गीता'के इस वाक्यका अनुभव मै प्रतिक्षण करता रहता हूँ और [आनन्द] रसके घूंट पीता रहता हूँ। लीलावतीको पत्र दो तो लिखना कि समय-समयपर मै तुम दोनोको याद करता हूँ।

सरदार और महादेव मजेमे है। वहाँ जो भाई है, उनको हमारा वन्देमातरम्।

मोहनदासके वन्देमातरम्

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७५१७) से; सौजन्य . क० मा० मुशी

२६९. तार : जबलपुरके एक वकीलको

१ अक्टूबर, १९३२

मै कोई राय नही दे सकता।[2]

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९८

१. **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२ से। साधन-सूत्रमें "३१-९-१९३२" तारीख दी गई है, जो स्पष्टत: चूक है।

२. इस तारका मूल पाठ उपलब्ध नही है। नागपुरके एक वकीलने गाधीजी से पूछा था कि काग्रेसके विरोधके बावजूद क्या अन्तर्जातीय भोज करना ठीक होगा।

२७०. पत्र : रेहाना तैयबजीको

१ अक्टूबर, १९३२

प्यारी बेटी रेहाना,

फाकाके बाद यह पहला उर्दू खत है। तुम्हारे भजन बहुत अच्छे हैं। फाका शुरू करनेके वक्त जो भजन गाया वह तुम्हारा नही है, तो क्या हुआ? आखिर है तो तुमने दी हुई उमदा चीज। हाँ, तुम्हारा ही होता तो मुझे बहुत ज्यादह अच्छा लगता। ठीक है, दुबारा जब फाकाका मौका खुदा भेज देगा तब तुम्हारा ही बना हुआ भजन मुझे चाहिए। आजसे तैयार करो। बाकी सब अब्बाजानके खतसे।[1]

बापू

उर्दूकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६८६) से।

२७१. तार : रामशेषन्‌को

[१ अक्टूबर, १९३२ या उसके पश्चात्][2]

[तथाकथित अछूतोको] न छूने, न देखने और पास न आने देनेकी बुराईको मिटानेपर सारा ध्यान लगा दो।

अंग्रेजीकी माइक्रोफिल्म (एस० एन० १८५६८) से।

२७२. तार : रलियातबहन वृन्दावनलालको[3]

२ अक्टूबर, १९३२

ईश्वरकी कृपासे फूलकी तरह खिल रहा हूँ। पर अस्पृश्यताके बारेमे क्या तुमने अपनेको सुधार लिया है?

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०२

१. देखिए "पत्र: अब्बास तैयबजीको", ३०-९-१९३२।

२. रामशेषन्‌के तारपर, जिसमें गांधीजी से उनके जन्म-दिवसके अवसरपर कोचीन-निवासियोंके लिए एक संदेश माँगा गया था, १ अक्टूबरकी तारीख है।

३. गांधीजी की बड़ी बहन, जिन्होंने गांधीजी के जन्म-दिवसके अवसरपर उन्हें तारसे शुभकामनाएँ भेजी थीं।

२७३. तार: मोतीलाल रायको[1]

[२ अक्टूबर, १९३२][2]

आपका तार मिला। उपवासके सात दिनोंमें [लोगोंकी भावनाओंका] जो प्रदर्शन हुआ उसमें ईश्वरका हाथ होनेका निश्चित संकेत था।
सप्रेम,

गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० १८५६६)से।

२७४. पत्र: एस० एम० माटेको

२ अक्टूबर, १९३२

आपका तर्क मैं समझ सकता हूँ।[3] पर मेरा उपवास किसीको भी बाध्य करनेके लिए नहीं है। यह तो मन्द पड़ गई धर्म-चेतनाको तेज और सजीव करनेके लिए है। दुर्भाग्यवश यह सच है कि कुछ लोगोंको यह बाध्य भी कर सकता है। पर इस तरहकी बाध्यता न तो देरतक रहती है और न व्यापक ही होती है। धार्मिक सुधारक मनपर आधिपत्य जमानेकी कोशिश नहीं करता। वह तो लोगोंको जाग्रत करता है और उन्हें विचार करने तथा कर्ममें जुट जानेकी प्रेरणा देता है।

मुझे अपने सिद्धान्तोंका बलिदान करके अपनी रिहाई नहीं खरीदनी चाहिए। अस्पृश्यताको मिटाना मेरे जीवन-कार्यका महत्त्वपूर्ण अंग है, पर वही उसका एकमात्र अंग नहीं है।[4] मेरा जीवन ईश्वरके हाथोंमें है। वह उसे जैसे चाहेगा, ढालेगा। आपके खयालसे क्या मैं सुरक्षित हाथोंमें नहीं हूँ?

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १००

१. यह श्री रायके ३० सितम्बरके तारके उत्तरमें था जिसमें कहा गया था कि वे खासकर गांधीजी के इस ऐतिहासिक उपवासको ध्यानमें रखकर उनके जीवन-कार्यपर एक पुस्तक लिख रहे हैं। उन्होंने उसके लिए गांधीजी का आशीर्वाद माँगा था।

२. "दैनन्दिनी, १९३२" में गांधीजी ने ३ अक्टूबरकी प्रविष्टिके अन्तर्गत यह उल्लेख किया है कि कल मोतीलाल रायको तार भेजा। अनुमानतः यही वह तार है।

३. श्री माटेने गांधीजी को सलाह दी थी कि उपवासके द्वारा लोगोंको बाध्य करनेकी बजाय उन्हें शान्तिसे समझाने-बुझानेकी पद्धति अपनानी चाहिए।

४. श्री माटेने यह भी कहा था कि यदि वे यह घोषणा कर दें कि एक सालतक वे केवल अस्पृश्यताको मिटानेका ही कार्य करेंगे, तो शायद उन्हें रिहा कर दिया जाये।

२७५. पत्र : पुरातन बुचको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० पुरातन,

तुमने अच्छा प्रश्न पूछा है। अर्जुनके मनमे शका उत्पन्न हुई तो वह उसने [कृष्णके][1] सामने रखी। मेरे मनमे शका नही उठी वल्कि कृष्णने ही कहा: "उठ, क्या सो रहा है! समय आ गया है चूकना मत।" अनशन अहिंसाकी पराकाष्ठा हो सकता है और मूर्खता भी हो सकता है। मै यह मानता हूँ कि मेरे बारेमे यह अहिंसाकी पराकाष्ठा थी। उसके परिणामसे भी यही सूचित होता जान पडता है। हिन्दू धर्ममे वर्णित तपश्चर्यामें अनशनका स्थान है, इतना ही नही, महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार अर्जुन और [मेरे][2] मामलेमे अन्तर है। किन्तु मेरे कहनेका यह तात्पर्य नही कि मै अधिक ज्ञानी हूँ। मैं सिर्फ इतना बताना चाहता हूँ कि इस उदाहरणमे मेरे मोहकी बात नही है। क्या यह स्पष्ट हो गया? तुमने देखा होगा कि मुझसे मुलाकात करना बन्द हो गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१६९) से।

२७६. पत्र : लक्ष्मी दूधाभाई दाफड़ाको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० लक्ष्मी,

बम्बईमे तूने क्या किया? अब दिन कैसे बिताती है? मेरे उपवाससे तेरी जिम्मेदारी बढी है, ऐसा मैने तुझे लिखा था न? तू यह समझ तो गई है न?

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से। सी० डब्ल्यू० ७७५५ से भी; सौजन्य: मगनभाई देसाई

१ व २. महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०३ से।

२७७. पत्र : जमनाबहन गांधीको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० जमना,

तुम्हारा पत्र मिला था। उपवासकी बात तो अब पुरानी हो गई। हमें अपना कर्त्तव्य करते रहना चाहिए।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६०)से, सौजन्य नारणदास गांधी

२७८. पत्र : रामदास गांधीको

२ अक्टूबर, १९३२

तू जो निश्चय करनेकी सोच रहा है, वह बेशक बढ़िया है। तूने स्वतन्त्र रूपसे खुद ही निश्चय कर लिया हो तो अभी नीमूसे उसकी चर्चा करनेकी जरूरत नहीं। तेरी शान्तिका प्रभाव उसपर पड़ता ही रहेगा। यह ब्रह्मचर्यकी खूबी है। जब दोनों एक-से दुर्बल होते हैं, लेकिन दोनों संयम रखनेकी इच्छा रखते हैं, तब एक-दूसरेके साथ चर्चा करना ठीक होता है और फिर एकका निश्चय दूसरेकी मदद करता है। जब [दोमें से] एक दृढ़ हो, तब वे चर्चा करें; उसकी निर्विकारता तो अपने-आप काम करती रहेगी। यह तो मैंने तुझे अपना अनुभव बताया। अन्तमें जो तुझे ठीक लगे, वही करना। इसमें दूसरेकी समझदारी काम नहीं आती। मेरा तो तुझे ऐसे शुभ संकल्पमें आशीर्वाद होगा ही। अन्तिम निश्चय जेलके बाहर ही हो सकता है। जेलमें किये हुए बहुतोंके निश्चय बाहर जानेपर टूट गये हैं। दोनों वातावरण एक-दूसरेसे भिन्न हैं। दोनों अलग-अलग दुनिया है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ९९

२७९. पत्र : छगनलाल जोशीको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० छगनलाल (जोशी),

लम्बे पत्रकी आशा अभी न करना। आश्रमको पत्र लिखना शुरू तो कर दिया है और जितने लोगोको लिख सकता हूँ, लिखनेका इरादा है। तुमने मुझे देखने न आकर सयमका अच्छा पालन किया। आ जाते तो तुम्हे दोष न देता, बल्कि तुम्हारा स्वागत ही करता। लेकिन न आये, इसे बडी बात मानता हूँ। 'आश्रमवासी प्रत्ये' की रूप-सज्जा बहुत बढिया हुई है, अन्दर कैसा बन पडा है, यह तो देखकर ही बताऊँगा।

मै यह जानता हूँ कि गाँवोमे अन्त्यजोद्धारका काम बहुत कठिन है। उपवास-सप्ताहकी जागृति गाँवोमे कितनी पहुँची, यह तो तुम-जैसे लोग ही बता सकते है। उसके लिए उपवास और भी लम्बा होना चाहिए था, लेकिन यह तो मनुष्यकी कल्पना हुई। ईश्वरने जितना तय कर रखा था, उतना उपवास कराया। अभी उसे कितने और कराने है, यह कौन कह सकता है। वह जैसे रखे वैसे ही रहना चाहिए और अगर वह खौलते तेलमे डाल दे तो भी हमे खुशीसे नाचनेके लिए तैयार रहना चाहिए। क्या उसने यह वचन नही दे रखा है कि [जिसका उसमे विश्वास होगा उसे] इस प्रकार कष्टमे भी खुशीसे नाच उठनेकी शक्ति वह देगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५१०)से।

२८०. पत्र : हरिइच्छा पी० कामदारको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० हरिइच्छा,

तूने अक्षर अच्छी तरह बना-बनाकर लिखे है किन्तु आखिरमें स्याहीके धब्बे लगाकर पत्र बिगाड दिया है। सार यह कि सुघड़ता एक क्षणमे नही आ जाती, उसका निरन्तर अभ्यास करना चाहिए। याद रखना, तूने आलस्य छोड़ देनेकी प्रतिज्ञा की है। उसका पालन करना। हर पत्रमे अपना पता लिखना। यहाँ मैं पतोकी पूरी सूची नही रख सकता। आशा है, बच्चे अब स्वस्थ होगे।

क्या कभी रेहानाबहनसे मिलती है?

लड़कियोको मैंने पत्र लिखे है और उन्हे आश्रमके लिफाफेमे रख दिया था।

मेरे उपवासकी बात अब पुरानी हो गई अतः उसके बारेमे कुछ नही लिख रहा हूँ। मुझमे ताकत आती जा रही है। मै अपनी ताकत काफी हदतक खो बैठा था। रसिकको[1] मेरे आशीर्वाद लिखना। उसके समाचार तो मिलते ही रहते है।

सरदार और महादेवभाई प्रसन्न है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४७१) से। सी० डब्ल्यू० ४९१७ से भी, सौजन्य हरिइच्छा पी० कामदार

२८१. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० प्रेमा,

आज लम्बा पत्र नही लिखा जायेगा। तेरे काटनेसे कौन डरता है? हमारी बिल्लीबहन अपने बच्चोको जैसे-जैसे काटती है, वैसे-वैसे वे उसकी गोदमे घुसते है। बिल्ली अपने दाँतोके बीचमे जब सोमा[2] को लेती है तब सोमा रोता नही, बल्कि अपनेको सुरक्षित मानता है। वैसा ही तेरा काटना भी होगा।

तूने सुन्दर कड़ियाँ लिख भेजी है। तेरे सयमको भी अच्छा मानता हूँ। लेकिन तेरे या आश्रमवासियोके लिए खुश होनेका कोई कारण नही है। बूढे अब्बासजी, रेहाना वगैरह उपवासके बारेमे जानकर नाच उठे। मेरे पास आनेकी इच्छा भी प्रकट नही की। ईश्वरका हाथ मेरे सिरपर है ही, ऐसा मानकर वे अपने-अपने काममे लगे रहे। ऐसा दूसरोने भी किया। लेकिन बोल, उपवासके दिनोमे तूने अपना वजन कितना बढाया?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०४) से। सी० डब्ल्यू० ६७४३ से भी; सौजन्य : प्रेमाबहन कटक

१. हरिइच्छा कामदारके भाई।

२. बिल्लीके एक बच्चेका नाम।

२८२. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० पण्डितजी,

मुझसे आज लम्बे पत्रकी आशा नही करनी चाहिए। मेरे लिए तो यह नया जन्म ही है। ईश्वरको जो करना होगा सो करेगा। लक्ष्मीबहनको अपने दाँतोका इलाज अच्छी तरह करा लेना चाहिए।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २३५) से; सौजन्य लक्ष्मीबहन ना० खरे

२८३. पत्र : मोहन न० परीखको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० मोहन,

तुम्हारा केले और दूधका उपवास खूब है! मै तो इसे फलाहार भी नही कहूँगा। दूधको फल किसने बताया?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१८५)से।

२८४. पत्र : पद्माको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला। पिताजी मिले थे। हिसाब-किताब रखना सीख लेना चाहिए। यह बहुत आसान है। जो खर्च हो उसे उसी समय लिख लेना चाहिए। उसकी साफ नकल करनेकी जरूरत नही है। और वही कागज नारणदासको भेज देना चाहिए। यदि तेरे हाथमे गाँठ हो गई हो तो कताई भी बन्द कर देनी चाहिए। बिलकुल थकावट महसूस नही होनी चाहिए। उपवासका आनन्द कुछ और ही था।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१३८) से। सी० डब्ल्यू० ३४९० से भी; सौजन्य : प्रभुदास गाधी

२८५. पत्र : शारदा चि० शाहको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० शारदा,

मेरा उपवास तो पुरानी बात हो गई। क्या इसी प्रकार तेरा बुखार भी पुरानी बात नही हो सकती?

बापू

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९९१८) से, सौजन्य · शारदाबहन जी० चोखावाला

२८६. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० महालक्ष्मी,

तुम्हारा पत्र मिला। चूडियाँ पहन ली, सो ठीक ही किया। उन्हे कभी न पहननेका निश्चय दोषपूर्ण था। अत कहा जा सकता है कि बुजुर्गोकी खातिर चूडियाँ पहनकर तुमने उस दोषको सुधार लिया। इससे यह शिक्षा लेना कि खूब सोच-विचारकर ही कोई निश्चय करना चाहिए। किन्तु एक बार निश्चय कर लेनेके बाद किसीकी खातिर उससे डिगना नही चाहिए। जो-कुछ हुआ उसके लिए अफसोस मत करना।

यदि रोटी अनुकूल न आती हो तो दूध, शाक-सब्जी और फलोपर रहना। दूधमे दही और छाछ भी आ जाते है। क्या बच्चे अब भी आश्रममे रहने लायक नही है? आश्रमको जरा देख आना और समझना कि वह आजकल कैसा चल रहा है। यदि ऐसा न कर सको तो उन्हे कलकत्तासे मत हटाना बल्कि वही जो-कुछ हो सके उसीसे सन्तोष करना। अन्ततोगत्वा उनका स्थान तो आश्रममे ही है। उन्हे आश्रम से परचानेके लिए यदि तुम्हे कुछ समय आश्रममे बिताना पड़े तो बिताना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८२१) से।

२८७. पत्र : नारणदास गांधीको

रातके ८ बजे [२ अक्टूबर, १९३२][1]

चि० नारणदास,

साथके पत्रोसे मेरी शक्तिका कुछ अन्दाजा लगाया जा सकता है। ठीक शक्ति आ गई मानी जायेगी। जितना सोचा था उससे ज्यादा कमजोरी तो जरूर आ गई, लेकिन शक्ति वापस आते देर नही लगती। उपवासके बीचमे पडनेवाले रविवारको मेरा वजन ९३½ पौड था, और आज इस रविवारको १०० पौड आया। इसे काफी अच्छा सुधार माना जायेगा। डेढ पौड दूध, आठ-दस सतरे, अनार या अगूरोका रस, लौकी-टमाटरका सूप, मधु और नीबू-पानी — यह खुराक चल रही है। दूधकी मात्रामे कुछ वृद्धि होगी, ऐसी आशा रखता हूँ। सोचता हूँ, अभी कोई और परिवर्तन न करूँ। आज और कल थोडा-थोडा चला। आज दस्त अपने-आप कुछ ज्यादा आया। नीद ठीक है। बा सारा दिन यही गुजारती है। शामको लेडी विट्ठलदासके यहाँ चली जाती है।

उपवासमे कष्ट तो काफी भोगा, लेकिन शान्तिका तो अन्त ही नही था। ईश्वरने कसौटी तो खासी की, फिर भी वह हलकी थी। सात दिनोका उपवास तो कुछ है ही नही। लेकिन, इस दौरान जो शारीरिक और मानसिक कष्ट हुआ, वह काफी कहा जायेगा। मुझे जो अनुभव हुआ उससे भिन्न प्रभु-दर्शन कैसा होता होगा, मै नही जानता। अलबत्ता, मेरा मतलब यह नही है कि वह दर्शन पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेकी स्थितिका पर्याय है। यह अकथनीय अनुभव है। पूर्ण दर्शन तो यह भी नही कहा जा सकता।

तुम तथा और भी जो लोग मुझसे मिलने आये, सबने ठीक किया। जो न आये, उन्होने बहुत सयम दिखाया। मै मानता हूँ कि दोनोने अपने-अपने धर्मका पालन किया। मेरी यही कामना है कि इस यज्ञके फलस्वरूप हम और अधिक शुद्ध तथा जाग्रत हो।

डाक अब फिर नियमित कर डालो। जरूरत पडे तो एकाधिक बार लिखो।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५८ से भी, सौजन्य . नारणदास गाधी

१. **महादेवभाईनो डायरी**, भाग-२ में यह पत्र ३ अक्टूबरको लिखा बताया गया है, लेकिन पत्रके पाठसे ऐसा लगता है कि यह २ अक्टूबरको लिखा गया था, रविवार उसी दिन था।

२८८. पत्र: हेमप्रभा दासगुप्तको

२ अक्टूबर, १९३२

चि० हेमप्रभा,

तुम्हारा खत मिला है। अब मुझे शक्ति ठीक आई है। दूध फल और कोई एक भाजी लेता हुँ। वजन १०० रतल तक पहोच गया हुँ। इसलिये चिंताका कोई कारण नहिं है। तुमारा स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिए। क्षितिश बाबुका कैसे है? अरूणके हाल लिखो।

बापूके आशीर्वाद

श्री हेमप्रभादेवी
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर
वाया कलकत्ता

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६८९) से।

२८९. पत्र: मैथिलीशरण गुप्तको

२ अक्टूबर, १९३२

भाई मैथिलीशरणजी,

आपकी प्रसादिया[1] आती रहती है। ईश्वरकी बड़ी कृपा है।

आपका,
मोहनदास

सी० डब्ल्यू० ९४६१ से; सौजन्य: भारत कला भवन

१. गांधीजी के उपवासके समय और उसके बाद भी गुप्तजी ने अपनी कविताएँ उन्हें भेजीथीं।

२९०. पत्र: सोहनलाल शर्माको

२ अक्टूबर, १९३२

भाई मोहनलाल,[१]

इतनी शीघ्रतासे उपवास नहिं हो सकता है। अब तो विनयपूर्वक आदोलन हि करना चाहियें।

मोहनदास गांधी

श्री मोहनलाल शर्मा
हिंदू सभा कार्यालय
पुष्कर
अजमेरके पास
राजपूताना

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २८२५) से।

२९१. एक पत्र

२ अक्टूबर, १९३२

मेरी दृष्टिमे स्पर्श, मन्दिर प्रवेश, आदि अस्पृश्यता-निवारणका अग है। भोजन ऐच्छिक बात है।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १००

१. महादेव देसाईने अपने ३-१०-१९३२ के पत्र (जी० एन० २८२६) में सही नाम दिया है; देखिए खण्ड ५२, "पत्र: सोहनलाल शर्माको", १९-१२-१९३२।

२९२. तार: ए० रंगस्वामी अय्यंगारको

३ अक्टूबर, १९३२

केलप्पनने मेरी सलाह और आश्वासनपर उपवास तोड़ दिया है। अगले तीन महीनोंमें मन्दिर नहीं खोला गया तभी वह फिर शुरू किया जायेगा। आपसे और मित्रोंसे यह अपेक्षा है कि आप लोग मन्दिरको खुलवानेपर सारा ध्यान केन्द्रित कर देंगे।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० २६५

२९३. तार: कालिकटके जमोरिनको

३ अक्टूबर, १९३२

मैंने महसूस किया कि अनुशासनके अनुसार केलप्पनका यह कर्त्तव्य था कि वे उपवासके पहले मेरी स्वीकृति लेते और, हर हालतमें, उन्हें उपवासके अपने इरादेका पहलेसे मुनासिब नोटिस देना चाहिए था। उन्हें ये त्रुटियाँ बताई गईं तो उन्होंने बहादुरीके साथ इस चीजको स्वीकार किया और उपवास तोड़ दिया है। किन्तु यदि इस माहकी दो तारीखके बाद तीन महीनोंमें मन्दिर नहीं खोला गया तो वह पुनः शुरू कर दिया जायेगा। केलप्पनके मेरी सलाह मान लेनेसे मेरे कन्धोंपर भारी जिम्मेदारी आ जाती है—शायद इस हदतक कि उपवास स्थगित रहनेकी अवधिमें मन्दिर अवर्ण हिन्दुओंके लिए नहीं खोला गया तो मुझे भी उनके उपवासमें शरीक होना पड़ेगा। क्या मैं यह आशा कर सकता हूँ कि आप अपना आश्वासन पूरा करेंगे और इस सुधारके रास्तेकी, जिसे दीर्घ कालतक टाला जाता रहा है, सारी कानूनी और अन्य बाधाओंको दूर कर देंगे।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं०, ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० २६५

२९४. पत्र : पर्सी डब्ल्यू० बार्टलेटको

३ अक्टूबर, १९३२

प्रिय श्री बार्टलेट[1],

आपका पत्र मिला, और साथमे कविवरको लिखे आपके पत्र तथा फेलोशिपके उत्तरकी नकले भी मिली, उनके लिए धन्यवाद। मुझे पूर्ण विश्वास है कि फेलोशिप शान्तिके ध्येयके लिए प्रयत्नशील है।

हृदयसे आपका,

पर्सी डब्ल्यू० बार्टलेट महोदय
१७ रेड लॉयन स्क्वेयर
लन्दन, डब्ल्यू० सी०-१

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० (८००) (४०) (३), भाग ३, पृ० २०१

२९५. पत्र : वेरियर एलविनको

३ अक्टूबर, १९३२

प्रिय वेरियर,

तुम्हारा हृदयस्पर्शी पत्र मिला। मैं तुम्हारे हृदयमे प्रवेश कर सकता हूँ। हमारे बसमे तो इतना ही है न कि अपनी शक्ति-भर प्रयत्न करे। परिणाम ईश्वरके हाथमे है। इसलिए किसी बातकी चिन्ता मत करो। मैंने तुम्हे यह बताया या नही कि फादर विन्सलो और सघके[2] अन्य मित्रोसे मेरी मुलाकात हो गई थी? उनसे मिलकर बडी खुशी हुई।

मै इतने-सारे पत्र लिखता रहा हूँ कि उन पत्रो और उनके मजमूनोके बारेमे मुझे कुछ याद ही नही है।

बापू

१. क्वेकर और फेलोशिप ऑफ रिकन्सिलिएशनके महामन्त्री।
२. देखिए "पत्र : वेरियर एलविनको", ३०-९-१९३२।

[पुनश्च :]

सरदार और महादेव तुम्हें, माताजी और एलडिथको स्नेह-वन्दन भेजते है।

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० ९६९८) से; सौजन्य: एलडिथ एलविन

२९६. पत्र: सैम्युअल फ्रांसिसको

३ अक्टूबर, १९३२

प्रिय सैम्युअल,

आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। मै, एक बंदी, आपके लिए क्या कर सकता हूँ, पता नही। पर आपके बच्चे यदि भारतीय जीवन अपनाये तो यह सम्भव है कि उन्हे साबरमती आश्रममे प्रवेश मिल जाये।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सैम्युअल फ्रासिस महोदय
मार्फत जे० टी० क्रिश्चियन महोदय,
८, मार्ट लेन, ईस्ट लन्दन
दक्षिण आफ्रिका

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८००(४०) (३), भाग ३, पृ० २०१

२९७. पत्र: एस० के० जॉर्जको

३ अक्टूबर, १९३२

प्रिय जॉर्ज,

तुम आश्रम आये इस बातसे खुशी हुई। आशा है, तुम्हारा बुखार उतर गया होगा। अभी तो इस छोटे-से पत्रसे ही सन्तोष करो। हाँ, यदि कार्यकर्त्ता सच्चे हो तो इस मिश्रणसे भी रामराज्य सम्भव है। कार्यकर्त्ताओंमें मै भी शामिल हूँ। यदि मै सच्चा हूँ तो साथी-कार्यकर्त्ता भी सच्चे होंगे; यदि मै झूठा हूँ तो साथी-कार्यकर्त्ता भी झूठे होंगे। जब भी लिखनेकी इच्छा हो अवश्य लिखो।

सस्नेह,

बापू

[अंग्रेजीसे]

गांधीज चैलेंज टु क्रिश्चियनिटी, पृ० ८९

२९८. पत्र : जे० एस० हॉयलैंडको

३ अक्टूबर, १९३२

प्रिय हॉयलैंड,

टॉल्स्टॉय होमकी अपनी यात्राओंका तुमने मुझे संक्षिप्त विवरण भेजा, इसकी मुझे प्रसन्नता है। और अच्छा होता यदि आधुनिक रूसकी तुम्हारे मनपर जो छाप पड़ी उसके बारेमें भी तुम मुझे कुछ बताते।

खोई हुई शारीरिक शक्ति मैं तेजीके साथ पुन. प्राप्त कर रहा हूँ। उपवासके बारेमें मुझे कुछ और कहनेकी जरूरत नहीं है, क्योंकि वह अब बीता इतिहास हो गया है। मैं यही कह सकता हूँ कि ईश्वर उन दिनों मुझपर बहुत ही दयालु रहा।

हम सभीका प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५०६) से; सौजन्य : वुडब्रुक कॉलेज, बर्मिंघम, और श्रीमती जैस्सी हॉयलैंड

२९९. पत्र : जयकृष्ण पी० भणसालीको

३ अक्टूबर, १९३२

तुम्हारा पत्र देखकर तो मैं बाग-बाग हो गया। मगर तुम्हारा सन्यास तभी शोभा दे सकता है, जब तुम ज्ञानपूर्वक वापस आश्रममें आकर सेवा करो और सेवा करते हुए अलिप्त रहो। पत्थरकी गुफा और मुर्दे जलानेका श्मशान सच्ची गुफा या श्मशान नहीं है। असली गुफा हृदयमें है और श्मशान भी वहीं है। हम इस गुफामें रहकर विकार-मात्रको राख कर डालें, तब सच्चा सन्यास कहलायेगा। इसकी महिमा 'गीता' में गाई गई है। अभीतक तो मेरी आत्मा यही गवाही दे रही है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०३

३००. पत्र : दूधीबहन वा० देसाईको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० दूधीबहन,

तुमने रोटीके बारेमें पूछा है। किन्तु मेरी रोटी तो सूख गई है। वह भगवान्‌ने छीन ली। अब मैं दूध और फलोंसे शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ।

आशा है, तुम सब स्वस्थ होगे। वालजी से मुझे लिखनेको कहना। [जेलमें] उनका स्वास्थ्य कैसा रहा?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४३८)से; सौजन्य: वालजी गोविन्दजी देसाई

३०१. पत्र : महेन्द्र वा० देसाईको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० मनु,

अपनी लिखावट सुधारो। प्रार्थनामें हँसना अविवेकपूर्ण है, क्योंकि वह खेलनेका समय नहीं है। वह समय भगवान्‌का नाम लेनेका है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४३९)से; सौजन्य: वा० गो० देसाई

३०२. पत्र : मैत्री गिरिको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० मैत्री,

बहुत दिनों बाद तेरा पत्र मिला। वहाँ जो सीखा हो उसके बारेमें मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६२३७) से।

३०३. पत्र : गुलाबको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० गुलाव,

पीजना तो वहुत आसान है। थोड़ी ज्यादा मेहनत करनेसे अच्छी तरह आ जायेगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७२५)से।

३०४. पत्र : पुंजाभाई एच०. शाहको

३ अक्टूबर, १९३२

मैंने तुम्हारे साथ दौड़ तो लगाई, लेकिन अभी तो हारा हुआ ही हूँ। खैर, कोई चिन्ता नही। "जीवन-मरण दोनो समान ही है।" मेरे लिए यह नया जन्म है। ईश्वरको जो करना हो, करे। प्रभुने लाज रखी है। बहुत आसान-सी परीक्षा ली। मैं तो क्षण-क्षण ईश्वरकी कृपाका अनुभव कर रहा हूँ।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०२

३०५. पत्र : रामचन्द्र ना० खरेको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० रामभाऊ,

गताकसे चलनेवाला सम्वाद भी मनोरजक माना जा सकता है। किन्तु इस बार तूने अक्षर बिगाड़ दिये है। इस सवमे निहित दोष तो मैंने तुझे बताये ही है। वड़ोकी हँसी और उनके तिरस्कारकी बात हम अपने मनमे कैसे ला सकते है? और इस तिरस्कारमे छिपी अपने दोषोके प्रति हमारी उदासीनता कितनी हानिकर है।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २९९) से, सौजन्य. लक्ष्मीवहन ना० खरे

३०६. पत्र : निर्मला बा० मशरूवालाको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० निर्मला,

तेरा १३ तारीखका पत्र मिला था। मुझमें ताकत आती जा रही है। 'गीता-मथन'[1] के प्रूफ मिल गये थे। बालुकाका[2] का पत्र भी मिला था।

उपवासके दौरान मेरी कुहनीका दर्द तो खत्म हो गया लगता है। शरीर भरनेपर यदि वह फिर उभर आये तो कहा नहीं जा सकता। सुरेन्द्रसे पत्र लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री० निर्मलाबहन
मार्फत — बालुभाई मशरूवाला
टोपीवालेका बँगला
सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २८८७) से; सौजन्य : निर्मलाबहन सर्राफ

३०७. पत्र : भाऊ पानसेको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० भाऊ,

आज लम्बा पत्र नहीं लिख सकता।

अनासक्तिकी भावना धीरे-धीरे अवश्य आयेगी। सत्यादिके प्रति आसक्ति रह सकती है। जगत् सत्य है और नहीं भी है। इस कारण उसकी सत्यताका बोध कुछ-न-कुछ तो बना ही रहेगा। कब्जके बारेमें गंगाबहनसे पूछना। तुमने भोजनमें जो परिवर्तन किया है उसका क्या परिणाम निकला, लिखना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७३७) से; सी० डब्ल्यू० ४४८० से भी; सौजन्य : भाऊ पानसे

१. किशोरलाल मशरूवाला द्वारा लिखित।
२. किशोरलाल घ० मशरूवालाके बड़े भाई।

३०८. पत्र : शान्ता शं० पटेलको[1]

३ अक्टूबर, १९३२

चि० शान्ता[1],

तू अपनी लिखावट विगाड रही है। पत्र भी ऐसा ही है। आशा है, अब स्वास्थ्य ठीक हो गया होगा। सरदारको विनोद करना हो तो भले ही करे। लेकिन तुझे जो लिखना हो, लिख।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०६६) से। सी० डब्ल्यू० १७ से भी; सौजन्य . शान्ताबहन पटेल

३०९. पत्र : शारदा चि० शाहको

३ अक्टूबर, १९३२

चि० शारदा,

तेरे पत्रका विस्तृत उत्तर देना चाहिए, परन्तु ऐसा करनेके लिए न तो मेरे पास समय है और न इतनी शक्ति ही। यदि मासिक स्रावमे रुकावट होती है तो ठडे पानीमे कटिस्नान लेना चाहिए। उक्त स्नान मासिक शुरू होनेके पहले लेना चाहिए, मासिक होनेके दौरान नही। एक दूसरा घर्षण-स्नान है। प्रेमाबहनको उसका ज्ञान होना चाहिए। सम्भवत सतोक भी इसके बारेमे जानती होगी। मासिक-धर्मके समय तुझे बिलकुल आराम करना चाहिए। यदि सफेद स्राव होता है तो यह चिन्ता की बात है। किन्तु यह भी कटि और घर्षण-स्नानसे ही ठीक होगा। यदि तू इसके पीछे पड जाये और मै जो इलाज बताऊँ सो करती रहे तो अवश्य ठीक हो जायेगी।

पुरुष और स्त्रीमें कुदरती भेद है, इसलिए दोनोके धर्मोंमें भी कुछ अन्तर है। इसलिए यदि पुरुष स्त्री-धर्मका अथवा स्त्री पुरुष-धर्मका पालन करने लगे तो कठिनाई अवश्य आयेगी। लेकिन दोनो आत्मिक रूपसे एक होनेके कारण बहुत-सी कठिनाइयोसे पार पा सकते है। उक्त स्थिति तो निर्विकारी होनेपर ही आ सकती है। इस बातको समझनेमे शायद तुझे कठिनाई होगी। दो-तीन बार पढनेके बाद इसपर विचार करना। फिर भी न समझ पाये तो चिमनलाल[2] या नारणदाससे या फिर प्रेमाबहन से पूछना और फिर मुझे लिखना कि तू क्या समझी। हमे उन बातोको मुँहसे कहते

१. शकरभाई पटेलकी पुत्री।

२. शारदाके पिता।

शर्म आती है किन्तु लिखनेमे कम शर्म आती है क्योकि न तो हमे दूसरे व्यक्तिके सामने आना पड़ता है और न उसकी वात सुननी पड़ती है। दूर बैठकर कलम चलाना आसान है किन्तु चार आँखे मिलनेपर शर्म आ ही जाती है। किन्तु ज्यो-ज्यो हम निर्मल होते जाते हैं, त्यो-त्यो यह शर्म कम होती जाती है।

तेरी माँ बननेका प्रयास करता हुआ,

बापू

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९९५७) से, सौजन्य: शारदाबहन जी० चोखावाला

३१०. एक पत्र[1]

३ अक्टूबर, १९३२

उस दुकानदारके साथ तुम्हारा सम्बन्ध जाने बिना मै राय नही दे सकता। वहाँ नानाभाई[2] है, उनसे पूछना चाहिए। और फिर, कदम उठानेके वाद तुम सलाह माँगते हो, यह भी ठीक नही है। यह सभव नही कि अनशन करनेसे विरोधी अपना स्वभाव तुरन्त बदल दे।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०४

३११. पत्र: जोहरा बानू अन्सारीको[3]

३ अक्टूबर, १९३२

प्यारी बेटी जोहरा,

तुम्हारे दोनो खत मिल गये है। खुदाकी मेहरबानीसे मेरी सेहत अच्छी हो रही है। खुदाने ही फाका करवाया था खुदाने ही खाना दिया। अब हम सब खुदासे माँगे कि हिन्दू-मुस्लिमके बीच भी मिलाप पैदा करा दे। जबतक यह नही हुआ है मुझे पूरी शान्ति हो नही सकती।

अब्बाजानके खत मुझे भी मिलते रहते है।

अब तुम्हारे उस्तानीका काम शुरू कर देना है। तुम्हारे खत मेरे लिए सबक हो जाते है। मेरेपर काफी उर्दू खत आते है। तुमसे बढकर किसीके हरफ खूब-सूरत नही होते। तुम्हारे हरफके ही लिये तुम्हारे खत बार-बार पढनेका दिल होता है।

१. यह एक युवकसे प्राप्त पत्रके उत्तरमें लिखा गया था। उस युवकने एक दुकानदारके खिलाफ अनशन शुरू किया था। दुकानदारने अपनी दुकानसे अस्पृश्योंको चीजें खरीदनेकी छूट देनेका वचन दिया था, लेकिन बादमें मुकर गया।

२. नृसिंहप्रसाद कालिदास भट्ट।

३. डॉ० मु० अ० अंसारीकी कन्या।

हाँ, आजकल बा दिन-भर मेरे साथ रहती है। सरदार और महादेव देसाई तो साथ है ही। अब्बाजानको हम सबकी तरफसे बहोत सलाम। तुम्हारे लिये बहोत दुआ।

गांधी

महात्मा, भाग-२, पृ० ३०४ के सामने प्रकाशित उर्दूकी प्रतिकृतिसे।

३१२. पत्र : हॉरेस जी० एलेक्जैंडरको

४ अक्टूबर, १९३२

प्रिय हॉरेस,

तुम्हारा पत्र मिला। उपवासके बारेमें मैं इतने-सारे मित्रोको इतना अधिक लिख चुका हूँ कि अब इस पत्रमे कुछ कहनेकी मुझे इच्छा नही होती। इस सप्ताहकी डाकसे जो पत्र जा रहे है उनमे से कुछ, निस्सन्देह, तुम देखोगे ही। परन्तु मैं यह कहूँगा कि इस उपवासमे ईश्वर मेरे जितना निकट रहा उतना पहले कभी नही रहा था, और यद्यपि मुझे तब इग्लैंडसे कोई पत्र नही मिला था फिर भी तुम सबके प्रेमको मैंने अनुभव किया था। तुम्हे और ऑलिवको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४१५) से।

३१३. पत्र : स्कॉट हैंडरसनको[1]

४ अक्टूबर, १९३२

यदि मैं कहता हूँ कि उपवासकी प्रेरणा मुझे ईश्वरने दी और आप कहते है कि उसने नही दी, तो इसका फैसला कौन करेगा? क्या आप बता सकते है कि अपने अन्त करणकी आवाजकी अपेक्षा मुझे आपकी राय क्यो पसन्द होनी चाहिए? क्या आप यह नही मानते कि मनुष्योके हाथोकी अपेक्षा मैं ईश्वरके हाथोमे अधिक सुरक्षित हूँ?

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०६

१. एक ईसाई मिशनरी।

३१४. पत्र : ईसपको[1]

४ अक्टूबर, १९३२

आपकी मार्मिक अपीलके लिए धन्यवाद। फिलहाल तो यह मामला खत्म हो गया है। पर आपको मेरा यह सुझाव है कि तर्कसे इस तरहकी बातोंकी थाह नही पाई जा सकती। उन्हे ईश्वर और उसके बंदोपर छोड़ देना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०५

३१५. पत्र : एस्थर मेननको

४ अक्टूबर, १९३२

मेरी प्यारी बच्ची,

तुम्हारा ४ सितम्बरका लम्बा पत्र मिला। वह अब अतीतकी बात हो गई है।

उपवासके बाद यह मेरे लिए नया जन्म है। मुझमे तेजीसे ताकत आती जा रही है। जो वजन गिर गया था लगभग पूरा हो गया है। पर खोई शक्तिको प्राप्त करनेमे अभी थोड़ा समय लगेगा। पीडाके वे दिन आन्तरिक आनन्दके भी दिन थे। लाखों लोगोने अपने बन्धु-मानवोके साथ अस्पृश्यताका जो महान् पाप किया है, वह उसका छोटा-सा प्रायश्चित्त था। पर वह-सब तो तुम अब जानती ही हो।

तुम्हें वाष्प-स्नान और ऐसे आहार द्वारा जिसमे श्वेतसार और प्रोटीन अधिक न हो और ताजे फल खूब हों, अपनी गठियासे छुटकारा पानेकी कोशिश करनी चाहिए।

मैं चाहता हूँ कि तुम नान और तंगैको किसी पब्लिक स्कूलमे जाने और वहाँ रहकर अपने पूर्वग्रहको छोडनेके लिए तैयार कर सकती, यानी यदि अध्यापक उनके वहाँ जानेका स्वागत करे तो।

डेन्मार्कसे जन्म-दिनपर बधाईका एक तार मिला है। पर उसपर भेजनेवाले का नाम नही है।

आज केवल इतना ही।

हम सबका स्नेह, और बच्चोको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (नं० ११४) से, सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार। **माई डियर चाइल्ड**, पृ० ९४से भी

१. पत्र-लेखकका कहना था कि आमरण अनशन आत्महत्याके समान है।

३१६. सन्देश : एक हस्ताक्षरेच्छुको[1]

४ अक्टूबर, १९३२

ईश्वर तुम्हे शीघ्र स्वस्थ करे।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०५

३१७. एक पत्र[2]

४ अक्टूबर, १९३२

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओके जीवन और उनके हेतुओके बारेमे गलतफहमी हमेशा पैदा होगी। आपकी दोष-स्वीकृति आपको शोभा देती है।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०५

३१८. एक वक्तव्य[3]

४ अक्टूबर, १९३२

अस्पृश्यताकी समाप्तिमे सहभोज शामिल नही है। अलबत्ता, यदि दूसरोको तो ऐसे भोजमे सम्मिलित किया गया हो किन्तु अस्पृश्योको उनके अस्पृश्य होनेके कारण बहिष्कृत किया गया हो तो बात दूसरी है।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०६

१. सन्देश तपेदिकके रोगी एक अमरीकी युवकके लिए था। साधन-सूत्रमें उसका नाम नहीं दिया गया है। युवककी माँ ने अपनी लाचारीका जिक्र करते हुए गांधीजी को लिखा था कि उसका बेटा अपने इलाजका खर्च महत्त्वपूर्ण व्यक्तियोंके हस्ताक्षर बेचकर पूरा करता है।

२. पत्र जिसे लिखा गया था, साधन-सूत्रमें उसका नाम नहीं है — वह पहले हिन्दू धर्म और गांधीजी का बड़ा विरोधी था। परन्तु गांधीजी के उपवासके बाद उसे गांधीजी की सच्ची लगनका विश्वास हो गया और प्रायश्चित्त-स्वरूप, उसने चालीस दिन मौन रखने और दिनमें केवल एक बार भोजन करनेका निश्चय किया।

३. यह वक्तव्य किसे दिया गया था, यह स्पष्ट नहीं है।

३१९. पत्र : आश्रमके बच्चोंको

४ अक्टूबर, १९३२

यदि तुम नन्हे-मुन्ने लोग अपने नामोके साथ 'भाई' और 'बहन' लिखोगे, तो मुझ-जैसोका क्या होगा? उपेन्द्रको 'उपेन्द्रभाई' और भद्रिकाको 'भद्रिकाबहन' किसने बनाया? मै वहाँ आऊँगा, तो किसीको भाई या बहन कहनेवाला नही हूँ। क्या यह शर्त मजूर है? दूसरी शर्ते तो मैंने मनमें ही इकट्ठी कर रखी है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०५

३२०. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

४ अक्टूबर, १९३२

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। प्रस्तावना लिखकर प्रसिद्धि पानी हो तो उसे लिखनेकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। यह योग्यता कैसे प्राप्त की जा सकती है सो नारणदाससे पूछ लेना।

मुझे आराम तो मिल ही रहा है। छ. दिनोका उपवास मेरे जीवनमे कोई बडी बात नही है। खोई हुई शक्ति लगभग वापस आ गई है। चिट्ठी-पत्रीके काममें तो अब कोई कठिनाई होती ही नही।

आश्रममे लोगोका बीमार पडना मुझे तनिक भी अच्छा नही लगता। किसी तरहकी लापरवाहीसे ही लोग बीमार पडते हैं। इस बीमारीके महीनेमे खुराकका पूरा ध्यान रखना चाहिए। ज्यादातर बीमारियोकी जड पेटका खराब होना ही होता है।

वाली[1] तो मजबूत लडकियोमे गिनी जाती थी। वह भी कमजोर होकर पड गई। देखता हूँ, तेरे पास जो लडकियाँ है उनमे से कुछ कठिन किस्मकी है। शान्ताके बारेमे ज्यादा जाने बिना यहाँसे उसके सम्बन्धमे मै तेरा मार्ग-दर्शन नही कर सकता। नारणदासके साथ सलाह-मशविरा करके जो योग्य लगे, करना। . . .[2]के किस्से भी सोचने लायक तो है ही। दस वर्षकी लडकीको मासिक धर्म होना भयकर बात है। . . .[3]से उसके बारेमे ज्यादा जानकारी लेना। हो सकता है, जब वह पाठशाला जाती थी, उन्ही दिनो कोई बुरी आदत सीख ली हो।

१. आश्रमकी पाठशालाकी एक छात्रा, जो बादमें लक्ष्मीदास आसरके पुत्र पृथुराजसे विवाह-सूत्रमें बँधी।

२ व ३. नाम छोड दिये गये है।

अपन प्रेमीसे[1] तो हम बिछुड गये है, क्योकि हमे दूसरी जगह भेज दिया गया है। उसका वियोग तो हृदयको सालता है, लेकिन क्या करे? जीवन तो वियोगोका समुदाय ही है न?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०५) से। सी० डब्ल्यू० ६७४४ से भी; सौजन्य: प्रेमाबहन कटक

३२१. पत्र : चन्द्रशंकर एन० पण्डयाको

४ अक्टूबर, १९३२

जमाना बदल जाये, लेकिन तुम क्यो बदलने लगे? कुछ लोग अपनी बीमारीको वर लेते है, और तुम तो इसकी भी परवाह नही करते कि ऐसा करके तुम पति-धर्मको भग कर रहे हो। शायद तलाकके लिए भी गुजाइश न रहे।

मुझमे तो बडी तेजीसे शक्ति आ रही है। सरदार अपनी सरदारी यहाँ बैठ कर भी नही छोडते और छोडनेको कहे, तो कहते है कि "अफीमची काठी[2] अफीम छोड़े, तो मै सरदारी छोडूँ।" यह दुखडा कहाँ रोने जाऊँ?

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०६

३२२. पत्र : जयशंकर पी० त्रिवेदीको

४ अक्टूबर, १९३२

तारागौरीके[3] अवसानका हृदयद्रावक वर्णन भेजा, सो अच्छा किया। छायाकी तरह हमारे पीछे-पीछे चलनेवाली मौत कब हमारी गर्दन पकड़ लेगी, यह कौन जानता है? मनुको धक्का लगेगा। मगर वह बहादुर है। घाव सह लेगा। तारागौरीके श्राद्धके निमित्तसे अगर आपके कुटुम्बसे प्राइमस स्टोवको तिलाजलि दे दी जाये, तो बहुत बडा त्याग नही माना जायेगा, और शायद दूसरी बहने भी इस राक्षसके पजेसे छूट जायेगी।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०६

१. गाधीजी की पालतू बिल्ली।
२. काठियावाडकी एक जाति।
३. जयशकर त्रिवेदीकी भाभी।

३२३. पत्र : रामेश्वरलाल बजाजको

४ अक्टूबर, १९३२

भाई रामेश्वरदास,

चि० पूर्णचंद्रने तुमारे ठिकानेके लिफाफे भेजे हैं। उपवासकी कहानी तो पुरानी हो गई। अब शक्ति आ रही है। चिंताका कोई कारण नहिं।

नये साहससे कुछ लाभ मिलता है? मुझे अवश्य सब हाल लिखो।

मेरा आगला पत्र पहोचा होगा।

बापूके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ९४४८ से, सौजन्य. बनारसीलाल बजाज

३२४. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

[५ अक्टूबर, १९३२][1]

आशा है, तुम अब कुछ चैन महसूस कर रहे होगे। लेकिन इस बातसे तो तुम्हे जरूर बल मिला होगा कि गुरुदेवका इस मामलेमे घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। उपवासके पहले ही दिन उन्होने जो प्रवचन दिया था, महादेवने उसका अनुवाद किया है और मुझे सुनाया है। प्रवचन बहुत ओजपूर्ण है। पर ईश्वरीय प्रेमके उन दिनो बहुत-से सकेत मिले। ईश्वर बराबर पथ-प्रदर्शन कर रहा है, इसमे मुझे कभी रत्ती-भर भी सन्देह नही हुआ।

पर कार्यका सबसे बडा भाग निस्सन्देह अभी बाकी है। तुम्हारी जगह अभी वही है, इसमे मुझे कोई शक नही है।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १११

१. साधन-सूत्रमें इस पत्रपर ६ अक्टूबरकी तारीख दी गई है, पर यह ५ अक्टूबरको ही लिखा गया लगता है, देखिए अगला शीर्षक।

३२५. पत्र: अगाथा हैरिसनको

५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा पत्र मिला। मै जानता हूँ कि मैंने तुम सबके लिए भारी चिन्ता पैदा कर दी थी। वह अनिवार्य था। वह सब ईश्वरका ही काम था। उन दिनो जो-कुछ हुआ, उस सबमें मै ईश्वरका हाथ देख सकता था।

मेरा और महादेवका प्यार।

[पुनश्च:]

इसके साथ एक पत्र चार्लीके लिए है।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४५९)से।

३२६. पत्र: प्रेमी जयरामदासको

५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय प्रेमी,

हाँ, तुम्हारा भेजा हुआ सब मिल गया। पिताजी को यह बता देना कि उनका प्रेम-पत्र मुझे मिल गया था और मै अच्छी तरह हूँ।

तुम्हें अपनी गति तेज कर देनी चाहिए और हिन्दीमे पत्र लिखना शुरू कर देना चाहिए।

तुम सबको हम सबका प्यार।

कुमारी श्री प्रेमी जयरामदास
प्रेम भवन
हैदराबाद, सिन्ध

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९२४२) से; सौजन्य: जयरामदास दौलतराम

३२७. पत्र : सेंट फ्रांसिसकी मठवासिनियोंको[1]

५ अक्टूबर, १९३२

तुम्हारा २ सितम्बरका प्रेम-भरा पत्र यथासमय मिल गया था। अपने पवित्र उपवासके दिनोंमें तुम्हारा वह सुन्दर तार भी मिला था। तुम्हारे-जैसे प्रेम-संकेत मेरे लिए ईश्वरका भेजा आहार थे।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०८

३२८. पत्र : डॉ० सैयद महमूदको

५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय डॉ० महमूद,

फलोंकी टोकरीके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके लिए मेरे पास कोई पत्र नहीं है। आशा है, अब आप पहलेसे बेहतर होंगे और पारिवारिक कष्ट यदि समाप्त नहीं तो कम तो हो ही गये होंगे। मेरी कितनी इच्छा है कि अस्पृश्यताका यह समाधान हमें और अधिक एकताकी दिशामें ले जाये। ईश्वर आपके प्रयत्न सफल करे। मौलानासाहबको मेरा सलाम कहिए।

सप्रेम,

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०७३) से।

१. "दैनन्दिनी, १९३२" से। साधन-सूत्रमें केवल इतना ही उल्लेख है कि यह पत्र सेंट फ्रांसिस नामके एक इतालवी कन्वेंटकी मठवासिनियोंको लिखा गया था।

३२९. पत्र : मीराबहनको

[५][1] अक्टूबर, १९३२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र आज (बुधवारको) आया। मैंने दाये हाथसे लिखा था। तुम्हे लिखावट साफ इसलिए मालूम हुई कि शारीरिक दुर्वलताके कारण मैंने अक्षर मज-बूरन धीरे-धीरे वनाये थे। बाई कोहनीमे कुछ गड़वड थी। कलतक कतई दर्द नही था। लेकिन आज कुछ ऐसा महसूस हो रहा है कि मास भरनेके साथ-साथ दर्द फिर शुरू हो जायेगा। यदि ऐसा हुआ तो उसकी चिन्ता करनेकी जरूरत नही। वेशक, कताई मै पूरी, यानी कमसे-कम २०० तार, रोज कर रहा हूँ। केशू एक नया गाडीव लाया था। वह बहुत ही अच्छा चलता है। मेरे खयालसे मुझे डेढ़ घटेसे अधिक नही लगता। मेरा वजन ९९ पौडपर टिका हुआ है। आजकल चूंकि मै कुछ व्यायाम करता हूँ, इसलिए वजन तेजीसे न बढ़ सकता है और न बढ़ना चाहिए। आज मैंने दो पौड दूध और पहली बार २० खजूर लिये है। बा दिनमे मेरे साथ रहकर मुझे खिलाती-पिलाती और सेवा-शुश्रूषा करती है। पत्र-व्यवहारका काम वहुत ज्यादा वढ गया है, इसलिए उसमे वहुत समय देना पड़ता है।

किसनको एक पत्र लिखा था, पता नही उसे मिला या नही।

अगर तुम नारणदाससे मिलना चाहो तो उसे तुमसे मिलनेकी अनुमति प्राप्त हो गई है। क्या तुमको सप्ताह-भरमे इकट्ठे हुए सारे पत्र मिल जाते है या सप्ताहमे केवल एक ही मिलता है?

तो तुम्हारी समझमे आ गया कि कुछ दिनो या महीनोके निरीक्षणसे भी तुम कोई सिद्धान्त नही बना सकती। अब नमककी मात्रा यन्त्रवत् निश्चित करनेकी कोशिश न करो। अनुभवसे उसकी उचित मात्रा अपने-आप निश्चित हो जायेगी। कभी-कभी छोड देना वरावर लाभदायक ही रहेगा। अगर तुम्हे वहुत गरमी लगती हो और ठंडा पानी बरदाश्त कर सकती हो तो तुम्हे दो-तीन वार ठडे पानीसे स्नान करना चाहिए, लेकिन वहुत जल्दी। गहरी साँस भी लेकर देखना चाहिए। इससे शरीर तुरन्त शीतल हो जाता है। जैसा सीटी वजाते समय करते है, वैसा ही करके मुँहसे साँस लेनी पड़ती है। खुली हवामे जाकर गहरी साँस लेनेका प्रयत्न करोगी, तो उसी क्षण ठण्डक मालूम होगी। और ताजा फल लेनेमे कजूसी न करना। नारगियाँ जितनी चाहो, लेना और विना पकाये हुए (मगर पके) टमाटर भी लेना।

महादेव गुरुदेवको तुम्हारा सन्देश सुनाना और तुम्हारी ओरसे उनके पैर छूना भूल गया था। इसलिए तुम्हारा पत्र पासमे होनेके कारण मैंने वह अश उन्हे पढकर

१. साधन-सूत्रमें "६" है, लेकिन बुधवार, जिस दिन गांधीजी ने पत्र लिखा, ५ अक्टूबरको था।

सुनाया, जो उन्हे अटपटा तो बहुत लगा, मगर मैंने तुम्हारी तरफसे उनके पैर छू लिये। वे मौन बैठे रहे और अपनी मुद्रासे उन्होने कृतज्ञता प्रकट की।

मुझे खुशी है कि तुम और किसन ठीक पूनियाँ बनाना सीखनेमें लगी हुई हो। यह बारीक कताईकी कुजी है। अभी तो मै ४५ नम्बरका सूत बिलकुल आसानीसे कात लेता हूँ। कदाचित् सूत इससे भी बारीक ही हो। कल जाँचा जायेगा।

हॉरेस, एस्थर, म्यूरियल और दूसरे बहुत-से मित्र, जो मुझे लिखते रहते है, हमेशा तुम्हारा उल्लेख करते है और तुमतक अपना स्नेह पहुँचा देनेको कहते है। मगर ये सन्देश पहुँचानेमे तो मै बहुत ही ढीला हूँ। मुझे यहाँ उन इतालवी बहनोका उल्लेख करना भी नही भूलना चाहिए। मुझे वे बहुत सुन्दर पत्र भेजती रही है।

तुम दोनोको प्यार।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४४) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९७१० से भी

३३०. पत्र : वीरेन्द्रप्रकाशको[1]

५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय मित्र,

स्वामी दयानन्दजी महाराजके प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित करनेका मेरे खयालसे, इससे अधिक कारगर तरीका और कोई नही हो सकता कि प्रत्येक आर्यसमाजी सुधारकी इस लहरमे अपनी सारी शक्ति हरिजनोके ध्येयमे लगा दे।

आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४५) से। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०९ से भी

१. पूरा नाम "दैनन्दिनी, १९३२" से लिया गया है। साधन-सूत्रमें केवल 'वीरेन्द्र' दिया गया है।

३३१. पत्र : फ्रांसिसका स्टैंडेनेथको[1]

५ अक्टूबर, १९३२

मेरा यह कथन कि यूरोपमे लोग किसी-न-किसी तरहका समझौता किये विना नही रह सकते, निश्चय ही सत्यवान-जैसे मनुष्यके लिए नही था। परन्तु आपको और मुझे उनके वारेमे कोई निर्णय नही देना चाहिए। आखिर दृढसे-दृढ व्यक्तिको भी कुछ हृदतक समझौता करना पडता है। दूसरोके लिए नियम निर्धारित करना किसीके लिए भी सम्भव नही है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०७

३३२. पत्र : एडा वेस्टको

५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय देवी,

तो तुमने भी उपवास रखा! यह तुम्हारे योग्य ही था। अपनी खोई हुई शक्ति मै पुन तेजीसे प्राप्त कर रहा हूँ। यह सब एक बहुमूल्य अनुभव था। मैंने बहुत-से और इससे लम्बे उपवास रखे है, पर उनमे से कोई भी इतना आनन्ददायी नही रहा था।

लगता है कि वहाँके कार्यका तुमपर बहुत अधिक जोर पड़ रहा है। तुम्हें निश्चय ही अपनी सामर्थ्यसे अधिक काम नही करना चाहिए।

बा और देवदास आजकल अकसर मुझसे मिलते है। मणिलाल एक-दो दिनमे बम्बई पहुँचनेवाला है। बेचारा लड़का! वह मुझे मरता देखने आ रहा है। उसे भारी निराशा होगी। बा बूढी हो गई है।

सप्रेम,

भाई

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४४३५) से, सौजन्य: ए० एच० वेस्ट

१. साधन-सूत्रमें पत्र पानेवालेका नाम नहीं दिया गया है, किन्तु "दैनन्दिनी, १९३२" में ५ अक्टूबरको गांधीजी ने जिन लोगोंको पत्र लिखे थे उनमें स्टैंडेनेथका नाम भी है। पत्रमें उल्लिखित सत्यवान नामक सज्जन फ्रांसिसका स्टैंडेनेथके पति फ्रेडरिक स्टैंडेनेथ थे।

३३३. एक पत्र

५ अक्टूबर, १९३२

श्री लॉयड जॉर्जके उद्यानसे आनेवाली यह बयार मुझे बहुत पसन्द है, क्योकि इसमे उनके स्नेहकी गन्ध व्याप्त है।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०७

३३४. एक पत्र

५ अक्टूबर, १९३२

अब वह उपवास चूंकि अतीतका विषय बन गया है और उसने शायद अपना औचित्य भी सिद्ध कर दिया है, इसलिए [मै मानता हूँ कि] जॉर्ज लकास्टर अब यह आग्रह नही करेगे कि मै उसकी नैतिक भूमिकाकी चर्चा करूँ। ईश्वरके सकेत आनेवाली किसी चीजका मर्म बुद्धिसे पूरी तरह समझाया भी तो नही जा सकता।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०७

३३५. एक पत्र

५ अक्टूबर, १९३२

हाँ, ये दिन बड़े अद्भुत रहे है। मै तो यही आशा करता हूँ कि यह उत्साह मन्द नही पड़ेगा।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०९

३३६. पत्र : बद्रीदत्त पाण्डेको

५ अक्टूबर, १९३२

आपका दुःख[1] अवर्णनीय है। लेकिन सुख और दुःख दोनो ईश्वरदत्त हैं। इसलिए दोनोका हम स्वीकार शान्तिपूर्वक और एक ही भावसे करे। और मौतका डर क्यो? वह तो सबके लिए है। जो गये वे गये नही है, जो रहे वे रहे नही है। दोनो हैं ही। सिर्फ स्थान-भेद है। यह तो हुई ज्ञानवार्ता। ईश्वर आप दोनोको शान्ति देवे, सहनशीलता देवे।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०९

३३७. पत्र : खगेन्द्रप्रिया बरुआको

६ अक्टूबर, १९३२

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र, खादीका टुकडा और मोजे मिले। इन सबके लिए धन्यवाद। जरूरत पड़नेपर उनका उपयोग करूँगा। तुमने अप्रैलमे [खादीका] जो सुन्दर टुकड़ा भेजा था, वह भी मिल गया था। उसे मैं अब भी प्रतिदिन ओढ़ता हूँ। उसकी प्राप्तिकी सूचना तो मैंने १५ अप्रैलको[2] भेज दी थी। आश्चर्य है कि तुम्हे वह पोस्ट-कार्ड नही मिला।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्रीमती खगेन्द्रप्रिया बरुआ
नवगाँव
असम

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी डब्ल्यू० ९५५२)से।

१. बद्रीदत्त पाण्डेको दुहरा सदमा पहुँचा था। उनके पुत्रकी पानीमें डूब जानेसे मृत्यु हुई थी और भाईकी दुःखद मृत्युके उस आघातको सहन न कर पानेके कारण पुत्रीने भी अपने प्राण त्याग दिये थे।
२. देखिए खण्ड ४९, पृष्ठ २९७।

३३८. पत्र : ई० ई० डॉयलको

६ अक्टूबर, १९३२

प्रिय कर्नल डॉयल,

पिछले महीनेकी[1] २९ तारीखको मैंने मेजर भण्डारीके नाम एक पत्र लिखा था, और मुझे मालूम हुआ है कि उसे आपने सरकारके पास भेज दिया था। सरकारकी ओरसे उसका उत्तर अबतक नही मिला है और मैं आतुरतासे उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। इसी बीच दक्षिण भारतमे श्रीयुत केलप्पनके उपवासके सिलेसिलेमे मुझे कालिकटके जमोरिनके नाम एक लम्बा तार[2] भेजना पडा था। तार अवलोकनार्थ सरकारके पास भेजा गया था, और जहाँतक मैं जानता हूँ, वह जमोरिनके पास अवतक नही पहुँचा है। अब बात ऐसी है कि यह तो जीवन-मरणका प्रश्न है और यद्यपि मेरे कहनेपर श्रीयुत केलप्पनने उपवास स्थगित भी कर दिया है, फिर भी यह किसी प्रकार नही कहा जा सकता कि वे सकटसे निकल आये हैं। और चूंकि मैंने इसमे सफलतापूर्वक हस्तक्षेप किया, इसलिए अब तो अनिवार्यत मेरा सम्वन्ध भी इस मामलेसे जुड़ गया है। विवादके इस प्रकरणमे कालिकटके जमोरिन मुख्य पात्र हैं। श्रीयुत केलप्पनने अपना उपवास केवल तीन महीनेके लिए स्थगित किया है। इसलिए समय गँवानेकी गुजाइश नही है। सो मैं यह जानना चाहूँगा कि यह तार जमोरिनको कब भेजा जायेगा और मुझे अस्पृश्यताके सम्वन्धमे पत्र-व्यवहार करनेकी छूट है अथवा नही। देर करना खतरनाक है और परेशानीका कारण वना हुआ है।

इस सम्वन्धमे कुछ साथी-कार्यकर्त्ताओसे मिलना भी मेरे लिए जरूरी है। इस सम्बन्धमे सरकारसे जल्दी निर्णय करवा सके तो कृपा होगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० २५७। जी० एन० ३८६२ से भी।

१. यहाँ साधन-सूत्रमें गल्तीसे ऐसा शब्द पड़ गया है, जिसका मतलब होगा "इसी महीनेकी"।
२. देखिए "तार · कालिकटके जमोरिनको", ३-१०-१९३२।

३३९. पत्र : श्रीमती लिंडसेको

६ अक्टूबर, १९३२

आपके मधुर पत्रके लिए धन्यवाद। हाँ, अगर भगवान् पण्डितोको ही मिल सकता होता तब तो यह बडे खेदकी बात होती। मेरी भावना आपकी धोबिनकी भावनाके साथ मिलती है। एक बार ईश्वरकी खोजके लिए एक वैज्ञानिक अभियान चलाया गया। ये वैज्ञानिक हिन्दुस्तान आये। यहाँ वह ब्राह्मणोके घर या राजाओके महलमे नही, बल्कि एक अछूतकी झोपडीमे मिला। इसीलिए मै ईश्वरसे कहता रहा हूँ कि मुझे अछूत बना दे। पचास बरसकी परीक्षाके बाद मै अछूत बननेके योग्य पाया गया हूँ। इस बातसे मेरा मन आनन्दसे भर गया है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११२

३४०. पत्र : पद्मजा नायडूको

६ अक्टूबर, १९३२

तेरी गैरमौजूदगी मुझे बहुत खटकती है। फूलदानियाँ हमेशा तेरी याद दिलाती है। मगर अपने प्रियजनोकी जुदाई तो कैदीका भाग्य ही है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११३

३४१. पत्र : पाटणकरको[1]

६ अक्टूबर, १९३२

पत्र और प्रसादके लिए धन्यवाद। अखण्ड सप्ताहके लिए सभी व्यापारियोको मेरी ओरसे धन्यवाद दें। मेरा निश्चित विश्वास है कि उपवास-सप्ताहमे जो जागृति देखी गई, वह ऐसे आध्यात्मिक प्रयत्नोके परिणामस्वरूप ही हुई।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११२

१. साधन-सूत्रमें यह नहीं बताया गया है कि यह पत्र किसको लिखा गया था। लेकिन "दैनन्दिनी, १९३२" में उनका नाम बेलगाँव-निवासी पाटणकर दिया गया है।

३४२. पत्र : हरिभाऊ पाठकको

६ अक्टूबर, १९३२

आपके प्रश्नोका सक्षेपमे उत्तर देते हुए बस इतना ही कहूँगा :

रोटी-बेटी-व्यवहार अस्पृश्यताको समूल नष्ट करनेके कार्यक्रमका कोई अभिन्न अग नही है। ये दोनो तो एक अलग सुधारके विषय है और एक-न-एक दिन हिन्दू समाजकी सारी जातियोको इन्हे स्वीकार करना ही होगा।

जबरदस्ती न कुछ किया जा सकता है और न किया जाना चाहिए। उपवास आदिका उद्देश्य लोगोको अपनी इच्छाके विरुद्ध आचरण करनेको बाध्य करना नही, बल्कि उन्हे सोच-समझकर काम करनेको प्रेरित करना होता है। यदि अस्पृश्य अब अस्पृश्य नही रह गये है तो फिर हिन्दू समाजके अन्तर्गत वे है क्या? मेरा अपना विचार है कि आज तो वर्ण-व्यवस्था टूट गई है। आज न कोई सच्चा ब्राह्मण रह गया है, न सच्चा क्षत्रिय और न सच्चा वैश्य। हम सब शूद्र है, अर्थात् एक ही वर्णके है। यदि यह स्थिति स्वीकार कर ली जाये तो बात आसान हो जाती है। यदि इससे हमारे अहकी तुष्टि नही होती तो यही मान ले कि हम सब ब्राह्मण है। निश्चय ही, अस्पृश्यता-निवारणका मतलब ऊँच-नीचके भावका समूल नष्ट कर दिया जाना है। जो यह कहता है, 'मै तो दूसरे लोगोसे बढकर हूँ' वह अपने-आपको गिराता है; जो यह कहता है कि 'मै तो दूसरे मानव-बन्धुओके बीच एक अदना-सा आदमी हूँ' वह अपनेको ऊपर उठाता है। मेरे उपवासका उद्देश्य इस समस्याको सतही तौरपर हल करना नही, बल्कि हम सबको सच्चा बनाना था।

काश, मै कोई अवधि निश्चित कर पाता। मगर मै कौन होता हूँ अवधि निश्चित करनेवाला? लेकिन अपने अतीतके अनुभवोके आधारपर मै इतना कह सकता हूँ कि यदि निश्चित गतिसे यह सुधार होता रहा और उसके पीछे कोई पाखण्ड या ढोग नही रहा तो इस विषयको लेकर मुझे आगे कोई उपवास नही करना पडेगा। सच्ची प्रगति तो स्वत दिखती है। सच्ची प्रगति हुई तो उसके प्रकाशका अनुभव हरिजन स्पष्ट रूपसे करेगे। इसलिए आपसे निवेदन करूँगा कि इस सम्बन्धमे समयकी कोई मर्यादा निश्चित करनेके बारेमे चिन्ता न करे।

हम सभी किसी-न-किसी प्रकारकी मूर्तियोमे विश्वास करते ही है। मै भी करता हूँ। खुद मेरे लिए किसी साधारण मन्दिरमे कोई आकर्षण नही है। लेकिन, उसका एक जबरदस्त आध्यात्मिक महत्त्व है। इसलिए हरिजनोके लिए उसके द्वार खुले होने चाहिए। आवश्यकता मन्दिरोके विनाशकी नही, उनके सुधारकी है।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०९-१०

३४३. पत्र : वी० रामजीरावको

६ अक्टूबर, १९३२

प्रिय मित्र,

पत्रके लिए धन्यवाद। मुझे पूरी आशा है कि अस्पृश्यता-निवारणके मामलेमे आन्ध्रदेश इस देशके अन्य हिस्सोसे पीछे नही रहेगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री वी० रामजीराव
'दीनबन्धु' कार्यालय
मसुलीपट्टम

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५७८)से।

३४४. एक पत्र

६ अक्टूबर, १९३२

चोर ईश्वरके चाहनेसे तो चोरी नही करता, लेकिन उसका चोरी करना भी उसकी अनुमतिके बिना नही हो सकता।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११३

३४५. एक पत्र

६ अक्टूबर, १९३२

गरीबोकी सस्थासे मोची आदि भाइयोको अलग रखना निश्चय ही अधर्म है। किन्तु इस दोषको दूर करनेके लिए तुम तत्काल उपवास शुरूकर दो, यह उचित नही माना जायेगा। तुम्हे बुजुर्गोसे विनती-प्रार्थना करनी चाहिए। तुम्हे उनकी सेवाके द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करनी चाहिए। इसके लिए किसीको मजबूर नही किया जा सकता।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११३

३४६. तार : शौकत अलीको[1]

७ अक्टूबर, १९३२[2]

मौलाना शौकत अली
खिलाफत कार्यालय
बम्बई

खुशी है कि आपने अमेरिका जाना मुलतवी कर दिया। वह दिन बड़ा भव्य होगा जब पक्की हिन्दू-मुस्लिम-सिख एकता स्थापित हो जायेगी। शेष तो रातके बाद दिनकी भाँति अपने-आप हो जायेगा। आप ठीकसे देखेंगे तो अब भी मुझे अपनी जेबमें ही पायेंगे। सस्नेह।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११५। भारत सरकार, होम डिपार्टमेंट, राजनैतिक फाइल न० ३१/९५/३२ भी, सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

३४७. एक पत्र[3]

७ अक्टूबर, १९३२

मेरे विचारसे तो निस्स्वार्थ सेवासे, उसका प्रकार जो भी हो, आत्मशुद्धि अवश्य होती है। आर्थिक और नैतिक विकास साथ-साथ होना चाहिए। आत्मा वह है जो शरीरको प्राणवान् बनाती है। आत्मज्ञान आत्मशुद्धिसे प्राप्त होता है। यदि भोजन सबके लिए जरूरी है तो प्रार्थना भी जरूरी है।

कोई पागल हो जाये, तो उसकी स्वतन्त्रता छीन ली जानी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११४

१. इस तारको सरकारने रोक लिया था, देखिए "पत्र : भारत सरकारके गृह-सचिवको", ७-११-१९३२।

२. महादेवभाईनी डायरीके अनुसार।

३. साधन-सूत्रसे यह पता नहीं चलता कि यह पत्र किसको लिखा गया था। किसी सज्जनने धारवाड़से गांधीजी को एक लम्बा पत्र भेजा था।

३४८. एक पत्र

७ अक्टूबर, १९३२

प्रिय बहन,

मेरी अन्तरात्मा मुझसे कहती है कि आध्यात्मिक एकता अपने सम्पूर्ण मन और प्राणसे आजके कृत्रिम और झूठे जीवनका विरोध करनेसे ही सम्पन्न की जा सकती है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९६८४) से, सौजन्य. विश्वभारती म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी, शान्तिनिकेतन। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११७ से भी

३४९. पत्र: कहान चकु गांधीको

७ अक्टूबर, १९३२

आपका कृपापूर्ण पत्र मिला। आपकी कृपाके साथ जो माँग जुड़ी हुई है, वह ऐसी है कि मुझे अपनी पचास वर्षकी मान्यता और कार्यका त्याग कर देना चाहिए। किसीकी कृपाके वशीभूत होकर भी ऐसा कैसे किया जा सकता है?

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११४

३५०. पत्र : मणिशंकर गणपतरामको

७ अक्टूबर, १९३२

रोटी-बेटी-व्यवहार अस्पृश्यता-निवारणका अग नही है। इसमे किसीके साथ जवरदस्ती करनेकी तो बात ही नही है, लेकिन कोई रोटी-बेटी-व्यवहार रखे तो जिस तरह प्रत्येक जातिके बीच ऐसा व्यवहार करनेवाले को रोका नही जाता उसी प्रकार उसे भी रोकना नही चाहिए। अस्पृश्यता-निवारण और यह व्यवहार अलग-अलग चीजें हैं।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११४

३५१. पत्र : निर्मला बा० मशरूवालाको

७ अक्टूबर, १९३२

चि० निर्मला,

आशा है, मेरे लिखे कार्ड[1] मिले होगे। यदि कोई नासिक जाये अथवा पत्र लिखे तो वह इतनी बात ध्यानमे रखे। थानेके लिए भी उसका उपयोग किया जा सकता है।

किशोरलालके दो तथा गोमतीका एक पत्र मिला।

उपवासके औचित्य-अनौचित्यके बारेमे अव लिखना अनावश्यक लगता है। उसमे दोष तो अवश्य था किन्तु उसके बिना काम चलनेवाला नही था। उसे अहिंसा का आखिरी कदम माना जा सकता है। मेरे शरीरमे ताकत आती जा रही है। वास्तवमे काफी ताकत आ भी चुकी है। वजन घटकर ९३॥ पौ० रह गया था जो अब ९९ पौ० हो गया है। पहले १०१ पौ० था। मेरा विश्वास है कि उसके कारण कुल मिलाकर शरीरको लाभ ही पहुँचना चाहिए। मै भोजनमे एक सेर दूध, नौ नारगियाँ या मुसम्बियाँ, अनार या अगूरका रस और एक बार लौकी या टमाटरका रस लेता हूँ। सुबह-साँझ दोनो समय मिलाकर डेढ घटे घूमता हूँ। उससे मुझे कोई खास थकावट नही महसूस होती। काफी-सारे पत्र लिखता हूँ। कमसे-कम दो सौ तार सूत कातता हूँ और ४० नम्बरतक जाता हूँ। बा दिन-भर मेरे साथ रह सकती है। देवदासको मुझसे मुलाकात करनेकी अनुमति मिली हुई है।

हमारे लिए यथासम्भव महीन सूत कातना आवश्यक है। महीन वस्त्र पहननेके दोषको मै भी स्वीकार करता हूँ किन्तु महीन कपड़ेका कुछ अन्य उपयोग भी है।

१. इनमें से एकके लिए देखिए "पत्र: निर्मला बा० मशरूवालाको", ३-१०-१९३२।

कलाकी दृष्टिसे उसकी बहुत आवश्यकता है। महीन सूत कातते हुए कई प्रकारकी खोज की जा सकती है तथा इससे हाथकी क्रियाओको वढावा मिलता है। गुजरे जमानेमे जबरदस्ती बारीक सूत कतवाया जाता था। इस जबरदस्तीके प्रायश्चित्त स्वरूप हमे भी कुछ बारीक सूत यज्ञार्थ कातना चाहिए ताकि जहाँ ऐसे वस्त्रकी आवश्यकता सिद्ध हो वहाँ यज्ञार्थ काता गया सूत मिल सके। यदि हमे महीन सूतकी पूरी मजूरी देनी पडे तो उसकी कीमत बहुत अधिक बढ जायेगी।

किशोरलालने उपवास-सप्ताहके दौरान हजार तार कातनेका जो लोभ किया वह उचित नही था। इस सम्बन्धमे उन्हे अपनी सीमाको अवश्य स्वीकार कर लेना चाहिए। इससे सहज नम्रता आती है। कताईके बजाय हाथका कोई और आसान श्रम किया जा सकता है। किन्तु जो शारीरिक श्रम नही कर सकते, ऐसे लोग भी अपने विचारो और लेखोसे सेवा तो करते ही है। हाथ होते हुए भी जो उनका उपयोग नही करता, वह चोर है।

"मै तो चाहता हूँ, सर्वस्व मेरा सदा किसी प्राणीके दुखनाशार्थ हो", यह संशोधन मुझे पसन्द आया है।[1]

किशोरलाल जानते है कि अनशनके धार्मिक औचित्यके बारेमे नाथको सन्देह था। मेरे आग्रहपर उपवासके दौरान मुझसे उन्होने कुछ चर्चा की थी। आखिरकार समाधान हुआ या नही, यह मै नही जानता।

रवीन्द्रनाथने इस बार हद कर दी। हम दोनो एक-दूसरेके बहुत नजदीक आ गये है। मुझे नही लगता कि मैने कोई चीज छोड दी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २८८८) से, सौजन्य निर्मलाबहन सर्राफ

३५२. पत्र : लिलि ही० शाहको[2]

७ अक्टूबर, १९३२

मुझे पारण करानेका अर्थ समझती है? तेरे हाथसे पारण करनेके लिए क्या मुझे फिर उपवास करना चाहिए?

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११४

१. मूल संस्कृत-पंक्ति इस प्रकार है: "कामये दुःखतप्तानाम् प्राणिनामार्तिनाशनम्।"

२. हीरालाल शाहकी पुत्री, अब लिलि आनन्द पण्ड्या

३५३. पत्र : स्वरूपरानी नेहरूको[1]

७ अक्टूबर, १९३२

प्रिय भगिनी,

आपका खत मिला है।

स्वास्थ्यके लिये दाक्तरको बुलानेकी आवश्यकता रहे तो बुलानेमे संकोच नहि रखना। फल तो काफी खाती है न? ईश्वर शीघ्र अच्छा कर देवे।

मैं आखरी जवाब न दु तब तक यही रहनेका निश्चय किया यह मुझे बहोत अच्छा लगा है। लडके-लडकीयोको तो अच्छा लगेगा हि। उनको मेरे आशीर्वाद दीजीये।

आपकी प्रसादी मिल चुकी है। लेकिन हमारे बीचमे इस विनयकी कोई जरूरत है क्या? ऐसे तो वहोत फल प्रेमलीलाबहन और रामनारायणजी की पत्नी भेज रही है।

सरूप[2], कृष्णासे[3] लिखो कि बगैर तारके मै उनका दिल पहचान सकता हु।

यहा आप अछूतोकी सेवा कर रही है सो तो मै देख रहा हु। बा मुझे सब बात सुनाती है।

आपका,
मोहनदास

मूलसे : गाधीजी-इन्दिरा गाधी पत्र-व्यवहार फाइल; सौजन्य नेहरू स्मारक सग्रहालय तथा पुस्तकालय

३५४. पत्र : चि० य० चिन्तामणिको

८ अक्टूबर, १९३२

इसमें माफी मॉगनेकी क्या जरूरत है? पहले भी आपका पत्र आया था। आशा है, उसके जवाबमे लिखा हुआ मेरा पत्र आपको मिल गया होगा।

आपके बताये हुए मार्गको[4] अपनानेमे ऐसी कठिनाइयाँ है, जिन्हे पार नही किया जा सकता। कैदी होनेके कारण मै उन सबकी चर्चा नही कर सकता। अगर कर सकता होता, तो मेरा विश्वास है कि अपनी दलीलोके ठोस होनेका मै आपको यकीन करा सकता हूँ। इतना आपसे कह दूं कि सरकार और लोगो या काग्रेसके बीच अमन कायम हो जाये, इसके लिए मुझसे ज्यादा उत्सुक और कोई नही हो सकता।

१. मोतीलाल नेहरूकी पत्नी।

२ व ३. स्वरूपरानीकी कन्याएँ।

४. एक पत्रमें चिन्तामणिने सविनय अवज्ञा स्थगित करनेका सुझाव दिया था।

उम्मीद है, आपकी तवीयत अच्छी होगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्रीयुत चि० य० चिन्तामणि
'लीडर' कार्यालय
इलाहाबाद

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐक्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० २२३। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११७-८से भी।

३५५. पत्र : मोहनलालको

८ अक्टूबर, १९३२

भाईश्री मोहनलाल,

तुम्हारा यह दृष्टिकोण ठीक है कि रोटी-बेटी-व्यवहार अस्पृश्यता-निवारणका आवश्यक अग नही है। अत इस मामलेमे किसीपर जोर-जबरदस्ती की ही नही जा सकती। किन्तु जो लोग हरिजनोके साथ स्वेच्छासे ऐसे सम्बन्ध स्थापित करनेको प्रेरित हो, उन्हे रोका भी नही जा सकता, वैसे ही जैसे कि स्पृश्य मानी जानेवाली जातियोमे इस प्रकारके आपसी सम्बन्धको कोई रोकता नही। अस्पृश्यता-निवारणका अर्थ है कि हिन्दू-मात्र जिन स्वाभाविक मानवीय अधिकारोका उपभोग करते है, वे सब अधिकार हरिजनोको भी देना और दिलाना।

मोहनदास गाधी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २३२)से।

३५६. पत्र : मोहनलाल एम० भट्टको

८ अक्टूबर, १९३२

मुहम्मद काजीके रोजेके निश्चयमे कुछ तत्त्व है। सकटके समय रोजेका फरमान इस्लाममें है। इसी तरह एक और मुसलमान भाईने इस दौरान रोजे रखे थे। रोजा उपवास नही है। इस मामलेमे मुसलमान भाइयोका फर्ज यह है कि वे यह तीव्र इच्छा करें कि जैसे अछूतोके प्रश्नका निपटारा हो गया है, वैसे ही हिन्दू-मुसलमान-सिख प्रश्नका भी निपटारा हो जाये, और उस दिशामे वे अपना कर्त्तव्य-पालन करे।

मेरे उपवासके पीछे इस प्रश्नके धार्मिक हलका उद्देश्य तो था ही, और हिन्दू जनता उसे आसानीसे समझ गई। उससे जो प्रचण्ड जागृति हुई है वह, तो धार्मिक ही है।

सरकारी निर्णयके फलस्वरूप धार्मिक दृष्टिसे तो अछूतोका सर्वनाश ही हो रहा था। उसकी तुलनामे राजनैतिक प्रश्न तो नगण्य था। राजनीति धर्ममे समाई हुई है। राजनीति स्वतन्त्र चीज नही है। अछूतोके प्रश्नके धार्मिक हलमे सभी देशोकी तमाम कुचली हुई जातियोका समावेश हो जाता है। यह बात ईसाई और मुस्लिम समाज भी समझ गये दीखते हैं।

शराब न पीनेवाला मजलिसमे शराबका प्याला आगे बढाये, तो इसमे मुझे सिद्धान्त-दोष नही दीखता है। मेरा खयाल है कि ऐसी मजलिसमे जानेके बाद प्याला आगे बढ़ाना धर्म है। इसमे दभ नही है। यह तो एक ऐसी रीति है जिससे शराब पीनेवाले का प्रेम चुपचाप प्राप्त किया जा सकता है। यह दलील पक्के मदिरानिषेधक पर ही लागू होती है। प्रश्न भी ऐसोको ध्यानमे रखकर ही किया गया है। यह जवाब अच्छी तरह समझमे न आया हो, तो इसका अनर्थ हो सकता है। मगर तुम्हारे पास यह उत्तर भेजा जाये, तो इसमे मुझे कोई भय नही दीखता।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११६-७

३५७. पत्र : छगनलाल जोशीको

८ अक्टूबर, १९३२

चि० छगनलाल (जोशी),

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे जैसा योग्य लगे, करो। यहाँसे मै तुम्हारा मार्गदर्शन कर ही नही सकता। जो प्रतिज्ञा ली है, उसपर विचार करना। उसका रचमात्र भी भंग नही होना चाहिए। इसका मतलब यह नही कि इस विषयमे मैं कुछ जानता हूँ। अभी मुझे सब-कुछ याद भी नही है, और इसीसे इस बातपर मेरा आग्रह रहा है कि जो-जो प्रतिज्ञा ले, उसे उसको उसी समय लिख लेना चाहिए। ऐसा नही करनेसे आदमी बादमें ढीला पड़ जाता है और फिर अपनी प्रतिज्ञाके पालनमे भी ढिलाई करता है। मुझे खुद भी इस तरह पछताना पड़ा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५५११) से।

३५८. पत्र : रमाबहन जोशीको

८ अक्टूबर, १९३२

चि० रमा (जोशी)[1],

मुझसे न लिखनेका अनुरोध करके क्या तुम खुद पत्र लिखनेसे बच निकलना चाहती हो? लेकिन, जब मैं [मजेमें] खाता-पीता, चलता-फिरता हूँ तो ऐसा कैसे हो सकता है कि समय मिलनेपर भी पत्र न लिखूं? विमु यहाँ घूमने चली आई, यह तो ठीक किया, लेकिन उसने अन्त्यज-लड़कीकी तरह काम शुरू किया या नहीं? धीरू सेठ कुछ समझदार हो गया लगता है।

उसका स्वास्थ्य ठीक हुआ या नहीं?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३३६)से।

३५९. पत्र : बबलभाई मेहताको

८ अक्टूबर, १९३२

चि० बबल,

तुम्हारा पत्र मिला। अब तो मुझमे काफी ताकत आ गई है। अपने समयके हर क्षणका उचित उपयोग करना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४४७)से।

१. छगनलाल जोशीकी पत्नी।

३६०. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

८ अक्टूबर, १९३२

चि० पण्डितजी,

तुम्हारा पत्र मिला।

प्रीतिभोज [जिनमे अस्पृश्य भी शामिल हो] अस्पृश्यता-निवारणका अग तो नही है किन्तु वे उसका परिणाम है। और मुझे वे पसन्द भी है। उनका विरोध तो होता ही रहेगा किन्तु यदि यह प्रवृत्ति जनतामे फैल चुकी होगी तो उसे कोई रोक नही सकता। भोजन आदिमे छुआछूतके बारेमे कोई धार्मिक प्रमाण नही मिलता।

हम मूर्तिपूजाको प्रोत्साहन नही देते किन्तु उसका निषेध भी नही करते। जब तक हिन्दू धर्म है तबतक किसी-न-किसी रूपमे मन्दिर बने ही रहेगे। हिन्दू धर्म जिन मन्दिरोको मान्यता देगा, उनमे अन्त्यजोको प्रवेश करनेका अधिकार होना ही चाहिए। यदि हम अस्पृश्यताको मिटाना ही चाहते है तो इसके अतिरिक्त और कुछ सम्भव ही नही है। इसलिए हमारा इससे कोई विरोध नही है कि आश्रमवासी मन्दिर-प्रवेशको प्रोत्साहन दे, इतना ही नही बल्कि उसे प्रोत्साहित करना उनका कर्त्तव्य है। धार्मिक दृष्टिसे यह प्रश्न अन्त्यजोके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है और इसमे हिन्दू जातिकी परीक्षा है।

अस्पृश्यता-निवारणके लिए आश्रमवासी बाहर निकल सके या निकले, इसे मै आवश्यक मानता हूँ। आश्रमवासी भी आखिर बाहर निकलकर जनताके बीच फैल जानेके लिए ही तो तैयार हो रहे है। आश्रममे जो लोग गणेश-पूजादि करना चाहे उन्हे रोका ही नही जा सकता।[1] किन्तु मेरे विचारमे आश्रम [सस्था] के रूपमे हमे तटस्थ रहना चाहिए और इसलिए आश्रममे सार्वजनिक मूर्ति-मन्दिर न बनने दे। हमारा सार्वजनिक मन्दिर तो प्रार्थना-भूमि है, जिसकी दीवारे दिशाएँ है, जिसकी छत आकाश है और जिसमे मूर्ति निराकार भगवान् की है। यदि ऐसा न करे तो हमे मस्जिद, अगियारी, गिरजा, सिनेगोग आदिके लिए स्थान रखना चाहिए। यह ठीक है कि आज हिन्दू अधिक है किन्तु हम तो यह चाहते है कि अन्य धर्मावलम्बी भी आ जाये। सब धर्मोके प्रति समभाव रखे तो आजसे हमे ऐसे देवालयोके लिए अपने मनमे तो जगह रखनी ही चाहिए। किन्तु मनमे जगह रखनेसे समभावके विसर जानेकी सम्भावना है, इसलिए अन्य मामलोकी तरह इस मामलेमे भी सयम ही हमारे लिए सुनहरी मार्ग है। यह सब भली भाँति समझ लेना और जबतक समझमे न आये, मुझसे बराबर पूछते रहना। मै थकूंगा नही और अब ऐसे कामोको निपटाने लायक ताकत आ गई है।

१. साधन-सूत्रमें इस वाक्यके कुछ शब्द अस्पष्ट होनेके कारण पढ़े नहीं जा सके। अत. उन शब्दोंकी पूर्ति **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२, पृ० १२७-८ से की गई है।

यह तो मैं भूल ही गया हूँ कि सुन्दरवाई और देशपाण्डेका सम्वन्ध कैसे हुआ। धार्मिक प्रश्न तो पहले जो विवाह हुआ माना गया है, उसके वारेमे था। मैंने तो यह आदर्श सुझाया था कि शिक्षक और शिष्या अथवा एक ही सस्थामे रहनेवाले शिक्षक और शिक्षिकामे विवाह-सम्वन्ध नही होना चाहिए। इसमे किसी तरहका धार्मिक प्रतिवन्ध नही है। यदि किन्हीकी आपसमें विवाह करनेकी इच्छा हो आये तो उन्हे प्रोत्साहित न करे किन्तु उन्हे हम रोक तो सकते ही नही। यह तो सामान्य रूपसे लिख रहा हूँ। इस मामलेमे क्या हुआ था, यह मैं भूल गया हूँ। मेरे आदर्शका पूरी तरह प्रचार भी नही हुआ। इस वारेमे विद्यापीठमे भरती होनेवालोको चेताया भी नही जाता। तो फिर इस आदर्शको हम कैसे लागू कर सकते है? ऐसे मामलोमे अपने आदर्शपर कायम रहते हुए भी हमे उदारवृत्ति अपनानी चाहिए।

वापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २३६) से, सौजन्य : लक्ष्मीवहन ना० खरे

३६१. पत्र : मणिबहन पटेलको

८ अक्टूबर, १९३२

चि० मणि,

तेरा लम्वा पत्र मिल गया था। मेरे लिए तो यह लम्वा नही था। उपवास तो अव गई-वीती वात हो गई। वह ईश्वरकी प्रेरणासे हुआ था, इसलिए शोभापूर्वक निपट गया। अव शरीर फिर वड़ी तेजीसे वन रहा है। शक्ति लगभग आ गई है। दूध दो पौड और ढेरो फल ले रहा हूँ। फलोमे नारगी, मोसम्वी, अनार अथवा अगूर का रस और लौकी अथवा टमाटरका रस लेता हूँ। . . .[1] काफी घूम-फिर लेता हूँ। कमसे-कम २०० तार कातता हूँ — ४५ अकके। पत्र तो काफी लिखता ही हूँ। इसलिए चिन्ताका कोई कारण रह ही नही गया है। बा को दिनमे मेरे पास रहनेकी छूट है। देवदासको मिल जानेकी छूट है। देवदासकी तवीयत अव ठीक है।

तुझे खानेके सपने आते है, उसका थोड़ा-वहुत कारण अपच हो सकता है। ऐसे सपने या तो वहुत भूखे पेट रहनेसे आते है या वदहजमीसे। इन कारणोको ढूँढ़कर उचित उपाय कर और फिर निश्चिन्त रह। जीवन व्रतवद्ध हो तो ये कारण समय पाकर नष्ट हो ही जाते है। दीर्घकालके आवरण एकाएक क्षीण हो जायेंगे, ऐसा माननेका कारण नही है। वे अपना समय लेते ही है। इसलिए घवराना नही चाहिए। निराश भी नही होना चाहिए। प्रयत्नमे शिथिल भी नही होना चाहिए और परिणामके वारेमें नि शंक और निश्चिन्त रहना चाहिए। यही 'गीता' की अनासक्ति है।

१. जेलके अधिकारियोंने यहाँ कुछ शब्दोंको आपत्तिजनक मानकर निकाल दिया था।

उपवासका असर अलग-अलग होता है, इसमें आश्चर्य नहीं। उसका आधार शरीरकी बनावट और मानसिक तैयारीपर है। उपवासकी जिसे आदत ही न हो वह एक दिनके उपवाससे भी घबरा जायेगा और उसकी हिम्मत पस्त हो जायेगी। जिसे आदत है, उसके लिए वह खेल हो जाता है। इसी तरह जिसके शरीरमें चरबी वगैरह है ही नहीं वह बहुत लम्बा उपवास नहीं कर सकता। बहुत चरबीवाला आदमी धीरज रखे तो खूब लम्बा उपवास कर सकता है और शारीरिक दृष्टिसे उसका लाभ उठा सकता है।

बापू और महादेव मौज कर रहे हैं। इतने अधिक एकान्तवासका अनुभव तो हमने कभी प्राप्त किया ही नहीं था। इससे खूब लाभ हुआ है।

तेरा शरीर अच्छा होगा। लीलावती और कमलादेवी अच्छी रहती होंगी। और जो बहनें हों उन्हें आशीर्वाद। लीलावतीसे कहना कि मुझे मुशीका लिखा एक सुन्दर पत्र मिला था। किसी समय मुझे लिखनेकी गुंजाइश हो और वैसी उमंग आये तो लिखे। नन्दूबहनका जो पत्र यहाँ आया है, वह इसके साथ भेज रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-४: मणिबहेन पटेलने, पृ० ८७-९

३६२. पत्र: प्रभावतीको

८ अक्टूबर, १९३२

चि० प्रभावती,

तेरा लम्बा पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। मेरे सारे पत्र तो तुझे नहीं मिले, लेकिन लगता है, दूसरोंकी मार्फत भेजे मेरे आशीर्वाद मिल गये। मेरा उपवास तो अब पुरानी बात हो गई। मुझमें शक्ति आ रही है। दो पौंड दूध, नारंगी, मोसम्बी, टमाटर, लौकी, अंगूर या अनारका रस लेता हूँ। घूम-फिर सकता हूँ। ४५ अंकका कमसे-कम २०० तार सूत भी कात लेता हूँ। और पत्र तो लिखता ही हूँ।

बा दिनमें मेरे पास रहती है, इसलिए चिन्ताकी कोई बात नहीं है। तेरी तबीयत ठीक रहती है, यह बहुत अच्छा है। स्वरूप और कृष्णासे कहना कि माताजी यहीं हैं। उपवासके दौरान मुझसे मिलती रहती थीं। चाँद,[1] तारा,[2] इन्दु वगैरह भी मिल गई थीं। इन्दुका विकास ठीक हो रहा है। कान्ताकी खबर तूने नहीं दी। रानी विद्यावती तेरे ही साथ हो तो उससे कहना कि उसे मैंने पत्र लिखा है। तेरा अध्ययनका उत्साह ठीक है। जितना वहाँ सीखा जा सकता है, सीख ले। जेलसे

१ व २. विजयलक्ष्मी पण्डितकी पुत्रियाँ, चन्द्रलेखा और नयनतारा।

निकलनेपर कुछ अच्छा बन्दोवस्त करूँगा। लेकिन, अधीर न होना। तेरी पवित्रता, धीरज और कर्त्तव्यपरायणता तेरी सच्ची शिक्षा है। इसमे सन्देह नहीं कि पुस्तकीय ज्ञान उसे और भी दीप्त करेगा। इसलिए, ईश्वरकी इच्छा होगी तो तेरी यह चाह भी पूरी होगी। ईश्वर तुझे स्वस्थ रखे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३४३०)मे।

३६३. पत्र : महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

८ अक्टूबर, १९३२

चि० महालक्ष्मी,

मेरा गत सप्ताहका पत्र मिला होगा।

फिलहाल तुमने अन्न छोडकर ठीक किया। दूध-दही, किशमिश, नीबू-सोडा, नारगी, मुसम्बी, ककडी, टमाटर, मूली और सलाद लेनेसे तुम्हारा वजन अवश्य घट जायेगा। बादाम आदि नही खाने चाहिए। यदि कुछ चबाना ही चाहो तो ढाई तोले नारियल चबाना चाहिए। इससे कम ही खाना चाहिए, अधिक नही। माफिक न आये तो छोड़ देना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८२२)से।

३६४. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

[८ अक्टूबर, १९३२][1]

तेरे दोनो पत्र मिल गये है। सच पूछो तो अब कोई ऐसा जाना-माना आदमी नही रहा, जिसका आशीर्वाद अनशनको न मिला हो। इसमे शक नही कि अहिंसाका यह आखिरी शस्त्र है। उसका दुरुपयोग हो रहा है और यह भी सम्भव है कि अभी और ज्यादा दुरुपयोग हो। तथापि इसके दुरुपयोगमे भी कुछ विशेषता है। वह सिर्फ दुरुपयोग करनेवाले को ही नुकसान पहुँचा सकता है। और गहराईसे विचार करे, तो वह भी थोडा ही। हेतु शुभ हो, तो आत्मा कलुषित न होगी, देहकी ही हानि होगी। फिर, ऐसा दुरुपयोग बहुतों-से तो हो ही नही सकता। उपवासकी यातना भोगनेको कितने तैयार होगे?

१. महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११६ से।

मुझमे शक्ति अच्छी गतिसे आ रही है। दो रतल दूध और नारंगी, मोसम्बी, अंगूर या अनारका रस खूब लेता हूँ। कद्दू या टमाटरका रस भी लेता हूँ। वजन घटकर ९३½ पौडतक चला गया था। अब फिर ९९ तक बढ गया है। दिन-भरमे डेढ़ घटे घूम सकता हूँ। पत्र काफी लिख सकता हूँ। इस प्रकार कह सकते है कि अपनी पहलेकी शक्तितक पहुँच गया हूँ। लगभग ४५ नम्बरके कमसे-कम २०० तार कातता हूँ। इसमे बहुत थकावट भी मालूम नही होती। इसलिए चिन्ताका तनिक भी कारण नही है।

तारामती लडकोंके साथ आकर मुझसे मिल गई है। इस बार लगता है कि उसने अच्छी प्रगति की है। लड़के तो दोनो बिलकुल ठीक थे। दिलीप मुझे पत्र लिखा करता है। तारामतीके पत्र नियमित रूपसे आते है।

उपवासमे शारीरिक कष्ट तो हुआ, लेकिन शान्ति-रसका भी खूब पान किया।

आशा है, तेरी तबीयत ठीक होगी।

[गुजरातीसे]

बापुनी प्रसादी, पृ० ११६-७

३६५. पत्र : अमतुस्सलामको

८ अक्टूबर, १९३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम,

तुम्हारा खत आया है। कुदसियाके[1] भाईने खत लिखा है। वह भी इस माहमें आश्रममे चला जायेगा। कुदसिया अब ठीक होगी। मुझे शक्ति आ रही है। तू मुझे मिल गई[2], मुझे अच्छा लगा।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० २५८) से।

१. अमतुस्सलामकी भतीजी।

२. गाधीजी के उपवासके दौरान अमतुस्सलामको उनसे मिलनेकी अनुमति दे दी गई थी।

३६६. पत्र : फ्रेंड्स ऑफ इंडियाके मन्त्रियोंको

९ अक्टूबर, १९३२

सयुक्त अवैतनिक मन्त्रिगण
फ्रेंड्स ऑफ इडिया
४६, लकास्टर गेट
लन्दन, डब्ल्यू० २

प्रिय मित्रो,

आपके सहानुभूतिपूर्ण पत्रोके लिए धन्यवाद। रकमे श्रीयुत घनश्यामदास बिड़लाकी अध्यक्षतामे गठित अस्पृश्यता-विरोधी सघके कार्योको आगे बढानेके लिए उन्हीके पास भेजी जा सकती है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल नं० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० २२४

३६७. पत्र : डॉ० सैयद महमूदको

९ अक्टूबर, १९३२

प्रिय डॉ० महमूद,

आपके दो पत्र मिले — बस आपके यही दो पत्र मुझे प्राप्त हुए है। आशा है, कमलाकी मार्फत भेजा पत्र मिल गया होगा। उस चार वर्षीया बूढीसे कहिए कि उपवास पूरा न कर सकनेके लिए उसे माफ कर दिया गया। बच्चोके उपवाससे ज्यादा अच्छी तो उनकी प्रार्थनाएँ ही होती है। कौन कह सकता है कि जो सुपरिणाम निकला वह ऐसी ही प्रार्थनाओका ईश्वर द्वारा दिया गया उत्तर नही था? हाँ, जबतक उपवास चलता रहा, मै हिन्दू-मुस्लिम समस्याके बारेमे भी सोचता रहा और ईश्वरसे मार्ग दिखानेके लिए प्रार्थना करता रहा। क्या बताऊँ, कितना चाहता हूँ कि आपके, मौलाना अबुल कलाम और मालवीयजी के प्रयत्न सफल हो! जिस दिन एकताका कोई कागजी मसौदा प्राप्त होनेके बजाय हार्दिक एकता स्थापित हो जायेगी, वह दिन सचमुच बड़ा भव्य होगा।

यह जानकर खुशी हुई कि आपकी पत्नी और वहनें अव वेहतर हैं। आपको भी अव ठीक हो जाना है, या फिर अपना खोया स्वास्थ्य पुनः प्राप्त करनेके लिए आपको अनिवार्य तौरपर उपवास करना चाहिए।

दोनों मौलानाओंको मेरे सलाम।

हम सवका स्नेह-वन्दन।

बापू

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० २२३। जी० एन० ५०७६ से भी।

३६८. पत्र : विट्ठल आर० शिन्देको[1]

९ अक्टूबर, १९३२

अस्पृश्यताको — समस्त सत्य, धर्म और प्रगतिके इस शत्रुको — किसी भी तरहसे कोई भी स्थान दिये जानेकी योजनामें मैं शरीक नहीं हो सकता।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२२

३६९. पत्र : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको

९ अक्टूबर, १९३२

प्रिय गुरुदेव,

आपका सुन्दर पत्र मिला। मैं प्रकाशके लिए नित्य प्रार्थना कर रहा हूँ। हिन्दू-मुस्लिम एकता भी मेरे जीवनका उद्देश्य है। रुकावटें बीचमें आती हैं, लेकिन मैं जानता हूँ कि जव मुझे प्रकाश मिलेगा, तव वह इन सब बाधाओंको भेदकर निकल जायेगा। फिलहाल मैं प्रार्थना कर रहा हूँ, यद्यपि उपवास नहीं कर रहा।

पूनामें आपको खूब मेहनत करनी पड़ी और यह लम्बा सफर भी उतना ही थकानेवाला था। फिर भी मैं आशा रखता हूँ कि आपकी तवीयत ठीक रही होगी।

१. शिन्देने गांधीजी से पूछा था कि अस्पृश्यता-उन्मूलनके सम्बन्धमें क्या वे कोई कामचलाऊ समझौता स्वीकार करेंगे।

पिछले महीनेकी २० तारीखको ग्रामवासियोके समक्ष आपने जो सुन्दर प्रवचन दिया, उसका अनुवाद करके महादेवने हमे सुनाया था।

सस्नेह,

आपका,

मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४६३३)से।

३७०. पत्र : उर्मिलादेवीको

९ अक्टूबर, १९३२

प्रिय उर्मिला,

कैसा दुःखद था वह प्रसग! उस दिन जब आप बाहर जा रही थी, मै पुकारने ही वाला था कि सरोजिनीने टोकते हुए कहा, आप सब जल्द ही वापस आयेगी। सो मै रुक गया। लेकिन जो हुआ, होना भी वही था। उसने मुझे झटकेके साथ याद दिलाया कि मै तो कैदी हूँ और इसलिए सब-कुछ मेरी इच्छानुसार ही नही हो सकता। ऐसे धक्के लगते रहना अच्छा ही है। उनसे मै विनम्र बना रहता हूँ।

इससे यह शिक्षा मिलती है कि जो आज कर सकते हो, उसे कलपर हरगिज न छोडो और जो अभी कर सकते हो उसे अगले क्षणके लिए मत टालो। मै आपका और आपके बच्चोका पूरा समाचार जानना चाहता था। अब आप अपने सुख-दुःख, अर्थात् कदाचित् सुखके कोई प्रसग हो तो उनके बारेमे और दुःख तो आपको है ही, सो उनके विषयमे भी विस्तारपूर्वक लिखे। मगर ईश्वर-भक्तोके दुःख भी तो उनके लिए सुख ही होते है। दुःखकी आँचमे ही ईश्वर उन्हे परखता और पवित्र बनाता है। यदि इस दुनियामे केवल सुख-ही-सुख मिले तो हमारे लिए साँस लेना दूभर हो जाये और दुःख-रूप प्राणवायुके मिश्रणके बिना हम जीवित ही न रह सके। महादेवको लिखा आपका पत्र पढा। आपके लडकेको कोई आसान काम मिले, इसके बजाय उसे भले ही कठिनाइयोकी आँचमे से गुजरकर अपनेको निखारने दीजिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२०

३७१. पत्र : वासन्तीदेवी दासको[1]

९ अक्टूबर, १९३२

आपसे फिर मिल नही सका, यह बहुत दुखद था। आप जा रही थी, तब मै आपकी तरफ प्यासी नजरोसे देख रहा था। पता नही यह आपने देखा या नही। मगर तभी सरोजिनीने मुझसे कहा कि आप अभी वापस आ रही है। मगर यह तो होना नही था।

अगर सब-कुछ स्वाभाविक क्रमसे हुआ करे, तो फिर मेरे कैदी होनेका मतलब ही क्या हुआ? इसलिए जितनी सुविधा मिली, उसके लिए हमे आभारी होना चाहिए। मुझे खुशी हुई कि मेरा उपवास आपको पूनातक खीच लाया। आप पत्र तो लिखती नही, इसलिए मुझे आपसे मिलनेकी बडी भूख थी।

और अब तो अस्पृश्यता-निवारणके इस भव्य कार्यमे आपको लग ही जाना है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११९

३७२. पत्र : भाऊ पानसेको

९ अक्टूबर, १९३२

चि० भाऊ,

विनाबा जो कहते है वह ठीक है किन्तु इसका यह अर्थ नही कि शारीरिक उपचार नही करना चाहिए। आत्मशुद्धि तो हर हालतमे करनी ही है। किन्तु यह कब्ज सामान्य उपचारसे जाना ही चाहिए। मै नारणदासको लिख रहा हूँ कि वे तुम्हे राजकोट या बीजापुर भेजे। अकसर आबोहवा बदलनेसे फायदा होता है। इसके अतिरिक्त दोनो स्थानोपर सत्संगका लाभ तो मिलेगा ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७३८) से। सी० डब्ल्यू० ४४८१ से भी; सौजन्य . भाऊ पानसे

१. चितरंजन दासकी पत्नी।

३७३. पत्र : नारणदास गांधीको

९ अक्टूबर, १९३२ की रात

चि० नारणदास,

तुम्हारी डाक नियमानुसार मिली। भाऊकी कोष्ठबद्धताका निवारण तो हमे चाहे जैसे हो करना ही है। मुझे लगता है कि अगर भाऊको राजकोट भेज दिया जाये तो वहाँकी आवोहवा शायद उसे रास आये। वहाँ भेजना हो ही न सके तो भले बीजापुर ही भेज दो। लेकिन, पुरुषोत्तमको राजकोटकी आवोहवा माफिक आई, इसलिए वहाँका लोभ मनमे जरूर है। फिर, वहाँ पुरुषोत्तम और जमनादासका साथ भी उसके लिए सत्सग-रूप होगा। जैसा ठीक लगे, करना।

कुसुमके बारेमे चिन्ता होती है। उसका स्वास्थ्य न सुधरे, यह असह्य लगता है। अब वह पूरा आराम करती है क्या? प्रेमाने लिखा था कि मेरे उपवासके दौरान तुमने वहुत-सी चीजें छोड रखी थी। स्वास्थ्यका तो कोई नुकसान नही हुआ? मेरा काम तो खूब तेज रफ्तारसे चल रहा है। पत्र तो तुम देखते ही हो। आज कुल मिलाकर लगभग तीस पत्र लिखे होगे। कातना कमसे-कम २०० तार होता है—४५ अंकसे ऊपरका ही। कुहनी अभी तो बिलकुल ठीक है। दूधकी मात्रा दो पौडतक पहुँच गई है। फल तो चलते ही है। वजन भी ९९ पौडतक पहुँच गया है। घूमना पूरा होता है। सो मेरे विषयमे तो तनिक भी चिन्ताकी जरूरत नही है।

बड़ी कुसुम[1] किस जेलमे रखी जायेगी? अभी कहाँ है? त्रिवेदीके यहाँ मृत्यु होनेके बाद[2] मुझे तो यह लगा कि प्राइमस स्टोवकी या तो आश्रमसे छुट्टी कर दी जाये या वहने स्टोव न जलानेकी कसम खा ले। आज बा के सम्बन्धमे तो मैंने इसपर अमल भी करवा दिया। यहाँ इन दिनो स्टोव है। बा उसे जलाने जा रही थी। मैंने रोक दिया और महादेव जलाने गया। हमारे यहाँकी स्त्रियोकी पोशाक ही ऐसी है कि उसमें आग लगनेका पूरा खतरा रहता है। स्टोवका उपयोग करना जरूरी ही हो तो उसे किसी मर्दसे जलवाना चाहिए। वैसे सच तो यह है कि उसकी कोई जरूरत ही नही है।

आशा है, अब कुरैशीको ववासीरकी तकलीफ बिलकुल नही होती होगी। अमीना कैसी है? वह मुझे पत्र लिखे। और भी जिसे लिखना हो, लिखे। अब किसीको मुझपर दया करनेकी जरूरत नही रह गई है। बा को अभीतक तो सारे दिन मेरे

१. कुसुमबहन देसाई।

२. त्रिवेदीके भाईकी पत्नी, तारागौरीकी, देखिए "पत्र: जयशंकर पी० त्रिवेदीको", ४-१०-१९३२।

पास रहनेकी छूट है। लेकिन अब तो कभी भी यह छूट समाप्त की जा सकती है। देवदासको आने-जानेकी छूट है। पण्डितजी को पत्र[1] सुना देना।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२५९ से भी, सौजन्य. नारणदास गांधी

३७४. पत्र : मूलचन्द पारेखको

९ अक्टूबर, १९३२

ठक्कर बापाको[2] हिसाब भेजकर थैलीका मुँह खोलनेकी तकलीफ करनेको कहना। मगर आज जब यह आत्मशुद्धिकी हवा बह रही है, यह प्रतिज्ञा करना कि तुम खुद बिक जाओ या तुम्हारे घरका छप्पर बिक जाये, लेकिन एक भी पाठशाला या आश्रम बन्द न होने दोगे। काठियावाड इतना थोडा पैसा भी इकट्ठा न कर सके, यह असह्य माना जाना चाहिए। तुमने इस कामको अपने हाथमे लिया है। इतनी जल्दी हार जाओगे, तो काम कैसे चलेगा?

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११८

३७५. एक पत्र

९ अक्टूबर, १९३२

कोई पुत्र पिताका काजी नही बन सकता। तुम्हारा काम सुधारकका है। सुधारक-सिपाही अपराधीके मनपर असर डालता है, उसके दोष प्रकट नही करता, उसे अदालतमे नही घसीटता। तुम्हारा धर्म यह है कि प्रेमसे पिताका व्यवहार बदलो। उनके दोष प्रकट करनेमे पाप है। तुमने तो पिताके अन्य अनेक गुणोका वर्णन किया है। पैसेका लोभ न हो तो ज्यादा अच्छा। मगर उसे तुम कालक्रममे अपने विनयसे मिटा सकते हो। जबतक न मिटे, उसे सहन करो। भाई-बहनोको समझाओ। अपना जीवन अधिक शुद्ध और अधिक सयममय बनाओ। सब-कुछ करनेपर भी पिता न माने, तो घरका त्याग कर दो, इसमे मुझे कुछ अनुचित नही दीखता। यह त्याग भी पूरा समय देकर ही किया जाये। हम सुधरे कि तुरन्त ही दुनियाको हमारे-जैसी हो जाना चाहिए, यह अभिमान नही रखना चाहिए। हममे एक सुधार हो जानेपर भी अनेक दूसरे

१. देखिए "पत्र: नारायण मोरेश्वर खरेको", ८-१०-१९३२।

२. अमृतलाल वी० ठक्कर, सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटीके सदस्य, जिन्होंने स्वयको हरिजनों और आदिवासियोंकी सेवामें समर्पित कर दिया था।

दोष हो सकते हैं, जिन्हे शायद हम देखते भी नही। यह सोचकर नम्र और दूसरोके दोषोके प्रति उदारचित्त रहना आवश्यक है। इसमे तुम्हारे सब सवालोका जवाब आ जाता है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० ११८-९

३७६. पत्र : डॉ० सुरेशचन्द्र बनर्जीको

१० अक्टूबर, १९३२

प्रिय सुरेश,

अपने स्वास्थ्यका समाचार न देकर आपने मुझे चिन्तामे क्यो डाल रखा है? जाति और अस्पृश्यताके बारेमे मै आपके वे पुराने विचार जानता हूँ। मै आपकी इस बातसे पूरी तरह सहमत हूँ कि जात-पाँतको मिटाना ही है। लेकिन यह मेरी जिन्दगी मे होगा या नही, यह मै नही जानता। हाँ, हम इतना खयाल जरूर रखे कि इन दोनो उद्देश्योको एक-दूसरेसे मिलाकर दोनोको विफल न कर दे। अस्पृश्यता आत्माका हनन करनेवाला पाप है। जात-पाँत सामाजिक बुराई है। खैर, आप बिलकुल अच्छे हो जाइये और अपने उसी स्वाभाविक उत्साहसे जात-पाँतसे भिड़ जाइये। इसमे आपको मेरा अच्छा सहयोग मिलेगा।

स्नेह और तमाम शुभकामनाओ-सहित,

बापू

[अंग्रेजीसे]

एडवांस, १५-१०-१९३२ तथा **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२, पृ० १२४

३७७. पत्र : हरदयाल नागको

१० अक्टूबर, १९३२

ऐन मौकेपर ठीक सन्देश भेजनेमे आप हमेशा नियमित रहे है। इतनी उम्रमे इतना उत्साह दिखाकर आप देशके नौजवानोको लज्जित कर रहे है। ईश्वर करे, आप आजके-से ओज-उत्साहके साथ ही सौ वर्ष पूरे करे।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२५

३७८. पत्र : सोमसुन्दरम्‌को[1]

१० अक्टूबर, १९३२

लगता है, अखबारोको दिये मेरे पहले ही वक्तव्यका अध्ययन आपने ठीकसे नही किया। उसको ध्यानसे पढनेपर आप पायेंगे कि प्रविधिकी दृष्टिसे तो अपने मन्तव्यको, जिस तरह मैंने व्यक्त किया है, उस तरह व्यक्त करके कोई गलती नही की, किन्तु वास्तवमे उपवास हिन्दुओ तथा मुझमे विश्वास रखनेवाले अन्य लोगोको ध्यानमे रखकर किया गया था। आप यह भी देखेंगे कि हिन्दू-समुदायका बहुत बडा हिस्सा उपवासके उद्देश्यको सहज ही समझ गया। आशा है, यह बात बिलकुल स्पष्ट होगी। सरकारी स्वीकृति इस कारण आवश्यक थी कि उलटा निर्णय होनेपर तो यह समझौता निरर्थक ही था। समझौते और उपवासका यह स्वाभाविक परिणाम था।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२३

३७९. पत्र : जमनालाल बजाजको

१० अक्टूबर, १९३२

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। तुम्हें वह लम्बा लगता है, हमे नही। उसमें भी जब भिक्षुकके भिक्षाटन शुरू करनेकी बात हो, तब तो कहना ही क्या? भिक्षुकसे कहना कि उसका पत्र मिल गया है। यह कह सकते है कि उसने मुझे निर्भय कर दिया है। इसलिए इसमें उसका समावेश भी कर लेता हूँ। मेरा शरीर लगभग ठीक हो गया है। दूध, नारगी, मोसम्बी, अगूर अथवा अनार और लौकी तथा टमाटर आदिकी सब्जियाँ ले रहा हूँ। कभी-कभी एक-दो दिनोके लिए दूध छोड देता हूँ। प्रतिदिन दो बार कुल डेढ घटे घूमता हूँ। पत्र खूब लिखता हूँ। पहलेकी ही तरह रोज कमसे-कम २०० तार, ४५ नम्बरसे ज्यादाके कातता हूँ। इससे सबको आश्वस्त हो जाना चाहिए। उपवासके दिनोमे शारीरिक व्यथा काफी थी, लेकिन मानसिक शान्ति बहुत थी। उपवास लम्बा चलता तो थकान या अरुचि हो जाती, ऐसा नही था। लेकिन उपवास लम्बा या छोटा करना तो उस परमात्माके ही हाथमे था,

१. सोमसुन्दरम्‌ने श्रीलंकासे पत्र लिखकर पूछा था कि गांधीजी केवल समझौतेसे ही सन्तुष्ट क्यों नहीं थे और सरकार द्वारा उसकी स्वीकृतिको उन्होंने उपवास तोड़नेकी अनिवार्य शर्त क्यों बना दिया था।

जिसने मुझे उपवास करनेको प्रेरित किया था। बा अभी मेरे पास सारे दिन रह सकती है, पर अब यह शायद बन्द हो जाये। देवदास कुछ समयके लिए मिलने आ सकता है। रोज यहाँ नही आता। सरदार और महादेव तो साथ है ही। तुम्हारी तबीयत तो ठीक ही मानता हूँ। वजन कुछ कम हो गया, सो ठीक ही हुआ है। अब और नही घटना चाहिए। विनोबाके सगसे परमात्मापर आस्था दृढ हुई है, इसे मै बडा लाभ मानता हूँ। विनोबाका काम सुन्दर है ही। गुलजारीलालका साथ मिला, यह भी अच्छा हुआ। प्राकृतिक उपचार और सादे भोजनपर आस्था जमनेकी भी जरूरत थी। इन दो बातोसे अनेक शारीरिक व्याधियोसे बचा जा सकता है। तुम्हारी दिनचर्या अच्छी है। तुम 'क' (सी) वर्गमे रहे, यह अच्छा ही हुआ। मुझे तो शुरूसे ही 'अ' (ए) और 'ब' (बी) वर्ग अच्छे नही लगे। 'क' वर्गमे रहते हुए शरीरकी रक्षाके योग्य सुविधाएँ प्राप्त की जा सकती है। गुलजारीलालका शरीर अब ठीक हो गया, ऐसा मान सकते है न? माधवजी अच्छे है? सरदारका सस्कृतका अध्ययन तेज गतिसे चल रहा था, वह उपवासके कारण जरा मन्द हो गया है। अब वे फिर उसे जोर-शोरसे शुरू करनेकी तैयारीमे है। अभीतक तो हमारी दिनचर्या ठीक चल रही है। खाना, पीना, सोना, अखबार पढना, चक्कर काटना, इच्छानुसार अध्ययन करना यही सब चलता है। पीजनेका ठेका तो महादेवका है। पर आजकल यह काम जरा बन्द है, क्योकि पूनियोका भण्डार भरा हुआ है, और छक्कड़दास सुन्दर पूनियाँ भेज दिया करते है। वर्धासे पत्र आते रहते है। सभीको हम लोगोकी ओरसे यथायोग्य।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचमा पुत्रने बापुना आशीर्वाद, पृ० ७४-५

३८०. पत्र : दादाचानजीको

१० अक्टूबर, १९३२

भाई दादाचानजी,

यह आपके २३ तारीखके पत्रका उत्तर है। बाबाके[1] बारेमे अपनी स्थिति स्पष्ट करना चाहता हूँ। यह माननेमे मुझे बडा सकोच है कि कोई दूसरेको ईश्वर-दर्शन करा सकता है। हृदय इनकार करता है। मगर जब बाबा ऐसा दावा करते हैं, तब मै यही कह सकता हूँ, 'आप मुझे ईश्वर-दर्शन करा दे, तो बहुत अच्छा।' जो कहता है कि मैने ईश्वर-दर्शन किया है, उसने किया ही है, यह मानना जरूरी नही है। ईश्वर-दर्शन किया है, एसा कहनेवाले बहुत-से लोग तो भ्रममे पड़े हुए पाये

१. मेहर बाबा।

गये है। बहुतोके लिए यह केवल अपने मनकी प्रतिध्वनि होती है। यह तो मै मानता ही नही कि ईश्वर-दर्शनका अर्थ किसी बाहरी शक्तिका दर्शन है। क्योकि मेरा यह खयाल है कि ईश्वर तो हम सबमे बसता ही है, परन्तु उसे हृदयसे विरले ही पह-चानते है। बुद्धिसे पहचानना काफी नही है। मुझे ऐसा लगा करता है कि यह दर्शन कोई किसीको नही करा सकता।

ईश्वरके दर्शनके लिए किसी दूसरेके कराये उपवास नही किये जा सकते। मुझे अन्त प्रेरणा हो तभी कर सकता हूँ। ऐसी प्रेरणा होनेपर मै किसीके रोके रुकनेवाला नही हूँ। यह मान लेनेका कोई कारण नही कि उपवास करनेसे ईश्वर-दर्शन हो जायेगा। यह बात मेरे दिलमे नही उतरती कि मेरे चालीस दिनके उपवास करनेके बदलेमे बाबा ईश्वर-दर्शन करा सकते है। यह सौदा तो सस्ता ही माना जायेगा। यदि ऐसा होता हो तो मेरी निगाहमे ईश्वर-दर्शनकी कोई कीमत नही है।

मै तो आजतक यह मानता आया हूँ कि बावा जीवनके विभाग नही करते। जिसका जीवन धर्मसे रँगा हुआ है, उसके खयालसे राजनीति और अर्थशास्त्र सब धर्मके अग है, और वह उनमे से एकको भी छोड नही सकता। मेरी रायमे तो जो धर्मको बहुत-सी प्रवृत्तियोमे से एक प्रवृत्ति मानता है, वह धर्मको जानता ही नही। इसलिए राजनीति या समाज-सुधार वगैरह मै किसी दिन छोड दूंगा, यह मेरी कल्पनाके बाहर है। अपने धर्मके पालनके लिए ही मै राजनीति, समाजसेवा इत्यादिमे पडा हुआ हूँ।

मैने बाबाके लेखोका गुजराती अनुवाद करनेका वचन नही दिया है। उलटे, मैने तो बाबाको यह सुझाया है कि वे अंग्रेजीमे लिखने या दूसरोसे लिखवानेका मोह छोड कर अपने विचार या तो अपनी मातृभाषा गुजरातीमे प्रगट करे या फारसीमे, जो खुद उन्हीके कथनानुसार वे बहुत बढिया जानते है। हाँ, उनके लेखोमे से कोई मेरे दिलको पकड ले तो उसका गुजराती अनुवाद मै अवश्य करूँगा।

थोडेमे, मै बाबाके विचारोका एक अध्येता हूँ। जमशेद मेहताको पवित्र व्यक्ति मानता हूँ। उन्हीके तार देनेपर मै बावासे मिला था। ईश्वरके भक्तोको मै खोजता रहता हूँ। मै यह सोचकर बाबाके सम्पर्कमे आया कि वे ऐसे ही होगे।

मोहनदास गांधीके वन्देमातरम्

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२५-६

३८१. पत्र : झवेरचन्द मेघाणीको[1]

१० अक्टूबर, १९३२

विलायत जाते हुए जो भेट आपने भेजी थी, वह वहुत अच्छी लगी थी। इसको[2] मैं उसकी कोटिमे नही रख सका। . . मुझे कविताको ठीक परखना नही आता।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, पृ० १२४

३८२. पत्र : रमणलाल सोनीको[3]

१० अक्टूबर, १९३२

कविताएँ कुल मिलाकर अच्छी लगी है। मगर कुछकी भाषा जरूर कडवी लगी। . . . मैं कविताका अच्छा पारखी नही हूँ।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १०५

३८३. पत्र : जयशंकर पी० त्रिवेदीको

१० अक्टूबर, १९३२

तारागौरीके खेदजनक अवसानके बाद क्या आप सब इतना श्राद्ध भी नही करेगे? या तो घरसे प्राइमस स्टोवका बहिष्कार कीजिए या यह सम्भव न हो तो स्त्रियाँ उसे न जलानेकी प्रतिज्ञा ले। पुरुषोसे ही जलवाये। हमारी स्त्रियोकी पोशाक स्टोव जैसे चूल्हे सुलगानेके लिए नही बनी है।[4]

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२७

१. (१८९७-१९४७), गुजरातीके ख्यातनामा लेखक और कवि।
२. झवेरचन्द मेघाणीने गांधीजी को 'छेल्ली सलाम' शीर्षक एक कविता भेजी थी।
३. गुजरातीके लेखक और अनुवादक।
४. देखिए "पत्र: जयशंकर पी० त्रिवेदीको", १०-१०-१९३२ भी।

३८४. एक पत्र

१० अक्टूबर, १९३२

जातिके रीति-रिवाजोमे सुधार आवश्यक है और जिससे यह काम हो सके, उसे यह करना चाहिए। अस्पृश्यता-निवारणका अप्रत्यक्ष असर उसपर भी होगा ही। बाल-विधवाओकी शादी करानेका प्रयत्न मै स्तुत्य मानता हूँ। ये काम सयमी और पवित्र व्यक्तियोसे ही हो सकते है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२३

३८५. पत्र: रेहाना तैयबजीको

१० अक्टूबर, १९३२

प्यारी बेटी रेहाना,

बहुत चालाक लडकी है। अपने भजनके लिए मुझे फाका करवाना चाहती है। मै नही करूँगा और भजनको गाकर सुनायेगी तब दिल लुभायेगा। अगर "उठ जाग मुसाफिर" मै न सुनता तो मुझे ऐसा दिलचस्प न लगता। अगर जेलकी दिवारके बाहरसे भी तू गायेगी तो भी तेरी आवाज मुझे पहुँच जायेगी। तुम सबका नाच तो मै सुन ही रहा हूँ। अब्बाजान, अम्माजानको हम सबकी तरफसे आदाब। तुम्हारे लिए थप्पड। डाह्याभाईको आशीर्वाद। पशाभाई अच्छे हो गये? बा दीन-भर मेरे साथ रहती है। अब तो मुझे ठीक जोर आ रहा है। इसलिए शायद बा का आना बद हो जायेगा।

बापूकी बहुत दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६६९) से।

३८६. पत्र : रेहाना तैयबजीको

१० अक्टूबर, १९३२

चि० रेहाना,

तेरा भजनवाला पत्र मिला। आशा है, मेरा पत्र आज मिल गया होगा। आज तो मैं हरिइच्छाके बारेमें लिख रहा हूँ। मैं पिछले पत्रमें लिखना भूल गया था। हरिइच्छा बालजीभाईकी भतीजी है। वह आश्रममें कुछ वर्ष रही है और अब वहाँ के इजीनियर कामदारसे उसका विवाह हो गया है। तुझसे मिलनेके लिए मैं उसे लिखता रहता था। किन्तु मैंने तुझे नही लिखा था इसलिए वह जब तुझसे मिलने आई तो तूने उसे नही पहचाना। इसमें तेरा नही बल्कि मेरा दोष है। हरिइच्छा लिखती है कि तूने यह जाहिर नही होने दिया और तूने तथा अम्माजी ने बहुत स्नेह दिखाया। दूसरी लड़की, शान्ता, तो आजकल आश्रममें ही है।

बापूके आशीर्वाद

श्री० रेहानाबहन
मार्फत – अब्बास साहब
कैम्प
बडौदा

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६६८)से।

३८७. पत्र : हरिइच्छा पी० कामदारको

१० अक्टूबर, १९३२

चि० हरिइच्छा,

तेरा पत्र मिला। यह सच है कि मैं रेहानाबहनको लिखना भूल ही गया था। यदि मैंने लिख दिया होता तो अच्छा होता। अब तो मैंने आज ही लिखा है।[1] सच तो यह है कि उसे जान-पहचानकी जरूरत ही नही होती। अब उससे मिलती रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री० हरिइच्छाबहन
मार्फत – श्री पी० वी० कामदार
शियाबाग, बडौदा

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी डब्ल्यू० ७४७२)से; सौजन्य: हरिइच्छा पी० कामदार

१. देखिए पिछला शीर्षक।

३८८. पत्र : बलदेवदास बिजोरियाको

१० अक्टूबर, १९३२

आपका कृपा-पत्र मिला। अस्पृश्यता-निवारण मेरे जैसोके लिए केवल धार्मिक प्रश्न है। राजप्रकरणके लिए मैं प्राणत्यागकी चेष्टा कभी न करूँ। हाँ, इतना ठीक है कि धार्मिक कार्य क्या, और दूसरा भी, उसमे बलात्कार नही होना चाहिये। जहाँतक यहाँ बैठा हुआ मैं समझ सकता हूँ, आज जो कार्य हो रहा है उसमे बलात्कार नही है और ईश्वर ही करवा रहा है। छुआछूतमे धर्म कभी नही हो सकता, ऐसा मेरा दृढ विश्वास है। और तो क्या लिखू ? कृपा रखियेगा।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२४

३८९. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१० अक्टूबर, १९३२

भाई कृष्णचन्द्र,

आपका पत्र आज हि मिला। प्रारब्ध अवश्य है। परतु साथ-हि-साथ पुरुषार्थ भी है। प्रारब्धका इतना हि अर्थ है कि पुरुषार्थके अभावमे पूर्व कर्मका फल हि बाकी रहता है। पुरुषार्थ होते हुए प्रारब्ध बदल सकता है। इस कारण जो ब्रह्मदर्शन करना चाहते हैं उसे ब्रह्मचर्य आवश्यक है। देखे 'गीता' अ० १५।[1] ऐसे तो ब्रह्मचर्य 'गीता'का ध्वनि है। जो ब्रह्ममे लीन होना चाहता है, जो सदा सेवापरायण रहना चाहता है उसे विषयेद्रिय सुखके लिए अवकाश हि नहि हो सकता है। इतनेमें आपकी सब शकाका उत्तर आता है।

आपका,
मोहनदास गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४२६२) से।

१. गीताके जिस अध्यायका उल्लेख किया गया है, वह गलत है; देखिए "पत्र : कृष्णचन्द्रको", ३१-१०-१९३२।

३९०. पत्र: चौंडे महाराजको

१० अक्टूबर, १९३२

आपका पत्र मिला है। मेरा सन्देशा यह है:

मेरा अभिप्राय दृढ होता जाता है कि जबतक हम गोरक्षाका अर्थशास्त्र भली भाँति नही पढ़ेंगे, जबतक अत्यज भाइयोको, जिनके हाथसे बहोत गोरक्षाका कार्य हो सकता है, नही अपनायेंगे और जबतक सब गोशाला शास्त्रीय पद्धतिसे नही चलेगी और हम सब मृत जानवरके ही चामके उपयोगका व्रत नही लेंगे, गोरक्षा अशक्य है। इसलिए अब गोसेवकका कर्तव्य है कि इतनी मोटी बातोको अच्छी तरह समझे और उसका यथासम्भव पालन करे और करावे।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२३-४

३९१. एक पत्र[1]

११ अक्टूबर, १९३२

पत्रके लिए धन्यवाद। आपने जो कारण दिये है उनके अनुसार गाय-भैसका दूध त्याज्य है, इस बातमे मै आपसे पूरी तरह सहमत हूँ। मै गाय-भैसका दूध नही लेता, मगर बकरीका दूध लेता हूँ, हालाँकि ज्यादा आम ढगके दूसरे कारणोसे मै इसे भी आपत्तिजनक मानता हूँ। मै उसके विकल्पकी तलाशमे हूँ, मगर अभीतक असफल रहा हूँ। मैने उपवास शहदसे नही, नारगीके रससे तोडा था। लेकिन मै शहद लेता हूँ और उसे आपत्तिजनक नही मानता। अगर शहद वैज्ञानिक ढगसे निकाला जाये, तो एक भी मक्खीका नाश न करना पड़े और न उसे भूखो मारना पडे। मगर मुझे स्वीकार करना चाहिए कि हमेशा ऐसा निर्दोष शहद मुझे नही मिलता।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३०

१. यह पत्र गुजरातकी नगरपालिकाके एक मुसलमान सदस्यको लिखा गया था। सदस्यने गाधीजी को लिखा था कि उन्हें दूध और शहद नहीं लेना चाहिए।

३९२. पत्र : रुक्मिणी बजाजको

[११ अक्टूबर, १९३२][1]

चि० रुक्मिणी,

तेरे पहलेवाले पत्रको मैं अब समझ सका। तुझे गानेके लिए चाँदीका तमगा मिला और तूने भाषण भी दिया है — इसीके लिए बधाई माँगती है न? किन्तु तमगा पानेकी खुशीमें यदि बीमार हो जाये तो बधाई कैसे मिल सकती है? अच्छी हो जा और बधाई ले। तमगा किसके हाथो मिला था? सितार बजानेका अभ्यास भी करती है क्या?

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

अब तो तुझे या बनारसीको लिखते रहना चाहिए।

श्री० रुक्मिणीदेवी
मार्फत — श्री बनारसीलाल बजाज
ठठेरी बाजार, बनारस सिटी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१४१)से।

३९३. पत्र : सुशीलाबहन गांधीको

११ अक्टूबर, १९३२

चि० सुशीला,

तू भी कैसी है! बम्बई उतरते-न-उतरते ही बीमार पड गई। इसका मैं यह मतलब लगाऊँ न कि तुझे अविलम्ब दक्षिण आफ्रिका वापस रवाना कर दूँ? पहले मणिलाल घोड़ेपर सवार होकर आया और तुझे लेकर भागा। इस बार भी तुम दोनो वैसी ही कोई साजिश करके आये जान पडते हो। तो फिर सीता तुझे छोडकर यहाँ क्यो आने लगी? कही रह जाये तो? आशा है, अब तेरी तबीयत सुधर रही होगी। बा तेरे पास पहुँच जायेगी। मुझसे मिलने आनेकी उतावली मत मचाना।

१. डाककी मुहरसे।

मुझे कुछ है ही नहीं। पूरी तरह आराम करना और अच्छी हो जाना। तारासे लिखनेको कहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री० सुशीलाबहन
मारफत—श्री बालुभाई मशरूवाला
टोपीवालाका बँगला
सैंडहर्स्ट रोड
बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७९६)से।

३९४. पत्र : त्रिभुवनदास त्रिकमलालको

११ अक्टूबर, १९३२

भाई त्रिभुवनदास,

हरिकृष्ण महाराजकी पुस्तकें भेजनेके लिए मैं आपका आभारी हूँ। समय मिलने पर मैं उन्हें पढ़ जानेकी आशा करता हूँ। इसके बाद यदि बड़ी पुस्तक मँगानेकी आवश्यकता जान पड़ी तो अवश्य मँगाऊँगा।

मोहनदास गांधी

श्रीयुत त्रिभुवनदास त्रिकमलाल
अमृत भवन
रेलवेपुरा
मणिनगर
अहमदाबाद, बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५०१)से।

३९५. एक पत्र[1]

११ अक्टूबर, १९३२

अस्पृश्यता-निवारणका अर्थ यह है कि जो व्यवहार हम अन्य जातियोंके साथ रखते हैं, वही इनके साथ भी रखें। यानी उन्हें छूएँ, उनके हाथका पानी वगैरह पीयें, और वे घरों, मन्दिरों, पाठशालाओं आदिमें औरोंकी तरह ही जायें। यह तो अस्पृश्यता-निवारणका आवश्यक अंग है। उनके हाथका पकाया हुआ खायें या उनके साथ बैठकर खायें या बेटी-व्यवहार रखें, यह सबकी इच्छाकी बात है। धर्ममें न

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह पत्र नागपुरके एक मारवाड़ी सज्जनको लिखा गया था।

उसका विधान है और न निषेध। अभी जो प्रीतिभोज हो रहे है, वे अस्पृश्यता-निवारणके आवश्यक अग नही है। मगर इसमे मुझे शक नही कि वे स्तुत्य है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२९

३९६. एक पत्र[1]

११ अक्टूबर, १९३२

आपका पत्र मिला है। जिन कांग्रेसजनोने अस्पृश्य भाइयोके पानी लानेसे सभा छोडी उन्होने बहुत अनुचित कार्य किया।

अस्पृश्यता-निवारणमे अछूत भाइयोके हाथोसे पानी पीना आवश्यक अग है। जैसा बर्ताव हम अन्य जातियोसे रखते है वैसा अछूतोके साथ करना धर्म है। इसलिए जिन्होने प्रायश्चित्त किया उन्होने पाप किया है और काग्रेसका विरोध किया है। आपका बहिष्कार नीति-विरुद्ध है, आप प्रायश्चित्त हरगिज न करे। मुझे दु:ख है कि विलासपुरके कई भाइयोने नीति-विरुद्ध व्यवहार करके अछूत भाइयोमे बुद्धि-भ्रम पैदा किया है। मै चाहता हूँ कि वे अपने दोषका जाहेर स्वीकार करे।

रोटी-बेटी व्यवहार मुझे तो इष्ट है। परन्तु उसको मै अस्पृश्यता-निवारणका आवश्यक अग नही मानता हूँ। जो ऐसा व्यवहार धर्म समझकर करे वे स्तुत्य कर्म करते है, ऐसा मेरा अभिप्राय है। इसलिए आजकल प्रीतिभोजन होता है वह मुझे पुण्यकार्य प्रतीत होता है। रोटी-बेटी व्यवहारका प्रतिबध धर्ममे मैने नही देखा है।

अब आपके सब प्रश्नोका उत्तर आ गया है। मुझे लिखे उसमे क्या हुआ?

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १२९-३०

१. साधन-सूत्रसे पता नहीं चलता कि यह पत्र किसे लिखा गया था। पत्र-लेखकने गांधीजी के उपवासके सिलसिलेमें विलासपुरमें हुई एक सभाका दुःखद विवरण दिया था। वहाँ चमारोंके हाथसे पानी पीनेके कारण लोगोंको प्रायश्चित्त करनेको मजबूर किया गया था और जिन्होंने प्रायश्चित्त करनेसे इनकार कर दिया था उन्हें जातिसे बहिष्कृत कर देनेकी धमकी दी गई थी। प्रायश्चित्त न करनेवाले उक्त भाईने पूछा था कि क्या यह सब करना उचित है?

३९७. पत्र : अमतुस्सलामको

१२ अक्टूबर, १९३२

प्यारी वेटी अमतुस्सलाम,

आज मैं उर्दूमे नही लिखूँगा?[१]

वेशक अपनेको इतनी जल्दी ठीक कर लेनेके लिए तुम शावाशीकी हकदार हो। मुझसे मिलनेकी फिक्र न करोगी तो और भी जल्दी विलकुल ठीक हो जाओगी। जव खुदाकी मर्जी होगी, हम मिलेगे। फिलहाल तो हम एक-दूसरेको खत लिख सकते हैं, इतनेके लिए ही हमे खुदाका शुक्रगुजार होना चाहिए।

हाँ, स्नानोके वारेमे मैं दूसरी लडकियोको लिखूँगा।

उम्मीद रखनी चाहिए कि नारणदासके साथ घूमनेसे कुदसियाको चैन मिलेगा। अगर सेहत ठीक रखेगी तो मिलेगा ही।

तुम्हारे गर्भाशयमे अगर कोई बीमारी न हो गई हो तो उसे नही निकाला जाना चाहिए। उसके लिए तुम्हे श्रीमती लाजरसकी सलाह लेनी चाहिए और जैसा वे कहे वैसा ही करना चाहिए। इस ऑपरेशनके बारेमे कोई जल्दवाजी नही होनी चाहिए। यह जरूरी नही कि ऑपरेशनसे बीमारी ठीक हो ही जाये। इलाज लम्बे समयतक किया जाये तो कुदरती इलाज ही सबसे ज्यादा कारगर होता है और वह कभी नुकसानदेह भी नही होता। ऑपरेशन अकसर नुकसानदेह सावित हुए हैं और कभी-कभी तो जानलेवा भी।

प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २५९)से।

३९८. पत्र : मीराबहनको

१२ अक्टूबर, १९३२

चि० मीरा,

तुम्हारा साप्ताहिक पत्र आज मिला। प्रसन्नताकी बात है कि वहाँ मौसम वेहतर हो गया है और तुम्हारी तबीयत पहलेसे अच्छी है। तुमने मुझे यह नही लिखा कि तुमने लगनके साथ अध्ययन शुरू कर दिया है या नही। अगर तुम्हारी तन्दुरुस्ती इजाजत न देती हो, तो मैं तुम्हे इसके लिए कौचना नही चाहता। इसलिए मैंने यह प्रश्न केवल उत्सुकतावश किया है। अपनी पढाईकी प्रगतिके समाचार भेजते रहनेकी तुम्हारी आदत रही है।

१. यहाँतक पत्र उर्दूमें है।

मेरा वजन तो नही बढ रहा है, परन्तु कुल मिलाकर मेरा स्वास्थ्य निश्चय ही बेहतर है। मै लाठीके सहारे चलता था। दो दिनसे उसे छोड दिया है। तबीयत हर तरहसे बेहतर है। हाँ, बा मेरे खाने-पीनेकी सँभाल रखती है। अभीतक ज्यादातर फल ही लेता हूँ। मगर इसमे बहुत ज्यादा समय और परिश्रम लगता है, यह तो स्वय भुक्तभोगी होनेके कारण तुम जानती ही हो। अनुपात लगभग वही है। मणिलाल और सुशीला आ पहुँचे है। उपवासके समाचार सुनकर उनसे रहा नही गया। सुशीला बीमार होकर बम्बईमे पडी है। मणिलाल भी बहुत अच्छा नही है। मेरा खयाल है, तुम्हे यह तो बता ही चुका हूँ कि कुछ महीने पहले नेटालमें जिस भीषण ज्वरका दौर चला था, उसमे वह भी पड गया था। लेकिन, वह मुझसे मिल गया है। वह दक्षिण आफ्रिकासे बहुत अच्छे सेव और जजीबारसे नारगियाँ लाया है। काश, तुम हिस्सा बँटा सकती। वहाँ भेजनेकी कोशिश तो बेकार है।

मिलने-जुलनेके बारेमे तुमने जो कहा है, उसे समझता हूँ। प्रिंसेस अरिस्टार्शीकी तुम्हें याद होगी। वे नियमित पत्र-व्यवहार करती रही है और बहुत सुन्दर पोस्टकार्ड भेजा करती है, जिनपर पवित्र चित्र और उनकी अपनी ही पसन्दके अच्छे धर्मवाक्य होते है।

बा-सहित हम सबकी ओरसे तुम दोनोको प्यार।

बापू

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४५) से; सौजन्य . मीराबहन। जी० एन० ९७११ से भी।

३९९. पत्र : हे० सॉ० लि० पोलकको[1]

१२ अक्टूबर, १९३२

मिलीके जन्म-दिवसपर ही ईश्वरकी इच्छाको कार्य-रूप दूँ, इससे ज्यादा मागलिक और क्या हो सकता था? मेरी कामना है कि उसका जन्म-दिवस बार-बार आये और उसे अधिकाधिक सेवाका अवसर मिले।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३२

१. पोलकने एक पत्रमें गांधीजीका ध्यान इस बातकी ओर दिलाया था कि उन्होंने मिली पोलकके जन्म-दिवसपर ही उपवास आरम्भ किया था।

४००. पत्र : ए० टर्टनको[1]

१२ अक्टूबर, १९३२

ईश्वरको धन्यवाद कि यह उपवास मैंने नही किया था। [उसमे कर्तृत्व मेरा नही था।] उसमे कर्तृत्व तो उसीका था। और जब ईश्वर 'हाँ' कह रहा हो तो उसके मुकाबले सारी दुनियाके 'ना' की भी क्या बिसात है?

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३२

४०१. पत्र : चमन कविको[2]

१२ अक्टूबर, १९३२

तुम जो चाहते हो सो लिखनेकी इजाजत अभी तो मिलनेकी आशा नही है। जिनके हृदयमे शका भरी होगी, उनकी शका तो भगवान् ही दूर करेगा। मेरे खयालसे तो मैंने सभी धर्मोकी सेवा की है। बहुत-से मित्र तो यह समझ भी गये है। यह बात सच होगी, तो कोई छिपी रहनेवाली थोड़े ही है? जिस ईश्वरने उपवास कराया, वही उसका मर्म भी लोगोको समझायेगा।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३२

४०२. पत्र : नारायण म० देसाईको[3]

१२ अक्टूबर, १९३२

चि० नारायणराव उर्फ बाबलो,

हाँ, तेरी शिकायत आई तो है। यह ठीक है कि सब बच्चे खेलते है किन्तु उन्हे खेलनेके समय खेलना चाहिए और कामके समय काम करना चाहिए। उन्हे दूसरोको परेशान तो नही करना चाहिए। ऐसा जान पड़ता है कि तू आजकल

१. टर्टनने गांधीजी के उपवासको आत्महत्याके प्रयत्नके समान बताते हुए उससे अपनी असहमति प्रकट की थी।

२. कच्छ-निवासी एक खोजा सज्जन।

३. महादेव देसाईका पुत्र।

खेलता ही रहता है और दूसरोको परेशान करता है। यह ठीक है क्या? यदि यह बात ठीक हो तो तुझे ऐसा नही करना चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४८०) से।

४०३. पत्र : गुलाबको

१२ अक्टूबर, १९३२

चि० गुलाब,

तेरा पत्र मिला। अक्षर बहुत सुन्दर होने चाहिए। तुझे साधकर लिखना चाहिए। नीद आनेपर तू खडी हो जाती है, यह ठीक करती है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७२६)से।

४०४. पत्र : रेजिनाल्ड रेनॉल्ड्सको

१३ अक्टूबर, १९३२

प्रिय अगद[1],

तुम्हारा पत्र मिला। बडा प्यारा लगा — ठडी हवाके झोकेकी तरह खुशगवार। मै जानता था कि तुम और जिन दूसरे लोगोकी बात मेरे मनमे है, वे सब मेरे उपवासके मर्मको जरूर समझेगे। माँ जैसे बच्चेको सुलाती है, वैसे ही ईश्वरने मुझे धीरेसे उपवास-शय्यापर सुला दिया। और फिर सारे देशमे उसके प्रभावका जो भव्य दर्शन हुआ उसका मेरे लिए तो उससे भी अधिक अर्थ था। हॉरेस अलेक्जैडरने मुझे बताया कि तुमने कोई काम स्वीकार कर लिया है। अपना हालचाल भी कुछ जरूर बताना। ऐसा मत समझना कि तुम्हारे व्यक्तिगत जीवन और कल्याणमे हमारी कोई रुचि ही नही है। वा को दिन-भर मेरे साथ रहनेकी अनुमति है। सो हम चारो तुमको प्यार भेजते हैं।

मैंने अपनी खोई हुई ताकत लगभग प्राप्त कर ली है।

बापू

मूल अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५४३) से; सौजन्य स्वार्थमोर कॉलेज, फिलाडेल्फिया

१. रेनॉल्ड्स २ मार्च, १९३० को गांधीजी का पत्र वाइसरायके पास ले गये थे इसलिए गांधीजी ने उन्हें यह नाम दिया था; देखिए खण्ड ४३, पृ० ३-९।

४०५. पत्र : लीलावती आसरको

१३ अक्टूबर, १९३२

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तेरा काम कठिन है। नारणदास जो-कुछ कहे सो हर्ष और श्रद्धापूर्वक कर अथवा स्वतन्त्र रह। और यदि उस तरह न रह सके तो फिर आश्रम चली आ। यदि मृदुलाबहनकी[1] देख-रेखमे रह सके तो यह भी अच्छा होगा। किन्तु यदि शहरमे ही काम करना है तो तुझे शहरमे ही रहना चाहिए। तेरा शरीर ऐसा नही है कि तू साइकिलपर शहर आ-जा सके। इसमे मुझे खतरा नजर आता है। एक साथ दो घोडोपर सवार होनेका लोभ छोड देना। आश्रममे मजदूरोसे कमसे-कम मदद लेनेका जो प्रयत्न किया जा रहा है उसमे तू बाधक मत बनना। तेरा पत्र लम्बा है, इस बातकी कोई चिन्ता नही बल्कि तू स्याहीसे लिखनेकी आदत डाल। तुझे अपनी आमदनीसे एक पाई भी अधिक खर्च नही करनी चाहिए। तू जहाँ भी रहे, वहाँसे मुझे लिखती रहना। जेलके बारेमे तूने जो लिखा है वह सही नही है। यहाँकी खुराक खाकर कोई आदमी जड हो गया हो, ऐसा तो मेरे सुननेमे नही आया।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९३२३)से।

४०६. पत्र : रसिक एस० देसाईको

१३ अक्टूबर, १९३२

चि० रसिक[2],

तेरा पुरजा देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। आशा करता हूँ कि जितना तेरा शरीर स्वस्थ हुआ है, तेरा मन भी उतना ही शान्त और स्वस्थ हुआ होगा। मेरा शरीर स्वस्थ हो गया है। तुम सबको आशीर्वाद। सरदार और महादेव प्रसन्न है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६१९) से। सी० डब्ल्यू० ४३५१ से भी; सौजन्य : वा० गो० देसाई

१. मृदुलाबहन साराभाई।

२. वा० गो० देसाईका भतीजा।

४०७. पत्र : जयाको

१३ अक्टूबर, १९३२

चि० जया,

तेरा पुरजा देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। कहा जा सकता है कि मेरा स्वास्थ्य फिर पहले-जैसा हो गया है। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगती है कि तुम सब बहनें साथ-साथ हो। ऐसा अनुभव अलभ्य है। वेणीलालके समाचार मुझे मिलते रहते हैं। सभी बहनोंको आशीर्वाद। सरदार और महादेव आनन्दपूर्वक हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२३) से।

४०८. पत्र : अमृतलाल वी० ठक्करको

१३ अक्टूबर, १९३२

भाई ठक्कर बापा,

तुम्हारा अंग्रेजीमें लिखा पत्र और मुद्रित लेख भी मिला। किन्तु मुझे अस्पृश्यताके सम्बन्धमें भी लिखनेकी अनुमति अभीतक नहीं मिली है। मैं तो लिखनेके लिए बहुत आतुर हूँ। इस बारेमें मैंने [सरकारको] लिखा तो है। देखें, क्या होता है। हम सब यहाँ कुशलपूर्वक हैं। लगातार सफर करते हो — अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०३)से।

४०९. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

१३ अक्टूबर, १९३२

चि० हेमप्रभा,

तुम्हारा इग्रेजी खत मिला है। हरिजनोके मार्फत सत्याग्रह कराना कहा तक योग्य है मुझे ठीक मालुम नहि है। सतीष बावुमे कहा आस्ते काम लेवे। मुझे लिखा करो। धीरजकी बडी आवश्यकता है। सतीष वावुको वुखार क्यो आया? आरामकी आवश्यकता है तो आराम लेवे। तुमारे भी शरीर बिगाडकर कार्य नहि करना है। खितिष बावुको अबतक क्यो आराम नहि है?

ईश्वर सब चीजमे हमे योग्य मति और शक्ति दे।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

मुझको शक्ति काफी आई है। दूध फलादि खा लेता हूँ।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६९०)से।

४१०. एक पत्र

१३ अक्टूबर, १९३२

सभी वर्ण शूद्र है और प्रत्येक हिन्दूको वेद-मन्त्रोके उच्चारणका अधिकार है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३४

४११. पत्र : नरसिंहराव बी० दिवेटियाको[1]

[१४ अक्टूबर, १९३२के पूर्व][2]

आपकी लडकीके अवसानका समाचार पढकर हम सबको दुःख हुआ। महादेवने बताया कि यही एक लडकी रह गई थी। मुझे आपके प्रति सम्वेदना प्रकट करनेकी आवश्यकता नही है। आप दोनो ज्ञानी है। ईश्वर आपको शान्ति प्रदान करे।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२ पृ० १४६

१. (१८५९-१९३७); गुजराती-कवि तथा साहित्यकार।

२. साधन सूत्रमें हालाँकि यह पत्र १८ अक्टूबरके विवरणके अन्तर्गत दिया गया है लेकिन नरसिंहरावने अपनी पुस्तक नरसिंहरायनी रोजनीशीमें इसे इसी तिथिको प्राप्त हुआ बताया है।

४१२. पत्र : कुमुदबान्धव चटर्जीको

१४ अक्टूबर, १९३२

यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि आपकी तरफ मन्दिरोके द्वार हरिजनोके लिए खोले जा रहे है। रोटी-व्यवहार अथवा बेटी-व्यवहार अस्पृश्यता-निवारणके कार्यक्रमका अनिवार्य अग नही है, लेकिन कोई चाहे तो बखूबी हरिजनोके साथ खा सकता है या विवाह-सम्बन्ध कर सकता है। दूसरे शब्दोमे, सभी बातोमे हरिजनोका भी वही दर्जा होना चाहिए जो शेष हिन्दुओका है। साथ खानेका मतलब एक ही थालीमे खाना नही है। इसलिए खानेमे किसीकी लार गिर जानेकी कोई बात ही नही हो सकती।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ३-११-१९३२ तथा महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३४

४१३. पत्र : केशवको[1]

१४ अक्टूबर, १९३२

हाँ, उपवास भगवान्की दी हुई भेट थी। आप धर्म-परिवर्तन करानेका विचार मनमे रखे बिना अछूतोकी जो भी सेवा कर सके, उससे भला ही होगा।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३५

४१४. एक पत्र

१४ अक्टूबर, १९३२

मेरा दृढ विश्वास है कि हरिजनोमे पाई जानेवाली प्रत्येक बुरी आदतके लिए तथाकथित सवर्ण हिन्दू दोषी है। सहानुभूतिपूर्वक उपाय करनेसे ही वे आदते दूर हो सकती है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३४

१. क्राइस्ट सेवा संघके सदस्य।

४१५. पत्र : वसुमती पण्डितको

१४ अक्टूबर, १९३२

चि० वसुमती,

मैं इतनी आसानीसे आलस्यके आरोपसे मुक्त नही करूँगा। खादी वेचनेके वावजूद पोस्टकार्ड लिखकर डालनेका समय तो मिलना ही चाहिए। किन्तु उसके लिए हर पलकी कीमत आँकना आना चाहिए। ऐसा करना धीरे-धीरे सीख पाओगी। अन्त्यजोकी सेवा करना निश्चय ही उत्तम धर्म है, किन्तु यदि यह पूर्ववर्ती प्रतिज्ञाके पालनमे वाधक हो तो फिलहाल उसे स्वीकार नही किया जा सकता। "श्रेयान्स्वधर्मो विगुण परधर्मात्स्वनुष्ठितात्"[1] यह श्लोक और इसका अर्थ याद है न?

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९३३४) से। सी० डब्ल्यू० ५८० से भी; सौजन्य : वसुमती पण्डित

४१६. पत्र : एस० के० जॉर्जको

१४ अक्टूबर, १९३२

प्रिय जॉर्ज,

अपने पत्रमे[2] तुमने जिस नम्रता-भरी साफगोईसे काम लिया है, वह मुझे वहुत अच्छा लगा। हाँ, इसका जैसा पूरा और विस्तृत उत्तर देना योग्य है, वैसा उत्तर मैं नही दे सकता। कैदीकी हैसियतसे मेरी स्थिति ऐसी नही है कि मैं तुम्हे विस्तृत उत्तर दे सकूँ। हाँ, एक बात जरूर कहूँगा। तुम राजनीतिको धर्मसे अलग मानते जान पड़ते हो, मगर मैं वैसा-कुछ नही मानता। सच्चा धर्म तो वही है जो जीवनका हर प्रवृत्तिमे समाया हुआ हो। और जो प्रवृत्ति धर्मकी वलि चढाये विना न चलाई जा सकती हो, वह अनैतिक प्रवृत्ति है और उससे हर हालतमे दूर ही रहना चाहिए। राजनीति ऐसी प्रवृत्ति नही है, इतना ही नही, वल्कि वह तो हमारे

१. भगवद्गीता, ३-३५।

२. तात्पर्य ५ अक्टूबरके पत्रसे है। अपने पत्रमें एस० के० जॉर्जने लिखा था कि जिन लोगोंके मानसचक्षुमें "प्रभुके साम्राज्य" का कोई चित्र ही कभी नहीं उभरा, उनके वलपर उस साम्राज्यकी रचना कैसे की जा सकती है। उन्होने अस्पृश्यताके खिलाफ गांधीजी के उपवासकी भी आलोचना की थी, क्योंकि उनके विचारसे अस्पृश्यताका सम्वन्ध राजनीतिसे न होकर धर्मसे था और इसलिए स्वराज्यसे उसका कोई सरोकार नहीं था।

नागरिक जीवनका अभिन्न अंग है। शेष चर्चा तो किसी अधिक अच्छे अवसरपर ही हो सकेगी। बस इतना ध्यान रखना कि निराशा और घबराहटमे मुझे त्याग न देना। आशा है, मेरा पिछला पत्र[1] मिल गया होगा।

तुम्हारा,
बापू

[अंग्रेजीसे]
गांधीज चैलेंज टु क्रिश्चियनिटी, पृ० ९३

४१७. पत्र: महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको

१४ अक्टूबर, १९३२

चि० महालक्ष्मी,

चूड़ी, बिन्दी, रंगीन साड़ी शृंगार भी हो सकता और रूढ़िमात्र भी हो सकता है। जैसे खाना भोग हो सकता है और देहका भाड़ा भी। हमे भोगके लिए खाना छोड़ देना चाहिए किन्तु भाड़ेके रूपमे शरीरको जो-कुछ देना हो सो दें, फिर भले वह भोगकी वस्तु ही क्यो न हो। दूध, दही, खजूर खानेमे क्या कुछ कम भोग है? फिर भी तुम खाती तो हो न? क्योकि तुम्हारे लिए ये भोगकी वस्तुएँ नही हैं। उसी प्रकार चूड़ी, बिन्दी या रगके कारण तुम्हारे मनमे विकार उत्पन्न होता हो तो दुनिया-भरके विरोधके बावजूद उन्हे छोड़ देना चाहिए। किन्तु यदि केवल रूढ़िवश या बुजुर्गोंको खुश रखनेकी खातिर इनका उपयोग करती हो तो उसमें दोष नही है। तात्पर्य यह कि इनका उपयोग न करना वैसा परम धर्म नही है, जिस प्रकार झूठ न बोलना है। इसी वजहसे मैंने लिखा था कि चूड़ियाँ न पहननेका व्रत लेना दोषपूर्ण था।[2] जो परम धर्म नही है उसका एकाएक व्रत नही लिया जा सकता। उसमे कोई बड़ा त्याग नही है। हाँ, यदि चूड़ियोके पीछे तुम जान दे रही होती, चूड़ियोंके लिए देश-परदेश भटकती होती, चोरी करती होती तो तुम्हारा व्रत लेना ठीक होता। ऐसी स्त्रियोको मैं जानता हूँ जिन्हें नाना प्रकारकी चूड़ियाँ चाहिए और उनके लिए वे लड़ती है, चोरी करती हैं। ऐसी बहने यदि व्रत ले तो अच्छा हो। किन्तु यदि ऐसी बात कहूँ तो वे मुझसे भी लड़ती है। जिनके लिए चोटीमे ही सारा शृंगार है उनसे चोटीका परित्याग करनेको कहते ही वे लाल-लाल आँखे दिखाती हैं। ऐसी स्त्रियाँ भले चोटी कटवा दे। किन्तु जो चोटी रखना नही चाहती, जिनके लिए चोटी भारस्वरूप है, ऐसी स्त्रियाँ यदि माता-पिताको खुश रखने या समाजको न छोडनेके लिए चोटी रखें तो कोई बुराई नही है। उनके लिए चोटी रखना धर्म भी हो सकता है। क्या अब यह चूड़ियोका शास्त्र तुम्हारी समझमे आ गया?

१. देखिए "पत्र: एस० के० जॉर्जको", ३-१०-१९३२।
२. देखिए "पत्र: महालक्ष्मी माधवजी ठक्करको", २-१०-१९३२।

अब बच्चोके बारेमे। उनका मामला भी लगभग चूड़ियो-जैसा ही समझो। मान लो कि तुम्हारे बिना आश्रममे उनका मन न लगता हो और उन्हे अन्यत्र कही न रखा जा सकता हो तो आश्रममे कुछ समय बिताना तुम्हारा कर्त्तव्य हो जाता है। किन्तु इसे आश्रममे 'रहना' नही कहा जा सकता। जिस प्रकार बहुत अधिक बीमार हो जानेपर कुछ आराम लेनेमे कोई दोष नही होता, उसी प्रकार महीना-पन्द्रह दिन आश्रममे बितानेमे दोष नही है। बल्कि वैसा करना कर्त्तव्य है। ऐसे काम सोच-समझकर किये जाते है। इसीलिए 'गीतामाता' ने कहा है कि कर्म क्या है, विकर्म क्या है और अकर्म क्या है, उसे समझना आसान नही है। इसलिए यदि बच्चो को कलकत्तामे रखनेमे अडचन हो और उन्हे आश्रममे रखना कर्त्तव्य समझती हो तो उनके लौट आनेपर मेरी जिम्मेदारीपर और सर्वोपरि बच्चोकी खातिर एक महीना देना और उन्हे आश्रममे रहना सिखा देना। यदि इसी बीच किसी आवश्यक कार्यवश तुम्हे जाना पडे तो चली जाना। नारणदास जैसे भी होगा बच्चोको रखेगा। यदि तुम न रहो और कलकत्तामे भी कोई न हो तो क्या नारणदास जैसे बने वैसे उन्हे नही सँभालेगा? किन्तु यदि यह तुम्हे न भाये या बच्चे न आये अथवा बुजुर्ग लोग दुःखी हो तो बच्चे जहाँ है उन्हे वही रहने देना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

यदि अब भी कोई शका रह गई हो तो पूछना।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६८२३) से।

४१८. पत्र : जेलवासिनी बहनोंको

१४ अक्टूबर, १९३२

दुर्गाबाई जोगसे कहना कि बहनोको कामसे इधर-उधर आने-जानेमे जो डर लगता है, वह मनको दृढ करनेसे निकल जायेगा। मनमे यह निश्चय करके कि रक्षा करनेवाला राम है, सेवा या कामके लिए जहाँ जाना जरूरी हो, वहाँ चले जाना चाहिए। डर किसका? पुरुषोका ही न? पुरुष-मात्र कोई बहनोपर हमला करनेकी ताकमे थोडे ही बैठे रहते है? उनका जन्म भी माताके पेटसे ही हुआ है। यह विश्वास रखना चाहिए कि वे मातृसदृश स्त्री-जातिपर इस तरह हमला करेगे ही नही। स्त्री अपना मातृपद धारण कर ले तब तो वह पुरुषसे उसी हालतमे डर सकती है जब माता अपने बालकसे डरे। इतनेपर भी कोई कामान्ध निकल आये, तो बहने समझ ले कि उनका पवित्रता-रूपी कवच उनकी रक्षा जरूर करेगा।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३५-६

४१९. एक पत्र

१४ अक्टूबर, १९३२

मन्दिर-प्रवेश अस्पृश्यता-निवारणका आवश्यक अग है। आम तौरपर जो व्यवहार दूसरी जातियोके बीच है, अछूत भाई-बहनोके साथ भी वही होना चाहिए। रोटी-व्यवहार लोगोकी इच्छापर निर्भर है। वह अस्पृश्यता-निवारणका आवश्यक अग नही है। मगर मेरा यह खयाल है कि हिन्दू धर्ममे किसीके साथ भी 'खाद्य पदार्थ' खानेका निषेध नही है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३४

४२०. पत्र: ए० रंगस्वामी अय्यंगारको

१५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय रगस्वामी,

आशा है, आपको मेरा तार[1] दो-तीन दिन पहले ही मिल गया होगा। उसे मैंने इसी महीनेकी ३ तारीखको अधिकारियोको दे दिया था, लेकिन उन्होंने उसको भारत सरकारका निर्देश मिलनेतकके लिए रोक रखा था। जमोरिनको भेजे तारकी[2] एक नकल साथमें लगा रहा हूँ। तो इस तरह आप देखेंगे कि अगर मन्दिरके द्वार अस्पृश्योके लिए निर्धारित समयके भीतर खुलवाने है तो अब वक्त बरबाद करनेकी गुजाइश नही है। इसलिए मै आशा करता हूँ कि आप और जिन मित्रोका आपने उल्लेख किया है, वे सब इस सम्बन्धमें जल्दी कदम उठायेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री ए० रगस्वामी अय्यगार
'हिन्दू'
मद्रास

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३

१ व २. देखिए "तार: ए० रगस्वामी अय्यंगारको", ३-१०-१९३२।

४२१. पत्र : के० केलप्पनको

१५ अक्टूबर, १९३२

मुझे पहले ही पत्र लिखना चाहिए था, लेकिन अधिकारी इस बातपर विचार कर रहे थे कि ऐसे पत्र-व्यवहार की इजाजत दी जाये या नही। जमोरिनके नाम तार मैंने अधिकारियोको उसी दिन दे दिया था जिस दिन मैंने तुम्हे तार भेजा था, अर्थात् इस महीनेकी ३ तारीखको ही। लेकिन उस तारको उन्होंने रोक रखा। अब वह भेज दिया गया है। साथमे उसकी नकल भेज रहा हूँ। इससे तुम यह समझ जाओगे कि मैंने कार्रवाई तुरन्त शुरू कर दी थी।

वहाँ तुम जो भी करो, बहुत नरमी और शिष्टताके साथ करो। कोई धमकी नही दी जानी चाहिए और न बडी-बडी बाते ही करनी चाहिए। असली बात तो लोगोंका — कट्टरपथी लोगोका भी — हृदय-परिवर्तन करनेकी है। इस कार्यकी प्रगतिकी सूचना मुझे नियमित रूपसे देते रहो।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३७

४२२. पत्र : कालिकटके जमोरिनको

१५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय मित्र,

तार[1] तो मैंने इस महीनेकी ३ तारीखको अधिकारियोको दे दिया था, लेकिन वे उसपर विचार करते रहे और केवल तीन दिन पहले उसको भेजनेकी अनुमति दी गई। आशा है, वह आपको यथासमय मिल गया होगा। मुझे विश्वास है कि आप इस सम्बन्धमे कार्रवाई करेंगे और जबतकके लिए अनशन स्थगित किया गया है, उसी अवधिके भीतर मन्दिरके द्वार अस्पृश्योके लिए खुलवानेकी व्यवस्था करेंगे।

आपको किस तरह सम्बोधित किया जाये, यह मुझे मालूम नही है। इसलिए अगर सम्बोधनमे कोई दोष हो तो यह समझकर कि मैंने इरादतन वैसा नही किया, मुझे यथोचित जानकारी देनेकी कृपा कीजिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३७

१. देखिए "तार: कालिकटके जमोरिनको", ३-१०-१९३२।

४२३. पत्र : आश्रमके बालक-बलिकाओंको

१५ अक्टूबर, १९३२

बालको और बालिकाओ,

तुम्हारा पत्र बहुत दिनो बाद मिला।

आशा है, अब सभी बीमार अच्छे हो गये होगे।

नव वर्षके सिलसिलेमे मै इतना ही कहना चाहता हूँ कि आश्रमके सभी व्रतोको और भी गहराईसे समझो और सजग बनो। तुम लोग ज्यो-ज्यो उन व्रतोका पालन मनोयोगपूर्वक करोगे त्यो-त्यो तुम्हारी शारीरिक और आत्मिक उन्नति होगी।

बालिकाओने स्वय एक बार खाना बनाया, यह तो बहुत अच्छा हुआ। और फिर पाँच ही चीजे बनाई, इसलिए यदि मै वहाँ होता तो उनके हाथका बना भोजन मुझे भी खानेको मिलता न? किन्तु मै भूलता हूँ। अभी तो मै वहाँ पहुँच ही नही सकता। यदि प्रभुकी इच्छा होगी तो किसी दिन बालिकाओके पवित्र हाथोसे बना हुआ भोजन पाऊँगा।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एस० एम० यू०/२) से।

४२४. पत्र : रुक्मिणीदेवी बजाजको

१५ अक्टूबर, [१९३२][1]

चि० रुखी,

तेरा पत्र मिला। किन्तु मैंने तुझे ठठेरी बाजारके पतेपर जो पत्र[2] लिखा था उसकी प्राप्तिकी सूचना उसमे नही है। यदि यह पता पूरा नही है तो तुझे अपने पत्रमे उसे नही लिखना चाहिए। तू पुन ठीक हो गई उसके लिए बधाई। मेरे शरीरमे ताकत करीब-करीब आ गई है। वजन धीरे-धीरे बढे यही अच्छा होगा। बा कलतक प्रतिदिन मेरे पास आती रही थी। अब मुझे उसकी देखभालकी जरूरत नही है इसलिए हम दोनोने निश्चय किया कि वह न आये। वह आज बम्बई चली गई होगी। राधाके[3] पत्र मिलते रहते है। उसके स्वास्थ्यमे बहुत अधिक सुधार तो नही

१. डाककी मुहरसे।

२. देखिए "पत्र: रुक्मिणीदेवी बजाजको", ११-१०-१९३२।

३. रुक्मिणीदेवीकी बहन।

हुआ है किन्तु देवलालीमे जितना सुधार हुआ था, वह अभी तो टिका हुआ जान पड़ता है।

बापूके आशीर्वाद

श्री० रुक्मिणीवहन
के० २३/९६, पंचगगा
बनारस सिटी

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१४२)से।

४२५. पत्र : नारणदास गांधीको

१५/१६ अक्टूबर, १९३२
१५ अक्टूबर, १९३२ की रात

चि० नारणदास,

तुम्हारी डाक नियमानुसार मिली।

चम्पा खासी बीमार हो गई लगती है। चम्पाका अलगसे भेजा पत्र मिला था। उसमे उसने पूछा है कि बीमारी वगैरहको लेकर उसका खर्च बढ जाये तो वह क्या करे। मेरा उत्तर देखना। उसका समाधान करना। कभी कुछ ज्यादा खर्च करे तो करने देना। यह पैसा बम्बईसे मँगाते हो या रगूनसे? तुम्हारे पत्रसे लगा है कि चम्पाकी बीमारीसे रतिलाल समझदार हो गया है। यह तो शुभ ही कहा जायेगा।

१६ अक्टूबर, १९३२
सुबहके ४-१५ बजे

पण्डितजी ने पूछा था कि आश्रमवासी अस्पृश्यता-निवारणमे कहाँ और कितना योगदान करे। उसका जवाब दे दिया था। फिर भी यहाँ जरा विस्तारसे लिख रहा हूँ। आश्रमका हेतु यह है कि उसमे तैयार हुए लोग अलग-अलग गाँवोमे फैल जाये और वही सेवा-कार्यमे लग जाये। सेवा-कार्योमे तो खादी, अस्पृश्यता-निवारण वगैरह ही आयेगे। उनमे भी किसी समय यदि वातावरण किसी खास कामके लिए विशेष अनुकल हो तो उसका लाभ उठाकर उस समय वे उसी प्रवृत्तिको ज्यादा चलाये। इसलिए आसपासके गाँवोमे यदि हमसे अस्पृश्यता-निवारणका कुछ काम हो सके तो अवश्य करना चाहिए। शहरमे भी हो सके तो करना चाहिए। हमारे ही बगलमे एक मन्दिर है। सामने भी है। यदि उनके द्वार अस्पृश्योके लिए खुलवाये जा सके तो खुलवाओ। अगर हम अपने यहाँ और भी अस्पृश्योको बसा सकते हो तो बसाये। विनोबाकी कल्पना तो सुन्दर है ही। उसे कार्यान्वित करते बने तो करना चाहिए। ये तो कुछ फुटकर-से मार्गदर्शक सुझाव है। जरूरी यह है कि किसी भी दिशामे

जिसको जो सूझे वह काम वह करे। जिस तरह दूधमे शक्कर मिल जाती है, उसी तरह हमे भी [इस काममे] पूरी तरह घुल-मिल जाना चाहिए। मगर इसके बावजूद हमें अलिप्त रहना चाहिए। आश्रमने या किसी आश्रमवासीने अमुक काम किया, ऐसा खयालतक मनमें नही आना चाहिए। जो होता है, ईश्वरके कराये होता है, ऐसा जानकर और मानकर चलना चाहिए। इन सुझावोसे आगे-पीछे ली गई प्रतिज्ञाओमे कोई बाधा नही पड़ती, नही पडनी चाहिए। वे प्रतिज्ञाएँ तो अविच्छिन्न है ही। सभी अपनी-अपनी प्रतिज्ञाओंका पालन करते हुए इस अस्पृश्यता-निवारणके वातावरणमे जिस हदतक घुल-मिल सके, घुले-मिले। इस प्रकारकी प्रवृत्ति किसीकी प्रतिज्ञाके साथ मेल न खाये तो उसके लिए तो मार्ग निश्चित है ही। परधर्म भले ही उत्तम हो, लेकिन प्रत्येकका श्रेय स्वधर्मके पालनमे ही है। उसमे जीना-मरना समान है, अर्थात् श्रेयस्कर है। पुंजाभाईको ऐसी कुर्सीपर किसने बैठाया कि वह गिर जाये? जिसको दौरा पडता हो उसका आसन तो हमेशा सुस्थिर होना चाहिए। मगर यह तो घटना हो जानेके बाद सूझनेवाली होशियारी हुई। फिर भी, दूसरोकी अथवा अपनी भूलोसे शिक्षा लेकर भविष्यमे उन्हे फिर न होने देनेका प्रयत्न करनेसे तो आगे बढा जा सकता है न? त्रिवेदीके भाईकी पत्नी तारागौरीकी मृत्युसे भयभीत होनेका तो कारण ही नही है। मृत्यु तो होनी ही थी। स्टोव निमित्त-मात्र था। उसपर भी तत्काल सहायता नही दी जा सकी। तारागौरी भी घबरा गई; लहँगेका नाडा न खोल पाई। खोलते हुए एक गाँठ और पड़ गई। यह सब होना था। हम सब मृत्युसे तो घिरे हुए ही हैं। किस दिशासे कब वह आ धमकेगी, कौन जानता है। ऐसी मृत्युसे हमे एक ही सीख लेनी चाहिए। जो आज हो सकता है वह कल नही, जो इस क्षण हो सकता है वह दूसरे क्षण नही। इसके अलावा हमें स्टोवका मोह छोडना सीखना चाहिए और फिर सबको यह भी जान लेना चाहिए कि आग लग जानेपर क्या करना चाहिए।

इस बार तलेके लिए जो चमडा आया है, अच्छा है। तुमने जो चप्पले भेजी, न भेजते तो भी चलता, क्योकि मेरे पास तीन जोड़ियाँ तो है ही। वे सब ऊपरसे ठीक पहनने लायक है। तले सबके खराब हो गये हैं। अब ठीक करवा लूँगा। इस तरह तीनो नई जोडियाँ हो जायेगी। नई भेजी है, वह चौथी। लेकिन कोई फिक्र नही; वहाँ सहेजकर रखनेके बजाय यही रखी रहेगी।

कुसुमके विषयमे जरा और सोच लेना। उसे अलमोडा भेजा जा सकता है क्या? यह तो पूरा कुटुम्ब ही रोगग्रस्त जान पडता है। नवीनको स्पष्टत क्षयके लक्षण है। धीरूकी भी यही हालत लगती है। और कुसुम ठीक हो ही नही रही है। मजुलाका कान तो [उसकी रुग्णताका] लक्षण-मात्र है। रोग तो, लगता है, वही है। फिर भी शायद चारो ठीक हो जाये, बशर्ते कि रोगके प्रतिकारके लिए तुरन्त प्रबल उपाय किये जाये। उनमे जलवायु परिवर्तन कदाचित् मुख्य है। अभीतक तो नवीन और धीरू ऐसे है कि वे अपनेको खुद ही सँभाल सकते है। और सब तरहसे वे दोनों तैयार हो चुके है। यदि उनमे ऐसा सेवा-भाव हो कि वे कुसुमकी सेवा

कर सके, कमरेमे जगह हो, उनमें जानेका उत्साह हो, प्रभुदास उन्हे रखनेको तैयार हो, और तुम्हे लगे कि वे जा सकते है, तभी तुम भेजनेका विचार करना, अन्यथा इस वातको भूल जाना।[1]

यह तो जीनेका वहुत उत्साह रखनेवालो के लिए है। राजमार्ग तो गगादेवी वता गई है — आश्रममे ही रहकर जिया जा सकता हो तो जिये। अन्यथा मरणको अपना सहचर मानकर तो हम सब यहाँ वैठे ही है। वे सव सकल्पपूर्वक आश्रममे रहे; चौवीसो घटे खुली हवामे रहकर किये जा सकनेवाले और विना अधिक श्रमके हो सकनेवाले काम ही करें, सादीसे-सादी खुराक ले, कटिस्नान आदि करे और दिन गुजारे। यदि वे प्रसन्नचित्त होकर इस तरह रहे तो ठीक भी हो सकते है। इस सवपर पहले तो तुम खुद विचार करना, वादमे वात करनी हो तो उनके साथ भी वात कर लेना। अभी चर्चा करना ही ठीक न लगे तो इस बातको भूल जाना। मेरे पास उपवासके विषयमे मादनकी एक पुस्तक आई है। शायद वहाँ भी यह पुस्तक है। न हो तो जो यहाँ आई है, वही भेज दूंगा। तुम उसे देख जाना। भाऊके लिए तो वह विचार करने योग्य है ही। केशूके यन्त्रको पेटेंट करवानेकी कोई जरूरत नही। उससे होड करनेको कोई नही आयेगा। आये तो भी कोई चिन्ता नही। हम पेटेंट नही ले सकते। अभी तो मुझे ऐसा ही लगता है। गोडसेको[2] पत्र लिखा करता हूँ।

रोटी बनानेका तरीका बिलकुल समझ गया था। यहाँका तरीका उससे आसान है। वीचमे उपवास आ जानेके कारण यहाँका तरीका लिखकर तुम्हे नही भेज सका। अव भेजूंगा। यह तरीका वहाँ आजमाकर देखना।

बापू

[पुनश्च :]

मेरे और महादेवके सूतको ठीकसे जाँचकर उनकी बट, समानता, अक वगैरह वताना। उससे कपडा कबतक बुनवाओगे? उसे बुनने लायक राछ-फन्नी वहाँ है क्या?

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२६० से भी, सौजन्य : नारणदास गाधी

१. इससे आगेका अंश बापुना पत्रो-९ : श्री नारणदास गांधीने, भाग-१, पृ० ४८७ से लिया गया है। सी० डब्ल्यू० ८२६०-ए से भी, सौजन्य : नारणदास गांधी।

२. गणेश वासुदेव गोडसे, विद्यापीठके एक स्नातक जो १९३० के दांडी-कूचमें भी शामिल थे।

४२६. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

१५ अक्टूबर, १९३२

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। सबके समाचार दिये, यह ठीक किया। लीलावतीका काम कठिन है। तुझपर उसकी श्रद्धा है, इसलिए तू कुछ कर सके तो अच्छा हो। वह है भली, उसका हेतु शुभ है, लेकिन बहुत विह्वल और अव्यवस्थित चित्तवाली है। प्रेमसे जो किया जा सके, करना।

तेरा वजन घट रहा है, इसका कारण खोजकर तुझे दूर करना चाहिए। दूध वगैरह कम लेती हो तो ज्यादा लेना चाहिए। हठ करके अच्छे शरीरको कमजोर मत कर डालना। यदि तेरे लिए कोई यह कहे कि इसकी तो कमर टूट गई तो यह मुझसे सहन नही होगा।

. . [1]ने माफी माँगी, यह ठीक किया। उसे अपना स्नेह-ममता दे सके तो देना। वह बहुत होशियार है, यह मैंने देख लिया है। अपनी होशियारीका वह ठीक उपयोग करे तो कितना अच्छा हो।

आश्रमके पैसेका उपयोग जिसके लिए होना चाहिए उसीके लिए होता है, चाहे वह कोई भी हो। लेकिन आलोचना तो चाहे जिस कामकी हो सकती है। भूले होती होगी, लेकिन आश्रमका हेतु हमेशा तटस्थतासे व्यवस्था करना रहा है।

लोगोको आश्रमकी पाई-पाईका हिसाब देखनेका अधिकार है। आश्रम व्यक्तिगत सस्था नही है। खर्चकी मर्यादा उसकी आयसे सम्बन्ध रखती है। आश्रमके पास कौडी न हो तो भी उसका काम चलेगा, करोडोकी राशि हो तो वह भी आश्रम खर्च करेगा। देनेवालो को विश्वास है, तबतक वे देगे। सस्थाको ईश्वर चलाता है। देनेवालो को वही प्रेरणा देता है।

मेरी दृष्टिसे तो जो भी बाहर जाये, उसे मन्त्रीसे इजाजत लेनी चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०६) से। सी० डब्ल्यू० ६७४५ से भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

१. नाम छोड दिया गया है।

४२७. पत्र : मीठीबहनको

१५ अक्टूबर, १९३२

अस्पृश्यता-निवारणमें रोटी-बेटी व्यवहार नही आता। लेकिन अस्पृश्य माने जानेवाले हरिजनोके साथ जो भी रोटी-व्यवहार रखता है, वह अधर्म करता है, ऐसा मै नही मानता। रोटी-बेटी व्यवहारका निषेध हिन्दू धर्मका अविभाज्य अग नही है, ऐसी रूढि हो गई है। हरिजनो और दूसरी जातियोके बीच भेद नही रखा जा सकता। इसमे किसीको मजबूर करनेकी बात नही है, इसलिए किसीको दु ख न होना चाहिए।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १३८

४२८. पत्र : सुलोचनाको

१५ अक्टूबर, १९३२

चि० सुलोचना,

जो प्रश्न तूने मुझसे पूछे है वे प्रेमाबहनसे पूछना। यदि उसके उत्तरोसे सन्तोष न हो तो पुन मुझसे पूछना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७४०)से।

४२९. पत्र : बालकृष्ण भावेको

१६ अक्टूबर, १९३२

कहा जा सकता है कि उपवासके दिनोमे नाम-स्मरण आदि ज्यादा हुआ, क्योकि शारीरिक दु खके बावजूद शान्ति बहुत थी। यह हो सकता है कि जिसे असाध्य रोग है, वह खास हालतोमे अनशन करे, तो उसमे आत्महत्याका दोष न हो। मगर जिस असाध्य रोगवाले का मन साफ है, उसे अनशनका अधिकार नही है, क्योकि वह मनसे भी सेवा कर सकता है। मेरी पिछली बीमारीसे तुम्हारा मतलव क्या कोल्हापुरमे[1] हुई बीमारीसे है? खैर, जिससे भी हो। मुझे याद है कि मेरे लिए हर बीमारी अनुग्रहरूप ही रही है। ईश्वरके भक्तके साथ ऐसा ही होना भी चाहिए, फिर भले ही बीमारी उसकी मूर्खतासे ही आई हो। रामनाम, जाने-अनजाने, रोज ही जपता

१. मार्च, १९२७में; देखिए खण्ड ३३, पृ० २०९-१०।

हूँ, लेकिन हर सकटके समय उसका जाप ज्ञानपूर्वक करता हूँ और जहाँतक स्मरण है, उससे मुझे हमेशा शान्ति मिली है। यह नही कहा जा सकता कि नाम-स्मरणका कोई निश्चित समय है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४२

४३०. पत्र : जमनाबहन गांधीको

१६ अक्टूबर, १९३२

तीन महीनेका तुम्हारा कुल खर्च १२५ रुपये ज्यादा नही है। उसे जाननेकी मुझे इच्छा थी, क्योकि उससे मुझे बहुत-सी बाते जाननेको मिली है। अपना रुपया हो, तो भी कौडी-कौडीका हिसाब रखना ही चाहिए। क्योकि सच बात तो यह है कि अपना इस दुनियामे कुछ भी नही, सब ईश्वरका है, यह हमे रोज अनुभव होता है। इसलिए सब कुछ त्यागबुद्धिसे ही भोगना और खर्च करना चाहिए। जो ऐसा करेगा वह आत्मसन्तोषके लिए पाई-पाईका हिसाब रखेगा। सो अगर १२५ रुपयेका हिसाब इस तरह न रखा हो, तो अब रखनेकी आदत डालनी चाहिए। मुझे याद है कि देवभाभी ऐसा ही हिसाब जबानी रखती थी।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४१

४३१. पत्र : छगनलाल जोशीको

१६ अक्टूबर, १९३२

मुझे तो हर परीक्षा अच्छी लगती है। ईश्वरने ऐसी कोई शर्त लगाई ही नही है कि वह अपने भक्तोको अमुक सीमातक ही तपायेगा। हाँ, इतनी मर्यादा अवश्य है कि वह किसीको उसकी शक्तिसे अधिक नही तपाता।

सब कुछ अनासक्त रहकर करना सीख लोगे तो कुशल ही है। मै तो देखता हूँ कि आरोग्यकी कुजी भी उसीमे है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४२

४३२. पत्र : नर्मदा भुस्कुटेको

१६ अक्टूबर, १९३२

वाङ्मय साध्य नही है, सेवा साध्य है। वाङ्मय सेवाका साधन है, इसलिये जबतक हमारे हाथमे कुछ भी सेवा आई हो तबतक शान्तिसे उसमे तन्मय रहना। 'गीतामाता'की प्रतिज्ञा है कि जो ईश्वरके भक्त है उनको भगवान् साधन दे देगा। हा, जब समय मिले तब अक्षर-ज्ञानमे वृद्धि अवश्य करना। उसमे भी समझो कि पढनेसे विचार ज्यादा चीज है। भले पढनेका थोडा हो। जितना पढना उसे हजम करना।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४१-२

४३३. पत्र : जोहरा बानू अन्सारीको

१६ अक्टूबर, १९३२

प्यारी बेटी जोहरा,

तुमने मेरी गलतियाँ बहोत अच्छी तरह बतलाई है। मुझे डर है कि मै तुम्हारा बहोत वक्त लेता हूँ। जितना आसानीसे दे सके इतना ही देना। 'स्वाद', 'सीन' कहाँ कब आते है मुझे बता सकती है? इसी तरह 'तोय' और 'ते'का भी है। अगर तुम्हारा खत ज्यादा खूबसूरत नही है तो खूबसूरत खत किसको कहा जाय? कम-से-कम मैंने तो इससे ज्यादा अच्छे खत नही देखे है।

अब्बाजानका आजकल कोई खत मुझे नही मिला है। इसलिए अच्छा हुआ तुमने मुझे खबर दी है। अम्माजानको हम सबकी तरफसे आदाब। बा अब बम्बई चली गई है। हम दोनोने सोचा कि जब मुझे काफी ताकत आ गई है तो बा को कामपर चढ जाना चाहिए। मै जान-बूझकर पोस्टकार्ड ही लिखता हूँ क्योके इतना लिखनेमे ठीक वक्त जाता है।

बापूकी बहोत दुआ

महात्मा, भाग-३, पृ० ३०४-५के बीच प्रकाशित उर्दू पत्रकी प्रतिकृतिसे।

४३४. पत्र : हे० सॉ० लि० पोलकको

मौनवार, १७ अक्टूबर, १९३२

प्रात कालकी प्रार्थना हो चुकी है और अभी ठीक ४-२० बजे है। इसी माह की ७ तारीखका आपका पत्र कल मिला। आपके पत्रका मेरे लिए क्या मूल्य है, यह आप इसीसे जान लेगे कि मै अपना सबसे मूल्यवान समय उसका उत्तर देनेमे लगा रहा हूँ। उसका मूल्य इस बातमे है कि वह आपके प्रेम और निश्छलताकी अभिव्यक्ति है। एक ऐसे साधनके रूपमे जिसके द्वारा आप मुझे अपनी वातके सत्य होनेकी प्रतीति करा सके, उसका मूल्य वहुत थोडा है, या कुछ भी नही है। यदि मैने भूल की है तो भूल हो जानेकी प्रतीति मुझे घटनाके घटित होनेके वाद भी अच्छी लगेगी। क्योकि वह मुझे उस भूलको दोहरानेसे बचायेगी। पर मुझे ऐसा लग ही नही रहा है।

मै देख रहा हूँ कि यद्यपि हमारा पारस्परिक प्रेम वैसा ही है, पर हमारे दृष्टि-विन्दु एक-दूसरेसे भिन्न हो गये है, चीजोको देखने-समझने, उन्हे सुलझाने-सँभालनेके हमारे तरीके अलग-अलग हो गये है। अत हमे इसपर सहमत होना है कि हममे मतभेद है।

इस मामलेमे मैने यह सोचा था कि यदि दूसरा कोई मेरे कार्यको न भी समझे, आप और मिली तो उसे अपनी सहज-बुद्धिसे अनायास ही समझ लेगे, और मेरी ढाल बन जायेगे। पर वह सुख मेरे नसीबमे नही है। फिर भी, उससे अधिक सुख मुझे इस बातसे मिल रहा है कि राजनीतिक और आध्यात्मिक मतभेदोके बावजूद हमारा प्रेम कायम रह सकता है। अलबत्ता, आध्यात्मिक मतभेदोके लिए मै तैयार नही था। पर मै देखता हूँ कि व्यक्तिके राजनीतिक, सामाजिक और इसी तरहके अन्य विचार उसके आध्यात्मिक दृष्टिकोणके साथ गुँथे होते है और उसी से पैदा होते है। इसलिए जब हममे तीव्र राजनीतिक मतभेद हो तो अकसर उनका मूल आध्यात्मिक मतभेदमे मिलता है।

ऐसा लगता है कि उपवासका मर्म ही आपने नही समझा। आपको अल्पसख्यक समितिमे दिये मेरे भाषणको[1] देखना चाहिए। वह भाषण पहलेसे तैयार किया हुआ नही था। उसके अन्तमे मैने जो-कुछ कहा, उसे रोका नही जा सकता था। उपवास उसी गम्भीर घोषणाका अनिवार्य परिणाम था। वह घोषणा कैसे कार्यान्वित होगी, इसका तो तव मुझे पता ही न था। मै कहता हूँ कि वह घोषणा ईश्वरकी कराई हुई थी और उसे कार्यान्वित भी उसीने कराया। यदि ऐसा था तो सारी दलीले

१. देखिए खण्ड ४८, पृ० ११३-६।

बेकार है और यदि वह एक भ्रम था तो जो मित्र ऐसा मानते हैं, उनका यह कर्त्तव्य है कि वे अपने पूरे प्रेम और आग्रहके साथ मुझे यह सत्य समझानेकी कोशिश करे।

तबसे घटी हर घटना मेरे इस विचारकी पुष्टि करती है कि उपवास ईश्वर का सौपा हुआ कार्य था।

उपवासकी खबर प्रधान मन्त्रीके जरिये नही, वल्कि सर सैम्युअलके माध्यमसे ही जानी चाहिए थी। परन्तु यदि आपने मेरे सभी वक्तव्य और प्रधान मन्त्रीको मेरा पत्र भी देखा होता तो आपको यह मालूम हो जाता कि उपवास उन करोडो लोगोको लक्ष्य करके किया गया था जिनकी मुझमे श्रद्धा है और जिन्होने, जब-कभी मैं उनके वीचमे गया हूँ, मुझपर अपने अक्षय प्रेमकी वर्षा की है। वे विना किसी दलीलके ही उपवास और उसके सारे गूढार्थोको समझ गये। इसका राजनीतिक अग उनके लिए गौण था, उनके लिए तो आन्तरिक शुद्धि सब-कुछ थी। यह दूसरी चीज अब भी चल रही है। और याद रखिए कि उपवास केवल स्थगित हुआ है, यदि लोग सो जाते है तो यह फिर शुरू करना होगा। यदि प्रेमी अपने प्रियतमको गलत रास्तेपर जानेसे रोकनेके लिए उपवास करे, तो वह दवाव डालकर अपना काम वनाना नही है, वह तो व्यथित हृदयकी ईश्वरतक पहुँचनेवाली पुकार है। आपकी भाषामे कहूँ तो "ग्रह-नक्षत्रोका दिव्य सगीत" इसी तरहकी पुकारोसे वना है। मेरा उपवास निद्रालस प्रेमके लिए चाबुककी तरह था।

आप पूछते हैं कि यह दस वर्ष पहले क्यो नही किया। इसका जवाव यह है कि ईश्वरने तब मुझे इसका आदेश नही दिया था। वह हमे उस समय जगाने आता है जब हमे उसकी कमसे-कम आशा होती है। उसके तरीके हमारे तरीको-जैसे नही है। यदि मैं कहूँ कि वलिदानकी क्षमता मुझमे तब भी वैसी ही थी जैसी आज दीखती है तो आप, निस्सन्देह, मुझपर यकीन तो करेंगे ही।

अन्तमे, आपको मेरा यह निष्कर्ष, जो आपके निष्कर्षकी अपेक्षा कही अधिक तथ्योपर आधारित है, मान लेना चाहिए कि इस तरहका समझौता लन्दनमे नही हो सकता था और यह कि प्रधान मन्त्रीसे हिन्दू-मुस्लिम-सिख समस्याके सिवा किसी और प्रश्नपर फैसला करनेके लिए किसी तरहका आग्रह भी नही किया गया था।

आप सबको प्यार।

भाई

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४८-९

४३५. पत्र : हैंडरसनको[1]

१७ अक्टूबर, १९३२

आप जब अपने और मेरे ईश्वरकी बात करते हैं तो आपके साथ चर्चा करना फिजूल है। अभीतक मेरा यही विचार रहा है कि बुद्धिमानों और मूर्खों, धर्मात्माओं और पापियोका एक ही ईश्वर है। मेरी सलाह यह है कि मुझसे बहस करनेकी बजाय आप मेरे लिए प्रार्थना करें ताकि 'आपका' ईश्वर मेरे ज्ञानचक्षु खोल दे और आपके विचारमे जो मेरी त्रुटि है उसे मैं देख सकूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४३। जी० एन० ४७९७ से भी

४३६. एक पत्र

१७ अक्टूबर, १९३२

मैं केवल यही कह सकता हूँ कि जब कोई मनुष्य अन्तर्नादकी प्रेरणाकी बात कहता हो, तो उसे ईश्वरकी दयापर ही छोड़ देना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४३

४३७. पत्र : नरसिंहराव बी० दिवेटियाको

१८ अक्टूबर, १९३२

सुज्ञ भाईश्री,

सुबह चार बजेकी प्रार्थना हम कर चुके हैं और अब यह लिखने बैठा हूँ। आपके दोनों पत्र मिल गये। हम तीनों आज ८-३० बजे आपके साथ दसवें दिनका श्राद्ध मनायेंगे। मूक प्रार्थनाके बजाय "लीड काइण्डली लाइट"का आपका किया हुआ अनुवाद गायेंगे। आप दोनोको जितनी शान्ति चाहिए, क्या उसमें उतनी शान्ति नहीं भरी हुई है? आपके बच्चे तो चिरशान्ति भोग रहे हैं। लेकिन इस संसारमें जितने बच्चे हैं, वे सब क्या आपके नही हैं? आपने तो इस तरहका ज्ञान बहुत दिया है। वह इस समय आपकी सहायता करे।

१. एक ईसाई मिशनरी।

"प्रेमल ज्योति" की[1] एक बात आपको अच्छी लगेगी। जाते-जाते फादर एलविनने सोचा कि ईसाई मित्रगण हर सप्ताह एक बार मेरे साथ मानसिक सम्बन्ध जोडे तो अच्छा हो। ऐसा करनेके लिए उन्होने मुझसे कोई ऐसा भजन बतानेको कहा जिसे सभी निश्चित समयपर हर सप्ताह गाये। मैंने न्यूमैनका भजन पसन्द किया। उसे आज यूरोप, अमेरिका, यहाँ और दूसरे देशोमें मित्रगण हर शुक्रवारको शामके ७-३० बजे गाते है। हम यहाँ और आश्रमवासी साबरमती वगैरहमे "प्रेमल ज्योति" हर शुक्रवारको शामकी प्रार्थनामे गाते है। इस भजनमे आपने जो प्राण भरा है, उसमे वृद्धि होती जा रही है। आपकी यह भेट आपको भी फल दे।

आपका,
मोहनदास

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १४७

४३८. पत्र : बेगम मुहम्मद आलमको[2]

१८ अक्टूबर, १९३२

प्रिय बहन,

तुम्हारे पत्र और तारके लिए मै बहुत ही आभारी हूँ। डॉक्टर साहबकी सख्त बीमारीकी बात पढकर दिलको धक्का लगा। ईश्वर उनपर दया करे। डॉक्टर साहबकी तबीयतका हाल कृपया मुझे हर सप्ताह बताती रहना। क्या ये शिकायते उन्हे जब वे आजाद थे तब भी थी? मुझे यकीन है कि अस्पतालमे उनका ठीक ढगसे इलाज हो रहा होगा। डॉक्टर साहबको और तुम्हे मेरे सलाम। ईश्वरसे यही प्रार्थना है कि हिन्दू, सिख और मुस्लिम सम्प्रदायोमे एकता कायम हो जाये।

गांधी

[अग्रेजीसे]
हिन्दू, २५-१०-१९३२ तथा **अमृतबाजार पत्रिका**, २५-१०-१९३२

१. "लीड काइण्डली लाइट" का नरसिंहराव दिवेटिया द्वारा किया गया गुजराती अनुवाद।
२. साधन-सूत्रके अनुसार; पत्र उर्दूमें था।

४३९. पत्र : एच० एफ० हडसनको

१८ अक्टूबर, १९३२

प्रिय श्री हडसन[1],

आशा है, आप धृष्टताके लिए क्षमा करेंगे।

आपने डॉ० अम्बेडकरको और मुझे उनकी मुलाकातके सम्बन्धमे जिस प्रतिबन्ध की सूचना दी, सरकारी दृष्टिकोणको[2] ध्यानमे रखते हुए उसे समझनेमे मुझे कोई कठिनाई नही हुई। उसका ईमानदारीके साथ पालन किया गया है। और जहाँतक मेरा सवाल है, मै उसके बारेमे लोगोको एक शब्द भी नही बताऊँगा। परन्तु आपकी टिप्पणीके अन्तमे जो धमकी दी गई थी, मेरे खयालमे, वह बुरी लगनेवाली थी और वैसा-कुछ कहनेके लिए कोई उचित कारण भी नही था। आपने कहा कि यदि हममे से किसीने भी इस प्रतिबन्धका पालन नही किया तो भविष्यमें इस तरहकी सभी मुलाकाते बन्द कर दी जायेंगी। जहाँतक मेरा सवाल है, आप इस बातकी आसानीसे जाँच कर सकते हैं कि जेलके नियमोका मैंने बहुत ही सावधानीसे पालन किया है। इस धमकीमे यह ध्वनि है कि इस तरहकी मुलाकाते एक रियायत है, जब कि मेरे विचारमे वे यरवडा-समझौतेका आवश्यक परिणाम हैं। अस्पृश्यता-सम्बन्धी सुधार यदि सरकार और लोगोका समान ध्येय नही है तो निश्चय ही होना चाहिए। और फिर जेल तो निश्चय ही कोई ऐसी जगह नही थी जहाँ डॉ० अम्बेडकरपर, जो कोई कैदी नही बल्कि एक स्वतन्त्र व्यक्ति है, धमकीके साथ ऐसा प्रतिबन्ध थोपा जाये जिसकी जानकारी उन्हे उस तारमे नही दी गई थी जिसमे श्रीमती सरोजिनी नायडू और मुझसे उनकी मुलाकातके अनुरोधकी स्वीकृतिकी सूचना उन्हे दी गई थी।

इस व्यक्तिगत पत्रमे क्या मै अब अपने उस पत्रके[3] एक सुनिश्चित उत्तरकी माँग कर सकता हूँ जो पिछले महीनेकी २९ तारीखको मेजर भण्डारीको लिखा गया था और आगे गृह विभागको भेज दिया गया था? आपके उक्त ज्ञापन-पत्रको देखते हुए, सरकारी नीतिकी स्पष्ट व्याख्या और भी आवश्यक हो गई है। केवल अस्पृश्यताके बारेमे मुझे बिना किसी पाबन्दी या अड़चनके लोगोसे मिलने और पत्र-व्यवहार करनेकी अनुमति होनी चाहिए, यह मै आवश्यक समझता हूँ। आपको यह मालूम होना चाहिए कि मेरा उपवास केवल स्थगित हुआ है। यदि हिन्दू जनता हरिजनोके

१. वाइसरायकी कार्यकारिणी समितिमें गृह-सदस्य।

२. अपनी टिप्पणीमें श्री हडसनने कहा था कि गांधीजी और डॉ० अम्बेडकरको सूचित किया जाता है कि उनकी बातचीतकी कोई भी रिपोर्ट "या श्री गांधी द्वारा जारी किया गया कोई भी घोषणा-पत्र" प्रेसमें भेजा जाये, इसकी अनुमति सरकार द्वारा नही दी जायेगी।

३. देखिए "पत्र: एम० जी० भण्डारीको", २९-९-१९३२।

साथ न्यायोचित व्यवहार नही करती तो वह फिर शुरू करना होगा। अत यदि सुधार पूरी तरह क्रियान्वित किया जाना है तो जनताके साथ मेरा सम्पर्क अनिवार्य है। नव-स्थापित सघके मन्त्री श्रीयुत अ० वि० ठक्कर निर्देशके लिए मुझे लिख चुके है। मैंने उन्हे सूचित किया है कि कोई भी निर्देश देनेसे पहले मैं सरकारी नीतिकी स्पष्ट व्याख्याकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। इसलिए यदि तुरन्त उत्तर दे सके तो बड़ी कृपा होगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८६३) से। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८००(४०)(३), भाग १, पृ० २१५ से भी

४४०. पत्र : मणिलाल गांधीको

सोमवार [१८ अक्टूबर, १९३२][1]

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र मिला। अब जब तेरी इच्छा हो तब आना। साथमे सुशीला आ सके तो ठीक है, किन्तु यदि कमजोर हो तो न आये। यदि सीता आना चाहे तो लेते आना। ऐसी कोशिश करना जिससे रोज पेट साफ होता रहे। खुराक हलकी ही लेना। अधिक दूध ले सके तो अच्छा हो। स्वास्थ्य बिगडने मत देना। बा से कहना कि मेजर अडवानीसे मैंने दवाईका पर्चा मँगवाया है। वह वहाँ भी डॉक्टरको दिखा ले तो अच्छा हो। आशा है, प्यारेलालको मेरा पत्र मिल गया होगा। मणिभाई[2] और गुलाबको मेरे आशीर्वाद। मुझे आज देवा[3] [के आने] की आशा थी।

बापूके आशीर्वाद

श्री मणिलाल गाधी
मणिभुवन
लैबर्नम रोड
गामदेवी, बम्बई

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७९७)से।

१. डाकखानेकी मुहरसे।
२. मणिभाई रेवाशंकर झवेरी।
३. देवदास गांधी।

४४१. पत्र : मीराबहनको

१९ अक्टूबर, १९३२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र आज मिला।

मेरा स्वास्थ्य बराबर सुधर रहा है। आहारमे कोई परिवर्तन नही हुआ है। वजन ९९½ पौडतक पहुँच गया है। मुझमें लगभग पहले जितनी शक्ति आ गई है।

किसनका एक लम्बा पत्र मिला था, जिसमे तुम्हारी गतिविधियोका सजीव वर्णन था। जैसा कि स्वाभाविक है, तुम्हे उसकी और उसे तुम्हारी याद आती है। वह कहती है कि तुम्हारी सगतिसे उसे बहुत लाभ हुआ है।

तुमने लिखा है कि अपराधी औरते इस समय तुम्हारी साथिने है। अपराधी शब्दका हमारे कोषमे स्थान नही होना चाहिए। या फिर हम सभी अपराधी है। 'तुममे से जो निष्पाप हो वह पहला पत्थर मारे।' और किसीकी भी पापी वेश्या पर पत्थर फेकनेकी हिम्मत नही हुई। जैसा कि एक जेल-अधिकारीने एक वार कहा था, प्रच्छन्न रूपसे हम सब अपराधी है। कुछ-कुछ मजाकमे कही गई इस बातमे गहरा सत्य भरा है। इसलिए उन्हे अच्छी साथिनें मानो। मै जानता हूँ कि यह कहना जितना आसान है, करना उतना आसान नही है। किन्तु 'गीता' और वस्तुतः सभी धर्म हमसे यही करनेको कहते है।

क्या मैने तुम्हे बताया नही कि उपवासके दिनोमे हमे एक अन्य अहातेमें, जहाँ अधिक एकान्त रह सकता था, भेज दिया गया था। इससे हमारे साथकी बिल्लियाँ वही रह गई थी। अब हमे वापस पुराने अहातेमे लाया गया है, जिससे ये जिन्दादिल चतुष्पद साथिनें बडी खुश है। ये सब हमारे चारो तरफ म्याऊँ-म्याऊँ करती रहती है।

अपनी पढाईके बारेमे तुमने जो लिखा है, उसे मै समझता हूँ। जितना समय लगे, लगने दो और जैसा अच्छा लगे, करो। तुम्हारे शरीर या मनपर कोई दबाव नही पड़ना चाहिए।

मणिलालकी पत्नी सुशीलाका एक मामूली-सा ऑपरेशन हुआ है। वा उसके साथ है। मणिलाल अब पहलेसे अच्छा है।

हम सबका प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४६) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९७१२ से भी

४४२. पत्र : दूधीबहन वा० देसाईको

१९ अक्टूबर, १९३२

चि० दूधीबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है यह तो तुमने लिखा ही नही। और मनु आश्रमसे बाहर रहता है इसलिए क्या उसने मुझसे मित्रता छोड़ दी है? उसके द्वारा भेजें जानेवाले वर्णन तो बाकी ही हैं और अभी तो उसे सुन्दर लिखावट की परीक्षा भी पास करनी है। वह पत्र लिखना बन्द कर दे, यह कैसे पुसायेगा?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४४०)से; सौजन्य: वा० गो० देसाई

४४३. पत्र : वालजी गो० देसाईको

१९ अक्टूबर, १९३२

भाईश्री वालजी,

तुम्हारी चिट्ठी और पुस्तक मिली। इस पत्रको रजिस्ट्रीसे नही भेज रहा हूँ। मिल तो जायेगा ही, ऐसा मानकर रजिस्ट्रीका खर्च बचा रहा हूँ। मिलनेपर पहुँचकी सूचना तो दोगे ही।

लगभग यो कहा जा सकता है कि तुम्हारी पुस्तक मिलते ही मै उसे पढ गया। तुम्हारी भाषा मुझे मीठी लगती है, इसलिए उसकी तरफ मैने ध्यान नही दिया। ध्यान दूँ, तो कुछ सलाह दे सकता हूँ। मगर यह तो मामूली बात लगती है।

मुझे पुस्तक पसन्द नही आई। तुमने नाम 'ईशुचरित' दिया है। भीतर ऐसा नही देखता।

मुझे याद है कि तुमने एक बार कहा था, या तुमने कहा है यह मानकर किसी-से मैंने कहा था कि तुम मानते हो, "मै मौलिक वस्तु देनेवाला कौन? हम तो पूर्वजोने जो उत्तम चीजे दी है, उनका अनुवाद कर देनेमे ही सन्तोष माने।" यह दलील मै मान लूँ, तब तो शायद तुम्हारी पुस्तक पास कर दूँ। मगर मुझे यह दलील मजूर नही। अगर वह तुमपर लागू होती है तो दूसरोपर भी हो सकती है। सब इसी तरह करे, तो हमारे लिए पूर्वजोके कूएँमे डूब मरना ही रह जायेगा। मैं मानता हूँ कि हमारा धर्म पूर्वजोकी विरासतमे वृद्धि करना है, उसे आजकी मुद्रामे बदलना, वर्तमान युगके अनुकूल बनाना है। यह काम सिर्फ अनुवादोसे नही होगा। तुमने

जो-कुछ लिखा है, वैसा तो गुजराती भाषामे मिल सकता है। खुद ईसाइयोने ही अथक मेहनत करके जो अनुवाद प्रकाशित किये है, वे फेंक देने लायक नही है। उन्हीका प्रचार क्यो न किया जाये? अपनी मीठी वाणीका ही प्रचार करनेके लिए तो तुम ऐसी पुस्तके नही लिखते न? और ऐसा करो भी तो इतने से ही उस वाणीका प्रचार नही होगा।

इस कृतिमे मैं एक तरहका आलस्य पाता हूँ। जो बहुत पढता है और बहुत लिखता है, वह उद्यमी ही है, सो तो तुम नही कहोगे। तुम्हारे बारेमें मैं यह मानता हूँ कि तुम्हे बहुत पढने और अनुवाद करनेका रोग है। यह छूटना चाहिए। मै तुमसे जो माँगता हूँ वह यह है. तुम भले ही ईसाका चरित्र ही लिखो, नया करार जितनी बार पढना हो पढो, मगर उसके बाद सब पुस्तके अलमारीमे रख दो और फिर जो पढा है उसमे से ईसाका जीवन तैयार करो।

यह पुस्तक छपवा ली, इसलिए जनताको देनी ही चाहिए, ऐसा निर्णय न करना। अगर मेरी लिखी बाते ठीक मालूम हो, तो — भले ही इतना रुपया चला जाये — छपी हुई चीज भी रद्द कर देना और जैसा मै कहता हूँ वैसा मौलिक लिखना शुरू करना। अगर यह मेहनत ज्यादा मालूम हो, तो शान्त रहना। पढना छोडकर किसी-न-किसी शारीरिक प्रवृत्तिमे लगकर शरीरको सुधारना। पढनेकी बीमारीवाले मैंने यहाँ और दूसरी जगह बहुत देखे हैं। यह रोग तुम्हे भी सता रहा है। इस रोगसे मुक्त होनेके लिए भ्रमण करो, ईश्वरकी लीला देखो, कुदरतकी किताब पढो, पेडोकी भाषा समझो, आकाशमें होनेवाला गान सुनो, वहाँ रोज रातको होनेवाला नाटक देखो। दिनमे कातो, थकावट लगे तब सोओ, बढईका काम हो सके तो करो, मोचीका काम करो। मै जानता हूँ कि तुम्हारे हाथोमे पीडा होती है। वह अभ्याससे मिट जायेगी।

अंग्रेजीमे ईसाके चरित्रपर बहुतेरी सुन्दर पुस्तके लिखी गई है। उनमे से कुछको चुना जा सकता है। मगर यह बोझ मैं तुमपर नही डालूंगा।

तुम्हारी पुस्तकमें देवदूत वगैरहके आगमनका भाग निकाल देने लायक है। ऐसा तो हमारे यहाँ बहुत-कुछ है। उसमे वृद्धि क्या की जाये? देवदूत और ज्ञानी न आये हो, तो भी ईसाकी कीर्तिको कोई हानि पहुँचनेवाली नही है। मेरी शिकायत यह है कि तुमने पढनेवाले के सामने ईसाकी तसवीर खडी नही की। तुमने ईसा-नीति दे दी है, और वह भी अवतरण-चिह्नोमे। तुम अपनी ही भाषामे दो, तो कौन अविश्वास करनेवाला है?

मै नही जानता कि तुमने यह पुस्तक किन लोगोको ध्यानमे रखकर लिखी है। अगर जन-समाजको ध्यानमे रखकर लिखी हो, तो उसपर विदेशी नामोका बोझ नही डाला जा सकता। 'बाइबिल' के नामोको तुमने अपने जामे या किसीसे उधार लिये हुए जामे पहनाये है, यह मेरे-जैसे बहुत कम पढनेवाले को मालूम नही हो सकता। मुझे ऐसी आशका है कि इससे बहुत फायदा नही होगा। अगर तुम्हे ऐसे नाम देने थे जो गुजराती भाषामे घुल-मिल जाये, तो 'बाइबिल' के हर नामका जो अर्थ होता है, वह अर्थ लेकर चुने हुए गुजराती नाम गढ लेने चाहिए थे।

यह सब लिखनेपर भी तुम्हारा पुस्तक छपवानेका आग्रह हो, तो उसे सिर्फ डाकखर्च लेकर किसीको देनेकी जरूरत नही। लागत कीमतपर भी लोग न ले, तो भले ही न लें, तुम्हारा नाम होगा, इसलिए पुस्तक छपेगी तो जरूर ही। (किन्तु इसे पुस्तक परीक्षाके रूपमे न समझना।) तुम्हारा काम लेखकका है। लागतके दाम न दे सके, ऐसे लोगोंको पुस्तक देनी होगी, तो ऐसा तो इस तरहके काम करनेवाली कोई परोपकारी सस्था करेगी। यही ठीक है कि एक आदमी दो घोडोपर न चढे। वे १५० रुपये भले ही व्याज खाकर बढ़ते रहे।

मैंने जितना सोचा था, उससे बहुत ज्यादा लिखा गया। और तिसपर मैंने अपना गुबार भी अच्छी तरह निकाल लिया है। यानी, मै मोहमे पड़ा हूँ और इसलिए इसकी रजिस्ट्री करानेमे पैसे फेकूँगा।

तुम्हें तकली इसलिए पसन्द आई न कि उसे चलते-चलते चलाया जा सकता है। तकली आरामसे भी चलाई जा सकती है। ज्यादा लोभ पापका मूल है। तुम्हारी साधना शरीरको वज्रके समान बना लेनेमे है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४४१) से; सौजन्य · वालजी गोविन्दजी देसाई

४४४. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

१९ अक्टूबर, १९३२

भाईश्री खम्भाता,

भाई महादेवको लिखा तुम्हारा पत्र मैंने पढा। 'ब्लू ब्रेन' क्या होता है यह तो मै भी नही जानता। जब डॉ० गिल्डर मुझे देखकर गये उस समय मेरा रक्तचाप सामान्य था। मेरा स्वास्थ्य बिलकुल ठीक है और मेरे शरीरमे लगभग पहले जितनी ताकत आ गई है। मै रोज घूमता हूँ, पहलेके बराबर ही कातता हूँ और काफी पत्र लिखता हूँ। मै चौबीसो घटे खुलेमे ही रहता हूँ। 'ब्लू ब्रेन' क्या होता है? किसने कहा कि मेरा रक्तचाप अधिक है और मुझे 'ब्लू ब्रेन' होनेका डर है।

भाई मेहतापर मै क्यो सन्देह करूँगा? क्या मैंने ही विद्याको उनके यहाँ नही भेजा था? किन्तु उपवासके दौरान उन्हे रोज बुलानेकी आवश्यकता नही थी और जेलमें ऐसा किया भी नही जा सकता। इतने डॉक्टरोके आनेके बावजूद यदि उन्हे बुलाता तो अनुचित माना जाता। फिर मेरे-जैसोकी वे बहुत मदद भी नही कर सकते। बहुत बार उपवास करनेके कारण मुझे अपनी शारीरिक प्रकृतिका ज्ञान है। ऐसी स्थितिमे मेहता-जैसा व्यक्ति कोई लटका ही बता सकता था। और वैसा-कुछ हो तो मैंने वह बतानेको कहा था। यदि उनके पास वैसा-कुछ हो तो वे अब भी

भेज सकते हैं। मुझे उनका पता लिख भेजना। उनके सन्तोषके लिए मैं उन्हें दो शब्द अवश्य लिखूंगा। तुम तो उन्हें लिखना ही कि वे जो सुझाव देना चाहें सो दें और मुझे खुलकर लिखें।

और तुम्हें स्वयं भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यदि कुछ होगा तो मैं तुम्हें लिखूंगा। मालिश-सम्बन्धी पुस्तकें मैं आज लौटा रहा हूँ।

इस भयसे कि कहीं हाथका दर्द फिर न उभर आये मैंने बायें हाथसे कातना छोड़ दिया है और पैरका चरखा चलाता हूँ।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च]

आशा है, तुम स्वयं ठीक होगे।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५५३) से। सी० डब्ल्यू० ५०२८ से भी, सौजन्य: तहमीना खम्भाता

४४५. पत्र: निर्मला बा० मशरूवालाको

१९ अक्टूबर, १९३२

चि० निर्मला,

मणिलालके हाथ भेजा हुआ तेरा पत्र मिला। मुझे बीमारोंकी खबर देती रहना। सुरेन्द्रका पत्र (कार्ड) मुझे नहीं मिला। अब पता तो लगाऊँगा।

मैं ठीक हूँ। मणिलाल पूरे समाचार देगा ही अतः अधिक नहीं लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २८८६) से; सौजन्य. निर्मलाबहन सर्राफ

४४६. पत्र : मेहर बाबाके सचिवको

१९ अक्टूबर, १९३२

आपका ८ तारीखका पत्र और उसके साथ भेजी टिप्पणी मिली। टिप्पणीको मैंने पढ़ लिया है। मेरे खयालसे, वह प्रकाशित नही होनी चाहिए। उसमें बहुत-कुछ छोड दिया गया है और जो-कुछ दिया है, वह इस रूपमे रखा गया है कि आसानी से गलतफहमी पैदा कर सकता है। इसलिए मेरी राय यह है कि उसका कोई भी अश प्रकाशित नही होना चाहिए। केवल इतना ही कहना आवश्यक है कि बाबाका और मेरा सम्बन्ध गुरु और शिष्यका नही, बल्कि दो साधारण मित्रोका है और अधिकतर बातचीत आध्यात्मिक विषयोसे सम्बद्ध थी। अत यहाँके या पश्चिमके लोगोको हमारी मुलाकात या बातचीतको कोई महत्त्व देनेकी आवश्यकता नही है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १५३

४४७. पत्र : शम्भुशंकरको

१९ अक्टूबर, १९३२

जहाँ लोकमत विरुद्ध हो, वहाँ हरिजनोंको दवाखानो या मन्दिरोमे जबरदस्ती ले जानेका आग्रह नही रखना चाहिए। लेकिन जो उनकी सेवा करना चाहते हो, उन्हें उनके लिए उन्हीके मुहल्लोमे या उनके नजदीक ही वैसी सहूलियत मुहैया कर देनी चाहिए और वहाँ हरिजनोके सिवा दूसरे हिन्दुओंको आना हो, तो उन्हे आनेका न्योता देना चाहिए। इस बीच लोगोको विनयपूर्वक समझाया जाये। लोगोपर रोष करने या उनकी कटु आलोचना करनेसे काम बननेवाला नही है। पूरे प्रेमसे लोगोका अज्ञान मिटाया जा सकेगा। उन्हे जिन सहूलियतोका अभाव है वे सहूलियते उनके लिए मुहैया करनेका भगीरथ प्रयत्न होना चाहिए। राज्य तो बहुत-कुछ कर सकता है। उन्हे जमीनकी मिल्कियत दे सकता है, उनके मुहल्लोंको बेहतर बना सकता है, उनके घरोको अच्छा बना सकता है, उनके वेतन बढा सकता है।

भगीको जूठन न दी जाये। उनमे सफाई वगैरहका प्रचार किया जाना चाहिए। थोडेमे, जिन उपायोसे उनकी हालत सुधारी जा सके, वे सब उपाय सघर्ष पैदा किये बिना किये जाये।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १५४-५

४४८. पत्र : वालवाके हरिजनोंको

१९ अक्टूबर, १९३२

आप भाइयोका सुदर अक्षरोमे, सुदर भाषामे लिखा हुआ खत मुझे मिला है। आप लोगोका दु ख मैं समझ सकता हूँ।[1] बाबासाहेब आबेडकरसे मेरी बहुत बातें हुई हैं। यहाँसे मै थोडी ही सेवा कर सकता हूँ। मेरी सलाह है कि आप लोग आपके दु.खकी कथा नया मडल[2] जो स्थापित हुआ है उसे लिखे। मुझको तो अवश्य लिखा करे।

आप लोग हिंदू है, यह किसीपर उपकार करनेके लिए नही है। इसलिये मै कैसे कहूँ आप दु खके मारे धर्म छोडे? धर्मकी परीक्षा ही दु खमे होती है। हाँ, मै आप भाइयोको इतना आश्वासन दे सकता हूँ कि मैंने इस दु खके निवारणके कारण प्राणार्पण किया है। और यदि इतर हिंदू आपसे न्यायपूर्वक व्यवहार नही करेंगे तो प्रायश्चित्त रूपमे मै मुलतवी रखा हुआ अनशनका आरम्भ कर दूंगा। ऐसा करनेकी शक्ति मुझे ईश्वर देवे।

हरिजनोका सेवक,
मोहनदास गांधी

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १५४

४४९. पत्र : जात-पाँत तोड़क मण्डलके मन्त्रीको

१९ अक्टूबर, १९३२

यदि जातपाँत तोड़नेका अर्थ वर्णका उच्छेद है तो यह बात मुझे अयोग्य-सी प्रतीत होती है। यदि उसका अर्थ असंख्य जातियोका तोड़ना है तो मै उसमे सम्मत हूँ। तदपि जातपाँत तोड़ना और अस्पृश्यता-निवारण दोनो भिन्न प्रवृत्ति है। अस्पृश्यता-निवारणका अर्थ जिसको अस्पृश्य मानते हैं उनके साथ व्यवहार करना, जैसे इतर हिन्दुके साथ किया जाता है। दोनोको साथ मिलानेसे दोनो कार्य बिगड़नेका डर है। फलत. रोटी-बेटी व्यवहार अस्पृश्यता-निवारणका अनिवार्य अंग नही है। किन्तु हरि-जनोके साथ रोटी-बेटी व्यवहार अधर्म्य भी नही है।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १५३

१. जैसे कि हरिजनोंकी झोंपड़ियाँ हर साल बह जाती थीं किन्तु स्पृश्योंके विरोधके कारण उन्हें ऊँची जगहपर झोंपड़ियाँ बनानेकी अनुमति नहीं मिल रही थी।

२. हरिजनोंकी सेवाके लिए; पहले इसका नाम ऑल-इडिया ऍटी-अनटचेबिलिटी लीग था और बादमें हरिजन-सेवक-संघ रखा गया।

४५०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

१९ अक्टूबर, १९३२

भाई कृष्णचन्द्र,

एक लड़का बीमार पैदा हुआ है। उसने कुदरती उपचार करके बीमारी हटाई। दूसरा मूर्खं है, उसने परिश्रम करके ज्ञान पाया। दोनोंने पुरुषार्थसे प्रारब्धपर विजय पाया।

उपवास करनेसे शरीरमे स्थायी क्षीणता प्राय: नहि आती है परन्तु वहोतेरे उपवाससे शरीर अन्तमे अच्छा होता है। प्रत्येक मनुष्य अपने शरीरका अनुभव करके उपवासकी मर्यादा अकित कर सकता है।

घर हि मे चर्खा-करघा दाखल करके यही उद्योग किया जाय तो सव काम ठीक हो सकता है।

हिंदी अनुवाद मैंने देखे नहि है। लेकिन मैंने और अनुभव करके देखा है कि आलिव आइलका स्थान तिलीका तैल भी नहि ले सकता है। कोई करते हैं अलसीका तैल। मुझे ज्ञान नहि है।

त्रिफलाकी स्तुति मैंने सुनी है। मेरा विश्वास औषधीयोपर वहोत कम है। नैसर्गिक उपायोपर मेरा विश्वास है।

देवदासका इस समय लग्न करनेका कोई इरादा नहि है। ब्रह्मदर्शनके लिये किसीने विवाह किया, मेरे ज्ञानके वाहर है। देवदास विषयेच्छासे रहित नहि है। इसमें मुझे कोई आश्चर्य या दुःख नहि है। विवाह विषयेच्छाको मर्यादित करनेका एक साधन है। उसमे पारमार्थिक इच्छा भी है। आगे तो भगवान हि मनुष्य-हृदयको जानता है।

मोहनदास गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (एस० जी० ३९) से।

४५१. तार : अबुल कलाम आजादको[1]

[२० अक्टूबर, १९३२][2]

मौलाना अबुलकलाम आजाद
कलकत्ता

तारके लिए धन्यवाद। यहाँ सबसे अलग-थलग रहते हुए इतना ही कह सकता हूँ कि मेरी यह हार्दिक कामना है कि मैं, आप और अन्य सहयोगी इतने वर्षोंसे भारतकी जिस एकताके लिए आकाक्षा और प्रार्थना करते रहे है उसके प्रतीकके रूपमे हम हिन्दुओ, मुसलमानो और सिखोके बीच एकता स्थापित करनेमे सफल हो। पूरे तथ्यो और परिस्थितिकी जानकारीके अभावमे मैं केवल गुण-दोषोके आधारपर इस सम्बन्धमे कुछ नही कह सकता। लेकिन जो भी समाधान सभी सम्बन्धित पक्षोके लिए स्वीकार्य हो वह खुद मुझे तो स्वीकार ही होगा। इसलिए जो शान्ति कबकी स्थापित हो चुकनी चाहिए थी, उसे हमारे इस दिग्भ्रमित देशमे स्थापित करनेके आपके तथा अन्य मित्रोके प्रयत्नोकी सफलताकी कामना करता हूँ। सरदार वल्लभभाई भी इस तारके मजमूनपर हामी भरते हैं।

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० ९

१. इस तारको जेलके अधिकारियोंने रोक लिया था। यह मौलाना आजादके १९-१०-१९३२ के इस तारके उत्तरमें भेजा गया था: "मुसलमानोंके नेताओंके सम्मेलनमें सर्वसम्मत निर्णय कि अन्य माँगें स्वीकृत हो जानेपर पृथक् निर्वाचक-मण्डलपर आग्रह नही करेंगे। वर्तमान परिस्थितियोंमें कोई बेहतर समाधान सम्भव नही। आपकी अनुपस्थितिसे सफलताके मार्गमें बाधा। अपना सन्देश भेजकर हमें आशीर्वाद दें। कमसे-कम इतना विश्वास कि सरकार कोई आपत्ति नही करेगी।"

२. देखिए अगला शीर्षक।

४५२. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

२० अक्टूबर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

मौलाना अबुल कलाम आजादके तारके सम्बन्धमें मैं साथमें मूल और उसका उत्तर[1] भेज रहा हूँ। इस उत्तरसे कोई मतलब तभी सधेगा जब इसे जल्दी भेज दिया जाये। वैसा न हो सके तो भेजा ही न जाय।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी०, फाइल न० ९

४५३. पत्र : सी० एफ० एन्ड्रयूजको

२० अक्टूबर, १९३२

परम प्रिय चार्ली,

तुम्हारा पत्र मिला। ईश्वरकी दया अद्भुत रही। उन दिनों मैं उसकी उपस्थितिकी सुखद धूपका सेवन कर रहा था। एक भी कदम ऐसा नही था जो मैंने अपनी इच्छासे उठाया हो। प्रार्थनाका इस तरह तुरन्त उत्तर मिलनेका अनुभव मुझे पहले कभी नही हुआ था।

हाँ, तुम्हारा वहाँ रहना अच्छा ही रहा। वहाँ रहनेका तुम्हारे लिए क्या मतलब है, मैं जानता था। फिर भी तुम्हारे तारके जवाबमें मुझे क्या कहना चाहिए, यह तय करनेमे मुझे एक क्षण भी नही लगा। वल्लभभाई और महादेवको भी उस निर्णयके सही होनेमे कोई शका नही थी। उन भयानक दिनोमे जो महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये, उनका औचित्य वे किस प्रकार अपनी सहज बुद्धिसे ही समझ गये, यह सचमुच आश्चर्यजनक बात है।

लेकिन काम तो अभी शुरू ही हुआ है। मेरे लिए यह जिन्दगी और मौतका सघर्ष है। या तो इस उपवासको मेरी आखिरी साँसतक चलना है या फिर अस्पृश्यताको अब मिट जाना है। यह एक जबरदस्त काम है। उन सभाओमे जो लाखो लोग एकत्रित हुए, मुझे उनके प्रेमकी परीक्षा करनी है, मुझे खुद ईश्वरसे जूझना है। पर वह दयालु और कठोर दोनो है। उसे पूर्ण समर्पणसे कम कुछ नही चाहिए। पिछला उपवास, जो-कुछ

१. देखिए पिछला शीर्षक।

अभी होना है, उसकी शायद केवल भूमिका थी। लेकिन ये बेकारकी तर्कनाएँ और ज्यादा नही करनी है। मेरी नही, जो उसकी मर्जी हो वह हो। मैं तो केवल यही कोशिश कर सकता हूँ कि यदि बलिदानका मौका आये तो उसके योग्य सिद्ध होऊँ।

और तुम्हे तो अभी वही रहना है। जिस अस्पृश्यताकी तुम बात करते हो, वह अधिक सूक्ष्म है और प्रतिष्ठाके आवरणमे ढँकी है। भारतकी अस्पृश्यता जैसी है वैसी ही दिखती है। इसलिए इससे लड़ना एक तरहसे उतना कठिन नहीं है।

अपनी खोई शक्ति मैंने लगभग फिर प्राप्त कर ली है। तुम्हे और हमारे नित्य बढ़ते परिवारके सभी सदस्योको प्यार।

तुम्हारा,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९७५) से। **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२, पृ० १५८-९ से भी

४५४. पत्र : अरुण दासगुप्तको[१]

२० अक्टूबर, १९३२

तुझे हताश नही होना चाहिए।[२] शरीर-यन्त्रके दोष भी ठीक होते या कमसे-कम काबूमे आते देखे गये है। ठीक ढगसे श्वास लेना, ठीक आहार, ताजी हवा और उसके साथ अच्छे होनेका सकल्प करनेसे वाछित स्वास्थ्य-लाभ होता है। ईश्वरपर तेरी सजीव श्रद्धा होनी चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि ईश्वर तेरे शरीरको, जबतक उसको काम लेना है, कायम रखेगा।

और तू यह क्यो सोचता है कि हम केवल शरीरसे ही सेवा कर सकते है? मन सेवाका उससे कही अधिक शक्तिशाली साधन है। जो हृदयसे पूरी तरह पवित्र है, वे सबसे अच्छी सेवा करते है। वस्तुत, हम पूरी तरह पवित्र होनेके लिए ही सेवा करते है। हृदयसे पवित्र व्यक्तिके विचार वह काम कर सकते है जो अपवित्र हृदयवालो के शरीर कदापि नही कर सकते। इसलिए किसी भी हालतमे तुझे जरा भी निराश होनेकी जरूरत नही है। विचार किस तरह काम करते है, इसे सिद्ध करनेकी कोशिशमे मत पड़ना। तेरे लिए यह विश्वास करना ही काफी है कि वे काम करते है और उनके जबरदस्त परिणाम निकलते है। इसलिए हृदयको पवित्र रखनेका सदा प्रयत्न करते हुए, तुझे पूर्णतया शान्त रहना चाहिए — शरीर चाहे अच्छा रहे या न रहे। यह तू करेगा ना?

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १५७-८

१. सतीशचन्द्र दासगुप्तका पुत्र।
२. वह उन दिनों बीमार था।

४५५. पत्र : डोरोथीको[1]

२० अक्टूबर, १९३२

प्रिय डोरोथी,

तुम्हारा स्नेह-भरा पत्र मेरे लिए बहुत मूल्यवान है। तुम्हारे प्रश्नके उत्तरमे म्यूरिअलका तुमसे यह कहना कि "प्रार्थना करो", सही था। हृदयसे निकली सच्ची प्रार्थनाके पीछे ही सच्चा कर्त्तव्य छिपा होता है। क्योकि अन्तमें कर्त्तव्य खुद प्रार्थना बन जाता है। तुम्हारा यह सरल कथन कि "मै अब स्वच्छ हूँ", मुझे अच्छा लगा। ईश्वर तुम्हे स्वच्छ रखेगा। अतीतको मत देखो। उससे तुमने शिक्षा ले ली है। आशा और विश्वासके साथ भविष्यकी ओर देखो।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १६१-२

४५६. पत्र : जे० एस० हॉयलैंडको

२० अक्टूबर, १९३२

प्रिय हॉयलैंड,

आपका पत्र उपवास करनेपर मिली निधियोमे से है। मेरे लिए यह बहुत ही आनन्दकी बात है कि यदि कुछ लोगोने उपवासको गलत समझा है तो आप-जैसे मित्रोको उसे समझनेमे कोई कठिनाई नही हुई। कार्यको यदि हम उसके परिणामोसे आँक सकते है, तो उसने यह सिद्ध कर दिया कि वह ईश्वर-प्रेरित था।

आप सबको हम सबका प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५०७) से, सौजन्य: वुडब्रुक कॉलेज, बर्मिघम तथा श्रीमती जेसो हॉयलैंड

१. इस अंग्रेज लड़कीने गांधीजी को लिखा था: "...२१ मास पूर्व भारतमें मेरी दिलचस्पी पैदा हुई। उससे पहले मैं एक घातक दुर्व्यसनमें फँसी हुई थी, जिससे मेरी काया और शायद बुद्धि भी लगभग चौपट हो गई।...तब मैंने ब्रह्मचर्यके बारेमें पढा और तभीसे मैं आपकी शिक्षापर चलनेका विनम्रतापूर्वक प्रयास कर रही हूँ।..."

४५७. पत्र : शंकरको

२० अक्टूबर, १९३२

हरिजन नामपर आपत्तिके[1] बारेमे जानकर अफसोस हुआ। जो आपके मित्रोको पसन्द हो, ऐसे किसी भी नामका इस्तेमाल आप कर सकते हैं। परन्तु कृपया उन्हे यह समझा दे कि मेरे मनमें विष्णु या शिवका जरा भी विचार नही था। मेरे लिए तो इस नामका अर्थ है 'ईश्वरके जन'। विष्णु, शिव या ब्रह्मामें मैं कोई भेद नही मानता। ये सब ईश्वरके नाम हैं। पर वे जो निर्णय लेना चाहें, लेने दीजिए और फिर उन्हीका तय किया हुआ नाम चलने दीजिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १६३

४५८. एक पत्र

२० अक्टूबर, १९३२

अस्पृश्यता-निवारणमे रोटी-बेटी-व्यवहार शामिल नही है। परन्तु मेरे विचारमें हिन्दू धर्म केवल जन्मके आधारपर किसीके साथ भोजन या विवाहके सम्बन्धका निषेध नही करता है। मूल धर्मका इस तरहके सामाजिक सम्बन्धोके नियमनसे कोई वास्ता नही है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १६३

४५९. पत्र : आश्रमके बालक-बालिकाओंको

२० अक्टूबर, १९३२

बालको और बालिकाओ,

तुम्हारा पत्र मिला। इतने अधिक बच्चे बीमार पड़े, यह कितनी शर्मकी बात है और इसके लिए शर्म किसे आनी चाहिए? आशा है, मोहन अब स्वस्थ हो गया होगा तथा अन्य लोग भी भयमुक्त हो गये होंगे।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२)से।

१. शंकरने कहा था कि मद्रासमें लोग अस्पृश्योंके हरिजन नामपर आपत्ति करते हैं, क्योंकि वे शैव हैं, वैष्णव नही। इसलिए उनका नाम 'हरजन' या 'आदि-हिन्दू' होना चाहिए।

४६०. पत्र : वालजी गो० देसाईको

२० अक्टूबर, १९३२

भाई वालजी,

आश्रमकी डाकके साथ भेजा गया तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा वजन बहुत कम हो गया है। अब ठीक-ठीक खुराक लेकर और मनको विश्राम देकर अपना वजन पूरा कर लेना। तुम्हारी पुस्तकके सम्बन्धमे मैंने कल एक रजिस्टर्ड पत्र[1] भेजा है, वह तो तुम्हे मिल ही गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७४४२) से; सौजन्य : वालजी गोविन्दजी देसाई

४६१. पत्र : गुलाबको

२० अक्टूबर, १९३२

चि० गुलाब,

तेरा पत्र मिला। पृथ्वी कैसे बनी, यह तो तुझे प्रेमाबहनसे पूछना चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७२७) से।

४६२. पत्र : सुलोचनाको

२० अक्टूबर, १९३२

चि० सुलोचना,

तेरी लिखावट सुधरती जा रही है। उसे खूब सुधारना और सभी कामोमे सुघड़ बनना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७४१) से।

१. देखिए "पत्र : वालजी गो० देसाईको", १९-१०-१९३२।

४६३. पत्र : नारायण कुलकर्णीको

२० अक्टूबर, १९३२

भाई नारायण कुलकर्णी,

आपका पत्र मुझे मिला है। मुझे दु:ख है मै मराठीमें नहि लिख सकता। मेरी हिंदी समजनेमे कष्ट नहि होगा ऐसी आशा है।

उष्णोदकमें मध[1] न पीना चाहिये ऐसा वैद्य-मित्रोने तीन-चार वर्ष पूर्व मुझे लिखा था। पश्चिम उपाधिवाले दाक्तर मित्रोने इस बारेमे कुछ विरोध नहि किया है। उनकी सम्मतिका मुझपर प्रभाव नहि पड़ सकता है क्योकि खाद्य पदार्थोंकी असर का उन्होने सूक्ष्म अभ्यास नहि किया है। उनके यहा पथ्यापथ्यको [बहुत][2] भेद नहि है। परतु मै निजी अनुभवकी बात लिखता [हूँ]। मुझको उष्णोदकमे मध लेनेसे [कुछ] हानि नहि हुई है किंतु लाभ हुआ है। एक दाक्तरके कहनेसे मैंने मधका आरभ किया। उनके कहनेका कारण यह था। मेरे शरीरमे करबोहाइड्रेट कम है इसलिए शर्कराकी आवश्यकता थी। सबसे अच्छी शर्करा उनकी दृष्टिसे मधकी थी। तबसे मै मध लेता आया हु। उष्णोदकमे लेनेका उन्होने प्रतिबध नहि किया।

हमारे वैद्योके सामने मेरी फरीयाद यह है कि वे प्राचीन पुस्तकोको संपूर्ण समजकर उसमे जो लिखा है वह अनुभवसे विरुद्ध हो तो भी मानते रहते है। मेरा अभिप्राय है कि वैद्यकीय शास्त्र बहोत अपूर्ण है। उसमे अनुभवसे सुधारणा करनी चाहिए। [उष्णोदकमें मध डालनेसे क्या विकृति होती है? मधका आपने पृथक्करण किया है?] स्थूलता-कृशता [सापेक्ष गुणदर्शक] शब्द है। किस प्रकारके कृशताके लिये उष्ण मध अपेय है? और क्यो अपेय है? अतमे आप जो कहते है वह अनुभवसे सिद्ध किया है? इस तरह वैद्य लोक नहि करते है परतु प्राचीन ग्रंथोमें से श्लोक बताकर सतुष्ट रहते हैं। आपसे मेरा विनय है आप इस अनुचित स्थितिमे से निकल जाय और जो-कुछ प्राचीन ग्रथोमें लिखा है उसकी अनुभवसे परीक्षा करे।

मोहनदास गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०३) से।

१. शहद।

२. मूल पत्र अनेक स्थानोंपर फटा हुआ है।

४६४. सन्देश : 'डेली हेराल्ड' को

[२१ अक्टूबर, १९३२ या उसके पूर्व][1]

स्वास्थ्य बहुत ही अच्छा चल रहा है। रक्त-चाप सामान्य है। मेरा वजन पौन पौंड बढा है, और इस तरह अब ९९¾ पौंड हो गया है। पक्षाघातका मुझपर कोई आक्रमण नही हुआ।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २१-१०-१९३२

४६५. पत्र : एफ० मेरी बारको

२१ अक्टूबर, १९३२

प्रिय मेरी,

तुम्हारा पत्र मिला। देवदास अपनी शक्तिसे अधिक काम करता रहा है। इसी-लिए उसे थोडा बुखार हो गया था। मालूम हुआ है, अब वह ठीक है।

यह सच है कि मूर्तिपूजाका आम तौरपर जो अर्थ लगाया जाता है, उस अर्थमे उसमे मेरा विश्वास नही है। पर दूसरे लोग जो मूर्तिके माध्यमसे ईश्वरकी पूजा करते है, उसमे मैं अविश्वास नही करता। एक तरहसे हम सब मूर्तिपूजक है। हम सब अपनी-अपनी कल्पनाके ईश्वरकी पूजा करते है। उसका रूप मूर्त ही हो, यह आवश्यक नही है। हरएककी ईश्वरकी अपनी अलग कल्पना होती है, प्रत्येक व्यक्ति उसमे अपनी समझके मुताबिक अलग-अलग गुण देखता है। परन्तु ईश्वर वस्तुत. गुणातीत है, कल्पनासे परे है। अतः जब हम अपनी कल्पनामे ईश्वरका कोई चित्र बनाते है तो हम मूर्तिपूजक हो जाते है। इसलिए जो लोग पत्थर या धातुकी प्रतिमामे ईश्वरके वासकी कल्पना करते है, मेरा मन उनकी निन्दा नही करता। वे गलत नही है, क्योकि ईश्वर तो हर कही और हर चीजमे है। जब हम ईश्वरको सर्वत्र व्याप्त मानकर उसकी पूजा करना चाहते है तो सभी वस्तुओमे पवित्रताका आधान करते है। परन्तु यदि कोई आदमी अपने भाइयोको सामूहिक पूजामे भाग लेनेसे रोकता है, तो हमे यह कहनेका अधिकार है कि ईश्वर उस पूजामे से हट जाता है। और जब पश्चात्ताप किया जाता है और अपने भाइयोपर से रोक हटा ली जाती है तो उसमे उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है। मै समझता हूँ कि यह स्पष्टीकरण यदि सराहा न जा सके तो भी समझमे तो आ ही सकता है। मेरी रायमे इसमें एक

१. समाचार-पत्रमें रिपोर्टपर २१ अक्टूबरकी तारीख है।

गहरा सत्य आ जाता है। इसका सत्य यदि भासित नही होता तो इसमें दोष, जो-कुछ मै कहना चाहता हूँ, उसे स्पष्ट व्यक्त करनेकी मेरी अक्षमताका है। अपनी बात यदि मै स्पष्ट न कर पाया हूँ तो तुम मुझसे फिर पूछना।

महादेवका और मेरा प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९८५) से। सी० डब्ल्यू० ३३१४ से भी, सौजन्य . एफ० मेरी बार

४६६. पत्र : दुनीचन्दको[1]

२१ अक्टूबर, १९३२

बेशक, और सबकी तरह मै भी अनुशासनके अधीन हूँ। परन्तु ईश्वर जब अपना अनुशासन लाद दे तो मनुष्यके अनुशासनकी क्या चलेगी?

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १६५

४६७. पत्र : जमशेद मेहताको[2]

२१ अक्टूबर, १९३२

भाई जमशेद,

इस पत्रका क्या मतलब है? लेखकको मैंने जवाब नही दिया है। इसके बारेमे क्या मै आपसे पूछ सकता हूँ? यदि आप मुझे लिखे तो मै लेखकको जवाब भेज दूंगा।

आशा है, कीकीबहन अच्छी हो रही होगी।

हृदयसे आपका,
बापू

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० ३०९

१. दुनीचन्दने कहा था कि गांधीजी को भविष्यमें कोई कदम उठानेसे पहले देशको अपना इरादा बता देना चाहिए और अपने-आपको देशके अनुशासनके अधीन रखना चाहिए।

२. साधन-सूत्रमें ऐसा कोई संकेत नही है कि यह पत्र जमशेद मेहताको, जो कराचीके भूतपूर्व मेयर थे, लिखा गया था। परन्तु जे० बी० कृपलानीकी बहन कीकीबहनके उल्लेखसे लगता है कि यह पत्र जमशेद मेहताको ही लिखा गया था।

४६८. एक पत्र[१]

२१ अक्टूबर, १९३२

आप-जैसी महिलाओने अपनी सहज प्रेरणासे ही देख लिया कि उपवास सही है और वे परिणामके बारेमे आशकित नही हुईं। अपनी आस्थाका प्रभाव अपने पति पर भी डालिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १६५

४६९. पत्र : केशव गांधीको

२१ अक्टूबर, १९३२

चि० केशू,

तुझे हाथ साधकर और बड़े-बड़े अक्षर लिखने चाहिए। इससे लिखावट सुधर जायेगी। अभी तो उन्हे पढनेमे दिक्कत होती है। आशा है, तू अब स्वस्थ हो गया होगा। तुझे पाखाना तो साफ होता है न?

बर्र मर गई यह तो निश्चय ही बुरा हुआ। इस प्रकार जान-बूझकर किये गये दोषकी ईश्वर क्या सजा देता होगा यह तो पता नही किन्तु हम दुबारा ऐसा न करे यही काफी होगा। यदि हम किसीकी प्रेमपूर्वक, बदलेकी आशा किये बिना, सेवा करते हैं तो वह सच्ची सेवा मानी जायेगी। आश्रमका हर काम सेवा है क्योंकि आश्रमकी स्थापना उसीके लिए हुई है। हम अपनी आँखे इधर-उधर चलानेके बजाय यदि नीचे धरतीमाता को प्रणाम करते हुए चले और जब बैठे हो और जो कामकर रहे हो, उसीमे अपने मनको लगाये रखे; इससे दृष्टि शुद्ध हो जाती है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२८२) से।

१. साधन-सूत्रसे यह पता नहीं चलता कि यह पत्र किसको लिखा गया था, लेकिन पत्र-लेखिकाने गांधीजी को सूचित किया था कि उसके पति गांधीजी के उपवाससे खुश नहीं, जबकि स्वयं उस महिलाको भरोसा था कि उपवासका परिणाम निश्चय ही शुभ होगा।

४७०. पत्र : मणिलाल गांधीको

२१ अक्टूबर, १९३२

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र मिला। तुम भाइयोमें से जो आना चाहे वह आ सकता है। आशा है, अब देवदास बिलकुल स्वस्थ हो गया होगा। उससे और प्यारेलालसे पत्र लिखनेको कहना। सुशीलाको उतावलीमें अस्पतालसे तुरन्त न हटाकर तूने बुद्धिमानी की है। उसे बिलकुल स्वस्थ हो जाने देना चाहिए। क्योंकि तुझे लिख रहा हूँ अत. बा को अलगसे पत्र नही लिखता। उससे कहना कि जिस प्रकार वह वल्लभभाई और महादेवको याद करती है उसी प्रकार वे भी याद करते है। तू मुझे नियमित रूपसे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७९८) से।

४७१. पत्र : परशुराम मेहरोत्राको

२१ अक्टूबर, १९३२

चि० परसराम,

बहुत दिनो बाद तुम्हारा पत्र मिला। पिताजी लखनऊमे किसके साथ रहते है?

तुम्हारी अनुपस्थितिमें विमल किसके साथ रहा था?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५०९) से। सी० डब्ल्यू० ४९८६ से भी; सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा

४७२. पत्र : ख्वाजाको[1]

२२ अक्टूबर, १९३२

आतंकवाद मेरे अन्तरको जरूर हिलाता है और ईश्वरने जैसे अस्पृश्यताके मामले मे रास्ता दिखाया था, यदि वैसे ही इस विषयमे भी दिखाया तो मै बिना झिझक उसपर चलूँगा।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १६९

४७३. पत्र : उर्मिलादेवीको

२२ अक्टूबर, १९३२

'गीता' के सतत अध्ययनसे आपको सभी तरहकी चिन्ताका त्याग सीखना चाहिए। हम सबकी फिक्र करनेवाला जब ईश्वर है, तो हमें यह बोझ ढोनेकी क्या जरूरत है? हमारा कर्त्तव्य तो बस अपने हिस्सेका काम करना है।

इसलिए मेरा अनुरोध यह है कि आप निवृत्तिकी बात न सोचे। सच्ची निवृत्ति कोई शारीरिक स्थिति नही है, वह तो भीतरसे आती है। सतत प्रवृत्तिके बीच ही हमें निवृत्ति ढूँढ़नी चाहिए। और जो लोग कन्दराओमे रह रहे है, उनके मन भी क्या प्राय. अनवरत प्रवृत्तिमय ही नही रहते है?

हमे अपनी कठिनाइयोपर चिन्तित नही होना चाहिए। सेवाकार्य करनेवालो के भाग्यमे यदि सदा नही तो प्राय कठिनाइयाँ होती ही हैं।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १६८

१. श्री ख्वाजाने गांधीजी से पूछा था कि जिस तरह उन्होने अस्पृश्यताके विरुद्ध सत्याग्रह किया उसी तरह वे आतंकवादियोंके विरुद्ध क्यों नहीं करते।

४७४. पत्र : शारदा चि० शाहको

२२ अक्टूबर, १९३२

चि० शारदा,

बुखारके बावजूद कटिस्नान अवश्य लिया जा सकता है। खो-खो करते हुए ७५ वर्षके एक बूढेको मैंने कटिस्नान दिया और उसका दमा चला गया। कटिस्नान लेते हुए ऊपरके अग ढँकने पडते है, इसी प्रकार यदि पैरोमे सर्दी लगे तो उन्हे भी ढँकना चाहिए। केवल पेडसे रानोतक का भाग पानीमे होना चाहिए और उस समय पेडूको छोटे तौलियेसे धीरे-धीरे रगडना चाहिए। वह स्नान रोगीको अच्छा लगता है। टबमे बैठते समय उसे कँपकँपी महसूस होती है लेकिन बैठते ही तुरन्त अच्छा लगने लगता है। सादा भोजन लेना चाहिए और रोज दस्त अवश्य आना चाहिए। यदि तू पहले तेल मलती हो तो तेल मलना चाहिए, लेकिन तुझे थकान बिलकुल नही होनी चाहिए। फिर देख, तेरा शरीर कितना सुन्दर हो जाता है। जिसे मूर्तिकी आवश्यकता हो वह मूर्तिपूजन करे, इसमे मुझे कोई आपत्ति नही है। मुझे इसकी आवश्यकता नही जान पडती। इसके बिना करोडो लोगोका काम चल जाता है। फिर एक तरहसे तो हम सभी मूर्तिपूजक ही है। जो ईश्वरको गुणवान मानकर पूजते है वे मूर्तिपूजक है। यह मैंने बहुत सक्षेपमे लिखा है। यदि यह बात समझमे न आई हो तो फिर पूछना। फिर मैं विस्तारसे समझाऊँगा। लेकिन इससे पूर्व नारणदाससे समझनेकी कोशिश करना। चिमनलालसे भी पूछना।

बापू

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९९५८) से; सौजन्य शारदाबहन जी० चोखावाला

४७५. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

२२ अक्टूबर, १९३२

चि० हेमप्रभा,

तुमारा खत और रिपोर्ट मिला। रिपोर्ट अच्छा है। पूजाके दिनोमे खादीकी बिक्री न हुई वह दु:खकी बात है। इस बारेमे घनश्यामदासजी से बात करो। देखो वे कुछ कर सकते है। अरुणको मेरा खत[1] मिला होगा। तुम इतना घूम रही हो तो शरीर बिगड़ना नहिं चाहिये। सतीशबाबु कैसे है। खितिबाबु कैसे है?

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६९१) से।

१. देखिए "पत्र : अरुण दासगुप्तको", २०-१०-१९३२।

४७६. पत्र : अमतुस्सलामको

२२ अक्टूबर, १९३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम,

तुम्हारा खत मिला। हिप-बाथ छोड सकती है। सिट्ज-बाथ नही छोडना। दोपहरको दो-तीन बजे ले सकती है। बहुत ठडी लगे तो पानी धूपमे रखा जाये और बाथ दो-तीन मिनटतक ही लिया जाये। तलाशे-हक[1] फिर पढती है सो अच्छा है। हदसे ज्यादा काम न किया जाये। शुद्धि आहिस्ता-आहिस्ता आती जायेगी। तुम्हारे धीरज रखना। कुदसिया शान्त हो गई है सो अच्छा हुआ। मैने जो-कुछ लिखा है अच्छी तरह समझ सकती है? अगर समझनेमे मुश्किल मालूम हो तो मुझे लिखो। मेरी गलतिया दुरस्त करके भेजो।

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० २६०) से।

४७७. पत्र : डेविडको

२३ अक्टूबर, १९३२

आपके विस्तृत पत्रके[2] लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने मुझे लगभग अपनी बातका कायल कर दिया है। जगली शहद लेना (मेरे लिए) पाप है, यह मै जानता था। परन्तु मूर्खता और आलस्यवश उसे लेता रहा। जगली शहद जिस ढगसे निकाला जाता है, उसका आपके द्वारा किया गया सजीव वर्णन पढकर मै जगली शहद छोड़ने को लगभग तैयार हो गया हूँ। इसलिए जो चीज आप मुझसे यरवडासे बाहर आने पर, यदि मै कभी बाहर आया तो, करवाना चाहते है, वह मै लगभग तुरन्त ही करनेवाला हूँ। पर निश्चय ही भारतमे ऐसे स्थान जरूर होगे, जहाँ शहद निर्दोष ढगसे निकाला जाता होगा। बाजारमे हम जो हिमालयका शहद देखते है, उसके बारेमे सचाई क्या है?

आपने शहदकी विभिन्न किस्मे भेजकर बहुत ही कृपा की।[3] पार्सल अभी मिला नही है। मै जानता हूँ कि हम सब उसे अपराधकी भावनाके बिना स्वाद ले-लेकर

१. गांधीजी की आत्मकथा का उर्दू अनुवाद।

२. श्री डेविडने अपने लम्बे पत्रमें बताया था कि जंगली शहद किस तरह निकाला जाता है, वह कितना अशुद्ध होता है और उसके लिए मधुमक्खियों को किस तरह नष्ट किया जाता है।

३. श्री डेविडने गांधीजी को फिलस्तीन, अमरीका, न्यूजीलैंड और फ्रांसका शहद भेजा था।

खायेंगे। आप इन शहदोंका स्टाक रखते हैं या आपने ये नमूने खास तौरपर खरीद कर भेजे हैं?

हम सबका नमस्कार।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च:]

आपके पत्रसे क्या मैं यह समझूँ कि जंगली शहदके छत्तोंसे, छत्ते और मधु-मक्खियोंको क्षति पहुँचाये बिना, वैज्ञानिक तरीकोंसे शहद निकालना सम्भव है? यदि नहीं है तो क्या मनुष्य छत्ते और मधुमक्खियोंको नष्ट करनेके लिए तैयार हुए बिना जंगली शहद प्राप्त ही नहीं कर सकता?

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७२-३

४७८. पत्र : भाऊ पानसेको

२३ अक्टूबर, १९३२

चि० भाऊ,

तुम्हें तनिक भी निराश नहीं होना चाहिए। कब्ज-जैसी शिकायतको दूर करनेकी शक्ति हममें होनी ही चाहिए। दृढ़ प्रयत्न किया जाये तो वह दूर होगा ही। इस बारेमें उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, किन्तु चिन्ता भी नहीं करनी चाहिए, डॉ० तलवल-करसे तुम्हारी जो बहस हुई वह खेदजनक है। मैं उन्हें लिख रहा हूँ। उस पत्रको[1] अच्छी तरह समझना। नारणदास यदि उचित समझेगा तो वह तुम्हें दिखायेगा।

भाजीका प्रयोग ठीक है। पिछली बार नारणदासके पत्रमें मैंने जो सुझाव दिये थे उन्हें आजमाना। तीन या अधिक दिन उपवास करना। इस बीच थोड़ा घूमना-फिरना और जो कर सको ऐसा सामान्य काम-काज करना। जितना पी सको उतना पानी पीना। यदि उसमें नीबूकी कुछ बूँदें डालनेकी जरूरत महसूस हो तो डाल लेना। दिन-भरमें पानीके साथ यदि दो-तीन नीबुओंका रस पी डालो तो भी कोई हर्ज नहीं है। और कुछ नहीं लेना चाहिए। रोज सुबह एनीमा लेना चाहिए। दो पाइंट (२॥ पौंड) पानी धीरे-धीरे पेटमें चढ़ाना चाहिए। उसमें ४० ग्रेन सोडा और २० ग्रेन नमक मिला लेना चाहिए। पानी सुहाता हुआ कुनकुना होना चाहिए। सम्भव हो तो पानीको बीस मिनट पेटमें रहने देना चाहिए। एनीमा लेटे-लेटे लेना चाहिए। यदि इतनेपर भी पाखाना न हो तो साँझको फिर एनीमा लेना चाहिए। फिर भी पाखाना न हो तो कोई चिन्ता नहीं। अगले दिन भी इसी प्रकार एनीमा लेना चाहिए। दोपहरको कटिस्नान (कूने बाथ) लेना चाहिए। बहुत कमजोरी महसूस न हो और जीभ मैली हो तो उपवास चालू रखना चाहिए। यदि कमजोरी महसूस हो तो फलके

१. यह पत्र उपलब्ध नहीं है।

रससे उपवास तोडना चाहिए। फलके रसमे नारगीका रस, खट्टे नीबूका रस और शहद लिया जा सकता है। रातको भिगोये हुए काले मुनक्कोको अच्छी तरह मथकर उनका रस लिया जा सकता है। उसे गरम कर लेना ज्यादा अच्छा होगा। पहले दिन जितना रस पीया जाये उतना पीना चाहिए। यदि अगूर खानेकी इच्छा हो तो खाने चाहिए। और दूसरी भाजी, लौकी या ऐसी ही कोई हरी सब्जी ली जा सकती है। इस प्रकार दो दिन करना चाहिए। इससे अपने-आप पाखाना होना सम्भव है। यदि न आये तो एनीमा अवश्य लेना चाहिए। इसके बाद दूध लेना शुरू करना चाहिए। दूध हरी सब्जियोके साथ लिया जा सकता है। मुझे दूध लेना होता है तो मै उसे लौकी, कुम्हडेमें मिला लेता हूँ और खा जाता हूँ। जब नियमसे पाखाना होने लग जाये तब डबल रोटी या रोटी लेनी चाहिए। उपवाससे पाखाना होनेकी पूरी सम्भावना है। इससे नुकसान कभी नही होगा। यदि इससे भी कब्ज नही गया तो कुछ और सोचूंगा। तुमने डॉ० तलवलकरकी दवा न लेनेका निर्णय करके ठीक किया है। आश्रम — वर्धा या साबरमती (दोनो वास्तवमे एक ही हैं) छोडनेकी बात तो तुम्हें सोचनी भी नही चाहिए। जिसमे सेवाकी भावना है, जिसके विचार निर्मल हैं और जो यथाशक्ति काम करता है, उसे यह मानना ही नही चाहिए कि वह किसीके लिए भारस्वरूप है। मुझे नियमित रूपसे लिखते रहना। तुम्हारे पत्रोसे मुझे परेशानी नही होगी। मै जो भी उपचार बताता जाऊँ उसे विश्वासपूर्वक करते जाना

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७३९) से। सी० डब्ल्यू० ४४८२ से भी, सौजन्य : भाऊ पानसे

४७९. पत्र : नारणदास गांधीको

अपराह्ण ३ बजे, २३ अक्टूबर, १९३२

चि० नारणदास,

पुजाभाईके गुजर जानेका समाचार देनेवाला घेलाभाईका तार मुझे कल नौ बजे रातमे मिला। ये घेलाभाई कौन हैं? उनके सम्बन्धमे विस्तृत जानकारीकी आशा रखूंगा। आश्रमके लोग तो दाह-सस्कारमें गये ही होगे। पुजाभाईके स्मरणकी टिप्पणी[1] मैं अलगसे लिखूंगा।

चम्पाको लिखा पत्र पढना। उसकी क्या समस्या है? भाई कोटवाल[2] आये और उसके साथ रहे तो यह अच्छा ही है। उनके लिए पत्र साथ ही भेज रहा हूँ। चम्पाने पत्रमे रगून जानेकी इच्छा व्यक्त की है। इसपर सोचना।

१. देखिए अगला शीर्षक।
२. उन्होंने दक्षिण आफ्रिकामें दो सालतक गांधीजी के साथ जनसेवा का कार्य किया था।

लगता है, जमनाका आश्रमके साथ कुछ लेना-देना भाग्यको मंजूर नही है। जान पड़ता है, राजकोटमें वह अच्छी रहती है। तो फिर वह वही क्यो न रहे? जो बाहर रहकर भी आश्रमका जीवन बिताता है, समझना चाहिए कि वह आश्रममें ही रहता है। जो आश्रममे रहकर भी बेमनसे और ऊपरसे आश्रमके नियमोंका पालन करता है, लेकिन जिसका मन आश्रमके बाहर बसता है, समझना चाहिए कि वह आश्रममे नही रहता। जमना आश्रममे बीमार ही रहे, इससे तो ज्यादा अच्छा यह है कि वह बाहर रहकर स्वस्थ रहे और जितनी बने, उतनी सेवा करे। आज उसे अलगसे पत्र नही लिख रहा हूँ। लेकिन इस विषयपर तुम दोनो विचार करके, जो ठीक लगे, करना।

मोहनके बारेमें तुम्हारे दोनों पोस्टकार्ड ठीक समयपर मिल गये। आनन्दीका जल्दी मिलना चाहिए था; मगर वह तुम्हारे दूसरे कार्डके साथ मिला। यहाँ ऐसा होता है, इसमे आश्चर्यकी कोई बात नही। मोहन [बीमारीसे] जल्दी निकल गया, यह ठीक हुआ। दुबारा न जा फँसे तो ईश्वरकी कृपा। कुसुम, नवीन, धीरू और मजु चारो रुग्ण है। यह बडी भयानक बात है। अपना विचार मै बता ही चुका हूँ। जो ठीक लगे, करना।

भाऊको लिखा पत्र[1] पढ़ जाना। उस पत्रसे तलवलकरको भी लिखनेकी जरूरत उत्पन्न हुई। उसको जो पत्र लिखा है, उसे भी देख जाना और अगर तुम्हें ठीक लगे और उचित जान पड़े तो उसे दे देना। जानकारी ठीक दी गई है या नही, सो भाऊ देख ले। तुम्हे पत्र ठीक न लगे तो फाड़ डालना।

जोशी कहाँ पकडा गया? अब कहाँ है? उससे कोई मिल सकता है या नही?

आनन्दी भले सुई लगवाये। देखता हूँ, जैन मुनिका पत्र तुम्हारी सूचीमें है। उनके पत्रका उत्तर तो मैंने सीधा भेज दिया है। तुम्हारे पास पता हो तो एक कार्ड लिख भेजो कि मैंने उन्हे सीधे पत्र लिखा है। मुनिका वेष न छोडनेकी सलाह दी है।

रमणीकलालका पत्र मैंने नही देखा है। वही रह गया होगा। वह फिर लिखे।

मीराबहनके पत्र मुझे हर हफ्ते मिलते है। इस तरह पत्र लिखते रहनेके लिए ही उसने मुलाकातकी अनुमति लेना छोड रखा है। अब तो वह मजेमे है। मगर उसके पत्रसे लगता है कि मेरे उपवासके दौरान वह बेसुध अवस्थामे रहती होगी। कामकाज तो करती थी, लेकिन मन किसी बातमे नही लगा पाती थी।

तुम्हारी सूचीमे छगनलाल जोशीके पत्रका भी उल्लेख देखता हूँ, मगर मुझे तो वह भी नही मिला।

तुम्हारी प्राइमस स्टोवकी फेहरिस्त देखी। वह तो चौंकानेवाली है। हमारा यह वैभव कुछ कम नही माना जायेगा। अब तो यदि बहनें यह स्वीकार कर ले कि पुरुष ही इस चूल्हेको जलायेगे तो मै इसे ही काफी मानूँगा। अन्यथा इस राक्षस

१. देखिए पिछला शीर्षक।

देवताको एक बलिदान देनेकी तैयारी कर रखे। ऐसी दुर्घटनाओसे मुक्त रहनेकी आश्रमके पास इजारेदारी नही है। इस स्वतन्त्रताके युगमे तो मुझे इतनी ही चेतावनी देकर सन्तोष करना पडेगा।

लीलावतीको लिखा पत्र पढना।

वर्धासे, तो यहाँ कोई पोस्टकार्ड आया नही लगता।

प्रभुदासको लिखा मेरा पत्र पढ़ना। तुम्हे अवश्य ही सख्त होना चाहिए। उसे अपने बजटके अन्दर-अन्दर ही गुजारा करना चाहिए। अगर ऊपरसे खर्च करना जरूरी ही हो तो पहले तुम्हारी मजूरी अवश्य लेनी चाहिए। अगर उसके बजटमे मालीका समावेश न हो तो मुझे लगता है, वैसा कर देना चाहिए।

मणिलाल और देवदासको मुझसे मिलनेकी जो अनुमति थी, वह वापस नही ली गई है। जब चाहे, आ सकते है।

कहा जा सकता है कि मेरी खुराक ज्योकी-त्यो है। दो दिन रोटी ली और फिर बन्द कर दी। वजन पौन पौड बढा है। इस तरह अब ९९¾ हुआ। कुसुमको देखते रहना।

उपवासके दौरान प्रतिदिन ठीक प्रमाणमे 'गीता'-पाठ करते रहना।

साथमे ४५ पत्र है।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२६१ से भी; सौजन्य: नारणदास गाधी

४८०. चिरंजीव पुंजाभाई!

[२३ अक्टूबर, १९३२][1]

जब मैने पुजाभाईके लिए चिरजीव विशेषणका प्रयोग किया तो किसी बालकने आश्चर्यपूर्वक मुझसे सवाल किया था कि पुजाभाई तो आयुमे आपसे बडे है, फिर आप उन्हे चिरजीव कैसे कह सकते है। मैने उसे कुछ इस प्रकारका उत्तर दिया था: "पुजाभाई उम्रमे तो बड़े है, किन्तु वे एक निर्दोष बालककी तरह मुझपर विश्वास करते है। और उस भावसे मेरे प्रति श्रद्धा-भक्ति रखते है।" मेरा ऐसा लिखना अक्षरश: सत्य था। मै इस श्रद्धा-भक्तिके उपयुक्त हूँ या नही, इस बारेमे मुझे सन्देह है। किन्तु पुजाभाईके विश्वास और उनकी श्रद्धा-भक्तिके बारेमे मुझे लेश-मात्र शका नही है। चाहे कैसी भी मुसीबत क्यो न आ जाये किन्तु पुजाभाईके लिए मेरी राय वेद-वाक्यके समान थी। पुजाभाईने सोच-विचारकर मुझपर विश्वास करनेका निश्चय किया था।

१. "दैनन्दिनी, १९३२" से; पुंजाभाई शाहका स्वर्गवास २२ अक्टूबरको हुआ था।

पुंजाभाईको जिस अर्थमें मैंने चिरंजीव कहकर सम्बोधित किया था, उस अर्थमें भले ही वे आज यहाँ न हो, किन्तु उससे कही विस्तृत अर्थमें वे चिरजीवी हैं।

यह ठीक है कि मैं उन्हे चिरंजीव कहकर सम्बोधित करता था किन्तु उन्हे मुझसे कुछ सीखना नही था। मैं तो उनके गुणोका पुजारी था। मेरे विचारसे पुंजाभाईकी नम्रता, पुंजाभाईकी धर्मपरायणता, पुंजाभाईकी सत्यपरायणता, पुंजाभाईकी उदारता तो ऐसी थी कि कोई उन्हे हरा नही सकता था। पुंजाभाईमें सर्वस्वार्पणकी सामर्थ्य थी।

पुंजाभाई रायचन्द कविको अपना सर्वस्व मानते थे। मैं भी रायचन्दभाईका पुजारी था इसलिए पुंजाभाई मेरी ओर आकृष्ट हुए थे। पुंजाभाईकी तरह रायचन्द-भाईको मैं गुरुका पद तो नहीं दे सका था किन्तु उन्हें इसका कोई दु ख नही था। पुंजाभाई जानते थे कि गुरुका पद किसीको दिया नही जाता। जिस प्रकार चुम्बक लोहेको अपनी ओर खीच लेता है उसी प्रकार गुरु शिष्यको आकर्षित कर लेता है।

किन्तु रायचन्दभाईके बारेमे मैं जो-कुछ कहा करता था, वह पुंजाभाईको बहुत अच्छा लगता और उससे भी अच्छा उन्हे यह लगता कि मैं जिस चीजकी प्रशंसा करता उसे अपने जीवनमे उतारनेका प्रयत्न करता था। इससे हमारा आपसी बन्धन दिन-प्रतिदिन दृढ होता गया।

पुंजाभाईका आश्रमके आरम्भसे ही उससे निकट-सम्बन्ध बन गया था और हालाँकि वे कभी आश्रमवासी नही बने फिर भी वे आश्रमवासीकी तरह ही रहते थे। आश्रमपर जो मुसीबतें आईं उनमे पुंजाभाईने भाग लिया था। अहमदाबादके बाजारकी पेचीदगियाँ पुंजाभाई ही बनाते-सुलझाते थे। जो चाहिए सो पुंजाभाई ला देते। पुंजाभाईके आदमियोंको जब चाहे तब आश्रमके काममें लगा दिया जाता। शहरमें पुंजाभाईकी दूकान और घर आश्रमवासियोका आश्रय-स्थल था। झाड़ूसे लेकर अनाज आदितक कौन-सी चीज किस प्रकार और कहाँ ठीक मिल सकती है, यह बतानेवाले पुंजाभाई थे। पुंजाभाईकी देखरेख और उनकी सलाहसे आश्रमको काफी पैसोंकी बचत हुई है। जिस जमीनपर आजकल आश्रम बना हुआ है उस जमीनको खोजनेवाले भी पुंजाभाई और उसका सौदा करनेवाले भी पुंजाभाई ही थे। ऐसी नाना प्रकारकी सेवा करनेके बावजूद पुंजाभाईने किसी दिन आभारके दो शब्दोकी अपेक्षातक नही की। आश्रमको अपना मानकर पुंजाभाईने आखिरी घडीतक काम किया। मैं पुंजाभाईके निकट सम्पर्कमें आया था किन्तु मुझे उनमे न तो अधीरता नजर आई और न अतिशयोक्ति। बिना कामके पुंजाभाई बोलते नही थे और गपशप मे पुंजाभाई भाग क्यो लेने लगे? वे सदा धर्मकी ही बात करते थे और सज्जनोका स्मरण उन्हे प्रिय था। पुंजाभाईके मनमे किसीके प्रति द्वेष मुझे कभी अनुभव नही हुआ। उन्हे मैंने किसीके प्रति कटु वचन बोलते कभी नही सुना।

वे व्यापार-कुशल थे। दो पैसे कमाते भी थे। यदि चाहते तो और अधिक कमा सकते थे। किन्तु मुझपर ऐसी छाप पडी है कि रायचन्दभाईके सम्पर्कमें आकर उन्होने अपना व्यापार समेट लिया था। पुंजाभाईकी साख बहुत बढी-चढ़ी थी। उनके

यहाँ रखा गया पैसा और उज्ज्वल होकर वापस मिल सकता था। आश्रमके रुपये-पैसोंकी व्यवस्था भी पुजाभाई ही करते थे। वे लम्बे अर्सेतक गुजरात प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके कोषाध्यक्ष भी रहे थे।

पुजाभाई पुण्यात्मा थे, मुमुक्षु थे। आश्रममें उन-जैसे निःस्पृह इतने लोग मिलने भी मुश्किल हैं जितने अँगुलियोंपर गिने जा सकें।

पुजाभाईका स्पर्श आश्रमको पवित्र करनेवाला था। उनका धर्म संकुचित नहीं था। उनके धर्ममें सभी धर्मोंके लिए स्थान था।

ऐसे पुजाभाई चिरजीवी ही हैं। हमें उनके गुणोंका स्मरण करना चाहिए। उनका हमसे जो सम्बन्ध था उसे सुशोभित करनेका प्रयत्न करना चाहिए।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

४८१. पत्र : रमाबहन जोशीको

२३ अक्टूबर, १९३२

चि० रमा,

छगनलालके जेल जानेसे तुझे घबराहट तो नहीं हुई न? उसके पत्र तुझे मिलते हैं या नहीं? उससे मुलाकात होती है? वह कहाँ है? मुझे पत्र लिखनेमें तूने आलस्य किया सो इतने दिन तो निभ गया, लेकिन आगे नहीं निभेगा। मुझे नियमित रूपसे लिखा कर। अब शक्ति आ गई है न? धीरू और विमुके क्या हाल-चाल हैं?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३३७) से।

४८२. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

२३ अक्टूबर, १९३२

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला है।

जमनादासकी बात दुखद है। क्या किया जाये? आखिर भाग्य तो दो कदम आगे रहता ही है।

किसनने मुझे एक लम्बा पत्र भेजा था। उसने अपनी दिनचर्याका अच्छा वर्णन किया है। वह ऐसी कर्मठ है कि सुबह तीन बजे उठकर पत्र लिखने बैठी। मैं तो अपनेको ही ऐसा कर्मठ मानता था। किसन-जैसी लड़कियाँ भी मेरा गर्व अच्छी तरह उतारती मालूम होती हैं। तू नहीं उतार सकती, क्योंकि आश्रममें तो जल्दी उठनेकी

आदत होती है। इसलिए वहाँ तुम्हारे जल्दी उठनेमे कोई विशेषता नही लगती। लेकिन बम्बईमे जो सुबह ६ बजे उठे, वह मेहरबानी करेगा। इसमे बेचारे गरीब मजदूर नही आते। लेकिन किसन कोई मजदूरिन तो है नही।

कुछ समय निकाल सके तो निकालकर आश्रमसे बीमारीको निकालनेकी कला तुझे हस्तगत कर लेनी चाहिए। लेकिन तेरा पहला काम अपना शरीर कसनेकी कला हस्तगत करना है।

मक्का अपने खेतमे नही होता तो क्या मँगाया नही जा सकता? उसीसे वजन बढता हो तो यह तो सरल बात हो गई। जेलमे ऐसा कहा जरूर जाता है कि मक्केके आटेकी काँजीसे दस्त साफ होता है और वजन भी बढता है। कैदियोको हमेशा सवेरे मक्केकी काँजी ही दी जाती है। उसमे नमक डाला जाता है। मक्केके आटेसे चोकर निकालनेकी जरूरत नही होती। कैदियोका साथ देनेके लिए और आजमाइशके तौरपर कुछ दिनतक यह प्रयोग करने लायक जरूर है। आजकल सुबह क्या दिया जाता है? अगर पहलेकी तरह गेहूँके आटेकी काँजी दी जाती हो, तो ज्वारकी देकर देखना बिलकुल सरल है। बहनोको, विट्ठल, कान्ति वगैरहको तो व्यक्तिगत अनुभव है। वे जो कहे वह ठीक होगा। मैं तो दूसरोका कहा हुआ कहता हूँ।

शान्ताने जो लिखा है, उसे मैं कुछ समझा नही। मुझे तो उसने कुछ लिखा नही। तुझे विश्वास दे[1] तो ठीक हो। अब याद आया। "विश्वास देना" तो अंग्रेजी प्रयोग है। गुजराती मुहावरा तो "पेटकी बात बताना"[2] है। शान्ता जो बात खानगी रखना चाहे उसे जरूर खानगी रखना।

तूने जो प्रश्न पूछे है, उनका जवाब नही दे सकूँगा। इसलिए अभी धीरज रखना।

तेरी शक्ति और योग्यताका पार ही नही है। लेकिन उनका मैं उपयोग करूँ तभी न? अभी तो ग्रे की कविताके[3] फूलोकी तरह वे जगलमे बिखर जाती हैं।

अपनी बिल्लीबहनसे जब हम मिले तब वह सचमुच ही खुशीसे पागल हो गई। हमे छोड़ती ही नही थी। निश्चय ही उसे हमारा वियोग बहुत खटका होगा। अब शान्त है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०७) से। सी० डब्ल्यू० ६७४६ से भी; सौजन्य: प्रेमाबहन कटक

१. गुजराती शब्द है — "विश्वास आपे"।
२. गुजराती शब्द है — "पेट आपवुं"।
३. एलिजि रिटन इन ए कन्ट्रीयार्ड।

४८३. पत्र : मणिबहन न० परीखको

२३ अक्टूबर, १९३२

चि० मणिबहन[1],

आशा है, तुम मोहनकी चिन्ता नही कर रही होगी। मुझे उसके बारेमें यहाँ खबर मिलती रहती थी। बच्चोकी बीमारी आँधीके वेगसे आती है और आँधीके वेगसे जाती है। बात यह है कि उनका कोठा हमारे जितना बिगड़ा हुआ नही होता। हम उसे ऐसी अनेक चीजे ठूँसकर बिगाड देते है जो उसमे नही ठूँसी जानी चाहिए। बालकोको अपना कोठा बिगाडनेका इतना समय नही मिलता। नरहरिकी भी चिन्ता मत करना। उसके रक्षक हम नही है। रक्षक तो भगवान् है। और जिसे वह बचानेवाला है उसे कौन दुःख दे सकता है?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९७३) से। सी० डब्ल्यू० ३२९० से भी; सौजन्य : वनमाला एम० देसाई

४८४. पत्र : पद्माको

२३ अक्टूबर, १९३२

चि० पद्मा,

तेरा पत्र मिला। इस बार तेरी लिखावट खराब है। यदि अन्य प्रकारसे तेरा स्वास्थ्य सुधर गया होगा तो वजन अपने-आप बढ जायेगा। जितना हो सके उतना ही काम करना। किसी प्रकारकी चिन्ता मत करना। मुझसे तेरे खिलाफ शिकायत की गई है, यह मैं नही जानता। वह जो हिसाबकी बात थी उसे तो तू शिकायत नही मानती न?

शीलाको तो अब खूब अच्छा लगना चाहिए क्योकि वह शैलाश्रममें आ गई है।

सरोजिनीदेवीसे[2] कहना कि कभी तो पत्र लिखनेकी कृपा करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१३९) से। सी० डब्ल्यू० ३४९१ से भी; सौजन्य : प्रभुदास गांधी

१. नरहरी परीखकी पत्नी।

२. पद्माकी माँ।

४८५. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

२३ अक्टूबर, १९३२

प्रिय बहन,

तुमने मुझे बहुत लाड़ लडाया अब और न ललचाओ। आजतक तो उपवास की दुर्बलताका बहाना था इसलिए तुम जितने फल भेजती थी मै ले लेता था। मेरे साथी भी ऐसे नही है कि उन्हे दे दूं तो वे खा ही जायेगे। वे भी कैदी और मनुष्य-जातिकी मर्यादाकी रक्षा करना चाहते है। अत. मुझे यह उचित नही लगता कि तुम मेरे लिए ढेरके-ढेर फल भेजो। इसलिए शहदके बारेमें मैंने जो किया वैसा ही फलोके बारेमे करने देना। मैं अपनी आवश्यकताके अनुसार मँगा लूंगा। अभी तो तुम्हारे भेजे हुए अनार चल रहे है। मणिलाल जो नारगियाँ और सेब लाया था वे भी पड़े हुए है। ये सब खत्म हो जायेंगे तो तुम्हे कष्ट दूंगा।

शहदके बारेमे मैंने त्रिवेदीको लिखा है। डेविड नामक एक मित्रका पत्र मैंने उन्हे भेजा है। तुम उसे पढना। जगली शहदको छोड देनेमें ही मेरा निस्तार है। इसके दोपोका हूबहू वर्णन श्री डेविडने अपने पत्रमे किया है। हिन्दुस्तानमे कही तो शुद्ध शहद मिलना ही चाहिए। यदि नही मिलता तो मै समझता हूँ कि हमे वैसा शहद तैयार करवाना चाहिए। श्री डेविडका पत्र पढनेपर तुम इस बातको और अच्छी तरह समझ जाओगी। यदि इसमे तुम्हारी रुचि न हो तो उसे छोड देना। व्यर्थमे मै तुम्हे झझटमे नही फँसाना चाहता। यदि इसमे तुम्हारी रुचि हो तो ये तथ्य जानने योग्य है।

बा ने तुम्हारे स्नेहकी सूचक बहुत-सी बाते मुझे सुनाई है? इस सारे स्नेहको निस्सकोच स्वीकार करनेके लिए उत्कट सेवाभाव होना चाहिए न?

मोहनदासके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४) से। सी० डब्ल्यू० ४८२४ से भी, सौजन्य : प्रेमलीला ठाकरसी

४८६. तार : साबरमती आश्रमको

२४ अक्टूबर, १९३२

सत्याग्रह आश्रम,
साबरमती

पुजाभाईकी चिरनिद्रापर हमे आनन्द मनाना चाहिए। अन्तिम क्षणोका पूरा विवरण भेजे। आशा है अन्तिम सस्कारमे आश्रमका पूरा प्रतिनिधित्व रहा होगा।

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७५

४८७. पत्र : अबुल कलाम आजादको

२४ अक्टूबर, १९३२

प्रिय मौलाना साहब,

आपका तार मिला और मैंने तुरन्त जवाब भेज दिया।[1] वह अनुमतिके लिए सरकारके पास भेजा गया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

मौलाना अबुल कलाम आजाद
मार्फत — म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन
कलकत्ता

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८००(४०)(३), भाग ३

१. देखिए "तार : अबुल कलाम आजादको", २०-१०-१९३२।

४८८. पत्र : ई० ई० डॉयलको

अत्यावश्यक

२४ अक्टूबर, १९३२

प्रिय कर्नल डॉयल,

अस्पृश्यताके सिलसिलेमे मित्रोसे मुलाकात और पत्र-व्यवहारके बारेमे तथा एक अन्य मामलेके बारेमे सरकारी नीति स्पष्ट करनेकी प्रार्थना करते हुए मैंने जो पत्र[1] भेजा था, उसके उत्तरमे लिखा आपका पत्र आज प्रात मेजर भण्डारीने मुझे पढकर सुनाया। मुझे उसकी नकल भी कर लेने दी गई थी।

आपके पत्रके अनुसार "सरकार मुझे एक समुचित सख्यामे (उसके द्वारा स्वीकृत व्यक्तियोसे) मुलाकातोकी" और पत्र-व्यवहारकी "अनुमति देनेको तैयार है", "पर शर्त यह है कि यह चीज साफ समझ ली जाये कि वह समाचार-पत्रोमे प्रकाशित नही होगा।

मै समझता हूँ, सरकार इस बातको नही समझ पाई कि मेरा उपवास केवल स्थगित हुआ है और यदि अस्पृश्यता-निवारणका कार्य पूरी तरह नही किया गया तो वह फिर शुरू करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त दक्षिणके एक मन्दिरके बारेमे मेरा कहना यह है कि यदि अगली २ जनवरीतक या उससे पहले उस मन्दिरके द्वार तथाकथित अस्पृश्योके लिए नही खोले गये, तो श्री केलप्पनके साथ मुझे भी उपवास करनेको मजबूर होना पड सकता है। सरकार यह जानती है। तीन सप्ताह गुजर चुके है और अबतक इस सिलसिलेमे मै कोई खास काम नही कर सका हूँ। इस बीच मुझे केवल दो तार भेजनेकी अनुमति दी गई है, और सो भी लम्बे विलम्ब के बाद। सुधारके कार्यको समयसे पूरा करनेके लिए कामको जल्दी निपटाना और अपेक्षित प्रचार-कार्य करना आवश्यक है। हर दिन कीमती है। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि मुलाकातियोके चुनाव और पत्र-व्यवहारके प्रकाशनपर से सभी प्रतिबन्ध हट जाने चाहिए। मुलाकातके समय यदि एक या अनेक अधिकारी उपस्थित रहे और पत्र-व्यवहारकी वही और उसी वक्त जाँच की जाये तो मुझे उसपर कोई आपत्ति नही होगी। मुझे यदि सहायक दिये जाये तो सरकार सारे पत्र-व्यवहारकी नकले और शीघ्रलिपिमे मुलाकातोके नोट भी ले सकती है। स्वभावत· इन मुलाकातो और पत्र-व्यवहारका सविनय अवज्ञासे कोई सम्बन्ध नही होगा और वे पूरी तरहसे अस्पृश्यता-निवारणतक ही सीमित होगे।

इसलिए यदि ये प्रतिबन्ध, जैसी कि ऊपर प्रार्थना की गई है, अगले १ नवम्बरसे पहले नही हटाये गये, तो जो सहयोग देना मेरे लिए सम्भव है, वह मुझे

१. देखिए "पत्र : ई० ई० डॉयलको", ६-१०-१९३२।

मजबूर होकर उस हदतक वापस ले लेना पडेगा जिस हदतक मै सत्याग्रहकी मर्यादाओका पालन करते हुए उसे वापस ले सकता हूँ। उसकी शुरुआतके तौरपर मै, आहारके सम्बन्धमे मुझे जो सुविधाएँ दी गई है, उन सबको अस्वीकार करूँगा और अपनेको 'सी' वर्गके केवल उस तरहके आहारतक ही सीमित रखूँगा जिसे मै अपने व्रतका पालन करते हुए ले सकता हूँ और वह तबतक लूँगा जबतक कि मेरा शरीर उससे अपना सामजस्य रख सकेगा। आशा है, सरकार इसे धमकी नही समझेगी। जो कदम सोचा गया है, वह सरकारी रवैयेका स्वाभाविक परिणाम है। जिस कार्यके लिए उपवास रखा गया और स्थगित किया गया था, उसे यदि मै बिना किसी पाबन्दी और अड़चनके न कर सकूँ, तो जीनेमे मेरी कोई रुचि नही हो सकती। इस नैतिक और धार्मिक सुधारका सविनय अवज्ञासे यदि कुछ भी सम्बन्ध होता तो मै कुछ न कहता।

माननीय श्री हडसनको लिखे गये मेरे व्यक्तिगत पत्रके[1] सम्बन्धमे जो उत्तर आया है, वह मेरे लिए दुखद और आश्चर्यजनक है। डॉ० अम्बेडकरके साथ मुलाकातके समय जो चेतावनी मुझे पढ़कर सुनाई गई, वह यदि मौलाना शौकत अलीको दिये गये तारके सिलसिलेमे मेरी कथित कार्यवाहीकी सजा थी, तो कैदीतक पर लागू होनेवाले इन्साफका यह तकाजा था कि चेतावनीके समय सजाकी वजह मुझे बताई जाती और सजा सुनानेसे पहले मुझसे सफाई माँगी जाती। कैदीको बिना उसकी बात सुने सजा दी जा सकती है, यह तो मैने कभी सुना ही नही। और यह बात भी मेरे दिमागमे कतई नही आई थी कि मेरे लडकेके नाम भेजा पत्र, जिसे मैने देखा था, मुझे चेतावनी देनेके लिए था। मै यह बता दूँ कि मेरे लडकेने अधिकारियो की उपस्थितिमे मुझे साफ-साफ यह बताया था कि श्री हडसनने उदारताके साथ न केवल उसे जितनी बार भी इच्छा हो, उतनी बार मुझसे मिलनेकी, बल्कि मुझसे किसी भी विषयपर बातचीत करने और मेरा कोई भी सन्देश ले जानेकी भी तुरन्त अनुमति दे दी थी, शर्त यही थी कि ऐसी किसी बातके सम्बन्धमे वह पत्र-प्रतिनिधियोको कुछ न बताये और उसे प्रकाशित न कराये। इस बातचीतके कारण मुझे अपने लडकेसे यह कहनेमे कोई दोष नजर नही आया कि वह श्री शौकत अलीको यह बता दे कि उनका तार मैने देख लिया था और उसका जवाब दे दिया था और वह जवाब उन्हे सम्भवत. एक-दो दिनोमे मिल जायेगा, देरीका कारण यह है कि वह सरकारके पास अनुमतिके लिए गया है। मैने यह बात तब कतई नही सोची थी कि उस सर्वथा निर्दोष तारको भेजनेकी अनुमति नही मिलेगी। इसलिए अपने लडकेको मैने उस जवाबका आशय भी बतला दिया था। परन्तु आपके पत्रके इस विषयसे सम्बन्धित अनुच्छेदमे दो बाते गलत कही गई है और वह भूल मुझे सुधार देनी चाहिए। अपने लडकेसे बात करते समय मुझे यह मालूम नही था कि उस तारको 'भेजनेकी अनुमति' नही दी गई है। और यह कहना भी सही नही है कि जवाबका मजमून

१. देखिए "पत्र: एच० एफ० हडसनको", १८-१०-१९३२।

समाचार-पत्रोमे छप गया है। मैंने जो देखा है, वह केवल सार है। अपने लड़केको मैंने जवाबकी कोई नकल नही दी थी। मै यह भी बता दूं कि मेरे लड़केने अपने स्वभावकी विनम्रताके कारण श्री हडसनको एक सौजन्यपूर्ण पत्र लिखकर इस बात पर खेद प्रकट किया था कि मौलाना शौकत अलीने उसके आगाह कर देनेपर भी उनके साथ हुई उसकी बातचीत पत्रोमे छपवा दी है। अपनी इस स्पष्टवादिताके लिए उसे उत्तरमे धन्यवादके एक पत्रकी आशा थी। परन्तु दुर्भाग्यसे उसे फटकार ही मिली, और वह उसपर भी शान्त रहा। यदि इस बहुत ही पूर्ण स्पष्टीकरणके बाद भी श्री हडसनने अपनी राय नही बदली और यह नही सोचा कि मनुष्यके नाते उन्होने मेरे साथ गम्भीर अन्याय किया है, तो मुझे अफसोस होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[पुनश्च]

जिन परिचित और अपरिचित व्यक्तियोको मै पत्र लिखता हूँ, वे उन्हे प्रकाशित नही करेंगे, इस बातकी कोई गारंटी देना मेरे लिए स्पष्ट ही असम्भव है; इसलिए जबतक पूर्वोक्त प्रतिबन्ध कायम है तबतक मुझे अस्पृश्यताके सम्बन्धमे, जितना-कुछ पत्र-व्यवहार मै करता रहा हूँ, उसे भी बन्द रखना पडेगा। अत मुझे यह मॉग करनेका अधिकार है कि इस बातका उत्तर इस महीनेकी ३१ तारीखसे पहले ही जितनी जल्दी सम्भव हो, दे दिया जाये।[१]

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८००(४०)(४), भाग १, पृ० २२७ से। जी० एन० ३८६४ भी

१. इस पत्रको पाकर होम डिपार्टमेंटने १ नवम्बरको बम्बई सरकारको यह तार दिया था: "गांधीके १८ और २४ अक्टूबरके महत्त्वपूर्ण पत्रोंको भेजते हुए आपने २८ अक्टूबरको जो पत्र लिखा था वह हमें कल ही मिला है। पूरी तरह विचार करनेके बाद हम सम्राट्की सरकारसे यह सिफारिश कर रहे हैं कि गांधीको केवल अस्पृश्यता-निवारणसे सम्बन्धित मामलोंपर मुलाकातों और पत्र-व्यवहारकी पूर्ण स्वतन्त्रता देनी चाहिए और प्रचारपर कोई प्रतिबन्ध नही होना चाहिए। गांधीने स्वयं मुलाकातोंमें अधिकारीकी उपस्थिति और पत्र-व्यवहारकी जाँचके अधिकारके बारेमें जो शर्तें सुझाई है, वे स्वीकार कर ली जायेंगी, यद्यपि उन्हें लागू करना शायद आवश्यक न हो।

"इस बीच हम यह बहुत ही आवश्यक समझते है कि गांधीको इन हालतोंमें अपने आहारपर प्रतिबन्ध लगाना शुरू नही करना चाहिए। इसलिए कृपया उन्हें तुरन्त सूचित कीजिए कि उनके पत्र भारत सरकारको कल ही मिले हैं। इस मामलेपर बहुत ही गम्भीरतासे विचार किया जा रहा है और आशा है कि हम उन्हें दो-तीन दिनोंमें ही निर्णयसे अवगत कर देंगे। इस बीच उन्हें यह समझाइए कि हमें उनकी प्रार्थनाओंपर पूरी तरह विचार करनेका मौका देनेसे पहले ही यदि उन्होने आहारपर प्रतिबन्ध शुरू कर दिया तो इससे परिस्थिति जटिल हो सकती है।" भारत सरकार, होम डिपार्टमेंट, पॉलिटिकल, फाइल नं० ३१/९५/३२।

४८९. पत्र : रुक्मिणीदेवी बजाजको

२४ अक्टूबर, १९३२

चि० रुक्मिणी,

मैं अपनी कुहनीको आराम देनेके खयालसे पत्र बोलकर लिखवाता हूँ। तब तो यही कहना पड़ेगा न कि तेरा विवाह बहुत प्रसिद्ध व्यक्तिसे हुआ है? बनारसमें एक ही बजाज-परिवार है किन्तु वह इतना प्रसिद्ध है कि केवल 'बजाज' लिखनेसे ही पत्र उन्हें मिल जाते हैं। लेकिन उससे तेरा उत्तरदायित्व कितना बढ़ गया? ऐसे परिवारमें जाकर तुझे स्वयंको अपने चरित्र-बलसे सुशोभित करना है, और कुटुम्बको भी सुशोभित करना है। ईश्वर तुझे ऐसा करनेकी शक्ति दे।

मालवीयजी के पवित्र हाथोंसे तुझे तमगा मिला, यह तेरे लिए कितने सौभाग्यकी बात है! यदि सितार बिगड़ गया है तो उसे ठीक करा। तेरा यह अभ्यास छूटना नहीं चाहिए। आशा है, यह पत्र मिलनेतक तेरी खाँसी चली गई होगी। खाँसीको तो बड़ी आसानीसे मिटाया जा सकता है। सुहाते हुए कुनकुने पानीमें एक छोटी चम्मच-भर नीबूका रस और साफ किया हुआ अधिकसे-अधिक जितना नमक मिला सके, मिलाकर एक-एक या दो-दो घंटे बाद एक या दो दिन पी। यदि खाँसी पुरानी न हो गई हो तो एक ही दिनमें शान्त हो सकती है। किन्तु इन एक-दो दिनोंमें और कुछ नहीं खाना चाहिए। यदि दस्त साफ न हुआ हो तो एनीमा लेना। अगले दिन दूध और मीठे अंगूर या मोसम्बी ली जा सकती है। मुझे समय-समयपर लिखती रहना।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१४३)से।

४९०. पत्र : विनोबा भावेको

२४ अक्टूबर, १९३२

बाणभट्ट और वाल्मीकिसे तुलना करना ठीक नहीं है।[1] बालकाण्ड और किष्किन्धाकाण्डसे की जा सकती है। शायद किष्किन्धा और उत्तरकाण्डसे करना और भी अच्छा होगा। २०० अंक और उससे भी ऊपरका बारीक सूत उत्तरकाण्ड है। उसके बिना किष्किन्धाकाण्डका उपयोग नहीं हो सकता। पूर्वजोंने गरीबोंसे बेगार कराकर ढाकेकी शबनम[2] तैयार कराई और विलासियोंके विलासका पोषण किया। हम उसका प्रायश्चित्त करके यज्ञके रूपमें बारीकसे-बारीक सूत कातें और भगवान्को अर्पित करें। कला दोनोंकी समान है। वह स्वार्थपोषक थी, यह परमार्थपोषक हो। खादीको व्यापक बनानेके लिए पहलेकी शक्तिका पुनरुद्धार जरूरी है। जो उस समय गुलामीकी हालतमें हो सकता था, वह हमें स्वतन्त्रताके युगमें करके दिखा देना चाहिए। विषयी जो वेश्याके लिए करे, क्या भक्त भगवान्के लिए उतना भी न करे? इसमें कोई कठिनाई नहीं है, खर्च नहीं है। क्योंकि धीरे-धीरे हमें आत्मार्पण करके बारीक कातना है। खादीको काफी सस्ता और अच्छा बनानेकी युक्तियाँ भी बारीक कातनेसे जल्दी मालूम हो सकती हैं, यह मैंने अनुभव किया है। "यावानर्थ उदपाने"[3] यहाँ लागू होता है।

ऊपरकी विचार-सरणी तुम्हें अच्छी लगे, तो यह समझानेकी जरूरत भी नहीं रह जाती कि याज्ञिकके लिए मैं बीस अंक क्यों कमसे-कम मानता हूँ। मगर यह कोई वेदवाक्य नहीं है, इसे सिद्धान्तके रूपमें नहीं रखा गया है। इसमें याज्ञिकके भावकी परीक्षा है। एक संस्थाको ऐसा-कुछ करना ही चाहिए। चाहे जैसा धागा निकालना यज्ञमें शामिल नहीं हो सकता, कुछ-न-कुछ नियम होना चाहिए, कोई-न-कोई निश्चित स्तर होना चाहिए। और अगर ऐसा होना चाहिए, तो बीस अंकका किसी भी तरहसे ज्यादा नहीं माना जा सकता। याज्ञिकको बेगार नहीं टालनी चाहिए। याज्ञिकको अपने यज्ञमें भाव भरना चाहिए, कला पूरनी चाहिए, रंग भरना चाहिए और तद्रूप हो जाना चाहिए। यज्ञका हव्य शुद्धतम होना चाहिए न?

अब भी न समझा सका होऊँ, तो फिर पूछना। मुझे अपनी रायके बारेमें शंका नहीं है। मगर जबतक तुम्हें न समझा सकूँगा, तबतक मुझे चैन नहीं मिलेगा।

१. विनोबा भावेने बारीक सूत कातनेपर आपत्ति की थी। उन्होंने मोटे सूतकी तुलना वाल्मीकीय **रामायण**से और बारीककी तुलना बाणभट्टकी **कादम्बरी**से की थी। उन्होंने गाँवोंमें काम करनेवाले कार्यकर्त्ताओंकी कठिनाइयोंकी भी चर्चा की थी।

२. एक प्रकारकी मलमल।

३. देखिए खण्ड ३२, पृ० १२६।

गाँवोका काम बहुत कठिन है। प्याजके बारेमे 'स्मृति' क्या कहती है, इसकी चिन्ता नही। हमारा अनुभव कहे सो सच। औषधके रूपमे प्याज लेना योग्य है। मैंने तो उसका बहुत प्रयोग किया है। उसकी बदबू मुझे भी पसन्द नही है। मैं उसका उपयोग नही करता, परन्तु आवश्यक लगनेपर जरूर करूँगा। आखिरी भोजनके समय उसका उपयोग करनेसे किसीके सम्पर्कमे कम ही आना पडता है। दवा-जितनी मात्रामे लेनेसे उसकी बदबू कम होनेकी सभावना है। गायका दूध कही भी न मिले, यह तो हमारा दिवालियापन ही हुआ न? साथमे गायके दूधका मावा रखें, तो घी और प्रोटीन दोनो मिल जाये, और उसका चूरा करके गरम पानीमे मिला दे, तो लगभग दूधका गुण आ जाये। इसमे मैंने गुड-शक्कर नही बताया, क्योकि उसकी जरूरत नही रहती और उसे लिया जाये तो शायद अस्वाद-व्रतका भग हो जाये। इसलिए रोटी, पेडे, प्याज और इमली या नीबू — इतनी चीजोसे गुजर हो सकती है। सेवकोंको रातमे देरसे न खाना चाहिए। गाँववालो से सिर्फ रोटी और प्याजकी भिक्षा स्वीकार करे या खुद बनाकर खाये। सम्भव हो तो हर जगह पानी उबाल ले और वही पीये। इसमे किसीपर भार नही बनना पडेगा, किसीको कष्ट न होगा, अपने लिए कुछ भी विशेष करनेकी जरूरत न रहेगी। खुलेमे सोया जाये। साँप वगैरहसे बचनेके लिए खाट मिले, तो ले ली जाये। यह सब अनुभवके बिना ही बकता जा रहा हूँ। मै यह जानता हूँ कि गाँवोमे जानेपर जो सहूलियतें मुझे मिली है, वे औरोको नही मिलेगी। इसमे से जो शक्य और वाछनीय हो, वह किया जाये और बाकीको छोड़ दिया जाये। यह तो इसलिए लिख दिया है कि तुम्हे अधिक विचार करनेकी प्रेरणा मिले। मै अच्छी तरह समझता हूँ कि ग्राम-प्रवेश बहुत ही कठिन है। इतनेपर भी हमें यह करना ही होगा। इसलिए तुम्हारा आरम्भ मुझे बहुत पसन्द आया है। हरएक सेवकको साधारण वैद्यकका ज्ञान होना चाहिए। उसे प्राप्त करना आसान है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७४-५

४९१. पत्र : बहरामजी खम्भाताको

२४ अक्टूबर, १९३२

भाईश्री खम्भाता,

तुम्हारा पत्र मिला। कुहनीका दर्द फिर शुरू हो गया है इसलिए हाथको आराम देनेके खयालसे मैंने यथासम्भव बोलकर पत्र लिखवाना शुरू कर दिया है। तुम्हारे "ब्लू ब्रेन" वाले पत्रसे हममे से कोई घबराया नही था। "ब्लू ब्रेन" क्या होता है, यह तो पता ही नही था। किन्तु जब तुम्हारा पत्र मिला तब मैं पेडके नीचे पडा हुआ था, इसलिए मैंने कहा कि कौन जाने "ब्लू ब्रेन" क्या होता है, किन्तु पेड़के नीचे रहनेसे "ग्रीन ब्रेन" हो सकता है और यदि ऐसा हो तो अच्छा ही है।

इस प्रकार हम सब परिहास करते रहे क्योकि जिसका तुम्हे भय था वैसा कोई लक्षण मुझमे था ही नही। तुम्हे ऐसा क्यो लगा, अब तो यह भी अनायास समझमें आ गया इसलिए हमे परिहासका और अधिक कारण मिल गया है।

भाई मेहताको मै अपने शरीरकी जाँच न करने दूँ ऐसी तो कोई बात ही नही है। मुझे यह अच्छा लगेगा कि वे मुझे देखे और कुछ सुझाव दे। मै तो किसीसे भी अच्छी बात सीखनेको सदा तत्पर रहता हूँ तो फिर मेहतासे क्यो नही सीखूँगा? किन्तु बात यह है कि वे मुझे देखे, इसके लिए विशेष रूपसे अनुमति लेनी होगी और मुझे इस बातका पूरा डर है कि अनुमति नही मिलेगी। माँगनेपर अनुमति न मिलनेसे मनको चोट पहुँचेगी इस कारण मै अनुमति नही माँगता। किन्तु जो कारण उन्हे सूझे उनके आधारपर यदि वे कुछ लिख सके तो मै उनपर अवश्य विचार करूँगा। वे जो मानते है वही मै भी मानता हूँ कि मै चाहे कितने भी सयमसे रहता होऊँ किन्तु फिर भी मेरे शरीरमे कही-न-कही रोग छिपा हुआ है जो हाथके दर्दके रूपमे या अन्य प्रकारसे प्रकट होता रहता है। मेरी आँते तो कमजोर है ही। मुझे जन्मसे तो सयमी माना ही नही जा सकता। बहुत वर्षोतक स्वच्छन्द जीवन बितानेके बाद मैने सोच-समझकर सयमका पालन करना आरम्भ किया, किन्तु इस सयममे भी कितना असयम मिला हुआ है इसका हिसाब कौन लगा सकता है?

तुम दोनो यदि किसी शान्त स्थानपर जा सको तो बहुत अच्छा हो। प्रकृतिके विरुद्ध मत लड़ना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५५४) से। सी० डब्ल्यू० ५०२९ से भी, सौजन्य: तहमीना खम्भाता

४९२. पत्र: ई० ई० डॉयलको

२५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय कर्नल डॉयल,

इसी २४ तारीखके आपके पत्रके लिए धन्यवाद। मेरे अनेक मित्रोके स्वास्थ्यके बारेमें आपने जो आश्वासन दिया है, उसकी मै कद्र करता हूँ। लेकिन आप शायद मेरी इस बातको स्वीकार करेगे कि जो सन्तोष खुदसे सम्बन्धित व्यक्ति द्वारा भजे पत्रसे मिल सकता है, वह इससे नही मिलता। जहाँतक श्रीयुत न० द्वा० परीखका सम्बन्ध है, मेरा पत्र उपवासके दिनोमे भेजा गया था और आप वादा कर चुके है कि आप ऐसी व्यवस्था करेगे जिससे मुझे उत्तरमे उनका एक पत्र मिल जायेगा। आपके सौजन्यसे ऐसे कई मित्रोके पत्र मुझे पहले भी मिले है। जहाँतक श्रीमती मणिबहन पटेलका सम्बन्ध है, उनका भी पत्र बहुत दिनोसे नही आया है। वे मुझको या सरदार वल्लभभाईको नियमपूर्वक लिखती है, लेकिन इधर हममे से किसीको उनका

कोई पत्र नही मिला है। स्वामी आनन्दके पत्रका उत्तर देनेके लिए तो मै आपके सौजन्यपर ही निर्भर हूँ। उनके यहाँसे अपेक्षानुसार कोई पत्र न आया हो, ऐसा नही है। इसलिए यदि आप अन्यथा न माने तो मै यह जानना चाहूँगा कि क्या श्रीयुत परीखका उत्तर, जो दिलानेका आपने वादा किया था, श्रीमती मणिबहन द्वारा हर महीने लिखा जानेवाला सामान्य पत्र और आपके सौजन्यसे स्वामी आनन्दका एक पत्र मुझे मिल सकता है?[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बम्बई सरकार, होम डिपार्टमेंट, आई० जी० पी० फाइल न० ९

४९३. पत्र : तेजबहादुर सप्रूको

२५ अक्टूबर, १९३२

प्रिय डॉ० सप्रू,

क्योकि अपने दाये हाथको आराम देना मेरे लिए जरूरी है, इसलिए मैं यह पत्र बोलकर लिखवा रहा हूँ।

आपके पत्रके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। अपना सामान्य स्वास्थ्य मैंने लगभग पुन. प्राप्त कर लिया है। रोजमर्राका अपना काम मै बिना किसी खास कठिनाईके कर लेता हूँ।

हम सबको इस बातकी खुशी है कि आपका लड़का लगभग अच्छा हो गया है और उसकी चोटे, समाचार-पत्रोमे जैसी रिपोर्ट थी, उतनी गम्भीर नही थी।

आशा है, इस पत्रके पहुँचनेतक आप इन्फ्लुएंजाके प्रभावसे बिलकुल मुक्त हो गये होगे। दूसरी बातोके बारेमे मै अभी कुछ नही लिख सकूंगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गाधी-सप्रू पत्र-व्यवहार, सौजन्य राष्ट्रीय पुस्तकालय, कलकत्ता

१. इसके उत्तरमें कर्नल डॉयलने अगले ही दिन लिखा कि कैदी न० द्वा० परीखने जेलमें काम न करनेकी हडतालमें भाग लिया था, जिससे उनकी पत्र-व्यवहारकी सुविधा छीन ली गई है और कुमारी पटेल तथा स्वामी आनन्दने इस बीच कोई पत्र नही लिखा है।

४९४. पत्र : मणिलाल गांधीको

२५ अक्टूबर, १९३२

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र मिला। तू जब भी आये, १२ बजे आना। सुशीला और तारा भी आ सकती है। सुरेन्द्र भी आ सकता है। वह आश्रममे भी रहा है न? फिर समधी मेरे सगे ही माने जायेगे। एक साथ मिलनेवालो की सख्या पाँचसे अधिक नही होनी चाहिए।

तेरी मद्रास आदिकी यात्रा तुरन्त होनी चाहिए। तुझसे मुलाकातका जो विवरण अखबारोमे प्रकाशित हुआ है, वह मुझे सही नही लगता। यदि तूने यह विवरण न देखा हो तो देखना। 'हिन्दू'मे प्रकाशित हुआ है।

आशा है, अब तू पूर्णत स्वस्थ हो गया होगा।

मुझे नियमित रूपसे लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च .]

देवदास आज आकर मिल गया, अतः सुशीला अब अगले मगलवारको ही मिल सकेगी। बाकी समाचार देवदास देगा। मैंने कागजात भेज दिये है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७९९)से।

४९५. पत्र : शीतलासहायको

२५ अक्टूबर, १९३२

हमे लडके-लडकियोकी ओर शकित नजरसे नही देखना चाहिए। जान-बूझकर उन लोगोको लालचमे न डाले। यहाँ कोई ऐसी चीज नही है। [1] सावधान है। अब वह छोटा लडका नही। उसकी उमर करीब ३२ सालकी है। . [2] भी समझदार लडकी है और . [3] मे एक अच्छी आदत है। मेरेसे वह कुछ छिपाता नही है। विकारवश हो जाये तो वह मुझे कह देता है। इसलिए मै इन दोनोके सम्बन्धके बारेमे बिलकुल निश्चित हूँ। रोमन कैथलिक नियमोसे मै थोडा-बहुत परिचित हूँ। हमारा प्रयोग अनोखा है, उसमे काफी भय है। हिन्दुस्तानके वायुमडलसे प्रतिकूल भी है। लेकिन स्त्री-जातिकी जो सेवा हम करना चाहते है, उनके लिये

१, २ व ३. साधन-सूत्रमें नाम छोड़ दिये गये है।

जो स्वतत्रता इष्ट है वह खतरा उठानेके सिवा कभी हासिल नही हो सकती है। सावधानीसे ईश्वरपर विश्वास रखकर हम नीडरतासे आगे बढते है। और इसी कारण आश्रमके मत्रीकी पसदगीमे हमे बहुत सावधान रहना पडता है। जहाँतक मुझे ज्ञान है, नारणदाससे बढकर पवित्र, धैर्यवान, सयमी और व्यवस्थित-चित्त व्यक्ति हमे नही मिल सकता। उनके होनेसे मै बिलकुल निर्भय रहता हूँ, तथापि तुम्हारे दिलमे यदि कुछ शका हो, कोई बात तुम्हारे कानोपर आई हो, तो मुझे लिखो।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७७-८

४९६. पत्र : कृष्णदासको

२६ अक्टूबर, १९३२

मानवताके नाते कहना चाहिए कि यह तुम्हारा दुर्भाग्य ही था जो तुम्हे सिंनहरगाँव ले गया। तुम वहाँ स्वास्थ्य-लाभके लिए गये थे, पर इन्फ्लुऐंजाके शिकार हो गये। किन्तु कौन जानता है कि तुम्हे बिलकुल लेटे रहनेको बाध्य कर देनेवाली यह बीमारी तुम्हारे भलेके लिए ही नही है! सत्य क्या है, इस सम्बन्धमे चूँकि हम बहुत ज्यादा अज्ञानमे है, मेरा खयाल है कि इसीलिए 'गीता' हमे यह शिक्षा देती है कि चाहे हम कैसी भी हालतमे हो, हमे समबुद्धि रहना चाहिए। अत एक ओर तो हमे समबुद्धि होना सीखना चाहिए और दूसरी ओर जब हम बीमार पडे तो हमें अच्छा होनेके लिए वे प्राकृतिक उपचार काममे लाने चाहिए जो हमे उपलब्ध है। इसलिए मेरी कोशिश यह होगी कि मैं तुम्हारे स्वास्थ्यके बारेमे चिन्तित न होकर यह प्रार्थना करूँ कि जो भी तुम्हारे लिए शुभ हो, वही हो।

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७८-९

४९७. पत्र : मीराबहनको

२६ अक्टूबर, १९३२

चि० मीरा,

तुम्हारे पत्र बिलकुल नियमित रूपसे आते है।

'कुरान'मे तुम्हे और भी बहुतसे रत्न मिलेगे। उनमे से कुछ तो मनमे गहरे उतर जाते है। ईसाई धर्मके बारेमे जो उद्धरण है, वह और तरहका है। उसमे ईसाई मतके साथ न्याय नही हुआ है। 'पुत्रत्व'का अर्थ शाब्दिक नही है। और 'त्रयी'का अर्थ भी तीन देवता नही है। यहाँ 'शब्द मारता' है, यह उक्ति लागू होती है। तुम किसका अनुवाद पढ रही हो?

मेरे वजन और स्वास्थ्यमे कोई उतार-चढ़ाव नही है। दो दिन मैंने रोटी लेकर देखी, और फिर फल, दूध और एक सब्जीपर आ गया। अपना दूध मैं सब्जीपर

डाल लेता हूँ। सब्जीमे अभी एक दिन लौकी और एक दिन कद्दू होता है। जेलके बगीचेमे अभी यही दो सब्जियाँ होती है, और मै यहाँ होनेवाली सब्जियोसे ही अपना काम चलानेका प्रयत्न करता हूँ। ये शरीरको अच्छी तरह अनुकूल पडती लगती है। एकरसताकी मुझे चिन्ता नही है।

मै देख रहा हूँ कि मौसम अपेक्षाकृत ठडा हो जानेसे तुम्हारा स्वास्थ्य सुधर रहा है। आशा है, यह सुधार जारी रहेगा।

सात साल एक स्वप्न-से लगते है। जब मै उन जबरदस्त झिडकियोंकी याद करता हूँ तो काप उठता हूँ, और मै इस तथ्यसे यथासम्भव सन्तोष प्राप्त करता हूँ कि वह प्रेम ही था जो झिडकियाँ देता था। लेकिन मै यह भी जानता हूँ कि उससे बेहतर तरीका भी था। अतीतपर जब मैं दृष्टि डालता हूँ तो मुझे यह अनुभव होता है कि मेरा प्रेम अधीर था। उस हदतक वह अज्ञानमय था। ज्ञानमय प्रेम सदा धैर्यवान होता है। अज्ञानमय प्रेम सस्कृतके 'मोह' शब्दका भोडा अनुवाद है। मै धैर्यवान बनना सीखूँगा। छोटी-छोटी बातोके सम्बन्धमे जब मै अपने व्यवहारपर विचार करता हूँ तो मुझे पता चलता है कि मुझमे अभी उतना धैर्य नही आया है जितना कि सच्चे प्रेमके लिए आवश्यक है। वह धैर्य आयेगा।

उस चीनी युवक शान्तिकी तुम्हे याद है न? उपवासके दिनोमे मुझे उसका तार मिला था और अब उसका एक पश्चात्ताप-भरा पत्र आया है। वह बेचारा अपने व्रतोका पालन नही कर सका, इसलिए चुप रहा। अब वह कई बच्चोका बाप है। उसने चीनकी बरबादीका चित्र खीचा है और पिछली बातोके प्रायश्चित्तके लिए भारत वापस आनेको अधीर है। उसकी अग्रेजीमे आश्चर्यजनक सुधार हो गया है।

देवदास कल यहाँ आया था। वह अब पहलेसे बहुत अच्छा है। प्यारेलालने दूध और मक्खन न लेनेका हठ पकड रखा है और वह केवल तेल ही लेता है। वह फल भी नही लेता। परिणाम यह निकला कि उसका गला खराब हो गया है। मैंने उससे कहा है कि वह इतना हठ न करे।

शिवप्रसाद पहलेसे अच्छा है। सुशीला भी अच्छी है। बा आश्रम जानेवाली है। वह तुमसे मिलनेको उत्सुक थी। पर मैंने ही उसे रोक दिया।

किसन वहाँ हो तो तुम दोनोको प्यार।

बापू

[पुनश्च :]

यह पत्र एक अलग लिफाफेमे भेजा जा रहा है। आशा है, तुम्हे मिल जायेगा।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४७) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९७१३ से भी

४९८. पत्र : रामदास गांधीको

२६ अक्टूबर, १९३२

मननसे तेरे निश्चयको जरूर बल मिलता रहेगा। 'गीता'को छान डाले और उसके मूल शब्दोका विचार करते रहे, तो उससे भी बहुत और आवश्यक बल मिलता है। मेरे साथ तो ऐसा ही होता है। तू 'गीता'को सस्कृतमे समझ लेता है क्या? सस्कृतका अभ्यास करता है? और पढनेके लिए टॉल्स्टॉयके निबन्ध है। 'इमिटेशन ऑफ क्राइस्ट' पढने लायक है। बुद्धदेवका चरित्र जरूर पढना चाहिए। 'लाइट ऑफ एशिया'[1] समझमे आये तो वही पढ। 'रामायण' पढ़ डाले तो अच्छा ही है। हिन्दीमे 'ब्रह्मचर्य' नामक छोटी-सी पुस्तक बहुत अच्छी है। उसे पढनेकी इच्छा हो, तो आश्रमसे मँगा दूँ। 'नीतिनाशने मार्गे'[2] शीर्षकसे मेरे जो लेख है, वे भी पढने लायक है। अभी तो इतना पढना काफी होगा। निश्चय कैसे पूरा होगा, इस तरहकी व्यर्थ चिन्ता करनेके बजाय यह विचार करना कि निश्चय जरूर पूरा होगा और भगवान् जरूर मदद करेगे। मनमे उसे पक्का करके अपने काममे लीन रहना। पढनेमे भी अधीर न होना। न समझमे आये, तो दुबारा पढना, भले ही उसमे ज्यादा समय लगे। याद न रहे, तो भी घबराना मत और प्रफुल्लित रहना। तेरी गति कितनी ही धीमी हो, उसकी फिक्र मत करना। किसी दिन सब-कुछ अपने-आप आसान हो जायेगा। शरीरको बिगाड़कर कुछ मत करना। दिमाग जितना बोझ उठा सके, उतना ही उसपर डालना।

बच्चोके बारेमे तेरा लोभ ठीक है। मगर आजसे ही उनकी चिन्ता करनेका कोई कारण नही। अभी तो उनके शरीर अच्छे बने, यही जरूरी है। इसमे नीमूकी मदद चाहिए। नीमूको मै लिख रहा हूँ। अभी तो पत्र ठीक आ रहे है। तू लिखता रहना। उनके शरीर अच्छी तरह बनेगे और शुद्ध वातावरणमे पलेगे, तो जैसे तू चाहता है, वैसे अपने-आप बन जायेगे। तेरा यह लिखना ठीक ही है कि उनके लिए भी तुम दोनोको सयम रखना है। शुद्ध शिक्षा किसे कहते है, वह कैसे दी जाये, इस जमानेके लायक शिक्षा कौन-सी है — ये सब सोचने लायक बाते है, उनके बारेमे सोचनेके लिए बहुत समय है। इस बारेमे जो प्रश्न उठे, पूछ लेना। तू चाहेगा तो थोडेमे ऐसा-कुछ लिख भेजूंगा जिससे तुझे मदद मिले।

आशा है, सुरेन्द्रका मोचीका काम धडल्लेसे चल रहा होगा। उससे कहना कि भगवान् जूतोमे, मृत पशुओके चमडेमे भी रहता है। मेरे लिए अभी तलोका जो चमडा आया, वह अच्छा है। उसमे भगवान् बहुत खूबसूरत लगते है। भगवान् कोई

१. सर एडविन अर्नाल्ड-कृत।

२. देखिए खण्ड ३१।

ग्रन्थोमे ही बसते हो, सो बात नही। तुलाधारका किस्सा सुरेन्द्रसे समझ लेना और वह भी उसपर दोबारा विचार कर ले। भगवान्‌को ढूँढनेके लिए अभिमन्युके चक्र-व्यूहमे नही भटकना पडता। वह तो बगलमे है। अपनी विस्मृतिके कारण हम उसे गाँव-भरमे छान डालते है और फिर जब याद आता है कि वह तो बगलमें ही छिपकर बैठा है, तब अपनी मूर्खतापर रोते और हँसते है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७९-८०

४९९. पत्र : डाह्याभाई पटेलको

२६ अक्टूबर, १९३२

चि० डाह्याभाई[1],

अब तो तुम्हे मणिबहनके पत्र भी नियमित रूपसे मिलना सम्भव है। इस तरह तुम्हारे पढने या सुननेके साहित्यमे वृद्धि हो गई। परन्तु साहित्य पढनेके साथ अब तुम्हारे बिस्तर छोडनेका समय भी नजदीक आता जा रहा है न? फिर भी बिस्तर छोड़नेकी अधीरता न होनी चाहिए। यह तो जानते हो न कि बिस्तरमे पडे-पड़े भी सेवा हो सकती है?

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई पटेल
राम निवास
पारेख स्ट्रीट, बम्बई-४

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १४९

५००. पत्र : मथुरादास पुरुषोत्तमको

२६ अक्टूबर, १९३२

चि० मथुरादास,

मै तुम्हारे पत्रका इन्तजार ही कर रहा था और सोच रहा था कि तुम्हारा पत्र क्यो नही आया। उक्त पत्र अब मिला। कस की बात तुम ठीक समझ गये। ऐसी व्यावहारिक बातोको समझ लेनेसे हमारा बहुत-सारा समय बच जाता है। मिलो मे प्रचलित कुछ प्रणालियोके पीछे तो व्यापारिक हेतु है और कुछका उद्देश्य वस्तुओ का उत्पादन विशाल पैमानेपर करना है। ऐसी प्रणालियाँ हमारे ग्रामोद्योगोके लिए बिलकुल अनुपयोगी है। हाँ, कुछ अनुकरणके योग्य है। हमे अपनी विवेक-दृष्टिका

१. वल्लभभाई पटेलका पुत्र।

उपयोग करके इन प्रणालियोमे से उन्हे चुन लेना चाहिए जो हमारे लिए सहायक हो सकती है। यदि ऐसा लगता हो कि महादेवका वारीक सूत कमजोर है और इसलिए नही वुना जा सकता तो मेरी सलाह है कि उसे दुवटा कर लिया जाये। लेकिन यदि ऐसा लगे कि हमारे पास इतने वारीक सूतके लायक राछ-फन्नी नही है और इसलिए वह नही वुना जा सकता तो हमे उपयुक्त राछ-फन्नी प्राप्त करनी चाहिए। रामजी का अनुभव गायद इस मामलेमे हमारी ज्यादा मदद नही कर सकता। कारण, मुमकिन है कि उसमे इतने वारीक सूतसे निपटने-जितनी वुद्धि-गक्ति ही न हो। अहमदावादमे वहुत वारीक सूत वुननेवाले अनेक कुशल वुनकर है, इसके लिए तुम्हे उन्हीके पास जाना चाहिए। यह भी सम्भव है कि अत्यन्त वारीक सूतका कस निकालनेकी कोई अन्य रीति हो और इसके लिए तथा सूतको [वुननेके पहले] ठोकनेके लिए ऐसे विशेष नाजुक सावन हो जिनसे सूतपर कमसे-कम तनाव पडे। इसे काँजी देनेकी क्रिया भी भिन्न प्रकारकी होती होगी। ऐसा भी हो सकता है कि अहमदावादके कुगल वुनकर केवल महीन रेशम ही वुनते हो। ऐसी हालतमे तो उन्हे भी महीन सूत वुननेसे सम्वन्धित जानकारी नही होगी। ऐसा ही हो तो हमे आन्ध्रदेगमे और वगालमे जहाँ वहुत महीन सूत वुना जाता है, वहाँसे आवश्यक सावन जुटाने चाहिए। या, हम वहाँ अपने सूतका नमूना भेजे और उनसे उसे वुननेकी रीति पूछे। तुमने आन्ध्रके वुनकरोको काम करते देखा है? वे हमारी प्रदर्शनियोमे सूतको काँजी देने आदिकी क्रियाएँ करते थे — क्या तुमने यह देखा है? लेकिन मैंने ऊपर जो-कुछ लिखा है उसे पढ़नेके वाद तुम्हे स्वय इस सवालको हल करनेकी ठीक दिशा सूझेगी। हमे आश्रममे ही महीनसे-महीन सूत स्वय वुन सकनेकी शक्ति विकसित करनी चाहिए। इससे शायद तुम यह भी समझ जाओगे कि सूत वुननेकी इस कलाको पूरी तरह तो याज्ञिक ही हस्तगत कर सकते है और यह भी कि जव इस कलापर हमारा पूर्ण अधिकार हो जायेगा तव सामान्य खादीको भी वढियासे-वढिया स्तरतक पहुँचाना तो हमारे लिए विलकुल आसान हो जायेगा। दूसरे उद्योगो और उनसे सम्वन्धित कलाओपर दृष्टि डालो तो तुम देखोगे कि जहाँ जिन-जिन उद्योगोकी कलापर लोगोने पूरा अधिकार प्राप्त नही किया वहाँ वे उद्योग अविकसित रह गये है। और कला-कोविद तो हमेगा वे ही लोग हुए है जो उस कामको यज्ञार्थ करते है। हमने इस कलाकी उपेक्षा की इसीलिए हम करोडो लोगोका यह घरेलू धन्धा खो वैठे। अव हम इस धन्धेका पुनरुद्धार तभी कर सकते है जव हम उसके लिए कडी तपस्या करे और उसका विकास यज्ञकी भावनासे करे। इस दृष्टिसे विचार करते हुए मुझे यह वात वहुत अच्छी लगी कि तुमने इस कार्यमे जुटे रहनेका दृढ निग्चय कर लिया है और तुम्हारा मन शान्त हो गया है।

केशूके पीजनका उपयोग है। अलवत्ता, वह गाँवके घरोमे नही चल सकता। इसलिए जिस तरह पुराना चरखा चल रहा है उसी तरह पुराना पीजन भी चलता रहेगा। उसमे जो सुधार किये जा सके वे जरूर किये जाने चाहिए और मैं मानता हूँ कि वे किये जा सकते है। मीरावहन इस दिशामे साधनापूर्वक अच्छा प्रयत्न कर

रही है। वह जेलमे भी धुनाईका काम कर रही है और उसने उसमे कुछ सुधार भी किये हैं। तुम इस चीजके पीछे पड़े हुए हो, यह ठीक ही है।

तुमने हम दोनोंके सूतकी परीक्षाका जो विवरण भेजा है वह बहुत सहायक सिद्ध होगा। तुम्हारी अधिकांश टीका मुझे सही मालूम हुई है। मैं अपने उन दोषोको स्वयं भी देख सका हूँ। किन्तु थकावटके कारण उनकी उपेक्षा कर देता हूँ। अक्सर देखता हूँ कि बीचमें कोई खराब पूनी आ जानेके कारण अथवा दबावके कम-बढ होनेके कारण मोटा सूत निकल रहा है। किन्तु मैं उसे तोड़ता नही, वैसा ही चला लेता हूँ। यह तो बहुत अच्छी तरह समझता हूँ कि इसके कारण बुनकर हैरान होगा और इसलिए इसमे अहिंसा-भग होती है, किन्तु काम करते समय प्रमादवश, और कुछ अशमे लोभके कारण, आलस्यके कारण या थकावटके परिणामस्वरूप इस दोषकी उपेक्षा कर जाता हूँ। किन्तु अब तुम्हारी इस टीकाके बाद मुझे आशा है कि मेरा सूत अपने-आप सुधरेगा। इसलिए यह सूत जब बुना जाये उस समय यदि तुम उसके दोषोकी टीका और भेजो तो वह मेरे लिए और इसी तरह महादेवके लिए उपयोगी ही होगी। कारण, हम दोनोकी इच्छा तो यही है कि हम दोनो यथाशक्ति महीनसे-महीन और अच्छेसे-अच्छा सूत काते। यहाँ दूसरोंके सूतसे अपने सूतकी तुलना करनेकी सुविधा तो है नही इसलिए कुछ खामियाँ तो रह ही जायेगी किन्तु हम लोग सूतको सुधारनेकी दिशामे जितनी दूरतक जाना सम्भव होगा उतनी दूरतक जानेकी अपनी कोशिश बराबर करते रहेगे।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा। मेघजी के बारेमे कुछ नही लिख रहा हूँ।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७५७) से।

५०१. पत्र : वसन्तलाल मोरारकाको

२६ अक्टूबर, १९३२

प्रार्थनामे मनकी स्थिरता अभ्याससे ही आ सकती है। प्रार्थना करनेके समय ऐसा चिन्तन करना कि जैसे शरीरके लिए अन्न आवश्यक है, उससे भी अधिक प्रार्थना आत्माके लिए आवश्यक है। ऐसा चिन्तन करके प्रार्थनामे बैठनेसे थोडे ही दिनोंमें आनन्द आ जायेगा। रामनामका विस्मरण ही सबसे बड़ा दुख है ऐसा विश्वास रखनेसे नामस्मरण स्थायी हो जायेगा। असत्य सबसे बड़ा पातक है, ऐसा विश्वास रखनेसे और असत्यसे कुछ क्षणिक लाभ मिल जाये तो उसका त्याग करनेसे सत्य सहज प्रिय हो जायेगा।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७८

५०२. पत्र : श्रीपाद दामोदर सातवलेकरको

२६ अक्टूबर, १९३२

भाईश्री सातवलेकर,

मै प्रतीक्षा कर ही रहा था। इतनेमे आपका खत मिल गया। कुछ आपत्तिका ही डर मैंने प्रकट किया था। और वही कारण आपके पत्रसे खुल जाता है।[1] हम सब आशा करते है कि आपके पुत्रको शीघ्रतासे सम्पूर्ण शक्ति आ जायेगी और वैसे ही आपको। दाँतके बारेमे मैंने बहुत देखा है कि दाँतके वैद्य लोग काफी गलतियाँ कर लेते है और दर्दीओको कष्ट भोगना पडता है। आपकी अशक्त अवस्थामे भी प० महेन्द्र मिश्रके लेखका[2] विस्तृत उत्तर दिया है इसलिए आपको धन्यवाद। पत्रको मैं सग्रहमे रखुंगा और उसका ध्यानपूर्वक मनन करूगा। सरदारजीका सस्कृत-अभ्यास भली भाति आगे चल रहा है। और जो दूसरी 'सेट'[3] आ गई उसका बहुत विद्यार्थी लाभ उठा रहे है।

आपका,
मोहनदास

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७६७) से, सौजन्य : श्री० दा० सातवलेकर

५०३. पत्र : रामनाथ 'सुमन' को

२६ अक्टूबर, १९३२

सामुदायिक प्रार्थनाकी जड़ वैयक्तिक प्रार्थना ही हो सकती है। सामुदायिक प्रार्थनापर मैंने वजन दिया है उसका यह अर्थ कभी नही है कि वह वैयक्तिक प्रार्थनासे अधिक महत्व रखती है। परन्तु क्योकि हमे सामुदायिक प्रार्थनाकी आदत ही नही है, इसलिए मैंने उस प्रार्थनाकी आवश्यकता बतानेकी चेष्टा की है। जो-कुछ अनुभव एकातमें बैठकर तुम्हे होता है, वह समूहमे होना अशक्य नही तो कठिन तो है ही, और मैंने ऐसा भी देखा है कि कई लोग एकान्तमे बैठकर प्रार्थना कर

१. सातवलेकरजी ने अपने २० अक्टूबरके पत्रमें गाधीजी को सूचित किया था कि उनके पुत्रको टाइफाइड हो गया था और उसके दाँतमें दर्द था जो दन्त-चिकित्सकके इलाजसे और भी बढ़ गया था।

२. महेन्द्र मिश्रने अपने लेखमें इस बातका दावा किया था कि वैदिक युगमें आम तौरपर माँस खाया जाता था। किन्तु सातवलेकरजी ने बहुत-से उद्धरण देते हुए उक्त दावेका खण्डन किया था।

३. पुस्तकोंका।

ही नही सकते, समुदायमे ही कर सकते है। उनके लिए वैयक्तिक प्रार्थना आवश्यक हो जाती है। मैं यह भी कबूल करूँगा कि सामुदायिक प्रार्थनाके विना मनुष्य रह सकता है, वैयक्तिकके विना कभी नही रह सकता।

अस्पृश्यताके बारेमे आज कुछ भी नही लिख सकता। थोड़े दिनोके बाद दुबारा पूछीये।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १७८

५०४. पत्र : हरिसिंह गौरको

२७ अक्टूबर, १९३२

मै यह स्वीकार करता हूँ कि आपको जैसी अन्तःप्रेरणा होती है, वैसी मुझे नही होती, क्योकि ब्राह्मणोके प्रभावके बारेमे मैं आपके विचारसे सहमत नही हूँ।[1] ब्राह्मण जहाँ निस्सन्देह बहुत-सी बातोके लिए उत्तरदायी है, वहाँ मेरा यह भी विश्वास है कि जितना अन्याय उन्होंने किया है, उससे बहुत अधिक अन्याय उनके साथ किया गया है। हर धर्मने अपने-अपने ब्राह्मण पैदा किये है। वे इस नामसे पुकारे नही गये है, इससे कोई फर्क नही पड़ता। मेरे खयालसे, हमारे ब्राह्मण अन्य धर्मोंके ब्राह्मणोकी तुलनामे अच्छे ही है। साथ ही, अज्ञान-भरे नाना प्रतिबन्धोवाली इस जाति-प्रथासे मुझे कोई लगाव नही है। वर्णाश्रममे मेरा जरूर विश्वास है। पर अन्तर्जातीय भोज और विवाहके बारेमें उसपर जो प्रतिबन्ध थोप दिये गये है, उनमे और ऊँच-नीचके विचारमे मेरा विश्वास नही है। विवेकानन्दकी तरह मेरा भी यह विश्वास है कि शकराचार्यने बौद्ध धर्मको भारतसे नही खदेड़ा, क्योकि वे स्वय प्रच्छन्न बौद्ध थे। उन्होने केवल उन बुराइयोसे उसे मुक्त किया जो उसमे घुसती जा रही थी और हिन्दू धर्मसे उसका अलगाव रोका। मेरे विचारमे, बुद्धके उपदेशका प्रभाव कही भी भारतसे अधिक स्थायी नही रहा है। फिर भी, मैं आपके इस कथनसे पूरी तरह सहमत हूँ कि हमे फिरसे पूरी तरह स्वच्छ होनेकी जरूरत है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८१

१. श्री गौरने कहा था कि शकराचार्यने ब्राह्मणोंके प्रभुत्वको हिन्दू धर्मका आधार बना दिया जिससे उसे बहुत-से आक्षेप सहने पडे, और बौद्ध धर्म हिन्दू-धर्मका विशुद्ध रूप था। उन्होंने बौद्ध धर्मपर अपनी एक पुस्तक भी साथ भेजी थी।

५०५. पत्र : तारा र० मोदीको

२७ अक्टूबर, १९३२

चि० तारा,

मुझे तेरा पत्र मिले और मै उत्तर न दूँ, ऐसा नही हो सकता। यदि तूने सीधे मुझे पत्र लिखा होगा तो वह इधर-उधर हो गया होगा। यदि आश्रमकी मार्फत लिखा होगा तो उसकी जानकारी मुझे अवश्य होती। यदि तूने मुझसे कोई विशेष प्रश्न पूछे हो तो फिर पूछ लेना। बाकी बहुत-कुछ तो मेरे लिखे अनेक पत्रो और लेखोसे मिल ही रहा होगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४१७४) से। सी० डब्ल्यू० १६७३ से भी, सौजन्य : रमणीकलाल मोदी

५०६. पत्र : वसुमती पण्डितको

२७ अक्टूबर, १९३२

चि० वसुमती,

तेरा पत्र मिला।

जो अपने प्रत्येक क्षणका हिसाब दे वह तो महात्मा हुआ, ऐसा मानना मानसिक आलस्यका चिह्न है। पश्चिममे ऐसे अनेक उद्यमी स्त्री-पुरुष है जो अपने प्रत्येक क्षणका हिसाब दे सकते है किन्तु इसलिए वे बेचारे महात्मा नही हो जाते। अत ऐसा तो महात्मा ही कर सकते है, इस बातकी आड लेकर तू प्रत्येक क्षणका हिसाब देनेके अपने कर्त्तव्यसे मुक्त नही हो सकती। यह तो एक ऐसी आदत है जो सामान्यत. हम सबको पडनी ही चाहिए। और इसके लिए किसीको बहुत श्रेय भी नही दिया जा सकता।

'सदोष स्वधर्म' मे 'सदोष' का अर्थ नीतिरहित या अनीतिमय नही है। यहाँ उसका अर्थ 'जो घटिया मालूम हो' इतना ही है। 'गीता' की दृष्टिमे तो सभी धर्म समान है। कारण, 'गीतामाता' तो मनुष्यके हृदयको परखती है इसलिए वह तो बिलकुल शुद्ध न्याय करती है। अनाजके व्यापारीको अपना धन्धा – धर्म – 'गीता' की भाषामें लिपिकके धन्धेकी तुलनामे घटिया — सदोष — मालूम हो और इसलिए यदि वह अपना धन्धा छोडकर लिपिक बनना चाहेगा तो वह कहीका नही रहेगा न? इसी तरह यदि टाइटस जो अभी गोशाला की देखरेख करता है, यह देखकर कि आजकल

तो अन्त्यज-सेवाकी हवा चल रही है, गोसेवा का काम छोड़कर अन्त्यज-सेवाके पीछे भागे तो उसके विषयमें यही कहना होगा कि उसने स्वधर्म छोड़कर 'गीता' का अनादर किया है। इसी तरह तुम सब जो अभी प्रतिज्ञा-विशेषसे बँधी हुई हो, उस प्रतिज्ञाके पालनसे भागकर यदि किसी अन्य सेवा-कार्यको अपनाओ तो तुम्हें भी स्वधर्म छोड़नेका दोष लगेगा। बात स्पष्ट हो गई न?

कोई आश्रमवासी अपना स्वास्थ्य सुधारनेके लिए आश्रमसे बाहर जाये और उसके सुधरनेपर फिर आश्रममें आ जाये, इसमें मैंने दोष नहीं माना है। ऐसी सलाह तो मैंने स्वयं कई लोगोंको दी है न? किन्तु जो लोग आश्रममें ही जीने और मरनेकी, आश्रम छोड़कर बाहर न जानेकी प्रतिज्ञा करें, जैसी कि गंगादेवीने की थी, वे निश्चय ही स्तुत्य हैं। लेकिन ऐसा तो कोई विरला ही कर सकता है और यह विचार उसके हृदयमें पैठ गया हो तभी कर सकता है। वह भले आश्रममें सेवा लेता हो तो भी वह भारी सेवा करता है क्योंकि वह अत्यन्त उच्च कोटिके धैर्यका और जीनेके प्रति उदासीनताके भावका उदाहरण पेश करता है। इसके सिवा, हमारी आकांक्षा गरीबोंका जीवन अपनानेकी है। गरीब लोग बीमार होनेपर उस बीमारीके कारण बहुत तकलीफ भोगते हुए भी न तो अपना घर छोड़ते हैं, न गाँव। वे ऐसा कर ही नहीं सकते। उनके आत्मीय उनकी जितनी सेवा कर सकें उतनी सेवासे वे सन्तुष्ट रहते हैं। किसी-किसीको तो यह सन्तोष भी नहीं मिलता। ऐसा धैर्य जो ज्ञानपूर्वक स्वेच्छासे दिखायें वे नमस्य हैं। वे हमें ऐसे धीरजका पाठ पढ़ाकर समाज-सेवा ही करते हैं। इसीलिए मैंने पुंजाभाईको यह सलाह दी थी कि "तुम आश्रममें ही, आश्रमवासियोंकी सेवा लेते हुए, अपना जीवन समाप्त करो, इसमें तुम्हारा श्रेय है और आश्रमका भी।" इसीलिए मैंने किशोरलालसे कहा था, "तुम आश्रमसे चाहे-जैसी सेवा लेते रहो; तुम्हारे-जैसोंका आश्रममें होना ही आश्रम की सेवा है।" नारणदासको लिखे अपने पत्रमें मैंने एक सिद्धान्त[1] बताया है। उसके बारेमें ज्यादा सोच-विचार न करना। इस परम धर्मका पालन करनेकी प्रेरणा जिसे होगी वह उसे प्रकट करेगा। हम तो नम्रतापूर्वक उतना ही करें जितना हम कर सकते हों।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९३३५) से। सी० डब्ल्यू० ५८१ से भी; सौजन्य: वसुमती पण्डित

१. देखिए "पत्र: नारणदास गांधीको", १५-१०-१९३२।

५०७. पत्र : शंकरराव घाटगेको

२७ अक्टूबर, १९३२

इस शरीरके नाशके साथ आत्माका नाश नही है, ऐसी प्रतीति सबको है। ऐसे ही इस शरीरके पहले भी आत्माका अस्तित्व था। यदि यह सच है तो आत्माको दुबारा देह धारण करना नही होगा, या इस देहके पहले देह धारण नही किया था ऐसा माननेका कोई कारण नही है। परन्तु आज आत्मा देहधारी है इसलिए भविष्यमें भी देहधारी होगा ऐसा मानना प्रवाह-पतित है।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८२

५०८. पत्र : अमतुस्सलामको

२७ अक्टूबर, १९३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम,

हिन्दी सीख रही है सो अच्छी बात है। इसपर लगी रहेगी तो ठीक होगा। जो काम हाथ धरा उसको अंजाम पहुंचाना। हर हफ्तामें एक दिनका फाका करनेकी मैं कोई जरूर[1] नही देखता हूँ। हां, अगर तन्दुरुस्तीके लिए फाका रखनेकी कोई जरूर[2] हो तो दूसरी बात है। मैंने कहा है वह बिलकुल ठीक समझो। नारणदास जो कहे वही दिलसे करनेमे ही तुम्हारा भला है। कुदसियाका भी खयाल छोडो। नारणदासको करना है वह करने दो। तुमको पूछे तो जो-कुछ कहना है सो कहो। डा० शर्माके हाल लिखो। उनके आश्रममें आनेका क्या हुआ? यह खत पढनेमें कुछ दिक्कत तो नही थी?

बापूकी दुआ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० २६१) से।

१ व २. जरूरत।

५०९. तार: मणिबहन पटेलको[1]

२८ अक्टूबर, १९३२

मणिवहन पटेल,
कैदी, वेलगाँव जेल

आशा करता हूँ कि दादीमाँ की मृत्युसे तू विह्वल नही हुई होगी। ऐसी मृत्युकी सब इच्छा करते है। वहुत समयसे तेरा पत्र क्यों नही आया? प्यार।

वापू

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४: मणिवहेन पटेलने, पृ० ८९

५१०. पत्र: राजकुमारी एफी एरिस्टार्शीको

२८ अक्टूबर, १९३२

मेरा स्वास्थ्य फिरसे लगभग सामान्य स्थितिपर आ गया है और मैं विना खास थकान महसूस किये अपने रोजमर्राके सब काम कर लेता हूँ। इसलिए कृपया मेरे वारेमे कोई चिन्ता न करे। भविष्यके गर्भमे क्या है, यह कोई नही जानता और उसमे झाँकनेका हमे अधिकार नही है। वर्तमानकी चिन्ता यदि हम करे तो भविष्यकी ईश्वर आप करेगा।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८४

१. मूल अंग्रेजी तार उपलब्ध नहीं है

५११. पत्र : स्कॉटलैंडके बाल-संघके मन्त्रीको

२८ अक्टूबर, १९३२

बच्चोकी शुभकामनाओको मै सदासे मूल्यवान मानता आया हूँ, क्योकि वे आम तौरपर बहुत ही मासूम होते है। क्या आप यह नही जानते कि आत्मबल नामकी ऐसी कोई चीज नही होती जिसके पीछे ईश्वर न हो? इसलिए आपने जो भेद किया है, वह गलत है। कुछ भी हो, मै तो किसी ऐसे आदमीको नही जानता जो आत्माके अस्तित्वको तो मानता हो पर ईश्वरको न मानता हो।

आपका न केवल अपने देशकी, बल्कि समस्त ससारकी शान्ति और समृद्धिके लिए प्रार्थना करनेका विचार मुझे बहुत पसन्द है। व्यक्तिगत रूपसे मेरा ऐसी देश-भक्तिमे विश्वास नही है जिसमे अपने देशके सिवा अन्य देशोका कल्याण शामिल न हो। अत. मै आपके लिए पूरी सफलताकी कामना करता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८३

५१२. पत्र : हेनरी एस० सॉल्टको[1]

२८ अक्टूबर, १९३२

आपके पत्रके लिए धन्यवाद। क्या अत्यन्त विनम्रतापूर्वक मै यह कह सकता हूँ कि भारतसे बाहर ऐसे लोग विरले ही मिलते है जो मानवेतर प्राणियोको बन्धु-प्राणी मानते हो। मानव-जाति जब इस महान् सत्यको आम तौरपर स्वीकार कर लेगी और उसका पालन करने लगेगी तो स्वर्णयुग आ जायेगा।

धन्यवाद।

आप और श्रीमती सॉल्ट मेरा अभिवादन स्वीकार करे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गां०

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० १८५७९) से।

१. अस्सी वर्षीय श्री सॉल्ट गांधीजी से नवम्बर, १९३१ में लन्दनमें मिले थे। ८ अक्टूबर, १९३२ को उन्होंने लिखा था: "लन्दनमें जब मैं आपसे मिला था तो जिस विषयपर विशेष रूपसे विचार-विमर्श हुआ वह शाकाहारवाद था। मेरा सदा यह दृढ विश्वास रहा है कि समाजवादकी तरह आहार-सुधारको भी मानव-जातिकी मुक्तिमें आवश्यक भूमिका अदा करनी है। यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि मनुष्य जबतक अपने बन्धु-प्राणियोंको ठगते या खाते रहेंगे तबतक बन्धुत्वका वास्तविक और पूर्ण बोध कैसे हो सकता है।"

५१३. पत्र : परशुराम मेहरोत्राको

२८ अक्टूबर, १९३२

चि० परसराम,

आचार्य गिडवानीके साथ जो बातचीत हुई थी, उसमे और [हरिजनोके साथ] सहभोजमे बिलकुल कोई समानता नही है। जो लोग सहभोज आदिका आयोजन करते है वे शुभ भावनावश ही वैसा करते है। इसलिए जो विद्यार्थी केवल मजेकी खातिर सहभोजोमे भाग लेते है उनकी तुलना उन लोगोसे नही हो सकती। हरिजनो की तुलना तो मजेके लालची विद्यार्थियोके साथ किसी तरह भी नही की जा सकती। क्योकि हरिजनोके लिए हम जो-कुछ करते है वह उन्हे ललचानेके लिए किया गया नही माना जा सकता। जो प्रायश्चित्त करता है वह लालच नही देता, वह तो आत्म-शुद्धि करता है। क्या यह दिनके उजालेकी भाँति स्पष्ट नही है? सहभोज उचित है या नही यह एक अलग प्रश्न है। परिस्थिति विशेषमे यह उचित और अन्य परिस्थितिमे अनुचित भी हो सकता है। अत यह तो सर्वथा उस परिस्थितिपर आधारित बात हुई।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५१०) से। सी० डब्ल्यू० ४९८७ से भी, सौजन्य परशुराम मेहरोत्रा

५१४. संदेश : आर्यसमाजको

[२९ अक्टूबर, १९३२ के पूर्व][1]

स्वामी दयानन्दजी महाराजके प्रति अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करनेका इससे अधिक कारगर उपाय मै नही सोच सकता कि प्रत्येक आर्यसमाजी सुधारकी इस लहरमे अपनी पूरी शक्ति हरिजनो (तथाकथित दलित वर्गो)की सेवामे लगा दे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ३१-१०-१९३२

१. साधन-सूत्रमें रिपोर्टपर २९ अक्टूबरकी तारीख दी गई है।

५१५. एक पत्र[1]

२९ अक्टूबर, १९३२

यदि 'हरिजन' शब्द 'अनटचेवल' (अस्पृश्य) भाइयोके लिए सदैव प्रयुक्त करना होता तो आपकी आपत्ति ठीक होती। लेकिन, जहाँ अभी उन्हे शेप हिन्दुओंसे अलग दिखाना आवश्यक है, वहाँ मुझे यह भी लगा कि उनके लिए 'अनटचेवल' या इसके देशी भाषाके पर्यायका प्रयोग करना अब उचित नही रह गया है।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८५

५१६. पत्र : आश्रमके बालक-बालिकाओंको

२९ अक्टूबर, १९३२

बालको और बालिकाओ,

तुम्हारा २० तारीखका कार्यक्रम मुझे तो बहुत सुन्दर लगा है। बालक-बालिकाओ, दोनोंका बना हुआ भोजन चखनेका तो मेरा भी बहुत मन होता है किन्तु तुम क्या सचमुच चखने दोगे? यह पत्र तुम्हे नववर्षके बाद मिलेगा। नववर्षमे तुम सब अपना स्वास्थ्य बहुत अच्छा रखो, तुम लोग सच्चे सेवक-सेविका बनो और तुम्हारा व्यवहार दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक शुद्ध होता जाये, यही मेरी कामना और आशीर्वाद है।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

१. यह पत्र किन्ही बगाली सज्जनको लिखा गया था, जिनका नाम साधन-सूत्रमें नही बताया गया है। उन्होंने कहा था कि लगता है, गांधीजी अस्पृश्योंके लिए 'हरिजन' नामको स्थायी बना रहे हैं।

५१७. पत्र : गजानन वी० खरेको

२९ अक्टूबर, १९३२

चि० गजानन,

तेरे द्वारा भेजे हुए चित्र मिले। हम लोगोमें से कोई चित्रकलाका पारखी नही है। किन्तु हम तीनोको दोनो चित्र पसन्द आये। राम-हनुमानका चित्र सबसे अधिक पसन्द आया है। सरदार सबसे अधिक खुश हुए है। एक चित्रपर तेरा नाम है और दूसरेपर "भाऊ" नाम दिया हुआ है। इसलिए यदि यह चित्र तेरा नही है तो फिर यह भाऊ कौन है? मै तो यही मानता हूँ कि दोनो चित्र तेरे ही है। क्या ये दोनो किन्ही चित्रोकी नकल है या मौलिक है? यदि और कोई बात लिखने लायक हो तो लिखना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३०९) से, सौजन्य : लक्ष्मीबहन ना० खरे

५१८. एक पत्र[1]

२९ अक्टूबर, १९३२

अगर आपका यह विश्वास हो कि शादी कभी करनी ही नही है, तो आप शादी न करे। लेकिन भीतर-ही-भीतर इच्छा हो, तो माताकी इच्छाको मान ले। वरोकी कमी है तो कन्याओको दूसरी जातियोमे ब्याहना चाहिए। जात-पांतकी पाबन्दियोका धर्मके साथ कोई सम्बन्ध नही है। यह सही है कि यह हिन्दू धर्ममे बहुत समयसे चली आ रही एक रूढि बन गई है, मगर रूढियाँ तो समय-समयपर बदलती ही रहती है। आपका पत्र बहुत स्वच्छ है, इसीलिए आपको इतना समझाकर जवाब लिखा है। नये सालमे आपकी धर्मवृत्ति बढे।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८६

१. यह पत्र सुनार-जातिके किसी आदमीको लिखा गया था।

५१९. पत्र: नारणदास गांधीको

प्रतिपदा [३० अक्टूबर][1], १९३२

चि० नारणदास,

इस वार तुम्हारा पैकेट मगलवारको मिला। यह पत्र मिलनेतक तो मोहनको विलकुल दुरुस्त हो चुकना चाहिए। वलभद्रका[2] लम्वा पत्र तुमने तो नही पढा होगा। मैंने उसे जो पत्र लिखा है उसे पढे विना उसको दे देना, क्योकि वह ऐसा ही चाहता है। वालकोकी इच्छाका हम इस तरह खयाल रखे, यह अच्छा है। इसलिए उसे वुलाकर कहना कि मैंने पत्रको पढे विना देनेको कहा है और इसलिए तुम उसी तरह उसे दे रहे हो। इससे वह खुश होगा। उसके पत्रमे दो मुद्दे थे। एक तो यह कि वह अपने बापसे वहुत डरता है और दूसरा यह कि जव उससे कोई गलती हो जाती है तो तुम और प्रेमा उसे धमकाते हुए कहते हो, "जा अपने वापके यहाँ।" यह शिकायत मुझे अतिरजित लगती है। लेकिन वह जिद्दी लडका है, और परेशान कर देनेवाला भी। इसलिए अगर उसे ऐसी धमकी दी गई हो तो इसमे आश्चर्यकी कोई वात नही। वह निरवलम्व तो है ही, और चूंकि मूर्ख भी है, इसलिए सभी उसका मजाक उड़ाते है। अपनी मूर्खताका उसे भान नही है, इसलिए वह मजाक करनेसे चिढ जाता है। ऐसे लड़के वहुत ही दयाके पात्र है। तुम उसे हँसाते हुए उससे यह सव पूछना और जो आश्वासन दिया जा सके, देना। उसके मनमें हमारी ओरसे जो सच्चा या झूठा डर हो, अगर वह चला जायेगा तो वापका डर भी ज्यादा नही रहेगा। अभी तो उसे यह डर है कि अगर आश्रमसे उसकी छुट्टी कर दी गई तो वापके पास जाना पडेगा। उसकी एक और शिकायत यह है कि पहले विद्यार्थियोको जो छूट थी, वह अव नही है। इसमे कोई सचाई होगी, ऐसा मुझे नही लगा और उसको भी मैंने वैसा ही लिख दिया है। फिर भी, अगर कुछ विचार करने लायक हो तो करना।

रतिलालका क्रोधसे भरा पत्र आया है। उसने लिखा है कि तुम उसपर वहुत नाराज हुए, उसे दुतकारा, आदि। चम्पा भी इस शिकायतमें शामिल है। चम्पाका रोष तुमपर क्यो है, यह समझ नही पाया। पैसेके वारेमे तुमने जो लिखा है, वह समझता हूँ। महावीरका पत्र आया है। उसमे उसने लिखा है कि कुछ दिनोमे वह आश्रम लौटेगा। लौटते हुए रास्तेमें मुझसे मिलते जानेकी अनुमति तुमसे मांगी है, यह भी लिखा है। मैंने तो उसे इधर आनेसे मना किया है। मेरा मुलाकात करना अभी

१. साधन-सूत्रमें २९ अक्टूबर है, लेकिन कार्तिक सुदी प्रतिपदा, ३० अक्टूबर को थी।

२. आश्रम-शालाका एक विद्यार्थी।

तो अनिश्चित ही है। यहाँ आनेका मतलब बेकार ही तीसेक रुपये खर्च करना होगा। यह कैसे खर्च किया जा सकता है?

मुझे लगता है कि नवीन जैसे हो वैसे जल्दी अलमोडा जा सके, यह वाछनीय है। बारीक सूतके बारेमे मथुरादासके पत्रमे[1] अपनी बात मैने पूरी तरह लिखी है; उसे पढना। तिलकम् जब वहाँ आया, उस समय क्या उसका स्वास्थ्य बहुत अच्छा हो गया था? इन दिनो उसकी खुराक क्या है? मुझे लगता है कि मीराबहनकी खुराक उसे पचेगी। उसका शरीर तो मासाहारसे ही गढा हुआ है। मैने अकसर देखा है कि मासाहारी लोग दालके बलपर अपना शरीर सुदृढ नही रख सकते, लेकिन दूध, रोटी, सब्जियाँ और नीबू मिले तो ये निभा सकते है। कारण यह है कि मासाहारियोको ज्यादा स्टार्च नही लेना पडता। मगर मास छोडनेपर भूख शान्त करनेके लिए वे बहुत स्टार्च लेते है और स्नायुओको दृढ़ रखनेके लिए ज्यादा दाल खाते है। यह पचता नही, और फलत वे रुग्ण हो जाते हैं। मास छोडते समय अगर दूध काफी लें तो मासकी जरूरत पूरी हो जाये, और गेहूँके चोकरदार आटेकी रोटी लें तो उससे भूख भी शान्त हो। रोटीमे रहनेवाले चोकर या भूसी और सब्जियोमें रहनेवाले रसोसे वे अपनी अँतडियोको साफ रख सकते है। यह तो एक विचार है। मीराबहनको निरामिष आहार तुरन्त रास आ गया, उसका कारण ही यह है कि उसे दाल छूने ही नही दी। उसका दृढ निश्चय तो बड़ा कारण है ही। उसने तो मेरे सम्पर्कमे आते ही यह निश्चय कर लिया था कि भले ही शरीर न रहे, पर मास तो कदापि नही खाऊँगी। लेकिन, उसका निश्चय और उसकी श्रद्धा तो असाधारण है।

स्टोवके बारेमे जमनाको तो मैने पूरा पुराण ही लिखकर भेजा है। इसे दूसरी बहने भी पढ जाये और फिर अपनी-अपनी इच्छानुसार बरते। बहने खुशी-खुशी स्टोवको छोडे तभी उन्हे लाभ मिलेगा।

जेठालालको लिखा पत्र पढना। इसलिए उस विषयपर यहाँ ज्यादा लिखनेकी जरूरत नही रह जाती। तुम्हारे प्रश्नका उत्तर उस पत्रमे आ जाता है। वहाँ आने पर पुरुषोत्तमकी तबीयत बिगडी तो नही न?

तुम देखोगे कि इस बार मैने बहुत-से पत्र बोलकर लिखवाये है। जो हालत बाये हाथकी कुहनीकी थी, वही दाये हाथकी कुहनीकी भी हो गई है। कहा जा सकता है कि इस बार मैने पत्र लिखनेमे बहुत छूट ले ली। आश्रमके पत्रोके अतिरिक्त और भी बहुत-से पत्र लिखे और रोज ही लिखता रहा। फिर प्रतिदिन ढाई घटेतक कातता भी रहा। यह परिश्रम ज्यादा सिद्ध हुआ। इसलिए दाहिने हाथको लिखनेसे जहाँतक बने आराम देनेका निश्चय किया। इससे अब वह कुछ ठीक है। यह जानकर चिन्ता करनेका तो कोई कारण ही नही है। इस उम्रमे खोई हुई चरबी और स्नायु जल्दी तो वापस आ ही नही सकते। [उपवासके] छ दिनोमें ही शरीर काफी क्षीण हो गया, ऐसा कहा जा सकता है। जैसा यह था, वैसा महीने-

१. देखिए "पत्र: मथुरादास पुरुषोत्तमको", २६-१०-१९३२।

भरमे भी नही हो सकता। यह कोई चिन्ताकी बात नही है। सामान्य काम-काज तो सब नियमित रूपसे हो ही सकते हैं, और जिन्दगी-भर तो मैं लिखता ही रहा हूँ, सो अब अगर हाथको लम्बे अरसेतक आराम दिया जाये तो इसमे बुरा क्या है? और इसमे आश्चर्य और चिन्ताकी तो कोई बात ही नही हो सकती। हाथमे किसी तरहका रोग तो हुआ ही नही है। उससे काम नही लेता हूँ तब तो उसमे कोई तकलीफ नही होती। काम लेते समय भी तकलीफ महसूस नही होती, लेकिन बादमे पता चलता है कि यहाँ दर्द हो रहा है, जो यह प्रकट करता है कि यह हिस्सा थक गया है। इसलिए एहतियातके तौरपर इस हाथको आराम दे रहा हूँ।

नये वर्षके लिए पूरे आश्रमको मेरा आशीर्वाद तो है ही। और आश्रमसे मैं क्या आशा रखता हूँ, यह तो अब कोई ऐसा बालक भी समझता और जानता है जिसमे समझनेकी थोड़ी शक्ति आ गई है। छोटे-बडे सभीमे ऐसा चरित्र-बल और सेवापरायणता आये जिससे यह आशा फलीभूत हो, यही मेरी आकाक्षा है, और ईश्वर तुम सबको ऐसी शक्ति दे, यही उससे मेरी प्रार्थना है।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१)से। सी० डब्ल्यू० ८२६२से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

५२०. पत्र : प्रेमलीला ठाकरसीको

प्रतिपदा, १९८९ [३० अक्टूबर, १९३२]

प्रिय बहन,

मैंने तुम्हे जो पत्र लिखा था, वह मिला होगा। फिर भी तुमसे दिवालीके दिन तो रहा ही नही गया। तुम्हारी भेजी प्रेमकी भेंट मिल गयी है। बर्तन वापस भिजवा दिये हैं। आशा है, अब तो तुम शान्त रहोगी। मुझे किसी चीजकी आवश्यकता होगी तो तुम्हे कष्ट देना नही भूलूंगा।

हम सबकी यह कामना और ईश्वरसे प्रार्थना है कि नववर्षमे तुम फूलो-फलो, तुम्हारी शुभ इच्छाएँ पूरी हो और तुम्हारी सेवापरायणता बढ़े।

मोहनदासके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८२६) से; सौजन्य . प्रेमलीला ठाकरसी

५२१. पत्र : शंकरको[1]

३० अक्टूबर, १९३२

आशा है, नव वर्ष[2] आपको त्यागकी और भी अधिक भावना, ध्येयके प्रति और अधिक दृढता तथा आत्मसंयमका और भी स्पष्ट बोध प्रदान करेगा।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८६

५२२. एक पत्र[3]

३० अक्टूबर, १९३२

आपने गुह्य विद्याओंके बारेमें मेरी राय पूछी है। मुझे उससे कोई लगाव नहीं है। जीवनकी पुस्तक साधारणसे-साधारण बुद्धिवालोंके लिए भी खुली हुई है, और ऐसा ही होना भी चाहिए। ईश्वरीय योजनामें गुह्य कुछ नहीं है। कुछ भी हो, रहस्य और गुह्यकी ओर मेरा कभी आकर्षण नहीं रहा। सत्यमें कुछ भी गोपनीय नहीं है और सत्य ही ईश्वर है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८८

५२३. पत्र : मोहनलाल एम० भट्टको

३० अक्टूबर, १९३२

तुम्हें सन्तोष हो, इस ढंगसे मैं अनशनके नियम तैयार कर सकूँ, ऐसा नहीं दीखता। इतना कहा जा सकता है कि इसमें पूर्ण सत्य और पूर्ण अहिंसा होनी चाहिए। अनशन अन्तःप्रेरणासे ही किया जाये, देखादेखी बिलकुल नहीं। अपने स्वार्थके लिए कभी न किया जाये, उसका उद्देश्य केवल पारमार्थिक होना चाहिए। जिस काममें किसीके प्रति द्वेषका भाव हो, उसमें अनशन हो ही नहीं सकता। मगर अन्तरात्माका

१. शायद हरिजन सेवा संघ, मद्रासके संयुक्त मन्त्री, एस० शंकर।

२. गुजराती नव वर्ष।

३. पत्र स्विट्जरलैंडकी एक अंग्रेज महिलाको लिखा गया था, जिसने गांधीजी से गुह्य विद्याओंके बारेमें उनके विचार पूछे थे।

आदेश किसे कहा जाये? क्या वह सबको हो सकता है? ये दो बड़े प्रश्न हैं। वह आदेश तो सभीको होता ही है। मगर जैसे बहरा आदमी मधुरसे-मधुर संगीत भी नही सुन सकता, वैसे ही जिसके कान इस आदेशको सुननेको खुले न हों, वह इसे नही सुन सकता। और जो संयमी नही है, उसके कान इस आदेशको सुननेको खुलते ही नही। जिसमे 'गीता' के दूसरे अध्यायमे बताये हुए स्थित-प्रज्ञके या बारहवें अध्यायमे कहे गये भक्तके या चौदहवें अध्यायमे वर्णित गुणातीतके लक्षण हों या जिसमे इन तीनोका सम्मिश्रण हो, उसीमे अन्तरात्माका आदेश सुननेकी योग्यता हो सकती है। भाई सुन्दरम् जो पूछते है,[1] वह सवाल पूछने लायक नही है। मगर जब वे पूछते ही हैं, तो मुझे कहना चाहिए कि मेरी दृष्टिसे कुल मिलाकर 'सत्यके सबसे ज्यादा नजदीक' हिन्दू धर्म है। मगर साथ ही यह कबूल करनेमे मुझे जरा भी संकोच नही होता कि हो सकता है, इसमे मैं मोहवश भूल भी कर रहा होऊँ। मगर यदि यह भूल हो, तो भी क्षम्य है और आवश्यक भी है, क्योकि इतना मोह न हो, तो मनुष्य किसी धर्मपर टिक नही सकता, और अगर उसे किसी दूसरे धर्ममें अधिक सत्य दिखाई दे, तो वह उसे स्वीकार किये बिना रह नही सकता और न रहना चाहिए। इसे ईश्वरकी माया कहिए या जिस किसी भी नामसे पुकारना हो, पुकारिए, मगर दुनियामे है ऐसा ही। लेकिन तब भी सब धर्मोंके प्रति समभाव रखना चाहिए। यानी ईसाई ईसाई-धर्मको सत्यके अधिक नजदीक माने, मुसलमान इस्लामको माने, यह बात मुझे हिन्दूकी हैसियतसे स्वीकार कर लेनी चाहिए और यह भी मान लेना चाहिए कि अपने-अपने धर्मपर दृढ रहनेके लिए यह उनके लिए जरूरी है। इस मान्यताके लिए उनके प्रति मुझे द्वेष भी न होना चाहिए। मुझे यह भी न मानना चाहिए कि उनका यह खयाल गलत है। मैं आशा रखता हूँ कि भाई सुन्दरम्को और तुम सबको यह बात स्पष्ट हो गई होगी। हो सकता है कि सभी धर्मोंके प्रति समभावका मेरा यह विचार मौलिक हो। औरोने भी इस ढंगसे सोचा हो, तो वह मुझे मालूम नही। मेरे लिए तो यह मौलिक ही है और ऐसा विचार रखते हुए मैंने आनन्द-रसका पान किया है। इस विचारके कारण मैं हिन्दू धर्मपर दृढ रहकर भी दूसरे धर्मोंको पूज सकता हूँ और उनमे जो-कुछ अच्छा हो वह निस्संकोच ले सकता हूँ। इस शोधकी उत्पत्ति अहिंसासे हुई है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८६-७

१. सुन्दरम्ने पूछा था कि कौन-सा धर्म सत्यके सबसे अधिक निकट है। उसका जवाब गांधीजी ने इसी पत्रमें दे दिया था।

५२४. पत्र : गुलाबको

३० अक्टूबर, १९३२

चि० गुलाब,

तुझे अपनी लिखावट सुधारनी चाहिए। तू लिखता है कि तेरा वजन १६९ पौंड है किन्तु यह तो गलत है। फिरसे सही वजन लिख। यदि मेहनत करेगा तो पीजना आ जायेगा।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७२८) से।

५२५. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

३० अक्टूबर, १९३२

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। कृष्ण नायरके बारेमें तूने जो-कुछ लिखा है, वह ठीक है। रम्भाके साथ उसके जानेसे पहले क्या उससे तेरी कोई बात हुई? वह उसकी होशियारीका दुरुपयोग करता है। इससे उसे बचा लिया जाये तो अच्छा हो।

तेरे पास लडकियोका अच्छा जमघट हो गया दीखता है। ईश्वर तुझे उन सबको सँभालने, अर्थात् उन्हे प्रेमसे शुद्ध करने और शुद्ध रखनेकी शक्ति दे।

लीलावतीकी सँभाल रखना। वह दु:खी लड़की है।

गोदका पाक तुझे खाना हो तो खाकर देख लेना। मुझे तो डर है कि उसे तू पचा भी नही सकती। तुझे जरूरत तेल-मालिश और कटिस्नानकी है। साथ ही पीठकी भी मालिश करवानी चाहिए।

पुराने वर्षके साथ ही तूने अपना क्रोध भी दफना दिया हो तो कितना अच्छा हो।

आश्रमके रुपयेके बारेमें समाधान न हो तो उसकी चिन्तामें न पड़। कभी अपने-आप समाधान हो जायेगा। अन्तमें किसी दिन आश्रमका प्रबन्ध हाथमें लेगी तब तो होगा ही।

फूलोंके पौधोंके साथ मेरी तरफसे बात करना, आश्वासन देना। उनसे कहना कि अपने-जैसा सौन्दर्य, अपनी-जैसी सुगन्ध, अपनी-जैसी एकनिष्ठता, अपनी-जैसी दृढ़ता,

अपनी-जैसी नम्रता, अपनी-जैसी समता और सरलता हमें प्रदान करो और अपनी मित्रता सिद्ध करो।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०८) से। सी० डब्ल्यू० ६७४७ से भी, सौजन्य: प्रेमाबहन कटक

५२६. पत्र : कुलकर्णीको[1]

३० अक्टूबर, १९३२

विद्याका अर्थ ज्ञान और अविद्याका अर्थ कर्म है। सभूति और असभूतिका अर्थ भी इससे मिलता-जुलता ही है। इसलिए असभूतिका अर्थ हुआ शरीर और सभूतिका अर्थ हुआ आत्मा। यह सिर्फ मेरे सन्तोषके लिए है और 'ईशोपनिषद्'का ऐसा अर्थ मुझे सरल और सन्तोषजनक प्रतीत हुआ है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८८

५२७. पत्र : नर्मदाबहन राणाको

३० अक्टूबर, १९३२

चि० नर्मदा,

तुझे एक भी पत्रका उत्तर नही मिला, ऐसा नही हो सकता। पत्र इधर-उधर तो हो ही नही सकता। तेरी लिखावट कुछ सुधरी है। अक्षर जरा बडे और धीरे-धीरे लिख। धीरे-धीरे तू बहुत-कुछ सीख जायेगी। तूने सप्ताहमे क्या-क्या किया यह तुझे अपने पत्रमें लिखना चाहिए। सयुक्ताक्षरोको ध्यानसे देख लेना चाहिए।

क्या तुझे शम्भुभाईके पत्र मिलते है? घरसे कोई पत्र लिखता है?

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७६५) से, सौजन्य: रामनारायण एन० पाठक

१. कुलकर्णीने गांधीजी से 'विद्या' और 'अविद्या', 'संभूति' और 'असभूति'का अर्थ पूछा था। ये चारों शब्द ईशोपनिषद्के ११ वें और १२ वें मन्त्रोंमें आये हैं। मन्त्र इस प्रकार हैं:

विद्यान्चाविद्यान्च यस्तद्वेदोभय सह। अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।

अन्धं तम: प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते। ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्या रता.॥

५२८. पत्र : सुलोचनाको

३० अक्टूबर, १९३२

चि० सुलोचना,

तेरी लिखावट तो अच्छी होती है, किन्तु पत्रमें तू कुछ लिखती ही नहीं। हफ्ते-भरमें तूने क्या किया यह तो लिख ही सकती है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७४२) से।

५२९. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको

३० अक्टूबर, १९३२

तेरे सामने अभी तो सारा जीवन पड़ा हुआ है। तेरी सभी शुभेच्छाएँ पूरी हों और सेवा करनेकी तेरी सभी आकांक्षाएँ सफल हों। सत्य और अहिंसाका तू सच्चा प्रतिनिधि बन।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८८

५३०. एक पत्र

३० अक्टूबर, १९३२

संस्थाओंमें एकसूत्रता नहीं होती, उसका कारण अनुदारता है और यह भी कि संचालकमें शून्यता — सम्पूर्ण नम्रता नहीं होती। जहाँ संचालक संयमी होगा सामान्यतः वहाँ अड़चनें नहीं आयेंगी। लेकिन, इससे हम इतना तो देख ही सकते हैं कि संस्थामें जितना अधिक संयम होगा, उसमें उतना ही अधिक ऐक्य होना सम्भव है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२. पृ० १८८

५३१. तार: मणिबहन पटेलको

३१ अक्टूबर, १९३२

मणिबहन पटेल
कैदी, बेलगाँव जेल

दादीमाँ ने बुधवारकी दोपहरको करमसदमें चार घटेकी बीमारीके बाद शान्तिपूर्वक शरीर छोडा। आशा करता हूँ कि शुक्रवारको उसका विवरण देते हुए जो पत्र लिखा है वह तुझे दिया गया होगा। हम सब सानन्द है। प्यार।[1]

बापू

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४: मणिबहेन पटेलने, पृ० ८९

५३२. पत्र: एम० जी० भण्डारीको

३१ अक्टूबर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

कर्नल डॉयलको लिखे गये इसी २४ तारीखके अपने पत्रमे मैने जो राहत माँगी थी, वह सरकारने अभीतक नही दी है और यदि वह आज नही दी गई तो उस पत्रमे मैने जिस उत्तरोत्तर बढनेवाले असहयोगका सकेत दिया था, वह कलसे शुरू हो जायेगा।

जैसा कि उस पत्रमे कह दिया गया है, मै उसका आरम्भ जो विशेष भोजन मुझे दिया जाता है, उसे अस्वीकार करके करूँगा। इसलिए क्या आप कलसे बकरीका दूध बन्द करवानेकी कृपा करेगे? इसके अलावा, मै अभी केवल नीबू और सब्जियाँ सरदार वल्लभभाई पटेलके राशनमे से लेता हूँ और कभी-कभी चोकर-मिले आटेकी थोड़ी रोटी श्रीयुत महादेव देसाईके राशनमें से लेता हूँ। सरदार वल्लभभाई नीबू और सब्जियाँ मँगाते है और मैंने उनसे मेरा हिस्सा न मँगानेको कह दिया है। इसके बदलेमे मै फिलहाल, यदि मुझे दी गई तो 'सी' वर्गके राशनमें से सुबह काँजी[2] और दोपहरको व तीसरे पहर भाखरी[3] लूँगा। 'सी' वर्गके राशनमें से मै और कोई

१. मूल अंग्रेजी तार उपलब्ध नही है।

२. एक प्रकारका पतला दलिया।

३. पानी लगाकर हाथसे बनाई जानेवाली रोटी।

चीज नही ले सकता। नमक, सोडा और पानीके अलावा, मै चौबीस घटेमे केवल पाँच चीजे ही ले सकता हूँ। 'सी' वर्गके कैदियोको आम तौरपर जो सब्जियाँ और दाल दी जाती है, उनमे तीन-चारसे अधिक चीजे होती है। इसलिए मै उन्हे नही ले सकता। 'सी' वर्गके विशिष्ट कैदियोके लिए विशेष रूपसे तैयार की गई कोई भी चीज लेनेका मेरा इरादा नही है।[1]

अस्पृश्यताके बारेमे बहुत-सारे पत्र इकट्ठे हो गये है, जिनमे से कुछ बहुत महत्त्व-पूर्ण है, और उनका प्रकाशनके खयालसे जवाब देना जरूरी है। इसलिए मेरे विचारसे सरकारका यह कर्त्तव्य है कि वह या तो इस विषयपर सरकारके साथ मेरा पत्र-व्यवहार प्रकाशित कर दे या किसी भी दूसरे तरीकेसे, जो सरकारको पसन्द हो, लोगोको मेरी प्रार्थना और उसे स्वीकार न करनेके अपने निश्चयसे अवगत कर दे।

यह बतानेकी जरूरत नही कि मैने इस पत्र-व्यवहारकी कोई भी बात प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपसे बाहर न जाने देनेकी पूरी-पूरी सावधानी बरती है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८५५) से। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८०० (४०) (४), भाग १ पृ० २४५ से भी

५३३. पत्र: एस० जी० भण्डारीको

३१ अक्टूबर, १९३२

मै नही चाहता कि मुझे पेचिश हो, पर यदि होती है तो वह मुझे भोगनी चाहिए। लेकिन उसका जरा-सा भी लक्षण दिखते ही मै भोजन बिलकुल बन्द कर दूंगा। असहयोगको उत्तरोत्तर बढना है। मैने यह मार्ग इसलिए अपनाया है कि सर-कारको यथासम्भव कमसे-कम असुविधा हो। यह नही हो सकता कि मै जीवित रहूँ और अस्पृश्यता-निवारणके लिए काम न करूँ। लेकिन अगर सरकार यह चाहती है कि अस्पृश्यता-निवारणके लिए काम करनेके लिए जीनेकी अपेक्षा मै मर जाऊँ, तो मै क्या कर सकता हूँ!

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १८९। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८०० (४०) (४), भाग १, पृ० २४९ भी

१. महादेव देसाईका कहना है कि यह पत्र मिलनेपर मेजर भण्डारी गांधीजी से मिले थे और उन्होंने गांधीजी को उनके निश्चयसे रोकनेकी कोशिश की थी और कहा था कि जिस भोजनके वे अभ्यस्त हैं, वह यदि उन्होंने नही लिया तो वे दुर्बल हो जायेंगे और उन्हें पेचिश भी हो सकती है। गांधीजी के उत्तरके लिए देखिए अगला शीर्षक।

५३४. पत्र: सी० के० नम्बियारको[1]

३१ अक्टूबर, १९३२

प्रिय नम्बियार,

आपका पत्र आद्योपान्त पढ गया। मेरा खयाल है, आपके मनमें नाहक ही इतनी शका है और इसीलिए आपका निर्णय ऐसा कठोर है। अखवारी प्रचारका महत्त्व तो है, लेकिन ठोस परिणाम तो चुपचाप लगातार ठोस कार्य करते जानेमे ही प्राप्त किये जा सकते हैं। जो लोग इस चीजको महसूस करते है, उन्हे अखवारोमे अपने कार्यका उल्लेख न होनेपर दु.ख नही होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १४८) से।

५३५. एक पत्र[2]

३१ अक्टूबर, १९३२

आशा है, तुम फिर कभी झूठ न वोलने और चोरी न करनेका अपना वादा पूरा करोगी। दूसरे यदि तुम्हे धोखा दे या तुम्हारी चीजे चुराये तो यह तो तुम्हे अच्छा नही लगेगा। इसलिए तुम यह आशा मत रखो कि तुम्हारा दूसरोको धोखा देना या उनकी चीजे चुराना उन्हे अच्छा लगेगा।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ १९१

१. प्रापकका नाम जी० एन० रजिस्टरमे दिया गया है।

२. यह पत्र एक छोटी लड़कीको लिखा गया था, जिसका नाम साधन-सूत्रमें नहीं दिया गया है।

५३६. पत्र : हरजीवन कोटकको[1]

३१ अक्टूबर, १९३२

अपना खानगी जीवन भी उसके[2] सामने खोलकर रख देना आपका धर्म है। आप यह तो मानते है न कि खानगी जीवनकी अशुद्धि भी काममे खलल डालती है? आप यह विचार न करे कि जिनका जीवन गन्दा होता है, ऐसे लोग तो व्यापार वगैरहमे सफलता प्राप्त कर पाते है। उनकी सफलता-असफलताका निर्णय हमे नही करना चाहिए। हम व्यक्तिगत, सार्वजनिक या व्यापारी जीवनमे भेद नही करते। हमारी सभी प्रवृत्तियाँ आत्मशुद्धिके लिए होती है। इसलिए हमारी अशुद्धि हमारे मार्गमे पग-पगपर बाधक होगी।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १९०

५३७. पत्र : कृष्णचन्द्रको

३१ अक्टूबर, १९३२

भाई कृष्णचन्द्र,

तुम्हारा खत मिला। प्रारब्धको कौन जान सकता है? ज्योतिर्षी लोग जो कहते है वह कोई देववचन नही है। ज्योतिषी लोगोका सुनना नही चाहिए। जो शास्त्र प्रारब्धकी बात सुनाता है वही ब्रह्मचर्यकी आज्ञा करता है। इसलिये प्रारब्ध कुछ भी हो पुरुषार्थ हमारा कर्त्तव्य है। मैंने १५ वाँ अध्यायके[3] बारेमे लिखा था वह मेरी गलती थी। कहना चाहिये था अ० ८–११ श्लोक। १८ वे अध्यायमे 'दैव' शब्दमे प्रारब्ध समाविष्ट है। चरखा तो अकेले भी चल सकता है। इस बारेमे साहित्य काफी है। रिचर्ड ग्रेगकी पुस्तक[4] और पुणताबेकर और बर्दाचारीकी पुस्तक[5] दोनो पढने लायक है। बम्बई नवजीवन कार्यालय, प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई न० २ के पतेसे लिखनेसे मिलेगा। ब्रह्मचर्य व्रतमे मेरे आशीर्वाद है ही।

मोहनदासके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (एस० जी० ४१) से।

१. श्रीनगर खादी-केन्द्रके प्रबन्धक।
२. शकरलाल बैकर।
३. देखिए "पत्र : कृष्णचन्द्रको", १०-१०-१९३२।
४. इकनॉमिक्स ऑफ खद्दर।
५. हैंड-स्पिनिंग एण्ड हैंड-वीविंग।

५३८. एक पत्र

३१ अक्टूबर, १९३२

दरदी[1] अपने दर्दके कारण मौन लेते है। कोई वक्ता अपने कण्ठको आराम देनेके कारण मौन लेते है। कोई अन्तर्मुख होनेके कारण मौन लेते है। तीनोको अपने हेतुके अनुकूल लाभ मिल सकता है, जो अन्तर्मुख होनेके कारण मौन लेगे वे सामान्यतया उस रोज एकान्तमे रहेगे, उपवास करेगे या अल्पाहार करेगे। आवश्यक होनेपर अन्तर्मुखता बढानेवाले ग्रन्थोका मनन करेगे। येन केन प्रकारेण मौन लेनेका कम ही लाभ हो सकता है, और हानि होनेका सम्भव रहता है। सत्यार्थीकी प्रत्येक प्रवृत्तिका स्पष्ट हेतु रहता है।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १९१

५३९. एक पत्र

३१ अक्टूबर, १९३२

'गीता'का मध्यबिन्दु क्या है उसका निश्चय कर लेना। पीछे प्रत्येक श्लोकका अर्थ जो अपने जीवनमे उपयोगी है उसको आचारमे रखना। यह सबसे बडी टीका है। और यही 'गीता'का सच्चा अभ्यास है। 'गीता'का मध्यविन्दु अनासक्ति ही है, उसमे थोडा-सा भी शक नही होना चाहिए। दूसरे किसी कारणसे 'गीता' नही लिखी गई, उसमे मुझे कुछ भी शका नही है। और मैं तो यह अनुभवसे जानता हूँ कि बगैर अनासक्तिके न मनुष्य सत्यका पालन कर सकता है, न अहिसाका। अनासक्त होना कठिन है, इसमे सन्देह नही है। लेकिन उसमे आश्चर्य क्या है? सत्यनारायणकादर्शन करनेमे परिश्रम तो होना ही चाहिए और बगैर अनासक्तिके यह दर्शन अशक्य है।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १९१-२

१. बीमार।

५४०. सन्देश : बेगम अली इमामको

[१ नवम्बर, १९३२ या उसके पूर्व][1]

अपनी इस क्षतिपर, जो मेरी भी क्षति है, आप मेरी हार्दिक सवेदना स्वीकार करे। आपके पति[2] मेरे सबसे पुराने मित्रोमे से थे।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, २-११-१९३२

५४१. पत्र : पद्मजा नायडूको

१ नवम्बर, १९३२

मेरी प्यारी खेलकी साथिन और अनिच्छुक गुलाम,

गुलामोका हाकिम होते हुए भी, मै चाहता हूँ कि तू खुशीसे गुलाम बने। इसी-लिए तेरी यह इच्छा कि मै उदारता दिखाते हुए तुझे बायें हाथसे पत्र लिखूँ, गुलाम की तरह पूरी कर रहा हूँ। तुझ-जैसी साथिनोने अपने निजी अनुभवसे जबतक यह खोज नही कर ली कि मै गुलामोका हाकिम हूँ तबतक यह बात मेरे खयालमे कभी आई ही नही थी। मै तो यही सोचता था कि वे अपनी खुशीसे ही जुएमे जुते है। पर मै देख रहा हूँ कि तेरा अभिमान इस बातको साफ-साफ स्वीकार करनेमे बाधा बना हुआ है। मै नही चाहता कि तेरे अभिमानको तोडनेवाली घटनाएँ और हो। . . .[3]

मुझे जो पुस्तके तूने भेजी है, उनको पढनेमें मै तेरे बताये हुए क्रमपर ही चलूँगा। अपने गुरुओकी सख्या मैं तेजीसे बढाता जा रहा हूँ। पहली थी रेहाना, फिर जोहराकी नियुक्ति हुई, और अब इस सम्मानकी उम्मीदवार तू है। तो इस पत्रको तू नियुक्ति-पत्र ही समझ। पर इस सम्मानकी रक्षाके लिए तुझे बीमार और बिस्तरपर पडी न रहकर अच्छा होना होगा।

[अग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १९४

१. रिपोर्टपर १ नवम्बर, १९३२ की तारीख दी गई है।
२. अक्टूबरके अन्तिम दिनोंमें सर अली इमामका निधन हो गया था। एक समय वे कलकत्ता उच्च न्यायालयके न्यायाधीश और मुस्लिम लीगके प्रमुख नेता थे।
३. साधन-सूत्रमें कुछ अंश छोड़ दिया गया है।

५४२. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

१ नवम्बर, १९३२

चि० शान्तिकुमार,

आज तुम्हारी बहुत याद आ रही है। बहुत दिनोसे तुम्हारा कोई पत्र नही मिला।

सितम्बरके अन्तिम सप्ताहमे भी कोई पत्र नही मिला।

तुम सब कैसे हो? माँजी कैसी है? गोकीबहन[1] कैसी है? तुम निश्चिन्त तो हो गये न?

नववर्षकी मगलकामनाएँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७९८)से; सौजन्य . शान्तिकुमार मोरारजी

५४३. पत्र : होमी पेस्तनजीको

१ नवम्बर, १९३२

आपकी भेजी हुई पुस्तकें मिल गईं। उपासनी महाराजसे मैं मिला हूँ। मुझपर उनका बहुत खराब असर पडा है और मैंने उनके लेखोमे गदगी पाई है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १९३

५४४. एक पत्र

१ नवम्बर, १९३२

उपवास करना या न करना मेरे हाथमें नहीं है। ईश्वरने जो तय कर रखा होगा, वही होगा।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १९४

१. शान्तिकुमार मोरारजीकी बूआ।

५४५. तार: भारत सरकारके गृह-सचिवको

सुबहके ७ बजे, २ नवम्बर, १९३२

सेवामे
गृह-सचिव
भारत सरकार
नई दिल्ली

आपका सन्देश मुझे कल रात दस बजे दिया गया। पिछली चौबीस तारीखका मेरा पत्र सरकारके पास इकत्तीस तारीखको पहुँचा, इससे मुझे दुख और आश्चर्य हुआ — सो उतना इसलिए नही कि मेरे पत्रमे जिस भावी उपवासका सकेत था उससे एक कैदीके जीवनका सम्बन्ध था, जितना इसलिए कि वह उपवास ऐसे विषयसे सम्बन्धित था जिसपर तुरन्त कार्रवाई करना आवश्यक है और जो सरकार द्वारा स्वीकृत यरवडा समझौतेका सीधा परिणाम है। फिर भी इस दुर्भाग्यपूर्ण विलम्ब को ध्यानमे रखते हुए और आपके सन्देशमें निहित आश्वासन और सुझावका खयाल करते हुए मैंने अपने आहार-सम्बन्धी प्रतिबन्धको जो कल से शुरू किया था[1], स्थगित कर दिया है। मुझे विश्वास है कि यरवडा सदर जेलके अधीक्षक को गत मास इकत्तीस तारीखको लिखा मेरा पत्र आपके पास भेज दिया गया होगा। जब वे उस पत्रके फलितार्थोको समझनेके लिए मेरे पास आये तब मैंने उनसे कहा कि अगर इस महीनेकी एक तारीखसे लेकर चार दिनके अन्दर मेरी शिकायतें दूर नही की गईं तो मुझे जो कदम उठाने पड सकते हैं उनमे से एक यह भी हो सकता है कि मैं भोजन करना बिलकुल त्याग दूं। इस बातका उल्लेख मैं सरकारको, इस विषयमे मेरी भावना कितनी तीव्र है, इसका कुछ आभास देनके लिए कर रहा हूँ। अस्पृश्यताके सम्बन्धम प्राय रोज ही मुझे सुधारको और प्रतिक्रियावादियोके पत्र मिल रहे हैं। उनपर तुरन्त ध्यान देना और प्रकाशनके उद्देश्यसे उनके उत्तर देना आवश्यक है। यह ऐसा विषय है जिसमे करोडो लोगोके मानसको शिक्षित करनेका सवाल है, इसलिए इससे ऐसे खानगी पत्र-व्यवहार द्वारा नही निबटा जा सकता जिसके प्रकाशनपर प्रतिबन्ध लगा हुआ हो। मेरे पास हालमे ही स्थापित अखिल भार-

१. १ नवम्बरसे गांधीजी ने 'सी' श्रेणीके कैदियोंको दिया जानेवाला खाना खाना शुरू कर दिया था; देखिए अगला शीर्षक।

तीय अस्पृश्यता-विरोधी सघके पत्र और तार आये है, जिनमे कामके तरीकेके बारेमे तुरन्त मार्गदर्शन करने और सलाह देनेकी माँग की गई है। कालिकटसे मुझे एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पत्र मिला है जिसका उत्तर तुरन्त भेजना आवश्यक है। अस्पृश्य मित्रोने जल्दी ही मुलाकात का समय देनेका अनुरोध किया है। सरकार इस सबसे अवगत है और यह भी जानती है कि अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनमें मेरा जीवन दाँवपर लगा हुआ है। इसलिए यदि इस मामलेमे मुझे वे पूरी और प्रतिबधरहित सुविधाएँ जिनकी प्रार्थना मैंने अपने पत्रमे की है, नही दी जाती तो अपना जीवन उत्सर्ग कर देनेकी मेरी तैयारी और इच्छा के औचित्यको सरकार समझेगी। एक असह्य और आत्माका हनन करनेवाली स्थितिसे सम्मानपूर्वक निस्तार पानेका किसी कैदीके पास कोई और रास्ता नही है।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रेक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं० ८००(४०) (४), भाग १, पृ० २७७। जी० एन० ३८६६ से भी

५४६. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

२ नवम्बर १९३२

अत्यावश्यक

प्रिय मेजर भण्डारी,

गत रात मुझे आपके द्वारा भारत सरकारका जो सन्देश मिला था उसका उत्तर[1] साथमे नत्थी कर रहा हूँ। आपसे अनुरोध है कि यह एक्सप्रेस तारसे भेजा जाये। इस तारसे आप देखेंगे कि मैंने अपने भोजनपर प्रतिबन्ध स्थगित कर दिया है और जो भोजन बराबर करता था, वही किया है। यदि सम्भव हो तो भारत सरकारको भेजे जानेवाले इस तारके लिए जेलके महानिरीक्षकके कार्यालयके खुलनेकी प्रतीक्षा न की जाये।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रेक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल न० ८०० (४०) (४), भाग १, पृ० २६७। जी० एन० ३८६५ भी

१. देखिए पिछला शीर्षक।

५४७. पत्र : सनफील्ड स्कूलकी प्रबन्ध समितिको

२ नवम्बर १९३२

आधिभौतिक और आध्यात्मिक विषयोके बारेमे आप जो कहते है, उसमें अधिकांशसे मै सहमत हो सकता हूँ। जड़तत्त्व आत्मतत्त्व के बिना मृत है और आत्मतत्त्व जड़तत्त्वके बिना गतिशील नही हो सकता। जबतक हम उस 'तत्'को नही, बल्कि इस 'नानात्व'को ही देखते है, तबतक तो दोनोंको एक-दूसरेकी मददकी जरूरत है ही। लेकिन इस अत्यन्त सुन्दर विषयके सम्बन्धमे मुझे ज्यादा चर्चा करनेका लोभ सवरण करना चाहिए।[1]

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० १९७

५४८. पत्र : जमनालाल बजाजको

२ नवम्बर १९३२

चि० जमनालाल

तुम्हारे कानके बारेमे डरानेवाली खबर पाकर आज तार किया है। आशा है, वह मिला होगा। जवाबकी राह हम देख रहे हैं। तुम्हारा विस्तृत पत्र भी आना चाहिए। डॉ० मोदीसे खबर तो मँगाई है। तुम्हारी खुराकमें थोडा-बहुत हेरफेर सुझाता हूँ। केलेकी कोई जरूरत नही। पपीतेकी भी अभी कोई जरूरत नही देखता। अभी तुम्हे अपनी खुराकमे से दाल निकाल देनी चाहिए और अंगूर, सन्तरा अथवा मोसम्बी बढ़ा देनी चाहिए। दूध अधिक लिया जा सके तो अच्छा होगा। बहुत दिनोसे तुम्हारा पत्र नही आया। तबीयतका ठीक विवरण लिखना।

मणिलाल कैसे है? दूसरे साथियोके बारेमें भी लिखना। हमारी गाडी चल रही है। मणिलाल, सुशीला, तारा[2], सुरेन्द्र[3] और सीता कल आये थे। सुशीला अब ठीक हो गई है। उसे कुछ दिन डोसीबाईके अस्पतालमे रहना पड़ा था, यह तो मालूम ही होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९०२) से।

१. साधन-सूत्रके अनुसार इस पत्रमें "मेरी मित्र और बेटी एस्थर मेनन" का भी जिक्र था।
२. सुशीलाकी बहन।
३. सुशीलाका भाई।

५४९. पत्र : भीखीबहनको

२ नवम्बर, १९३२

चि० भीखीबहन,

तुमने पत्र लिखकर अच्छा किया। और यदि लिखना-पढना आश्रममें ही सीखा हो तो यह माना जायेगा कि तुमने अच्छी प्रगति की और ऐसा ही होना भी चाहिए। यदि और थोड़ी सावधानी रखो तो तुम्हारी लिखावट और अच्छी हो जायेगी तथा गुजराती और भी सुधर जायेगी।

अब जब मुझे पत्र लिखो तो अपने बारेमें कुछ अधिक जानकारी देना। तुम किस गाँवकी हो? तुम्हारे माता-पिता जीवित हैं क्या? पति क्या करते हैं?

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७४३) से।

५५०. पत्र : केशव गांधीको

२ नवम्बर, १९३२

चि० केशू,

तेरा पत्र मिला। लकीरे खीची, सो तो ठीक किया। किन्तु ये लकीरे रूलकी मददसे खीचनी चाहिए और यदि तू धीरे-धीरे लिखे तो लकीरे खीचे बिना भी सीधा लिखा जा सकता है। ईश्वर अपने भक्तोका पथ-प्रदर्शन करता है। जो व्यक्ति ईश्वरका नामतक नही लेता और उसका स्मरण नही करता, उसके बारेमे यह कैसे कहा जा सकता है कि वह उसका भी पथ-प्रदर्शन करता है? हम सब कुछ विशेष सस्कार लेकर जन्म लेते हैं और उन सस्कारोके अनुसार अपनी बुद्धिका प्रयोग करते हैं। इन संस्कारोको धो डालनेकी शक्ति ईश्वरने सबको दी है। जो उस शक्तिका उपयोग करता है वह उन्हे मिटा सकता है। तेरी गुजराती बहुत कच्ची है। उसे धीरे-धीरे सुधारना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३२८३) से।

५५१. पत्र : नारणदास गांधीको

२ नवम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

भाऊका उपवास अब तो पूरा हो गया होगा। इसके पहुँचनेपर तुम या भाऊ मुझे एक पोस्टकार्ड हर रोज लिख दिया करो, यह जरूरी है। उपवासके दौरान वह एनीमा तो लेता ही रहा होगा। उस बीच जो भी हुआ, उसका सारा हाल विस्तार-पूर्वक लिखे। मुझे याद है कि उपवास पूरा हो जानेपर वह क्या करे, यह मैं उसे लिख चुका हूँ।

तुम्हारी डाक कल मिली। मणिलाल, सुशीला, तारा, सुरेन्द्र और सीता मुझसे मिल गये हैं।

बापू

[पुनश्च :]

कुसुमके बारेमें जल्दी विचार कर लेना। उसकी खबर भी मुझे लौटती डाकसे देना। नीचेका नुस्खा बा के लिए है। वह साबरमती जेलमें यह दवा लेती थी। तुम देखोगे कि इसमें दो चीजें हैं — एक खानेके लिए और दूसरी लगानेके लिए।

एटोफेन — एक टिकियाका चूर्ण बनाकर उसे तीन हिस्सोंमें बाँट ले। एक-एक हिस्सा दिनमें तीन बार ले। जहाँ दर्द हो वहाँ बेलाडोना प्लास्टर लगाये।[1]

जुगतरामका इलाज चल रहा हो तो उसे अभी इस नुस्खेके मुताबिक दवा लेनेकी जरूरत नहीं है।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२६३ से भी; सौजन्य : नारणदास गांधी

१. यह अंश अंग्रेजीमें है।

५५२. पत्र : गुलाबको

२ नवम्बर, १९३२

चि० गुलाब,

तेरा पत्र मिला। तूने अबतक मुझे यह नही लिखा कि तेरी कताईमें क्या गति है। अब यादसे लिखना।

तुझे पत्र लिखनेका ढग सीख लेना चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७२९) से।

५५३. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

२ नवम्बर, १९३२

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र और मेरा पोस्टकार्ड रास्तेमे टकराये लगते है। तुम्हारी अच्छी कसौटी हो रही है। और मै तो मानता हूँ कि तुम इस कसौटीपर खरे उतरोगे।

माँजी से मेरे प्रणाम कहना। उन्हे शान्ति है न?

सुमतिको मेरा आशीर्वाद।

हम तीनो जन अच्छी तरह है और तुम्हे याद कर लेते है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७९९) से, सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

५५४. पत्र : भाऊ पानसेको

२ नवम्बर, १९३२

चि० भाऊ

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। फिलहाल तो मैं इतना ही लिख रहा हूँ कि उपवास छोड़नेके बाद क्या करना चाहिए। मुझे कुछ ऐसा खयाल है कि इस बारेमें मैंने लिखा है।[1] दो-तीन दिन फल या साग-सब्जी लेनी चाहिए। उसके बाद रोटी और फिर दूध। मुझे नियमित रूपसे प्रतिदिन लिखते रहना। यह प्रयोग सफल होना ही चाहिए।

शेष फिर।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७४०) से। सी० डब्ल्यू० ४४८३ से भी; सौजन्य : भाऊ पानसे

५५५. पत्र : प्रबोधकुमार तथा अन्य लोगोंको

२ नवम्बर, १९३२

चि० प्रबोधकुमार, भूपेन्द्रकुमार और नरेन्द्रकुमार,

तुम सबके नाम बहुत छोटे लगते हैं अतः इन्हें बड़ा बनानेका कोई उपाय खोज निकालो। कुम्हार कभी खराब हाँड़ियाँ नहीं बनाता। अच्छी हाँड़ियाँ उतरनेतक वह उस मिट्टीको मिट्टीमें मिलाता रहता है। इसी प्रकार जबतक प्रबोधकी लिखावट न सुधर जाये तबतक पत्र लिखना ही नहीं चाहिए। पहले तो उसे सीधी रेखाएँ, त्रिकोण, वृत्त आदि बनाना सीखना चाहिए। सरदार, महादेवभाई और मैं, तीनों आनन्दपूर्वक हैं। तुम सब बड़े होओ और अच्छे बनो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० १२१५२)से।

१. देखिए "पत्र: भाऊ पानसेको", २३-१०-१९३२।

५५६. पत्र : पद्माको

२ नवम्बर, १९३२

चि० पद्मा,

मैंने तो तुझे रगीन कागजके टुकडेपर ही पत्र लिखा था, इसमें कोई सन्देह नही है। किन्तु तू चश्मा लगाती है, इसलिए रग न पहचान सके तो मै क्या करूँ? इस वार तू रग पहचान पाती है या नही, लिखना। फिलहाल तुझे न तो तकली छूनी चाहिए और न मगनचरखा या सामान्य चरखा छूना चाहिए। अभी तो तुझे अपना वजन बढ़ाना और अपने स्वास्थ्यको सुन्दर बनाना है। हिसाव-किताव रखना भली-भाँति सीख लेना। गाँठ मिटनी ही चाहिए। तू लिखती है कि माँ 'गीता' पढाती हैं। क्या वे अन्वय करना भी बताती है? क्या सरोजिनीदेवीका 'गीता'का ज्ञान इतना गहरा है? क्या वे सस्कृत जानती हैं? वे कभी पत्र क्यो नही लिखती?

सात्विक प्रेम और विश्वप्रेममे कोई वहुत अन्तर नही है। और विश्वप्रेमका तूने जो अनासक्ति अर्थ समझा है, वह विलकुल ठीक है।

मुझे पत्र लिखती रहना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१४०) से। सी० डब्ल्यू० ३४९२ से भी; सौजन्य : प्रभुदास गाधी

५५७. पत्र : सुलोचनाको

२ नवम्बर, १९३२

चि० सुलोचना,

तेरा पत्र मिला। यदि तेरी पूनियाँ अच्छी हो तो तू और भी वारीक सूत कात सकती है। प्रेमाबहनसे प्रश्न पूछनेमे सकोच होना ही नही चाहिए। यदि तू शिक्षिकासे नही पूछेगी तो फिर किससे पूछेगी? अत· अवश्य पूछना और वह जो उत्तर दे वह मुझे लिखना। यदि अव भी पूछनेमें संकोच हो तो अपने प्रश्न प्रेमाबहनको लिखकर दे देना।

वापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७४४)से।

५५८. पत्र : मदनमोहन चतुर्वेदीको

२ नवम्बर, १९३२

भाई मदनमोहन,

नारणदास पर तुम्हारा खत था। मैंने यह पढ लिया है। डाक्टर मोदी क्या कहते हैं वह मुझको तारसे लिख भेजो।[1] और उन्हींको कहो मुझको पूरे हाल लिखे। मुझको हाल लिखते रहो। सुना है कि बालकोबाकी[2] तबीयत अच्छी नही हुई है। बोलते हुए भी परिश्रम लगता है। बालकोबासे कहो मुझे लिखे, जानकीबहनसे भी यही कहो। हम सब अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०९०) से।

५५९. पत्र : तुलसी मेहरको

२ नवम्बर, १९३२

चि० तुलसी महेर,

बहुत महिनोंके बाद तुम्हारा खत मिला। देखकर हम सब खुश हुए। इस वक्त तुम्हारे कामका कुछ वर्णन नहीं दिया है। ऐसा क्यों? अब लिखो। सुरेन्द्र, रामदास इत्यादि यहीं है। कोई-कोई वख्त उनको मिलनेका होता है। सब अच्छे हैं।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६५४०) से।

१. उन दिनों जमनालाल बजाज डॉ० मोदीसे अपने कानका इलाज करवा रहे थे, देखिए "पत्र : जमनालाल बजाजको", २-११-१९३२।

२. बालकृष्ण, विनोबा भावेके छोटे भाई।

५६०. पत्र : मीराबहनको

३ नवम्बर, १९३२

चि० मीरा,

तुम्हारा पत्र मुझे कल ही तीसरे पहर मिला। अभी सुबहके सवा पाँच बजे है। हम प्रार्थना कर चुके है, और मैने शहद, गर्म पानी और चुटकी-भर सोडा लिया है। उसके बाद हम तीन जनोने मेरे लिए फल तैयार किये, यानी, दो मोसम्बियाँ महादेवने छीली, दो सन्तरे मैने छीले, और एक अनारका रस सरदारने निकाला। मैने रसमे एक चुटकी नमक छोड दिया और मोसम्बियो और सन्तरोका गूदा रसमे डाल दिया। वे दोनो तब सैरके लिए चले गये और मैने वह सलाद खाया। तबतक सवा पाँच बज गये और मैने यह पत्र लिखना शुरू किया। परिवर्तनके लिए और दाये हाथको आराम देनेके लिए मै बाये हाथसे लिख रहा हूँ।

फलोके सलादके बारेमे मैने तुम्हे अपनी खोजके सम्बन्धमे बतानेके लिए लिखा है। मैने देखा है कि फलोसे अधिकसे-अधिक लाभ उठाना हो तो उन्हे किसी चीजके साथ नही, बल्कि अकेले और खाली पेट खाना चाहिए। एक तरहसे यह भी कहा जा सकता है कि जो नियम प्रारम्भिक दवाओपर लागू होता है, वही रसदार फलोपर भी लागू होता है। वस्तुत जो-कुछ भी खाना चाहिए, दवाकी तरह खाना चाहिए। सस्कृतमे भोजन और दवाके लिए समान शब्द औषध है। किसन तुम्हे यह बात और भी विस्तारसे समझा सकेगी। दवा स्वादमे खराब हो, यह जरूरी नही है; और न ही वह जबानके स्वादके लिए खाई जाती है। भोजनके प्रति भी बिलकुल यही रुख होना चाहिए, अर्थात् उपयुक्त भोजन, उपयुक्त अनुपातमे, उपयुक्त ढगसे और उपयुक्त समयपर किया जाये। यहाँ मैने सुबहकी सैर के लिए लिखना बन्द कर दिया था और अब पौने सात बजे फिर शुरू कर रहा हूँ।

पैगम्बर मुहम्मदके जीवनपर बहुत-सी पुस्तके है। उनमे पहला स्थान अमीर अलीकी 'स्पिरिट ऑफ इस्लाम' को देना चाहिए। फिर वाशिंग्टन इर्विंगकी 'मुहम्मद ऐण्ड हिज सक्सेसर्स' बडी अच्छी रचना है। कार्लाइलकी 'मुहम्मद ऐज हीरो' भी पठनीय है।

मुझे खुशी है कि किसन तुम्हारे साथ है। उसे तुमसे और तुम्हे उससे अधिक-से-अधिक लाभ मिलना चाहिए। उसके पत्रके उत्तरमे मैने जो पत्र लिखा था, पता नही, वह उसे मिला भी है या नही। मैने वह उसीके दिये पतेपर भेजा था। वह उसे मिला हो या नही, पर उससे कह देना कि जल्दी हो या न हो, पर कभी भी बुरी लिखावटमे न लिखे। इस मामलेमे मेरा जो दुर्भाग्य रहा है, उससे हर एकको

सीख लेनी चाहिए। बुरी लिखावट और हर बुरी चीज असलमें हिंसा है। जेल-जीवनमें हमें धैर्यका गुण सीखनेका दुर्लभ अवसर मिल रहा है।

ईसा और मुहम्मदकी तुम्हारी तुलना मेरे खयालसे आकर्षक है और आंशिक रूपमें सही भी है। तुमने यह कहावत सुनी होगी कि तुलनाएँ अप्रिय होती हैं। मेरी रायमें सभी क्रान्तिकारी सुधारक होते हैं और सभी सुधारक क्रान्तिकारी। वे दोनों महान् शिक्षक थे और प्रत्येक अपने युग और उनकी आवश्यकताओंका उत्तर था। दोनोंने मानव-जातिकी प्रगतिमें अनुपम योग दिया। दोनोंका विश्व-देवताओंमें समान स्थान है। तुमने जो अपनेको आश्रमवासिनी बताया है, वह बिलकुल दुरुस्त है। इस तरह तुम ईसाको अस्वीकार नहीं करतीं। मात्र यह घोषित करती हो कि तुम आश्रमवासिनी हो और आश्रमवासी किसी भी धर्म-गुरुको अस्वीकार नहीं करता। विभिन्न धर्म-गुरुओंकी व्याख्याओंसे हमें कोई ज्यादा वास्ता नहीं है। प्रत्येकने अपने ढंगसे व्याख्या की है।

अमीर अलीकी पुस्तक मैं रजिस्ट्रीसे भेज रहा हूँ। जब तुम इसे समाप्त कर लो तो डाकसे रेहानाको भेज देना। यह पुस्तक तैयबजी-परिवारकी है।

तुम्हें और किसनको हम सबका प्यार।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४८) से; सौजन्य: मीराबहन

५६१. तार: भारत सरकारके गृह-सचिवको

३ नवम्बर, १९३२

भारत सरकारके गृह-सचिव
नई दिल्ली

यरवडा मन्दर जेलके अधीक्षकने मेरे पत्रों और उनमें अस्पृश्यताकी समस्याके सम्बन्धमें की गई [मेरी] प्रार्थनापर भारत सरकारका निर्णय[1] मेरे पास अभी-अभी पहुँचाया है। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि जितनी सुविधाओंकी मैंने आशा की थी और जितनी कि अपेक्षा की जा

१. यह निर्णय बम्बई सरकारके नाम भेजे २ नवम्बरके उस तारमें सूचित किया गया था जिसमें अन्य बातोंके साथ-साथ यह कहा गया था: "श्री गांधीके १८ और २४ अक्तूबरके पत्रोंमें व्यक्त किये गये विचारोंको दृष्टिमें रखते हुए भारत सरकार यह स्वीकार करती है कि अस्पृश्यता-निवारणके सिलसिलेमें उन्होंने अपने लिए जो कार्यक्रम बनाया है और जिसका महत्त्व उसने पहले पूरी तरह नहीं समझा था, उसे वे पूरा कर सकें, इसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें ऐसे मामलोंपर, जो केवल अस्पृश्यता-निवारणतक ही सीमित हों, लोगोंसे मिलने और पत्र-व्यवहार करनेकी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। वह यह भी स्वीकार करती है कि इस मामलेमें गांधीकी प्रवृत्तियाँ पूरी तरह कारगर हो सकें, इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रचारपर कोई प्रतिबन्ध न हो। अस्पृश्यताकी समस्यासे सम्बन्धित श्री गांधीकी कोशिशोंमें क्योंकि सरकार कोई बाधा नहीं डालना चाहती है, इसलिए वह ऐसे मामलोंके बारेमें जिनका

सकती थी, वे सब यह निर्णय मुझे दे देता है। मैंने यह वचन दिया है कि इन मुलाकातो और इस पत्र-व्यवहारका सविनय अवज्ञा और अस्पृश्यता-निवारणसे वाहरके विषयोसे कोई सम्बन्ध नही होगा। मैं यह मानता हूँ कि सरकारने वहुत ही शोभनीय ढगसे मुझपर यह विश्वास किया है कि मैं इस वचनके शब्दो और भावका पूर्णतया पालन करूँगा। इस विश्वासका कभी भी दुरुपयोग नही किया जायेगा।

गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट एक्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८०० (४०) (४), भाग १, पृ० २८९। जी० एन० ३८६७ भी

५६२. पत्र : यू० गोपाल मेननको

३ नवम्बर, १९३२

प्रिय गोपाल मेनन,

आपका पत्र मिलनेकी सूचना मैं अबतक नही दे सका। जैसे ही मेरे लिए यह सम्भव हुआ पहला काम मैंने आपको तार भेजनेका किया। आशा है, वह आपको यथासमय मिल गया होगा। आपने विस्तारसे सब बाते लिखी, इसकी मुझे खुशी है। इससे, हमारे सामने कैसी कठिनाइयाँ है, मैं इसका कुछ अन्दाजा कर सका हूँ। पर यह आन्दोलन ईश्वरके नामपर शुरू किया गया है। वही हमारा मार्ग-दर्शक है और मुझे यकीन है कि यदि हम उसमे आस्था न छोडेंगे तो वह हमारे मार्गकी सभी कठिनाइयाँ दूर कर देगा और यदि हम सेवाकी भावनासे काम करना चाहते है तो हम उन लोगोके प्रति भी, जो सुधारोका विरोध करते है, अनुदार नही होगे और न हमे जमोरिनके प्रति ही अनुदार होना चाहिए। आखिर उनकी जो कठिनाइयाँ है वे हमे मालूम नही है। इसलिए हमे अपने-आपको उनकी स्थितिमे रखकर परिस्थितिको उनके दृष्टिकोणसे भी देखना चाहिए। मैंने सदा यही पाया है कि यह तरीका ऐसा है जिससे हम अपने लक्ष्यतक जल्दीसे-जल्दी पहुँच सकते है। एक क्षणके लिए भी हमे अपने लक्ष्यसे अपना ध्यान नही हटाना है, पर

श्री गांधीके अपने ही शब्दोंमें 'सविनय अवज्ञासे कोई सम्बन्ध नहीं है और जो केवल अस्पृश्यता-निवारण-तक ही सीमित है', मुलाकातियों, पत्र-व्यवहार और प्रचार परसे सभी प्रतिबन्ध हटा रही है। श्री गांधीने यह विचार रखा है कि यदि सरकार किसी समय वांछनीय समझे तो, मुलाकातोंके समय अधिकारी उपस्थित रह सकते हैं और पत्र-व्यवहारकी तत्काल वहीं जाँच की जा सकती है। सरकारने उनके इस विचारपर गौर किया है।" भारत सरकार, होम डिपार्टमेंट, पॉलिटिकल, फाइल न० ३१/९५/३२

उसकी ओर बढ़ते हुए हमे उन लोगोके बारेमे, जो हमसे सहमत नही है, फतवा भी नही देना चाहिए। जैसा कि आप बिलकुल ठीक कहते है, अपने दलित बन्धुओको जुएसे मुक्त करानेकी कोशिशमे आखिर हमे अपना बलिदान ही तो देना है। इसलिए, चाहे कुछ भी हो, जो सुधारके पक्षमे है, उन्हे अहिंसक शब्दके पूरे अर्थोंमे बिलकुल अहिसक बने रहना चाहिए। आप पडित मालवीयजी को अपने यहाँ बुलानेके लिए उत्सुक है। यदि वे वहाँ जा सके तो निस्सन्देह शक्तिका स्रोत सिद्ध होगे। परन्तु उनका जीवन तो समर्पित जीवन है। इसलिए उनकी बहुत माँग है। वे वृद्ध हो गये है, शरीर उनका दुर्बल है, यद्यपि मन सदाकी तरह ओजस्वी है। मै जानता हूँ कि यदि वे समय निकाल सके तो अवश्य जायेगे। परन्तु यदि उन्हे दक्षिणकी लम्बी यात्रासे बचाया जा सके, तो यह केरलके कार्यकर्त्ताओके लिए गौरवकी बात होगी। फिर भी, यदि आप उनकी उपस्थिति अनिवार्य समझते हो, तो अपनी प्रार्थना पर जोर दे, मै भी निश्चय ही उन्हे लिखूंगा।

आपका यह विचार मुझे पसन्द आया कि उत्तरसे एक बहनको भेजना चाहिए, ताकि २ जनवरीके निर्णायक दिनसे पहले ये जो कुछ-एक मूल्यवान सप्ताह हमारे पास है, उनके दौरान वह वहाँ काम कर सके। इस सिलसिलेमे मैने प्रयत्न शुरू कर दिया है और आशा है, मै आपको यह बता सकूंगा कि किसीका जाना सम्भव है या नही।

केलप्पनका क्या हाल है, कृपया मुझे बताये। उन्होने मुझे कोई पत्र क्यो नही लिखा है? [1]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० १८६०२) से।

५६३. पत्र : मगनभाई देसाईको

३ नवम्बर, १९३२

मेरा यह अनुभव उत्तरोत्तर दृढ होता जा रहा है कि जैसे-जैसे ईश्वरपर आस्था बढती है, वैसे-वैसे कर्त्तव्य-कर्ममे रस बढता जाता है, कार्य-कुशलता बढती जाती है, सावधानी बढती जाती है और उसीके साथ निश्चिन्तता और धीरज बढता जाता है।

मेरी श्रद्धा असीम है, इसलिए मै यह मानता हूँ कि छोटा-बडा सब-कुछ ईश्वर ही कराता है। वह यह किस तरह कराता होगा, यह मै नही जानता। मगर जिसने अपना तन, मन और धन यानी सर्वस्व उसे सौप दिया है, वह यदि ऐसा मानता हो कि वह खुद कुछ कर रहा है, तो कहा जायेगा कि वह चोर हो गया है। मै तो कभी बेहोशीमे ऐसा मानकर पाप नही कमाना चाहूँगा कि एक भी काम मै स्वय

१. साधन-सूत्रमें इस पत्रपर हस्ताक्षर नहीं है।

करता हूँ, अगर मैं बेहोशीमें ऐसा मान लेता होऊँ कि यह काम तो मैंने किया अथवा यदि साधारण वार्तालापमें विनोदके लिए या दूसरोंसे अलग न दिखनेके खयालसे ऐसा कहता होऊँ तो यह मेरी मूर्खता है। सच तो यह है कि दिन-दिन शून्यता बढ़ती जाती है इसीलिए जब यह गर्व मनमें आ जाता है कि मैं कुछ कर रहा हूं, तब दुःख होता है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २०१

५६४. पत्र : परमानन्द देसाईको

[३] नवम्बर, [१९३२][1]

चि० परमानन्द,[2]

तेरा पत्र मिला। तू और माँ वहाँ अच्छे पहुँचे। अब यदि स्थिर होकर आश्रममें ही रहो तो कितना अच्छा हो। तू क्या पढ़ता है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती की फोटो-नकल (एस० एन० ९४८३) से।

५६५. पत्र : हेमप्रभा दासगुप्तको

३ नवम्बर, १९३२

चि० हेमप्रभा,

तुम्हारा खत मिला है। हरिजन भाइओंके हाल देखकर तुम्हारे हृदय उपर जो चोट हुई है उसे मैं समज सकता हु। गभराहटकी कोई आवश्यकता नहीं है। जितने सेवक-सेविका मिले उतनेसे ही बस्तीओंकी सुधारणा करनेका प्रयत्न करो। हरिजन भाइयोंको मिलो। अंतमें हम यथाशक्ति प्रयत्न ही कर सकते हैं। फल देनेवाले तो ईश्वर ही है। चिंता-मात्र छोड़ो। चिंता करनेकी 'गीता' माताकी मनाई है। अरुणके प्रत्युत्तरकी प्रतीक्षा करता हूं।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १६९२) से।

१. एस० एन० रजिस्टरसे।
२. महादेव देसाईका सौतेला भाई।

५६६. पत्र : अली हसनको[1]

[४ नवम्बर, १९३२ के पूर्व][2]

पत्रके लिए धन्यवाद। आपने मेरा वह वक्तव्य अवश्य देखा होगा, जिसमें मैंने हिन्दू-मुस्लिम-सिख एकताके लिए अपील की है। यहाँसे मैं इससे ज्यादा नही कर सकता। काम तो उन्हीको करना है, जो जेलसे बाहर है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ७-११-१९३२

५६७. पत्र : सोहनलाल शर्माको

[४ नवम्बर, १९३२ या उसके पश्चात्][3]

भाई सोहनलाल शर्मा,

तुम्हारा खत मिला। सिर्फ बोर्ड हटानेसे क्या फायदा होगा। हम चाहते है हरिजन भाइओका मदिर-प्रवेश। मगनीरामजी यदि इसमे समत न होगे तो ठहर जाओ। जब लोकमत बहुत जागृत हो जायेगा तो यह मदिर भी खुल जायगा। दरम्यान विनय करते रहो। मदिर-दर्शनके लिये जानेवालोका अभिप्राय क्या है, इसकी खोज करो। यह काम शातिसे हि हो सकता है। घनश्यामदासजी से मिलो।

मोहनदास गांधी

सोहनलाल शर्मा
प्रधान, हिन्दू सभा
पुष्कर वाया अजमेर
(बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवे)

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २८२७) से।

१. बिहार और उडीसाके मुस्लिम संघके मन्त्री।
२. साधन-सूत्रमें रिपोर्टपर ४ नवम्बरकी तिथि दी गई है।
३. डाककी मुहर ४ नवम्बरकी है।

५६८. वक्तव्य : अस्पृश्यतापर[1]–१

४ नवम्बर, १९३२

उपवास तोडनेके बाद अस्पृश्यताके प्रश्नपर चर्चा करनेका मेरा पूरा इरादा था। पर कुछ ऐसे कारणोसे, जिनपर मेरा वश नही था, मैं वैसा नही कर सका। सरकारने अब मुझे इस कार्यके सिलसिलेमे खुला प्रचार करनेकी इजाजत दे दी है। इसलिए, मै उन बहुत-सारे पत्र-लेखकोको उत्तर दे सकता हूँ जो यरवडा-समझौतेकी आलोचना करते रहे है, या मुझसे पथ-प्रदर्शन चाहते रहे है, या अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनके दौरान उठनेवाले विभिन्न प्रश्नोपर मेरे विचार जानना चाहते रहे है। इस प्रारम्भिक वक्तव्यमे मै केवल मुख्य प्रश्नोके ही उत्तर देना चाहता हूँ, और अन्य प्रश्नोको, जिनका समाधान तत्काल आवश्यक नही है, अभी छोडना चाहता हूँ।

पहले मैं पुन उपवास करनेकी सम्भावनाके प्रश्नको लेता हूँ। कुछ पत्र-लेखको का कहना है कि उपवाससे दबाव डालनेके तरीकेकी गन्ध आती है, और इसलिए मुझे उपवास नही करना चाहिए था और अब दोबारा तो किसी भी हालतमे नहीं करना चाहिए। कुछ दूसरे लोगोने यह दलील दी है कि हिन्दू धर्ममे, या किसी भी धर्ममे, मेरे उपवासकी तरहके उपवासका कोई औचित्य नही माना गया है। यहाँ मैं इसके धार्मिक पक्षकी चर्चा नही करना चाहता हूँ। केवल इतना कहना ही काफी है कि पिछला उपवास मैंने ईश्वरकी प्रेरणासे आरम्भ किया था, और वह यदि कभी फिर आरम्भ किया गया तो ईश्वरकी प्रेरणासे ही आरम्भ किया जायेगा। लेकिन पहले-पहल जब उसका सकल्प लिया गया तो उसका उद्देश्य, निस्सन्देह, अस्पृश्यताको जड-मूलसे मिटाना था। जो रूप उसने ले लिया, उसमें मेरा कोई हाथ नही था। मन्त्रिमण्डलके फैसलेके कारण मेरे जीवनका वह नाजुक प्रसग एकाएक ही सामने आ गया। पर मैं यह जानता था कि ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलके फैसलेका रद्द किया जाना ध्येयकी पूर्ति नही, बल्कि उसका आरम्भ-मात्र होगा। ऐसी जबरदस्त शक्तिको केवल एक राजनीतिक निर्णयको बदलवानेके लिए गतिशील करना वाछनीय नही हो सकता था। उसके प्रयोगका औचित्य तो तभी था जब उसके पीछे कोई अधिक गहरा अर्थ, जिसका बोध भले ही उस शक्तिके प्रवर्त्तकको भी नही हो, छिपा हुआ हो। जिन लोगोका उससे सम्बन्ध था, उन्होने सहज ही वह अर्थ समझ लिया और अनुकूल प्रतिक्रिया दिखाई।

जीवित लोगोकी स्मृतिमे मेरी तरह शायद किसीने भी इतनी बार भारतके एक छोरसे दूसरे छोरतक की यात्रा नही की होगी, न कोई इतने-सारे गाँवोमें गया

१. सरकारने जब अस्पृश्यता-विरोधी कार्यके सिलसिलेमें गांधीजी परसे मुलाकातों और प्रचार-कार्य-सम्बन्धी प्रतिबन्ध हटा लिये, तो गांधीजी ने समाचार-पत्रोंको कुछ वक्तव्य दिये। यह उनमें से पहला है।

होगा, और न लाखो-करोड़ो लोगोके सम्पर्कमे आया होगा। वे सब मेरे जीवनसे परिचित है। वे यह जान गये है कि मैंने 'अस्पृश्य' और 'स्पृश्य'के बीच या सवर्ण और अवर्णके बीच कोई भेद नही माना है। उन्होने प्राय मुझे खुद उन्हीकी भाषामे तीव्रतम शब्दोमें अस्पृश्यताकी निन्दा करते, उसे हिन्दू धर्मका अभिशाप और कलक बताते सुना है। भारतके सभी भागोमे हुई उन सैकड़ों सार्वजनिक सभाओ या व्यक्तिगत मुलाकातो और गोष्ठियोमे दो-चार अपवादोको छोड़कर और कही भी अस्पृश्यताके विरुद्ध दी गई मेरी दलीलोका विरोध नही किया गया। जन-समुदायोने अस्पृश्यताकी निन्दा करते हुए और उसे अपने बीचसे मिटानेकी प्रतिज्ञा करते हुए प्रस्ताव पास किये है। असख्य अवसरोपर उन्होने ईश्वरको साक्षी मानकर प्रतिज्ञा की है और उससे यह प्रार्थना की है कि वह उन्हे अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेकी शक्ति दे। मेरा उपवास इन्ही करोडों लोगोके विरुद्ध आरम्भ किया गया था और उनके स्वत स्फूर्त प्रेमने ही पाँच दिनके अन्दर-अन्दर परिवर्तन कर दिखाया और यरवडा-समझौता सम्पन्न करा दिया। वह समझौता यदि उन लोगो द्वारा पूरी तरह अमलमे नही लाया गया तो उपवास उन्हीके विरुद्ध फिर आरम्भ किया जायेगा। सरकार तो अब इस झगड़ेसे लगभग बाहर निकल चुकी है। जो-कुछ उसको करना चाहिए था, उसे तो उसने तुरन्त पूरा कर दिया। यरवडा-समझौतेके प्रस्तावोका मुख्य भाग उन करोडो लोगो, पूर्वोक्त सभाओमे जमा होनेवाले तथाकथित सवर्ण हिन्दुओको पूरा करना है। उन्ही लोगोको दलित भाइयो और बहनोको अपने सगे भाई-बहनोकी तरह गले लगाना है, उन्हे अपने मन्दिरो, अपने घरो, अपने स्कूलोमे बुलाना है। गाँवोमें 'अस्पृश्यो'मे यह एहसास पैदा करना है कि उनकी बेडियाँ कट गई है, वे अपने बन्धु-ग्रामवासियोसे किसी भी तरह कम नही है। जिस ईश्वरको अन्य ग्रामवासी पूजते है वे भी उसीके उपासक है और जिन अधिकारो तथा सुविधाओका उपभोग अन्य ग्रामवासी करते है, वे भी उनके अधिकारी है।

लेकिन समझौतेकी इन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शर्तोको यदि सवर्ण हिन्दुओने पूरा नही किया, तो क्या मै ईश्वरको और मनुष्यको मुँह दिखानेके लिए जिन्दा रह सकूँगा? मैंने तो डॉ० अम्बेडकर, रावबहादुर राजा और दलित वर्गके अन्य मित्रोसे यहाँतक कहनेकी हिम्मत की थी कि सवर्ण हिन्दुओ द्वारा समझौतेकी शर्तोके पालनके लिए वे मेरी जिन्दगीको जमानत मान सकते है। उपवास यदि हुआ तो उन लोगोपर दबाव डालनेके लिए नही होगा जो सुधारके विरोधी है, बल्कि उन लोगोको सचेत और सक्रिय करनेके लिए होगा जो मेरे साथी रहे है या जो अस्पृश्यता-निवारणकी प्रतिज्ञा ले चुके है। यदि वे अपनी प्रतिज्ञाओका पालन नही करते है, या यदि उनका कभी उनके पालनका इरादा ही नही था, और उनका हिन्दू धर्म केवल एक छद्मावरण था, तो जिन्दा रहनेमे मेरी कोई रुचि नही रहेगी। इसलिए सुधारके विरोधियोपर मेरे उपवासका कोई असर नही पड़ना चाहिए। और यदि मेरे साथी कार्यकर्त्ता और वे करोडो लोग भी, जिन्होने मुझमे यह विश्वास पैदा किया था कि अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनमें वे मेरे और काग्रेसके साथ है, पुन सोच-विचारके बाद इस निष्कर्षपर

पहुँचे है कि अस्पृश्यता ईश्वर और मानव-जातिके विरुद्ध कोई अपराध नही है, तो मेरे उपवासका उनपर भी कोई असर नही पडना चाहिए।

मेरे विचारसे, अपनी और औरोकी शुचिताके लिए उपवास युगो पुरानी एक रीति है और जबतक मनुष्यकी ईश्वरमे आस्था है, यह कायम रहेगी। यह आर्त्त हृदयकी सर्वशक्तिमान् प्रभुके प्रति प्रार्थना है। लेकिन मेरा तर्क समझदारीका हो या मूर्खताका, जबतक मुझे अपनी स्थिति मूर्खतापूर्ण या गलत नही लगती, मुझे उससे डिगाया नही जा सकता। अगर फिर उपवास आरम्भ करना पडा तो वह तभी करूँगा जब अन्तरात्माका आदेश होगा और यरवडा-समझौतेकी शर्तोके पालनमे सवर्ण हिन्दुओकी अक्षम्य उपेक्षाके कारण वह समझौता साफ-साफ टूटता हुआ नजर आयेगा। इस तरहकी उपेक्षाका अर्थ हिन्दू धर्मके साथ विश्वासघात होगा। उसका साक्षी बननेके लिए जिन्दा रहनेकी मेरी इच्छा नही है।

एक और उपवासकी बहुत-कुछ सम्भावना है और वह केरलके गुरुवायूर मन्दिर को खुलवानेके सिलसिलेमें होगा। मेरी साग्रह प्रार्थनापर ही श्री केलप्पनने अपना उपवास, जिसने उन्हे लगभग मृत्युके मुँहतक पहुँचा दिया था, तीन महीनेके लिए स्थगित किया था। यदि वह मन्दिर अगली एक जनवरीको या उससे पहले 'अस्पृश्यो' के लिए बिलकुल उसी तरह नही खोला गया जिस तरह वह 'स्पृश्यो' के लिए खुला हुआ है और यदि श्री केलप्पनके लिए अपना उपवास फिर शुरू करना जरूरी हो गया, तो मै उनके साथ उपवास करनेको वचनबद्ध हूँ। इन सम्भावित उपवासोकी मुझे कुछ विस्तारसे चर्चा इसलिए करनी पडी कि दो-तीन स्थानोसे मुझे बडे उत्तेजना-भरे पत्र मिले है। परन्तु साथी कार्यकर्त्ताओको इस सम्भावनासे आकुल नही होना चाहिए। जिस सम्भावनाका मनुष्य सामना न करना चाहता हो, उसके बारेमे घबरा जानेका परिणाम अकसर उसका सचमुच घटित हो जाना होता है। उसे टालनेका सबसे अच्छा तरीका यह है कि सभी सम्बन्धित व्यक्ति अपनी पूरी शक्ति उस कार्यमे लगा दे, जिससे वह घटना असम्भव हो जाये।

पत्र-लेखकोने पूछा है कि अन्तर्जातीय भोज और अन्तर्जातीय विवाह क्या अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनके अग है। मेरी रायमे नही है। उनका सम्बन्ध जितना अवर्णोसे है, उतना ही सवर्णोसे भी है। इसलिए अस्पृश्यता-विरोधी पुरुप या महिला-कार्यकर्त्ता अन्तर्जातीय भोज और अन्तर्जातीय विवाह-सम्बन्धी सुधारमे लगनेको बाध्य नही है। व्यक्तिगत रूपसे मेरा यह खयाल है कि यह सुधार, हमे इसके जब आनेकी आशा है, उससे भी पहले ही आनेवाला है। अन्तर्जातीय भोज और अन्तर्जातीय विवाह पर जो प्रतिबन्ध है, वे हिन्दू धर्मका अग नही है। वे एक सामाजिक प्रथा है, जो हिन्दू धर्ममे शायद उसके पतन-कालमे घुस गई थी, और तब उनका उद्देश्य शायद हिन्दू समाजको विघटनसे अस्थायी सुरक्षा देना था। परन्तु उनपर जोर रहनेसे जन-मानसका ध्यान उन मूल तत्त्वोसे हट गया जो जीवनके विकासके लिए अत्यावश्यक है। इसलिए, जहाँ-कही लोग ऐसे समारोहोमें, जिनमे 'स्पृश्य' और 'अस्पृश्य', हिन्दू और गैरहिन्दू सहभोजके लिए आमन्त्रित किये गये हो, स्वेच्छासे भाग लेते है,

वहाँ मैं उन्हे एक शुभ लक्षण मानकर उनका स्वागत करता हूँ। परन्तु मै स्वप्नमे भी यह नही चाहूँगा कि यह सुधार, अपने-आपमे वह चाहे जितना वाछनीय हो, दीर्घ कालसे आवश्यक इस अखिल भारतीय सुधारका अग बनाया जाये।

अस्पृश्यता, जिस रूपमे हम सब उसे जानते है, एक जहरीला कीड़ा है, जो हिन्दू धर्मकी जड़ोंको खा रहा है। भोजन और विवाह-सम्बन्धी प्रतिबन्ध हिन्दू समाजके विकासमे बाधक है। मेरे खयालसे यह भेद मौलिक है। इस तूफानी आन्दोलनमें मुख्य सवालपर हदसे ज्यादा बोझ डालकर उसे जोखिममे डालना समझदारी नही होगी। जन-साधारणको अस्पृश्यता-निवारणका एक रूप-विशेष समझाया गया है। अब अचानक यदि उससे उसे भिन्न रूपमे देखनेको कहा जाता है, तो यह उसके साथ विश्वास-,घात-जैसी बात भी हो सकती है। इसलिए जहाँ लोग खुद अन्तर्जातीय भोजके लिए तैयार हो वहाँ तो उसे चलाया जा सकता है, पर उसे भारतव्यापी आन्दोलनका अंग नही बनाया जाना चाहिए।

अपनेको सनातनी कहनेवाले लोगोने भी मुझे कुछ पत्र भेजे है। इनमे से कुछ पत्र तो काफी रोष-भरे है। उनके विचारसे अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका सार है। उनमें से कुछ ऐसा मानते है कि मैंने अपने धर्मका त्याग कर दिया है, और कुछ यह समझते है कि अस्पृश्यता-विरोधी और इसी तरहकी अन्य धारणाएँ मैंने ईसाई धर्म और इस्लामसे ली हैं। कुछने अस्पृश्यताके समर्थनमे शास्त्रोके उद्धरण भी दिये है। उन्हे मैंने इस वक्तव्यके द्वारा उत्तर देनेका वचन दिया है। अत. मै उन पत्र-लेखकोको यह बताना चाहूँगा कि मैं खुद भी सनातनी होनेका दावा करता हूँ। जाहिर है कि सनातनीकी उनकी व्याख्या मेरी व्याख्यासे भिन्न है। मेरे विचारसे सनातन धर्म वह जीवन्त धर्म है जो हमे पीढी-दर-पीढी, बल्कि प्रागैतिहासिक कालसे ही विरासतमे मिला है और जो वेदो और उनके बादके धर्म-ग्रन्थोंपर आधारित है। मेरे विचारसे वेद ईश्वर और हिन्दू धर्मकी तरह ही अव्याख्येय हैं। छपे हुए चार ग्रन्थोको ही वेद कहना अर्धसत्य होगा। ये ग्रन्थ अज्ञात ऋषियोंके प्रवचनोके केवल अवशेष है। बादके ऋषियोने इन मूल निधियोमे अपने ज्ञानके अनुसार वृद्धि की। फिर एक महान् मनीषी हुआ, जिसने 'गीता' रची। उसने हिन्दू जगत्को हिन्दू धर्मका एक ऐसा सार-सकलन दिया, जिसमे गहरा दर्शन भरा है, पर जो फिर भी सीधे-सादे जिज्ञासुओंकी समझमे आसानीसे आ जाता है। यही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसका अध्ययन चाहे तो हरएक हिन्दू आसानीसे कर सकता है। यदि अन्य सभी धर्मग्रन्थ जलकर भस्म हो जाये, तो भी इस अमर गुटकेके सात सौ श्लोक यह बतानेके लिए काफी है कि हिन्दू धर्म क्या है और उसे जीवनमे कैसे उतारा जा सकता है। मैं अपनेको सनातनी इसलिए मानता हूँ कि पिछले चालीस वर्षोसे मै, शब्दश:, इस ग्रन्थकी शिक्षाओंके अनुसार अपना जीवन व्यतीत करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। जो-कुछ भी इसके मुख्य विषयके विरुद्ध है, उसे मैं हिन्दू धर्मके विरुद्ध समझकर अस्वीकार कर देता हूँ। किसी भी धर्म या धर्मगुरुका इसमें बहिष्कार नही है। मुझे यह कहते हुए अत्यन्त आनन्दका अनुभव हो रहा है कि मैंने 'बाइबिल', 'कुरान', 'जेन्द अवेस्ता' और संसारके

अन्य धर्मग्रन्थोका उसी श्रद्धासे अध्ययन किया है जिससे कि 'गीता' का किया है। इस श्रद्धायुक्त अध्ययनसे 'गीता' मे मेरी आस्था और भी दृढ हो गई है। इससे मेरा दृष्टिकोण और इसलिए मेरा हिन्दू धर्म भी उदार हो गया है। जरथुस्त्र, ईसा और मुहम्मदके जीवन-चरितोसे, जैसा मैंने उन्हे समझा है, 'गीता' के बहुत-से अगोचर और प्रकाश पडा है। इसलिए, इन सनातनी मित्रोने तानेके रूपमे मुझपर जो आक्षेप किया है, वह मुझे सान्त्वना प्रदान करता है। अपने-आपको हिन्दू कहनेमे मुझे गर्वका अनुभव इसलिए होता है कि यह शब्द मुझे इतना व्यापक लगता है कि यह न केवल पृथ्वीके चारो कोनोके पैगम्बरोकी शिक्षाओके प्रति सहिष्णु है, बल्कि उन्हे आत्मसात् भी करता है। इस जीवन-सहितामे मुझे अस्पृश्यताका कोई समर्थन नही मिलता। इसके विपरीत, यह चुम्बककी-सी शक्तिशाली वाणीसे मेरी बुद्धिको और उससे भी गहरे मेरे हृदयको छूकर मुझे यह माननेको बाध्य करती है कि जितना भी जीवन है, वह सब एक है और वह ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है और उसे उसीमे विलीन हो जाना है।

वन्दनीय [गीता] माता द्वारा उपदिष्ट सनातन धर्मके अनुसार, जीवनका लक्ष्य बाह्य आचार और कर्मकाण्ड नही, बल्कि मनकी अधिकसे-अधिक शुद्धि और तन, मन और आत्मासे अपनेको दिव्य तत्त्वमे विलीन कर देना है। 'गीता' के इसी सन्देशको अपने जीवनमे उतारकर मै लाखो-करोड़ो लोगोके पास गया हूँ। और मुझे पूर्ण विश्वास है कि उन्होने मेरी बात मेरी राजनीतिक बुद्धिमत्ता या वक्तृत्व-कलाके कारण नही, बल्कि इसलिए सुनी है कि उन्होने मुझे सहज ही अपना और अपने धर्मका आदमी मान लिया है। समयके बीतनेके साथ-साथ मेरा यह विश्वास उत्तरोत्तर दृढ होता गया है कि सनातन धर्मसे अपनेको सम्बद्ध माननेका मेरा दावा गलत नही है और यदि ईश्वरकी इच्छा हुई तो वह मुझे इस दावेपर अपनी मृत्युकी मुहर लगानेका अवसर देगा।

[अंग्रेजीसे]
एपिक फास्ट, पृ० ३११-७

५६९. पत्र : सी० एफ० एन्ड्र्यूजको

४ नवम्बर, १९३२

प्रिय चार्ली,

मुझे दो पत्रोका उत्तर देना है। तुम्हारा निश्चय, निस्सन्देह, ठीक है। तुम्हारी अस्पृश्यताकी समस्या एक तरहसे मेरी यहाँकी समस्यासे जटिल है। अस्पृश्यता मरती हुई रूढि है और उसपर घातक प्रहार करनेके लिए सुधारकोकी सेना बराबर बढ रही है। तुम्हारी अस्पृश्यताके मरनेके कोई आसार दिखाई नही देते और विज्ञानके नामपर उसे बहुत-से समर्थक मिल जाते है। फिर, तुम्हारे पास कार्यकर्त्ता भी थोडे है। पर, जैसा कि तुमने और मैंने बार-बार देखा है, जो काम मनुष्यके लिए कठिन

है, वह ईश्वरके लिए सरल है। हर हालतमे हमे बस अपने हिस्सेका काम करना है। मैं यह प्रार्थना करूँगा कि तुम्हे अपने काममे सफलता मिले।

मै तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि मेरी इच्छा इस गर्दभ बन्धु [शरीर] को मार डालनेकी नही है। यह ईश्वरके हाथोमें सुरक्षित है। यदि उसकी इच्छा इसे भूखो मारनेकी होगी तो तुम्हारा या मेरा प्रयत्न इसे बचा नही सकेगा। फिलहाल तो यह बकरीके दूध, ढेर-सारे फलो और घरकी बनी थोड़ी रोटीपर पुष्ट होता जा रहा है।

गुरुदेव अब भी प्रेम बरसा रहे है। उस छोटे से उपवाससे मुझे बहुत-सी ऐसी निधियाँ मिली जिन्हे पानेकी मैंने स्वप्नमे भी कल्पना नही की थी। उनमे सबसे बहुमूल्य गुरुदेव हैं। यदि किसीने मुझसे यह कहा होता कि "गुरुदेवको पानेके लिए उपवास करो" तो मै बिना किसी दुविधाके उपवास कर सकता था। उनके हृदयमे थोडा स्थान पानेके लिए मै तरस रहा था। ईश्वरकी कृपासे उपवासके द्वारा वह मुझे मिल गया।

हम सबका प्यार।

मोहन

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९७६) से।

५७०. वक्तव्य : अस्पृश्यतापर – २

५ नवम्बर, १९३२

एक पत्र-लेखकने उदार शिक्षा प्राप्त करनेके बावजूद यह सुझाव दिया है कि हरिजन सवर्ण हिन्दुओके साथ समान स्तरपर लाये जाये, इससे पहले उन्हे इस तरहके सम्मानके योग्य बनना चाहिए। उन्हे अपनी गन्दी आदतें छोडनी चाहिए, मरे हुए पशुओका मास खाना छोडना चाहिए। एक और सज्जन यहाँतक कहते है कि भंगियो और चमारोको अपने धन्धे, जो उनके विचारसे 'गन्दे काम' है, छोड़ देने चाहिए। ये आलोचक यह भूल जाते है कि हरिजनोमें जितनी भी बुरी आदतें दिखाई देती है, उनके लिए सवर्ण हिन्दू ही जिम्मेदार है। तथाकथित उच्च वर्णोंने उन्हे साफ रहनेकी सुविधाओसे और प्रेरणासे भी वंचित कर रखा है। जहाँतक भंगी और चमारके धन्धोका सवाल है, वे बहुत-से अन्य धन्धोसे, जिन्हे मैं गिना सकता हूँ, अधिक गन्दे नही है। हाँ, यह बात मानी जा सकती है कि ये धन्धे, कई और धन्धोकी तरह, गन्दे ढगसे किये जाते है। उसका कारण भी 'उच्च वर्णो' की घोर उदासीनता और दण्डनीय उपेक्षा है। अपने निजी अनुभवसे मै यह कह सकता हूँ कि भंगीका काम और चमारका काम, दोनो पूर्णतया स्वस्थ और स्वच्छ तरीकेसे किये जा सकते है। हर माँ अपने बच्चोके लिए भंगी होती है और आधुनिक चिकित्सा-शास्त्रका हर विद्यार्थी इस मानेमें चमार है कि उसे मानव-शवोकी चीर-फाड करनी और चमडी हटानी पडती है। परन्तु उनके धन्धोको हम पवित्र

मानते हैं। मेरा कहना यह है कि आम भंगियों और चमारोंके बच्चे माताओं और डॉक्टरोंके बच्चोंसे कम पवित्र और कम उपयोगी नहीं हैं। सवर्ण हिन्दू यदि अपने-आपको हरिजनोंके प्रतिपालक और उपकारकर्त्ता मानेंगे तो वे गलती करेंगे। सवर्ण हिन्दू हरिजनोंके लिए अब जो-कुछ करते हैं, वह उनके साथ पीढ़ी-दर-पीढ़ी किये गये अन्यायोंकी केवल बहुत विलम्बसे हुई क्षतिपूर्ति होगी। यदि सवर्णों द्वारा हरिजनोंको अब उनकी वर्त्तमान स्थितिमें ही अपनाना पड़ता है — और इसी तरह उन्हें अपनाना भी चाहिए — तो यह पिछले अपराधकी उचित सजा-भर होगा। पर इसमें इतना सन्तोष जरूर है कि खुले दिलसे उनका स्वागत करना ऐसा कार्य होगा जो उन्हें सफाईके लिए पर्याप्त प्रोत्साहन देगा, और सवर्ण हिन्दू खुद अपनी सुख-सुविधाकी खातिर हरिजनोंको साफ रहनेकी सहूलियतें देंगे।

इन बेचारे हरिजनोंपर हमने जो अन्याय किये हैं, उन्हें याद करना हमारे लिए अच्छा है। सामाजिक दृष्टिसे वे कोढ़ी हैं, आर्थिक दृष्टिसे गुलामोंसे भी बदतर हैं। धार्मिक दृष्टिसे देखें तो उन्हें उन स्थानोंमें भी घुसनेकी इजाजत नहीं है जिन्हें हमने 'ईश्वरका घर' का गलत नाम दे रखा है। उन्हें सार्वजनिक मार्गों, सार्वजनिक विद्यालयों, सार्वजनिक अस्पतालों, सार्वजनिक कुओं, सार्वजनिक नलों, सार्वजनिक उद्यानों आदिको सवर्ण हिन्दुओंकी तरह इस्तेमाल करनेकी इजाजत नहीं है। कहीं-कहीं तो उनका एक निश्चित दूरीके अन्दर आना भी सामाजिक अपराध है और कुछ-एक स्थानोंपर उनका दिखाई देनातक अपराध है। उन्हें रहनेके लिए शहरों और गाँवोंके निकृष्टतम स्थान दिये जाते हैं, जहाँ उन्हें लगभग कोई भी सामाजिक सुविधा उपलब्ध नहीं होती। सवर्ण हिन्दू वकील और डॉक्टर, समाजके अन्य लोगोंकी जिस तरह सेवा करते हैं उस तरह उनकी सेवा करनेको तैयार नहीं हैं। ब्राह्मण उनके धार्मिक अनुष्ठानोंमें पौरोहित्य करनेको राजी नहीं है। फिर भी, वे किसी तरह गुजारा कर रहे हैं और अभीतक हिन्दू समाजके अन्दर हैं, यही बड़ा आश्चर्य है। वे इतने अधिक कुचले गये हैं कि अपने उत्पीड़कोंके विरुद्ध विद्रोह करनेकी उनमें शक्ति ही नहीं है।

ये दुःखद और लज्जाजनक तथ्य मैंने इसलिए याद दिलाये हैं कि कार्यकर्त्ता यरवडा-समझौतेके गूढार्थोंको साफ-साफ समझ लें। केवल सतत प्रयत्नसे ही इन कुचले हुए साथियोंको अधोगतिसे उबारा जा सकता है, हिन्दू धर्मकी शुद्धि की जा सकती है, और पूरे हिन्दू समाजको तथा उसके साथ पूरे भारतको ऊपर उठाया जा सकता है।

अन्यायोंके इस सीधे-सादे वर्णनसे हमें स्तम्भित और हताश नहीं होना चाहिए। पिछले सप्ताह जो-कुछ हुआ, वह यदि सवर्ण हिन्दुओंके पश्चात्तापकी वास्तविक अभिव्यक्ति है, तो सब ठीक हो जायेगा, और हर हरिजन शीघ्र ही स्वतन्त्रताका आलोक अनुभव करेगा। परन्तु इस अति अभीष्ट लक्ष्यकी प्राप्तिसे पहले स्वतन्त्रताका सन्देश दूर-दूरके गाँवोंतक पहुँचाना होगा। वस्तुतः बड़े-बड़े शहरोंकी अपेक्षा, जहाँ जनमत जल्दीमें संगठित किया जा सकता है, गाँवमें काम करना बहुत ज्यादा कठिन है। अब क्योंकि

अखिल भारतीय अस्पृश्यता-विरोधी सघ बन गया है, इसलिए कार्यकर्त्ताओको उस सघके साथ तालमेल रखते हुए काम करना चाहिए। यहाँ मै उस बातको दोहराना चाहूँगा जो डॉ० अम्बेडकरने मुझसे कही थी। उन्होने कहा था, "पुराना तरीका यह था कि सुधारक यह दावा करता था कि पीडितोकी आवश्यकताओको वह खुद पीडितोसे ज्यादा जानता है। वह तरीका दोहराया नही जाना चाहिए।" इसलिए, उन्होने आगे कहा था, "अपने कार्यकर्त्ताओसे कहिए कि वे हरिजनोके प्रतिनिधियोसे यह मालूम करे कि उनकी पहली जरूरत क्या है और वे उसकी पूर्ति किस तरह चाहते है। सामूहिक जलपान आदि प्रदर्शनके लिए अच्छे है, पर उनकी अति हो सकती है। उनमे कृपा करनेका भाव रहता है। मै खुद उनमे भाग लेना नही चाहूँगा। इससे अधिक सम्मानित तरीका यह होगा कि बिना किसी शोर-गुलके हमे साधारण सामाजिक समारोहोमे आमन्त्रित किया जाये। हरिजनोको मन्दिरोमे प्रवेश करानेका काम बहुत अच्छा और आवश्यक है, लेकिन यह काम भी कुछ दिन रुक सकता है। तात्कालिक जरूरत तो आर्थिक स्तरको ऊपर उठानेकी और दैनिक सम्पर्कमे शिष्ट व्यवहारकी है।" स्वय अपने कटु अनुभवसे उन्होने जो-कुछ हृदय-विदारक विवरण दिये, उन्हे मै यहाँ दोहराना नही चाहता। उनके विचारोका मुझपर असर पडा और मुझे आशा है, प्रत्येक पाठकपर भी पडेगा।

सुधारक क्या तरीके अपनाये, इस विषयमे मुझे बहुत-से सुझाव भेजे गये है। एक तो, स्वामी श्रद्धानन्दजी जो बात अकसर दोहराया करते थे, उसीकी पुनरावृत्ति है; यानी प्रत्येक हिन्दू अपने घरमें एक हरिजन रखे, जो व्यवहारत हर तरहसे कुटुम्बका ही सदस्य माना जाये। दूसरा सुझाव एक ऐसे गैर हिन्दू मित्रने भेजा है, जिनकी भारतके कल्याणमे गहरी रुचि है। वे कहते है कि हर सम्पन्न हिन्दूको चाहिए कि वह एक हरिजन लडके या लडकीको हो सके तो खुद अपनी देख-रेखमें, उच्च शिक्षा दिलानेका खर्च उठाये, जिससे कि वे अपनी शिक्षा पूरी करके अपने हरिजन भाइयोके कल्याणके लिए काम कर सके। दोनो सुझाव विचार करने और अपनाने लायक है। जिन लोगोने भी सार्थक सुझाव रखे हैं, उन सबसे मै यही कहूँगा कि वे उन्हे नव-स्थापित सघके पास भेज दे। पत्र-लेखकोको मेरी सीमाएँ समझनी चाहिए। जेलके सीखचोके भीतरसे मैं सघको और लोगोको केवल सलाह ही दे सकता हूँ। योजनाओको वस्तुत अमलमे लानेमे मै कोई भाग नही ले सकता। उन्हे यह भी समझना चाहिए कि मेरी सम्मतियाँ चूँकि लाजिमी तौरपर अपर्याप्त सामग्री और प्राय परोक्ष जानकारीपर आधारित होती है, इसलिए नये तथ्योके प्रकाशमे उनमे सशोधन हो सकता है और उन्हे स्वीकार करनेमें सावधानी बरतनी चाहिए।

यद्यपि अब यह अतीतकी बात हो चुकी है, फिर भी एक पैरेमे मै उस आपत्ति की चर्चा करना चाहूँगा जो एक पत्र-लेखकने उठाई है और जिसकी आवाज दबी जबानसे समाचार-पत्रोने भी उठाई है। समझौतेके राजनीतिक अशके बारेमे वे पूछते है, "इससे आपको क्या लाभ हुआ? हरिजनोको तो जो-कुछ प्रधान-मन्त्रीने दिया उससे कही ज्यादा मिल गया है।" मेरा उत्तर यह है कि वस्तुत वही लाभ तो

हुआ है। उस फैसलेपर मुझे आपत्ति यही थी कि वह रोटीके बजाय पत्थर दे रहा था। इस समझौतेने रोटीके टुकडे दिये है। हिन्दुओके लिए निर्धारित सभी सीटे यदि हरिजनोको मिल जाती तो डॉ० मुजेके साथ खुद मुझे भी खुशी हुई होती। सवर्ण हिन्दुओ और हिन्दू धर्मके लिए वह सबसे बडा लाभ होता। मै जो चाहता था और अब भी चाहता हूँ, वह उनका सवर्ण हिन्दुओमें और सवर्ण हिन्दुओका उनमें पूरी तरह मिल जाना है। यह मेरा सुविचारित मत है—ऐसा मत जो प्रकाशमे आनेवाले किसी भी नये तथ्यसे बदलनेवाला नही है—कि उत्पीडक पीडितोको जितना अधिक देते है खुद उनका उतना ही अधिक लाभ होता है। उस हृदतक वे दीर्घकालसे चढे ऋणोसे मुक्ति पा लेते है। सवर्ण हिन्दू इस प्रश्नको जबतक इस विनम्र, पश्चात्तापपूर्ण, धार्मिक और न्यायोचित भावनासे नही देखेंगे, तबतक समझौतेके शेष अशका उस भावनासे कभी पालन नही किया जा सकेगा जो उपवास-सप्ताहमें पूरे हिन्दू समाजमे फैली लगती थी।

जिन नरेशोने अपनी-अपनी रियासतोके मन्दिर हरिजनोके लिए खोल दिये है और अस्पृश्यताको दूसरी तरहसे भी अपनी रियासतोसे मिटानेकी घोषणा की है, उन्हे मै बधाई देना चाहता हूँ। अगर अनुचित न हो तो मै यह कहना चाहूँगा कि इस तरह उन्होने अपनी तथा अपनी प्रजाकी ओरसे कुछ प्रायश्चित्त किया है। आशा है, इन रियासतोमे रहनेवाले हिन्दू इन घोषणाओकी शर्तोपर अमल करेगे और हरिजनोके साथ ऐसा भ्रातृवत् व्यवहार करेगे कि उन्हे यह लगने लगेगा, मानो वे हिन्दू समाजसे कभी तिरस्कृत और बहिष्कृत थे ही नही। हम इस अति दु खद दृश्यके इतने अधिक निकट है कि यह महसूस ही नही करते कि अस्पृश्यताका यह जहरीला कीडा अपनी नियत सीमाओसे बहुत आगे बढ गया है और इसने पूरे राष्ट्रकी जडे खोखली कर दी है। छुआछूतकी भावना आज वातावरणमें व्याप्त है। इसलिए इस दीमकको यदि जडसे ही नष्ट कर दिया जाये, तो मुझे यकीन है कि शीघ्र ही हम जातियो और धर्मोके भेदोको भूल जायेगे और यह मानने लगेंगे कि जैसे सब हिन्दू एक और अविभाज्य है, उसी तरह हिन्दू, मुसलमान, सिख, पारसी, यहूदी और ईसाई—ये सभी एक ही वृक्षकी शाखाएँ है। धार्मिक सम्प्रदाय है, पर धर्म एक ही है। मै चाहता हूँ कि अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनसे हम यही सबक सीखें। और यदि हम इसे धार्मिक भावना और अडिग सकल्पसे चलायेंगे तो यही सबक सीखेंगे भी।

[अंग्रेजीसे]

एपिक फास्ट, पृ० ३१८-२२

५७१. पत्र : अरुण दासगुप्तको

५ नवम्बर, १९३२

आशा है, तू मेरी इस बातका मतलब साफ-साफ समझ गया होगा कि तुझे अपने शरीरको अपना नहीं मानना चाहिए।[1] वह ईश्वरका है। पर ईश्वरने तुझे वह कुछ समयके लिए दिया है ताकि तू उसे स्वच्छ और स्वस्थ रखे और उसकी सेवाके काममें लाये। इसलिए तू उसका थातीदार है, स्वामी नहीं। स्वामी अपनी सम्पत्तिका सदुपयोग या दुरुपयोग जो चाहे कर सकता है। पर थातीदार या उसके रक्षकको बहुत सावधान रहना होता है और जो सम्पत्ति उसे देखरेख के लिए सौंपी गई है, उसका अच्छेसे-अच्छा उपयोग करना होता है। इसलिए तुझे शरीरकी चिन्ता तो नहीं करनी है, लेकिन उसकी यथाशक्य देख-रेख करनी है। ईश्वर जब चाहेगा तब उसे ले लेगा।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २०९

५७२. पत्र : सतीशचन्द्र दासगुप्तको

५ नवम्बर, १९३२

मैंने अपनी स्थिति[2] समाचार-पत्रोंको दिये गये वक्तव्यमें स्पष्ट करनेकी कोशिश की है। आपने वह देखा ही होगा। पता नहीं, उससे आपका सन्तोष हुआ या नहीं। मैं जाति और वर्णमें, जैसा कि मैंने सदा किया है, स्पष्ट भेद करता हूँ। जातियाँ असंख्य हैं और अपनी वर्तमान स्थितिमें वे हिन्दू धर्मके लिए बाधा हैं। इसलिए आप और मैं जाति-भेद नहीं मानते हैं। वर्णकी स्थिति इससे भिन्न है और उसका अर्थ पेशा है। भोजन-सम्बन्ध और विवाह-सम्बन्धमें उसका कोई वास्ता नहीं है। चारों वर्णोंके लोग पहले एक-दूसरेके साथ भोजन और विवाहतक करते थे और वैसा करनेसे स्वभावतः उनका वर्ण न तो छूट सकता था और न छूटता था। यह बात 'भगवद्गीता' में दी गई विभिन्न वर्णोंकी परिभाषासे बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। मनुष्य अपने वर्णसे तभी पतित होता है, जब वह अपने कुलक्रमागत पेशेको छोड़ देता है। परन्तु आज तो वर्णाश्रम लुप्त धनकी तरह है और सब-कुछ बिलकुल गड़बड़ हो गया है। इसलिए जहाँतक मैं समझ सकता हूँ, आज केवल एक ही वर्ण है और वह है शूद्र। वर्णोंमें जो गड़बड़ है, वह लज्जाजनक है। हम अपनेको शूद्र कहें, यह कोई लज्जाकी बात नहीं है, क्योंकि धर्ममें न कोई ऊँचा है, न नीचा। शूद्रका

१. देखिए "पत्र : अरुण दासगुप्तको", २०-१०-१९३२।

२. वर्ण और जाति-भेदके सम्बन्धमें।

पेशा उतना ही सम्मानित और आवश्यक है जितना कि ब्राह्मणका। क्षत्रिय और वैश्यका भी वैसा ही है। किन्तु यदि अपने-आपको शूद्र माननेसे हमारे अभिमानको चोट पहुँचती हो, तो भी उससे कोई छुटकारा नही है। यह बात क्षण-भर विचार करनेसे ही स्पष्ट हो जायेगी। यह सौभाग्यपूर्ण परिस्थिति यदि आम तौरपर स्वीकार कर ली जाये तो हरिजनोका दर्जा तय करनेकी कठिनाई दूर हो जाती है। समाजमे उनके आनेपर उनका वर्ण क्या होना चाहिए? यदि हम कहे 'शूद्र वर्ण', तो हम तुरन्त यह मान लेते है कि वर्ण-धर्ममे दर्जे है, और हरिजनोको इस बातका विरोध करनेका कि उन्हे सबसे निचला दर्जा दिया जा रहा है, पूरा अधिकार होगा। यदि हम सभी शूद्र है तो कोई कठिनाई ही नही रहती। मुझे एक विद्वान् शास्त्रीकी बात याद है। १९१५ मे नेल्लूरकी एक सामाजिक सुधार-सभामे उन्होने यह कहा था कि वर्णोंमें गडबड है और जैसे कि आरम्भमे केवल एक ही वर्ण — अर्थात् ब्राह्मण — था उसी तरह हम सभी अब अपने-आपको ब्राह्मण कहे। वह सुझाव तब मेरा समाधान नही कर सका था और आज तो और भी नही कर पाता है। हम सब सेवा कर सकते है और इसलिए शूद्र कहला सकते है। परन्तु हम सब विद्वान् नही है और न ब्रह्म-ज्ञानी है। इसलिए अपने-आपको ब्राह्मण मानना असत्य होगा। यदि हम भोजन-सम्बन्ध और विवाह-सम्बन्धको, जिस तरहका धार्मिक महत्त्व उनका आज समझा जाता है, उससे मुक्त कर दे, तो यह फिर केवल हमारी इच्छाकी बात हो जाती है कि हम कहाँ खाते है और कहाँ अपने बच्चोका विवाह करते है। तब अस्पृश्यता-निवारणका ठीक वही अर्थ होगा जो मैने उसे सदा दिया है। यह बात अब तो बिलकुल स्पष्ट हो जानी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २०५-६

५७३. पत्र : वी० रामजीरावको

५ नवम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

आपका इसी महीनेकी १ तारीखका पत्र मिला। रामनाम लेते हुए अपना काम करते जाइए। सभी कठिनाइयाँ अपने-आप दूर हो जायेंगी। अस्पृश्यता-विरोधी कार्यके सम्बन्धमें मैं दिन-प्रतिदिन जो वक्तव्य जारी कर रहा हूँ, उन्हे देखिएगा। कृपया उन्हे ध्यानपूर्वक पढे और उनको अच्छी तरह हृदयगम कर ले। अस्पृश्यता-विरोधी कार्यकर्त्ताको उनसे पर्याप्त मार्ग-दर्शन मिलना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३९)से।

५७४. एक पत्र

५ नवम्बर, १९३२

मोढोकी सेवाके बजाय हिन्दुस्तानी-मात्रकी सेवा क्यो नही? ये छोटे-छोटे बाडे कहाँतक बने रहेगे? ऐसे आन्दोलनमे क्यो पडा जाये जो बुजुर्गोको पसन्द न हो और जिससे कुछ बने भी नही? और यह नही मानना चाहिए कि इस तरह पर्चोंकी सख्या बढ़ती ही रहे तो उससे कोई लाभ होता है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २०८

५७५. पत्र : बीदणीदेवीको[1]

५ नवम्बर, १९३२

तुम्हारा पत्र पाकर बहुत आनन्द हुआ। तुम्हारे विनोदसे ही मै देख सकता हूँ कि तुम्हारा स्वास्थ्य अब ठीक हो रहा है। ईश्वर तुमको पूर्ण आरोग्य देवे। यदि वही शरीर अच्छा होवे तो जबलपुर जानेकी शीघ्रता करनेका कोई कारण न माना जाये।[2]

पुरुष लोगोको पुत्र बनानेमे बडी आपत्ति रहती है।[3] वे लोग बहुत घमण्डी रहते है और पिताकी मिलकतमे हिस्सा माँगते है। गोविन्ददासने छोड दिया, सो तो अलग बात हुई। पुत्री बेचारी तो हिस्सा माँग ही नही सकती। और मेरे जैसे जो पिता बन बैठे है वह तो पुत्रियोसे सेवा ही लेते है। देनेकी तो बात कहाँ है? मेरी पुत्री बननेमें क्या-क्या कठिनाइयाँ है वह तुमको बता दिया।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१०

१. सेठ गोविन्ददासकी पत्नी।

२. श्रीमती गोविन्ददास हृदयरोगसे पीडित थीं, उन दिनों जयपुरमें स्वास्थ्य लाभ कर रही थीं।

३. श्रीमती गोविन्ददासने उलाहना देते हुए लिखा था कि आपने मुझे तो अपनी बेटी मान लिया किन्तु मेरे पतिको बेटा नहीं माना इससे उन्हें दु:ख हुआ।

५७६. पत्र : हबीबुर्रहमानको

५ नवम्बर, १९३२

आपका पत्र पाकर मुझे आनन्द भया। अब आपकी पहचान भेजिए। आपने संस्कृत भाषाका अभ्यास कहातक किया? कितने बरसोतक किया? आपकी उम्र कितनी है? कितने बरसोसे आप अध्यापक हुए है? कितने लडके संस्कृतका अभ्यास कर रहे है? उसमे से कितने मुसलमान है? कितने हिन्दु? आपके माता-पिता जीते है? और है तो पिताजी क्या करते है?

अब आपके प्रश्नोका उत्तर देनेकी कोशिश करता हु। हिन्दु धर्मकी खसूसियत यह है कि उसमे काफी विचार-स्वातंत्र्य है। और उसमे हरेक धर्मके प्रति उदारभाव होनेके कारण उसमे जो-कुछ अच्छी बाते रहती है, उनको हिन्दूधर्मी मान सकता है। इतना ही नही परन्तु माननेका उसका कर्त्तव्य है। ऐसा होनेके कारण हिन्दू धर्मग्रन्थके अर्थका दिन-प्रतिदिन विकास होता है।

'महाभारत' और 'गीता'के पात्रोके बारेमे जो-कुछ मैंने कहा है वह मेरा कोई मौलिक ख्याल नही है, लेकिन मैंने टीका-ग्रन्थोमे से यह विचार पाया है। सदानन्द मिश्रकृत 'भगवद्गीता'की एक टीका है उसमे इस विचारको अच्छी तरह बढाया है। प्राकृत-ग्रन्थोमे भी ऐसे विचार बताये गये है। हिन्दू धर्मके नामसे प्रचलित ग्रन्थोमे जो-कुछ लिखा गया है वह सबके-सब धर्मवचन है, ऐसा नही है, और हिन्दू जनताको यह सब मानना चाहिए, ऐसा भी नही है। वेदपाठ सुननेवाले शूद्रके कानमें गरम सीसा डालनेकी बातको अगर ऐतिहासिक मानी जाय तो मै उसे धर्म माननेके लिए हरगिज तैयार नही हूँ, और ऐसे असंख्य हिन्दू है जो उसे धर्मवचन नही मानते है। हिन्दू धर्मके लिये एक कसौटी रखी गई है, जिसको एक बालक भी समझ सकता है। जो बुद्धिग्राह्य वस्तु नही है और बुद्धिसे विपरीत है वह कभी धर्म नही हो सकती है, और जो सत्य और अहिंसासे विपरीत है वह भी धर्म नही हो सकती है।

अब रही यरवडा समझौतेकी बात। कमसे-कम मेरे नजदीक 'वोट'की गिनती की वह बात किसी हालतमें नही थी। मेरे नजदीक हरिजन भाइयोका अंग्रेजी प्रधान-मण्डलके प्रस्तावसे जो बुरा हो रहा था उसीको मिटानेकी बात थी। अनशनव्रतके बारेमे आपसे मै क्या विनय करूँ? इतना ही कह सकता हूँ कि वह ईश्वर प्रेरित बात थी, जिसको मै रोक ही नही सकता था।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २०८-९

५७७. पत्र : हनुमानप्रसाद पोद्दारको

५ नवम्बर, १९३२[१]

भाई हनुमानप्रसाद,

तुम्हारा खत मिला। भले लबा खत लिखा। मै उसका सदुपयोग कर लुगा। देवदासके बारेमे जो-कुछ लिखा है वह तुम्हारे लिये उचित ही है। 'नवजीवन' मे से जो वचन तुमने उद्धृत किये है उसपर मै आज भी वैसे ही कायम हू। मेरे वचनोको समजनेके लिये मेरे आचार समजनेकी आवश्यकता रहती है। क्योकि मेरा प्रयत्न आचारके विरुद्ध वचन न कहनेका और वचनके विरुद्ध आचार न करनेका रहता है। जब मेरे आचार वचनके अनुकूल नही रहते है तब मै निजी दुर्बलताका स्वीकार कर लेता हू। यहा आचार और वचनमे ऐसा कोई विरोध नही है।

जो लोग सनातनीओपर कटाक्ष करते है, उनकी निंदा करते है वे हिंसा करते है और अस्पृश्यता-निवारणमें बाधा डालते है उसमे कोई सन्देह नही है। यह सारा कार्य केवल धार्मिक है और धार्मिक दृष्टिसे ही बनना चाहिये। सनातनी जो अस्पृश्यताको धर्म मानते है उनपर किसी प्रकारका आक्रमण नही होना चाहिये। उनको अपने मतव्यपर कायम रहनेका उतना हि अधिकार है जितना हमको अपने मतव्यपर कायम रहनेका है। सहभोजमे भी मर्यादा, स्वच्छता, इ० के पालनकी हमेशा आवश्यकता है। और इसमे भी किसीपर बलात्कार करना अवश्य पाप है, और जो सहभोजमे समत नही होना चाहते है उनको घृणा करना वह भी पाप है। इसी तरह मदिरोके सचालकोका विरोध करके बलात्कारसे उसमे घुस जाना वह भी पाप-कर्म है। और इस तरहसे सब मन्दिरमे हरिजनोका प्रवेश हो भी गया, हरिजनोके साथ दूसरे हिंदू खान-पानके लिये बैठ गये भी तदपि मै इसे अस्पृश्यता-निवारण हरगीज नही मानुगा। ऐसे निवारणके साक्षी होनेके बदलेमे मै मृत्युकी भेट ही मेरे लिये कल्याणकर समजुगा क्योकि बलात्कारसे न अस्पृश्यता मिट सकती है, न हिंदु धर्मकी रक्षा होती है ऐसा मुझको पूर्ण विश्वास है।

मै इतना स्पष्ट कर दू। सहभोजका मेरे दिलमे कोई विरोध नही है, और जब किसीके साथ घृणासे या तो उसके जन्मके कारण कोई खानपानसे इनकार करता है तो उसे मै अधर्म मानता हू। खानपानसे मित्रभाव बढता ही है ऐसा कहना अतिशयोक्ति है इसमे सन्देह नहीं है, लेकिन जो मनुष्य स्वच्छ है, निरामिषाहारी है उसके साथ भी खानपान करनेका इनकार करना, क्योकि वह इतरधर्मी है या इतरप्रातिक है या अत्यज है इसमे अधर्म है। और अस्वच्छता इ० का आरोपण करके अत्यज मात्रसे भोजन-व्यवहार करनेका इनकार कोई अच्छी बात नही मानी जा सकती।

१. यह तारीख महादेवभाईनी डायरी, भाग-२ से दी गई है।

इस प्रश्नको धार्मिक दृष्टिसे देखनेके लिये एक बात स्मरणमें रखनी चाहिये। आजतक सवर्ण हिंदुने एक अवर्ण हिंदु वर्ग पैदा किया और उनके साथ अधर्मयुक्त हिंसक वर्ताव किया उसीके कारण उन लोगोमे अस्वच्छता इत्यादि दोष आ गये। इस बुरे वर्तावका किसी-न-किसी रोज हिंदु जनताको प्रायश्चित करना ही है। आज यह मौका आ गया है उस वक्त जिन दोषोके लिये हम जिम्मेवार हैं उन दोषोंको ही कारण बनाकर हम उनको मन्दिर-प्रवेशादिसे रोक नही सकते हैं। वे लोग जैसे हैं वैसे हि उनको भेटना, उनको मन्दिरमे आने देना इ० सद्व्यवहार करना वही तो हमारा प्रायश्चित है। और हमारे विश्वास रखना चाहिये कि वही लोग हमारे सपर्कमे आयेंगे तव उनके आचार शुद्ध हो जायेगे और शुद्ध करनेकी चेष्टा भी करेगे। उनको शुद्ध करनेका और सवर्ण हिंदुको प्रायश्चित्त करनेका और कोइ ढग हे ही नही। यह वात भी स्मरणमे रखना आवश्यक है कि जो अस्वच्छता इ० दोष हरिजनोमे पाये जाते है वैसे दोष दूसरे लाखो हिंदुमें भी हैं इस कारण हम न उनको मदिरमे आनेसे रोकते हैं न उनको और कोई जाहेर सस्थासे दूर रखते हैं। हरिजनके लिये हम क्यो काजी बने? आखरमे भगवान किसका है? पुण्यवान और धनवानका है कि सुदुराचारी[1] लोग जो अपनी तोतली जबानसे कष्टसे उसके नामका उच्चारण करते हैं उनका है? हम दूसरोके काजी न बने। हमारा कर्त्तव्य निजके काजी बननेका है। जो-कुछ मैंने लिखा है उसका धीरजसे विचार करो, मनन करो, और फिर कुछ पूछनेकी आवश्यकता रहे तो बिना सकोच पूछो। मै तुमको सतोष देना चाहता हू। और वह स्वार्थवश, क्योकि तुमसे इस काममे बहुत साहाय्यकी आशा रखता हू। मेरे नजदीक यह प्रश्न केवल धार्मिक है और तुम्हारे जैसे धार्मिक वृत्तिवालोकी सपूर्ण सहाय मुझे चाहिये।

रतनगढ़मे कहातक रहना है?

पत्रकी फोटो-नकल (एस० एन० १८५९८) से।

५७८. पत्र : लीलावती आसरको

६ नवम्बर, १९३२

चि० लीलावती,

मेरे पत्रका गलत अर्थ लगाकर तू दुःखी हुई, इसके लिए मं क्या करूं? मैंने तुझे शान्त करनेके लिए पत्र लिखा और तू अशान्त हुई। मैंने तो तुझमें अपना विश्वास व्यक्त किया था। स्वेच्छासे मेरी लडकी बननेवालीको छोडकर मैं कहाँ जानेवाला था? अपने खयालसे तो मै तेरी रक्षा ही करता आया हूँ, और करता

१. देखिए गीता, ९-३०।

रहूँगा। तू चिन्ता मत कर, भगवान् तेरा कल्याण ही करेगे। किन्तु तू धीरज रख, शान्त रह और लोभ छोड दे। मुझे पत्र लिखती रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९५७१) से। सी० डब्ल्यू० ६५४३ से भी, सौजन्य लीलावती आसर

५७९. पत्र : आश्रमके बालक-बालिकाओंको

६ नवम्बर, १९३२

बालको और बालिकाओ,

तुम्हारे पाँच दिनके वन-विहारका शारदा द्वारा लिखा हुआ सुन्दर विवरणवाला पत्र मिला। मै तो उसका उत्तर सक्षेपमे ही दे सकूँगा। हरिजनोसे सम्बन्धित काममे मेरा बहुत-सा समय चला जाता है, इसलिए तुम्हे विस्तारसे लिखनेका न तो मुझे समय मिलता है और न मेरे हाथमे इतनी ताकत रहती है। तुम्हे भी यथाशक्ति हरिजनोकी सेवा करनी चाहिए।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

५८०. पत्र : जमनाबहन गांधीको

६ नवम्बर, १९३२

चि० जमना,

तुम्हारे पत्र मुझे बहुत अच्छे लगते है। इसी प्रकारकी निर्भयता सदा बनाये रखना। मै यह समझ गया कि तुम राजकोटमे अच्छी रहती हो। यदि आश्रममे तुम्हारा शरीर और मन, दोनो स्वस्थ रहे तो मै यह नही चाहूँगा कि एक क्षणके लिए भी तुम वहाँसे हटो।

बापू

[पुनश्च.]

आशा है, अब प्राइमस स्टोवकी तकलीफ दूर हो गई होगी।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६१) से, सौजन्य नारणदास गाधी

५८१. पत्र : केशव गांधीको

६ नवम्बर, १९३२

चि० केशव,

तूने पूछा है कि बा द्वारा चरखा ले लेनेकी बात जानकर मुझे दुःख क्यों हुआ। मुझे तुझपर और तेरी तटस्थतापर इतना अधिक विश्वास है कि मैं उसका कारण लिख रहा हूँ। सन्तोकको मेरा चरखा चलानेकी इच्छा हुई, इससे मुझे प्रसन्नता हुई थी। किन्तु बा की माँगमें मुझे द्वेषकी गन्ध आई, इससे मुझे दुःख हुआ। इसमें मैंने यह मान लिया था कि बा को यह बात मालूम थी कि यह चरखा सन्तोकको दिये जानेकी बात हो चुकी है। किन्तु यदि उसे यह मालूम नहीं था तो मैंने बा के प्रति बहुत अन्याय किया है। बा ने मेरे कारण बहुत दुःख पाया है, इसलिए मैं उससे कुछ पूछना नहीं चाहता था। तू यह समझ गया न कि इस तरह मेरा दुःख दुहरा था। सन्तोकको चरखा भी नहीं मिला और बा को ईर्ष्या हुई। किन्तु होनीको कैसे रोका जा सकता है! मुझे यह बतानेकी जरूरत नहीं कि तू बा पर क्रोध करनेका विचार भी मत करना। जितनी साधुताकी मैं आशा करता हूँ, यदि तुझमें उतनी साधुता हो तो तू बा के पास जाकर कहना कि 'बापूसे यह चरखा मैंने अपनी माँ के लिए माँगा था और उन्होंने दे भी दिया था। आपको नया चरखा बनवाकर दे दूँगा। क्या आप यह मुझे दे देंगी?' तुझमें हिम्मत हो तो यह करने लायक है। मैं तेरी भेजी हुई पूनियाँ कात रहा हूँ। ये मुझे अच्छी लगी। उनमें एक यही दोष है कि वे बहुत कड़ी हैं। हम दोनोंको ऐसा ही लगा। एक तोला रूईमें ३२ नरम पूनियाँ बननी चाहिए।

बापू

[पुनश्च:]

महादेव मानते हैं कि बा को इस बातकी जानकारी नहीं थी। यदि ऐसा हो तो बहुत अच्छा है, किन्तु फिर भी मैं चाहता हूँ कि तू उसके पास जाये।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४६५) से, सौजन्य: राधाबहन चौधरी

५८२. पत्र : नारणदास गांधीको

६ नवम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

तुम्हारी डाक नियमानुसार मिल गई थी। चम्पाके बारेमे तुम्हारी बात समझ गया हूँ। बँगलेमे रंग कराना जरूरी हो तो करा देना। पत्थरकी बाड लगानेमें कितना खर्च आयेगा, मुझको बताना। अब अनुमति और किससे लेनी है? बेचारे [तीनो] भाई[1] तो पूरा विचार कर नही सकते, इसलिए वास्तवमे देखा जाये तो मुझे ही निर्णय करना है। लेकिन, यह पत्र लिखाते समय महादेवने सरकारी अनुमतिका प्रश्न उठाया है और उसका यह खयाल है कि तुमने इसी 'अनुमति'की बात की है। मैं तो तुम्हारी बातका ऐसा अर्थ नही करता, फिर भी इस तरह ईंट अथवा पत्थरकी दीवार खड़ी करनी हो तो अनुमति लेनी पड़ेगी या नही, इसपर विचार कर लेना। तो अब हमे दो प्रश्नोपर विचार करना है — खर्च ज्यादा हो तो करना चाहिए या नही और अनुमति लेनी हो तो अभी ली जानी चाहिए या नही।

मोहनका बुखार अब तो बिलकुल ठीक हो गया होगा। हो गया हो तो भी अभी कुछ दिन उसका खास ध्यान रखना पडेगा। कुसुमके बारेमे तो मुझे बराबर डर लग रहा है। जैसा हम कहे वैसा करनेकी उसकी इच्छा तो है, पर अपने मनपर वह काबू नही रख सकती। उसके और भाऊके बारेमे मैंने पत्र लिखा है; वह इससे पहले ही मिल चुका होगा। उसके बाद कुसुमको एक कार्ड भी लिखा है। भाऊने जो लिखा है, उसके विषयमे उसके साथ बातचीत न हुई हो तो कर लेना। डॉ० तलवलकरका पत्र मुझको अबतक नही मिला है। रमणीकलाल और जोशीके पत्र आ गये थे, लेकिन यही रोक लिये गये थे। जमनालालजी के सम्बन्धमें मुझे पूरी खबर मिल गई है। उनकी तबीयत बहुत ठीक तो नही कही जा सकती।

रातके ८ बजे

रतुभाईको लिखा पत्र पढना। उसे जल्दी रगून जानेकी प्रेरणा देना। भाऊके पत्रसे मुझे यह सूझा है कि दक्षिण आफ्रिकाकी जेलोमे जैसी खुराक दी जाती है, वह आरोग्य और सयमके लिए अनुकूल पड़ती है। हम सुबह चोकर-सहित गेहूँके आटेको पानीमे उबालकर देते है और उसमे गुड़ डाल देते हैं। यहाँ प्रति व्यक्ति पाँच तोले ज्वारके आटेकी लपसी नमक डालकर दी जाती है। यह प्रयोग वहाँ कर देखने लायक लगता है। हम शायद पाँच तोला आटा हजम न कर सके। ढाई तोलेसे

१. डॉ० प्राणजीवन मेहताके पुत्र

आरम्भ करे। गुडके बदले नमक देना बहुत अच्छा है, और उससे कैदियोंके साथ हमारा तादात्म्य भी स्थापित होता है। भात रोज देनेके बजाय एक-एक दिनके अन्तरसे दिया जाये, और इसलिए दाल भी इसी तरह। दक्षिण आफ्रिकाकी जेलोमे दाल हफ्तेमे दो ही दिन दी जाती है और सो भी एक-एक वक्त ही। शाक रोज देना चाहिए और उसमे मुख्य रूपसे भाजी। एक ही शाक हो तो बहुत अच्छा। प्रतिदिन बदल-बदलकर भले दिया जाये। दक्षिण आफ्रिकामे शामको वैसी ही लपसी दी जाती है जैसी सुबह दी जाती है। मै तो मानता हूँ कि ऐसे ही हम भी चला सके तो इसमे कोई हर्ज नही होगा। इसके सम्बन्धमे बातचीत करके देखना। जो खुराक बाहरके धनी-मानी लोग और हम आश्रमवासी लेते है, उससे हम स्वस्थ तो नही ही रहते। जेलमे अच्छी-खासी सख्यामे कैदी लोग स्वस्थ रहते है। उसमे फेर-बदल करके हम भी क्यो न ऐसी खुराकका पता लगाये जिससे सयम और आरोग्य दोनो सधे? इसमे अभी तो मन्तव्य यही है कि हम अपने जीवनको कैदियोके जीवनके समान बनायें और इस तरह ज्यादा सयमका भी अभ्यास डाले। इतना करनेपर भी हम दूध-घी तो चालू रखेंगे ही, जो जेलोमे नही दिये जाते। मुझे इतना तो निश्चय है ही कि भात कोई खास जरूरी नही है और जहाँ दूध-घी है वहाँ दालकी भी कम ही जरूरत है। जिसमे से चोकर-भूसी न निकाली गई हो, ऐसा गेहूँ, दूध और सब्जियाँ जहाँ मिलती हैं, वहाँ दूसरी चीजोकी जरूरत कम ही रहती है। हाँ, फलकी जरूरत मै अवश्य मानता हूँ। खट्टा नीबू, टमाटर, बिना राँधी मूली, गाजर, मोगरी वगैरह थोडी मात्रामे मिले, यह इष्ट, बल्कि आवश्यक भी है। घीके अतिरिक्त ताजे तेलका उपयोग करना चाहिए। यदि इन बातोके सम्बन्धमे तुम्हारे मनमे कोई उत्साह जगा हो तो दूसरोके साथ बातचीत करना। जैसा ठीक लगे, वैसा फेरफार करके प्रयोग करना। शेष बातोके सम्बन्धमे मुझसे पत्रोके द्वारा चर्चा करना। मेरे मनमे तो बहुत-से विचार आते रहते है। उनमे से कुछको ही चुनकर मैंने यहाँ पेश किया है। तुम चाहोगे तो औरोकी भी चर्चा करूँगा। आखिरको अगर तुम्हे परिवर्तन करने हो तो भी दूसरोके साथ इनपर चर्चा तो करनी ही पडेगी। लेकिन अगर तुम्हे लगे कि अभी तो चर्चा करनेसे भी लोग भडक उठेगे तो छोड देना। किसी नये परिवर्तनके बारेमे मेरा आग्रह तो नही ही होगा, क्योकि मै खुद तो उन पर अमल करानेमे शामिल हो नही पाऊँगा। तुम्हारे सामने ऐसे नये विचार रखनेमे तुम्हे घबराहट नही होगी, यही समझकर मुझे जो सूझता है, लिख दिया करता हूँ।

४१ पत्र धागेसे बँधे है। पाँच खुले हैं। कुल ४६ हैं।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२६४ से भी, सौजन्य नारणदास गाधी

५८३. पत्र : रमाबहन जोशीको

६ नवम्बर, १९३२

चि० रमा,

आशा है, इस बीच मैंने तुझे जो पत्र लिखा था वह मिल गया होगा और तू उसके अनुसार अमल कर रही होगी। क्रोधके बदले क्रोध नही, अवगुणके बदले अवगुण नही, बल्कि क्रोधके बदले शान्ति, अवगुणके बदले गुण, कडी बातके बदले प्रेम, अपकारके बदले उपकार — यह धर्म है, यह आश्रमका व्यवहार है। खबरदार जो इसमें चूकी।

छगनलालका समाचार मालूम हो तो भेजना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३३८) से।

५८४. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

६ नवम्बर, १९३२

चि० प्रेमा,

मुझपर अब बोझा इतना आ गया है कि आश्रमको लम्बे पत्र शायद ही भेज सकूं। उसमे तेरा नम्बर पहला ही आयेगा। परन्तु मै जानता हूँ कि अब मेरे लम्बे पत्र अखबारोमे पढकर तुझे सन्तोष होगा।

दीवालीके दिनोके अनोखे वर्णन पढकर वहां उड आनेका जी हुआ। परन्तु देखा तो ऊपर-नीचे, अगल-बगल सब ओरसे पिंजरा बन्द ही है। इसलिए पंख फडफडाकर बैठा रहा।

तू मक्खनकी मात्रा बढाकर अच्छी हो जाये तो इसे मै सस्ती दवा मानूंगा।

तेरी जिम्मेदारी बढती जा रही है, यह मै समझता हूँ। ईश्वर तुझे सँभाल लेगा। तू आत्मविश्वास न खोना। मेरी इतनी ही सलाह है कि तू धीरज न छोडना।

एक शिकायत, जो रमाबहनने की, सही मालूम होती है। तूने चिढकर धीरूसे कह दिया — "तो चला जा पालनपुर।" ऐसा किसीसे नही कहते। बालकोके साथ नरमीसे ही काम लेना चाहिए। आश्रममे रहनेवाला कोई भूल करे तो तुरन्त 'तो रास्ता नापो' कह देना बहुत अपमानजनक है। ऐसा किसीसे न कहना, और रमाबहनको सन्तोष दिलाना।

तेरे साथ कृष्ण नायरका सवाद मधुर है। तूने मुझे पूरा मुख्तियारनामा दिया हो तो तेरे उत्तर तो मैं भी दे दूँ।

किसनका वर्णन अच्छा है।

हमारा गीत[1] हमे शोभा देनेवाला है। सपनोका विश्लेषण मुझे नही आता।

नारणदासकी दी हुई भेटका अर्थ समझा न?

भावना कब प्रगट की जाये, इसका कोई एक नियम नही है। यह कहूँगा कि जब सत्यनारायण प्रेरित करे तब प्रकट की जाये।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३०९) से। सी० डब्ल्यू० ६७४८ मे भी, सौजन्य प्रेमाबहन कटक

५८५. पत्र : परशुराम मेहरोत्राको

६ नवम्बर, १९३२

चि० परशुराम,

पिताजी के बारेमे जो लिखा सो मैं समझता हूँ। मेरे बारेमे लिखनेके लिए ये शर्तें है १. वहाँके काममें बाधा न पहुँचे, २. अपना स्वास्थ्य बिगडनेका खतरा उठाकर न लिखा जाये; ३ मेरे बारेमे जो बाते आम लोग नही जानते वे न लिखी जायें और, ४ आवेशमें आकर मनमाने ढगसे बातको बढा-चढाकर न कहा जाये।

यदि वास्तवमें तुमने अपना जीवन मुझे सौप दिया है तो तुम्हारे इस कथनका कोई अर्थ नही रह जाता कि जीवनमे कोई रस नही रह गया है अथवा यदि कोई अर्थ निकलता है तो यही कि तुमने उसे मुझे अनिच्छापूर्वक सौंपा है, इसीलिए तो वह नीरस हो गया है। जिसने हृदयसे सेवा धर्मको स्वीकार किया है, उसका जीवन रसपूर्ण होना ही चाहिए, क्योकि सेवामे ही रस है।

चना भी दाल ही है। चनेकी रोटी किसीको हजम नही होती। अत. अपना विचार छोड़ देना। गेहूँ, दूध और हरी सब्जियाँ ये तीनो सबसे अच्छी खुराक है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७५११) से। सी० डब्ल्यू० ४९८८ से भी, सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा

१. "वन्देमातरम्"।

५८६. पत्र : बबलभाई मेहताको

६ नवम्वर, १९३२

चि० बबल,

तुम्हारा पत्र मेरे लिए बहुत मददगार साबित हुआ। जिस गाँवमे तुमने काम शुरू किया है, उसका नाम देना तुम भूल गये। अब अगले पत्रमे लिखना। चमारकी आपत्तिका समाधान किया जा सकता है। वैसे है वह सही। हमे मरे हुए पशुओको उठा ले जाना चाहिए। उस गाँवका नाम, उसकी आबादी आदि लिखना। हमने यह काम आश्रममे इसीलिए आरम्भ किया है। हमे पशुओको गाड़ीमे उठा ले जाना चाहिए। इस कामके लिए केवल योजना और व्यवस्था चाहिए। हरिजनोके साथ घुल-मिलकर तुमने अच्छा किया। गाँवोसे जितनी मदद मिल सके उतनी मदद लेकर कामको आगे बढाना चाहिए। मुझे समय-समयपर पूरा विवरण भेजते रहना। इस काममे यदि और अधिक समय देना आवश्यक हो तो देना।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४४६)से।

५८७. पत्र : भाऊ पानसेको

६ नवम्बर, १९३२

चि० भाऊ,

आज अधिक लिखनेका समय नही है। आशा है, मेरा इस बीच लिखा पत्र मिला होगा। उपवासका परिणाम जाननेको उत्सुक हूँ। उपवासके बाद सामान्य भोजनपर आनेकी क्रिया तुम्हे आनी चाहिए। इतना याद रखना कि आहारको धर्मके साथ बहुत अधिक जोडनेमे ज्यादती होनेका डर है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७४१) से। सी० डब्ल्यू० ४४८४ से भी; सौजन्य : भाऊ पानसे

५८८. पत्र : शान्ता शं० पटेलको[1]

६ नवम्बर, १९३२

चि० शान्ता,

तू पहले-जितनी ही शरारती लगती है। जो माँ अपनी लडकीकी निजी शिकायतें नही सुनती वह माँ कैसी? और जो अपनी 'माँ'को इतना व्यस्त मान ले कि उसमे अपनी बात कहनेमे सकोच करे वह बेटी कैसी? लम्बा पत्र लिखनेके बावजूद जो तुझे कहना था सो तो तूने कहा ही नही है। महादेव तेरा मार्गदर्शन जरूर कर सकता है, किन्तु तू क्या किसीके हाथके नीचे रह पायेगी? तू काम चाहती है। काम तो आश्रममे बहुत है। और वहाँ तुम तीनोका भरण-पोषण होता है। फिर चिन्ता किस बातकी? तू वेतनपर काम करना चाहे तो भी अपने भरण-पोषणसे अधिक तू और क्या चाहती है? तू यह जानती है न कि सामान्यत मनुष्य चाहे जितना क्यो न कमाये, फिर भी उसे कमीका अनुभव होता है। कुछ और अधिक कमानेकी इच्छा बनी ही रहती है। ऐसी लालसासे मुक्ति दिलानेके लिए आश्रम है।

क्या तूने कभी अपने हृदयपर हाथ धरकर सोचा है कि तुझे घर नही बसाना है? मुझे तो तेरे पत्रसे ऐसा लगता है कि तू जानती हो या न जानती हो, तेरा यह सारा असन्तोष तेरी विवाह करनेकी इच्छाका सूचक है। विवाह करनेके बाद तू सुखी ही होगी, ऐसी बात नही है। किन्तु विवाह किया कि बन्धनमे बँधे। फिर सुख-दुखका सवाल नही रहता। ऐसी ललचानेवाली और विचित्रतापूर्ण है यह चीज! अपने मनसे पूछना कि तुझे विवाह करना है या नही। यदि ऐसा उत्तर आये कि विवाह नही करना है तो अपना शरारती स्वभाव सुधरने और अज्ञान दूर होने तक तुझे आश्रममे ही रहना चाहिए। यदि प्रेमाबहनपर तू विश्वास करती हो तो उनसे खुले मनसे बात करना। तू चाहे तो मुझे लिखना और यदि महादेवको लिखना चाहे तो उन्हे लिखना। जिसे भी लिखे गम्भीरतापूर्वक लिखना। कमलाके आलस्यके कारण मुझे प्रसन्नता नही हुई। मगलाके लिए तो जो मैंने बताया, वही इलाज है। ऐसा लगता है कि अब तो वह मुझे भूल ही गई है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४०६७) से। सी० डब्ल्यू० १८ से भी, सौजन्य . शान्ताबहन पटेल

१. शंकरभाई पटेलकी कन्या।

५८९. पत्र : गुलामरसूल और अमीना कुरैशीको

६ नवम्बर, १९३२

चि० कुरैशी,

तुम्हारा लिखा सुन्दर वर्णन मुझे मिला। मेरी तो कामना है कि तुम दोनोका स्वास्थ्य भी इतना ही सुन्दर रहे।

बापूकी दुआ

चि० अमीना,

मुझे पत्र लिखनेसे बचना चाहती है, सो नही होगा। मैंने तुझे अपना स्वास्थ्य सुधारनेको लिखा था। वैसा करनेकी हिम्मत करे तो अच्छा हो।

बापूकी दुआ

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६६६२)से।

५९०. पत्र : नर्मदाबहन राणाको

६ नवम्बर, १९३२

चि० नर्मदा,

तेरा पत्र मिला। वाक्य पूरा हो जानेके बाद उसके अन्तमे बिन्दी लगानी चाहिए। इसे [गुजरातीमें] पूर्णविराम कहते है।

तूने 'उतस्व' लिखा है, किन्तु सही शब्द 'उत्सव' है। तूने 'पूत्री' लिखा है, किन्तु होना चाहिए 'पुत्री'। इसी प्रकार तूने 'स्विकारशो' लिखा है, लेकिन 'स्वीकारशो' होना चाहिए।

पण्डितजी ने तुझे सगीत सिखाना बन्द कर दिया, इस कारण तुझे दुःखी नही होना चाहिए। पण्डितजी ने जो-कुछ किया है, सोच-समझकर ही किया है, यह मानकर सन्तोष कर लेना चाहिए।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७६६) से, सौजन्य रामनारायण एन० पाठक

५९१. पत्र : रतिलाल सेठको

६ नवम्बर, १९३२

भाई रतिलाल,

मैंने तुम्हे बम्बईके पतेपर एक पत्र लिखा था, उसका उत्तर अवतक आना चाहिए था, पर नही आया। इस बीच आज लीलावतीका तार मिला। उसमे वह लिखती है कि छगनलाल थिटान गया है। किन्तु वह तुम्हे और नानालालको पचके रूपमे स्वीकार करती है। इससे मेरा बोझ हलका हो जाता है। अब मै तुम्हारे पत्रका इन्तजार कर रहा हूँ। मै चाहता हूँ कि तुम जैसे बने वैसे जल्दीसे-जल्दी रगून जानेके लिए तैयार हो जाओ। यदि नानालाल और तुम, दोनो साथ ही जाओ तो बहुत अच्छा हो। इस समस्याको हल करना बहुत जरूरी है।

वापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१६९) से। सी० डब्ल्यू० ४६६३ से भी; सौजन्य: नारणदास गाधी

५९२. पत्र : रेहाना तैयबजीको

६ नवम्बर, १९३२

प्यारी बेटी रेहाना,

वाह, अब तो तुने खत लीखने बन्ध कर दीये है क्या? हर हफ्तामे कम-ज-कम एक खत तो मुझे चाहिये। जब तुम्हारा खत नही आता है, मै डर जाता हू कि तुं बिमार तो नही होगी? तुमको मैंने लीखा है के नही कि मुझे दुसरी उस्तानी मिल गई। वह है जोहरा अन्सारी। बहुत दीलचस्पीसे सबक दे रही है। हरूफ बहुत अच्छे नीकालती है।[1]

मुझे [उर्दूमे] खत लिखना सिखाना। जनाब कब लिखा जाता है, मौलवी कब और किसे लिखा जाता है? तुझे क्या लिखना चाहिए? क्या मैंने तेरा पता ठीक लिखा है? खबरदार, अगर बीमार पडी तो। और अगर बीमार हो ही जामे तो

१. यहाँतक का अंश उर्दूमें है।

हमीदासे कहना कि मुझे लिखे। अब्बाजान और अम्माजानको आदाब। तुम सबको मेरे आशीर्वाद।

बापू

बीबी रेहाना
मार्फत — अब्बास साहेब
कैम्प
बड़ौदा

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६६७) से।

५९३. पत्र : अमतुस्सलामको

६ नवम्बर, १९३२

प्यारी बेटी अमतुस्सलाम,

तुम्हारा खूबसूरत खत मिला। हरूफ बहुत अच्छे हैं। ऐसे ही लिखा करो। हिप बाथ जरूर लो। उससे तो फायदा होना चाहिए। नया काम भले लिया। लेकिन हदसे ज्यादा न किया जाये। जितना हो सके उतना करो और खुदाका अहसान मानो। मेरी दुआए तो तुम्हारे पास हमेशा हैं ही। कुदसियाकी कुछ भी फिकर मत करो। उसकी फिकर नारणदास करते हैं। फिर तुम क्यों करोगी? डा० शर्माके बारेमें तुमने कुछ नही लिखा है। वह आनेवाले थे उसका क्या हुआ?

बापूकी दुआएँ

उर्दूकी फोटो-नकल (जी० एन० २६२) से।

५९४. पत्र : कपिलराय एम० मेहताको

[७ नवम्बर, १९३२ के पूर्व][1]

चि० कपिल[2],

तुम्हारी तबीयतके बारेमे कुछ सुना था, इसीसे तुम्हारे पत्रकी उत्सुकतासे राह देख रहा था। तभी तुम्हारा पत्र भी आ गया। अब पहले तो तुम्हे अपनी तबीयत बिलकुल ठीक कर लेनी है। उसके बाद ही काममें लगना है। जो जेलसे डरकर खादीका आश्रय लेते हैं वे दम्भी है, लेकिन जो खादीकी आवश्यकतामे विश्वास रखनेके बावजूद सिर्फ दम्भी माने जानेके भयसे जेलका आश्रय लेते है वे मिथ्याभिमानी हैं। हमारे लिए तो दम्भ और मिथ्याभिमान दोनो त्याज्य हैं। इसलिए जब जो

१. पत्रकी विषयवस्तुको देखनेसे लगता है कि यह "पत्र : कपिलराय एम० मेहताको", ७-११-१९३२ को लिखे पत्रके पहले लिखा गया था; देखिए पृ० ३९५।

२. पहले *गुजरात समाचार* और बादमें *सन्देश* के सम्पादक। गुजरात विद्यापीठके छात्र जिन्होंने १९३० के असहयोग आन्दोलनमें भाग लिया था।

सेवा करनेका अवसर आ जाये तब उसीको करनेमे सुख मानना चाहिए। अब तुम्हारे लिए क्या श्रेयस्कर है, इसका निर्णय तो तुम्हारी अन्तरात्मा ही कर सकती है। काका साहब जो कहे सो सुनकर, जैसा तुम्हारी अन्तरात्मा कहे वैसा करना। पत्र लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९७६) से। सी० डब्ल्यू० १६०१ मे भी, सौजन्य : शशिलेखा मेहता

५९५. वक्तव्य : अस्पृश्यतापर – ३

७ नवम्बर, १९३२

एक सज्जनने, जिनसे मै भलीभाँति परिचित हूँ और जो अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनसे सहानुभूति रखते है, यद्यपि उसके पूरे कार्यक्रमसे सहमत नही है, हिन्दी मे एक लम्बा पत्र लिखा है। उसका सार मै नीचे दे रहा हूँ:

> मुझे ऐसी आशका है कि यह आन्दोलन देशके सब भागोमे मर्यादाके अन्दर नही रह पा रहा है। मुझे मालूम है कि अपनेको अस्पृश्यता-विरोधी कार्यकर्ता बतानेवाले कुछ लोग सन्दिग्ध तरीके काम मे ला रहे है, जैसे कि पुरानी व्यवस्थाके अनुयायियोको गालियाँ देना और पवित्र नामोका मजाक उडाना। यदि कोई आपकी कही या लिखी बातोका विश्लेषण करने या आन्दोलनने जो अतिवादी रूप धारण कर लिया है, उसका विरोध करनेकी हिम्मत करता है, तो उसका तुरन्त मजाक उडाया जाने लगता है, उसे अपने धर्मका विरोधी कहा जाने लगता है और भयानक परिणामोकी धमकीतक दी जाती है। उन्हे अछूतोके भौतिक या नैतिक कल्याणकी चिन्ता हो, ऐसा नही लगता। वे समझते है कि सबके मिले-जुले भोजोसे और ट्रस्टियोके विरोध तककी अवज्ञा करते हुए हरिजनोकी भीडको मन्दिरोमे ले जानेसे ही उनका कर्त्तव्य पूरा हो जाता है। मुझे यकीन है कि आप यह कभी नही चाहेगे कि यह आन्दोलन हरिजनोकी कोई सेवा करनेके बजाय केवल ऐसे आडम्बरपूर्ण प्रदर्शनका रूप धारण कर ले जिनका एकमात्र उद्देश्य पुराने विचारोके लोगोकी भावनाओको चोट पहुँचाना हो।

पिछले महीने मुझे अस्पृश्यताके बारेमे कोई सौ पत्र मिले होगे। उनमे यह पहला ही पत्र है जिसमे कार्यकर्त्ताओपर लगभग हिंसात्मक व्यवहार करनेका अरोप लगाया गया है। फिर भी, इस शिकायतको प्रचारित करना मैने आवश्यक समझा — और किसी कारण नही तो केवल इसी कारण कि पत्र-लेखकने कार्यकर्त्ताओ को जो चेतावनी दी है, उसका मै आदर करता हूँ। मै जानता हूँ कि वे जान-

बूझकर अतिरंजना करनेवाले नही हूँ। धर्मके मामलोंमे, बल्कि मुझे कहना चाहिए किसी भी मामलेमे, जबरदस्ती नही की जा सकती। लोग यह अच्छी तरह जानते है कि किसी भी व्यक्तिके प्रति, चाहे वह किसी भी जाति, धर्म या देशका क्यों न हो, किसी भी प्रकारकी हिंसाका मैं सख्त विरोधी हूँ।

इसलिए इस आन्दोलनके संचालकोको यह समझ लेना चाहिए कि सम्भावित उपवाससे मुझे बचानेकी अपनी अधीरताके बावजूद उन्हे आन्दोलनकी रफ्तारमे सन्दिग्ध तरीकोके उपयोगसे तेजी नही लानी है। यदि वे ऐसा करेगे, तो केवल मेरा अन्त ही निकट लायेंगे। जिस आन्दोलनके लिए, जैसी कि मेरी अपनी मान्यता है, ईश्वरने मुझे वह छोटा-सा उपवास करनेकी प्रेरणा दी, उसीको ऐसा विकृत रूप धारण करते देखना मेरे लिए जीते-जी मौतके समान होगा। हुल्लड़बाजीके तरीकोसे हरिजनो और हिन्दू धर्मकी सेवा नही होनी है। यह यदि विश्वका नही तो शायद भारतका तो सबसे बड़ा धार्मिक सुधार-आन्दोलन है, क्योकि इसमे दासताका जीवन बितानेवाले लगभग छ. करोड़ मानव-प्राणियोंका कल्याण निहित है।

पुराने विचारोवाला जो वर्ग इसके विरुद्ध है, उसके प्रति हर तरहकी शिष्टता बरती जानी चाहिए और उसका पूरा खयाल रखा जाना चाहिए। हमे उन्हें प्रेमसे, आत्मत्यागसे, पूर्ण आत्मसंयमसे और उनके हृदयोपर अपने जीवनकी पवित्रताका मूक प्रभाव डालकर जीतना है। हममे यह आस्था होनी चाहिए कि हमारा सत्य और प्रेम हमारे विरोधियोंको हमारी राहपर ले आयेगा। इसमें जरा भी सन्देह नही कि छ. करोड़ मानव-प्राणियोकी युगों पुराने दमनसे मुक्ति केवल दिखावटी प्रदर्शनोसे नही होनी है। उसके लिए सभी मोर्चोंपर आक्रमणका ठोस और रचनात्मक कार्यक्रम आवश्यक है। इस अभियानके लिए हजारों ऐसे स्त्री-पुरुषों, लड़के-लड़कियोकी एकाग्र शक्तिकी जरूरत है जो सर्वोच्च धार्मिक उद्देश्योंसे प्रेरित हों। इसलिए जिन्हे इस आन्दोलनका विशुद्ध धार्मिक स्वरूप पसन्द न हो उनसे मैं सादर आग्रह करूँगा कि वे इससे अलग हो जाये। जिनमे श्रद्धा और उत्साह है, वे चाहे थोड़े हो या बहुत, वही इस आन्दोलनमे काम करे।

अस्पृश्यता-निवारणके महान् राजनीतिक परिणाम निकल सकते है, बल्कि वास्तव मे निकलेगे, पर यह राजनीतिक आन्दोलन नही है। यह सीधा-सादा केवल हिन्दू धर्मकी शुद्धिका आन्दोलन है और वह शुद्धि केवल शुद्धतम साधनोसे ही सम्पादित की जा सकती है। ईश्वरकी कृपासे आज भारतके सभी भागोमे इस तरहके हजारों नही तो सैकड़ो साधन तो काम कर ही रहे है। अधीर और शंकाशील लोग प्रतीक्षा करे और देखें; पर प्रशसनीय उद्देश्योसे प्रेरित होते हुए भी जल्दबाजी और नासमझी-भरे हस्तक्षेपोके द्वारा इस आन्दोलनको बरबाद न करे।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-११-१९३२

५९६. पत्र : भारत सरकारके गृह-सचिवको

७ नवम्बर, १९३२

सचिव, भारत सरकार
गृह-विभाग
नई दिल्ली

प्रिय महोदय,

मेरा ध्यान अभीतक केवल एक ही विषयपर केन्द्रित था — एक ऐसे विषय पर जिसके कि अस्पृश्यता-सम्बन्धी कार्यके मार्गमे अलघनीय बाधा बन जानेकी आशका थी। इसलिए कोई और बात मै सोच ही नही सकता था। यह प्रसन्नताकी बात है कि वह सकट अब समाप्त हो गया है। अत॰ भारत सरकारसे अब मैं उसके कुछ ऐसे फैसलोपर बात करना चाहूँगा जिन्हे मै समझ नही पाया हूँ।

यदि मुझे अनुमति हो तो मै यह जानना चाहता हूँ कि मौलाना शौकत अली,[1] अबुल कलाम आजाद[2] और डॉ० अन्सारीको जवाबमे लिखे गये मेरे वे तार, जिनमे मैंने हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित होनेकी आशा व्यक्त की थी, भेजे जानेकी अनुमति क्यो नही दी गई। हिन्दू-मुस्लिम एकताके इसी प्रश्नपर मुझसे मुलाकात करनेकी मौलाना शौकत अलीकी प्रार्थनाके बारेमे उनके और महामहिम वाइसरायके बीच हुए पत्र-व्यवहारको मैंने समाचार-पत्रोमें देखा है। उन्हे मुझसे मिलने न देनेके जो कारण बताये गये हैं, यदि वही कारण मेरे तारोको यथास्थान पहुँचानेकी अनुमति न देनेके भी है, तो यह चीज मेरी समझमे नही आती कि सविनय अवज्ञासे मेरे लगावका हिन्दू-मुस्लिम एकतासे आखिर क्या सम्बन्ध है। सविनय अवज्ञासे मेरा लगाव सरकार को बुरा लगता है। परन्तु मैं ऐसी आशा करता हूँ कि हिन्दू-मुस्लिम एकतापर मेरे विचार और उसे बढ़ावा देनेकी मेरी इच्छा उसे बुरी नही लगती। मेरा यह अनुमान यदि ठीक हो, तो मै इस मुलाकात और अपने तारोपर प्रतिबन्धका केवल यही अर्थ लगा सकता हूँ कि मुझे और, जो लोग मुझसे मुलाकात या पत्र-व्यवहार करना चाहते हैं — सो भी ऐसे मामलोके बारेमे जिनका सविनय अवज्ञासे कोई ताल्लुक नही है — यह उन लोगोको दी जा रही एक सजा है और वह इसलिए दी जा रही है कि मै अपनी अन्तरात्माके आदेशो और अपने विवेकको त्यागने और अपने-आपको सविनय अवज्ञासे अलग करनेके लिए तैयार नही हूँ। आशा है कि भारत सरकारने इस तरहकी किसी सजाकी बात नही सोची है।

१. देखिए "तार: शौकत अलीको", ७-१०-१९३२।
२. देखिए "तार: अबुल कलाम आजादको", २०-१०-१९३२।

भारत सरकारको यह मानना होगा कि एक कैदीकी हैसियतसे मैंने अधिकारियोंको खुशीसे अपना सहयोग दिया है। मैं चाहूँगा कि यह सहयोग बुद्धिसम्मत भी हो। जहाँ भी सम्भव हो, मुझे यह मालूम होना चाहिए कि कुछ विशेष प्रार्थनाएँ क्यों अस्वीकार की जाती हैं। जहाँतक सम्भव है, मेरी कोशिश यही रहती है कि अयुक्तियुक्त प्रार्थनाएँ न की जायें। वे आम तौरपर या तो मेरे स्वास्थ्यके या लोक-कल्याण के हितोंके लिए ही रही हैं, स्वार्थपूर्तिके लिए नहीं।

इस पत्रमे उल्लिखित तारोंका जहाँतक सम्बन्ध है, उन्हें भेजनेकी अब कोई जरूरत नही है। परन्तु अस्पृश्यतासे बाहरके और सविनय अवज्ञासे कोई सम्बन्ध न रखनेवाले सार्वजनिक मामलोंसे निपटनेकी स्थितियाँ तो निस्सन्देह पैदा होंगी ही। इसलिए मैं न केवल पूर्वोक्त मामलोमें अनुमति न देनेके कारण, बल्कि इस तरहकी स्थितियोमे सरकारकी भावी नीति भी जानना चाहूँगा।[1]

भवदीय,

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं० ८०० (४०) (४), भाग १, पृ० ३०५

५९७. पत्र : मनुबहन गांधीको

७ नवम्बर, १९३२

चि० मनुड़ी,

तू बहुत आलसी और भुलक्कड़ जान पड़ती है। जब तू विलम्बसे पत्र लिखती है तो यह वचन देती है कि अब आलस्य नही करूँगी, किन्तु फिर भूल जाती है और वचन भंग करती है। यह बुरी बात है। हम जो-कुछ कहें, उसका पालन करें और जिसका पालन न कर सकें, वैसी कोई बात कहनी ही नही चाहिए। तुझे तो हर

१. गृह-सचिवने १६ नवम्बरके अपने पत्रमें बम्बई सरकारसे गांधीजी को यह सन्देश पहुँचानेको कहा: "भारत सरकारने, असाधारण कारणोंसे, श्री गांधीको अस्पृश्यता-निवारणकी सामाजिक और नैतिक समस्याके बारेमें अपना कार्यक्रम जारी रखनेके लिए सुविधाएँ प्रदान कर दी हैं। परन्तु सविनय अवज्ञा, जो अब भी उनका स्पष्ट घोषित कार्यक्रम है, के नेताकी हैसियतसे उनकी स्थिति उनका राजबन्दीके रूपमें नजरबन्द रखा जाना आवश्यक बना देती है: और बन्दी होनेके कारण, वे देशके सामान्य सार्वजनिक जीवनमें या राजनीतिक प्रश्नोंके विचार-विमर्शमें भाग लेनेकी आशा नहीं कर सकते — इन प्रश्नोंका सविनय अवज्ञासे कुछ भी सम्बन्ध न हो, तो भी। इसलिए भारत सरकार श्री गांधीको इस तरहके प्रश्नोंसे निबटनेकी सुविधाएँ देनेको तैयार नहीं है।" भारत सरकार, होम डिपार्टमेंट, पॉलिटिकल, फाइल नं० ३१/९५/३२।

रविवारको एक पत्र लिखना चाहिए और उक्त पत्र आश्रमको भेज देना चाहिए। उसमे हर सप्ताहका कार्य-विवरण देना चाहिए — क्या पढा, अन्य कौन-सा काम किया और कितना काता। तू यह जानती है न कि हमे घरमे भी खादी ही पहननी चाहिए?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० १५१७) से, सौजन्य: मनुबहन मशरूवाला

५९८. पत्र : नारणदास गांधीको

७ नवम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

तुम्हारी डाक नियमानुसार कल मिल गई थी। साथमे विट्ठलका पत्र भेज रहा हूँ। उसको मैने उत्तरमे लिख दिया है कि वह तुमपर विश्वास रखे और लीलावरको भूल जाये। यदि उसकी पितृभक्ति उसमे मोह उत्पन्न करे तो वह लीलावरके साथ जाकर कमाईका कोई रास्ता अपनाये। एक हाथ दहीमें और एक दूधमे, यह तो नही हो सकता। अगर उसके पत्रमे तुम्हारे जवाब देने लायक कोई बात हो तो जवाब दे देना।

जेठालालका भी पत्र आया था। वह अपना दोष तो कबूल करता है, फिर भी उसे छुट्टी दे दी गई, इसे वह गैरइन्साफी मानता है। उसमे पश्चात्तापका भाव दिखाई नही देता। उसे मैने एक बडा पत्र लिखकर बताया है कि जबतक उसमे शुद्ध पश्चात्तापका भाव न जगे, मै उसे आश्रम लौटनेकी सलाह न दूंगा। लेकिन अगर तुमको वह सन्तोष दे सके और तुम्हारी इच्छा उसे वापस ले लेनेकी हो तो मै बीचमे न पडूँगा। उसका पत्र भेजकर तुम्हारा वक्त बरबाद करना मैने ठीक नही समझा और इसलिए उसे फाड़ डाला है।

कान्तिका पत्र दुःखद लगा। उसका सुन्दर शरीर जर्जर हो गया लगता है। इसलिए आज तार किया है कि राजकोट चला जाये तो अच्छा हो। उसी तारमे प्रेमाका भी ऑपरेशन करानेको लिखा है। मेरा एक नियम याद रखना। जिसको बुखार आये, उसकी फलके अलावा सब खुराक बन्द कर दी जाये। और अगर पौष्टिक खुराक देनेकी जरूरत हो तो केवल दूध ही दिया जाये। इस नियमका पालन न किया जाये और बुखार कही टाइफाइड साबित हो तो इसका परिणाम भयकर हो सकता है।

खुराकके बारेमे जो प्रयोग चल रहा है, उसके बारेमें भी एक नियम बता चुका हूँ। उसे यहाँ फिर बता रहा हूँ। जिसको जिस चीजसे नुकसान हुआ लगे, उसको वह चीज एक-दो दिनोके लिए छोड़ देनी चाहिए। उसके बदले कुछ और नही लेना चाहिए। इस तरह, बहुत सम्भव है, वही वस्तु उसे रास आ जाये।

मदानकी पुस्तक अब तो मिल गई होगी।

छगनलाल अबतक यहाँ नही पहुँचा।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२६६ से भी; सौजन्य: नारणदास गाधी

५९९. पत्र: निर्मलाबहन गांधीको[1]

७ नवम्बर, १९३२

तुझे कहानदास नाम अच्छा नही लगता, तो फिर रामदासके बारेमे भी ऐसा ही समझा जाये न? तब तो तुझे रामदासके लिए भी बत्तीस बरसकी उम्रमे नया नाम ढूंढना चाहिए? रामदास खुद दास ठहरा, इसलिए उसे तो दूसरा दासवाला नाम ही पसन्द होगा। इसलिए उसकी पसन्द किस कामकी? मुझे तो तुझे रिझाना है। निर्मलदास रखे तो? अथवा निर्मललाल? अपनी पसन्दके अन्य नाम भी भेजना। रामदासके लिए भी कोई नया नाम भेजना!

क्रोधके प्रति क्रोध नही, अवगुणके प्रति अवगुण नही; क्रोधके बदले शान्ति, अवगुणके बदले गुण, गालीके बदले प्रेम और बुराईके बदले भलाई — यह धर्म है, यह आश्रम-व्यवहार है। खबरदार जो इसमे चूकी।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१२-३

६००. पत्र: रामदास गांधीको

७ नवम्बर, १९३२

तेरे पत्रका जवाब आज दे रहा हूँ। इससे भी जल्दी देनेका इरादा था, मगर तेरी इच्छाके अनुसार श्लोक ढूंढने लगा, तो मनमें खयाल आया कि तू जिन्हे आसानी से पचा सके ऐसे श्लोक एक ही बारमें सग्रह करके भेज दूं तो अच्छा होगा। वह आज कर सका हूँ और इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। उनमे अध्याय और श्लोकोकी क्रम-सख्याएँ दे दी गई है, जिससे तू यह भी ढूंढ सके कि वे 'गीता' मे कहाँ है। इसमे तू देखेगा कि सभी श्लोक हृदयस्पर्शी है, ऐसे है जिन्हे बालक भी झट समझ जाये। इसमे तू यह भी देखेगा कि भगवान्‌ने एक बार नही, बल्कि कई बार कहा है कि जो उसकी भक्ति करेगा उसे आवश्यक बुद्धि वही दे देगा, उसका निर्वाह भी वही करेगा। भक्तिका अर्थ है — जिसमे ईश्वर है, ऐसे जीव-मात्रकी नि स्वार्थ भावसे की

१. रामदास गांधीकी पत्नी।

गई सेवा। इसमे आत्मशान्तिके लिए रामनामका जप भी आ गया। फिर, तू देखेगा कि छठे अध्यायमे से जो सग्रह किया है, उस सग्रहमे भी, मै फिलहाल तुझे जो-कुछ देना चाहता हूँ, वह आ जाता है। ग्यारहवे अध्यायके श्लोकोका सग्रह अर्जुन द्वारा की गई भव्य स्तुतिका भव्यतम भाग है। और अठारहवे अध्यायका आखिरी श्लोक 'गीता'के अध्ययन और उसपर अभ्यासपूर्वक किये गये आचरणका फल है — अर्थात्, जहाँ श्रीकृष्ण हैं, यानी शुद्ध ज्ञान है और जहाँ अर्जुन है, यानी ज्ञानपूर्वक किया गया कर्म है, वहाँ सब-कुछ है। इन श्लोकोका मनन करनेसे तू देख सकेगा कि किसी भी तरहकी चिन्ता करनेकी सख्त मनाही है। 'गीता'का अभ्यास करनेवाला कोई चिन्ता कर ही नही सकता। उसमे ऐसा आदेश है कि सब-कुछ ईश्वरके अर्पण कर दो — सब-कुछ, यानी किसी अपवादके बिना। और जो इस तरहसे सर्वार्पण करेगा, वह फिर क्या चिन्ताकी गठरीका भार ढोयेगा?

तूने अब तो जान लिया होगा कि तेरे पेटकी गडबड बहुत विचार और चिन्ता करते रहनेके कारण है, या फिर खानपानमे कुछ रद्दोबदलकी जरूरत है। बूतेसे बाहर अध्ययन भी नही करना चाहिए। मनमे तूने जो-कुछ विचार कर लिया है, वह अब अपने-आप मनमे पकता रहेगा। तू जेलके बाहर निकलेगा तब तेरी शक्तिका अन्दाज लग जायेगा। लगेगा या नही, इस उलझनमे तू भी अभीसे क्यो पडे? ऐसा करनेकी बिलकुल जरूरत नही। श्लोकोका अर्थ 'अनासक्तियोग'मे तो है ही, और सुरेन्द्र भी तेरे पास ही है। मैंने जो सग्रह किया है, उसमें तू अपने-आप या सुरेन्द्र वगैरहकी सलाहसे कमी-बेशी कर सकता है। जो श्लोक चुनने थे, उनको मैंने पहले ही नोट कर लिया था। मेरे पास जो 'गीता' है, उसमे उन्हे नोट करते हुए सहज भावसे मैंने इन्हे 'रामदास-गीता' नाम दे दिया है। अब देखना है कि तुझे ये कहाँतक ले जाते है।

अब एक हँसीकी बात लिखूँ। नीमूने बच्चेका नाम सुझानेको लिखा था। सविताने तो उसे कहानजी नाम दे ही दिया है। इसपर यह सोचकर कि तेरे नामके साथ मेल खाये और सविताकी इच्छा भी पूरी हो जाये, मैंने कहानदास सुझाया। लेकिन जिसके अन्तमे दास आये, वह नीमूको कैसे भाये? इसलिए उसने नापसन्दगी जाहिर की और दूसरा नाम सुझानेको कहा; और अन्तमे लिखा कि इतनेपर भी तू कहानदास पसन्द कर ले, तो वह भी काम चला लेगी। वसुमतीने बूआजी होनेका दावा पेश किया और लिखा कि मै तो अब बूढा हो गया हूँ, इसलिए बूढोकी पसन्दका नाम ही ढूँढ निकालूंगा, और यह तो बूआ स्वीकार नही करेगी? इसलिए उसने ऐसा नाम सुझानेको कहा है, जो बीसवी सदीको शोभा दे। वसुमतीको जवाब दे दिया है कि नाम देनेका ठेका बूआजी का ही होता है, इसलिए उसे जो नाम देना हो, वह दे दे। मैंने उसके चुनावके लिए दो-चार नाम सुझाये है — जैसे फक्कडलाल, छोगालाशंख, लखतरलाल, वारडोलीकर और साबरमतीवाला।[1] और नीमूको सुझाया है निर्मललाल। और उसे लिखा है कि यदि कहानदास नाम पसन्द नही है, तो रामदास

१. ये सब काल्पनिक और मजाकमें रखे गये नाम हैं।

नाम भी शायद ही पसन्द हो। इसलिए मैंने उसे तेरे लिए भी नया नाम सुझानेको लिखा है। यह भी सुझाते-सुझाते रह गया कि तेरा नाम 'निर्मलकान्त' रखे। मगर ऐसा करने लगेगे तो बीसवी सदीके बजाय हम तो ठेठ रामायण-युगमे चले जायेगे, क्योकि उस जमानेमे पतिकी पहचान पत्नीके नामसे होती थी। रामचन्द्र सीतापति थे, कृष्ण लक्ष्मीकान्त, और महादेव पार्वतीपति — ऐसे कई उदाहरण मिल जाते है। तुझे इस गूढ़ प्रकरणपर कोई प्रकाश डालना हो तो डालना।

तूने पूछा है कि मैंने अनासक्ति कैसे साधी? मेरा सब काम स्वाभाविक होनेसे, यानी सत्यकी साधनासे स्फुरित होनेके कारण, बहुत आसान हो गया है। जगत्-भरकी सेवा करनेकी भावना उदित हो जानेपर अनासक्ति सहज ही आ जाती है। मै अगर सिर्फ कुटुम्बियोकी ही सेवा करने बैठ गया होता, तब तो उसमे सहज ही राग पैदा हो जाता, आसक्ति भी रहती, व्याधि, मृत्यु वगैरहकी चिन्ता भी रहती; मगर जहाँ असख्योकी सेवा अपना ली जाती है, वहाँ चिन्ता मिट ही जाती है। किस-किसकी मृत्यु या व्याधिकी चिन्ता की जाये? वह लगभग असम्भव हो जाती है। मगर अनासक्तिका मतलब जडता भी नही है, निर्दयता भी नही, क्योकि सेवा तो करनी ही होगी। इसलिए दयाकी भावना मन्द पड़नेके बजाय तीव्र हो जाती है; कार्यदक्षता भी बढती है और एकाग्रता भी। और ये सब अनासक्तिके चिह्न है। फिर, खूबी यह है कि ऐसा करनेसे कुटुम्ब-सेवा समाप्त नही हो जाती, क्योकि सबकी सेवामे यह सेवा भी आ जाती है। मेरा दृढ विश्वास है कि बा की, तुम भाइयोकी या किसी भी कुटुम्बी-जनकी सेवा मेरे हाथो कम हुई हो, सो मै नही मानता। उसमे से आसक्ति मिट गई और समभाव आ गया इससे वह शुद्ध हो गई। मेरा विश्वास है कि इससे तुम लोगोमे से किसीने कुछ भी खोया नही और मैंने तो बहुत-कुछ पाया है। इस प्रकार मेरे लिए तो अनासक्ति सुलभ हो गई। 'अनासक्ति' नाम तो जब मै 'गीता'का अनुवाद पूरा कर चुका और काकाने उसके लिए एक खास नाम सुझानेको कहा तब मुझे सहज ही सूझ गया। सबकी सेवा करनी हो तो वह अनासक्तिपूर्वक ही हो सकती है, मगर ऐसी कोई बात नही थी कि यह ज्ञान प्राप्त करनेके बाद ही मैंने अनासक्तिको अपनाया। मुझे तो धीरे-धीरे मालूम हुआ कि मै अनासक्त भावसे काम कर रहा हूँ, आस-पासके लोगोको मुझसे पहले मालूम हो गया। मै जब हिन्दुस्तान आया तब मुझे साधारण लोग 'कर्मयोगी'के रूपमें जानने लग गये थे। 'गीता'का अध्ययन तो मै दक्षिण आफ्रिकामे भी करता था, मगर 'कर्मयोगी' क्या होता है, यह सब मैंने सोच नही रखा था। परन्तु दूसरोंने देखा कि मेरे जीवनमे यह सब है और बादमे मुझे भी ऐसा लगने लगा कि उनकी बात सही है। ऐसा सुयोग सभीको नही मिल सकता। मुझे मिला, इसका कारण मै यह मानता हूँ कि मै जन्मसे सत्यका पुजारी रहा हूँ। मगर अभी तो तुझे इस चक्कर मे पडनेकी जरूरत नही है। तुझे तो अभी अनासक्तिपूर्वक अनासक्ति साधनी है। यानी खेलते-कूदते, आनन्दपूर्वक, जिस सेवाका अवसर हाथ आये, उसे कर डालना है। ऐसा करते-करते जो अध्ययन हो जाये वह कर ले। न नीमूका विचार कर, न

बच्चोका। तेरा और उनका विचार करनेवाला तो परमेश्वर है, यह तो अब तू नई दृष्टिसे 'रामदास-गीता' मे देखेगा। यह सिर्फ बुद्धिसे ही माननेकी नही, श्रद्धापूर्वक अमलमे लानेकी बात है। ऐसा करनेसे तू सुखी होगा और तुझे सब-कुछ आ जायेगा। नवे अध्यायमे भगवान्का जो वचन है उसे रट लेना -- भारी दुराचारी जन भी अनन्य भावसे उसकी भक्ति करे तो वह साधु है। पृथ्वी रसातलमे चली जाये, तो भी भगवान्के वचन मिथ्या नही हो सकते। अब और क्या लिखूं?

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१४-७

६०१. पत्र : कपिलराय एम० मेहताको

७ नवम्बर, १९३२

चि० कपिल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहे सो अवश्य करना। दुविधामे कोई कदम मत उठाना। मैं, काका साहब या अन्य कोई भी पूरी बात जाने बिना निश्चित राय दे ही नही सकता। इसलिए सबको अन्तिम निर्णय तो स्वय ही कर लेना चाहिए। यह नियम तुम्हारे लिए तो विशेष रूपसे लागू होता है। अपने शरीरसे उतना ही काम लेना जितना काम वह दे सके। जल्दी अच्छे हो जाओ। पत्र लिखते रहना।

बापूके आशीर्वाद

भाई कपिलराय मेहता
मार्फत—श्रीयुत रसिकलाल बोरा
सब-डिवीजनल ऑफिसर
गवर्नमेंट एग्रीकल्चर फार्म
हड़पसर

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९७१) से। सी० डब्ल्यू० १५९९ मे भी, सौजन्य शशिलेखा मेहता

६०२. पत्र : रामीबहन कुँ० पारेखको

७ नवम्बर, १९३२

चि० रामी[1],

तूने बहुत दिनो बाद पत्र लिखा, और सो भी बली[2] द्वारा प्रेरित करनेपर ही लिखा न? तुझे स्वय पत्र लिखनेकी बात नही सूझती — यह सच है न?

तू सपरिवार सुखी रहे, इसीमे मुझे सन्तोष है। यदि कभी-कभी किसीके कहनेसे ही पत्र लिख दिया करे तो मुझे प्रसन्नता होगी। किन्तु कुँवरजी तेरी तरह आलसी नही है। वे क्यो नही लिखते? उनसे लिखनेको कहना। क्या बम्बईमे घरका खर्च पूरा पड़ जाता है? क्या तुझे वहाँकी आबोहवा माफिक आई?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९७१८) से। सी० डब्ल्यू० ६९९ से भी, सौजन्य : नवजीवन ट्रस्ट

६०३. पत्र : बलीबहन एम० अडालजाको

७ नवम्बर, १९३२

चि० बली,

तूने बहुत दिनो बाद पत्र लिखा। किन्तु तेरे दोष निकालनेका मन नही होता। मै यह मानता हूँ कि तूने अपने सिरपर बहुत बोझ ले रखा है। ऐसी स्थितिमे यदि तू केवल औपचारिकताकी खातिर पत्र नही लिख पाती तो इसमे मुझे कोई बुराई नजर नही आती। ऐसा लगता है कि तू तो अपनी बहनोके कुटुम्बोकी देखभालके लिए ही जीवित है। किन्तु यह भी एक कर्त्तव्य है और अच्छा है। यदि तू स्वार्थवश अलग-थलग जाकर बैठ गई होती तो तुझे कौन रोक सकता था? इसके बजाय तूने छोटा ही सही फिर भी सेवाका मार्ग खोज निकाला है। ईश्वर तेरा कल्याण करे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५०५७) से; सौजन्य : मनुबहन मशरूवाला

१. हरिलाल गांधीकी कन्या।

२. बलीबहन एम० अडालजा, हरिलाल की साली।

६०४. भेंट : समाचार-पत्रोंको[1]

७ नवम्बर, १९३२

यरवडा जेलमें श्री गांधीकी एसोसिएटेड प्रेसके प्रतिनिधिकी विशेष भेंटवार्त्ता हुई। उसमें श्री गांधीने इस बातपर जोर दिया कि दक्षिण भारत तूफानका केन्द्र बन गया है और उन्होंने समझाया कि गुरुवायूरका प्रश्न इतना महत्त्वपूर्ण क्यो है कि उन्होंने उसके लिए इतनी बड़ी कीमत चुकानेका इरादा जाहिर किया है।

. . . आरम्भिक पूछताछका जवाब देते हुए उन्होने कहा कि अभी तो वे बस एक वक्तव्य ही जारी करेंगे, लेकिन वे बिड़ला समितिके साथ पत्र-व्यवहार कर रहे हैं और इस महीनेके अन्तमें जब वे उन लोगोसे मिलेंगे तब अन्य योजनाएँ तय की जायेंगी।

जब श्री गांधीसे डॉ० अम्बेडकरके इस वक्तव्यके बारेमें पूछा गया कि मन्दिर-प्रवेशका प्रश्न इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है कि उसके लिए वे अपनी जानकी बाजी लगायें, तब उन्होंने कहा :

मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नको डॉ० अम्बेडकर जितना तुच्छ समझते है मै नही समझता। मेरे विचारसे यह इस बातकी निर्णायक कसौटी है कि सनातनी हिन्दुओके मनपर समयकी पुकारकी अनुकूल प्रतिक्रिया हुई है या नही और वे हिन्दू धर्मपर लगे अस्पृश्यताके काले दागको धोनेको तैयार है या नही। मेरे खयालसे जो शर्तें सवर्ण हिन्दुओके लिए है बिलकुल उन्ही शर्तोपर सभी सार्वजनिक मन्दिर हरिजनोके लिए खोल देनेसे हिन्दू जनमानस, जिसमे हरिजन भी शामिल है, जितना उद्वेलित होगा उतना और किसी चीजसे नही होगा। डॉ० अम्बेडकरकी अपेक्षाकृत उदासीनताको मै समझ सकता हूँ। पर मै दलित वर्गोके थोड़ेसे सुशिक्षित लोगोकी बात नही सोच रहा बल्कि बहुत-सारे अशिक्षित और मूक लोगोकी बात सोच रहा हूँ। आखिर, हिन्दू मन्दिरोकी जन-साधारणके जीवनमे बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है और मै, जो जीवन-भर अपनेको सबसे अनपढ और कुचले लोगोके साथ एकाकार करनेकी कोशिश करता रहा हूँ तबतक सन्तुष्ट नही हो सकता जबतक कि सभी मन्दिर हिन्दू समाज के बहिष्कृतोके लिए खोल नही दिये जाते।

परन्तु इसका अर्थ यह नही है कि वे आज जिन अन्य निर्योग्यताओके शिकार है उन्हे मै किसी भी रूपमे कम विचारणीय मानता हूँ। उन्हे मै उतनी ही तीव्रतासे अनुभव करता हूँ जितनी कि डॉ० अम्बेडकर करते है। लेकिन मुझे लगता है कि

१. यह भेंट-वार्त्ता जेल-अधीक्षकके कार्यालयमें हुई थी। उस समय वहाँ महादेव देसाई, प्यारेलाल नैयर और सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटीके पी० कोदण्डराव भी उपस्थित थे।

इस बुराईकी जडे इतनी गहरी है कि विभिन्न निर्योग्यताओमे से हमे कुछको चुनना नही चाहिए बल्कि सभीसे एक साथ निपटना चाहिए। अस्पृश्यता-विरोधी लीगसे मेरे पत्र-व्यवहारमे भी मुख्य स्वर यही है। गुरुवायूर मन्दिर मेरे मार्गमें सयोगसे ही आ गया है और मेरे लिए कोई विकल्प नही रहा है। आखिर श्री केलप्पन मेरे खयालमे भारतके सर्वश्रेष्ठ मूक समाज-सेवियोमे से है। एक समय था जब उनके सामने, वे जब भी चाहते तब, प्रतिष्ठित सामाजिक जीवनका अवसर था। वे मलाबारके सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्ता है। परन्तु उन्होने अपना भाग्य जान-बूझकर उन लोगोके भाग्यके साथ जोड दिया जिन्हे देखने या जिनके पास आनेमे भी सवर्ण छूत मानते है। वाइकोम सत्याग्रहके[1] समय मुझे उनके साथ काम करनेका सुख और सौभाग्य मिला था। उन्होने तबसे और उससे भी पहलेसे अपने-आपको दलित मानवताके उद्धारमे लगा रखा है। जैसा कि सब लोग जानते है, बहुत समय प्रतीक्षा करनेके बाद उन्होने गुरुवायूर मन्दिरको हरिजनोके लिए खुलवानेकी कोशिशमे अपने प्राण देनेका दृढ निश्चय किया था।

परन्तु मुझे उनके उपवासमे एक त्रुटि पता चली और वह तुरन्त ही मैंने उन्हे बताई।[2] यद्यपि उनका यह खयाल था कि विजय आँखोके सामने थी, फिर भी उन्होने उदारता दिखलाई और उसे अपने हाथोसे निकल जाने दिया। अपने कदम उन्होने पीछे हटा लिये और उपवास स्थगित कर दिया। मैंने जब उन्हे तार दिया था तो अपनेको इस बातके लिए वचनबद्ध कर लिया था कि तीन महीनेके उनके नोटिसकी अवधि बीतनेपर यदि उपवास फिर शुरू करना आवश्यक हुआ तो मै उनके साथ उपवास करूँगा। यदि मै अब झिझकता हूँ और केलप्पनको उनके भाग्यपर छोड देता हूँ, तो मै भारतका एक अयोग्य सेवक और एक अयोग्य साथी सिद्ध हूँगा। परन्तु इसमे एक साथीके जीवन या मेरे अपने व्यक्तिगत सम्मानसे अधिक कुछ और भी बात है। हर कोई यह मानता है कि दलित वर्गोंके सवालको इस पीढीके कालमे या अगली कुछ पीढियोके कालमे नही बल्कि अभी हल होना है या फिर कभी हल नही होना है। मेरे-जैसे हजारो ऐसे नर-नारी है जो हिन्दू धर्मको अपनी छातीसे इसीलिए लगाये हुए है कि वे यह मानते है कि इसमे मानसिक, नैतिक और आत्मिक विकासके लिए सबसे अधिक गुजाइश है। लगभग छ. करोड मानव-प्राणियो पर लगा यह कुटिल प्रतिबन्ध उस दावेके विरुद्ध एक स्थायी प्रमाण है। मेरे-जैसे लोगोका यह विचार है कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्मका अभिन्न अग नही है। यह मात्र एक अपवृद्धि है। लेकिन यदि यह बात अन्यथा निकलती है और यदि हिन्दू जन-मानस सचमुच अस्पृश्यतासे चिपटा रहता है, तो मेरे-जैसे सुधारकोके लिए अपने-आपको अपने विश्वासकी वेदीपर बलिदान करनेके सिवा और कोई विकल्प नही है।

मैं इस तानेको धैर्यसे और चुपचाप सुनता रहा हूँ कि इस तरहका उपवास आत्महत्याके समान है, मैं ऐसा नही मानता। इसके विपरीत, गहरी धार्मिक आस्था-

१. यह सत्याग्रह मार्च-अप्रैल, १९२५ में हुआ था और इसका उद्देश्य उन मार्गोंको खुलवाना था जिनपर अस्पृश्योंको चलना मना था, देखिए खण्ड २६।

२. देखिए "तार: के० केलप्पनको", २९-९-१९३२।

वाले व्यक्तियोको जब हर अन्य प्रयास बिलकुल बेकार लगने लगता है तो इस अन्तिम बलिदानके सिवा उनके लिए अपनी आत्माकी व्यथाको प्रकट करनेकी और कोई राह नही रहती। अत यह आन्दोलन, मेरी रायमे, हिन्दू धर्मके बारेमे मेरा जो दावा है उसकी सचाईकी कसौटी है, और जो बात मैंने गोलमेज परिषद्मे कही थी उसे मैं फिर दोहरा सकता हूँ कि यदि अस्पृश्यता जीवित रहती है तो हिन्दू धर्म मर जायेगा और यदि हिन्दू धर्मको जीवित रहना है तो अस्पृश्यताको मरना होगा। आज मैं यह कहनेकी हिम्मत कर सकता हूँ कि इस समय यदि हजारो नही तो सैकडो ऐसे भारतीय नर-नारी जरूर है जो केलप्पन और मेरी तरह हिन्दू धर्मके इस दावेको सिद्ध करनेके लिए अपने प्राण न्योछावर कर देंगे। यह एक सकीर्ण पथ या रूढि नही, बल्कि एक सजीव धर्म है जो अत्यन्त चौकस चेतना, गहरेसे-गहरे चिन्तक और अधिकसे-अधिक ईश्वर-परायण व्यक्तिको भी सन्तोष दे सकता है।

[अंग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-११-१९३२

६०५. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

८ नवम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

उपवासवाले सप्ताहमे मिस्रसे दो तार आये थे, एक मदाम जगलुलका और दूसरा नहास पाशाका। मैंने दोनोका तारसे उपयुक्त उत्तर दिया था।[1] उस सप्ताहमे सभी महत्त्वपूर्ण तार और उनके मेरे उत्तर समाचार-पत्रोको दे दिये गये थे। लेकिन अभी मै देख रहा हूँ कि उपर्युक्त तारोके विकृत पाठान्तर ही बहुत-कुछ हास्यास्पद रूपमे पत्रोमे छप रहे हैं, मानो वे ही उनके वास्तविक पाठ हो। वे मिस्रके देशी समाचार-पत्रोसे किये गये अनुवाद लगते हैं। मै समाचार-पत्रोको उनकी सही नकले देना चाहता हूँ। क्या आप सरकारसे यह पता लगानेकी कृपा करेगे कि क्या मैं समाचार-पत्रोको ये नकले भेज सकता हूँ? निस्सन्देह, ये तार अस्पृश्यतासे सम्बन्धित है। नहास पाशाको तारके सिवा, जो फिलहाल मुझे अपने कागजोमे मिल नही रहा है, मै उनका मजमून इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। 'इडियन सोशल रिफॉर्मर'की विकृत पाठान्तरवाली कतरन भी साथ है, जिससे मूलका कुछ अभास मिल जायेगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गाधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० ३५३

१. देखिए "तार : सफिया जगलुल पाशाको", २४-९-१९३२ और "तार : मुस्तफा नहास पाशाको", २५-९-१९३२।

६०६. पत्र : एम० जी० भण्डारीको

८ नवम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

आपको मेरे लिए प्रेषित हिन्दी मासिक 'वैदिक मैगजीन,' मराठी मासिक 'पुरुषार्थ'—ये दोनो धार्मिक प्रकाशन है—मद्राससे प्रकाशित होनेवाला माननीय श्री नटेसनका मासिक 'इडियन रिव्यू' और शायद अन्य पत्र-पत्रिकाएँ मिलती रही है।

अब क्योकि मुझे अस्पृश्यताके सिलसिलेमे प्रचार-कार्य करनेकी अनुमति मिल गई है, इसलिए मै इन तथा अन्य प्रकाशनोको चाहता हूँ, जिससे कि समाचार-पत्रोमे व्यक्त जनमतसे अपना सम्पर्क रख सकूँ और जहाँ आवश्यक हो वहाँ उनमे निकलनेवाली आलोचनाका खण्डन कर सकूँ।

आपके मनमे शायद यह शका है कि मेरी अपीलके उत्तरमे जो पत्र-पत्रिकाएँ आने लगी है और आ सकती है वे भारत सरकारके हालके निर्णयके अधीन मुझे दी जा सकती है या नही। क्या आप इस विषयमे सरकारी व्याख्या यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र प्राप्त करनेकी कृपा करेगे?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्राच, फाइल न० ८०० (४०) (३), भाग ३, पृ० ३६३

६०७. पत्र : राधाकान्त मालवीयको[1]

८ नवम्बर, १९३२

आपके पत्रकी जिस बातका मुझपर असर हुआ वह है सर्वश्री चिन्तामणि और कुँजरूके बारेमे दी गई जानकारी। इसलिए अब आपको या तो मुझे उनसे इस जानकारीकी पुष्टि प्राप्त करनेमे सहायता देनी है या फिर मुझे उसको प्राप्त करनेकी छूट देनी है।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१७

१. राधाकान्त मालवीयने लिखा था: "उपवास दबाव डालनेका सबसे बुरा तरीका है। इस समझौतेसे कोई सन्तुष्ट नहीं है—चिन्तामणि और कुँजरू भी नहीं।"

६०८. पत्र : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

८ नवम्बर, १९३२

प्रिय मित्र और बन्धु,

आपने यह देखा होगा कि अपनेको सनातनी कहनेवाले लोग गुरुवायूरको अपने आक्रमणका केन्द्र बना रहे है। हमारे पास खोनेके लिए अब समय बिलकुल नही बचा है। मुझे नही मालूम कि आपका स्वास्थ्य आपको, सुधारकोंकी ओरसे, युद्धका मोर्चा सगठित करनेकी कहाँतक अनुमति देगा। पर मै चाहूँगा कि जहाँतक भी सम्भव हो, आप सस्कृतके अपने प्रकाण्ड ज्ञानको इस ध्येयके लिए अर्पित करे। मुझे विश्वास है कि आप स्वय इस विषयमे सोच रहे होगे। पर मै जब बहुत-से मित्रोंको सिरपर मँडराते इस तूफानके बारेमे लिख रहा हूँ, तो आपको भी एक पक्ति लिखनेसे अपनेको रोक नही सका।[1]

मुझे इस बातकी बड़ी खुशी है कि मै यहाँ 'सर्वेंट्स'[2]से कुछ काम ले पा रहा हूँ।

आशा है, आप अब पहलेसे अच्छे होगे।

सप्रेम,

आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
लेटर्स ऑफ श्रीनिवास शास्त्री, पृ० २४३

१. साधन-सूत्रके अनुसार, शास्त्रीने एक मित्रको लिखते हुए कहा था कि मैंने "दो पत्र लिखे है जिनमें उनके [गांधीजीके] विचारोंसे और जिस उपवासकी उन्होंने धमकी दी है, उससे अपनी असहमति मैंने साफ-साफ बता दी है।" शास्त्रीने यह भी कहा था कि वे अस्पृश्योंके मन्दिर-प्रवेशके पक्षमें है

२. सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटीके सदस्य।

६०९. पत्र : जमनालाल बजाजको

८ नवम्बर, १९३२

चि० जमनालाल,

तुम्हारा पत्र अभी मेरे हाथ लगा; उसे सुना और उसका जवाब लिखवा रहा हूँ। तुम्हारे जन्म-दिवसपर, जो तुम चाहते हो, वे सभी आशीर्वाद तुम्हे टोकरियाँ भर-भरकर भेजता हूँ। मृत्यु तो चाहे जब छोटे-बड़े, गोरे-काले, मनुष्य-पशु या दूसरे सबके लिए आने ही वाली है, फिर उसका डर क्या? और उसका शोक भी क्या? मुझे तो अकसर ऐसा लगता है कि जन्मकी अपेक्षा मृत्यु शायद अधिक अच्छी चीज है। जन्मसे पहले माताके गर्भमे जो यातना भोगनी पडती उसे तो पलभरके लिए छोड देता हूँ, किन्तु जन्मकालसे ही जो यातना प्रारभ होती है, उसका तो हमे प्रत्यक्ष अनुभव है। उस वक्तकी पराधीनता कैसी है? और वह तो सबके लिए एक-सी होती है। मृत्युमे, यदि जीवन स्वच्छ हो तो, पराधीनता-जैसी कोई चीज नही रहती। बालकमे ज्ञानकी इच्छा नही होती और न उसमे किसी तरहके ज्ञानकी सम्भावना ही होती है। मृत्युके समय तो ब्रह्ममय स्थितिकी सम्भावना है। इतना ही नही, बल्कि हम जानते है कि बहुत लोगोकी मृत्यु ऐसी स्थितिमे होती है। जन्मके माने तो दु खमे प्रवेश है ही, जब कि मृत्यु सम्पूर्ण दु खोसे मुक्ति हो सकती है। इस प्रकार मृत्युके सौन्दर्यके विषयमे और उसके लाभके विषयमे हम बहुत-कुछ विचार कर सकते है और इसे अपने जीवनमे सम्भव भी बना सकते है। इस प्रकारकी मृत्यु तुमको प्राप्त हो, ऐसे आशीर्वाद और ऐसी कामनामे जो-कुछ भी इष्ट हो, वह सब आ गया। यह कामना करनेमे मेरे दोनो साथी भी शामिल है, ऐसा समझो। तुम्हारे स्वास्थ्यके सम्बन्धमे सब-कुछ जाननेके बाद भी जो विचार मैने बताये है, उनपर मै दृढ हूँ। तुमको अपने खर्चसे भोजन प्राप्त करनेकी सुविधा मिल सके तो उसे प्राप्त करनेमे मै कोई दोष नही मानता। शरीरको एक अमानत समझकर यथासम्भव उसकी रक्षा करना रक्षकका धर्म है। मौज-मजेके लिए गुड़की एक डली भी न माँगो, न लो, परन्तु औषधके तौरपर महँगेसे-महँगे अगूर भी मिल सके, तो प्राप्त करनेमे कोई बुराई नही दिखाई देती। इसलिए ऐसे भोजन-पानको ग्रहण करनेमे उद्विग्न होनेकी आवश्यकता नही है। ऐसी ही स्थितिमे दूसरोको भी ऐसा खाना दिलाया जा सके तो दिलाना चाहिए। मेरी दृष्टिमे जितना गेहूँ मिलता है, उतना खानेकी जरूरत नही है। गुडको बिलकुल छोड देना मै उचित मानता हूँ। तुम्हारे शरीरको गुडकी जरा भी आवश्यकता नही है। इसके बदले निर्दोष शहद लेना अधिक अच्छा है। परन्तु जबतक मीठे फल मिल सकते है, उसकी भी जरूरत नही। दूधमे किसी भी प्रकारका मीठा मिलाना दूधको पचानेमे हानिकारक है। दूधकी मात्रा बढाना अच्छा

है। जैतूनके तेलकी जगह मक्खन लेते हो, यह ठीक ही है। यहाँ जो जैतूनका तेल मिलता है, वह हमेशा शुद्ध नही होता, ताजा तो मिलता ही नही। और मक्खनमे जो विटामिन होते है, वे जैतूनके तेलमे नही होते। सागमे हरी सब्जी होनी चाहिए। आलू वगैरह लगभग रोटीका स्थान लेते है। इनमे स्टार्च होता है। तुमको स्टार्चकी कमसे-कम जरूरत है, और जितनी होगी, वह सब गेहूँसे पूरी हो जायेगी। दाल हर्गिज मत लो। मक्खन यदि काफी ले लो तो दो पौंड दूध काफी है। इसके घटाने-बढानेका आधार वजनके ऊपर है। वजनके स्थिर हो जानेतक, और हजम होता रहे तबतक मक्खन अथवा दूधकी या दोनोकी मात्रा बढाते जाना चाहिए। तरकारियोमे लौकी, भिन्न-भिन्न प्रकारकी सब्जियाँ, फूल गोभी, पत्तागोभी, बिना बीजकी सेम, बैंगन इन सबकी गिनती अच्छी हरी सब्जियोमे होती है। गेहूँका आटा चोकर मिला हुआ होना चाहिए। यदि गेहूँ बिलकुल साफ करके पीसा गया हो तो उसका कोई भी अश नही फेकना चाहिए। फलोमे ताजा अगूर, मोसम्बी, सतरा, अनार, सेव, अनन्नास लेने योग्य है। आजकल जो प्रयोग अमेरिकामे हो रहे है, उनसे मालूम होता है कि एक ही साथ बहुत-सी चीजे नही मिला देनी चाहिए। फल अकेला ही खानेसे उसका गुण अधिकसे-अधिक हमे मिलता है, और खाली पेट खाना तो सर्वोत्तम है। अग्रेजीमें कहावत भी है कि सुबहका फल सोना है और दोपहरका चाँदी है, इसलिए पहला खाना अकेले फलका होना चाहिए। इससे पहले सुबह गर्म पानी पियो तो हर्ज नही। तुमको चौबीसो घटे खुली हवामे रहनेकी इजाजत मिल सकती हो तो ले लेनी चाहिए। खुली हवामे रोज धीमे-धीमे प्राणायाम कर सको तो अच्छा है। रातकी सर्दीसे डरनेकी बिलकुल जरूरत नही। गलेतक अच्छी तरह ओढ़ लिया हो और सिरपर और कानपर कपड़ा लपेट लो तो फिर कोई हानि नहीं होगी। चौबीसो घटे शुद्धसे-शुद्ध हवा श्वासके लिए फेफड़ोमे जाये, यह अति आवश्यक है। सुबहकी धूप सहन हो सके तो इस तरह शरीरको खुली हवामे जितना खुला रख सको, उतना रखना चाहिए। इस सबकी चर्चा डॉ० कट्रेक्टरके साथ कर लेना और फिर जो उचित मालूम हो, सो करना।

माधवजी की गाड़ी तो ठीक चल ही रही होगी। वहाँ जो साथी रहते हो और जो आये उन्हे आशीर्वाद और हम तीनोका यथायोग्य। अस्पृश्यताके सम्बन्धमे यहाँ जो-कुछ चल रहा है, वह शायद तुम जानते होगे। तुमको जो विचार सूझे, वह मुझे लिख सकते हो। उन्हे भेजनेकी इजाजत तुमको वहाँसे मिल सकेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २९०३) से।

६१०. पत्र : नारणदास गांधीको

८ नवम्बर, १९३२

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र मिला, भाऊका नही मिला। तोशक वगैरह चुरा ले जानेवाला चोर तो सब-कुछ जाननेवाला कोई भेदी ही रहा होगा। लाल बँगलेका सामान क्या वहाँसे हटाया नही जा सकता? जब चोर पड़ोसी हो गये है तो चौकसी कहाँतक बढ़ाओगे? चोरसे ही मिला जाये, यह क्या नही हो सकता? रतिलाल और चम्पा क्या यह सब समझते है?

कुल मिलाकर कितना नुकसान हुआ होगा?

राधाको अचानक क्या हो गया?

इजेक्शनपर मेरा विश्वास बहुत ही कम है।

बापू

[पुनश्च :]

अपने यहाँ 'वेदमे ब्रह्मचर्य' नामक एक पुस्तक है। प्रेमा उसे ढूँढ़कर भेज दे।

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/१) से। सी० डब्ल्यू० ८२६७ से भी; सौजन्य : नारणदास गाधी

६११. पत्र : कीकी लालवानीको

८ नवम्बर, १९३२

यह तो सच्ची बात है कि मेरे साथियोको आराम-जैसी कोई चीज है ही नही। क्या करे? भगवानने ही 'गीता'मे बताया है कि वह तो क्षणका भी आराम नही लेता है। उसे तो न सोना चाहिये, न खाना चाहिये, न पानी चाहिये। तब हमारे नसीबमे आराम कैसे हो सकता है?

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१८

६१२. एक पत्र

८ नवम्बर, १९३२

बडी कठिनाई सत्य-पथपर चलनेवालोके लिये यह है कि शास्त्र किसको कहे? जव सस्कृतमे लिखे हुए स्मृति इत्यादि नामसे प्रचलित अनेक ग्रथ मिलते है और उसके विरोधी वचन भी मिलते है तव सादा और श्रद्धालु मनुष्य क्या करेगा? इसी कारण हिन्दू धर्मका सर्वसामान्य सिद्धान्त मैने ग्रहण कर लिया है, सत्य और अहिंसा से जो आचार विरुद्ध है वह निषिद्ध है और जो ग्रथ उसका विरोधी है उसे शास्त्र न माना जाये।

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१८

६१३. वक्तव्य : अस्पृश्यतापर – ४

९ नवम्बर, १९३२

एक सज्जन लिखते है :[1]

आपके पिछले उपवासको मै सवसे वुरे किस्मकी जवरदस्ती मानता हूँ। यरवडा-समझौतेके बारेमें अपनी भावना मैं आपसे छिपाना नहीं चाहता। मैं जानता हूँ कि मेरे-जैसा विचार कितने ही गण्यमान्य व्यक्तियोंका भी है। पर आपके प्रति आदरभाव रखनेके कारण और आपके यरवडा जेलमें नजरवन्द होनेके कारण, उन्होंने यह समझौता करानेकी आपकी कार्यवाहीके खिलाफ खुलेआम कुछ कहना ठीक नहीं माना। मैं इस समझौतेको जनताका दुर्भाग्य मानता हूँ। आपने यदि वह दुर्भाग्यपूर्ण उपवास न किया होता तो यह कभी सम्पन्न नहीं होता। आपके एक वहुत ही आदरणीय मित्रकी वात मुझे मालूम है। उन्होंने कहा था कि यदि अस्वीकृतिका अर्थ आपकी निश्चित मृत्यु न होती तो वे इस समझौतेको अपनी स्वीकृति कभी न देते। ऐसे विचारशील हिन्दुओंकी एक बड़ी संख्या है, जिनको इस वातका दु:ख है कि उन्हे यह समझौता स्वीकार करना पड़ा, क्योंकि उन लोगोंका यह खयाल है कि जो-कुछ आपने अव स्वीकार किया है वह यदि लन्दनमें कर लिया होता तो इसकी कोई जरूरत ही न पड़ती।

१. लिखनेवाले राधाकान्त माल्वीय थे; देखिए "पत्र : राधाकान्त माल्वीयको", ८-११-१९३२, और "पत्र : चि० य० चिन्तामणिको", ११-११-१९३२।

एक वक्तव्यमें आपने कहा है, "मेरा उपवास इन्हीं करोड़ों लोगोंके विरुद्ध था।" मैं मानता हूँ कि आपका वैसा इरादा था, पर वास्तविक परिणाम यह निकला कि इन करोड़ों लोगोंके लिए नहीं, बल्कि औरोंके लिए इस मामलेमें अपने निर्णय और अपनी भावनाको छोड़नेके सिवा और कोई चारा नहीं रह गया, और उन्हें उन शर्तोंको मानना पड़ा जिन्हें, यदि उनके इनकारका अर्थ आपके बहुमूल्य जीवनका अन्त न होता तो, दुनियाकी कोई भी शक्ति उनसे मनवा नहीं सकती थी। पाँच दिनके अन्दर-अन्दर यह भारी परिवर्तन कर दिखाने और यरवडा-समझौता सम्पन्न करानेका श्रेय उनके स्वतःस्फूर्त प्रेमको है। यदि यह कथन सत्य है तो क्या यह कहना अधिक सत्य न होगा कि अनशनसे आपकी मृत्युके भयने ही यह समझौता कराया है? जिन परिस्थितियोंमें यह सम्पन्न हुआ, उन्हें याद रखते हुए, मैं समझता हूँ, आप यह स्वीकार करेंगे कि यदि इस समझौतेपर पूरी तरह अमल न हो तो इसे बहुत महत्त्व देनेकी जरूरत नहीं है, और आपके दूसरा उपवास शुरू करनेकी तो और भी कम जरूरत है।

आप-जैसे प्रसिद्ध नेताकी आलोचना करते मुझे खुशी नहीं होती, पर यह अवसर ही ऐसा है कि चुप रहना पूरी ईमानदारीकी बात नहीं होगी। जन-साधारणने, जिसको लक्ष्य करके आपने अस्पृश्यताके प्रश्नपर अपनी बातें कहीं, खुलेआम उन बातोंका विरोध नहीं किया। यदि केवल इतनेसे ही आप यह मान लें कि लोगोंने इस प्रश्नपर आपकी बातें स्वीकार कर ली हैं, तो यह सही नहीं होगा। आपके महान् व्यक्तित्वके प्रति आदर रखनेके कारण और आपके राजनीतिक नेतृत्वके कारण, वे लोग आपकी बात चुपचाप सुन लेते हैं। आपके विचारोंसे उनका चाहे कितना भी विरोध हो — और मैं जानता हूँ कि कमसे-कम उत्तर भारतमें तो बहुतोंका है — आपकी बात सादर सुनना वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं। आप जानते ही हैं कि ये लोग बहुत मुखर नहीं होते और अपनेसे भिन्न विचार रखनेवालों का, खासकर यदि वे विचार आप-जैसे किसी महान् व्यक्ति द्वारा व्यक्त किये गये हों तो, विरोध करनेकी कोई खास कोशिश नहीं करते।

पत्रमे से मैंने अनावश्यक अनुच्छेद और पत्र-लेखक द्वारा उल्लिखित लोकसेवी जनोके नाम छोड दिये है। पत्र-लेखकने जिन ऐसे व्यक्तियोका उल्लेख किया है, यदि उन्होने सचमुच अपने विचार दबाये है और ऐसे सुझाव माने है जिनका वे मेरी मृत्युका डर नही होनेपर कभी समर्थन न करते तो यह मेरे लिए बहुत ही दु खकी बात है। यदि उन्होने वैसा ही किया है जैसा कि पत्र-लेखकका कहना है, तो उन्होने देशकी बडी कुसेवा की है और उस उपवासके विशुद्ध धार्मिक स्वरूपको नही समझा है। सार्वजनिक जीवनमे व्यक्तिको प्राय सत्य या लोक-कल्याणकी खातिर मित्रोको त्यागने का दु खद कर्त्तव्य पूरा करना पड़ता है।

और फिर समझौतेमे ऐसी क्या चीज थी जो इन मित्रोको अत्यन्त आपत्तिजनक लगी? सरक्षित सीटे, या सयुक्त निर्वाचक-मण्डल, या तथाकथित प्रारम्भिक चुनाव द्वारा उम्मीदवारोकी नामजदगीका तरीका निश्चय ही ऐसी चीज नही है। हरिजनोको जिन सामाजिक और धार्मिक अधिकारोसे युगोतक निर्दयतापूर्वक वचित रखा गया है, वे उन्हे फिरसे देनेके प्रस्तावपर भी उन्हे आपत्ति नही हो सकती थी। फिर जो अकेली चीज रह जाती है वह उन्हे दी गई सीटोकी सख्या है, पर उससे अधिक तो उन्हे राजा-मुजे समझौतेमे ही दिया गया था और, जैसा कि मै एक पिछले बयान मे कह चुका हूँ, यदि सवर्ण हिन्दू हरिजनोको, जिन्हे वे अबतक पैरो तले कुचलते रहे है, सचमुच अपना बन्धु-बान्धव मानते है तो चाहे उन्हे कितनी ही सीटे दे दी जाये, वे कभी ज्यादा नही होगी। समझौतेने जो-कुछ उन्हे दिया है, यदि वे उसे अनिच्छुक सवर्ण हिन्दुओसे मेरे उपवास द्वारा छीनी गई एक अनधिकार रियायत मानते है, तब तो उनका भविष्य निस्सन्देह चिन्त्य है।

इसलिए, यदि पत्र-लेखक द्वारा दी गई सूचना सच निकलती है, तो मै अपने उपवासका दोहरा औचित्य मानूँगा। जो समाज बिना किसी कसूरके बहिष्कृत किये गये अपने सदस्योके साथ देरसे भी थोडा-सा न्यायतक करनेको तैयार न हो, उसके सदस्यके रूपमे जीनेकी मुझे जरा भी इच्छा नही है। और यदि पत्र-लेखकका यह कथन भी सच हो कि जिन करोडो लोगोके लिए मै लिखता रहा हूँ, उन्होने वस्तुत. मेरे द्वारा की गई अस्पृश्यताकी तीव्र निन्दाका कभी समर्थन नही किया है और वे केवल मेरे "महान् व्यक्तित्व या मेरे राजनीतिक नेतृत्व" के प्रति आदर रखनेके कारण ही चुप रहे है या अपनी स्वीकृतितक जाहिर करते आये है, तो मेरे उपवासका औचित्य तिगुना हो जाता है। इस तरहके झूठके बीच जीवन मेरे लिए भार हो जायेगा। लोकसेवी जन और साधारण लोग मुझ-जैसे तथाकथित महात्माओतक का विरोध करने और अपने विचार दृढतापूर्वक रखनेकी आवश्यकताको जितनी जल्दी समझ जायें, स्वय उनके लिए, देशके लिए, और मुझ-जैसे लोगोके लिए उतना ही अच्छा रहेगा। वातावरणकी इस तरहकी शुद्धिके लिए भी मै खुशी-खुशी उपवास कर सकता हूँ।

इन सज्जनका यह पत्र आन्दोलनमे एक समयोचित योगदान है। जो आन्दोलनमे भाग ले रहे है, उन्हे आन्दोलन और सम्भावित उपवास, दोनोके गूढार्थोको समझना चाहिए। जितना भी जोर मै दे सकता हूँ, उतने जोरके साथ, मै केवल यही बात दोहरा सकता हूँ कि मेरे उपवासका उद्देश्य किसीको भी, जिसे वह समाज या देशका सबसे बडा हित मानता है, उसके विरुद्ध कार्य करनेको बाध्य करना नही है। मेरा उपवास किन्ही ऐसे व्यक्तियोके विरुद्ध भी नही है, जिनके नाम या जिनकी सख्या बताई जा सकती हो। इसका उद्देश्य अदृश्य और अज्ञात रूपसे उन करोडो लोगोको प्रभावित और आन्दोलित करना है, जिनका विचार मेरे मनमें है और जिनके साथ, मै समझता हूँ, मेरा अटूट नाता है। इस तरहके उपवासोका किस तरह असर पड़ता है, यह मै कई बारके अपने निजी अनुभवसे जानता हूँ।

पत्र-लेखकका कहना है कि "जो-कुछ मैने अब स्वीकार किया है, वह यदि लन्दनमे कर लिया होता तो इस समझौतेकी कोई जरूरत ही न पड़ती।" गड़े मुर्दे उखाडनेकी कोई जरूरत नही है। मै केवल इतना ही कहूँगा कि जो-कुछ भारतमे कर सका, वह मैं लन्दनमे नही कर सकता था। पत्र-लेखक यद्यपि उस समय लन्दनमे ही थे, फिर भी उन्हे वे सब तथ्य मालूम नही है जो मुझे मालूम है।

परन्तु लोगोको इससे यह नही सोचना चाहिए कि समझौतेके विरुद्ध मेरे पास बहुत-से पत्र आये है। जहाँतक मुझे याद है, इस तरहका यह अकेला पत्र है। दो-तीन पत्र जबरदस्तीकी शिकायतके जरूर आये है, पर किसीमे भी यह नही कहा गया है कि हरिजनोको कोई ऐसी चीज दी गई है जिसका उन्हे अधिकार नही था। और इस एक पत्रके मुकाबले मेरे पास सैकडो पत्र और तार ऐसे आये है, जो स्वय उपवास और समझौतेका सोत्साह समर्थन करते है। मेरे यहाँके और पश्चिमके निकटतम सहयोगियोमे से केवल एक-दोको छोड़कर शेष सभीने इसका समर्थन किया है और इसका आध्यात्मिक प्रभाव स्वय अनुभव किया है। परन्तु अपने कायदेके मुताबिक और जिस ध्येयको मैंने अपनाया है, उसे हर तरहकी क्षतिसे बचानेके लिए, मै विरोधी आलोचनावाले पत्रोको भी प्रकाशित कर देता हूँ — खास तौरपर यदि वे ऐसे व्यक्तियोके पाससे आये हो जिनके मन्तव्य मेरे जानते मैत्रीपूर्ण रहे है। ये पत्र-लेखक भाई भी, निस्सन्देह, ऐसे ही लोगोमे है।

इस वक्तव्यको तैयार करते-करते मुझे अखिल भारतीय अस्पृश्यता-विरोधी सघके सदैव सतर्क रहनेवाले मन्त्रीका तार मिला है, जिसमे बताया गया है कि अस्पृश्योकी कुल सख्या भारतमे ६ करोड नही, बल्कि ४ करोडसे कम है। श्रीयुत ठक्करने उपवासके दिनोमे ही मेरी भूल सुधारी थी, फिर भी गलत सख्या दी गई, इसका मुझे खेद है।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, १०-११-१९३२

६१४. तार : कालिकटके जमोरिनको

[९ नवम्बर, १९३२][1]

आज अखबारोमे आपका बयान[2] पढ़कर दुःख हुआ। मेरी रायमें केलप्पनको दिया गया आपका आश्वासन वास्तवमें जनताको दिया गया आश्वासन था। केलप्पनने अशिष्टता दिखाई हो या न दिखाई हो पर मुझे यकीन है कि आप एक सार्वजनिक कर्त्तव्यको पूरा करनेसे केवल इसलिए इनकार नहीं करेंगे कि एक सार्वजनिक कार्यकर्त्ताने उसका आदर नहीं किया। इसलिए आपसे मेरा अनुरोध है कि अपने बयानमें आपने जो कठोर रुख अपनाया है वह कृपया न अपनाये। यदि आप यह मानते हैं कि अवर्ण हिन्दुओंका मन्दिरोंमें प्रवेश एक ऐसा सुधार है जो बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था, तो आप हर कठिनाईपर काबू पानेकी कोशिश करेंगे।

गांधी

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १२-११-१९३२

६१५. पत्र : मीराबहनको

९ नवम्बर, १९३२

चि० मीरा,

नियमानुसार तुम्हारा पत्र मिला।

जहाँ तुम्हारा वजन एक पौंड घट गया है, मेरा लगभग ३ पौंड बढ़ गया है, क्योंकि आज वह १०२ पौंड निकला। इसकी वजह यह है कि मैं दूध अधिक ले पाता हूँ। उसके कुछ भागको मैं ऐसा रूप दे देता हूँ जिसे पनीर कहा जा सकता है और फिर उसे रोटीके साथ खाता हूँ। कह नहीं सकता कि इसे कबतक चलाता रहूँगा।

तुम्हें कब्जसे तुरन्त छुट्टी पा लेनी चाहिए। इसके लिए खाली पेट फल लेने चाहिए। उसके बाद दो घंटेतक कुछ और नहीं खाना चाहिए। कब्ज होनेपर दूसरा काम यह करना चाहिए कि प्रोटीनवाली चीजें, जैसे कि रोटी और दूध, छोड़ देनी चाहिए और बारी-बारीसे उबली हुई हरी सब्जियाँ और फल लेने चाहिए।

१. "दैनन्दिनी, १९३२" में इसका उल्लेख इसी तिथिके अन्तर्गत है।
२. जमोरिनका पत्र, जो ९-११-१९३२ के हिन्दूमें छपा था; देखिए पृ० ४३३।

उपवासके बाद मैंने अपना शरीर इसी तरह बनाया। और हालमे वल्लभभाई अपने कब्ज, भारीपन और खाँसीको इसी तरहके पौष्टिक-तत्त्वरहित, वसाहीन और स्टार्चहीन भोजनसे ठीक करते रहे है। इससे आदमीका वजन काफी हदतक ठीक बना रहता है। मेवे बेशक लिये जा सकते है। मेवे और फल मिलाकर न लेना शायद बेहतर रहे। इस तरह आदमी चार बार भोजन कर सकता है: एक बार मान लो अनार और मोसम्बी, दूसरी बार लौकी और टमाटर-जैसी सब्जियाँ, तीसरी बार सूखे अजीर या खजूर या सूखे हुए आलूबुखारे रात-भर पानीमे भिगोकर और फिर उन्हे गर्म करके या ठण्डे ही, चौथी बार वही सब्जी या कद्दू, जिसपर नीबू निचोडा जा सकता है या फिर दोबारा टमाटर लिये जा सकते है या रस-शाक (लेटिस) और टमाटर या कसी हुई गाजरका सलाद हो सकता है। इस तरहका भोजन कुछ दिन लेते रहनेसे सख्त कब्ज भी दूर हो जाना चाहिए। कभी-कभी रोटी या दूध छोडनेसे ही काम चल सकता है। मै समझता हूँ कि तुम्हारी रोटी मोटे आटेकी होती होगी और जब चपाती लेती होगी तो वह भी बे-छने मोटे आटेकी ही होती होगी। गेहूँको पीसनेसे पहले अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए। यदि गेहूँका पूरा लाभ उठाना हो तो उसमे सारा-का-सारा चोकर रहना बहुत जरूरी है। इन बातोका केवल सहायताके रूपमे ही उपयोग करना चाहिए और अपने निजी अनुभवसे इनमे सुधार कर लेना चाहिए।

हाँ, मै लगभग अपना सारा समय अस्पृश्यताके कार्यमे लगा रहा हूँ। कुहनियाँ एक खास ढगसे काममे लानेपर उनमे अब भी दर्द होता है। अपने ज्यादातर पत्र मै अब बोलकर लिखवाता हूँ। थोडे-से जो मै लिखता हूँ, उनके लिए दोनो हाथोको बारी-बारीसे इस्तेमाल करता हूँ। लगता है, इससे काम चल जायेगा। कताई मैंने फिलहाल २०० तारसे घटाकर १०० तार कर दी है। पर कुहनियोके इस दर्दमे चिन्ताकी कोई बात नही है। उनको सिर्फ आरामकी जरूरत है और कोई बात नही है। शक्ति वापस आने और मासपेशियोके भरनेसे दर्द शायद जाता रहेगा।

किसन अभी तुम्हारे साथ ही है, मुझे इसकी खुशी है। तुम्हारे उच्चारणके बारेमे उसे बहुत सख्त रहना चाहिए।

हम सब अच्छी तरह है और तुम दोनोको अपना प्यार भेजते है।

बापू

[पुनश्च]

पत्रके साथ जो कागज[1] सलग्न है, वह तुम्हे दिलचस्प लगेगा। आश्चर्यकी बात यह है कि इस तरहकी चीज भी मेरे पास आ जाती है। मै तो परिवारका सदस्य ही हूँ।

मूल अग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६२४९) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९७१५ से भी।

१. यह उपलब्ध नहीं है।

६१६. पत्र : मोतीलाल रायको

९ नवम्बर, १९३२

प्रिय मोतीबाबू,

अभी तो मै बोलकर ही पत्र लिखवाऊँगा। आपकी पुस्तक मिल गई है। महादेव अच्छी बगला जानता है। पुस्तक आज ही आई। उसने पढना शुरु भी कर दिया है और उसमे रम गया है। जल्द ही वह मुझे उसके [महत्त्वपूर्ण] अश पढ़कर सुनायेगा।

वर्णाश्रमके बारेमे आपके प्रश्नका उत्तर किसी हदतक अखबारोमे जारी किये गये मेरे एक वक्तव्यमे मिल जायेगा। सुरेशबाबूको लिखे पत्रमे मैंने यह तो कभी नही कहा कि वर्णाश्रम किसी भी तरहसे कोई बुरी चीज है, हाँ, यह जरूर कहा है कि जाति-प्रथा बुरी चीज है और आज नही तो कल उसे मिटना ही है। वर्ण और जातियो मे मैं बहुत बडा अन्तर मानता हूँ। इस विषयपर मैंने पहले जितना-कुछ लिखा है, उसपर मैं अब भी दृढ हूँ। अपवाद शायद बस यही हो सकता है जो चीज अब मेरे सामने बिलकुल स्पष्ट है, उसका हलका-सा आभास मैंने अपने पिछले लेखोमे दिया है — मतलब यह कि चारो आश्रमोकी तरह ही चारो वर्ण भी अब ठीक काम नही कर रहे है। इसलिए आजकल तो केवल एक वर्णका अस्तित्व है। हम सब शूद्र है और अगर हम अपने मनको यह बात स्वीकार करनेपर राजी कर ले तो हरिजनोका सवर्ण हिन्दुओमे मिला लिया जाना बहुत ही आसान हो जाता है, और तब कालान्तरमे हम फिर चारो वर्णोका निर्माण कर सकते है। मुझे यह बात भी पहलेकी अपेक्षा अधिक स्पष्ट दिखती जान पडती है कि हमारे पूर्वजोने जिस नियमकी खोज की थी, वह यह नही था कि वर्ण चार है और ये सदा चार ही रहेंगे, बल्कि वह नियम यह था कि हर-एकको अपने-अपने वर्ण-धर्मका पालन करना है। अग्रेजीका 'प्रोफेशन' (धन्धा) शब्द इस वर्ण-धर्मका लगभग पूरा मतलब देता है। रोटी-बेटी-व्यवहारका नियमन करना वर्ण-धर्मका अग नही था। वर्णसे तो धन्धा तय होता था। स्वभावत ऐसी प्रथा बन गई कि जो जिस वर्णका हो, वह उसी वर्णमे शादी-विवाह करे। रोटी-व्यवहारपर प्रतिबन्ध बहुत बादमे लगे। लेकिन दूसरे वर्णमें विवाह करनेका मतलब यह नही होता था कि विवाह करनेवाला अपने वर्णसे च्युत हो गया। जो वक्तव्य मैं जारी करने जा रहा हूँ, उनमे अपने वर्ण-धर्म-सम्बन्धी विचारोका पल्लवन करनेकी आशा करता हूँ। लेकिन मेरा खयाल है, अपने पत्रमें मैंने इतना तो कह दिया है, जिससे आप इस सम्बन्धमे मेरी स्थिति समझ सके।

सघके आप सभी सदस्योको स्नेह।

मो० क० गांधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (११०३९)से।

६१७. पत्र : वालजी और महेन्द्र देसाईको

९ नवम्बर, १९३२

भाईश्री वालजी,

तुम्हारा पुरजा मिला। वल्लभभाई तुम्हारी पुस्तिका अथसे इतितक पढ़ गये और उन्होंने मुझसे कहा: "यह वालजी को क्या सूझा? ऐसा तो जो चाहे वह लिख सकता है। ईसाई ऐसा लिख सकता है। यदि वालजी को लिखना ही था तो कोई ऐसी असाधारण चीज लिखनी थी जिसे हमारे लोग समझ सकें।" महादेवने बहुत आलोचना नही की, क्योंकि वे अध्यायोंके शीर्षकोंको देखनेसे आगे नहीं बढ पाये थे, किन्तु अब पढ़ जायेंगे। बादमे मैं उनकी राय लिखूंगा। मै यह नही कहता कि कोई पुस्तक मुफ्त दी जा सकती है। बल्कि जिसे किसी पुस्तक-विशेषकी आवश्यकता हो और उसे खरीदनेकी सामर्थ्य उसमे न हो तो उसे वह पुस्तक तुम अपने भण्डारसे दे सकते हो।

बापू

चि० मनु,

इस बार तेरी लिखावट ठीक है। मुझे पत्र लिखती रहना।

बापू

श्री वालजी देसाई
डाकखाना - सजोली
शिमला

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू ७४४३)से, सौजन्य: वालजी गो० देसाई

६१८. पत्र : फूलचन्द बा० शाहको[1]

९ नवम्बर, १९३२

भाई फूलचन्द,

इस बार तुम्हारा पत्र आशासे अधिक विलम्बसे मिला, लेकिन अब मिल गया, इसलिए निश्चिन्त हो गया हूँ। मैंने वहाँकी बीमारीके बारेमे सुना तो था ही, इसलिए तुम्हारे पत्रकी बहुत उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। अहमदनगरके समाचार तो मुझे मिलते ही रहते है और अब सब भय-मुक्त हो गये है, और सबकी भली-भाँति देखभाल होती है। गगावहन आदि उनसे मिल भी आये हैं। हम तीनो आनन्दपूर्वक है। मेरे शरीरमें ताकत लगभग आ गई है।

देवदास प्रयागमें है, प्यारेलाल बम्बईमें है और जमनालाल भी ठीक ही है। उन्हे कानकी तकलीफ है, लेकिन चिन्ताका कोई कारण नही। बा साबरमतीमें है।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४६६)से, सौजन्य: चन्द्रकान्त फू० शाह

६१९. पत्र : अहमदाबाद-स्थित अस्पृश्यता-विरोधी संघके मन्त्रीको

[१० नवम्बर, १९३२के पूर्व][2]

हमे दलित वर्गोंके लोगोको ऐसी स्थितिमे नही डालना चाहिए जिसमे उनका अपमान या कोई क्षति हो। इसके बजाय उनकी खातिर हमे स्वय ही ऐसी स्थितिका सामना करना चाहिए। . . .

यह विचार[3] बडा शानदार है। लेकिन अगर जनमत इसके खिलाफ है तो इसमें जो खतरा है, वह मुझे दिखाई दे रहा है।

हिन्दू, १०-११-१९३२

१. साधन-सूत्रसे यह पता नहीं चलता कि ये कौनसे फूलचन्द शाह हैं। किन्तु अहमदनगरके उल्लेखसे जान पड़ता है कि ये फूलचन्द बापूजी शाह हैं, जो उन दिनों विसापुर जेलमें थे। उस समय राजनीतिक बन्दियों और जेल-अधिकारियोंके बीच आपसी झगड़ा चल रहा था।

२. रिपोर्टपर १० नवम्बर, १९३२की तिथि दी गई है।

३. अस्पृश्यता-विरोधी संघके मन्त्रीने गांधीजीको सूचित किया था कि संघ अस्पृश्य वर्गोंके लोगोंको सार्वजनिक मार्गोंसे गुजरनेवाले लोगोंको पानी पिलानेके कामपर लगाना चाहता है।

६२०. पत्र : रामानन्द चटर्जीको

१० नवम्बर, १९३२

प्रिय रामानन्द बाबू,

बगाल और असमके पिछडे वर्गोंके लोगोकी स्थिति सुधारने . . .[1] वार्षिक रिपोर्टोंकी प्रतियोके लिए धन्यवाद। इन रिपोर्टोंको उलट-पलटकर देखनेसे . . .[2] उनकी दशा सुधारनेके काममे . . .[3] जो निश्चित प्रगति हो रही है, उसकी ओर मेरा ध्यान गया है। मेरी यही कामना है कि यह अपने प्रयासमे दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक सफल हो।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ९५८१)से, सौजन्य . शान्तादेवी

६२१. पत्र : भूदेव मुखर्जीको[4]

१० नवम्बर, १९३२

पुर्नलिखित

प्रिय मित्र,

यद्यपि आपने मुझे अपने पत्रका उत्तर देनेकी बाध्यतासे मुक्त कर दिया है, पर मुझे आपकी इस कृपासे लाभ नही उठाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि अस्पृश्यता-विरोधी कार्यकर्त्ताओपर आपने इतना-कुछ आरोपित कर दिया है, जितनेका उन्होने खुद भी दावा नही किया है। वर्णाश्रम-धर्मको नष्ट करनेकी बात किसीने कभी नही सोची है। और आपका यह सोचना भी बिलकुल गलत है कि यह आन्दोलन अंग्रेजी-भाषी लोगो द्वारा चलाया जा रहा है या उन्हीतक सीमित है। यह जन-आन्दोलन है, जिसमे बिलकुल निरक्षर स्त्री-पुरुष तक धार्मिक उत्साहसे भाग ले रहे है, और क्या आपको इस बातका यकीन है कि अपनेको सनातनी माननेवाले लोगतक वर्ण-धर्म और आश्रम-धर्मका कोई खास पालन कर रहे है? "बराबर करने"से आपका आशय क्या है—मुझे नही मालूम और आप जबरदस्ती बराबर करनेकी बात कहते हैं।

१. २ व ३. साधन-सूत्रमें यहाँ कुछ शब्द पढे नहीं जा सके।

४. कलकत्ता विश्वविद्यालयके भूतपूर्व प्राध्यापक; उन्होंने गांधीजी को ३० अक्टूबरको पत्र लिखा था। (एस० एन० १८५९६)

किसीने किसीको ऊपरसे खीचकर बराबरीके स्तरपर लानेके लिए — चाहे इन शब्दोंका कुछ भी अर्थ क्यो न हो — जबरदस्ती की है, ऐसा मुझे नही मालूम है। अस्पृश्योंपर ऐसे दुर्गुणोका आरोप लगाकर जिनसे कि स्पष्टत आप स्पृश्योंको मुक्त मानते है, आपने निश्चित रूपसे उनका अपमान किया है। सभी अस्पृश्य ताडी या शराबका व्यापार, और जो चीज उससे भी बुरी है, मद्यपान या मद्य-विक्रय नही करते है। अस्पृश्योके व्यक्तिगत जीवनका क्या आपको कोई निजी अनुभव है? बहुत-से स्पृश्योंके, जो स्वयको और हिन्दू धर्मको कलकित कर रहे है, घृणित और अनैतिक जीवनके लिए क्या आप अस्पृश्योको ही दोषी मानते है? और अस्पृश्योंमे जो भी बुराई है, उसके लिए जिम्मेदार कौन है? इससे अधिक मै कहना नही चाहता। आपके पत्रके सरनामेसे मुझे पता चलता है कि आप स्वय अग्रेजी शिक्षाकी विशिष्ट उपज है और 'सास्य' तथा 'वेदान्तके' अपने ज्ञानके लिए आपने उपाधि प्राप्त की है। 'सास्य' या 'वेदान्त' मे मुझे कभी भी ऐसा कुछ दिखाई नही दिया जो मनुष्यको अपने बन्धु-प्राणियोंमे घृणा करनेकी शिक्षा देता हो, मगर अपने पत्रकी प्राय: प्रत्येक पक्तिमें आप इसी तरहकी घृणा करने लगते है। मुझे पूरा सन्देह है — और इस सन्देहके कारण मेरा दु:ख और भी बढ जाता है — कि आपने उन अभागे हिन्दू भाइयोके जीवनको समझने-की कभी परवाह नही की है, जिन्हे आपने और मैने और श्रेष्ठताका दम भरनेवाले अन्य हिन्दुओने पीसकर धूलमे मिला दिया है। मेरी प्रार्थना है कि आप समयको पहचाने और मेरी तरह यह सोचे कि हिन्दू धर्मकी शुद्धि दम्भ और निर्दोष लोगोकी निन्दासे नही होनी है।

हृदयसे आपका,

भूदेव मुखर्जी
कलकत्ता

अग्रेजीकी फोटो-नकल (एस० एन० १८६०९)से।

६२२. पत्र : जी० एस० नरसिहाचारीको[1]

१० नवम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

पिछले महीनेकी २३ तारीखका आपका पत्र यथासमय मिल गया था, पर जिन कारणोसे मै उसका पहले जवाब नही दे सका, उन्हे आप अब जानते ही है। छात्र यदि दिलसे और बुद्धिमानीसे काम करे, तो वे कट्टरपंथियोके विरोधके बावजूद, बहुत-कुछ कर सकते है। वे अस्पृश्योके हलकोमे जाकर उनके साथ बराबरीके आधार पर भाईचारा स्थापित कर सकते है, उनकी कठिनाइयोको समझ सकते है और उनमें से

[1] आन्ध्र विश्वविद्यालय कॉलेज तेलुगु संघ, विशाखापत्तनमके मन्त्री।

जिन्हे वे दूर कर सकते हो, उन्हे दूर कर सकते हैं, उन्हे डॉक्टरी सहायता दे सकते है, सफाईके नियम सिखा सकते है, उनके लिए दिवा व रात्रि-पाठशालाएँ चला सकते है, उन्हे अपने खेलोमे बुला सकते है और उनके बच्चोको अपने साथ सैरके लिए ले जा सकते है। जिन कठिनाइयोको वे दूर न कर सकते हो, उनकी ओर वे नव-स्थापित सघकी स्थानीय शाखाका ध्यान आकर्षित कर सकते है या उनके बारेमे केन्द्रीय समितिको लिख सकते है, उनकी परिस्थितियोका वे आलोचनात्मक और विद्वत्तापूर्ण अध्ययन कर सकते है और उसे पुस्तिकाके रूपमे प्रकाशित कर सकते है। छात्रोके लिए यह अपनी पढाईमे विघ्न डाले बिना सेवा करनेका सबसे कारगर और आसान तरीका है। परन्तु यदि उन्हे इस मूक सेवामे भी बडे लोगोके विरोधका सामना करना पड़े तो उन्हे बिना किसी झल्लाहट और कमजोरीके अपने कर्त्तव्यपर डटे रहना चाहिए।

कृपया मुझे यह बताइए कि आप लोगोने यह कार्य शुरू किया है या नही और यदि कर दिया तो कितने लोग ऐसा कर रहे है।

[अग्रेजीसे]
बॉम्बे क्रॉनिकल, ७-१२-१९३२

६२३. पत्र: के० नटराजन्को[1]

१० नवम्बर, १९३२

जो-कुछ मै देख सकता हूँ और महसूस कर सकता हूँ, उससे लगता है कि गुरुवायूरकी लडाईको अखिल भारतीय महत्त्व प्राप्त होगा और कट्टरपथी अपना सारा आक्रमण इस मन्दिरपर केन्द्रित करेगे। मुझे इस चीजका स्वागत करना चाहिए। इसका परिणाम जितना मैने सोचा था, उससे भी अधिक शुद्ध निकलना चाहिए। पर इसका अर्थ यह है कि हिन्दू धर्मकी जो सर्वोत्तम शक्तियाँ है, उन सबको सगठित हो जाना चाहिए और कट्टरपथियोके हमलेका सामना करना चाहिए। इसलिए मै इस बातके लिए उत्सुक हूँ कि यदि आपके लिए सम्भव हो और यदि आप मेरी तरह महसूस करते हो, तो सम्पूर्ण हृदयसे इस आन्दोलनमे कूद पड़िए। लेकिन पिछले उपवासपर लिखे गये आपके लेखोसे मैने देखा कि आप इस तरहके उपवासके विरुद्ध है। इस बारेमे मेरे विचार बहुत ही दृढ है और मुझे लगता है कि यह न केवल एक न्यायोचित अस्त्र है, बल्कि जिसे किसी भी रूपमे हिंसाका सहारा नही लेना है, उसके लिए तो कुछ परिस्थितियोमे यह अनिवार्य ही हो जाता है। अब क्योकि मै इस आन्दोलनके सिलसिलेमे मुलाकातियोसे मिलनेको स्वतन्त्र हूँ, इसलिए मै चाहूँगा कि आप अगले सप्ताह कभी भी १ बजेके करीब मुझसे मिल ले, ताकि हम पश्चात्ताप-रूप सार्वजनिक उपवासोकी नैतिकतापर विचार-विमर्श कर सके और यह

१. **इंडियन सोशल रिफॉर्मर**के सम्पादक।

देख सके कि हम परस्पर सहमत हो सकते हैं या नहीं। आप मुझे जितना जानते हैं, उससे आपको यह विश्वास तो हो ही सकता है कि यदि हमारे विचार-विमर्शके दौरान मुझे अपनी भूलका पता चल गया तो मुझे अपना कदम पीछे हटानेमे कोई झिझक नही होगी।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २२१-२

६२४. पत्र : रवीन्द्रनाथ ठाकुरको

१० नवम्बर, १९३२

प्रिय गुरुदेव,

मैने अखबारोमे जो वक्तव्य[1] जारी किया है, वह तो आपने देखा ही होगा। इस अगले प्रयत्नके लिए यदि मिल सके तो मै आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। मुझे नही मालूम कि आप ऐसा महसूस करते है या नही कि यह प्रयत्न, यदि पहले प्रयत्नसे भी कोई अधिक शुद्ध प्रयत्न हो सकता है तो, उससे अधिक शुद्ध है। पिछले उपवासमे राजनीतिका कुछ रग था और चीजोको ऊपरसे देखनेवाले आलोचक ऐसा कह पाये थे कि वह ब्रिटिश सरकारके खिलाफ था। इस बार यदि उस अग्नि-परीक्षाको आना है तो उसे कोई राजनीतिक रग देना सम्भव नही होगा। यह तो आपको याद ही होगा कि पिछला उपवास तोडते समय यह बात बहुत ही स्पष्ट ढगसे बता दी गई थी कि यदि तथाकथित सवर्ण हिन्दुओने तनिक भी विश्वासघात किया तो मै फिर उपवास शुरू कर सकता हूँ। रही गुरुवायूर मन्दिरके सम्बन्धमे सम्भावित उपवासकी बात, सो वह तो विशुद्ध रूपसे वचनका पालन करनेके लिए करना है। कट्टरपथी लोग उसे अपने प्रहारका केन्द्र बना रहे है और उसे अखिल भारतीय महत्त्व दिया जा रहा है। मै इसे एक तरहसे पसन्द भी करता हूँ। लेकिन तब यह और भी जरूरी हो जाता है कि उदार वृत्तियाँ रखनेवाले समस्त लोग एक होकर क्रियाशील हो जाये ताकि अस्पृश्यताके इस राक्षसको पराजित किया जा सके। यदि इस सम्बन्धमे आपकी भी भावना वही हो जो मेरी है तो इसमे मै आपका हार्दिक सहयोग चाहता हूँ।

आशा है, आप स्वस्थ-प्रसन्न होगे।

हार्दिक स्नेह-सहित,

आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४६३५) से। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २२०-१ से भी

१. तात्पर्य "वक्तव्य : अस्पृश्यतापर-१", ४-११-१९३२ से है; देखिए पृ० ३६१-५।

६२५. पत्र : अम्बालालको[1]

१० नवम्बर, १९३२

अस्पृश्यताके बारेमे तुम्हारे बहुत-से विचारोके साथ मै सहमत हूँ। मगर जिस कारणसे तुमने समितिमे शामिल होनेसे इनकार किया है, वह कारण मेरे गले नही उतरा। मै यह मानता हूँ कि उसमे सनातनी माने जानेवाले हिन्दुओको शामिल होना चाहिए। लेकिन यदि इस प्रतीक्षामे जो काम करना है, वही रुक जाये, तो ऐसे हिन्दुओके बिना भी काम चला लेना चाहिए; और ऐसे हिन्दू उसमें हो या न हो, जो धार्मिक वृत्तिके होनेके कारण धार्मिक दृष्टिसे वाछनीय सुधार भी चाहते है, उन्हे तो उसमे रहना ही चाहिए। . . .

किसी संस्थामे शामिल होनेसे जिम्मेदारीका जो खयाल मनुष्यमे आता है और जिस बन्धनको वह सहज ही स्वीकार कर लेता है, वह जिम्मेदारी और बन्धन बाहर रहनेवालेको कोशिश करनेपर भी महसूस नही हो सकता।

अब रही मतभेदकी बात। मै सभाओ, जलूसो, व्याख्यानो, सम्मेलनो वगैरहके असरको स्वीकार करता हूँ और उनकी आवश्यकता समझता हूँ, फिर भी रचनात्मक कामके बिना अस्पृश्यताकी जड नही उखड़ेगी। इतना ही नही, मै तो यह मानता हूँ कि इसके बिना अस्पृश्यताके प्रति असख्य हरिजनोमे नफरत भी पैदा नही होगी। इस काममे बहुत-से सेवक, सेविकाएँ और बहुत धन तो चाहिए ही; मगर यदि इस कामकी आवश्यकताको स्वीकार करते हो, तो इस कामको इस डरसे कि शायद धन नही मिलेगा या बड़ी तादादमे सेवक-सेविकाएँ नही मिलेंगी, पड़ा नही रहने दिया जा सकता। मुझे तो ऐसा लगता है कि इस महान् आन्दोलनमे उसके किसी भी अंगको हम नही छोड़ सकते।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २२२-३

१. शायद अम्बालाल साराभाई।

६२६. पत्र : रुक्मिणीदेवी और बनारसीलाल बजाजको

१० नवम्बर, १९३२

चि० रुक्मिणी,

तेरा पत्र मिला। पत्र लिखने या अन्य काम निबटानेका तरीका यह है कि हर कामका समय निश्चित कर लिया जाये। यदि सचमुच तेरी हर हफ्ते पत्र लिखनेकी इच्छा हो तो तुझे अपने मनमें ऐसा निश्चय कर लेना चाहिए कि अमुक दिन और अमुक समय पत्र लिखना है। इस प्रकार उक्त विचारका बोझ भी मनपर नहीं रहता, और बिना किसी अड़चनके यह काम नियमित रूपसे होता रहेगा। मथुराके वैद्यराज कौन हैं? क्या वहाँ गायका दूध मिल सकता है? घी गायका होता है या भैंसका?[1]

चि० बनारसी,[1]

तुम्हारे दस्तखत देखे। पिताजी का खत हर हफ्ते आता है। उनका काम कैसे चलता है? डबलिनमें वे क्या करते हैं?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९१४४) से।

६२७. पत्र : मणिलाल गांधीको

१० नवम्बर, १९३२

चि० मणिलाल,

तू मद्राससे बहुत जल्दी लौट आया। सर कूर्माके घर ठहरा, यह बहुत ठीक किया। शास्त्री स्वभावसे ही अल्पभाषी हैं। उनके प्रति गलतफहमीमें मत पड़ना।

प्रागजीका पत्र इसके साथ भेज रहा हूँ। इसे पढ़ना और इसपर विचार करना। उनपर रोष मत करना। उनका पहलू समझनेकी कोशिश करना और मुझे लिखना। तेरा पत्र मिलनेके बाद ही मैं उन्हें लिखूँगा। इस बातपर ध्यान देना कि उन्होंने तो तेरी शिकायतसे उलटी ही बात लिखी है।

यदि तू दिसम्बरमें वहाँ पहुँचनेके लिए वचनबद्ध हो तो तुझे जानेकी तैयारी शुरू कर ही देनी चाहिए।

मुझे तुरन्त उत्तर देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८००) से।

१. मूलमें पत्रका यह हिस्सा हिन्दीमें ही है।

६२८. पत्र : रेहाना तैयबजीको

१० नवम्बर, १९३२

प्यारी बेटी रेहाना,

मेरा कारड मिला होगा। मैंने जो डर माना था वही हुवा। तुमने रिवाज कर रखा है इसलिये जब तुम्हारा खत नहीं मिलता है तो मैं बेचेन हो जाता हुं। ऐसी हालतमें अब्बाजान या अम्माजानसे भी एक कारड लीखवा शकती हो। कैसे भी हो मैं ये हरगीज नहीं चाहता कि तुम बिमार होते हुए भी तुम्हारे लीखना। क्यों बिमार हो गई? बहुत काम कीया था? तुम्हारे तो बिमार होना ही नहीं चाहिये। अब अच्छी होगी। इस कारडका जवाब तुम्हारे देनेकी कोई जरूर[त] नहीं। अब्बाजान एक कारड भेज दें तो काफी होगा। हमिदाका खत मुजे नहीं मिला है। खुदा हाफिज।

बापूकी दुआएँ

उर्दूकी फोटो-नकल (एस० एन० ९६६६) से।

६२९. पत्र : उडीपी-स्थित अस्पृश्यता-विरोधी संघको

११ नवम्बर, १९३२

मेरी स्पष्ट राय है कि अभी आपके सत्याग्रह करनेका अवसर नहीं आया है। आपको बहुत ही नम्र तरीकोंसे अपने पक्षमें जन-मत तैयार करना है। आपको यह देखना चाहिए कि मन्दिरोंमें जानेवाले लोग उन्हीं शर्तोंपर हरिजनोंके मन्दिरमें प्रवेश करनेके पक्षमें हैं या नहीं जिन शर्तोंपर दूसरे लोग प्रवेश करते हैं, और आपको यह भी याद रखना चाहिए कि हमें केवल मन्दिर-प्रवेशके लिए ही काम नहीं करना है। आपको जीवनके हरएक क्षेत्रमें अपने पड़ोसके अस्पृश्योंकी स्थितिकी जानकारी प्राप्त करनी है, उसका शास्त्रीय अध्ययन करना है और अपने अध्ययनके निष्कर्षोंको मेरे पास भेजना है। साथ ही आप हरिजनोंके जिन दुःखोंको दूर कर सकते हैं उनको दूर करनेका प्रयत्न भी करते रहना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २२९

६३०. पत्र : चि० य० चिन्तामणिको

११ नवम्बर, १९३२

मुझे इसमे कोई सन्देह नही है कि अस्पृश्यताके सम्बन्धमे जारी किये अपने चौथे वक्तव्यमे[1] मैंने जिस पत्रकी चर्चा की है उसके लेखक कौन है, इसका अनुमान आपने लगा लिया होगा। अव उस पत्रके लेखक राधाकान्तने मुझे यह अनुमति दे दी है कि मैं आपको और पण्डित कुँजरूको उनका नाम वता दूँ। पहले मुझे आपसे यह जान लेना चाहिए कि क्या मेरे उपवाससे आपने सचमुच दवाव महसूस किया और अपनी अन्तरात्माके खिलाफ काम किया। यह जान लेनेपर ही मुझे कुछ कहना चाहिए। पण्डित कुँजरूको भी मैं लिख रहा हूँ।[2]

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २३५

६३१. पत्र : वासन्तीदेवी दासको

११ नवम्बर, १९३२

अखवारोको अगर आप जरा भी देखती होगी तो इस चीजपर आपका ध्यान अवश्य गया होगा कि शुद्धिकी प्रगतिको रोकनेके लिए सभी असत प्रतिक्रियावादी शक्तियोको एकत्रित किया जा रहा है। इसलिए यह समय है जव हिन्दू धर्मकी सभी स्वच्छ और ऊपर उठानेवाली शक्तियोको सगठित हो जाना चाहिए और अस्पृश्यताके नाना सिरोवाले राक्षसको परास्त करनेके लिए सम्मिलित प्रयत्न करना चाहिए। क्या आप इसमे सहयोग नही करेगी? यदि आप पत्र लिखने लायक साहस न वटोर सके तो मैं आपपर आलस्यका आरोप लगानेकी हिम्मत नही करूँगा। पर आशा है, आप मुझे एक तार भेजनेका उत्साह तो दिखायेगी ही। पिछले सप्ताह ही मैंने, केरलकी माँगके उत्तरमे उर्मिलादेवीको दक्षिण जानेका निमन्त्रण दिया था। उन्होने तारसे तुरन्त स्वीकृति भेज दी। क्या आप भी ऐसा ही करेगी? मैं आपसे दक्षिण जानेको नही कहता, पर यह तो चाहता ही हूँ कि मनुष्यको ऊपर उठानेवाले इस कार्यमे आप उचित भाग लेनेका वचन दें। कार्यका क्षेत्र आप खुद चुनेंगी, वैसे वह भी मुझपर छोड देना चाहे तो वात दूसरी है।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २२८

१. देखिए "वक्तव्य: अस्पृश्यतापर-४", ९-११-१९३२।

२. यह पत्र उपलब्ध नही है, लेकिन साधन-सूत्रके अनुसार दोनों पत्रोंके मजमून एक-से थे।

६३२. पत्र : एस्थर मेननको

११ नवम्बर, १९३२

रानी बिटिया,

तुम्हारा सबसे ताजा पत्र मिला, जिसमे तुमने मुझे बताया है कि किस तरह हर्षातिरेकमे[1] तुम मुझे तार देनेके लिए तारघर दौड गई होती और फिर जिस तरह तुमने यह महसूस किया कि वैसा करना गलत होगा – यदि और किसी कारण नही तो केवल इसी कारण कि हम गरीब लोग है और हमारे पास जो भी पैसा है उसे ईश्वरकी सेवाके लिए अमानत समझना चाहिए। और मुझे तुम्हारा वह लम्बा प्रेम-पत्र भी मिला, जो तुमने आश्रमके पतेपर भेजा था।

हाँ, तो उपवासका कोई और परिणाम निकला हो या न निकला हो, उसने यदि मेननका धूम्रपान छुडा दिया तो केवल इस परिणामके लिए भी वह करने योग्य था। महत्त्वकी बात यह है कि वह चीज छोडी गई है, जिसका वह इतना वशीभूत था। मुझे मालूम है कि बहुत-से युवा और वृद्ध स्त्री-पुरुष उपवास-सप्ताहमे इस तरहके सयम और आत्मत्यागके लिए प्रेरित हुए थे। इससे यह पता चलता है कि वह ईश्वर-प्रेरित था।

ग्रुप फोटो, जिसमे एन्ड्रयूज भी है, मैने देखा और वह हम सबको बहुत पसन्द आया। वह बहुत ही अच्छा था। और उसमे नगे बदन तगै। वह बिलकुल चित्र-सी लगती है।

तुम्हारे अगले पत्रमे मै बीमार बहनसे तुम्हारे मिलनेके विवरणकी अपेक्षा करता हूँ।

सनफील्ड स्कूलवालो का मुझे एक लम्बा पत्र मिला था, जिसमे नई इमारतोका ब्योरा दिया हुआ था।

तुम्हे अपने शरीरमे ऐसी चीजे भरकर जो उसके अनुकूल नही रहती, उसकी उपेक्षा नही करनी चाहिए। दालोसे तुम अपने शरीरको पुष्ट नही कर सकोगी। तुम्हे उनकी बिलकुल जरूरत नही है। तुम्हारे आहारमे अधिकतर दूध, अडे (क्योकि तुम उन्हे लेती हो और यह अच्छा ही है), चोकर मिले आटेकी रोटी, फल और हरी सब्जियाँ, सलाद, टमाटर, पालक, कद्दू और इसी तरहकी चीजे होनी चाहिए। जिस तरह सैनिक अपने शस्त्रोको साफ और सुव्यवस्थित रखता है, उसी तरह हमे भी अपने शस्त्रो (ईश्वरके दिये हुए शरीरो)को साफ और पूरी तरह सुव्यवस्थित रखना चाहिए।

मैने अपनी शक्ति लगभग पुन. प्राप्त कर ली है और मै सामान्य भोजन ले रहा हूँ। मीरा मुझे नियमसे हर सप्ताह पत्र लिखती रहती है और वह अच्छी तरह

[1] गाधीजी का उपवास समाप्त होनेकी ख़बरसे।

है। देवदास पहलेसे बहुत अच्छा है, पर वह अपनी शक्तिसे अधिक काम कर रहा है, और यही हाल प्यारेलालका है। महादेव बेशक मेरे साथ है। तिरुकम् आश्रममे है। वह अच्छा लडका है। शरीरसे वह तगडा नही है।

इसके साथ एक पत्र[1] डेन्मार्कके युवा मित्रके लिए भी है। वा आश्रममें है। मेरा खयाल है वह मुझसे अधिक बूढी हो गई है, वैसे उसमें गजबकी फुर्ती है। उसका दिमाग जल्दी थक जाता है। वह चिन्ता बहुत अधिक करती है।

तुम सबको स्नेह और बच्चोको अलगसे दुलार भी।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (स० ११५) से। सौजन्य . राष्ट्रीय अभिलेखागार। **माई डियर चाइल्ड**, पृ० ९५-६ से भी

६३३. पत्र : एस० एम० माइकेलको

११ नवम्बर, १९३२

मेरे प्रत्याशित उपवाससे यदि किसीकी बौद्धिक स्वतन्त्रता छिनती है तो मुझे निश्चय ही उसका दु.ख होगा। खैर, जो भी हो, मैंने स्पष्ट शब्दोमे यह घोषणा कर दी है कि यह केवल जन-मानसको प्रभावित करनेके लिए है। अस्पृश्यता-निवारणमें विश्वास रखनेवाले मित्र और सहयोगी स्वभावत इससे कार्यके लिए प्रेरित होगे। यह चीज खेद करनेकी नही है। फिर भी, यदि आपको अन्त.करणका स्पष्ट आदेश मिले तो बेशक आप उपवास करे।[2] परन्तु जबतक मेरा यह विश्वास बना रहता है कि मै भी ईश्वरके आदेशका पालन कर रहा हूँ, तबतक वह मुझे विचलित कर पायेगा,—ऐसी आशा आप न रखे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, २१-११-१९३२ तथा **महादेवभाईनी डायरी**, भाग-२, पृ० २३६

१. यह उपलब्ध नहीं है।

२. श्री माइकेलने अपना यह इरादा जाहिर किया था कि मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नपर गांधीजी ने जिस "दबाव डालनेवाले उपवास" का फैसला किया है, उसके विरुद्ध वे १ दिसम्बरसे "निराशा और विरोध" के प्रतीकस्वरूप जवाबी उपवास शुरू करेंगे।

६३४. पत्र : पी० एन० राजभोजको

११ नवम्बर, १९३२

प्रिय राजभोज,

आपसे और आपके साथ आये मित्रोसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मेरी सलाह आपको स्वीकार करने लायक लगी इसके लिए मै आपका आभारी हूँ। मेरा यह निश्चित मत है कि जबतक सारा ध्यान गुरुवायूरपर लगा है तबतक मन्दिर-प्रवेशके सिलसिलेमे कोई सत्याग्रह नही किया जाना चाहिए और न किसी व्यक्तिको उपवास ही करना चाहिए। यदि श्रीयुत केलप्पनके और मेरे लिए उपवास करना आवश्यक हो जाये, तो किसी भी व्यक्तिको सहानुभूतिमे उपवास करनेकी बात नही सोचनी चाहिए। परन्तु जबतक सारी शक्ति गुरुवायूर मन्दिरपर लगाई जा रही है तबतक सत्याग्रह स्थगित करनेकी मेरी सलाहका अर्थ यह नही है कि अन्य मन्दिरोको खुलवानेके लिए और कोशिश करनी ही नही चाहिए। वह तो लगातार करनी है। लेकिन अभी इसी समय वैसा करना ऐसी बात है जो सवर्ण हिन्दुओंकी प्रतिष्ठासे सम्बन्ध रखती है। जब यह चीज स्पष्ट रूपसे सिद्ध हो जाये कि सवर्ण हिन्दू सार्वजनिक मन्दिरोको हरिजनोके लिए खुलवानेके लिए कुछ नही करेगे तो हरिजनोको उसके बारेमे सोचनेको काफी समय मिलेगा। सौभाग्यसे कही-न-कही किसी-न-किसी मन्दिरके अपने-आप हरिजनोके लिए खोले जानेकी खबरे रोज आ रही है और जो विवरण मुझे मिलते रहे है उन सबसे लगता है कि इस तरहकी कोशिश बराबर जारी है, यद्यपि निस्सन्देह उसमे उपवास-सप्ताह-जितना उत्साह नही है। परन्तु हरिजन, सवर्ण हिन्दुओके कामको आसान बनानेके लिए जो कर सकते है वह यह है कि वे जहाँतक सम्भव हो, आन्तरिक सुधार करे, जैसे कि सफाईके नियमोका पालन और मरे पशुओके मास और मदिराका त्याग। इस तरहकी बातोपर मै आपके साथ विस्तारसे विचार-विमर्श कर चुका हूँ।

हरिजनोके बच्चोके लिए तकनीकी प्रशिक्षणकी सुविधाओकी व्यवस्था करने और योग्य हरिजन युवकोको छात्रवृत्तियाँ देनेके मामलेपर मेरा विचार सेठ घनश्यामदास बिडला और अखिल भारतीय अस्पृश्यता-विरोधी सघके[1] अन्य सदस्योके साथ उनके यहाँ मुझसे मिलने आनेपर विचार-विमर्श करनेका है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७८७) से। महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २३३-४से भी।

१. ऑल इंडिया एंटी-अनटचेबिलिटी लीग। बादमें इसका नाम बदलकर हरिजन सेवक संघ कर दिया गया था।

६३५. पत्र: श्यामजी मारवाड़ीको

११ नवम्बर, १९३२

भाई श्यामजी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुमने मुझे लिखकर बहुत अच्छा किया। बम्बईमें चलनेवाली शिक्षा-संस्थाओंके बारेमें मैं प्रमुख कार्यकर्त्ताओंसे विचार-विमर्श कर रहा हूँ। मुझे पूरे समाचार देते रहना और साथ ही धीरज भी रखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५२०६)से।

६३६. एक पत्र

११ नवम्बर, १९३२

पुंजाभाई तो हमारे पास ही है। मुझे उसकी गैरहाजरी महसूस नही होती क्योंकि ऐसा लगता ही नही कि वह नही है। इतने दिनोंतक तो वह कुछ लेता और कुछ देता रहा था। और अब तो वह केवल देता ही है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २१२

६३७. पत्र: घनश्यामदास बिड़लाको

११ नवम्बर, १९३२

भाई घनश्यामदास,

आपका खत मिल गया। मैंने लिखा हुआ खत मिला होगा। हम थोडे ही दिनोंमें मिलनेवाले हैं इसलिये यहां ज्यादह नही लिखना चाहता हूं। कुछ सूचना शीघ्र देने जैसा नही है।

समितिकी योजना मिल गई है। कुछ कहना होगा वह हम मिलेंगे तब कहुंगा। भाई अम्बालालको[1] मैंने लिखा है, समितिमें आ जानेको आग्रह किया है। प्रचार और रचना दोनों हमारे साथ-साथ करना होगा। मैं कर रहा हूं ऐसा समजकर प्रचार-कार्य समिति नही छोड सकती है। मैं जो करता हूं वह भिन्न वस्तु है, लेकिन इस बारेमें भी मिलने पर काफी चर्चा कर लेंगे। सहभोजका काम समितिमें नही [हो]

१. देखिए "पत्र: अम्बालालको", १०-११-१९३२।

सकता है — इसमे मेरे दिलमे कोई सदेह नही है। केरलसे उत्तरकी एक बहनकी सहाय चाहते हैं। राजाजी की समती लेकर मैंने उर्मीलादेवीको तार भेजा है। वह जायगी। उनका खर्च समितिकी मार्फत देना चाहिये ऐसा मेरा अभिप्राय है। आज तो मेरे पास यहा कुछ पैसे आ गये है उसमे से मैंने भेज दिये वही पैसे मैं समितिको देना चाहता था। अगर समिति उर्मिलादेवीको भेजनेकी बात पसद करेगी तो बाकी पैसे समिति देगी। अगर समितिके कार्यक्रममे ऐसी बाते नही आ सकती है, ऐसा निश्चय होगा तो देखा जायेगा।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता हैं। वजन भी ठीक हो गया है। असल शक्तिमें थोडी कसर है सही लेकिन वह आ जायेगी ऐसी प्रतीति है। तुम्हारे शरीरको अच्छा कर लेना चाहिये। सोडाके बारेमे जो कुछ लिखा था वह ठीक नही लगता है।[1] एक डा० मित्रका मुझे कहना था कि सोडाका सेवन नित्य करनेसे सधिवातसे मनुष्य बच जाता है। और दूसरी तरहसे भी अच्छा है। मैंने कुछ नुकसानका अनुभव नही किया और यो तो थोडा-बहुत सोडा पानीमे रहता ही है।

प्रतिज्ञापत्र पढ गया। उसपर बहुत खयाल तो नही किया। लेकिन निर्दोष-सा लगता है।

बापूके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ७९०३ से; सौजन्य: घनश्यामदास बिडला

६३८. पत्र: वियोगी हरिको

११ नवम्बर, १९३२

भाई वियोगी हरि,

आपका पत्र मिला। आनद हुआ। मुझे तो टडनजी की सूचना सबसे अच्छी लगती है। साहित्य और भाषासेवा आपका कार्यक्षेत्र है और यह करते हुए हरिजन सेवा भी हो सके तो उसमे सब-कुछ आ जाता है। 'पतित बन्धु' का पुनरुध्धार करने की कोई आवश्यकता मैं नही देखता हू। आज अपने वर्तनसे ज्यादह प्रचार हो सकता है। अखबार तो बहुत निकलते है उसमे आपके ऐसे लेखोको हमेशा स्थान मिलता ही रहेगा।

आपका,
मोहनदास

[पुनश्च:]

आप मिलना चाहे तो अवश्य आ सकते है।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० १०७२) से।

१. यहाँ बिड़लाजी ने डॉ० केलॉगकी राय उद्धृत की है। जिसके अनुसार गांधीजी को सोडा बाइकार्बका नियमित प्रयोग नही करना चाहिए क्योंकि ऐसा करना पेटके लिए हानिकारक है और उससे उबकाई आने लगती है।

६३९. भेंट: पी० एन० राजभोजको[1]

११ नवम्बर, १९३२

राजभोज: अस्पृश्य सभी सम्भव उपायोसे मन्दिरोमें जानेकी कोशिश कर रहे हैं। मान लीजिए समझाने-बुझाने और पारस्परिक सद्भावके तरीके सफल नहीं होते, तो क्या आपके विचारमें अस्पृश्योंको सत्याग्रहका उपयोग करना चाहिए? यदि वे उसका उपयोग करें तो उसके लिए क्या तरीका अपनाया जाना चाहिए?

गाधीजी: आजकी परिस्थितियोमे मैं सत्याग्रहको कतई उचित या आवश्यक नही मानता। सभी प्रयत्न गुरुवायूरपर केन्द्रित रहने चाहिए। हरिजनोको फिलहाल यह देखना चाहिए कि सवर्ण हिन्दू क्या करते है। गुरुवायूरके विषयमे जो-कुछ होना है, वह यदि अन्य सभी मन्दिरोके विषयमे नही, तो बहुतसे मन्दिरोके विषयमे तो हो सकता है।

पार्वती मन्दिरमें प्रवेशके लिए सभी तरीके आजमाये जा चुके है, जिनमें श्रीयुत जमनालाल बजाज और श्री न० चि० केलकरकी कोशिशें भी आ जाती है। इस उलझनसे कैसे निकला जाये, क्या मैं जान सकता हूँ?

पार्वती मन्दिरके बारेमे आपकी कोशिशो और सत्याग्रहसे मैं परिचित हूँ। पर इस मामलेमे भी मेरी सलाह आपको यही है कि गुरुवायूरके मामलेका पक्ष या विपक्षमे किसी भी ओर निवटारा होनेतक आप प्रतीक्षा करे। इस बीच आप पार्वती मन्दिर के न्यासियोके साथ बातचीत जारी रख सकते हैं और जनमत तैयार कर सकते हैं।

सरकारने आपको अब अस्पृश्यताके सम्बन्धमें बेरोकटोक काम करनेकी अनुमति दे दी है। फिर आपको बाहर आकर अपने-आपको पूरी तरह केवल इसी ध्येयमें लगा देनेमें क्या आपत्ति है?

किसी भी प्रतिबन्धके अधीन अपनी रिहाई मैं मजूर नही कर सकता। पर इस विषयकी मुझे चर्चा नही करनी चाहिए।

समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित पत्र-व्यवहारसे हमें पता चला है कि आपने श्री केलप्पनके समर्थनमें उपवासकी घोषणा कर दी है। मान लीजिए कोई 'स्पृश्य' या अस्पृश्य किसी और महत्त्वपूर्ण मन्दिरके बारेमें, जैसे कि काशी विश्वेश्वरके बारेमें एक और

१. यहाँ उद्धृत पाठ बॉम्बे क्रॉनिकलकी रिपोर्टसे लिया गया है, जिसमें प्रश्न और उत्तर दोनों दिये गये हैं। कुछ उत्तर एक टाइप की गई कापीकी फोटो-नकलसे लिये गये हैं, जिसपर गांधीजी ने अपने हाथसे कुछ संशोधन भी किये हैं।

उपवासकी घोषणा कर देता है, तो क्या आप इस तरहके हर मामलेमें अपनी जान की बाजी लगानेको तैयार हो जायेंगे? क्या आप यह सोचते है कि आपका शरीर इस तरहकी असाधारण परिस्थितिसे निपट सकेगा?

श्री केलप्पनको मै वचन दे चुका हूँ, और २ जनवरी, १९३३ को उनके साथ अपना उपवास शुरू करनेको मै वचनबद्ध हूँ। यदि कोई और व्यक्ति किसी और मन्दिरके बारेमे इसी तरहका उपवास शुरू करता है, तो उसमे शामिल होनेको मै अपनेको बाध्य नही मानता। हर मामलेकी उसके गुण-दोषानुसार परीक्षा करनी होगी। इसके अलावा, किसी भी मामलेमे कार्यकर्त्ताओको पूरी तरह विचार किये बिना और औचित्य देखे बिना उपवासका सहारा नही लेना चाहिए।

सार्वजनिक कुएँ, तालाब और जलके इसी तरहके अन्य सामान्य स्रोतोंके 'स्पृश्यों' और अस्पृश्यों द्वारा भेद-भावरहित उपयोगके बारेमें उन दोनोंके दायित्व और कर्त्तव्य क्या है?

अस्पृश्योको सार्वजनिक कुओ और तालाबोसे जल लेनेका उतना ही अधिकार है जितना कि 'स्पृश्यो' को है। यदि कही कोई मतभेद हो तो मामला समझा-बुझाकर और बातचीतसे मित्रोकी तरह सुलझाना चाहिए।

वे सभी कठिनाइयाँ, जो वही-की-वही दूर न हो सके, अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी सघके सामने लाई जानी चाहिए। जो-कुछ मैं यहाँसे कर सकता हूँ निस्सन्देह वह तो करूँगा ही।

सार्वजनिक कुओके उपयोगके बारेमे क्योकि स्पष्ट कानूनी अधिकार है, अत' अस्पृश्य अदालतोसे सुरक्षा प्राप्त कर सकते है। परन्तु यह तरीका कुचले हुए लोगोकी सहायता नही करेगा। शक्तिशाली सदा कानूनसे बच जायेंगे या उसकी अवज्ञा करेगें। इसलिए मुख्य चीज यही है कि मेल-मिलापके रुखसे अनुकूल स्थानीय जनमत तैयार किया जाये।

श्री बिडला और श्री ठक्कर इस समस्यापर तथा इसे सुलझानेके उपायोके बारेमे मेरे साथ विचार-विमर्श करनेके लिए पूना आ रहे है। आपको पूरे दिलसे सघके साथ सहयोग करना चाहिए और उसकी सहायता करनी चाहिए।[1]

दलित वर्गोंकी यह इच्छा है कि संघको अपने कोष, अन्य प्रचार-कार्योंपर खर्च करनेके बजाय, पहले दलित वर्गोंको देश तथा विदेशोंमें चमड़ा कमाने, चमड़ेकी चीजें बनाने, रस्सी बटने-जैसी तकनीकी शिक्षा दिलानेपर खर्च करना चाहिए। इसलिए उनकी ओरसे मुझे यह प्रार्थना करनी है कि आप इस विचारको प्रश्रय देनेके लिए इस दृष्टिकोणपर जोर दें।

हमारी यह भी इच्छा है कि ऐसे छात्रावास स्थापित किये जायें जहाँ 'स्पृश्य' और अस्पृश्य एक-साथ रहें।

१. उपर्युक्त तीन अनुच्छेद जिन प्रश्नोंके उत्तर है, वे उपलब्ध नही हैं।

आपके इस सुझावसे मैं सहमत हूँ कि संघके कोषोंका कुछ अंश अस्पृश्योंकी छात्रवृत्तियोंपर और उन्हें देश तथा विदेशोंमें चमड़ा कमाने, चमड़ेकी चीजें बनाने, रस्सी बटने-जैसी तकनीकी शिक्षा दिलानेपर खर्च होना चाहिए। 'स्पृश्यों' और अस्पृश्योंके लिए सामान्य छात्रावास स्थापित करने और मौजूदा छात्रावासोंको अस्पृश्यों के लिए खोलनेके आपके सुझावसे भी मैं पूरी तरह सहमत हूँ। संघ निश्चय ही इसकी कोशिश करेगा और इस मामलेमें अपने प्रभावका उपयोग करेगा।

क्या आप ऐसा नहीं समझते कि अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनको, बजाय नगरो के जहाँ लोग शिक्षित और कमसे-कम कुछ हदतक उदार विचारोंके हैं, गाँवोंतक ही सीमित नही रखना चाहिए, जो कट्टरपंथियोंके गढ़ हैं। गाँवकी स्त्रियोंमें प्रचार-कार्य करनेके लिए क्या कुछ महिला कार्यकर्त्ताओंकी आवश्यकता नहीं है?

हाँ, अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलन जोर-शोरसे मुख्यतया गाँवोंमें चलाया जाना चाहिए। पूर्व खानदेश जिले और कई अन्य प्रान्तो व जिलोमें इस तरहका आन्दोलन शुरू भी कर दिया गया है। स्त्रियोको इस आन्दोलनमें काम करनेके लिए बड़ी संख्यामें आगे आना चाहिए।

यह बहुत ही सुन्दर प्रश्न है। अस्पृश्योको खुद भी खूब सहायता करनी चाहिए। उन्हें आम सफाई रखनी चाहिए, मरे हुए पशुओंका मांस नही खाना चाहिए और मद्यपान नही करना चाहिए, अपने बच्चोको स्कूलोंमें भेजना चाहिए, अपने बीच अस्पृश्यता खत्म कर देनी चाहिए और आम तौरपर अपने अन्दर ऐसे सुधार करने चाहिए जो सम्भव हो।[1]

अस्पृश्यता-निवारणके प्रश्नको, मूल अधिकारोंके रूपमें, भारतके नये संविधानमें शामिल करना क्या आप आवश्यक समझते हैं? अर्थात्, यदि किसी हिन्दूके साथ किसी सार्वजनिक स्थानपर अस्पृश्यका-सा व्यवहार किया जाता है तो क्या इसे दण्डनीय अपराध मानना उचित होगा, और उसकी धार्मिक संवेदनशीलताको आघात पहुँचानेपर क्या उस व्यक्तिको कानूनके अधीन दण्ड देना उचित होगा? क्या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समय आनेपर इस सिद्धान्तको संविधानमें शामिल करनेको तैयार होगी और उसकी कोशिश करेगी?

अस्पृश्यता-निवारण, निस्सन्देह, भारतके नये संविधानके मूल अधिकारोंमें होना चाहिए।

हाँ, किसी भी हिन्दूके साथ अस्पृश्यका-सा व्यवहार करना दण्डनीय अपराध माना जाना चाहिए। कांग्रेस निश्चय ही इस सिद्धान्तको संविधानमें शामिल करनेको तैयार होगी।

उन्हें इस बातका खयाल रखना चाहिए कि अपने उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए हिंसा का उपयोग न हो।

१. जिस प्रश्नका यह उत्तर है, वह उपलब्ध नहीं है।

मै यह नही मानता कि भगीका काम, मरे हुए पशुओको ढोना और जूतोकी मरम्मत आदिका काम केवल अस्पृश्योको ही करना चाहिए। तथाकथित अस्पृश्योके इस तरहके किसी कामको करनेसे इनकार करनेपर यदि उनके साथ दुर्व्यवहार होता है, तो ऐसे मामले सघके स्थानीय प्रतिनिधिके सामने लाये जाने चाहिए।

अन्तर्जातीय भोजपर किसीको भी आपत्ति नही होनी चाहिए, पर जो लोग इस तरहके आयोजनोमे शामिल होना नही चाहते, उन पर कोई जोर-जबरदस्ती नही होनी चाहिए। किन्तु मेरी राय यह है कि अन्तर्जातीय भोजोको अपने कार्यक्रममें शामिल करना समझदारी नही होगी।

अस्पृश्योको मै अपने धन्धे छोड़नेकी सलाह नही दूंगा।[1]

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९६) से। **बॉम्बे क्रॉनिकल**, १७-११-१९३२ से भी

६४०. पत्र: प्रेमलीला ठाकरसीको

१२ नवम्बर, १९३२

प्रिय बहन,

तुम हरिजन-सेवाके कार्यमे ठीक-ठीक हाथ बँटाओगी न? जब फुरसत मिले, मुझसे आकर मिल जाना। इस कामके लिए तो जो चाहे वह मिल सकता है। बहुत करके तुमने उपवास-सप्ताहके दौरान देशबन्धु दासकी बहन उर्मिलादेवीको देखा था। वे थोडे दिनोमें हरिजन-सेवाके लिए दक्षिणकी ओर जायेगी। वे मुझसे मिल कर जायेगी। एक-दो दिन पूनामें रहेगी। क्या वे तुम्हारे यहाँ ठहर सकती है? अगले सप्ताह किसी भी दिन उनके पहुँचनेकी सम्भावना है। टेलीफोन अथवा पोस्ट-कार्ड लिखकर मुझे सूचित करना या आकर स्वय मिल जाना।

मोहनदासके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८२५) से, सौजन्य. प्रेमलीला ठाकरसी

१. इससे ऊपरके चार अनुच्छेद जिन प्रश्नोंके उत्तर है, वे उपलब्ध नहीं है।

६४१. पत्र : श्रीपाद दामोदर सातवलेकरको

१२ नवम्बर, १९३२

भाई सातवलेकर,

इस अस्पृश्यता-निवारणके प्रश्नमे आप क्या हिस्सा ले रहे है? स्वनिर्मित — सनातनी हुमला कर रहे है। उनके सामने हिंदु धर्मकी शुद्धि व उन्नति चाहनेवालो का धर्म्य सगठन होनेकी आवश्यकता है। यहा जैसा सगठन आजकल होता है वैसा सगठन अभिप्रेत नही है लेकिन सुधारकोके विचारकी विवेकपूर्ण घोषणा एक सूरमे होनी चाहिये। आलस्य अथवा सकोचसे कोइ सुधारक बैठ न रहे ऐसा मैं चाहता हू। इस बारेमे जो उचित समजा जाय वह करे।

आपका,
मोहनदास

सी० डब्ल्यू० ४७६८ से, सौजन्य : श्री० दा० सातवलेकर

६४२. भेंट : 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको

१२ नवम्बर, १९३२

यह पूछनेपर कि क्या आपने 'न्यूज लेटर' में छपी लॉर्ड सैंकीकी सबसे ताजी अपील देखी है, गांधीजी ने कहा :

जहाँतक मैं समझ सका हूँ, कॉमन्स सभामे सर सैम्युअल होरका जवाब और मुझे सविनय अवज्ञा छोडनेकी बात समझानेवाले पत्र जेलकी चारदीवारीको पार कर सकते है और मुझे दिये जा सकते है। पर मुझे यह मालूम है कि इस तरहके पत्रोके उत्तर इस विश्वासके साथ भेजनेका कि वे जेलकी चारदीवारीके बाहर पहुँचेगे, मुझे अधिकार नही है। जो मर्यादाएँ मैंने स्वीकार कर ली हैं या अपने ऊपर थोप ली है उनके अधीन, जहाँतक इन भेंटोका सम्बन्ध है, मैं सवाददाताओ या मुझसे मिलने आनेवाले निजी मित्रोतक के ऐसे प्रश्नोका कोई उत्तर नही दे सकता।

जब उन्हें यह बात याद दिलाई गई कि लॉर्ड सैंकी सदाशयताका संकेत चाहते थे और यह पूछा गया कि उन्हे उत्तर कैसे मिलेगा, तो गांधीजी ने कहा कि वे लॉर्ड सैंकीकी अपीलको सहर्ष पढ़ेंगे और ऐसे व्यक्तिकी अपीलको जितने अधिक सम्मान और ध्यानसे पढ़ना चाहिए उतने ही ध्यान और सम्मानसे पढ़ेंगे। महात्माजी ने आगे कहा :

उसे पढ़नेके बाद यदि मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा कि मैं कोई उपयोगी उत्तर दे सकता हूँ, तो वह लॉर्ड सैकीके पास पहुँचानेके लिए यथाविधि सरकारको भेज दिया जायेगा।[1]

गुरुवायूरके बारेमें मेरे प्रश्नका उत्तर देते हुए गांधीजी ने मुझे बताया कि अगला उपवास श्री केलप्पनके उपवासपर निर्भर है। उन्होंने कहा :

मैं ऐसी परिस्थितियोंकी कल्पना कर सकता हूँ, जिनमें मुझे स्वतन्त्र रूपसे उपवास करना पड सकता है। भगवान् न करे कि ऐसा हो, मगर मान लीजिए श्री केलप्पनका देहान्त हो जाता है, तो मुझे तो उपवास करना ही पड़ेगा। यहाँ मैंने एक चरम उदाहरण दिया है। वैसे, सामान्यत श्री केलप्पनसे अलग स्वतन्त्र रूपसे उपवास करनेकी मैं आशा नही करता।

यह पूछनेपर कि यदि केलप्पनको यह सन्तोष हो जाता है कि सच्ची लगनसे कोशिश की जा रही है और मन्दिर ठीक अगली १ जनवरीको चाहे न खुले, पर शीघ्र ही, मान लीजिए उसके एक-दो सप्ताह बाद, खुल जायेगा तो आपका रुख क्या होगा, गांधीजी ने कहा :

मान लीजिए, श्री केलप्पन इस तरहके निष्कर्षपर पहुँचते है तो उन्हे मुझसे बातचीत करके बुद्धिपूर्वक मुझे यह विश्वास दिलाना होगा कि उपवासकी आवश्यकता नही है। वैसे मैं यह बता दूँ कि श्री केलप्पन कभी ऐसा कहेगे, मुझे यह आशा नही है। लेकिन मान लीजिए कि श्री केलप्पन कमजोर पड़ जाते हैं। और ईश्वर और मनुष्यके आगे की गई प्रतिज्ञासे बच निकलना चाहते हैं — यदि इस तरहका जरा भी सन्देह हुआ, तो मैं यह अपेक्षा करूँगा कि वे इस विषयमे तर्क द्वारा मेरी बुद्धि को सन्तुष्ट करे। किन्तु मेरा सदा यह विश्वास रहा है कि श्री केलप्पन अपने सकल्प पर अडिग है और अपने इस सदुद्देश्यके मार्गमे आनेवाली कठिनाइयोके सामने झुकनेवाले नही हैं।

जब गांधीजी से यह पूछा गया कि, जैसा कि आपका तरीका है, क्या आपने उपवासका निश्चय करनेसे पहले गुरुवायूर मन्दिर-प्रवेशके प्रश्नकी पूरी तरह छान-बीन कर ली थी, तो उन्होंने यह जवाब दिया :

इस प्रश्नकी मैंने पूरी तरह छान-बीन की है, यह दावा मैं नही कर सकता। यद्यपि मैं पूर्णतया इसपर निर्भर रहा हूँ कि श्री केलप्पनने छानबीन कर ली है, फिर भी मोटे तौरपर यह कहा जा सकता है कि मन्दिरको अस्पृश्योके लिए खुलवानेके दावेकी सचाईके बारेमे मैंने निस्सन्देह अपनी तसल्ली कर ली है। लेकिन यदि कोई मुझसे यह पूछे कि क्या मैंने गुरुवायूर मन्दिरका न्यासपत्र — यदि ऐसा कोई दस्तावेज हो तो — देखा है या उस प्रसिद्ध मन्दिरके प्रबन्धकी रीतियो और शर्तोंकी आलोचनात्मक ढगसे जाँच की है, तो मुझे अपनी अनभिज्ञता स्वीकार करनी होगी।

१. लॉर्ड सैकीको गांधीजी के उत्तरके लिए देखिए "तार. लॉर्ड सैंकीको", १३-११-१९३२।

उनका ध्यान ७ नवम्बरके 'हिन्दू' में प्रकाशित जमोरिनके इस आशयके नवीनतम पत्रकी ओर दिलाया गया कि जमोरिनने श्री केलप्पनको उपवास शुरू करते समय जो यह आश्वासन दिया था कि यदि उन्होंने इस बीच अपना उपवास तोड़ दिया तो वे इस प्रश्नपर विचार करेंगे, उससे जमोरिन अब बँधे हुए नहीं हैं, क्योंकि श्री केलप्पनने उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था और उपवास जारी रखा था। इस पर गांधीजी ने कहा :

श्री केलप्पनके विरुद्ध जमोरिनका अशिष्टताका आरोप और उस आधारपर उनका अपने आश्वासनको पूरा करनेसे इनकार समझमें नहीं आता। उन्होंने आश्वासन यद्यपि श्री केलप्पनको दिया था, पर वह पूरी तरहसे जन-साधारणको दिया गया आश्वासन था और वह लगभग इस बातकी घोषणा थी कि वे कोई रास्ता निकालनेकी हर सम्भव कोशिश करनेके अपने कर्त्तव्यके प्रति सजग हैं। मेरे विचारसे तो एक उत्तरदायी व्यक्ति और न्यासीकी हैसियतसे वे उस आश्वासनको पूरा करनेके लिए बँधे हुए हैं — फिर चाहे श्री केलप्पनका आचरण कैसा भी क्यों न रहा हो।[1]

एक हिन्दू मन्दिरके न्यासीका कर्त्तव्य केवल प्रचलित रीतियों या किसी खास जातिके तथाकथित विशेषाधिकारोंकी ही रक्षा करना नहीं है। उसका यह भी कर्त्तव्य है कि वह हिन्दू धर्मकी विशुद्धताकी रक्षा करे, और हिन्दुओंकी दिन-प्रतिदिन बढ़ती आध्यात्मिक आकांक्षाओंको पूरा करे। ऐसा न्यासी इस बातसे क्षुब्ध नहीं हो सकता कि कोई एक या बहुत-से आदमी उसके खिलाफ क्या कहते हैं।

जहाँतक इस प्रश्नके कानूनी पक्षका सम्बन्ध है, जमोरिनके तर्कको मैं जानता हूँ। किन्तु कानूनी कठिनाइयाँ जब एक बड़े नैतिक सुधारके मार्गमें अड़ी हों तो उनसे जूझना चाहिए और उनपर काबू पाना चाहिए। इसलिए जमोरिन या कोई भी व्यक्ति कानूनी कठिनाइयोंको मन्दिर खुलवानेके खिलाफ पर्याप्त कारणके रूपमें पेश करे, तो इस स्थितिको स्वीकार नहीं किया जा सकता। यदि जनमत स्वयं नैतिक रूपसे न्यायोचित हो, तो जमोरिन-जैसे उत्तरदायी न्यासीसे यह अपेक्षा की जाती है कि जनताकी नैतिक माँगकी पूर्तिमें जो कानूनी अड़चनें हैं, उन्हें वे दूर करें।

प्र० : यदि अस्पृश्योंको मन्दिरमें जाने देनेके लिए अधिनियममें संशोधन करनेकी कोशिशें होती हैं, लेकिन विधान सभाको १ जनवरीसे पहले विधेयकको पास करनेका समय नहीं मिलता, तो क्या आप उपवास स्थगित कर देंगे?

उत्तर. मान लीजिए कि १ जनवरीसे पहले अधिनियममें संशोधन करा सकना असम्भव है, तो यह बात उपवास स्थगित करनेका पर्याप्त कारण होगी। लेकिन उसके पर्याप्त कारण होनेका मतलब यह होगा कि इस सम्बन्धमें और जो-कुछ किया जा सकता था, किया जा चुका है और अगर कोई अनहोनी बात न हुई तो कानूनके पास हो जानेकी पूरी सम्भावना है। मगर ऐसी सम्भावना है, इसका अर्थ फिर यह होगा कि आम जनता, मन्दिरके न्यासीगण और सब लोग इस विषयमें एकमत हैं।

1. देखिए "तार: कालिकटके जमोरिनको", ९-११-१९३२ भी।

यह पूछनेपर कि क्या महात्माजी पुराने विचारोंके सनातनियोंके एक दलको भेंटके लिए आमन्त्रित करने और इस समस्याके एक सौहार्दपूर्ण समाधानपर पहुँचनेकी कोशिश करनेके सुझावका स्वागत करेंगे, उन्होंने कहा :

बड़े-बड़े लोगोके एक दलको भेटके लिए आमन्त्रित करना मेरे विचारसे धृष्टता होगी। उनके प्रति आदर-भाव रखनेके कारण ही मै यह कहता हूँ कि मै उन्हे आमन्त्रित नही करूँगा। मै जो उन लोगोको आमन्त्रित नही कर रहा हूँ, इसका कारण यह नही है कि मै उनसे मिलना नही चाहता, या मै यह सोचता हूँ कि उनके पास मुझसे कहनेको कुछ नही हो सकता। उनके दर्जेका खयाल रखकर ही मै अपनेको उन्हे आमन्त्रित करनेसे रोक रहा हूँ। किन्तु यदि मुझे यह मालूम हो जाये कि मेरे केवल निमन्त्रण भेजनेसे ही वे खुशीसे आ जायेंगे, तो मुझे इस तरहका निमन्त्रण भेजनेमें कोई झिझक नही होगी।

यह पूछनेपर कि जो लोग मन्दिर-प्रवेश आन्दोलनसे तो सहानुभूति रखते है, लेकिन साथ ही पुराने विचारोंवाले सनातनियोंकी भावनाओंका सम्मान करनेके लिए यह चाहते है कि तथाकथित अस्पृश्योंको मन्दिरोंके भीतर ध्वज-स्तम्भतक जाने देना चाहिए और देव-प्रतिमाको पर्वो और त्योहारोंपर दर्शनके लिए वहाँ ले आना चाहिए, उनके बारेमें आपका क्या विचार है, महात्माजी ने कहा :

यह आन्दोलन अस्पृश्यताको समाप्त करनेके लिए है। इसलिए अस्पृश्योको बिलकुल वही अधिकार होने चाहिए जो 'स्पृश्यो' को है। परन्तु इसका अर्थ यह नही है कि उन्हे गर्भ-गृहतक जाने देना चाहिए, जहाँ केवल पुजारी ही जा सकते है। यदि अब्राह्मणोंको वहाँ जानेसे इसलिए रोका जाता है कि वे अस्पृश्य समझे जाते है तो वह अस्पृश्यता निस्सन्देह समाप्त होनी चाहिए। लेकिन यदि इस विषयमे उनपर अस्पृश्यताके लाछनके कारण प्रतिबन्ध न हो बल्कि नियम ही यह हो, कि गर्भ-गृहके कुछ भागो तक केवल ब्राह्मण ही जाये, तो इस आन्दोलनके अन्तर्गत मुझे उसके खिलाफ कुछ नही कहना है। धार्मिक अनुष्ठानोमे ब्राह्मणोके एकान्तिक अधिकारोका जो सवाल है, उसका आधार भिन्न है और यदि वह एकान्तिकता समाप्त होनी है तो उस प्रश्नपर अलगसे विचार करना होगा। कुछ धार्मिक कार्योको करनेका अधिकार एक विशेष जातिके लिए सुरक्षित रखनेके चलनकी निन्दा करनेके लिए मै इस समय, जबकि इस सवाल पर कुछ सोचा ही नही है, तैयार नही हूँ। यह अधिकारकी नही, बल्कि कर्त्तव्यकी बात है, जो आवश्यक योग्यताएँ रखनेवाले विशेषज्ञोके एक दल द्वारा किया जाना है।

श्री वी० वी० श्रीनिवास अय्यंगारके इस कथनके सिलसिलेमें कि मन्दिर-प्रवेश पर राजनीतिक मेल-मिलापके एक उदार प्रदर्शनके रूपमें जोर दिया जा रहा है, गांधीजी ने कहा :

श्री वी० वी० श्रीनिवास अय्यगार जब मद्रास उच्च न्यायालयके न्यायाधीश नही बने थे, तभी मुझे उनका परिचय प्राप्त करनेका सौभाग्य मिला था। कल्पनाकी कैसी भी खीचातानीसे मन्दिर-प्रवेश राजनीतिक प्रश्न कैसे माना जा सकता है, यह मेरे लिए हैरानीकी बात है। इस चीजको मै समझ ही नही पाता हूँ।

अन्तमें गांधीजी ने कहा :

अन्तमें हिन्दू धर्म वाहरी हस्तक्षेपके विना अपनेको इस युगों पुराने अभिशापसे मुक्त कर सके, तो यह वात हिन्दू धर्मके लिए अधिक कल्याणकारी होगी। तब गैर-हिन्दू तुरन्त यह सोचने लगेंगे कि हिन्दू धर्ममें कोई चीज वहुत ही जीवन्त है। मैं ऐसा महसूस करता हूँ कि अस्पृश्यता-निवारण हिन्दू धर्ममें इतना जबरदस्त सुधार है कि इसका प्रभाव सारी दुनियापर पड़ेगा। यदि इस समस्यासे निपटनेकी मेरी पद्धति असफल सिद्ध होती है, तो वह मेरे अस्तित्वका पूर्ण खण्डन होगा।

वातचीतके अन्तमें मैंने देखा कि गांधीजी थक गये हैं। मैंने जब यह सन्देह प्रकट किया कि क्या एक और उपवास वे सफलतापूर्वक कर सकेंगे, तो गांधीजी ने कहा कि वे आशा तो ऐसी ही करते हैं।

मद्रास कौंसिलने यदि प्रस्तावित विधेयक अस्वीकार कर दिया तो वे क्या करेंगे, इस वातके उत्तरमें महात्माजी ने कहा :

इस तरहकी असफलताकी मुझे आशका नही है। जो सदन डॉ० सुब्बारायनके समाधानको स्वीकार कर चुका है, वह वर्त्तमान अधिनियममें सशोधनके विधेयकको, यदि वह पेश किया गया तो, अस्वीकार नही करेगा। अपने दिन पूरे होनेसे पहले मरनेमें मैं विश्वास नही करता।

डॉ० सुब्बारायनके प्रस्तावको पास करनेकी मद्रास कौंसिलकी कार्रवाईसे गांधीजी खुश हैं और अब वे इस वातकी राह देख रहे हैं कि उसे कार्यान्वित करनेके लिए क्या कदम उठाये जाते हैं।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १४-११-१९३२

६४३. पत्र : चम्पाबहन र० मेहताको[1]

[१३ नवम्बर, १९३२ के पूर्व][2]

यदि तू यह मानती है कि ट्रस्टमें रहनेसे तू स्वतन्त्र हो जाती है तो यह तेरी भूल है। ट्रस्टका मतलव जिम्मेदारी है और कोई अपनी मिल्कियतका ट्रस्टी वने, यह मुझे अच्छा लगेगा। जो अपनी मिल्कियतका ट्रस्टी बन गया उसकी मालिकी खत्म हो जाती है। फिर तो उसे एक रक्षककी तरह मिल्कियतमें से जो कमीशन मिले, उसीमें अपना खर्च चलाना रह जाता है। यही ट्रस्टका मतलव है। जो ट्रस्टी

१. साधन-सूत्रमें यह नहीं वताया गया है कि यह पत्र किसको लिखा गया था। लेकिन पत्रमें चोरीके उल्लेखसे ज्ञात होता है कि यह चम्पावहन मेहताको, जिनके घरमें चोरी हुई थी, लिखा गया था। देखिए "पत्र : रतिलाल मेहताको", १३-११-१९३२।

२. साधन-सूत्रमें इसे १४ नवम्बरके विवरणके अन्तर्गत रखा गया है, लेकिन "पत्र : नारणदास गांधीको", १३/१४-११-१९३२ के पूर्व लिखे पत्रमें इसके उल्लेखसे प्रकट होता है कि यह उससे पहले ही लिखा गया था

रक्षक वनकर भक्षक हो जाता है, उसकी वात मै यहाँ नही कह रहा हूँ। यहाँ तो यही वता रहा हूँ कि ट्रस्टीका धर्म क्या है। तू लिखती है कि तू अपने पैरोपर खड़े होनेकी शक्ति माँग रही है। इसका अर्थ तू समझती है? अपने पैरोंपर खड़े होनेका मतलव है, न वापकी कमाई खाना, न श्वसुरकी और न पतिकी, वल्कि अपने वल-वूते जो टुकड़ा मिल जाये, उसीको खाकर रह जाना। इस तरह रहनेकी अपनी शक्तिका परिचय तूने कभी दिया नही। तुझमे ऐसी इच्छा है, यह भी मैने कभी नही देखा।

जिनकी सम्पत्तिकी चोरी हुई है, उनको मैं वधाई देता रहा हूँ। वैसा ही इस चोरीके वारेमे भी है। हमे अपने पास एक कौड़ी भी रखनेका अधिकार नही है। जो-कुछ रखते है, वह चोरीका माल है। चूँकि दुनिया ही इस तरहकी चोर है, इसलिए इसे चोरी नही कहा जाता। लेकिन इसीसे हमे भ्रममे नही पड जाना चाहिए। यदि अपने पास चोरीका माल पडा हो और उसे दूसरा चोर लूटकर ले जाये, इसमे आश्चर्यकी क्या वात है? इससे यह शिक्षा लेनी चाहिए कि अपने पास इतना धन रखना ही नही चाहिए कि उसे चोर लूटने आये और जो थोडा-वहुत रखा भी हो तो जवतक दूसरा उसे उठाकर न ले जाये तभीतक उसकी मालिकी भोगकर सन्तोष करना चाहिए। यदि तू इस चोरीसे इतनी सीख ले ले तो माना जायेगा कि तूने कुछ खोया नही, वल्कि तुझमे ज्ञान आया, और इस तरह कुछ पाया ही।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४३-४

६४४. तार: लॉर्ड सैंकीको

१३ नवम्वर, १९३२

लॉर्ड चासलर
लन्दन

'न्यूज-लेटर' के[१] जरिये आपने मुझसे जो अपील की है उसका तारसे प्राप्त सार पढ़कर मुझे दुख हुआ। क्या कैदी अपने जेलरोके प्रति उदारता प्रदर्शित कर सकता है? मन्त्रियो और वाइसरायका मेरे कार्यो या

१. न्यूज लेटरमें प्रकाशित "एक भारतीय मित्रको पत्र" में लॉर्ड सैंकीने कहा था:

"मेरा ऐसा विश्वास है कि यदि गाधी सविनय अवज्ञाके हथियारको छोड़ दें और ब्रिटिश सरकारके साथ सहयोग करेंतो पूरी परिस्थिति बिल्कुल वदल जायेगी। . . .

"भारतीयोमें मतैक्य स्थापित करनेके संयुक्त प्रयत्नसे समस्या सुलझ जायेगी। शान्ति स्थापित करनेके ध्येयमें सहायता करनेके लिए उनका राजी न होना युद्धका वैसा ही हथियार है जैसे कि टैंक और हवाई जहाज। यदि लोग संघ वनानेको तैयार न हों तो कोई भी संघ सफल नहीं हो सकता। पिछले कुछ सालोंमें, जब हम सलाह-मशविरे और सहयोग द्वारा एक सर्वसम्मत समाधानपर पहुँचनेकी भरसक कोशिश कर

रुखकी आलोचना करना और चाहे अनजाने ही उन्हे गलत ढगसे पेश करना और मुझे प्रत्याख्यानका अवसर न देना, शायद ही उचित कहा जा सके। याद रखिए कि मैं यहाँ शान्ति को बढ़ावा देनेका विचार करके लौटा था। लन्दनमे और लौटते समय रास्तेमें जहाजपर मैंने जो भाषण दिये, निजी वार्त्ताएँ कीं और वहाँसे जो पत्र लिखे, उनको देखनेसे यह बात साफ हो जायेगी। वस्तुत उसके लिए मैंने भ्रमणकी एक योजना तक बनाई थी। वाइसरायसे मैंने मुलाकात करनी चाही, जिसका अत्यन्त अविनम्र उत्तर मिला। मुलाकातकी प्रार्थनाको स्वीकार करनेके लिए ऐसी शर्तें रखी गईं जिन्हे पूरा करना असम्भव था।[1] उस उत्तरसे और अवसर आते ही लोगोको गिरफ्तार करनेकी तैयारियोसे जो शायद ही किसीसे छिपी रही हो, मेरे आगे कांग्रेसके लिए सविनय अवज्ञाका एक प्रारम्भिक कार्यक्रम तैयार करनेके सिवा और कोई चारा नही रह गया। घटनाक्रम यह दिखाता है कि जब मै लन्दनमे था तभी उस सारी योजनाको, जो बादमे सामने आई, कार्यान्वित करनेकी तैयारियाँ पूरी कर ली गई थी, जिनमे अध्यादेशो के मसौदेतक शामिल थे। इससे अनिवार्य निष्कर्ष यही निकलता है कि भारत सरकार हर हालतमे कांग्रेसको कार्रवाईके लिए उत्तेजित करके सकट पैदा करना चाहती थी। किसी भी निष्पक्ष न्यायाधिकरणके सामने मैं यह सिद्ध कर सकता हूँ कि भारत सरकारने मेरी गिरफ्तारीसे पहले इर्विन-गांधी समझौतेकी कई शर्तोंको जान-बूझकर तोडा था और मेरी गिरफ्तारीके बाद तो उन्हे बिलकुल ही तोड दिया था। उनमे से कुछका सम्बन्ध उच्चतम सार्वजनिक हितोसे था, और उन्हे किसी भी हालतमे नही तोडना चाहिए था। और अब तो देशमे वस्तुत मार्शल लॉ लागू है। फिर भी लोगोका आत्मबल चाहे दब गया हो, पर टूटा नही है। असन्तोष और गहरा हो गया है। गमनागमन और समाचार-पत्रोकी स्वतन्त्रता लगभग खत्म कर दी गई है। किसी भी व्यक्तिकी स्वतन्त्रता या सम्पत्ति सुरक्षित नही है। कैदियोके रिश्तेदारोसे या उनकी निजी चीजें बेचकर भारी जुर्माने वसूल किये जा रहे है। कुछ लोगोके अपराधके लिए गाँवो और पूरी-की-पूरी आबादियोपर दण्डात्मक कर थोपे गये है, और हजारो लोगोको जेलोमें बन्द कर उनके साथ जरायमपेशा लोगोका-सा बरताव किया जा रहा

रहे थे, औरोंने दो बार अपने उद्देश्योंको सविनय अवज्ञा-आन्दोलनसे पूरा करनेकी कोशिश की थी। जबतक आपका काम इस तरहका है, मेरा काम और भी कठिन हो जाता है।

"गांधीमें परिस्थितिको बदलनेकी शक्ति है और वे फिरसे शान्ति स्थापित करनेके लिए बहुत-कुछ कर सकते है। सविनय अवज्ञाका प्रहार व्यक्तियोंपर नहीं, बल्कि सगठित सरकारों और सभ्य समाजपर होता है। मेरा यह विश्वास है कि यदि गाधी सदाशयताका प्रदर्शन करें और सविनय अवज्ञाके हथियारको छोड दें और अपने अनुगामियों-सहित ब्रिटिश सरकारके साथ सहयोग करें, तो पूरी परिस्थिति बिलकुल बदल जायेगी।" स्टेट्समैन, १२-११-१९३२।

१. इस विषयपर वाइसरायके साथ गाधीजी के पत्र-व्यवहारके लिए देखिए खण्ड ४८।

है। इस सबके बावजूद आप मुझसे सविनय अवज्ञा छोडनेके लिए क. सके है, यह मेरे लिए हैरानीकी बात है। लगता है, आप यह भी नही समझ रहे है कि यह आन्दोलन मेरे या किसी एक व्यक्तिके हाथमे नही है, 'मुझे जेलमे या बाहरके अपने साथियोसे मिलनेकी इजाजत नही है, और सर्वश्री सप्रू और जयकरको तथा हालमे ही मौलाना शौकतअलीको भी मुझसे मुलाकातकी और सविनय अवज्ञा स्थगित करनेकी सम्भावनापर विचार-विमर्श करनेकी अनुमति नही दी गई। बन्दीसे उदारता प्रदर्शित करनेके लिए कहना उसका मजाक उडाना है। मै चाहूँगा कि आप यह भी समझ ले कि जहाँतक मेरा सम्बन्ध है, किन्ही खास परिस्थितियोमे सविनय अवज्ञा करना मै अपना धर्म मानता हूँ। किसी भी अवस्थामे पाशविक बलके प्रयोगोमे मेरा विश्वास नही है। इसलिए सविनय अवज्ञाका मेरे लिए वही महत्त्व है जो व्यक्तियो या समूहोके लिए आम तौरपर सशस्त्र विद्रोहका होता है। जिस वातावरणका मैने वर्णन किया है, उसमे उदार संविधानकी आशा करना व्यर्थ है। आपके इस कथनका मै पूर्णतया समर्थन करता हूँ कि लोगोको अलग करनेकी अपेक्षा उन्हे एक साथ लाना कही अच्छा है। परन्तु आप अपने विचारके इस तर्कसम्मत परिणामको स्वीकार नही करते कि विजेताओ और विजितोका अस्वाभाविक सम्बन्ध उन दोनोको अवश्य अलग रखेगा, जैसे कि कैदी और उनके पहरेदार शारीरिक रूपसे एक-दूसरेके निकट रहते हुए भी वास्तवमे अलग ही रहते है। सविनय अवज्ञा और उससे मिलते-जुलते तरीकोंसे मै उस अस्वाभाविक सम्बन्धको नष्ट कर दोनोको एक जगह लानेकी भरसक कोशिश कर रहा हूँ। मै आपको यह बताना चाहूँगा कि अपनी गिरफ्तारीके बाद भी मेरे लिए सदाशयताका जो एक सर्वोच्च प्रदर्शन सम्भव था, और जो शायद बहुत हदतक आपकी शैलीका था, वह मैने अपनी नजरबन्दीके कुछ दिनोके अन्दर ही किया था। मैने वाइसरायको एक व्यक्तिगत पत्र[1] लिखकर उनसे यह अपील की थी कि वे मुझे मुलाकातका और सारे मामलेपर इस तरह विचार-विमर्श करनेका मौका दे जिस तरह एक आदमी दूसरेके साथ करता है। जो कदम मैने उठाया था उसकी मैने सर सैम्युअल होरको भी पत्र लिखकर सूचना दे दी थी।[2] यथासम्भव अधिकसे-अधिक मैत्रीपूर्ण ढगसे लिखे गये मेरे पत्रकी वाइसरायने प्राप्ति-सूचना तक नही दी। इसलिए अब मै केवल एक ही सम्मानजनक प्रयास कर सकता हूँ, और यही मेरे लिए सम्भव है कि यातनाके इस प्यालेकी आखिरी बूँदतक

१. दिनांक १५ जनवरीका यह पत्र मिल नहीं सका।

२. देखिए खण्ड ४९, पृष्ठ १०-११।

पी लूँ। औचित्यकी दृष्टिसे मेरा सुझाव है कि यह उत्तर प्रकाशित कर दिया जाये।[1]

गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३९४२) से। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल सं० ८०० (४०) (४), भाग २, पृ० १३ से भी

६४५. पत्र : बम्बईके गवर्नरके निजी सचिवको

१३ नवम्बर, १९३२

परमश्रेष्ठ गवर्नरके निजी सचिव
बम्बई

प्रिय महोदय,

लॉर्ड सैंकीकी मेरे नाम जो सार्वजनिक अपील है, वह मैंने देखी है। मैं समझता हूँ कि मुझे उसका तुरन्त जवाब देना चाहिए। इसलिए मैं वह परमश्रेष्ठकी स्वीकृति और समुद्री तारसे भेजे जानेके लिए इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। यह परमश्रेष्ठ गवर्नर महोदयके अधिकार-क्षेत्रमें आता है या परमश्रेष्ठ वाइसरायके, मुझे मालूम नहीं है। यदि यह परमश्रेष्ठ वाइसरायके अधिकार-क्षेत्रमें आता हो तो मेरी प्रार्थना है कि लॉर्ड सैंकीको मेरे जवाबका मजमून तारसे उन्हें भेज दिया जाये ताकि वह समुद्री तारसे लॉर्ड चांसलरको भेजा जा सके।

भवदीय,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३८६८) से। बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल सं० ८०० (४०) (४), भाग २, पृ० ५ से भी

१. वाइसरायकी सिफारिशपर भारत-मन्त्री इसपर सहमत हो गये थे कि गांधीजी का सन्देश प्रकाशित नहीं होना चाहिए और उसका कोई उत्तर भी नहीं भेजना चाहिए। लॉर्ड सैंकीको तदनुरूप सूचना दे दी गई थी।—भारत सरकार, होम डिपार्टमेंट, पॉलिटिकल, फाइल नं० ३१/९५/३२।

६४६. सन्देश : वेरियर एलविनको

१३ नवम्बर, १९३२

स्वच्छतम वायु, स्वच्छतम जल, सादेसे-सादा आहार और स्वच्छतम विचार, जिसका मतलव वास्तवमे ईश्वरका सामीप्य है — यही चार नियम है, और इनमें से पहले तीन चौथेसे ही निकलते है। इसीलिए तो आपकी भाषा अंग्रेजीमें 'सादा जीवन और उच्च विचार' वाली कहावत है। इसे मै सरल करके इस रूपमे रखना चाहूँगा — स्वच्छ विचार और स्वच्छ जीवन। अस्वच्छ जीवनका जो अर्थ मैं लगाता हूँ, उस अर्थमे फोड़े-फुन्सियाँ ऐसे ही जीवनके लक्षण हैं। तो आरम्भके तौरपर भाइयोंके लिए[1] यही मेरा सन्देश मानिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४०

६४७. पत्र : एम० एम० अनन्तरावको

१३ नवम्बर, १९३२

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला। आपकी दलील इस प्रकार लगती है· 'भगवद्गीता'ने उपासकको शास्त्र-विधिका सहारा लेनेका निर्देश दिया है और शास्त्र क्योंकि अस्पृश्यताका समर्थन करते है, इसलिए यह कहना चाहिए कि 'भगवद्गीता' उसका समर्थन करती है। तव प्रश्न उठता है कि शास्त्र क्या है? इस प्रश्नका मै यह उत्तर दे चुका हूँ कि जो 'गीता'के मुख्य विषयके प्रतिकूल है, उसे शास्त्र न मानकर अस्वीकार कर देना चाहिए। मुख्य विषय क्योंकि एकत्व और इसलिए प्राणि-मात्रकी समानता है, अत 'गीता'मे अस्पृश्यताका कोई समर्थन नही है।

हृदयसे आपका,

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९५५८)से; सौजन्य : मैसूर सरकार

1. ईसाई सेवा संघके सदस्योंके लिए।

६४८. पत्र : आश्रमके बालक-बालिकाओंको

१३ नवम्बर, १९३२

बालको और बालिकाओ,

नव-निर्वाचितोकी नामावलि देखी। देखें, अब तुम नये सालमें कौन-सा नया काम करते हो। एक-दूसरेपर अविश्वास मत करना। किसीसे उद्दण्डतापूर्ण व्यवहार मत करना। एक-दूसरेके प्रति भी विनम्रता आवश्यक है। अपने समयके हर क्षणका सदुपयोग करना। खेलके वक्त खेलना भी समयका सदुपयोग है। किन्तु खेलके समय पढना और पढाईके समय खेलना समयका दुरुपयोग करना है।

बापू

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२) से।

६४९. पत्र : जमनाबहन गांधीको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० जमना,

स्टोवके बारेमें मैं अपना कर्त्तव्य कर चुका हूँ, अत निश्चिन्त हूँ।[1] स्वतन्त्र रूपसे और साहसपूर्वक, तुम्हे जो उचित लगे, वही करना।

मेरी कुहनीके बारेमे चिन्ता करनेका कोई कारण ही नही है।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ८६२) से; सौजन्य . नारणदास गाधी

१. एक दुर्घटना हो जानेसे गांधीजी ने स्टोवका उपयोग न करनेकी सलाह दी थी। देखिए "पत्र : जयशंकर पी० त्रिवेदीको", ४-१०-१९३२।

६५०. पत्र : जमनादास गांधीको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० जमनादास,

तू तो मुझे ही दोष देता जान पड़ता है। महीनो बाद एक पत्र लिखा और उसका उत्तर पानेको अधीर हो उठा। बात यह है कि मैंने तो लौटती डाकसे ही जवाब दे दिया था।

तेरा दूसरा पत्र मिला। तुझे पैसोंकी कमी तो रहेगी ही, किन्तु संकटके समय ईश्वर भेज ही देगा।

यदि तू किसी तरह अपना स्वास्थ्य सुधार ले तो उसे मैं बड़ी भारी जीत मानूँगा। अनावश्यक आत्मविश्वास मत करना। तुझसे यथासम्भव जो हो सके, उसे करके तू आनन्दसे नाच क्यों नही सकता? ऐसा क्यो मानता है कि तुझमे तेरी इच्छानुसार ही सामर्थ्य होनी चाहिए।

हरिजनोके बारेमे तेरा अनुभव रोचक है और उतना ही दु:खद भी है। किन्तु ऐसा तो करीब-करीब सब जगह है। इस सेवा-कार्यके सम्बन्धमे तू जब चाहे मुझसे मिलने आ सकता है। अब मुझे लिखना शुरू कर दिया है तो भविष्यमे भी लिखता रहना। यह देखना तो मेरा काम है कि तेरा लिखा हुआ मूर्खतापूर्ण है या बुद्धिमत्तापूर्ण।

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९४६७) से; सौजन्य : नारणदास गांधी

६५१. पत्र : गुलाबको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० गुलाब,

तुझे अपनी गुजराती सुधारनी चाहिए। उदाहरणके लिए, [जहाँ तू ने 'अन्त्यज' लिखा है वहाँ] 'अन्त्यज' नही, 'अत्यन्त' होना चाहिए। 'अत्यन्त' का अर्थ है— 'बहुत'।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७३२) से

६५२. पत्र : रमाबहन जोशीको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० रमा,

जोशीको मै गगाबहनसे अधिक भाग्यशाली मानता हूँ। उसकी चिन्ता हमें नही होनी चाहिए। चिन्ता करनेवाला तो परमेश्वर है।

काकीका देहान्त होनेसे यदि कुछ दिनोके लिए तेरा वहाँ हो आना जरूरी हो तो हो आ।

धीरूको जो ताना दिया गया, उसके सम्बन्धमे मुझे इतना ही कहना है कि कोई ऐसा कहे तब भी तुझे न तो रोष करना चाहिए और न उत्तेजित होना चाहिए। जिस प्रकार यदि कोई हमे अपने ही घरसे निकल जानेको कहता है तो उसका कोई अर्थ नही होता, उसी प्रकार यदि कोई तुझ-जैसेको, जिसे वह अच्छी तरह जान चुका है, आश्रमसे जानेको कहे तो उसका भी कोई अर्थ नही होता। और ऐसी बात जब किसी बालकसे कही जाये तब तो पूछना ही क्या? इसके बावजूद इसमे तो कोई शक ही नही है कि किसीको ऐसी धमकी नही देनी चाहिए।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५३३९) से।

६५३. पत्र : प्रेमाबहन कंटकको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० प्रेमा,

आज भी छोटा-सा ही पत्र लिखूंगा। अब हरिजन भाई-बहन मेरा बहुत समय लेते है।

कमलाबाई[1], जो नई आई है, शिकायत करती है कि उसे न अपनी लडकीके लिए समय मिलता है और न पढनेके लिए। देख लेना।

तू गोद हजम कर गई, यह बधाई देनेकी बात है। कितना खाया? साथमे क्या मिलाया था?

तेरे कामकी कठिनाई मैं अच्छी तरह समझता हूँ। भगवान् तुझे निभा लेंगे और आवश्यक शक्ति भी देंगे।

१. महाराष्ट्रके एक खादी-कार्यकर्ताकी पत्नी।

वीमारीका कारण ढूँढ लिया है तो अव इलाज भी कर ले।

मेरी भावनाके बारेमे तू पूछती है, इससे कुछ लाभ नही होगा; क्योंकि कोई अपनी भावनाका विश्लेषण पूरी तरह नही कर सकता।

जव तत्त्व व्यवहारमे उतरता न दिखे तव जान ले कि हमने तत्त्वको अच्छी तरह नही पहचाना है। शुद्ध तत्त्व हमारे व्यवहारमे उतरना ही चाहिए। पूरी तरह तो कोई तत्त्व व्यवहारमे नही उतारा जा सकता। परन्तु जो व्यवहार तत्त्वके निकट नही आता, वह अशुद्ध और त्याज्य है।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०३१०)से। सी० डब्ल्यू० ६७४९से भी, सौजन्य. प्रेमावहन कटक

६५४. पत्र : गजानन वी० खरेको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० गजानन,

चित्रोके सम्वन्धमे तूने जो-कुछ लिखा, उसे पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई। बुखार आता है तो उसे जल्दीसे-जल्दी दूर करना चाहिए। मेरी सलाह है कि तुझे वीजापुर या राजकोट जाना चाहिए। किन्तु पहले लिखकर पूछ देखना चाहिए। यदि यह अनुकूल न जान पड़े तो जहाँ ठीक लगे वहाँ जाकर जल्दीसे-जल्दी ठीक हो जाना चाहिए। स्थान-परिवर्तनका विचार मुझे उचित जान पडता है। तू वर्धा भी जा सकता है।

वापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ३१०) से; सौजन्य : लक्ष्मीवहन ना० खरे

६५५. पत्र : नारायण मोरेश्वर खरेको

१३ नवम्बर, १९३०

चि० पण्डितजी,

भगी, चमार सफाईसे नही रहते, क्योकि उनकी ओर हमने कभी देखातक नही। अब उनसे यह नही कहा जा सकता. "सफाईसे रहोगे तो हम तुम्हे अपना लेगे।" लेकिन ऐसा जरूर कह सकते है "आओ, हम तुम्हे गले लगायेगे और सफाईसे रहने आदिके नियम सिखायेगे।" मेरे इस कथनमे तनिक भी अतिशयोक्ति नही है। मै जब हरिजनोके प्रति हिन्दुओकी निर्दयता और उनकी भलाई के प्रति उदासीनताके बारेमे सोचता हूँ तो मेरे मनमे प्रश्न उठता है कि हिन्दू धर्म किसके पुण्यसे टिका हुआ है। यदि हम उस पापको नही धो डालते, तो हिन्दू धर्मका विनाश मुझे प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है।

बापू

[पुनश्च ·]

'भजनावली' पडी है। किन्तु समय कहाँ है? देखूँगा।

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २१९) से; सौजन्य · लक्ष्मीबहन ना० खरे

६५६. पत्र : रामचन्द्र ना० खरेको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० रामचन्द्र,

तेरा पत्र मिला। तू मामाके यहाँ रह आया, यह अच्छा किया। और कुछ दिन रहा होता तो शायद ज्यादा लाभ होता। अब जल्दीसे ताकत आ जाये तो अच्छा हो।

प्रेमाबहनसे माफी माँग ली? मिल गई?

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ३००) से; सौजन्य . लक्ष्मीबहन ना० खरे

६५७. पत्र : रतिलाल पी० मेहताको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० रतिलाल,

तेरा पत्र देखकर प्रसन्नता हुई। मैंने तो तुझसे कहा ही था कि ईश्वर तेरी रक्षा करता है। चोरी हो जानेकी चिन्ता मत करना। वे चीजे फिरसे कदापि इकट्ठी मत करना। जब हमारे पास अधिक चीजे होती है तब कभी-कभी चोरी भी हो जाती हैं।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७६४)से। सी० डब्ल्यू० १०४८ से भी; सौजन्य चम्पाबहन मेहता

६५८. पत्र : नर्मदाबहन राणाको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० नर्मदा,

इस बार तेरी लिखावट ज्यादा अच्छी है। तुझे अक्षरोके ऊपरकी ओर कुछ जगह छोड़कर लिखना चाहिए। तेरी बहन कहाँसे गई? उसकी कितनी उम्र है?

बापू

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७६७) से; सौजन्य: रामनारायण एन० पाठक

६५९. पत्र : सुलोचनाको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० सुलोचना,

तूने अपने कामका अच्छा विवरण दिया है और तेरी लिखावट भी अच्छी है। यह नही लिखा कि तकलीपर कितना सूत काता।

बापू

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १७४५) से।

६६०. एक पत्र[1]

१३ नवम्बर, १९३२

तू मेरे लिए अरुण-जैसा ही है और तुझे आश्रममे लिया जा सकता हो, तो ले लूँ। मगर अभी तो कलकत्तेमे अपगोके लिए जो आश्रम है, उसमे जाना चाहे तो उसकी व्यवस्था कर दूँ।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४१

६६१. पत्र : तुलसी मेहरको

१३ नवम्बर, १९३२

चि० तुलसी महेर,

तुमारा खत आनेसे आनद हुआ। यहाके सब हाल तो मीलते होगे। तुमारी प्रवृत्तिका कुछ बयान देना।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६५४१) से।

६६२. पत्र : केशवराम टंडनको

१३ नवम्बर, १९३२

भाई केशवराम टडन,

आपका पत्र मिला। अस्पृश्यता-निवारणमें सहभोज और बेटी-व्यवहार आवश्यक नही है।

आपका,
मोहनदास गांधी

श्री केशवराम टंडन
जमुना कोल ट्रेडिंग क०
फरुखाबाद, यू० पी०

पत्रकी फोटो-नकल(जी० एन० ५०५७)से।

१. यह पत्र एक मुसलमान युवकको लिखा गया था; साधन-सूत्रमें उसका नाम नहीं दिया गया है।

६६३. पत्र : नारणदास गांधीको

[१३]/१४, [नवम्बर], १९३२ के पूर्व[1]

चि० नारणदास,

तुम्हारा पत्र नियमानुसार मिल गया। दूसरी छोटी डाक भी मिल गई है। साथमे चम्पाको पत्र भेज रहा हूँ। इसे पढकर उसको दे देना, क्योकि इसमे चोरीके बारेमे भी मेरे विचार है। तो इस तरह इस विषयमे मुझे दोबारा लिखनेकी जरूरत नही रह जायेगी। यह सीख-सलाह एक बार फिर औरोको भी सुना देना, क्योकि जब-जब चोरी हुई है, ऐसी बाते तो मैने कही ही है। चम्पाको उसके कर्त्तव्यका बोध करानेके लिए जो-कुछ कहा है, उसपर भी नजर डाल लो, यह आवश्यक है।

इस स्थितिमे मै तुम्हारा नाम ट्रस्टियोमे नही दूँगा। तुम्हारी स्थिति किसी भी तरह नाजुक हो, ऐसा कुछ मै जान-बूझकर तो नही ही करूँगा। हमे तो बस जब-जहाँ जो कर्त्तव्य सामने आ जाये, उसका पालन करना है। शेष कुछ है ही नही। सिर्फ अधिकारके लिए अधिकार पानेकी वृत्तिको तो हमे सर्वथा त्याज्य ही समझना है।

कोई आता-जाता हो और तुम्हे आसानीसे याद रहे तथा मिले तो सिर्फ नमूनेके तौरपर वहाँके कुछ सतरे और मोसम्बियाँ भेज देना। फल थोडे ही सही किन्तु निकलते तो है, इससे मुझे बहुत खुशी होती है। पेडो और खेतीकी दूसरी मदोपर हुआ खर्च मुझे खटकता नही। शायद कुछ अनुचित खर्च हुआ हो, लेकिन मेरे मनपर यह छाप पड़ी है कि कुल मिलाकर तो ठीक ही हुआ है।

नवीनके बारेमे तो प्रभुदाससे पूछ-ताछ कर ही ली होगी।

दामोदर सोनेके लिए बँगलेपर नही गया, यह तो तुम्हे उसे बता देना चाहिए था।

अगर लगे कि छारोपर[2] कोई असर डाला ही नही जा सकता तो मावलकरसे मिलना और इस सम्बन्धमे कुछ किया जा सकता हो तो करना, अन्यथा सहन तो करना ही है।

शेलत के बच्चे अच्छे हो गये होगे। शेलत के पास 'फ्लावर्स ऑफ सेट फ्रासिस' नामक पुस्तक होनी चाहिए। यह जोशीके पत्रसे मालूम हुआ है। अगर हो तो लेकर इधर आनेवाले किसी आदमीके साथ भेज देना। इसकी कीमत तो इस बातमे है कि यह अत्यन्त प्रेमपूर्वक दी गई भेट है।

बलभद्रके बारेमे तुम्हारी बात समझ गया हूँ।

१. स्पष्टतः यह पत्र १३ नवम्बरसे पहले शुरू किया गया था। १३ को लिखना जारी रहा और १४ नवम्बर को पूरा हुआ।

२. किसी समय जरायमपेशा मानी जानेवाली मध्य गुजरातकी एक जन-जाति।

रामजी का पोस्टकार्ड आया है, जिसमें उसने लिखा है कि मेरा अस्पृश्यता-विषयक वक्तव्य पढकर अब वह यहाँ आना चाहता है। साथ ही उसको अपने मनका गुबार भी तो निकालना होगा। लेकिन, मुझे लगता है कि उसको एक बार यहाँ आने देना लाभदायक रहेगा। और उसे तो जब चाहे आनेकी इजाजत मिल ही जायेगी।

बारीक सूत बुनने लायक राछ-फन्नी हमे चाहिए, इस सम्बन्धमें अभी याद आता है कि अपने यहाँ बहुत बारीक सूतसे कपडा बुननेके लिए राछ-फन्नी थी तो। वे हमे आदमजी मियाँखाँके यहाँसे मिली थी। मुझे यह भी याद है कि मगनलालने इन्हीमे से तोड-फोडकर मोटा सूत बुननेके लिए कुछ फन्नियाँ तैयार की थीं। लेकिन, फन्नियाँ तो बहुत-सी थी। वे शायद कही पुराने सामानमे पडी हुई होगी। जरा खोज कराना और न मिले तो मियाँखाँके यहाँ पता करना। हो सकता है, वहाँ अब भी दूसरी फन्नियाँ मिल जाये, और न भी मिले तो वे लोग नई तो जरूर तैयार करवा देंगे। मियाँखाँ चार भाई थे — आदमजी, गुलाम हुसेन, चाँदाभाई और चौथेका नाम मुझे मालूम नही है। उनमे से आदमजी तो गुजर गये, गुलाम हुसेन शायद नेटालमे ही रहते है और चाँदाभाई आते-जाते रहते है। छगनलाल उन्हे व्यक्तिगत रूपसे जानता है। और अगर उनका पता तुममे से किसीको मालूम न हो तो छगनलालको तो मालूम होना ही चाहिए। शायद कालूपुर, वोहरावाड़मे उनका घर है और एलिस ब्रिजके पास उनका बँगला भी है।

बड़ी कुसुम तुम्हारे पडोसमें ही है। उसके बारेमे कोई समाचार मिल सके तो पता करना। तुममे से कोई उससे मिल सके तो मिलो और वह पुस्तक वगैरह माँगे तो पहुँचा दो।

तिलकमके लिए भात और आलू जहरके समान है। और दोनो विशुद्ध स्टार्च है, सो उसमे स्फूर्ति आये कहाँसे? स्टार्चसे स्फूर्ति तो नही ही मिलती, उलटे पेटमें खटास पैदा होती है। उसे तो जितना पचा सके उतना दूध ही लेना चाहिए और उसके अलावा फल तथा सब्जियाँ। इतना पचे तो फिर ऊपरसे रोटी भी ली जा सकती है।

जेठालालके बारेमे तुम्हे जो ठीक लगे, करना। पुरुषोत्तमको कोष्ठबद्धता होते ही समझ जाना चाहिए कि गडबडी शुरू हो गई। शहरके पानीका प्रयोग लगभग बेकार है। वहाँका पानी उबालकर पिये, यह ज्यादा अच्छा है। अँतडियोंके लिए नित्य प्राणायाम और पेडूपर हलकी मालिशकी जरूरत है।

अगर कुसुम खुद ही प्रसन्न मनसे आश्रममे रह सके और मैंने जो तीन महत्त्व-पूर्ण नियम बताये हैं, उनका पालन करे तो मैं तो बिलकुल निर्भय और निश्चिन्त हो जाऊँ। बादमे चाहे जो परिणाम आये।

रावजीभाईने संशोधित पत्र क्यो नही लिखा?

तो तुमने बिलकुल तर्कपूर्वक कसुम्बाको यह समझा ही दिया कि तुम लोगोंके साथ बैठकर खानेसे वह जातिभ्रष्ट तो हो ही गई। मनको बहलानेके बजाय अगर

आदमी इस तरह, जो बात दिनके उजालेके समान स्पष्ट है, वही करे तो दोहरा पुण्य कमाये और शान्तिका भी उपभोग करे।

बाबाको लेकर यह धमा-चौकडी तो आश्रममे ही मच सकती है। वेदका रहस्य न जाने, तब भी हम वेदज्ञ होनेका दावा तो कर ही सकते है। गनीमत है कि इस दुनियामे आदमी निन्द्य कार्योकी अपेक्षा हास्यास्पद कार्य बहुत अधिक करता है। तुम्हे इस सबका पूरा ज्ञान है, अन्यथा तुम्हे पागलोके अस्पतालमे भरती करानेकी नौबत न आ गई होती।

परशुरामका पत्र तो मै अबतक नही पढ पाया हूँ। लेकिन, उसे पढे बिना ही, तुम्हारे पत्र और सलाहके अनुसार, उसको वे चीजे देनेकी स्वीकृति देता हूँ जो उसने माँगी है।

[पुनश्च :]

रविवार, दोपहर, १३ नवम्बर, १९३२

हाथको जितनी जरूरत है उतना आराम देता हूँ। मेरा वजन इस हफ्ते १०२ पौडतक पहुँच गया है। उसी अनुपातमे शक्ति आ गई हो, ऐसा नही है।

आशा है, मेरे लेखोसे कोई घबराया नही होगा। यह तो खुशी मनानेका प्रसग है। बा के बारेमे राजाजी से पूछूंगा। उर्मिलादेवी तो वहाँ जायेगी ही।

लीलाधरको लिखा पत्र पढ़ना।

[पुनश्च :]

मौनवार, प्रात.काल [१४ नवम्बर, १९३२]

विनोबाका तकली-माहात्म्य सबके विचारने योग्य है। भाऊसे उन्हे तकली चलानेका तरीका सीख लेना चाहिए।

बापू

[गुजरातीसे]

बापुना पत्रो-९ : श्री नारणदास गांधीने, भाग-१, पृ० ५०१-४। सी० डब्ल्यू० ८२६८ से भी; सौजन्य : नारणदास गाधी

६६४. वक्तव्य : अस्पृश्यतापर – ५

१४ नवम्बर, १९३२

अपने इस पाँचवें वक्तव्यमें मैं समाचार-पत्रोंके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहूँगा क्योंकि वे मेरे वक्तव्योंका और आम तौरपर इस आन्दोलनका प्रचार कर रहे हैं। पिछले सप्ताह श्रीयुत राजभोज और उनके मित्रोंने मुझसे मिलकर लगभग पूरे आन्दोलनपर विचार-विमर्श किया था।[१] उनसे जो-कुछ मैंने कहा, उसके एक अंशका सार मैं यहाँ देना चाहता हूँ।

उनका एक प्रश्न यह था कि इस आन्दोलनमें हरिजन किस तरह सहायता दे सकते हैं। वे इस दिशामें बहुत-कुछ कर सकते हैं। कुछ सवर्ण हिन्दू उनके साथ पूर्ण समानताके आधारपर न मिलनेका औचित्य सिद्ध करते हुए उनपर जो आरोप लगाते हैं, उनका वे पहलेसे ही खयाल करके निराकरण कर सकते हैं। मैं पहले ही जोरदार शब्दोंमें यह कह चुका हूँ कि हरिजनोंके विशाल समुदायकी निस्सन्देह जो शोचनीय दशा है, उसके लिए पूर्णतया सवर्ण हिन्दू ही दोषी हैं और अस्पृश्यताकी समाप्तिके बाद सुधार अपने-आप होगा। उसे समाप्तिकी पूर्व शर्त कदापि नहीं बनाना चाहिए। फिर भी, वर्तमान परिस्थितियोंमें भी जितना सम्भव है उतना आन्तरिक सुधार करना हरिजन कार्यकर्त्ताओंका स्पष्ट कर्त्तव्य है।

इसलिए हरिजन कार्यकर्त्ताओंको अपनी सारी शक्ति इन कामोंमें लगा देनी चाहिए :

(१) हरिजनोंमें सफाई और स्वास्थ्य-विज्ञानका प्रचार,

(२) पाखानोंकी सफाई और चमड़ा कमाने-जैसे गन्दे माने जानेवाले कामोंके करनेकी पद्धतिमें सुधार,

(३) मांस-मात्रका नहीं तो मुर्दा ढोरके मांस और गोमांस का त्याग,

(४) मादक पेयोंका त्याग,

(५) जहाँ दिवा-पाठशालाएँ हों वहाँ अपने बच्चोंको उनमें भेजने के लिए और जहाँ रात्रि-पाठशालाएँ खुल गई हों वहाँ स्वयं उनमें जानेके लिए बच्चोंके माता-पिताओंको राजी करना,

(६) उनमें आपसमें ही जो छुआछूत है, उसे समाप्त करना।

अब इन मदोंके बारेमें अपना आशय स्पष्ट करनेके लिए मैं इनकी थोड़ी चर्चा कर रहा हूँ। नित्य स्नान कमसे-कम हमारे यहाँकी जलवायुमें आवश्यक है, और साफ कपड़े तो हर जलवायुमें आवश्यक हैं। मुझे मालूम है कि हरिजन बस्तियोंमें

१. देखिए "भेंट : पी० एन० राजभोजको", ११-११-१९३२।

पानी आसानीसे नही मिलता। सार्वजनिक कुओ और तालाबोपर जानेकी उन्हे आम तौरपर छूट नही होती और वे इतने गरीब है कि कपडे नही बदल सकते। आम तौरपर लोग यह नही जानते कि एक लोटे पानीसे भी स्वच्छ स्नान किया जा सकता है। इसका तरीका है साफ अँगोछेको पूरी तरह भिगोकर सिर समेत सारे शरीरको उससे जोरसे रगड़ना और उसके बाद सूखे अँगोछेसे शरीरको पोछ लेना। यदि स्नान रोज किया जाये तो गीले अँगोछेका सब पानी निचोडकर उसीसे शरीर भी सुखाया जा सकता है। और इस जलवायुमे वही कपडे, केवल लँगोटी पहनकर आसानीसे धोये जा सकते है और तुरन्त वहीके-वही सुखाये जा सकते है।

मै जानता हूँ कि मै जो-कुछ कह रहा हूँ, उसमे कुछ नया नही है। फिर भी ये प्रारम्भिक बाते मुझे सैकडो कार्यकर्त्ताओको समझानी पडी है। स्नातकोमे भी ऐसे लोग देखनेको मिले है जिन्हे पाखाना वगैरह साफ करनेके सुधरे तरीकोसे सम्बन्धित सफाई-विज्ञानकी इन प्रारम्भिक बातोकी जानकारी नही है। स्वार्थी और अज्ञानी सवर्ण लोग मनुष्यके मल-मूत्रको सभ्य ढगसे हटाना लगभग असम्भव बना देते है। अस्पृश्यता के कारण पाखाने इतने गन्दे रहते है कि कुछ कहा नही जा सकता। वे अँधेरे होते है और उनमे हवाका आना-जाना मुश्किल होता है। वे इस ढगसे बने होते है कि किसी तरह केवल उनके एक हिस्सेको ही, और सो भी बहुत ही गन्दे तरीकेसे, साफ कियाँ जा सकता है। इन पाखानोका उपयोग करना रोज-रोज नरकमे जानेके समान है और अगर यहाँकी जलवायु इस दृष्टिसे अच्छी न होती तो आजकी अपेक्षा कई हजार अधिक लोग अकाल ही काल-कवलित हो जाते। लोगोमे अपनी विष्ठा आप न देखने और पाखानेके भीतरी हिस्सेको न दूसरोको साफ करने देने और न खुद साफ करनेका एक अन्धविश्वास-सा है, जिससे हरिजनोको यह अत्यन्त आवश्यक सामाजिक कार्य बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियोमे करना पडता है। लेकिन, आजकी परिस्थितिमे भी वे इतना तो कर ही सकते है कि यह काम करके तुरन्त स्नान कर ले और सफाईके कामके लिए थोडी-सी घासके बजाय काफी मात्रामे सूखी मिट्टीका इस्तेमाल करे।

एक कुशल भगी होनेके नाते, जैसा कि मेरा दावा है, मै इस कामको करनेके, खासकर यदि ग्रामवासी और शहरके लोग सहायता करे तो अनेक बहुत ही सस्ते, कारगर और बिलकुल साफ तरीके बता सकता हूँ। लेकिन जल्दीमे तैयार किये इस सामान्य वक्तव्यमे मै इस दिलचस्प विषयपर विचार नही कर सकता। जिज्ञासु लोग आम सफाईपर और विशेषकर गाँवकी सफाईपर मेरे लेख पढ सकते है। भगियोको सफाईका काम करते समय अपने धन्धेकी खास पोशाक पहननी चाहिए। हर काम करानेवाला या काम करानेवाले कुछ लोग मिलकर अपने भगी या भगियोको इस तरहकी पोशाक दे सकते है।

साफ ढगसे चमडा कमानेका काम तो इससे कही ज्यादा मुश्किल है। हमारे चमारोको मुर्दा ढोरका चमड़ा उतारने या चमड़ा कमानेकी आधुनिक पद्धति मालूम नही है। 'चमड़ा कमाना' शब्द यहाँ मैने व्यापक अर्थमे प्रयुक्त किया है। तथाकथित ऊँची जातियोने अपने स्वधर्मियो और स्वदेशवासियोके इस उपयोगी वर्गकी अक्षम्य

उपेक्षा की है, जिससे मुर्दा ढोरको उठाकर ले जाने लेकर गालके परिष्कारतक की सारी प्रक्रिया भोडे ढगसे होती है, और उसके फलस्वरूप देशकी न जाने कितनी सम्पत्तिकी हानि हो रही है तथा घटिया चीजे तैयार हो रही है।

स्वर्गीय मधुसूदन दासने[1], जो महान् परोपकारी व्यक्ति थे और जिन्होंने चमडा कमानेकी आधुनिक प्रक्रिया स्वय सीखी थी, आँकडे देकर यह दिखाया था कि अस्पृश्यताके अन्धविश्वासके कारण, जिसे धर्मका नाम दे दिया गया है, देशको हर साल कितनी हानि होती है। हरिजन कार्यकर्त्ता चमडा कमानेकी आधुनिक पद्धति सीख सकते है और जहाँतक व्यावहारिक हो, चमारोको उससे अवगत करा सकते है। भगियोको यह शिक्षा देनी चाहिए कि वे रोजमर्राके खानेकी जूठन, जिसे घरके मालिक वस्तुत. बहुत ही क्रूर ढगसे उनकी ओर फेंक देते है, हरगिज नही लेनी चाहिए। सालोकी आदतसे भगियोकी सुरुचिकी भावना जड हो गई है और उन्हे दूसरे आदमीकी जूठन खानेमे कोई बुराई दिखाई नही देती। उनमे अपने मालिकोके भोजनके थालके उच्छिष्टके लिए, जिसे वे व्यजन कहते है, एक लालसा-सी रहती है। मैं ऐसे भगियोको जानता हूँ जिन्होंने अपने बच्चे स्कूलसे इसीलिए हटा लिये है कि वहाँ उन्हे इस जूठनको न छूने और अपने घरमे पकी ज्वार और बाजरेकी रोटीसे सन्तुष्ट रहनेकी शिक्षा दी जाती है।

चमारोको यह समझाना चाहिए कि वे मुर्दा ढोरका मास और गोमास खाना छोड दें। शाकाहारी होनेके नाते मैं तो यह चाहूँगा कि हरिजन मास खाना बिलकुल ही छोड दे, जैसा कि बहुतोने किया है। परन्तु यदि वे इस सुधारके लिए तैयार न हो, तो उन्हे मुर्दा ढोरका मास, जो अस्वास्थ्यकर होनेके अलावा शेष मानव-समाजमे निषिद्ध है, और गोमास, जो हिन्दू धर्ममें वर्जित है, छोडनेकी शिक्षा तो देनी ही चाहिए। मुझे मालूम है कि मुर्दा ढोरका मास उस मूल्यका एक अश होता है जो उसे हटानेके लिए उन्हे मिलता है। डॉ० अम्बेडकरने मुझे बताया कि कुछ स्थानो पर गाँववालोने उन चमारोको पीटा जिन्होंने मुर्दा ढोरका मास खाना छोड दिया था और उनसे यह कहा कि उसे खाना तुम्हारा धर्म है। सचाई यह थी कि उन्हे यह डर था कि यदि चमारोने मुर्दा ढोरका मास खाना छोड दिया तो वे उसका मूल्य माँगेंगे या मुर्दा ढोरको उठाना बन्द कर देगे। चाहे कैसी भी कठिनाई हो, पर मुर्दा ढोरका मास और गोमास अवश्य छोड देना चाहिए। यह एक ही सयम हरिजनोको सवर्ण हिन्दुओकी निगाहमे तुरन्त ऊपर उठा देगा और उससे अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनमे सवर्ण सुधारकोका काम अपेक्षाकृत आसान हो जायेगा।

चौथी और पाँचवी मदोके बारेमें कुछ कहनेकी जरूरत नही है। वे स्वत स्पष्ट है।

१. वस्तुतः मधुसूदन दास मरे नहीं थे। गांधीजी को बादमें एक आश्रमवासीने अपनी भूल पता चली और उन्होंने तुरन्त मधुसूदन दाससे क्षमायाचना की। देखिए खण्ड ५२, "तार: मधुसूदन दासको", १८-११-१९३२।

आखिरी मद खुद अस्पृश्योमे जो छुआछूत है उसे समाप्त करना है। यह ऐसा काम है जिसे तुरन्त करना आवश्यक है। यदि यह दोहरी अस्पृश्यता एक ही झटकेमे मिटा नही दी गई, तो अस्पृश्यताको मिटाना बहुत ही कठिन होगा। हरिजन कार्यकर्त्ताओके लिए यह एक कठिन काम है। लेकिन यदि वे यह समझ लें कि यह आन्दोलन मुख्यतया धार्मिक है और हिन्दू धर्ममे जो गन्दगी घुस गई है, उसे दूर करनेके लिए है, तो उनमे इस महान् सुधारको पूरा करने लायक आवश्यक साहस और आत्मविश्वास आ जायेगा।

इस बातपर मेरे जोर देनेकी जरूरत नही है कि इस तरहके आन्दोलनमे कार्यकर्त्ता नि स्वार्थ और शुद्ध चरित्रके होने चाहिए। मैंने यहाँ एक रचनात्मक कार्यक्रम रखा है जो हरिजनोमे बड़ेसे-बडे उत्साही सुधारकोको भी सन्तोष प्रदान कर सकता है और उनका सारा समय और सारी शक्ति खपा सकता है। पर दो-एक बाते ऐसी है जो हरिजन कार्यकर्त्ताओ और हरिजनोको अभी कुछ दिनतक, जबकि हम यह काम और तरीकोसे पूरा करनेकी आशासे इसमे लगे हुए है, नही करनी चाहिए। कमसे-कम किसी भी हरिजनको किसीके विरुद्ध उपवास नही करना चाहिए और न उन्हे सत्याग्रह ही करना चाहिए। वे देखे कि सवर्ण हिन्दू जो इस समय कसौटीपर है, वे हरिजनोको उनसे अलग करनेवाली रुकावटोको दूर करनेके लिए क्या करते है। स्थानीय सवर्ण हिन्दुओके साथ उन्हे झगडा नही करना चाहिए। उनका व्यवहार हमेशा, और इस समय तो और भी अधिक विनम्र और शालीन होना चाहिए। जबरदस्तीसे उन्हे चाहे बहुत-सी चीजे मिल जाये, पर धर्मकी रक्षा केवल कष्ट-सहन करके ही की जा सकती है, उत्पीडकोके प्रति हिंसासे कभी नही की जा सकती। उनकी शोभा इसीमे है कि वे अपने अधिकार सवर्ण हिन्दुओका हृदय-परिवर्तन करके प्राप्त करे, और आज तो उनके पास आशा रखनेके लिए काफी कारण है, क्योकि उन्हे यह मालूम होना चाहिए कि इस समय दसियो हजार सवर्ण हिन्दू ऐसे है, जिनमे अपने अपराधका एहसास जाग उठा है और जो हरिजनोकी क्षतिपूर्तिके लिए पूरी शक्तिसे प्रयत्न कर रहे है। उन्हे अपने ध्येयके सर्वथा न्यायसगत होने और उसकी प्राप्तिके लिए कष्ट सहनकी अपनी क्षमतामे पूर्ण विश्वास होना चाहिए।

अगले वक्तव्यमे[1] मै उन सवर्ण हिन्दुओको उत्तर दूंगा, जिन्होने यह पूछा है कि इस आन्दोलनमे वे किस प्रकार सहायता कर सकते हैं।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, १५-११-१९३२

१. देखिए पृ० ४५९-६१।

६६५. तार : जमनालाल बजाजको[1]

१४ नवम्बर, १९३२

जमनालाल बजाज
कैदी, धूलिया जेल

डॉ० मोदीसे पूरी रिपोर्ट लो। तुम्हारी जाँचके लिए वे तुरन्त बुलाये जायें ताकि निश्चित निदान कर सकें। खाँसी कैसी है?

बापू

[गुजरातीसे]
पाँचमां पुत्रने बापुना आशीर्वाद, पृ० ८०

६६६. पत्र : भाऊ पानसेको

प्रातःकाल, मौनवार, १४ नवम्बर, १९३२

चि० भाऊ,

मेरा पत्र तुम्हें बहुत देरसे मिलेगा, क्योंकि जब यह मिलेगा तब तुम्हें उपवास खोले हुए बारह दिन हो चुके होंगे। तुम्हें क्या खाना चाहिए, यह तो मैं पहले ही लिख चुका हूँ। उसमें अपनी शारीरिक प्रकृतिके अनुसार थोड़ा हेर-फेर कर सकते हो। यदि छः-सात दिन या उससे भी पहले एनीमा लेनेकी जरूरत न पड़े, खुलकर भूख लगे और सामान्य खुराक आसानीसे हजम हो जाये, वजन और ताकत भी बढ़ने लगे, तभी यह कहा जा सकता है कि उपवास सफल रहा। किन्तु यदि एनीमाके बिना पाखाना हो ही नहीं तो विरेचन ले लेना चाहिए। इसके लिए रेंडीका तेल बहुत अच्छा है; सुबह उठते ही दातुन करनेके बाद एकसे दो चम्मचतक पी लेना चाहिए। यदि जरा-सा नमक मुँहमें डालकर तेल निगल लिया जाये और बादमें थोड़ा-सा नमक चाट लिया जाये तो उसका बुरा जायका महसूस न होगा। इसके बाद तो बिना एनीमाके पाखाना होना ही चाहिए। यदि पाखाना न हो तो समझ लेना चाहिए कि आँतें अभी साफ नहीं हुईं। थोड़ी-सी ताकत आ जानेके बाद फिर उपवास करना चाहिए। किन्तु कब्ज इसी प्रकार जायेगा।

विनोबाने जो तकली-माहात्म्य लिखकर भेजा है, उसे मैं तो पूरी तरह मानता हूँ। और जो सेवा-भावसे यज्ञार्थ तकली कातता है, उसके लिए वह मोक्षप्रद हो सकती है, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है।

बापू

१. मूल अंग्रेजी तार उपलब्ध नहीं है।

[पुनश्च :]

तुम जिस ढंगसे तकली चलाते हो, क्या उसे पत्र द्वारा समझा और सिखा सकते हो? फिलहाल कितने लोग इस ढंगसे सीख रहे हैं?

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ६७४२) से। सी० डब्ल्यू० ४४८५ से भी; सौजन्य: भाऊ पानसे

६६७. पत्र: एम० जी० भण्डारीको

१४ नवम्बर, १९३२

प्रिय मेजर भण्डारी,

स्वर्गीय डॉ० मेहताको. हाल ही में जिनकी मृत्युपर[1] मुझे इतने-सारे तार मिले थे, आप अबतक जान ही गये हैं। उनके मामलोंकी मैं यहाँसे, जितनी भी सम्भव है, देखभाल करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। अपने पीछे वे जो जायदाद छोड़ गये हैं, उसके निपटारेके बारेमें मुझे अब डॉ० मेहताके परिवारके लोगोंको सलाह देनी है। वे हीरोंके व्यापारी थे और रंगूनमें, जहाँ वे बहुत साल पहले बस गये थे, उनकी भू-सम्पत्ति थी। उनके मामलोंके सिलसिलेमें मेरा इस पत्रके साथ भेजी जा रही सूचीके[2] सभी लोगों या इनमें से कुछ से मिलना जरूरी है। इनमें से किसीने भी कभी राजनीतिमें भाग नहीं लिया है, और दोको छोड़ बाकी सभी बर्मामें कारोबार करते हैं। जैसा कि आपको मालूम ही है, उपवाससे पहले मैंने साप्ताहिक मुलाकातें बिलकुल बन्द कर दी थीं। उपवासके बाद मैंने कभी-कभी, मुख्यतया अपनी पत्नी और बच्चोंके साथ इस तरहकी मुलाकातें की हैं। लेकिन इस सूचीमें गिनाये गये लोगोंसे, जो इस मामलेके निपटनेतक बराबर ही आते रहेंगे, मेरा मिलना आवश्यक हो सकता है। मुझे विश्वास है कि सरकारको मेरी यह प्रार्थना यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र स्वीकार करनेमें कोई आपत्ति नहीं होगी।[3]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल सं० ८०० (४०) (२), भाग १, पृ० ३३९। जी० एन० ३८६९ से भी

१. डॉ० प्राणजीवन मेहताका रंगूनमें ३ अगस्तको देहान्त हुआ था।
२. यह उपलब्ध नहीं है।
३. सरकार द्वारा प्रार्थना स्वीकार कर ली गई थी।

६६८. पत्र : कुन्हप्पाको

१४ नवम्बर, १९३२

आपने अपना पत्र तथा जमोरिन और केलप्पन द्वारा एक-दूसरेको भेजे गये पत्रों और तारोंकी नकलें भी भेजकर अच्छा किया। आपका पत्र और उसके साथ भेजी गई सामग्री मेरे लिए अत्यन्त मूल्यवान सिद्ध हुई है। उपवास यदि करना पड़ा तो वह जमोरिनके विरुद्ध नहीं होगा। सवर्ण हिन्दुओंका विशाल समूह यदि सचमुच मन्दिरको अवर्णोंके लिए खुलवानेके पक्षमें हो, तो क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि जमोरिन भी मन्दिरको उनके लिए बन्द नहीं कर सकते? वह उनकी सम्पत्ति नहीं है। यह याद रखना चाहिए कि वे खुद कोई दावा नहीं करते और यह मानते हैं कि वे केवल एक ट्रस्टी हैं। एक क्षणके लिए हम यह मान लेते हैं कि वे केवल मन्दिरमें जानेवाले सवर्ण हिन्दुओंके ट्रस्टी हैं। तो यह भी मानना पड़ेगा कि मन्दिरकी कुंजी उन लोगोंके हाथमें है और जमोरिन उसे उन्हींकी ओरसे अपने पास रखे हुए हैं। सवर्ण यदि सचमुच उद्यत हों तो बहुत-से ऐसे तरीके हैं जिनमें वे अपनी उद्यतता अचूक ढंगसे व्यक्त कर सकते हैं। मन्दिरका उपयोग करनेवाले सभी सवर्ण स्त्री-पुरुषों की मतगणनाका क्या कभी कोई प्रयास किया गया है? यदि स्थिति वैसी नहीं है, जैसी कि मैं सोचता हूँ, और सवर्णोंको कोई अधिकार नहीं है, और यदि यह ट्रस्ट उनके ही हितार्थ नहीं है तो मुझे सही स्थितिकी सूचना मिलनी चाहिए। तभी आपका मुझसे निर्णय बदलनेके लिए कहना ठीक रहेगा। उदाहरणके लिए, यदि मन्दिर जमोरिनकी निजी सम्पत्ति है, दूसरे शब्दोंमें, यदि वे मन्दिरके द्वार इच्छा होनेपर किसीके लिए भी बन्द कर सकते हैं, तो गुरुवायूरको हरिजनोंके लिए खुलवानेका सारा आन्दोलन शुरूसे ही गलत है और हमें अपने कदम पीछे हटाने होंगे। सभी कार्यकर्ताओंको इस स्थितिकी इसी दृष्टिकोणसे जाँच करनी चाहिए। यदि गलती हो गई है, तो उसे खुलेआम स्वीकार करनेमें कोई शर्म महसूस नहीं होनी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४४-५

६६९. पत्र : पी० एन० राजभोजको

१४ नवम्बर, १९३२

प्रिय राजभोज,

आपका पत्र मिला। अपने उत्तरोकी[1] सशोधित प्रति साथ भेज रहा हूँ। आपके प्रश्नोमे कोई सशोधन नही किया है। कुछ प्रश्नोमे तो एक ही तरहकी बाते दोहराई गई है, इसलिए उन्हें निकाल दिया जाये तो हर्ज नही।

आशा है, मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा। उसमे आप चाहते थे, वह सन्देश भी था।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९६) से।

६७०. एक पत्र[2]

१४ नवम्बर, १९३२

मै आपकी इस बातसे पूरी तरह सहमत हूँ कि किसीके साथ अस्पृश्यका-सा व्यवहार नही करना चाहिए, और मुझे पूरा विश्वास है कि जिस दिन हम चार करोड हिन्दुओके साथ ऐसा व्यवहार करना बन्द कर देगे उसी दिनसे ईसाइयो और मुसलमानोके साथ भी ऐसा व्यवहार करना बन्द कर देगे।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४२

१. देखिए "भेंट: पी० एन० राजभोजको", ११-११-१९३२।

२. साधन-सूत्रमें यह नहीं बताया गया है कि यह पत्र किसको लिखा गया था। पत्र-लेखकने पूछा था: "क्या हम औरोंके साथ भी — जैसेकि ईसाइयों आदिके साथ — अस्पृश्योंका-सा व्यवहार नहीं करते?"

६७१. एक पत्र[1]

१४ नवम्बर, १९३२

तुम महसूस करते हो कि यहाँके करोड़ो लोग गरीब हैं, यह जानकर खुशी हुई। भगवान् कृष्णसे प्रार्थना करनेका सच्चा तरीका यह है कि हम उनके नामपर उन लोगोकी थोडी सेवा करे जो हमसे बुरी अवस्थामे है। जब हम अपने दैनिक जीवनमे सेवाकी भावनाका परिचय देगे तो श्रद्धाहीन पडोसियोकी भी ईश्वरमे श्रद्धा जगने लगेगी। अस्पृश्योके बीच जाकर और इस भावसे मानो वे तुम्हारे ही परिवारके सदस्य हैं उनकी जितनी बने उतनी सेवा करके तुम खुद अस्पृश्यता-निवारणका काम कर सकते हो। अगर तुम हिन्दी नही जानते हो तो जल्दी सीख लेनी चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४३

६७२. वक्तव्य : अस्पृश्यतापर – ६

१५ नवम्बर, १९३२

हरिजनोमे से तो केवल श्रीयुत राजभोजने ही मुझसे यह पूछा है कि इस आन्दोलनको आगे बढ़ानेके लिए हरिजन क्या कर सकते हैं, किन्तु सवर्ण हिन्दुओकी ओरसे भारतके सभी हिस्सोसे इस तरहके बीसियो पत्र आये हैं। पत्र लिखनेवालो मे पुरुष भी हैं और स्त्रियाँ भी, विद्यार्थी भी हैं और दूसरे लोग भी। इनमे यह पूछा गया है कि अपने और कार्योको रोके बिना वे इस आन्दोलनमे किस प्रकार सहायता कर सकते हैं। अस्पृश्यता-निवारण आन्दोलन तो, जहाँतक उसका जनसाधारणसे सम्बन्ध है, उनके हृदय-परिवर्तन और हरिजनोके प्रति उनके रुखको बदलनेका आन्दोलन है, इस लिए सवर्ण हिन्दुओके विशाल समुदायको हरिजनोकी सेवा करनेके लिए अपने रोजमर्रा के कामोको रोकनेकी जरूरत नही है।

इसमे पहली बात तो यह है कि हरएक स्त्री और पुरुष अपने जीवनमें अस्पृश्यता-निवारणके फलितार्थोको समझे, और अगर उसका मन यह उत्तर दे कि हरिजनोके सार्वजनिक मन्दिरोंमे प्रवेशपर, पाठशालाओ, सरायो, सडको, अस्पतालो, औषधालयों आदि सार्वजनिक स्थानोके उनके द्वारा उपयोगपर — सक्षेपमे कहे तो धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रोमें जिस स्थितिका उपभोग वह स्वय कर रहा है, वही स्थिति हरिजनोको प्रदान करनेपर — उसे न केवल कोई

१. यह एक लड़केके पत्रके उत्तरमें लिखा गया था। उसने गांधीजी से पूछा था कि वह किस तरह सेवा-कार्य कर सकता है। साधन-सूत्रमें उसका नाम नहीं बताया गया है।

आपत्ति नही है, वल्कि वह इन वातोके लिए उत्सुक है तो माना जायेगा कि व्यक्तिगत रूपसे उसने कदम उठा लिया है।

लेकिन प्रश्नकर्त्ता इतना ही नही चाहते और न मुझे उनके सिर्फ इतना ही करने से सन्तोष होगा। इतना करने के वाद वे यह जानना चाहते है कि इस उद्देश्यको सफल वनानेके लिए वे और क्या कर सकते है। ऐसे प्रश्नकर्त्ताओको अपनी प्रवृत्तियो को अपने आसपासके क्षेत्रोसे वाहर फैलानेकी जरूरत नही है। उन्हे चाहिए कि वे प्रतिदिन जिन लोगोके सम्पर्कमे आते है, उनका मत वदलनेकी कोशिश करे और अगर ये लोग अस्पृश्यता-निवारणकी आवश्यकताके कायल नही होते तो उनका फर्ज यह है कि यदि उन्होने इस आन्दोलनका आलोचनात्मक अध्ययन किया है तो उसके आधारपर दलील करके अपने ऐसे पडोसियोको अस्पृश्यता-निवारणकी आवश्यकताका कायल वनाये, और अगर उनमे यह करनेकी योग्यता न हो तो आवश्यक साहित्य प्राप्त करके वे अपने पड़ोसियोको दे और उनका सम्पर्क ऐसे पूर्णकालिक कार्यकर्त्ताओसे कराये जिनमे इस तरहके प्रचारकी विशेष योग्यता है। यदि उन्हे लगे कि उनके आसपासका क्षेत्र इस आन्दोलनकी भावनासे प्रभावित नही है और अगर उस क्षेत्रमे उनका कोई प्रभाव हो तो उन्हे सार्वजनिक भाषणो तथा प्रदर्शनोंका आयोजन करना चाहिए। इतना तो सवर्ण हिन्दुओके वीच आवश्यक कार्यके वारेमे हुआ।

लेकिन यह विशाल जनसमुदाय जो असली काम कर सकता है वह तो निस्सन्देह हरिजनोंके वीच ही करनेका है। जिन लोगोने मेरा पाँचवाँ वक्तव्य पढा है उन्होने इस वातको लक्ष्य किया ही होगा कि इस क्षेत्रमे ऐसे वहुत-से सेवा-कार्य करनेको पड़े हुए है जो सवर्ण हिन्दू अपना अधिक समय, शक्ति या पैसा खर्च किये विना चुपचाप और प्रभावकारी ढगसे कर सकते है। हरिजनोको आवश्यक जलके साधनोंके उपयोगकी सुविधा सुलभ कराकर सवर्ण हिन्दू हरिजन कार्यकर्त्ताओके उन प्रस्तावोमे कारगर योग दे सकते है जो वे हरिजनोमे सफाईकी आदते डालनेके लिए कर रहे है। वे हरिजन वस्तियोके निकट स्थित सार्वजनिक कुओ और तालावोका पता लगा कर उनका उपयोग करनेवाले सवर्ण हिन्दुओको यह वताते हुए कि ऐसी सार्वजनिक सुविधाओंका लाभ उठानेका हरिजनोको कानूनी अधिकार है, उनका मत-परिवर्तन कर सकते है। साथ ही वे इस वातका भी ध्यान रख सकते है कि हरिजनोको इन सुविधाओका लाभ उठाने देनेके लिए सवर्ण हिन्दुओकी सहमति प्राप्त हो जानेपर हरिजन लोग उनका उपयोग इस तरहसे करे जिससे सवर्ण हिन्दुओको वुरा न लगे।

जहाँतक पाखाने आदिकी सफाईका सम्वन्ध है, उनके पड़ोसके जिन घरोमे हरिजन काम करते हो, उनके मालिकोसे मिलकर वे उन्हे समझा सकते है कि हरिजनोको ऐसी सुविधाएँ देना जरूरी है जिससे उनको सफाईका काम स्वास्थ्यकर ढंगसे करनेमे आसानी हो। स्वाभाविक ही है कि इसके लिए उन्हे पाखाने वनाने और मल-मूत्र साफ करनेकी वैज्ञानिक पद्धतिका अध्ययन करना होगा। वे घरोके मालिकोसे हरिजनोको सफाईका काम करते समय पहननेके लिए खास पोशाके भी दिला सकते है और खुद वेहिचक सफाईका काम करके हरिजनोमे यह भाव पैदा कर सकते है कि

इस तरहकी सेवा करना कोई नीचा और अप्रतिष्ठाका काम नहीं है। सवर्ण लोग अपने दैनिक भोजनकी जूठन अपने भंगियोको दे दिया करते है। कार्यकर्ताओंको इसके खिलाफ भी प्रचार करना चाहिए और जहाँ भंगियोको ठीक मजदूरी नहीं मिलती वहाँ उनके मालिकोको ठीक मजदूरी देनेको समझाना-बुझाना चाहिए।

चमडा कमानेके कामके सम्बन्धमे तो ठीक सहायता तभी की जा सकती है जब मानवताकी भावनासे प्रेरित होकर कोई उत्साही स्वयसेवक अपने अवकाशके समयमे मरे हुए ढोरोका चमडा उतारनेकी साफ-सुथरी पद्धतिका अध्ययन करके उन चर्मशोधकोके बीच उस ज्ञानका प्रचार करे।

एक काम तो वे कर ही सकते हैं। वे मरे हुए पशुओंको ठिकाने लगानेकी प्रचलित रीतिका पता लगाकर ऐसी कोशिश कर सकते है जिसमे चमडा कमानेवालों को ठीक मजदूरी मिल सके। जिनके पास क्षमता और समय हो, वे दिवा-पाठशालाएँ या रात्रि-पाठशालाएँ चला सकते है, छुट्टियोके दिन या जब भी मौका मिले, हरिजन बच्चोको पिकनिकपर और दर्शनीय स्थल दिखानेके लिए ले जा सकते है, हरिजनोमे खुद उनके घरोमे जाकर मिल-जुल सकते है, जहाँ जरूरी हो, वहाँ उन्हे चिकित्सा-विषयक सहायता दिला सकते है, और आम तौरपर उनमे यह एहसास जगा सकते है कि उनके जीवनका एक नया अध्याय शुरू हो गया है और अब उन्हे अपने-आपको मानव-समाजका उपेक्षित और तिरस्कृत अग नही समझना चाहिए।

मैंने जो-कुछ कहा है, उस सबको विद्यार्थी-समाज बडी आसानीसे कर सकता है। यदि बहुत-सारे स्त्री-पुरुष चुपचाप पूरे उत्साह, सकल्प और समझदारीसे यह काम करे तो निस्सन्देह, इसका मतलब यह होगा कि अपने लक्ष्यको प्राप्त करनेकी दिशामे हम कई कदम आगे बढ चुके है और तब हम यह भी देखेगे कि मैंने यहाँ जिन बातोकी चर्चा की है, उसके अलावा भी बहुत-सी ऐसी बाते है जिनकी ओर हमे ध्यान देना चाहिए। यहाँ तो मैंने, अपने दौरोमे जो बाते मेरे ध्यानमे आई थी, उन्हीमे से कुछ दे दी है।

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रानिकल, १६-११-१९३२

६७३. तार : फीरोजचन्दको[1]

१५ नवम्बर, १९३२

आशा है, लालाजी की स्मृतिका आदर करनेवाले सभी लोग अस्पृश्यता-निवारणके लिए कुछ-न-कुछ जरूर करेंगे।

गांधी

(अंग्रेजीसे)

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, ब्राच, फाइल न० १०० (४०) (३), भाग ३, पृष्ठ ३६७

६७४. तार : मणिबहन पटेलको

(१५ नवम्बर, १९३२)[2]

मणिबहन पटेल
कैदी, सदर जेल
बेलगाँव

डाह्याभाईको गत सात दिनोसे बुखार है। अब मोतीझरा (टाइफाइड) बताया गया है। खास गडबडी नही है। विशेष परिचारिका सेवा कर रही है। चिन्ताको कोई बात नही। रोजकी खबर भेजनेकी कोशिश रहेगी।

बापू

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, ब्राच, फाइल न० ८०० (४०) (४), भाग २, पृ० ५५

१. लाहौर-निवासी।
२. देखिए अगला शीर्षक।

६७५. पत्र : ई० ई० डॉयलको

१५ नवम्बर, १९३२

प्रिय कर्नल डॉयल,

श्रीयुत डाह्याभाई सरदार वल्लभभाई पटेलके एकमात्र पुत्र हैं। पिछले आठ दिनोंसे वे ज्वरसे पीडित हैं। डॉक्टरोंने अब उन्हें टाइफाइड बताया है। डाह्याभाईकी बहन मणिबहन पटेलको, जो बेलगाँव सदर जेलमें हैं, उनकी बीमारीकी प्रतिदिन सूचना देना आवश्यक है। उनके पास भेजे जानेके लिए एक तारका मजमून मैं इस पत्रके साथ भेज रहा हूँ। आशा है, आप कृपा करके इसे इस निर्देशके साथ अधीक्षकके पास भेज देंगे कि यह मणिबहनको दे दिया जाये और वे जो सन्देश देना चाहें, वह उनसे ले लिया जाये। जबतक ज्वर रहता है, तबतक क्या मैं उन्हें प्रतिदिन विस्तृत सूचना भेज सकता हूँ और उसके उत्तरमें वे जो भी सन्देश देना चाहें, क्या उसे प्राप्त कर सकता हूँ? वे रोज एक पोस्टकार्ड ही भेज दिया करें, यह मैं इसलिए चाहता हूँ कि वह रोगीको दिया जा सकेगा। यह जानकर कि उनकी एकमात्र बहनको उनकी बीमारीकी हालतसे बराबर अवगत रखा जा रहा है और वह उन्हें स्नेह-सन्देश भेज रही है, उनकी हिम्मत बढ़ेगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, होम डिपार्टमेंट, स्पेशल ब्रांच, फाइल नं० ८०० (४०) (४), भाग २, पृ० ५५

६७६. पत्र : यू० गोपाल मेननको[1]

[१५ नवम्बर, १९३२][2]

खैर, अगर वैधानिक कठिनाई हो तो भी हमें धीरजके साथ ऐसा लोकमत तैयार करना चाहिए जो जरूरी विधान बनानेकी भी माँग करे। इसलिए आपको सवर्णोंको गुरुवायूर मन्दिरके द्वार हरिजनोंके लिए खोलनेके पक्षमें लानेकी कोशिश करनी चाहिए। आम तौरपर सभी मन्दिरोंमें हरिजनोंके प्रवेशकी आवाज उठाकर सवालको

१. त्रावणकोर अस्पृश्यता-विरोधी संघके अध्यक्ष।

२. "दैनन्दिनी, १९३२" से।

उलझाइए नही। श्री केलप्पनने गुरुवायूर मन्दिरके द्वार खुलवानेके लिए उपवास[1] किया था, और अगर फिरसे उपवास शुरू करना है तो उसका उद्देश्य उसी मन्दिर तक सीमित रहना चाहिए। अगर इस मन्दिरके द्वार हरिजनोके लिए खुल जाते है तो देर-सवेर अन्य मन्दिरोके द्वार भी खुलेगे ही, लेकिन हमें सदा अपने धर्मपर आरूढ रहना चाहिए। जमोरिनके प्रति कोई दुर्वचन नही कहा जाना चाहिए। जरूरी होनेपर उनकी स्थितिका विरोध बेशक कीजिए। मैने उनका वक्तव्य पढा है। अगर केलप्पनने अभद्रता दिखाई हो तो उन्हे क्षमा माँग लेनी चाहिए। लेकिन, मेरी रायमे, जमोरिनका यह कहना गलत है कि श्री केलप्पनकी अभद्रताके फलस्वरूप उनका आश्वासन अब रद्द हो चुका है।

[अग्रेजीसे]

बॉम्बे क्रॉनिकल, १७-११-१९३२

६७७. एक पत्र[2]

१५ नवम्बर, १९३२

आपके और आपकी पत्नीके साथ मेरी गहरी सहानुभूति है। आपको क्या तरीका अपनाना चाहिए, यह मेरे दिमागमे बिलकुल साफ है। उस आदमी और उसके कृत्य को आप भूल जाये। दण्ड और पुरस्कार देनेवाला केवल ईश्वर है। अपराधीके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करनेका आपको अधिकार था, और मै समझता हूँ अब भी है। पर जाहिर है, वैसा करनेका आपका इरादा नही है। कुछ भी हो, वह आदमी अपने होशमे नही था। कौन जानता है कि वह किसी दिन सबक नही लेगा और अच्छा आदमी नही बनेगा? यदि आपको उसकी भलाई करनेका कोई अवसर मिले तो आप उसे करने से चूकिए नही। अपनी पत्नीको आप सान्त्वना दीजिए और समझाइए कि वे उस घटनाको भूल जाये। आपकी लडकीको उस घटनाकी स्मृति भी नही रहनी चाहिए। मै सोचता हूँ, उसे यह पता नही होगा कि उसके साथ क्या करनेकी कोशिश की गई थी। लेकिन उसे पता हो तो भी उसके साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिससे वह उसे बिलकुल भूल जाये।

[अग्रेजीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृ० २४५-६

१. उपवास २० सितम्बरको शुरू होकर २ अक्टूबरको समाप्त हुआ था।

२. साधन-सूत्रमें यह नहीं बताया गया है कि यह पत्र किसको लिखा गया था। पत्र-लेखकने गांधीजी को लिखा था कि उसके एक परिचित ५० वर्षीय व्यक्तिने नशेमें धुत हो उसकी ६ वर्षकी पुत्रीके साथ बलात्कार करनेकी कोशिश की जिससे उसे और उसकी पत्नीको गहरा आघात पहुँचा। उसने गांधीजी से सलाह माँगी थी कि उसे क्या करना चाहिए।

६७८. पत्र : वसन्तराम शास्त्रीको

१५ नवम्बर, १९३२

अपनी दृष्टिमें तो मैं जैसा सन् २१ में था, वैसा ही हूँ। अलबत्ता, मेरी आशा रखता हूँ कि मैंने इसी दिशामें कुछ प्रगति की होगी। इस जगत्में कोई चीज स्थिर तो है ही नहीं। हर चीज या तो आगे बढ़ती है या पीछे हटती है। जिन लोगोंके लिए आपका यह खयाल है कि वे पाखण्डी हैं, उनके लिए मैंने नहीं लिखा। पाखण्डी माने जानेवाले लोग तो इने-गिने ही होते हैं। मैंने तो असंख्य लोगोंके बारेमें लिखा है। उनमें अज्ञान हो सकता है, मूर्खता हो सकती है, मगर पाखण्ड नहीं हो सकता। जरा गहराईसे सोचेंगे तो आपको इस बातकी प्रतीति हुए बिना नहीं रहेगी। मैं चाहता हूँ कि आप अत्याचारके बारेमें जरा ज्यादा साफ लिखें।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ २८७

६७९. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

१५ नवम्बर, १९३२

भाई घनश्यामदास,

यरवडा सन्धिकी टीकाके बारेमें जब मिलेंगे तब। अब इसमें समय बरबाद न करूं। ठक्कर बापाने पटनाके बारेमें जो कुछ लिखा है ऐसा बहुत जगह पर है। इस बारेमें स्थानिक लोगोंको लिखना चाहिए। म्युनिसिपालटी क्यों यह काम न करे? प्रति पक्ष या प्रति सप्ताह समितिके तरफसे एक विवरण कहो, पत्रिका कहो, अखबार कहो जो कुछ निकलना चाहिये जिसमें ऐसी सब भयानक बातें बताई जायें।[1] हम कैसे भी गरीब हैं तो भी कोई म्युनिसिपालीटी इतनी गरीब नहीं है जो ऐसी चीजोंको दुरुस्त न कर सके। मथुरादासको मैंने लिखा। अबालालको भी।[2]

बापूके आशीर्वाद

सी० डब्ल्यू० ७९०४ से, सौजन्य घनश्यामदास बिड़ला

१. गांधीजी के सुझावपर बिड़लाजी ने जनवरी, १९३३ से एक साप्ताहिक पत्र निकालनेकी योजना बनाई थी और उनसे प्रथम अंकके लिए एक लेख लिखनेका अनुरोध किया था।

२. देखिए "पत्र : अम्बालाल को", १०-११-१९३२। मथुरादास को लिखा पत्र उपलब्ध नहीं है।

६८०. दैनन्दिनी, १९३२[1]

(१-९-१९३२ से १५-११-१९३२)

१ सितम्बर, बृहस्पतिवार, यरवडा मन्दिर[2]

चरखेपर २३८ तार काते। पत्र लिखे : वासुकाका, मीरा, व्रजकिशन, माणेकबाई, अनसूयाबहन + शकरलाल।

२ सितम्बर, शुक्रवार

चरखेपर २२४ तार काते। पत्र लिखे : चम्पा, प्यारअली, तिलकम्, निर्मला, मशरूवाला, देवदास, तारामती + रामचन्द्र, प्रसाद + दिलीप। जोशी, रमण गाधी और आगासे से मिला। डाह्याभाई वल्लभभाईसे मिलने आये। कलक्टरने मुआयना किया।

३ सितम्बर, शनिवार

चरखेपर २५० तार काते। पत्र लिखे· सुरेश बनर्जी, माणेकलाल, खीमचन्द।

४ सितम्बर, रविवार

चरखेपर २५० तार काते।

५ सितम्बर, सोमवार

चरखेपर २५० तार काते। पत्र लिखे. आश्रम (४७ – "सकटमे बहने क्या करे?") मणिलाल + गुलाब + तिलक + धीरू, नीलम, सत्यवती चिदम्बर, मोहनलाल भट्ट, उमाशकर श्रीवास्तव, नागरी प्रचारिणी, प्यारअली + अमीना + हमीदा + कुरैशी, गोविन्ददास, छगनलाल मेहता, पोलक, मणिलाल कोठारी। नारणदासका पत्र रामदासको भेजा।

लाला हंसराजकी ओरसे शहद और दूसरी चीजे मिली। पद्मजाकी ओरसे कल मोसम्बियोकी टोकरी आई।

६ सितम्बर, मंगलवार

चरखेपर २३० तार काते। पत्र लिखे. करसनदास, केखुगरू कागा, पद्मजा, बाबूराम, संतराम, लिली, नानालाल, रेहाना।

दलालने बत्तीसीकी जाँच की।

१. खण्ड ५० से आगे।

२. अगले इन्दराजोंमें स्थान के नामका उल्लेख नहीं किया गया है। गाधीजी को ४-१-१९३२ को गिरफ्तार किया गया था और ८-५-१९३२ को मुक्त किया गया।

७ सितम्बर, बुधवार

चरखेपर २२० तार काते। पत्र लिखे लाला हंसराज, देवदास + डॉ० दासगुप्त। नकली बत्तीसीकी जाँच करने डॉ० दलाल फिर आये। निचले हिस्सेमें थोड़ा सुधार कर लौटा गये। आज पारसी 'नौरोज'[1] है। मार्ग ने शामको मद्यपान न करनेकी प्रतिज्ञा की। उन्होंने बाहर जाकर कुछ दिन बाद मुझे लिखनेका वचन दिया है। आज जेलके गेहूँकी रोटी खाई।

८ सितम्बर, बृहस्पतिवार

चरखेपर [.]।[2] पत्र लिखे कमला नेहरू, कृष्णदास, रामशरणसिंह, कर्नल (डॉयल) रोटीके बारेमें।

कर्नल डॉयलको दूसरा पत्र २० वीके बारेमें। सरकारी निर्णयके बारेमें कर्नल डॉयलसे लम्बी बातचीत। उनके द्वारा उठाये गये प्रश्नोंके उत्तर दिये। बातचीतके दौरान उन्होंने बताया कि जिन्हें रोटी खानेकी आदत है उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। काका और बा के समाचार मिले। महादेवको आज बुखार-सा लगता है। वह आज रोटी बनानेमें मदद करने गया था।

९ सितम्बर, शुक्रवार

चरखेपर २१३ तार काते। पत्र लिखे · खीमचन्द, दिनकर, प्रभाशंकर + वल्लभ, मथुरादास त्रिकमजी, तारामती, निर्मला मशरूवाला, नारणदास, मैकडॉनाल्डका पत्र मिला और उसका उत्तर दिया। डॉयलको पत्र लिखा। आज यहाँकी बनी 'ब्राउन ब्रेड' खाई। 'प्लम' [आलूबुखारे] और खजूर मँगाई।

मैकडॉनाल्डका पत्र मेजर लाये थे। महादेवको हलका बुखार है।

१० सितम्बर, शनिवार

चरखेपर २०६ तार काते। पत्र लिखे गोविन्दवल्लभ पन्त, विधान राय।

कल ४ रुपयेके 'प्लम' आये। जरा भी अच्छे नहीं लगे किन्तु खाना ही उचित जान पड़ा। सुबह-शाम मिलाकर २० 'प्लम' खाये।

११ सितम्बर, रविवार

चरखेपर २४८ तार काते। आश्रमको पत्र लिखनेमें दिन बीत गया।

१२ सितम्बर, सोमवार

चरखेपर २३९ तार काते। पत्र लिखे आश्रम ("कार्य और विचार [-२]" सहित)। प्यारअली, जमशेद मेहता, सरोजिनीदेवी। कटेली आज महादेवको कुछ अनशनकारियोंका अनशन तुड़वानेके लिए ले गये। किन्तु वह अनशन तुड़वा नहीं सका। २० तारीखके उपवासके बारेमें अपीलका मसौदा तैयार किया।

१. नव वर्ष।
२. साधन-सूत्रमें सूतके तारोंकी संख्या नहीं दी गई है।

१३ सितम्बर, मंगलवार

चरखेपर २२३ तार काते। पत्र लिखे . रतिलाल देसाई + मणि + जेकी + माणेकबाई, प्रभाशकर, देवदास। अनशन-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार प्रकाशित। नायडूसे, जो कि अनशन कर रहा था, मिला, उसने अनशन छोड दिया। एन्ड्रयूजका तार, एन्ड्रयूजको तार।

१४ सितम्बर, बुधवार

चरखेपर २२५ तार काते। पत्र लिखे . देवदास, मोहनलाल भट्ट, नारणदास, बा, माणेकबाईको तार, भक्तिबहन [को पत्र]। हीथ आदिके तार आये। मेजरने सूचित किया कि कलवाला तार एन्ड्रयूजको भेज दिया गया है।

१५ सितम्बर, बृहस्पतिवार

चरखेपर २५० तार काते। पत्र लिखे . परचुरे शास्त्री (विवेकानन्द-कृत ४ पुस्तके), सावित्री स्टैडेनेथ, घनश्यामदास, विट्ठल, कामकोटि, गुरुदेव। राजा और घनश्यामदासके तार — उनके उत्तर दिये। डॉ० दलाल आकर मेरी बत्तीसी साफ कर गये। आज रोटियाँ बिगड गई।

१६ सितम्बर, शुक्रवार

चरखेपर २०५ तार काते। पत्र लिखे नरगिस, लिली, सरलादेवी, अनसूयाबहन, रेहाना, मीरा, राधा, रोमाँ रोलाँ, म्यूरिएल, बेरियर, पोलक, प्रिवा, अन्सारी, अगाथा हैरिसन। आज उपवासके बारेमे बहुत-से तार आये। इनमे से सप्रू, जमशेद मेहता और सतीशबाबूको तारसे उत्तर दिया। भोरमे २ बजे जग गया, ३ बजे शय्या छोडी। एक सार्वजनिक वक्तव्यका मसौदा तैयार किया और मेजरको प्रकाशनार्थ दिया। रामदास और सुरेन्द्रसे लगभग दो घटे तक बातचीत हुई और बादमे खाडिलकरके साथ। साँझको पढा कि बाशर्त उपवास शुरू करने पर मुझे छोड दिया जायेगा। इसपर मैंने तार दिया कि मै इस प्रकार छूटनेके लिए तैयार नही हूँ।

१७ सितम्बर, शनिवार

चरखेपर २०६ तार काते। पत्र लिखे: कुरेशी, मधुकान्त, नारायणराव, माटे, गोसीबहन।

आज मैंने अपने दृष्टिकोणके अनुसार स्पृश्य और अस्पृश्य हिन्दुओमे समझौतेका मसविदा तैयार किया। वल्लभभाईको बुखार। डॉ० दलालने मेरी बत्तीसीकी जाँच की।

१८ सितम्बर, रविवार

चरखेपर २४० तार काते। पत्र लिखे सरोजिनी नायडू, पद्मजा, दरबारी साधु। आज भी वल्लभभाईको हलका बुखार रहा। आज शामको घनश्यामदास, पुरुषोत्तमदास, चुन्नीलाल और मथुरादास मुझसे मिले। एक घटेसे ज्यादा बातचीत हुई। मुझे जो कहना था वह मैंने लिखकर समझाया।

१९ सितम्बर, सोमवार

चरखेपर २०९ तार काते। पत्र लिखे · नानाभाई मशरूवाला, गजबहादुर-लाल, गोरा, राजा, मेरी बार, मणिलाल गांधी, माधवदास + कृष्णा, मगनलाल मेहता, डॉ० मुथु, तारामती, हंसा मेहता, शंकर कालेलकर, लक्ष्मी (राजाकी), ऋान्ट सेवा संघ, आश्रम (६० पत्र)। सर पुरुषोत्तमदास, मथुरादास, चिमनलाल, घनश्यामदास मिलने आये। दो घंटे बातचीत हुई। साँझको देवदास आया। आज दूध नहीं लिया, उसके बदले बादाम लिये।

२० सितम्बर, मंगलवार

चरखेपर २०९ तार काते। पत्र लिखे नारणदास + पुंजाभाई, त्रिवेदी, नरीमान, राजभोज, काका, मीरा, देवधर, गुरुदेव, शिन्दे। निम्नलिखितको तार दिये अम्बालाल, हॉरेस, अगाथा, उर्मिला, काशी कृष्णाचार्य, रानीकाकीका, कृष्णदास, ताईपिंगके भारतीय, डाह्याभाई, रमणीकलाल देसाई, अपर्णा, गुरुदेव, हरिसिंह। कर्नल डॉयल सरकारका निर्णय दे गये। सम्वाददाताओंसे मिला, प्यारेलाल, व्रजकिशन, सरोजिनी।

१२ बजे अग्नि-प्रवेश।[1] रेहानाके भजनसे आरम्भ किया। महादेवने 'गीता' का पारायण किया।

२१ सितम्बर, बुधवार

चरखेपर १५३ तार काते। पत्र लिखे मथुरादास, किशोरलाल, जयरामदास, मणि, फूलचन्द, जमनालाल, नरहरि। पोलकको तार। सरोजिनी, सप्रू, जयकर, राजा, राजेनबाबू, घनश्यामदास आदिके साथ बातचीत। राजभोज आया, उसके साथ माटे आदि भी थे। पद्मजा मिलने आई।

२२ सितम्बर, बृहस्पतिवार

चरखेपर १९५ तार काते। पत्र लिखे नरगिसबहन, तारामती।

२३-२९ सितम्बर, शुक्रवार-बृहस्पतिवार

इन दिनोंकी दैनन्दिनी प्रतिदिन नहीं लिखी जा सकी। यह ३० तारीखको प्रातः लिखी जा रही है। इस बीच कता हुआ सूत नीचे लिखे अनुसार निकला २३ तारीख – ६०, २४ तारीख – ४३, २५ तारीख – ६०, २६ तारीख – ६०, २७ तारीख – १०८, २८ तारीख – १००, २९ तारीख – १२५ तार।

इन दिनों मानसिक शान्ति बनी रही। २६ तारीखको उपवास तोड़नेके पहले भयंकर शारीरिक यातना थी। बहुतसे लोग आते-जाते रहे। गुरुदेवका आना बहुत अच्छा लगा। केलप्पनके उपवाससे बहुत दुःख हुआ और अब भी है। उपवासके दौरान २६ तारीखसे केशूके नये चरखेपर कातना शुरू किया। २९ तारीखमें मुला-कातें बन्द हो गईं। केवल घनश्यामदास और मथुरादास अन्त्यज-कार्यके सिलसिलेमें

१. अनशनका आरम्भ।

मिल सकते हैं। इसपर मैंने कड़ा पत्र लिखा है। बा और सरोजिनीको साँझको ले गये। देवदास रातको मिल गया। बुधवारको वजन लिया गया जो ९५ निकला। सोमवारको ९३।। था। उपवासके पहले १०१ था।

३० सितम्बर, शुक्रवार

चरखेपर २३५ तार काते। यूरोपको काफी पत्र लिखे। डाकमें आई कुछ चिट्ठियाँ पढ़ी। अच्छी तरह बैठा। कुछ कदम चला। साँझको दस्त साफ आया। बा को आज छोड़ दिया गया और दिनमें मेरे पास आनेकी फिर अनुमति दे दी गई। जिस तरह सुबह अंग्रेजी पत्र लिखे थे उसी तरह रातके आठ बजेतक अन्तर्देशीय पत्र लिखे।

१ अक्टूबर, शनिवार

चरखेपर २२५ तार काते। पत्र लिखे बिड़ला, डेविड, आनन्दशंकर, क० मुंशी, जमशेद मेहता, मनमोहन गांधी, कृष्णन् नायर, कृष्णदास, अवन्तिकाबाई, मीरा। अन्सारीको तार। पत्र· किंग्सले (चिकागो ट्रिब्यून), मिस पीटर्सन। केलप्पन और माधवन् नायरको तार। घनश्यामदास और मथुरादास वसनजी १२ बजे आये और ४ बजे तक रहे। बा सारे दिन रही।

२ अक्टूबर, रविवार

चरखेपर २१९ तार काते। पत्र लिखे मैथिलीशरण, भिक्षु बालचन्द्राचार्य, चमन कवि, हेमप्रभा, कमलनयन, अलीहसन, पाल, प्रभाशंकर, हसन इमामके बालक, तारामती, मिस पीटर्सन, रामदास। आज वजन लेनेपर १०० निकला, वल्लभभाई १४० और महादेव १४३।

३ अक्टूबर, सोमवार

चरखेपर २४७ तार काते। पत्र लिखे दीपसिंहजी, मगनलाल वेलजी, सोहनलाल शर्मा, धीरजराम शास्त्री, ज्ञानचन्द वर्मा, जोगलेकर, खीमचन्द, फड़के, मणिलाल पटेल, सत्यानन्द बोस, कोवदकर, केसरीमल अग्रवाल, माटे, माणेकबाई मेहता, मूलचन्द पारेख। मोतीलाल रायको तार। उपर्युक्त कल भेज दिये गये। आज भेजे जायेंगे कस्तूरभाई लालभाई, फूलचन्द बापूजी, हरिइच्छा, आश्रमको ५० पत्र। केलप्पन, जमोरिन और रंगस्वामीको तार। केवलराम गीदूमलको कीकीबहनके बारेमें तार। निर्मला मशरूवाला, केवलराम+कीकीबहन, जोहरा, आत्माराम, प्रभाशंकर भट्ट, कणबीवाड, नारण घुघुरी डेलो। देवदास हडसनकी अनुमति लेकर आया।

४ अक्टूबर, मंगलवार

चरखेपर २५० तार काते। पत्र लिखे केकी दरियाशा, बार्टलेट, हॉयलैंड, सैम्युअल, जॉन पारसन्स, स्कॉट हैंडर्सन, मोतीलाल राय, बर्नार्ड, चन्द्रशंकर पण्ड्या, शंकरलाल, उमियापति, नन्दिनी, बालमन्दिर—खार, जोसेफ, गोविन्ददास, शंकरप्रसाद,

रामेश्वरदास – डबलिन, पूर्णचन्द्र, कृष्णानन्द, सीताराम, सत्येन्द्रकुमार, मणिबहन, गन्नी-आरा, किसन। बद्रीदत्त पाण्डेको तार।

५ अक्टूबर, बुधवार

चरखेपर २०९ तार काते। पत्र लिखे नारायण मेनन, प्रेमी, प्रकाशम्, वीरेन्द्र-प्रकाश, बद्रीदत्त पाण्डे, अलेक्जैंडर, एस्थर, विन्स्टन, लाकर्स ऑफ सेट फामिस, नुव्वैया, स्टैंडेनेथ, अरिस्टार्शी, किंग्सले हॉल + ग्लैडिस + देवी, रामचन्द्र बहल। देवदास मिलने आया था। बा तो थी ही। आज वजन ९८३/४ निकला।

६ अक्टूबर, बृहस्पतिवार

चरखेपर २१७ तार काते। पत्र लिखे वासुदेव, हीरालाल, पद्मकुमार, मणि-लाल व्यास, पद्मजा, बहरामशाह, मगनलाल मेहता, रमण गाधी, हरिभाऊ फाटक, गौरीशंकर भट्ट, अगाथा, एलविन, श्रीमती लिडसे, कोरा फ्राड, मीरा, सिडनी वॉकिन, कमला नेहरू + सैयद महमूद, पाटणकर, गुलबाई दस्तूर, वी० टी० लक्ष्मण, सैम्युअल बोरगाई, दरबारीलाल (जापला, पालामऊ)। जमोरिनके तारके बारेमे कर्नल डॉयल्को पत्र और सरूपरानीको बा की मार्फत। खगेन्द्रप्रियाकी खादी बरुआसे आई। कल पाटणकरकी ओरसे बेलगाँवसे पेडे आये।

७ अक्टूबर, शुक्रवार

चरखेपर २१५ तार काते। पत्र लिखे कर्नल डॉयल + स्वामी आनन्द, निर्मला मशरूवाला, अन्नदानाप्पा, डाह्याभाई सावजी, रुखी, मणिशकर, दादाचानजी, लिली, कटियाल, कहानचकु गाधी, बापालाल वैद्य, चन्दूलाल गणदेरीया, रानी विद्यावती, अब्दुल्ला फकीर, खगेन्द्रप्रिया, शकर (मद्रास), रामजीराव, लक्ष्मीनारायण गाडोदिया, थप्पन नायर, भक्तिबहन, काका, सरूपरानी। उम्मेदराम और आतीतकर मिलने आये। शौकत अलीको तार। देवदास आया था। आज मेजर रायने जाँच की। अर्शके लक्षण है। जिलाधीश मिलने आये।

८ अक्टूबर, शनिवार

चरखेपर २०५ तार काते। पत्र लिखे प्रभावती, सदाशिव, गोमती, मणि, मथुरादास, मोहनलाल, इलियट ब्रैकेट, नाथ, सैम्युअल, सेलबी, नानीबहन, अगरिका गोविन्द, द्वारकाप्रसाद शर्मा, ज्योतिप्रकाश, मेरी पीटर्सन, शकर कालेलकरको उपवासके सम्बन्धमे। फादर विन्स्लोको गगनके द्वारा पत्र भेजा। शकरने उपवास तोडनेसे इनकार कर दिया है इसलिए उसे पुन पत्र लिखा। आज दूध नही पीया। साँझको गुलकन्द लिया।

९ अक्टूबर, रविवार

चरखेपर २१० तार काते। पत्र लिखे एमा हार्कर, चिन्तामणि, आत्माराम, कृष्णनारायण, उर्मिला, वासन्तीदेवी, गुरुवायुरूपम्, मूलचन्द पारेख, रुखी, नुरबानू + रोहिणी, बजेरम, परमहस यति, ठाकोरलाल मेहता, मोहनलाल सोमालाल, श्रवण

चौधरी, जदुनाथ सरकार, विमला च० गुप्ता, चुन्नी मेहतर, ग्राम्य चरखा समिति, सुरसासग ऐंड सन्स, सिगापुरके युवक, टेलिग्राफ चैक आफीसर।

१० अक्टूबर, सोमवार

चरखेपर २०४ तार काते। पत्र लिखे आश्रम — २३, डॉ० महमूद, मूलजीभाई, मोहनलाल, सोमसुन्दरम्, फ्रेन्ड्स ऑफ इंडिया, लियोनार्ड, मॉड, गुरुदेव, चौंडे महाराज, सुरेश, बलदेवदास, मेघाणी, रामैया, रमण सोनी, सथियावु, कथीरावेलु, कोटक + शारदा, तारामती, ठक्कर बापा, हरदयाल नाग, हेल्स, जयराम वरलरकर, शान्तिस्वरूप, गिरीन्द्रकिशोर, कृष्णदास, कीरचन्द शिवलाल, दादाचानजी, जमनालाल, त्रिवेदी, रेहाना। मणिलाल आया। आज मेजरने शंकरको बुलाकर धमकाया। उसके साथ जिन लोगोंने उपवास किया था, कल पत्र लिखकर उनका उपवास तुड़वाया।

११ अक्टूबर, मंगलवार

चरखेपर २२३ तार काते। पत्र लिखे पोतदार (बिलासपुर), कृष्णचन्द्र, न्यालचन्द, रोहित मेहता, जमशेद, हरिइच्छा, रेहाना, निजामुद्दीन, मुहम्मद हयातखाँ, पारुलेकर, बापालाल, मनजी रामभाई, त्रिभुवनदास, इन्दुमती पटेल (मोम्बासा), भोगीलाल पोपटलाल, रामभाऊ (नागपुर), चतुरसेन शास्त्री, रघुनाथप्रसाद, सुशीला, रघुनाथ लिमये। देवदास आया था। वह मणिलालके ज्वरकी खबर लाया।

१२ अक्टूबर, बुधवार

चरखेपर २२१ तार काते। पत्र लिखे: टर्टन, पोलक, एरिस्टार्शी, बहरामगा, चमन, छोटेलाल, थडानी, प्रो० वाडिया, नरसिंहराव, स्टोक्स। मणिलाल मिलने आया। आश्रमसे पूनियाँ, चमड़ा, चप्पलें आदि आईं। वजन ९८$\frac{3}{4}$।

१३ अक्टूबर, बृहस्पतिवार

चरखेपर २२५ तार काते। पत्र लिखे: मीरा, वामन आठवले, मूलचन्द पारेख। आजसे मगन चरखा चलाना शुरू किया। थडानीकी पुस्तक पूरी की।

१४ अक्टूबर, शुक्रवार

चरखेपर २०७ तार काते। पत्र लिखे: जोशी बेचरलाल, गोडसे, ठक्कर बापा, केशव, मनुकुमार, रा[व]ब[हादुर], अयगार, आत्माराम शास्त्री, डॉ० दत्ता, केलवकर, मोतीलाल राय, रेनॉल्ड्स, कुमुदचन्द्रजी, हेमप्रभा, भक्तिबहन। देवदास मिलने आया। बा अब नहीं आयेगी। अम्बेडकरका तार मिला कि यदि छुट्टी मिल गई तो वे सोमवारको मिलने आयेंगे। वाडियाकी पुस्तक पूरी की।

१५ अक्टूबर, शनिवार

चरखेपर २०० तार काते। पत्र लिखे दत्त, उर्मिलादेवी, रामभद्र आयर, नरगिसबहन, हीरालाल, जेकी, मीठूबहन, जॉर्ज, मगनलाल मेहता, जमोरिन, केलप्पन, रंगस्वामी, ठाकोरभाई।

१६ अक्टूबर, रविवार

चरखेपर २०५ तार काते। पत्र लिखे· माणेकबाई मेहता, प्यारेलाल, लालजी नारणजी, कीकीवहन, राधाकृष्ण, कमला नेहरू, शकर, ओकार उपासना प्रचार, रुखी। मदनकी उपवास-सम्बन्धी पुस्तक पूरी की।

१७ अक्टूबर, सोमवार

चरखेपर २१० तार काते। पत्र लिखे नारणदास (४१), नानालाल कालिदास, पद्मजा, जोहरा, रगस्वामी, माइकेल, लाला रोशनलाल, स्कॉट हैडर्सन, पोलक (छोटा और बडा)। आज अम्बेडकर मिले। सरोजिनी भी साथमे थी। हडसनने चेतावनी दी थी कि सिर्फ अस्पृश्यताके बारेमें ही बातचीत हो और उसे भी जाहिर न किया जाये।

१८ अक्टूबर, मंगलवार

चरखेपर २२२ तार काते। पत्र लिखे डॉ० दलाल, मणिबहन देसाई, मगनलाल मेहता, छगनलाल मेहता, नानालाल कालिदास, नरसिंहराव भोलानाथ, बेगम मुहम्मद आलम, प्रेमजी दयालजी, मणिलाल गाधी, डेविड। कोलम्बोके मन्दिर-ट्रस्टीको तार। हडसनको पत्र। डॉ० कटियाल मिलने आये।

१९ अक्टूबर, बुधवार

चरखेपर २०८ तार काते। पत्र लिखे नलिनी, कृष्णचन्द्र, खम्भाता, हरिजन (वालवे), दादाचानजी, शम्भुशकर, कमलानी, जात-पाँत तोडक मण्डल, गैलप्पा, कन्हैयालाल, अर्जुनदा, किसन, विन्स्लो, गौरीशकर लाल, नाथ, मोहनलाल भट्ट। मणिलाल मिलने आया। आज शामको हमे पुरानी कोठरियोमे ले जाया गया।

२० अक्टूबर, बृहस्पतिवार

चरखेपर २१६ तार काते। पत्र लिखे एन्ड्रयूज, नारायण कुलकर्णी, अरुण, वालजी देसाई, श्रीनिवास सिन्हा, मीरा, मामा, शकर, निर्मला, तारामती, कर्नल डॉयल, डोरोथी न्यूमैन। आज साँझसे रोटी शुरू की।

२१ अक्टूबर, शुक्रवार

चरखेपर २०० तार काते। पत्र लिखे श्रीमती शिवप्रसाद गुप्त, शकरभाई, गोडसे, शान्तिकुमार चटर्जी, लाला दुनीचन्द, कौशल्या, अलुविहारी, हॉयलैंड, जाइजी पेटिट। कैम्पसे सुलेमान काजी और ईश्वरलाल आये। ब्रेलवी भी मिला। उसकी खुराकके वारेमे वाते हुई।

२२ अक्टूबर, शनिवार

चरखेपर २१७ तार काते। पत्र लिखे: मणिलाल गाधी, डॉ० दलाल, ख्वाजा, हीरालाल, उर्मिलादेवी, जमशेद, जरमन, मेरी बार, भिलोड[1] चन्द्रजी। सरदार प्रताप सिंहसे मिला।

१. साधन-सूत्रमें इसे 'त्रिलोक' भी पढा जा सकता है।

२३ अक्टूबर, रविवार

चरखेपर २२० तार काते। पत्र लिखे · प्रो० त्रिवेदी, डेविड, शेषा अय्यगार, जमशेद, हरिलाल परीख, रामभरोसे, हेमप्रभा, माधवन्, नगेन्द्रनाथ, लेडी ठाकरसी। पुजाभाईका ३।। बजे स्वर्गवास हो जानेकी सूचना कल रातको ९ बजे घेलाभाईके तारसे मिली। पूरा दिन आश्रमको पत्र लिखनेमे विताया। पुजाभाईके सस्मरण लिखे।

२४ अक्टूबर, सोमवार

चरखेपर २०८ तार काते। पत्र लिखे आश्रमको ४५ जिसमे पुजाभाईका सस्मरण भी सम्मिलित है, अबुल कलाम, लक्ष्मी। आज भण्डारीने अस्पृश्यता-सम्बन्धी पत्र-व्यवहारके बारेमे सरकारका निर्णय पढकर सुनाया। उन्होने उसकी नकल देनेसे इनकार कर दिया। मैंने आज उसका उत्तर दिया है। अबुल कलाम आजादका तार भी नही दिया।

२५ अक्टूबर, मंगलवार

चरखेपर २०० तार काते। पत्र लिखे खम्भाता, सीतलासहाय, दिनशा मेहता, हरजीवन, रुखी, वैकुण्ठलाल, मणिलाल रेवाशकर (बा, प्यारेलाल, नीलम, मणिलाल)। देवदास मिलने आया। उसके साथ प्यारेलाल और मणिलालकी पुस्तक भेजी। रातको कटेली आये और पत्रमे से डॉयल द्वारा सरकारी पत्रकी नकल न देनेवाले अशको निकाल देनेका सुझाव दिया। उन्होने मुझे उसकी नकल रखनेकी अनुमति दी। सशोधित पत्र आज दिया।

डेविडका भेजा हुआ शहद कल मिला।

२६ अक्टूबर, बुधवार

चरखेपर २१९ तार काते। पत्र लिखे · सातवलेकर, वसन्तलाल मुरारका, व्रजेन्द्र, शकरराव गोडसे, रामनाथ 'सुमन', कृष्णदास, दोड्डामति, रोहित, अतुलेन्दु गुप्त, सप्रू, लालजी नारणजी, रामदास गाधी। शिवप्रसाद गुप्तको तार। कर्नल डॉयल, डाह्याभाई आये।

२७ अक्टूबर, बृहस्पतिवार

चरखेपर २२३ तार काते। पत्र लिखे · मीरा, रतिलाल सेठ, मगनलाल मेहता, हरिसिंह गौर, नानालाल (नटवरलाल), छगनलाल (लीलावती), शकर घाटगे, नेमचन्द कचराभाई, प्रभाशकर, हरचन्दभाई, थडानी, नरसिंहराव।

२८ अक्टूबर, शुक्रवार

चरखेपर २४५ तार काते। पत्र लिखे . एरिस्टार्गी, ह्यू मार्शल, प्यारेलाल। मणिको तार। भक्तिवहन, दादाचानजी, सॉल्टको पत्र। बिडलाको तार।

२९ अक्टूबर, शनिवार (दीवाली)

चरखेपर २०७ तार काते। पत्र लिखे · मगनलाल प्रा० + मंजुला, केवलराम + निर्मला, शिवजी नानजी, तारामती, नरेन्द्र देव (कलकत्ता), मगनलाल परमार।

३० अक्टूबर, रविवार, प्रतिपदा १९८९[1]

चरखेपर[. . .]।[2] पत्र लिखे मथुरादास, मोहनलाल, गर्टूड केलर, श्री हिरनोम, मथुरादास, शकर, केदारनाथ, सुकाभाऊ, सरोजिनी, लेडी विट्ठलदास। आज पैरमें दर्द होनेके कारण बाकी कताई 'गाण्डीव' पर पूरी की।

३१ अक्टूबर, सोमवार

चरखेपर[. .]।[3] पत्र लिखे आश्रम – ४३, हरजीवन कोटक, छोटालाल शाह + माणेकबाई, सातवलेकर, प्रभावती। मणिको तार।

[पत्र लिखे] मणि गलियारा + वनिता + रतन + देवी, कमला, नेहरू। मेजर भण्डारीको कलसे असहयोग आरम्भ करनेके बारेमें। लेडी अली इमामको समवेदना-सूचक तार। दोनो मेजर मिलने आये। 'भाखरी' के साथ फीकी दाल लेना स्वीकार किया। वल्लभभाईको जोरकी सर्दी।

१ नवम्बर, मंगलवार

चरखेपर १२४ तार और तकलीपर + ३६ तार काते। पत्र लिखे मूलचन्द परमार, सत्यमूर्ति, होमी पेस्तनजी, नम्बियार, उ० वासुदेव जोशी, कृष्णचन्द्र अग्रवाल, डा० लतीफ सईद, भक्तिबहन, पद्मजा नायडू, अनसूयाबहन, शान्तिकुमार। भक्ति-बहनको गुजरातीकी ५ पुस्तकें भेजी। प्रो० वाडियाकी ओरसे टमाटर आये। मणिलाल, सुशीला, तारा, सुरेन्द्र, सीता मिलने आये। आजसे 'सी' क्लासकी खुराक लेनी शुरू की। उसमें 'भाखरी', फीकी दाल और सुबहकी काजी ली। महादेवने उपवास किया। 'गीता' का पारायण किया।

२ नवम्बर, बुधवार

चरखेपर १०६ तार काते। पत्र लिखे प्रो० वाडिया, रामदास, आश्रम (भाऊ, रमा, टाइटस), जमनालाल, मदनमोहन। जमनालालको तार। कल रातको मेजर मिलने आये और भारत सरकारका तार मुझे दिया। आज उसका उत्तर दिया। और तारके फलस्वरूप आज मैंने सामान्य खुराक ली। लेडी विट्ठलदासके यहाँसे फल मँगाये।

३ नवम्बर, बृहस्पतिवार

चरखेपर ११५ तार काते। पत्र लिखे मयाशकर, मीरा, रॉस-बन्धु, माइकेल विल्सन (सनफील्ड), नाजुकलाल, डॉ० गौर, नरोत्तम गिरधर क०। अस्पृश्यताके बारेमें सरकारी निर्णय प्राप्त हुआ। इसे अच्छा ही कहा जायेगा। मैंने उत्तर दिया। फिल-हाल तो ईश्वरकी कृपासे बादल छँट गये हैं। हाथमें इतना अधिक दर्द महसूस होता है कि फिलहाल मैं जितनी कताई करता हूँ उसमें कमी करनी होगी।

१. गुजराती नववर्ष।
२ व ३. साधन-सूत्रमें तारोंकी संख्या नहीं दी गई।

४ नवम्बर, शुक्रवार

चरखेपर ९० तार काते। पत्र लिखे कुसुम गाधी, प्रभाशकर, अमृतलाल शाह, हीरजी, भणसाली, दादाचानजी। अस्पृश्यताके बारेमे गोपाल मेनन, हरसरूप, निबारणचन्द्र, दुनीचन्द, नरसिहभाई, सोहनलाल, जगन्नाथप्रसाद, हेमप्रभा, जगन्नाथ विशारद, रघुनाथ शास्त्री, रामेश्वरनाथ ओझा, प्रफुल्ल घोष, चतुर्भुज विट्ठलदास, सन्तपाल, प्रभुनाथ मिश्र, शर्मा, दौलतराम गुप्त, धनुलाल शर्मा, ताताचारी। वझे और पटवर्धनको बुलाने पर दोनो आकर मिल गये। उन्हे समाचार-पत्रोके लिए पहला वक्तव्य दिया। कैम्पसे त्रिवेदी और नानावटी तथा सर्कलसे मुशी आकर मिल गये।

५ नवम्बर, शनिवार

चरखेपर १०५ तार काते। पत्र लिखे ग० गोडसे, निर्मला (राजकोट), घनश्याम बिडला, परचुरे शास्त्री, बर्नेकर, रामजीराव, सोमसुन्दरम्, आत्माराम शास्त्री, तलेगाँवकर। तार दिये सरूपरानी, छ० मेहता, बिडला। वझे, कोदण्डराव और लिमये मिलने आये। उन्हे दूसरा वक्तव्य दिया।

६ नवम्बर, रविवार

चरखेपर १०२ तार काते। पत्र लिखे नानालाल कान्तिलाल वोरा, अरुणा, उमा, सुशीला, गोविन्ददास, कालिदास जसकरण, जमशेद, चुन्नीलाल व्यास, हनुमानप्रसाद, हबीबुर्रहमान, सतीशबाबू।

७ नवम्बर, सोमवार

चरखेपर ११६ तार काते। पत्र लिखे लीलावती मेहता, बली + कुमुद + रामी + मनु, आश्रम (४६), रेहाना। बिडला, उर्मिलाको तार। आज प्यारेलाल, कोदण्डराव, शास्त्री आदि आये। उन्हे तीसरा वक्तव्य दिया। महादेवको मेरे साथ रहनेकी अनुमति मिली।

८ नवम्बर, मंगलवार

चरखेपर ११३ तार काते। पत्र लिखे हरजीवन कोटक, आश्रम (बा + राधा + चम्पा + नारणदास + तलवलकर), रामदास (साथमे दो पुस्तके — 'रामायण' और रस्किन), जमनालाल। नटराजन्को अस्पृश्यताके बारेमे, कोदण्डराव, शास्त्री। मेजर भण्डारीको ईजिप्टके तारके बारेमे। आनन्दशकर ध्रुव, समाचार-पत्रोके बारेमे भण्डारीको (२)। शान्ति, चीनीको तार। मामा मिलने आये। 'सकाल' के सम्वाददातासे भेट।

९ नवम्बर, बुधवार

चरखेपर १११ तार काते। पत्र लिखे हासमअली साले, कपिल, श्रीमती चिदम्बर, डॉ० मोदी, कीकीबहन, मुन्नालाल, राँका, अन्नदानाप्पा, बर्नार्ड, फूलचन्द, लालजी नारणजी, मगनलाल मेहता, वालजी देसाई। अस्पृश्यताके बारेमे राधाकान्त, मोतीलाल राय, वासुकाका, वकील, गोसीबहन, नामजोशी, रामसामी, अध्यक्ष—जिला परिषद्,

अमरावती, जेठालाल रामजी, दामोदर मिश्र, महादेव शास्त्री, छोटाभाई उ० पटेल। अस्पृश्यताके बारेमे चौथा वक्तव्य, भूदेव मुकर्जी। राजभोज, सर लल्लूभाई और जमोरिन एव ठक्करको तार।

१० नवम्बर, बृहस्पतिवार

चरखेपर १०३ तार काते। पत्र लिखे करसनदास चितलिया, मीरा, बोरीदास (मद्रास), अनसूया, नौरोजी बेलगॉववाला, नरसिंहराव, अन्सारी, रुक्मिणी, माणेकबाई, भगवानदास, हीरालाल, छगनलाल मेहता, जेकी, फीरोजचन्द, भगवती, देवी, लक्ष्मणलाल, नारायणस्वामी, प्यारेलाल, केवलराम, रेहाना, भक्तिबहन। अस्पृश्यताके बारेमे चुन्नीलाल, गणेश भीकाजी, कैनेडी, हीरालाल शाह, सुखाभाऊ, वनुभाई परमार, वासुकाका, नटराजन्, गुरुदेव। अम्बालाल, र० बाबू, गोपाल मेनन, कीरचन्दको तार। कुरेशीके बारेमे वढवान आश्रमको तार।

११ नवम्बर, शुक्रवार

चरखेपर १०४ तार काते। पत्र लिखे देवी वेस्ट, सत्यानन्द, जी० एस० नरसिंहाचारी, भारती, छगन झवेरी, लक्ष्मी, एस्थर। अस्पृश्यताके बारेमे श्रीनिवासन्, जी० रामचन्द्रन्, पुरुषोत्तमदास, हरकिशनदास, मथुरादास वसनजी, साटुर, के० एम० शाह, सदानन्द, बुद्धिवल्लभ, उर्मिला, वासन्तीदेवी, के० आर० नाथ। उर्मिलाको तार। उर्मिलाको सौ रुपयेका मनिआर्डर भेजा। लल्लूभाई, राजभोज और उनके मित्र मिलने आये। इसमे तीन घटे लगे। मित्रोमे [जो मिलने आये] प्रो० ओतुरकर, भाग्यवन्त, दातार थे।

१२ नवम्बर, शनिवार

चरखेपर १०० तार काते। पत्र लिखे भटनागर, मगनलाल नरसिंहदास, अमृतलाल गोरधनदास, कोटक। अस्पृश्यताके बारेमे पुरुषोत्तमदास, माइकेल, हीरालाल जोशी, विश्वनाथ गवारीकर, श्यामजी मारवाडी, स्वामी योगानन्द, कीकाभाई लवजीभाई, उत्तमचन्द गगाराम, वेकटरामैया, वियोगी हरि, राजभोज, बिडला, वकीलको मेरे साथ हुई उसकी चर्चा। आनन्दशकर, चिन्तामणि, कुँजरू, रा[व] ब[हादुर] राजा, अवन्तिकाबाई, करसनदास चितलिया, हसाबहन, प्रेमलीलाबहन, सातवलेकर, हीरालाल शाह। आनन्दशकरको तार। 'हिन्दू' के सालीवती, कोदण्डराव, वासुकाका और हरिभाऊ मिलने आये।

१३ नवम्बर, रविवार

११३ तार कानिटकरके चरखेपर काते। पत्र लिखे हरदयालबाबू, अब्दुल आलिम, एलविन, रोहित, नानालाल। अस्पृश्यताके बारेमे केशवराम टडन, सूर्यनारायण व्यास, गौर गोपाल, परीक्षितलाल, रामनाथ 'सुमन', महादेव शास्त्री, धनुमल शर्मा, शारदा मेहता, मदनमोहन मिश्र, राधाकान्त, वसन्तकुमार चटर्जी।

१४ नवम्बर, सोमवार

तकलीपर ५२ तार काते। हाथमें दर्द होनेकी वजहसे तकलीपर कातना शुरू किया। सेठ जमनालाल और छगनलालको तार। पत्र लिखे: आश्रमको (४१), डॉ० मोदी, साहनी। अस्पृश्यताके बारेमें कानिटकर, नृपेन्द्रसिंह, राजभोज, अनन्तराव, मन्मथराय। सतीश बाबूको तार। कोदण्डरावको पाँचवाँ वक्तव्य दिया।

१५ नवम्बर, मंगलवार

तकलीपर ४० तार काते। पत्र लिखे: कर्नल डॉयलको मणिबहनके बारेमें, मेजर भण्डारी, चिन्ना थम्बी। केवलराम, मगनलालको तार। पत्र. भवानजी, शुक्रराम शास्त्री, लक्ष्मीकान्त, नरसिंहराव, लक्ष्मणलाल मेहता, तारामती, गुलाबचन्द शाह, परमहंस प्रज्ञानेश्वर, लेडी ठाकरसी, नटराजन् (पुत्र)। अस्पृश्यताके बारेमें तार कुन्हप्पा, शर्मा, जेकिन्स, फीरोजचन्दको। [पत्र·] दातार, करसनदास, घनश्यामदास, गोपाल मेनन, वसन्तराम शास्त्री, हरिहरप्रसाद, नेमिचन्द्र।

राधाकृष्ण, प्रो० पुरन्दरे और उनकी पत्नी तथा कोदण्डराव मिलने आये।

गुजराती (एस० एन० १९३३७) से।

परिशिष्ट

परिशिष्ट १[1]

(क) वल्लभभाई पटेलसे विचार-विमर्श

६ सितम्बर, १९३२

गाधीजी . सुबह तो तुम परिहास कर रहे थे, किन्तु मै सचमुच कहता हू कि तुम्हे यदि कुछ पूछना हो तो पूछ लो।

वल्लभभाई पटेल . आपके खयालमे ये लोग क्या करेगे?

गा० · मुझे अब भी यही लगता है कि ये लोग १९ तारीख या उससे पहले मुझे छोड देगे। ये लोग मुझे उपवास करने दे और किसी को कोई खबर न दे और यह कहे कि कैदीके रूपमे जो नही करना चाहिए था सो उन्होने किया, तो हम क्या करे। यह तो नीचताकी पराकाष्ठा होगी। मै यह नही कहता कि ये लोग इस हदतक नही जा सकते, बल्कि ये लोग उस हदतक जाना जरूरी नही समझते। और ये लोग आवश्यकतासे अधिक दूर जानेवाले है नही।

व० प० . तो फिर आप क्या करेगे?

गा० २० तारीखको तो उपवास शुरू किया ही नही जा सकता। २० तारीखका आग्रह नही किया जा सकता।

व० प० : क्या फिर इसका मतलब यह नही हुआ कि नया विधान बननेतक हमे समय मिल गया? या फिर लोगो और सरकारको आप लम्बी मियादका नोटिस दे सकते है?

गा० . हाँ, किन्तु यह तो इस बातपर निर्भर करता है कि ये लोग मुझे बाहर जाकर कितना करने देते है। क्या स्थिति होगी, इसकी तो कल्पना मै नही कर सकता। यह भी मुझे नही सूझता कि मै कैसा पत्र तैयार करूँगा। किन्तु मुझे तो हिन्दू समाज, अन्त्यज, सरकार, मुसलमान, सभीको ध्यानमे रखकर करना पडेगा। हिन्दू समाजको तो अन्त्यजोके साथ मिलकर जगह-जगह सभाएँ करके इस चीजसे इनकार करना होगा। सरकारने तो खृष्टी सरकारके रूपमे ऐसा किया है, इसलिए सरकार और ईसाइयो, दोनोसे मुझे एक ही बात कहनी होगी कि आप ईसाई होनेके नाते ऐसा नही कर सकते। हमारा स्वराज हो जाने दीजिए फिर आप अन्त्यजोपर जो असर डालना चाहे सो डाले, किन्तु आज हमारे टुकडे मत कीजिए। मुसलमानोसे तो

१. देखिए पृष्ठ ६५-६९।

यह मैंने विलायतमे भी कहा था। यहाँ भी यही कहता हूँ। मै हिन्दू समाजको भी समझाऊँगा कि अब तो अन्त्यजोके लिए मुसलमान या ईसाई बननेके सिवा कोई चारा नही है।

व० प० परन्तु यहाँ तो सुननेवाले मुसलमान है ही कहाँ?

गा० भले ही कोई न हो। किन्तु हमे आशा रखनी चाहिए कि ये लोग भी जागेगे। मानव-स्वभावमे विश्वास रखना सत्याग्रहका मूल है, दुष्टतम व्यक्तिको पिघला सकनेकी श्रद्धामे है। इसलिए यह कहनेवाला कोई-न-कोई मुसलमान तो जरूर निकलेगा कि इतनी ज्यादती तो हम बरदाश्त नही कर सकेगे। यह सब करनेके लिए खास-खास लोगोको तो मै बुलवा लूँगा। मै नही जानता कि उन सबको आने दिया जायेगा या नही। किन्तु ये लोग तो मेरा अपमान भी कर सकते है। ये लोग कह सकते है कि इसे हमने इसलिए छोडा है क्योकि हम इसकी मृत्युकी जिम्मेदारी लेनेको तैयार नही है। किन्तु यदि यह सविनय अवज्ञा करेगा तो हमे उसे फिर बन्द कर देना पडेगा।

महादेव देसाई जो लोग आयेगे उनमे ईसाई मित्र भी होगे और वे कहेगे कि आप सरकारको दोष देते है किन्तु अपना दोष क्यो नही दूर करते? हिन्दू समाज अन्त्यजोको अछूत क्यो मानता है?

गा० यह समझाना मेरे हाथमे है। यह कोई बडी बात नही है। उनसे तो यह कहा जा सकता है कि 'हमे आपसमे निबट लेने दीजिए, आप क्यो बीचमे पडते है? जब हम अपना कारबार चलाने लग जाये तब आपको जो करना हो सो करना। हममे फूट डालकर फिर क्यो ये सब बाते बनाते है? आज तो अन्त्यजोके लिए आपके या मुसलमानोके पास जानेके सिवा कोई चारा ही नही रहा।' स्त्रियोका सवाल भी अन्त्यजो-जैसा ही है। परन्तु स्त्रियाँ कोई अछूत नही है। यदि वे अछूत बनना चाहे तो भी पुरुष उनकी खाटपर जाकर बैठेगे। उनका अलग निर्वाचक-मण्डल बनाकर भी उन्हे अलग नही किया जा सकता। आज तो अन्त्यजोको स्थायी रूपसे अलग कर दिया गया है। इसका परिणाम क्या निकलेगा? आन्तरिक विग्रह होगा। . . . जैसे लोग तो है ही। वे बिरादरीमे से गुडोको इकट्ठा करके हिन्दुओपर अत्याचार करायेगे, कुओमे जहर डलवायेगे और चाहे जो कार्रवाई कर सकते है।

यहाँ रहनेवाले तुम सब लोगोका तो इतना ही कर्त्तव्य है कि कैम्प जेलमे सबको बता दो कि उपवास करनेकी सख्त मनाई है और शान्ति रखनी है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ ७-९

(ख) भी० रा० अम्बेडकरसे विचार-विमर्श

२२ सितम्बर, १९३२

अम्बेडकर· हमे यह मानकर चलना चाहिए कि देशमे दो भिन्न विचारधाराओके लोग है और मुझे उसका मुआवजा मिलना चाहिए। मेरी यह माँग है कि एक ऐसा स्पष्ट समझौता हो जाए जिससे अन्य प्रकारसे मेरी क्षतिपूर्ति हो जाए। निर्णयके अनुसार मुझे ७१ जगहे मिलती है। यह सही, अच्छा और निश्चित हिस्सा है।

गाधीजी आपके विचारसे।

अ०. इसके अतिरिक्त सामान्य निर्वाचक-मण्डलमे मुझे मत देने और उम्मीदवारके रूपमे खडे होनेका अधिकार भी मिलता है। फिर मजदूरोके निर्वाचक-मण्डलमे भी मुझे मताधिकार मिलता है। हम इतना समझते है कि आप हमारी बहुत अधिक मदद करनेवाले है।

गा० : आपकी नही।

अ०· किन्तु आपके साथ मेरा एक ही झगडा है, आप केवल हमारे लिए नही बल्कि तथाकथित राष्ट्रीय हितोके लिए काम करते है। यदि आप केवल हमारे लिए काम करे, तो आप हमारे चहेते नायक बन जायेंगे।

गा०· यह तो बहुत सुन्दर बात है।

अ०· मुझे तो अपने वर्गके लिए राजनीतिक सत्ता चाहिए। हमारे जीवित रहनेके लिए यह अनिवार्य है। इसलिए मेरे समझौतेका आधार यह है कि मुझे उचित हिस्सा मिले। मै हिन्दुओसे कहना चाहता हूँ कि मुझे मुआवजेका आश्वासन मिलना चाहिए।

गा० : आपने अपनी स्थिति बहुत सुन्दर ढगसे स्पष्ट कर दी है। किन्तु मै आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। आपने कहा कि यदि दलित वर्गमे कोई अन्य सच्चा दल हो तो उसे भी आगे आनेकी पूरी गुजाइश होनी चाहिए। इसलिए ये लोग अलग प्रारम्भिक चुनावोके विना सयुक्त निर्वाचक-मण्डलकी शर्त न माने, यह सर्वथा उचित है। मुझे जो चीज पसन्द नही है वह यह कि आपने यह क्यो नही कहा कि इस ढगका एक अलग चुनाव होना चाहिए। इस मामलेका मैंने जहाँतक अध्ययन किया है वहाँतक मुझे लगता है कि यदि मै अलग प्रारम्भिक चुनावको स्वीकार कर लूं तो उससे मेरी प्रतिज्ञाका शब्दार्थ भग नही होता। इसलिए मै यह [प्रारम्भिक चुनावकी] शर्त मजूर करता हूँ किन्तु मुझे उसकी भाषाकी निश्चय ही जाँच करनी पड़ेगी। फिलहाल तो मै इतना ही कहता हूँ कि अलग प्राथमिक चुनाव का विचार मेरी प्रतिज्ञाके विरुद्ध नही है। किन्तु इसमें आप जो केवल तीन व्यक्तियोका ही पैनल रखनेकी बात कहते है उससे मुझे कुछ सन्देह होता है। इसमे तो मेरे लिए पहलू बदलनेतक की गुजाइश नही है। इसके अतिरिक्त आप तो कुछ सीटोके लिए ही दो अलग-अलग चुनाव करनेका विचार करते है, और इस प्रकार [हरिजनो के] दोनो पक्षोको सन्तुष्ट करना चाहते है। एक चुनाव केवल हरिजन मतदाताओके लिए प्राथमिक ढंगका हो और दूसरा संयुक्त निर्वाचक-मण्डलके लिए हो। मुझे एक

पक्षका हित नही बल्कि पूरे अस्पृश्य वर्गके हितको सजग और सावधान रहकर साधना है। मुझे अस्पृश्योकी सेवा करनी है। इसीलिए मुझे आपके प्रति तनिक भी रोष नही है। जब आप मेरे प्रति किसी अपमानजनक या क्रोधपूर्ण शब्दका प्रयोग करते है तो मै अपनेसे यही कहता हूँ कि तू इसी लायक है। यदि आप मेरे मुँहपर थूके तो भी मै क्रोध नही करूँगा। ईश्वरको साक्षी मानकर मै यह कहता हूँ। मै यह जानता हूँ कि आपको जीवनमे बहुत कटु अनुभव हुए है। किन्तु मेरा दावा असाधारण है। आप तो जन्मसे अस्पृश्य है किन्तु मै स्वेच्छासे अस्पृश्य बना हूँ। और इस जातिमे नवागन्तुकके नाते इस जातिके हितकी बात इस जातिके पुराने लोगोकी अपेक्षा मुझे ज्यादा महसूस होती है। फिलहाल मेरी नजरके सामने मूक अस्पृश्य — दक्षिण भारतके 'अगम्य' (अन अपरोचेबल्स) और 'अदृश्य' (अनसीएबल) — खडे है। मै इस भावनासे इस योजनाकी जाँच कर रहा हूँ कि इसका इन सबपर क्या असर पडेगा। आप तो कह देगे कि इसकी चिन्ता आप क्यो करते है। हम सब ईसाई या मुसलमान बन जायेगे। मै कहता हूँ कि मेरे शरीरके न रहनेपर आपको जो करना हो सो करे। इस योजनाके बारेमे मै कहता हूँ कि यदि यह योजना दलित वर्गोंके लिए अच्छी हो तो यह सभी मतदाताओके लिए अच्छी होनी चाहिए। शुरूसे ही इस प्रकार दो विभाग कर दिये जाये, यह मुझे पसन्द नही। यदि सभी अस्पृश्य एक ओर सगठित होगे तो मै सनातनियोके किलेको सुरग लगाकर उड़ा सकूँगा और जमीदोज कर दूँगा। मै चाहता हूँ कि पूरा अस्पृश्य समाज एक स्वरसे सनातनियोके विरुद्ध विद्रोह करे। जबतक उम्मीदवारोको नामजद करना आपके हाथमे है तबतक आपको सख्याकी चिन्ता नही करनी चाहिए। मै तो आजीवन लोकतन्त्रवादी रहा हूँ। जब मेरी भस्म हवामे उड़ने लगेगी या, यदि ऐसा न हो सका, उसे गगाजी मे विसर्जित कर दिया जायेगा तो सारी दुनिया यह मानने लगेगी कि मै लोकतन्त्रवादियोमे शिरोमणि था। यह मै अभिमानसे नही कहता बल्कि नम्रतापूर्वक सत्यका उच्चारण कर रहा हूँ। बारह वर्षकी कोमल आयुमे मैने प्रजातन्त्रका पाठ पढ़ा था। अपने घरके भगीको अस्पृश्य माननेके कारण मैने अपनी माँ के साथ झगड़ा किया था। उस दिन मैने भगीको ईश्वरके रूपमे अवतार लेते देखा। जब आपने यह कहा कि अस्पृश्योका हित मुझे अपने जीवनसे भी अधिक प्रिय है तो आपने ईश्वरके वचन कहे थे। अब आप ईमानदारीसे इसपर जमे रहे। आपको मेरे जीवनकी चिन्ता नही करनी चाहिए। बल्कि अस्पृश्योके प्रति झूठे मत बनना। मेरी मृत्युसे मेरा काम कोई समाप्त नही हो जायेगा। मैने अपने पुत्रसे परिषद्को एक सन्देश देनेको कहा है। जिसमे मैने उससे कहा है कि मेरा जीवन खतरेमे पड़नेकी वजहसे तू अछूतोका हित छोड देनेके लालचमे मत फँसना। और मुझे विश्वास है कि यदि मै मरूँगा तो मेरे पीछे मेरा लड़का भी मरेगा। वह अकेला ही नही बल्कि और भी बहुत-से मरेगे। क्योकि मेरा एक ही लड़का नही बल्कि हजारो लड़के है। हिन्दू धर्मकी प्रतिष्ठाको बचानेके लिए यदि वह अपने प्राण उत्सर्ग नही करता तो वह मेरा लायक लडका नही माना जायेगा। और अस्पृश्यताको जड़-मूलसे उखाड़कर फेके बिना हिन्दू धर्मकी प्रतिष्ठा बचनेवाली नही है।

ऐसा तभी होगा जबकि अस्पृश्योको हर मामलेमे स्पृश्य हिन्दुओके बराबरका दर्जा मिलेगा। आज जिन्हे 'अदृश्य' माना जाता है उन्हे भी हिन्दुस्तानका वाइसराय बननेका पूरा अवसर मिलना चाहिए। हिन्दुस्तान पहुँचनेके बाद मैंने जो पहला राजनीतिक भाषण दिया था उसमे मैंने कहा था कि मै तो किसी भगीको कांग्रेस-अध्यक्ष बनाना चाहूँगा।

अत मै आपसे अपील करता हूँ कि आप मोलतोल मत कीजिये। जो देखनेमे अच्छी न लगे ऐसी भद्दी चीज मेरे पास मत लाइये। मेरे पास तो ऐसी सुन्दर भेंट लाइये जिससे स्वेच्छासे मृत्युशय्या पर पडे इस मनुष्यके जीवमे कुछ चेतना आये। किन्तु ऐसा आप तभी करे जब आपको यह लगे कि मेरे सहयोगका कोई मूल्य है।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ ६९-७२

(ग) एक वक्तव्य

२२ सितम्बर, १९३२

डॉ० अम्बेडकरने प्रारम्भिक चुनावकी जो पद्धति मुझे समझाई है और जो मुझे दी गई योजनाकी धारा (ब)मे बताई गई है, उसमे मेरी प्रतिज्ञाकी दृष्टिसे कोई आपत्ति नजर नही आती। परन्तु अन्तिम रूपसे किसी भी योजनाको स्वीकार करनेके पहले मै इस पूरी चीजको स्पष्ट भाषामे लिखा देखना चाहूँगा। तदुपरान्त मै धारा (ब)के सम्बन्धमे अपना अन्तिम निर्णय दे सकूँगा। उसकी भाषा मुझे पसन्द नही है। उसमे काफी रद्दोबदल करनेकी जरूरत है। उक्त धाराके कुछ अशो और उसकी भाषाके सम्बन्धमे मुझे जो आपत्तियाँ है वे मैंने समझा दी है। मेरी आपत्तियाँ इस प्रकार है

(१) प्राथमिक चुनाव-पद्धति और विशेष रूपसे सुरक्षित सीटे दस वर्ष बाद स्वत. समाप्त हो जानी चाहिए।

(२) मतदाताओकी सख्या लोथियन कमेटीकी रिपोर्टके अनुसार तय की जानी चाहिए। धारा (ब)के सम्बन्धमे मुझे दोहरी आपत्ति है। मै जिस उद्देश्यसे इस मरण-शय्या पर पडा हुआ हूँ उस उद्देश्यको वह नगण्य ही नही बना देती बल्कि राष्ट्रको भी भारी नुकसान पहुँचानेवाली है।

अन्य मुद्दोके बारेमे तो आपको हिन्दू जातिको उसकी प्रतिष्ठापर छोड देना चाहिए। ऐसा कुछ करनेको आप मुझसे मत कहिए जो मरणशय्या पर पड़े व्यक्तिको करना शोभा न दे। मै जानता हूँ कि यदि मै अपने मुद्देसे हट जाऊँगा तो राष्ट्रका सर्वनाश हो जायेगा।

[गुजरातीसे]
महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ ७२

(घ) भेंट: बोहरोंके प्रतिनिधि-मण्डलको[1]

२३ सितम्बर, १९३२

यदि आप गहराईसे विचार करे तो देखेंगे कि इस दुनियामें कोई काम जानकी बाजी लगाए बिना नही हो सकता। मेरे प्रति आपका प्रेम मेरी दृढताके कारण है, प्राण देनेकी मेरी शक्तिपर अवलम्बित है। इसलिए आप मुझे जिस विचारसे चाहते है उसी विचारसे छोड दीजिए। मेरा जीवन भगवान्के हाथमे है। यदि मै चाहूँ तो भी नही जा सकता और यदि जानेवाला हूँगा तो अच्छेसे-अच्छे डॉक्टर भी मुझे बचा नही सकते। यदि आप इस बातकी गवाही दे सके कि मै सच्ची बातके लिए मरा तो यह बडी बात होगी। जिस कलकको दूर करनेके लिए मैं उपवास कर रहा हूँ, वह केवल हिन्दू धर्मपर नही बल्कि पूरे हिन्दुस्तानपर है। क्योकि सारा हिन्दुस्तान इस कलकका गवाह है। इसलिए आप सबको यह प्रार्थना करनी चाहिए कि गाधीने जो व्रत लिया है वह पूरा हो। ऐसी कोई बात नही है कि हिन्दूके लिए मुसलमान और मुसलमानके लिए हिन्दू प्रार्थना नही कर सकता। इस तरहका विचार ढोग है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ ७३-७४

(ङ) सन्देश: मदनमोहन मालवीय, एम० आर० जयकर और तेजबहादुर सप्रूको[2]

२४ सितम्बर, १९३२

मेरी वजहसे अनावश्यक जल्दबाजी न करे। उन्हे जो चीज सही लगे उसीपर हस्ताक्षर करे। बादमे यदि मुझे मनानेकी जरूरत पड़ेगी तो उसकी गिनती दोषमे की जायेगी और मुझे भी दोषी माना जायेगा। धर्मके मामलेमे लिहाज नही किया जा सकता। इसलिए जो सत्य, उचित और न्याय्य है उसपर डटे रहना चाहिए। यदि ऐसा करनेसे मेरी जीवन-डोर टूट जाये तो भले ही टूट जाये। इसलिए जिसे जो उचित लगे वह वही करे। मेरी स्थिति यह है कि या तो पाँच वर्ष बाद हरिजनोकी मतगणना हो या मुझे मरने दिया जाये, जिसे यह उचित न जान पड़े या हानिकारक लगती हो तो वह उसे मजूर न करे।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ ८०

१. बोहरे गाधीजी से यह अनुरोध करने आये थे कि वे उपवास करनेका विचार छोड दें।

२. गाधीजी ने महादेव देसाईसे यह सन्देश भेजनेको कहा था।

(च) भी० रा० अम्बेडकरसे विचार-विमर्श

१७ अक्तूबर, १९३२

अम्बेडकर मै तो अस्पृश्यताके बारेमे नही बल्कि राजनीतिक परिस्थितिके बारेमें बातचीत करने आया हूँ।

गाधीजी. सच बात है। मै उस बारेमे आपसे बातचीत नही कर सकता, यदि आप करेगे भी तो मै अपनी राय नही दे सकता, मेरा मन ही उस दिशामे काम नही करता।

अ० : मै तो कह-भर देता हूँ कि मै सिर्फ इसीलिए आया हूँ। मुझे आपसे सविनय अवज्ञा छोड़कर बाहर आकर गोलमेज परिषद्‌मे सम्मिलित होनेकी प्रार्थना करनी थी। बात यह है कि यदि आप नही चलेगे तो हमे विलायतमे कुछ नही मिलेगा, उलटे सब-कुछ बिगड़ जायेगा। इकबाल-जैसे व्यक्ति तो देशके दुश्मन है, वे सब-कुछ विगाड आयेंगे। और हमे तो किसी भी तरहके विधानके अनुसार करना है। अत. सामान्य व्यक्ति होनेके बावजूद आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप चले।

गा० : यदि आप अपने तर्कको विस्तारसे बताये तो मै उसपर विचार करूँ। मेरा सुझाव है कि आप वाहर जाकर समाचार-पत्रोमे इस विषयपर विस्तारसे लिखे। मै उसपर विचार करूँगा।

अ० यह पूरी चीज लिखी नही जा सकती है। इसमे तो मुझे ऐसी बातें कहनी पडेगी जिससे मुसलमानोको बहुत दु ख हो सकता है और यह मै सार्वजनिक रूपसे नही कह सकता। किन्तु अब तो मै अपना नाम दिये बिना दूसरी ही तरहसे लिखूंगा या लिखवाऊँगा। उसे आप देखियेगा और यह समझकर उसपर विचार कीजियेगा कि वह मेरा ही है।

गा० : अच्छा तो यह होगा कि आप अपने नामसे ही लिखे। फिर जैसी आप की इच्छा।

अ० · मुझे ईमानदारीसे कहना चाहिए कि ये जो मन्दिर खुल रहे है, सहभोज हो रहे है, इसमे मुझे दिलचस्पी नही है, क्योकि इसमे तो हमारी मौत है। मेरे आदमियोको मार खानी पडती है और कटुता बढ़ती है। विलेपारलेमे सहभोज निबट जानेके बाद काम करनेवाले मराठोने हडताल कर दी। यदि उच्च वर्णके हिन्दुओमे सामर्थ्य होती तो वे अस्पृश्योको नौकर रखते। किन्तु यह तो हो नही सकता। इस-लिए इसमे मुझे दिलचस्पी नही है। मै तो यह चाहता हूँ कि सामाजिक और आर्थिक कष्ट मिट जाये।

गा० : आप उदाहरण दीजिए।

अ० : अस्पृश्योको रहनेके लिए घर नही मिलते, उनपर अन्याय और अत्याचार होते रहते है। एक मामलेमे एक अस्पृश्यपर किसी मराठेका खून करनेका जुर्म था। मामलेको सेशनमे ले जाकर मै उसे छुडवा सकता था, किन्तु मजिस्ट्रेटने खूनके वदले सख्त चोटका इलजाम लगा दिया। अब उसे कुछ-न-कुछ सजा होगी। स्वयं

मुझपर क्या बीतती है सो आप नही जानते होगे। मुझे बम्बईमे पोर्टट्रस्ट की चालके अतिरिक्त और कही रहनेकी जगह नही मिलती। अपने गाँवमे तो मुझे महारोकी बस्तीमे ही रहना पडता है। पूनामे अन्य सब लोग अपने मित्रोके यहाँ ठहरते है। मुझे नेशनल होटलमे ठहरना पड़ता है और सात रुपये तथा आने-जानेका किराया खर्च करना पड़ता है।

गा० . भारत सेवक समाज?

अ० . हाँ, वहाँ शायद रहा जा सकता है। किन्तु वहाँ भी शायद ही। यदि आप वझे से पूछे तो पता चले। वझे की उपस्थितिमे एक बार उनके नौकरने मेरा अपमान किया था। मुझे तो ये सब परेशानियाँ दूर करनी है।

गा० मै आपसे सहमत हूँ। आपको यह मालूम होना चाहिए कि अभी मेरा उपवास पूरा नही हुआ है, अभी बना ही हुआ है। समझौतेको सुधरवाना तो गौण बात थी। मुख्य बात तो अभी बाकी है। इसके लिए मै अपने प्राण उत्सर्ग करनेको तैयार हूँ। आपने जिन अन्यायोका उल्लेख किया वे सब निश्चय ही मिटने चाहिए।

अ० : बिडलाने मुझे अस्पृश्यता-निवारण कमेटीमे लेनेको कहा। मैने इनकार कर दिया, क्योकि मै अकेला क्या कर सकता हूँ? मुझे तो आप जैसा चाहेगे उस तरहके अस्पृश्यता-निवारणके काम मे सहमति देनी पडेगी। हम यदि बहुमतमे हो तो जिस तरह चाहे उस तरह सुधार करवा सकते है। आप चाहेगे कि मन्दिर बनवाये जाये या कुएँ खुदवाये जाये। हमे लगेगा कि यह पैसा बेकार जा रहा है, इसके लिए कोई दूसरा रास्ता होना चाहिए।

गा० मै आपके दृष्टिकोणको समझता हूँ और मै इसे ध्यानमे रखूंगा और देखूंगा कि क्या किया जा सकता है।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ १४४-४६

परिशिष्ट २[1]

विधानमण्डलोंमें दलित वर्गोंके प्रतिनिधित्व तथा उनके कल्याण-सम्बन्धी कुछ अन्य बातोंपर दलित वर्गों एवं शेष हिन्दू समुदायके पक्षोंको प्रस्तुत करनेवाले नेताओंके बीच हुआ समझौता।[2]

१. देखिए पृष्ठ १४९-५०।

२. समझौतेपर हस्ताक्षर २४ सितम्बरको ६ बजेके लगभग शान्त और सौहार्दपूर्ण वातावरणमें हुए। २६-९-१९३२ के बॉम्बे क्रॉनिकलकी रिपोर्टके अनुसार श्री मदनमोहन मालवीयने सबसे पहले हस्ताक्षर किये, उसके बाद डॉ० अम्बेडकरने। अम्बेडकरने श्री राजगोपालाचारीकी कलमका उपयोग इस उद्देश्यके लिए किया और उसे अपने ही पास रख लिया-और उसके बदलेमें अपनी कलम उन्हें (श्री० राजगोपालाचारी को) हस्ताक्षर करने तथा इस अवसरकी निशानीके तौरपर अपने पास रखनेके लिए दे दी।

१. आम निर्वाचन-क्षेत्रोमे से कुछ स्थान दलित वर्गोके लिए सुरक्षित रखे जायेगे। राज्य विधानमण्डलोमे ये सुरक्षित स्थान निम्न प्रकार होगे :[1]

मद्रास	३०
सिन्ध सहित बम्बई	१५
पजाब	८
बिहार और उडीसा	१८
मध्य प्रान्त	२०
असम	७
बगाल	३०
सयुक्त प्रान्त	२०
योग	१४८

२. इन सीटोके लिए चुनाव सयुक्त निर्वाचन-मण्डलो द्वारा होंगे, परन्तु इन चुनावोकी विधि निम्न प्रकार होगी :

आम मतदाता-सूचीमे जिनके नाम दर्ज है, दलित वर्गोके ऐसे सभी मत-दाताओका एक निर्वाचक-मण्डल बनाया जायेगा। यह निर्वाचक-मण्डल प्रत्येक सुरक्षित सीटके लिए चार-चार दलित वर्गीय उम्मीदवारोका चुनाव एकमतकी पद्धतिसे करेगा और इस प्राथमिक चुनावमे क्रमश सबसे अधिक मत पानेवाले चार उम्मीदवार ही आम निर्वाचक-समूह द्वारा सम्पन्न किये जानेवाले चुनावके उम्मीदवार होगे।

३. केन्द्रीय विधान-मण्डलमे भी दलित वर्गोके प्रतिनिधि इसी तरहसे सयुक्त निर्वाचन-क्षेत्र और सुरक्षित स्थानके सिद्धान्तपर उसी पद्धतिसे चुने जायेगे जिसकी व्यवस्था उपर्युक्त धारा २ मे राज्य विधान-मण्डलोमे उनके प्रतिनिधि चुननेके सम्बन्धमे की गई है।

४. केन्द्रीय विधान-मण्डलमे ब्रिटिश भारतके आम निर्वाचक-समूहको जितनी सीटे दी गई हैं उनका १८ प्रतिशत दलित वर्गोके लिए सुरक्षित रहेगा।

५. केन्द्रीय और प्रान्तीय विधान-मण्डलोके लिए उम्मीदवारोकी सूचीके लिए प्राथमिक चुनावकी जिस पद्धतिकी व्यवस्था की गई है वह प्रथम दस वर्षोके बाद समाप्त होगी, बशर्ते कि इसे नीचेकी धारा ६ मे की गई व्यवस्थाके अनुसार पारस्परिक समझौते द्वारा पहले ही समाप्त न कर दिया जाये।

६. धारा १ और ४ मे केन्द्रीय और प्रान्तीय विधान-मण्डलोमे सुरक्षित जगहोके माध्यमसे दलित वर्गोके प्रतिनिधित्वकी पद्धतिकी जो व्यवस्था की गई है वह तबतक चलती रहेगी जबतक कि इस समझौतेसे सम्बन्धित समुदायोमे पारस्परिक मतैक्यसे पुन: कोई निर्णय न लिया जाये।

१. ये आँकड़े प्रधान मन्त्रीके निर्णयमें घोषित प्रान्तीय विधान परिषदोंकी कुल सीटोंकी संख्यापर आधारित है।

७ केन्द्रीय और प्रान्तीय विधान-मण्डलोके लिए दलित वर्गोको वैसा ही मताधिकार प्राप्त होगा जैसाकि लोथियन समितिकी रिपोर्टमे निर्दिशत है।

८. स्थानीय सस्थानोके लिए निर्वाचित होने अथवा सरकारी पदोपर नियुक्त होनेके लिए किसीको महज इसलिए अयोग्य करार नही दिया जायेगा कि वह दलित वर्गका सदस्य है।

विभिन्न सरकारी पदोपर नियुक्तिके लिए जो शैक्षणिक योग्यता निर्धारित की जायेगी उसका खयाल रखते हुए इस बातका पूरा प्रयत्न किया जायेगा कि इस क्षेत्रमे और स्थानिक सस्थाओमे दलित वर्गोको पर्याप्त प्रतिनिधित्व प्राप्त हो।

९. प्रत्येक प्रान्तमे शिक्षाके लिए मिले हुए अनुदानमे से एक खासी धनराशि दलित वर्गीय लोगोको शिक्षा-सम्बन्धी सुविधाएँ प्रदान करनेके लिए अलग कर दी जायेगी।

मदनमोहन मालवीय	बी० एस० कामत
तेजबहादुर सप्रू	जी० के० देवधर
एम० आर० जयकर	ए० वी० ठक्कर
बी० आर० अम्बेडकर	आर० के० बाखले
श्रीनिवासन्	पी० जी० सोलकी
एम० सी० राजा	पी० बालू
सी० वी० मेहता	शकरलाल बैंकर
सी० राजगोपालाचारी	गोविन्द मालवीय
राजेन्द्रप्रसाद	देवदास गाधी
जी० डी० बिडला	विश्वास
रामेश्वरदास बिडला	पी० एन० राजभोज गवई[1]
लल्लूभाई सामलदास	पी० कोदण्डराव
हसा मेहता	जी० के० गाडगिल
के० नटराजन्	मनु सूबेदार
कामकोटि नटराजन्	अवन्तिकाबाई गोखले
पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास	के० जे० चितालिया
मथुरादास विसनजी	राधाकान्त मालवीय
वालचन्द हीराचन्द	ए० आर० भट्ट
एच० एन० कुँजरू	कोलम
के० जी० लिमये	प्रधान

[अंग्रेजीसे]

एपिक फास्ट, पृष्ठ १५३-६

१. जो हस्ताक्षर आगे दिये जा रहे हैं उन्हें २५ सितम्बरको बम्बईमें होनेवाले हिन्दू सम्मेलनकी आखिरी बैठकमें इस दस्तावेजके साथ जोड़ा गया।

परिशिष्ट ३

भेंट: 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के प्रतिनिधिको[1]

१० नवम्बर, १९३२

गाधीजी: जमोरिन यह नही कहता कि मन्दिर खोलना असम्भव है, वल्कि वह अपनी मुश्किले पेश करता है। यदि वह असफल हो जाता है तो मुझे और केलप्पनको उपवास करना पडेगा, बशर्ते कि जो दावा किया जाता है उसमे मुझे कोई स्पष्ट त्रुटि दिखाई [न] दे। असलमे कोई त्रुटि है ही नही। जमोरिनके मार्गमे कठिनाइयाँ है किन्तु वे ऐसी नही है कि उनसे पार न पाया जा सके। खरी कसौटी तो यह है कि मन्दिरमे जानेके अधिकारी सवर्ण अस्पृश्योके मन्दिरम जानेपर आपत्ति करते है या नही? मुझे जो सूचनाएँ मिली हैं उन सबसे यह पता चलता है कि मन्दिरमे जानेवाले लोगोके बहुत बडे भागको कोई आपत्ति नही है। पूरा आन्दोलन इस मान्यतापर आधारित है कि मन्दिरमे जानेवाले लोग अर्थात् सवर्ण हिन्दू इस सुधारके लिए तैयार है। अगर ये लोग सुधारके लिए तैयार न हो तो हमारा उपवास बेवक्त किया गया माना जायेगा।

प्रश्न. यदि मन्दिर-सम्बन्धी यह मुश्किल दूर कर दी जाये तो उपवास नही होगा न?

गा० उपवास खास तौरसे यह मन्दिर खुलवानेके बारेमे है। कारण यह है कि केलप्पनने उदाहरण और कसौटीके रूपमे इस एक मन्दिरपर अपने प्रयास केन्द्रित किये थे। इन लोगोने मन्दिर खुलवानेके लिए अथक परिश्रम किया है। बादमे जब मैंने उपवास किया तो केलप्पन इस निर्णयपर पहुँचे कि स्वय उन्हे भी उपवास करना चाहिए। किन्तु उन्होने नोटिस नही दिया था। इस त्रुटिकी ओर मैंने उनका ध्यान दिलाया और उनसे उपवास स्थगित करनेको कहा। उन्होने इसे मान लिया। अत अब उनके साथ उपवास करना मेरे लिए इज्जतका सवाल बन गया है। अपने प्रयास गुरुवायूर मन्दिरपर केन्द्रित करनेका यही कारण है।

प्र०. जमोरिनका कहना है कि हजारो सनातनी मरनेको तैयार है।

गा० उनका यह कहना ठीक नही है। किन्तु स्वयको सनातनी कहनेवाले हजारो लोग भी यदि उपवास करे तो भी मैं घबरानेवाला नहीं हूँ। सत्य लाखो करोडो लोगोके जीवनसे भी बढकर है। उपवासके सम्बन्धमे मेरा विचार यह है कि वह आत्मशुद्धि और अन्तरात्माको जाग्रत करनेकी एक क्रिया है। वह जबरदस्तीका साधन कदापि नही हो सकता।

१. देखिए पृष्ठ ४०९।

प्र० : क्या इस आन्दोलनसे हिन्दू समाजके टुकडे नही हो जायेंगे? क्या सनातनी अवशिष्ट हिन्दू समाजसे अलग नही हो जायेंगे?

गां० : मुझे ऐसा कोई भय नही है। यदि मुझे सन्तोष हो जाये कि सनातनी आन्दोलनके नामसे जाने जानेवाले आन्दोलनको बहुसख्यक लोगोका सचमुच समर्थन प्राप्त है तो स्वभावसे ही लोकतन्त्रवादी होनेके कारण आज मै जिस तरह विरोध करता हूँ उस तरह विरोध नही करूँगा। अस्पृश्यता-निवारण-सम्बन्धी पूरा आन्दोलन इस मान्यतापर आधारित है कि उसके विरोधका कोई सही आधार नही है। यह तो जानी-मानी बात है कि उसके पीछे कोई नैतिक समर्थन नही है।

प्र० क्या आपको ऐसा नही लगता कि यदि आप बाहर हो तो ज्यादा असर डाल सकते हैं? क्या आप अस्पृश्यता-निवारणको सविनय भगकी अपेक्षा कम महत्त्वपूर्ण मानते हैं?

गां० . मै दोनोमे से किसीको भी कम महत्त्व नही देता। मेरे लिए तो दोनो धार्मिक सिद्धान्त है। इसलिए मै एकसे दूसरेको गौण नही मान सकता। मैंने यहाँ सविनय अवज्ञाकी बात एक सिद्धान्तके रूपमे कही है, आजकलके आन्दोलनके रूपमे नही। आजकल जो सविनय अवज्ञा चल रही है उसके बारेमे मै कोई राय नही दे सकता।

प्र० जितने जोरसे आन्दोलन चलना चाहिए उतने जोरसे चलता तो नजर नही आता।

गां० मै ऐसा नही कह सकता। मै कुछ कहनेकी स्थितिमे नही हूँ। अखबारो द्वारा मिलनेवाली खबरोपर मै भरोसा नही कर सकता। आपको बाहरके कार्यकर्त्ताओसे सम्पर्क करना चाहिए।

प्र० : अस्पृश्यता-निवारण सघसे दिल्लीके त्यागपत्रोके बारेमे आपका क्या कहना है?

गां० : इससे मुझे आश्चर्य हुआ है। किन्तु मै आशा करता हूँ कि उसके पीछे कोई खास बात नही होगी। सघकी नीव काफी मजबूत है। उसे आदर्श अध्यक्ष मिले हैं और उनसे भी अधिक आदर्श मत्री मिले हैं।

[गुजरातीसे]

महादेवभाईनी डायरी, भाग-२, पृष्ठ २२५-२७

परिशिष्टांश

भेंट: 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के प्रतिनिधिको

१० नवम्बर, १९३२

विवादास्पद मन्दिरके मुख्य न्यासी कालिकटके जमोरिन द्वारा जारी किये वक्तव्यको गांधीजी 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में पढ़ चुके थे। उन्होंने कहा:

जमोरिनने ऐसा स्पष्ट रूपसे नही कहा है कि मन्दिरको अछूतोके लिए खोला नही जायेगा, और जिन अडचनोको दूर करना है, उनके सम्बन्धमे जहाँतक मै समझ सकता हूँ, मै यह नही मानता कि उनमे से कोई भी ऐसी है जिसे समयपर दूर नही किया जा सकता। यदि वे १ जनवरीतक इन अडचनोको दूर करनेमे असफल रहते है; तो स्वभावत: श्री केलप्पनको तथा मुझे पुन अनशन करना पड़ेगा। जो दावे किये गये है उनमे अगर मुझे कोई स्पष्ट त्रुटि दिखाई नही पडी तो अनशन जारी रहेगा।

असली कसौटी तो यही है कि जिन लोगोंको मन्दिरमे जानेका अधिकार है, क्या उन्हे, जिस समय वे स्वय मन्दिरमे जाये, उस समय अछूतोको भी वहाँ आने देनेपर कोई आपत्ति है। मुझे तो यही सूचना है कि उन्हे कोई आपत्ति नही है, या यो कहिए कि उनमे से अधिकाशको कोई आपत्ति नही है। अस्पृश्यता-निवारणके पूरे आन्दोलनका आधार ही यही मान्यता है कि तथाकथित सवर्ण हिन्दुओका बडा बहुमत इस सुधारके लिए तैयार है। बिना इस मान्यताके श्री केलप्पनका और इस-लिए मेरा अनशन एकदम असामयिक हो जायेगा।

२ जनवरीसे प्रारम्भ होनेवाले इस अनशनका उद्देश्य सभी मन्दिरोके सम्बन्धमे सुधार लागू करवाना नही है। इसका सम्बन्ध इस एक खास मन्दिरसे ही है।

इस विषयसे सम्बन्धित एक विशेष प्रश्नका उत्तर देते हुए श्री गांधीने आगे कहा:

ऐसा करनेका कारण यह है कि श्री केलप्पनने उदाहरण और नमूनेके तौरपर इस एक मन्दिरपर ही अपना सारा ध्यान केन्द्रित किया है। वे और उनके बहुसख्य सहकर्मी निरन्तर अपनी सारी शक्ति इसी मन्दिरको खोलनेमे लगाते आ रहे है, और श्री केलप्पनने भी हमारे अनशनके समय ऐसा ही करनेका निश्चय किया। क्योकि उन्होने अपने अनशनके इरादेकी सूचना पहलेसे नही दी थी, इसलिए मैंने उन्हे यह बताते हुए कि इसमे यह त्रुटि रह गई है, उनसे अनशन स्थगित करनेके लिए कहा, जिसे उन्होने मान लिया। इसलिए अब तो उनका साथ देना अपने वचनकी रक्षा करनेका एक प्रश्न बन गया है और यही कारण है कि मैंने इस समय अपना ध्यान गुरुवायूर मन्दिरपर ही केन्द्रित कर दिया है।

तब मैंने श्री गांधीका ध्यान बम्बई स्थित शंकेश्वर मठके श्रीमद्जगद्गुरु शंकराचार्यके उस वक्तव्यकी ओर दिलाया जिसमें उन्होंने कहा था कि श्री गांधीके विचारोंका विरोध करनेवाले सैकड़ों और हजारों सनातनी लोग हैं और अपने दृष्टिकोणको प्रतिष्ठित करनेके लिए वे जान की बाजी लगा देनेके लिए भी तैयार हैं। गांधीजी ने कहा:

मेरे विचारसे उनके वक्तव्यका कोई औचित्य नही है। लेकिन मुझे इस बातसे कोई घबराहट नही होगी कि अपनेको सनातनी कहनेवाले हजार लोग आमरण अनशन शुरू कर दे। सत्य लाखो लोगोके जीवनसे भी बढकर है।

अनशनके सम्बन्धमें मेरी तो यह धारणा है कि यह अन्त करणको शुद्ध करने और जगानेवाली एक प्रक्रिया है। इसमे किसीको विवश करनेवाला कोई तत्त्व कभी नही होना चाहिए।

मेरे सामने यह डर व्यक्त किया गया था कि श्री गांधीका नया उपवास सवर्ण हिन्दुओं और अछूतोंको संगठित करनेके बजाय सनातनियोंको भड़काकर हिन्दू समुदायको और भी खंडित कर देगा। गांधीजी ने कहा:

मुझे ऐसा कोई डर नही है। यदि मुझे यह स्पष्ट हो जाये कि सनातनियोके नामपर चलाये जानेवाले इस आन्दोलनको जनताका वास्तविक समर्थन प्राप्त है तो एक उत्साही प्रजातन्त्री होनेके नाते इस आन्दोलनका मै उस तरह विरोध नही करूँगा, जैसा आज कर रहा हूँ। अस्पृश्यता-विरोधी पूरे आन्दोलनका आधार यही मान्यता है कि इस आन्दोलनके विरोधको जनताका समर्थन प्राप्त नही है। इसे कोई नैतिक समर्थन नही है, यह तो स्वयसिद्ध ही है।

मैंने श्री गांधीसे कहा कि इस आन्दोलनके समर्थकोंकी यह आम धारणा है कि यदि वे (गांधीजी) जेलमें होनेके बजाय उनके बीच रहें तो इस दिशामें बहुत प्रगति की जा सकती है। इसलिए मैंने उनसे पूछा कि क्या वे सविनय अवज्ञाको अस्पृश्यता-विरोधी आन्दोलनसे अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं। गांधीजी ने उत्तर दिया:

मैं इन दोनोमे से किसी एकको कम या अधिक महत्त्वपूर्ण नही समझता। मेरे लिए तो ये धर्म-सिद्धान्तके समान हैं, और इसलिए मैं इनमे से किसी एकको दूसरेके समान गौण नही समझता।

राजनीतिक मामलोंमें गांधीजी पर जेल-जीवनकी जो मर्यादाएँ लगी हुई हैं उनका अतिक्रमण न करनेके लिए वे सतत सावधान रहते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि वे अभी जो सविनय अवज्ञाकी चर्चा कर रहे हैं वह देशमें इन दिनों जिस योजनाके अनुसार काम चल रहा है उसके सन्दर्भमें नहीं, बल्कि उसकी चर्चा वे जीवनके एक सिद्धान्तके रूपमें कर रहे हैं। उस योजनाके सम्बन्धमें तो वे कोई राय जाहिर करनेको तैयार नहीं थे। मैंने कहा कि आन्दोलनकी प्रगतिकी रफ्तार बहुत धीमी है, लेकिन वे यह माननेको तैयार नहीं थे और न वे यही कहनेको तैयार थे कि वह ठीक चल रहा है, क्योंकि अभी उनको पूरी जानकारी नहीं मिली है।

उन्होंने कहा कि दिल्लीके अस्पृश्यता-विरोधी लीगके पदाधिकारियोंके त्यागपत्र देनेसे उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ है। उन्हें उम्मीद है कि अन्तमें यही पता चलेगा कि इसके पीछे कोई बड़ा कारण नहीं है।

अन्तमें उन्होंने कहा, मैं चाहता हूँ कि इस आन्दोलनपर दुनिया अपनी राय जाहिर करे, क्योंकि निश्चय ही इसके परिणाम हिन्दू समाज और भारतकी सीमाओंके बाहर बहुत दूरतक होंगे। विशुद्ध रूपसे अहिंसक साधनोंसे और केवल लोकमतको जाग्रत करके यदि ४ करोड़ लोगोंको उस बोझसे छुटकारा दिलाया जा सका जिसके नीचे वे कुचले जा रहे हैं तो उसका स्वाभाविक परिणाम यही होगा कि शंकालुओं और नास्तिकोंके मनमें भी सर्वत्र ईश्वरकी जीवन्त उपस्थितिके प्रति विश्वास जगेगा और इसलिए मनुष्यकी सहज अच्छाईमें भी उनकी श्रद्धा जाग्रत होगी।

[अंग्रेजीसे]

प्यारेलाल नैयरसे प्राप्त कागजात।

सामग्रीके साधन-सूत्र

गाधी स्मारक सग्रहालय, नई दिल्ली गाधी-साहित्य और सम्बन्धित कागजात का केन्द्रीय सग्रहालय तथा पुस्तकालय। देखिए खण्ड १, पृष्ठ ३५९ (प्रथम सस्करण) और पृष्ठ ३५५ (द्वितीय सस्करण)।

नेशनल आर्काइव्ज ऑफ इडिया, नई दिल्ली।

साबरमती सग्रहालय पुस्तकालय तथा आलेख सग्रहालय, जहाँ गाधीजी से सम्बन्धित कागजात सुरक्षित है।

'अमृतबाजार पत्रिका' कलकत्तासे प्रकाशित अग्रेजी समाचार-पत्र जिसका प्रथम अक १८६८ मे बगला साप्ताहिकके रूपमे निकला था, १८९१ से यह दैनिक बन गया।

'एडवास' कलकत्तासे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'टाइम्स ऑफ इडिया' १८८३ से दिल्ली और बम्बईसे एक साथ प्रकाशित होनेवाला अग्रेजी दैनिक।

'बॉम्बे क्रॉनिकल' बम्बईसे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'विश्वभारती न्यूज' शान्तिनिकेतनसे प्रकाशित होनेवाली मासिक पत्रिका।

'हिन्दू'. मद्राससे प्रकाशित अग्रेजी दैनिक।

'एपिक फास्ट' (अग्रेजी) : प्यारेलाल द्वारा सम्पादित, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद।

गाधी-सप्रू पत्र-व्यवहार. कलकत्ताके राष्ट्रीय पुस्तकालयमे सुरक्षित कागजात।

'ट्राइबल वर्ल्ड ऑफ वेरियर एलविन एन ऑटोबायोग्राफी' (अग्रेजी) ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, १९६४।

'पाँचवे पुत्रको बापूके आशीर्वाद' काका कालेलकर द्वारा सम्पादित, जमनालाल सेवा ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

'बॉम्बे सीक्रेट ऐब्स्ट्रैक्ट्स, १९३२' (अग्रेजी) बम्बई सरकारके दफ्तरी प्रलेख।

'बापुना पत्रो-४. मणिबहेन पटेलने' (गुजराती) मणिबहन पटेल द्वारा सम्पादित, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९६०।

'वापुना पत्रो-६ : गं० स्व० गगावहेनने' (गुजराती) · काका कालेलकर द्वारा सम्पादित; नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद; १९६०।

'वापुना पत्रो-९ · श्री नारणदास गाधीने', भाग १ (गुजराती) नारणदास गांधी द्वारा सम्पादित, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद, १९६४।

'वापुनी प्रसादी' (गुजराती) : मथुरादास त्रिकमजी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदावाद, १९५७।

'महात्मा : लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गाधी', खण्ड २ (अंग्रेजी) : डी० जी० तेन्दुलकर, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली।

'महादेवभाईनी डायरी', भाग १-२ (गुजराती) नरहरि द्वा० परीख द्वारा सम्पादित; नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदावाद।

'माई डियर चाइल्ड' (अंग्रेजी) एलाइस एम० वार्न्ज द्वारा सम्पादित, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदावाद, १९५६।

'लेटर्स ऑफ राइट ऑनरेवल वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री' (अंग्रेजी) · टी० एन० जगदीशन् द्वारा सम्पादित, एशिया पब्लिशिंग हाउस, १९४४।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१ सितम्बरसे १५ नवम्बर, १९३२ तक)

१ सितम्बर गाधीजी यरवडा जेलमे।

९ सितम्बर रैम्जे मैकडॉनाल्डको लिखा कि साम्प्रदायिक निर्णयके विरुद्ध उनके आमरण अनशनके निश्चयमे कोई परिवर्तन नही हो सकता।

१३ सितम्बर उपवासके सम्बन्धमे प्रधान मन्त्री और सर सैम्युअल होरके साथ हुआ गाधीजी का पत्र-व्यवहार प्रकाशित।

१५ सितम्बर अपने आसन्न उपवासके कारण बताते हुए तैयार किया गया वक्तव्य गाधीजी ने प्रकाशनार्थ बम्बई सरकारको भेजा।

१६ सितम्बर अपनी सशर्त रिहाईके खिलाफ राय जाहिर करते हुए गाधीजी ने सरकारको तार भेजा।
अपने उपवासके कारण बताते हुए समाचार-पत्रोके लिए वक्तव्य जारी किया।

१८ सितम्बर. बम्बईके हिन्दुओका एक शिष्टमण्डल, जिसमे पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, मथुरादास विसनजी खीमजी, सर चुन्नीलाल मेहता और घनश्यामदास बिड़ला शामिल थे, गाधीजी से मिला।

१९ सितम्बर: हिन्दू नेताओके एक शिष्टमण्डलने गाधीजी से मिलकर उनसे इस विषयमें चर्चा की कि किन शर्तोंपर वे उपवासका इरादा छोड सकते हैं।

२० सितम्बर: दलित वर्गोंके लिए पृथक् निर्वाचक-मण्डलकी व्यवस्था करनेके ब्रिटिश सरकारके निर्णयके विरुद्ध गाधीजी ने दोपहरमे आमरण अनशन् आरम्भ किया। समाचार-पत्रोके प्रतिनिधियोको आमन्त्रित करके अपने उपवासका मन्तव्य समझाया।
रातमे हिन्दू नेताओ और डॉ० अम्बेडकरने सयुक्त निर्वाचक-मण्डलके सिद्धान्त पर आधारित एक कामचलाऊ योजनापर अपनी सहमति दी।

२१ सितम्बर एक शिष्टमण्डलने, जिसमे एम० आर० जयकर, सी० राजगोपालाचारी, राजेन्द्रप्रसाद और घनश्यामदास बिड़ला शामिल थे, गाधीजी के साथ सयुक्त निर्वाचक-मण्डलपर आधारित योजनाकी चर्चा की। एस० एम० माटे, पी० एन० राजभोज और लिमये गाधीजी से जेलमे मिले।
गाधीजी ने घोषणा की कि यदि ब्रिटिश सरकार साम्प्रदायिक निर्णयको बदलने पर सहमत हो जायेगी तो वे उपवास तोड देंगे।

२३ सितम्बर: समाचार-पत्रोके रिपोर्टरोको बताया कि उनका उपवास कोई राजनीतिक कदम नही, बल्कि एक आध्यात्मिक प्रयत्न और प्रायश्चित्त था।

२४ सितम्बर. 'टाइम्स ऑफ इडिया' के सवाददाताके साथ राजनीतिक नेताओ द्वारा उपवासका सहारा लिये जानेकी सम्भावना और फलितार्थपर वातचीत की। हिन्दू नेताओ और दलित वर्गोके प्रतिनिधियोने गाधीजी की उपस्थितिमे समझौतेपर हस्ताक्षर किये और उसपर गाधीजी ने भी अपनी सहमति दी। भारत सरकार और ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीको समझौतेकी शर्ते सूचित की गई और साथ ही साम्प्रदायिक निर्णयको वदलनेमे शीघ्रता करनेका भी अनुरोध किया गया।

२५ सितम्बर. एलन और वी० के० कृष्ण मेननको मुलाकात दी। अपने दूसरे प्रेस सम्मेलनमे घोषित किया कि वे उपवास तभी तोड़ेगे जव प्रधान मन्त्री समझौतेको सम्पूर्णत स्वीकार कर लेगे।

२६ सितम्बर. शामके ५ बजकर १५ मिनटपर उपवास तोडा। गाधीजी ने समाचार-पत्रोमे एक वक्तव्य जारी करके समझौतेको सभी पक्षोकी उदारताका परिणाम बताया।

२७ सितम्बर: सरकारसे अनुरोध किया कि वह उपवासके दौरान उन्हे दी गई सुविधाएँ बन्द न करे।

२९ सितम्बर. दिनके १२ बजकर ३० मिनटपर गाधीजी को सूचित किया गया कि उपवासके दौरान उन्हे मुलाकातो और पत्र-व्यवहारके सम्वन्धमे जो सुविधाएँ प्राप्त थी वे बन्द की जा रही है। इस परिवर्तनपर नाराजगी जाहिर करते हुए एम० जी० भण्डारीको एक कडा पत्र लिखा।

३० सितम्बर· के० केलप्पनको तार भेजकर उन्हे उपवास वन्द करनेकी सलाह दी।

१ अक्तूबर· के० केलप्पनको उपवास तोड़नेकी सलाह देते हुए फिर तार भेजा।

२ अक्तूबर के० केलप्पनने प्रात काल अपना उपवास तोडा।

२ अक्तूबर या उसके पश्चात्. मन्दिर-प्रवेशके सम्बन्धमे समाचार-पत्रोके लिए वक्तव्य जारी किया।

१७ अक्तूबर· डॉ० अम्वेडकर और सरोजिनी नायडू गाधीजी से जेलमे मिले।

१८ अक्तूबर गाधीजी ने एच० एफ० हडसनको पत्र लिखकर कहा कि अस्पृश्यता विरोधी कार्यके सम्बन्धमे उन्होने मुलाकातो और पत्र-व्यवहारकी जो सुविधाए मागी है, उनके वारेमे सरकार निश्चित उत्तर दे।

१९ अक्तूबर गाधीजी को जेलके उस कमरेमे ले जाया गया जिसमे वे उपवासके पूर्व रहते थे।

२० अक्तूबर· रोटी लेना आरम्भ किया।

२३ अक्तूबर: पुजाभाई शाहका देहान्त।

२४ अक्तूबर गाधीजी ने तवतक के लिए अस्पृश्यता-सम्वन्धी कार्यके विषयमे पत्र-व्यवहार वन्द कर दिया जवतक कि सरकार मुलाकातो और पत्र-व्यवहारपर से प्रतिवन्ध न हटा ले।

२६ अक्तूबर· कर्नल डॉयल जेलमे गाधीजी से मिले।

३१ अक्तूबर गाधीजी ने तय किया कि अस्पृश्यता-सम्बन्धी कार्यके सिलसिलेमे मुलाकातो और पत्र-व्यवहारपर जो प्रतिबन्ध लगे हुए है उनके विरोधस्वरूप वे अगले दिनसे विशेष आहार नही लेगे।

१ नवम्बर. विशेष आहार लेना बन्द कर दिया।

२ नवम्बर. सरकारसे प्राप्त सन्देशके उत्तरमे आहारके सम्बन्धमे अपनी ही ओरसे लगाया गया यह प्रतिबन्ध समाप्त कर दिया।

३ नवम्बर. सरकारने अस्पृश्यता-सम्बन्धी कार्यके सिलसिलेमे गाधीजी को मुलाकात, पत्र-व्यवहार और प्रचारकी यथेष्ट सुविधा पुन प्रदान की।

४ नवम्बर: गाधीजी ने समाचार-पत्रोके लिए अस्पृश्यतापर अपना पहला वक्तव्य जारी किया।

५ नवम्बर· अस्पृश्यतापर दूसरा वक्तव्य जारी किया।

७ नवम्बर अस्पृश्यतापर तीसरा वक्तव्य जारी किया।

८ नवम्बर: अस्पृश्यतापर चौथा वक्तव्य जारी किया।

११ नवम्बर. पी० एन० राजभोज और उनके मित्रोको मन्दिर-प्रवेशके लिए कोई सत्याग्रह या उपवास करनेसे मना किया।

१२ नवम्बर. 'हिन्दू' के प्रतिनिधिको मुलाकात दी।

१३ नवम्बर लॉर्ड सैकीने गाधीजी से जो सार्वजनिक अपील की थी उसका उत्तर दिया।

१४ नवम्बर अस्पृश्यतापर पाँचवाँ वक्तव्य जारी किया।

१५ नवम्बर· अस्पृश्यतापर छठा वक्तव्य जारी किया।

शीर्षक-सांकेतिका

सांकेतिका

ख

त

थ

द

फ

ब

भ

ल

व

श

ह